किसुन समग्र

भाग–2

रामकृष्ण झा 'किसुन'

किसुन समग्र, भाग–2

रामकृष्ण झा 'किसुन'

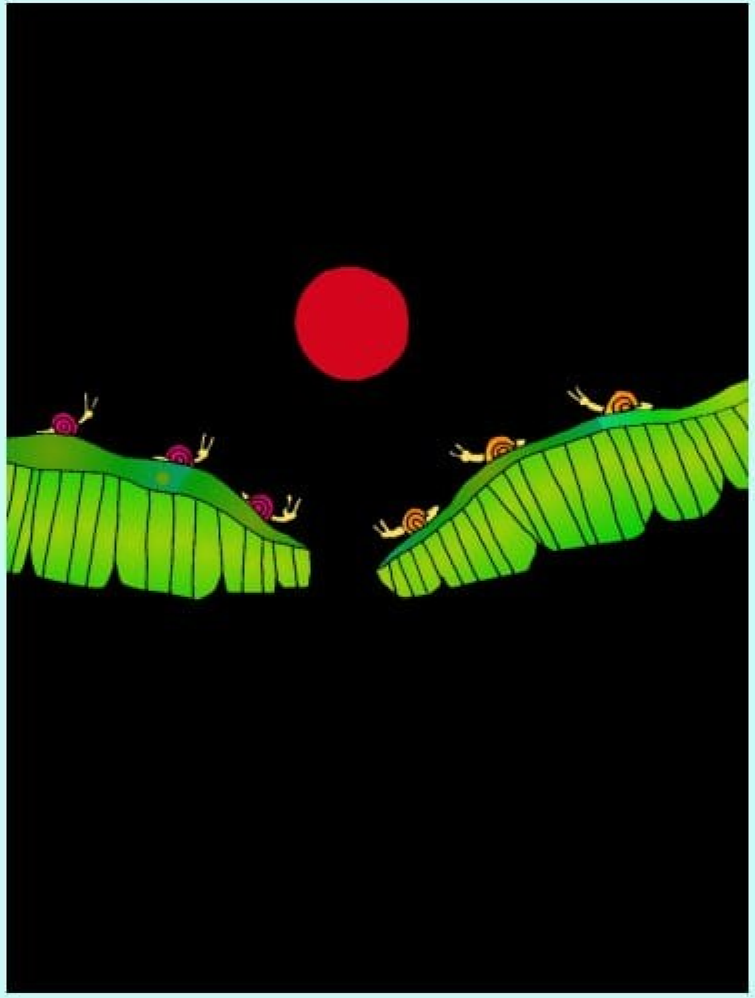

किसुन संकल्प लोक
सुपौल (बिहार)

किसुन समग्र-2

किसुन समग्र-2

रामकृष्ण झा 'किसुन'

किसुन संकल्प लोक
सुपौल

किसुन समग्र-2

© **केदार कानन**

दोसर संस्करण : 2022

मूल्य : **400/- रुपए**

आवरण : श्री सीताराम
अनुप्रिया

प्रकाशक : किसुन संकल्प लोक, सुपौल

संपादक : केदार कानन
रमण कुमार सिंह

ले-आउट : हर्ष कंप्यूटर्स, दिल्ली-86 (मो. 7011503212)

मुद्रक : आर.के. ऑफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
पुस्तक प्राप्ति स्थान :
- किसुन कुटीर, गुदरी बाजार, सुपौल-852131 (बिहार)
- शेखर प्रकाशन, प्रथम तल, भुवनेश्वर प्लाजा, न्यू मार्केट, पटना-800001

KISUN SAMAGRA-2 : A Collection of Maithili short stories and other Reflections *by* **Ramkrishna Jha Kisun.** Edited by Kedar Kanan and Raman Kumar Singh.
Price : Rs. 400

बस, औपचारिकता

किसुन जीक उपलब्ध समस्त गद्य रचना कें एहि किताब मे संकलित करबाक प्रयास कयल गेल अछि। पहिल खंड मे हुनक कथा सभ अछि आ दोसर खंड मे निबंध आ अन्य फुटकर रचना।

स्मरणीय थिक जे 1983 मे मैथिली अकादमी, पटना सँ 'स्वयम्बर' नाम सँ हुनक कथा संग्रह आ 'वैचारिकी' नाम सँ निबंध संग्रह प्रकाशित कयल गेल छल, जकर संपादन प्रो. मायानन्द मिश्रक संग हम कयने छलहुँ। बहुत दिन सँ ई दुनू किताब अनुपलब्ध छल।

आब 'जय पराजय' नाम सँ हुनक कथाक संग्रह अछि तथा 'प्रतिबिम्ब' नाम सँ हुनक निबंधक संग्रह। 'प्रतिबिम्ब' मे बहुत रास नवो रचनाक समावेश कयल गेल अछि। पत्र-पत्रिका आ घरक कागत-पत्तर मे जे उपलब्ध भेल, तकरा सभकें 'प्रतिबिम्ब'क परिशिष्ट मे देल गेल अछि। एहि मे संकलित किछु रचना किसुन जी छद्म नाम सँ सेहो लिखने रहथि।

तथापि एखनो ई संकलन पूर्ण नहि भेल अछि। किछु लेख, किछु अनुवाद उपलब्ध तँ भेल मुदा तकरा पढ़ि पायब, कागतक जीर्ण-शीर्ण अवस्था आ प्रयोग कयल गेल मोसिक हल्लुक भ' जयबाक कारणे संभव नहि भ' सकल। किछु पुरान पत्र-पत्रिका बहुत तकलो उत्तर नहि भेटि सकल। किछु रचना भाइ मोहन भारद्वाजक ओतय हेरा गेल। भविष्य मे जँ ओ सभ उपलब्ध भ' सकल तँ तकर उपयोग अगिला संस्करण मे अवश्य करब।

किसुन समग्र दू क प्रकाशनक पृष्ठभूमि मे हमर परिवारक प्रत्येक सदस्य हमर उत्साहवर्द्धन करैत रहलाह अछि। ओना हुनका लोकनिक तँ ई काजे छलनि। एहि किताब मे संग-साथ देलनि प्रिय अनुज रमण कुमार सिंह।

किसुन साहित्य प्रेमी आ मैथिलीक सहृदय पाठक लोकनि लेल एक जिल्द मे हुनक गद्य रचना उपलब्ध भ' सकल, से निश्चित रूप सँ प्रीतिकर थिक।

किसुन पुण्यतिथि
15 जून 2022

केदार कानन
मुम्बई

अनुक्रम

बस, औपचारिकता 5

जय पराजय

जीवनक मूल्य 13
रहस्य 15
प्रेम नित्य थिक 19
संकल्पक आधार 24
जीवनक असौकर्य 30
पुरान पत्र आ टटका बात 33
एक अंक तीन दृश्य 37
मासान्त 41
ताँगाबाला 46
सुभद्राक डायरी 54
अन्हार आ इजोत 59
कंडोलेन्स 66
स्वयम्बर 73
मुक्ति 81
प्रतिशोधक सन्तोष 87
जय पराजय 93
एकटा मन: स्थिति 98
संस्कारक मोह 103
तृप्ति-बोध 112
इंटरभ्यू 118
आत्मदंशक वेदना 125
स्थिति आजुक जिनगीक 131

प्रतिबिंब

काव्य-साधना	139
काव्यक प्रयोजन, लक्ष्य ओ आदर्श	141
साहित्यक शाश्वत सत्ताक आधार	145
साहित्यक स्थायित्व आ राजनीति	149
साहित्य आ सौन्दर्य-बोध	153
काव्य मे दोष	159
शेक्सपियर आ कालिदास	170
कालिदासक उपमा-सौन्दर्य	175
साहित्यक मूल उत्स:सौन्दर्य	183
संस्कृत साहित्यक किछु सौन्दर्य-दर्शन	188
काव्येषु नाटकं रम्यम्	195
भारतीय नाट्य साहित्यक विकास परम्परा	199
भारतीय नाट्य साहित्यक विकास-परम्परा	204
साहित्य मे शब्द आ अर्थक महिमा	210
समालोचना आ मैथिली साहित्य	215
मैथिली साहित्य मे नव कविता	221
मैथिली कविताक नवीन दिशा	225
नव लेखन : किछु विचार	234
वाग् द्वार : आत्मनिवेदन	231
मैथिलीक नव कविता : सम्पादकीय सन्दर्भ	244
भूमिका	248
सहरसा जिला ओ तकरा परिसर मे मैथिली साहित्य-सेवा	253
मिर्जा गालिब आ हुनक कृतित्व	270
भेंट भेलाह अमरजी	278
राजकमल चौधरी : एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व	286
उदना रे मोर कतय गेला	297
विश्वामित्र	305
भीमक आनंद	310
स्वास्थ्यक गप्प	313
स्वामी विवेकानन्द आ हुनक सन्देश	317

भारतक सम्बन्ध मे पाकिस्तानक दुर्नीति 322
जनसंख्या वृद्धि : एक चिन्ताजनक विश्व समस्या 327
जनसंख्या विस्फोट 331

परिशिष्ट

अपन किछु बात 336
अन्न : एक विकट समस्या 338
सहरसा जिला आ तकरा परिसर मे मैथिली साहित्य सेवा 341
जयपुर 346
पुरी-यात्राक डायरी 348
मानव स्वास्थ्यक मूल-चर्चा 358
गांधी जीक किछु अविस्मरणीय प्रसंग 363
सौन्दर्यक केन्द्र मुँह पर बरर-झरर 368
नेबो आ ओकर प्रयोग 371
मधुक महिमा आ प्रयोग 374
माटिक महिमा 377
सौन्दर्य-प्रसाधन मे केशक महत्व 381
मनुष्यक स्वार्थ 385
यक्ष-प्रश्न 389

जय पराजय

जीवनक मूल्य

मैल, पुरान, फाटल, चेफड़ी लागल आ लाल-पीअर पढ़िया, ओ मारकीन पहिरने बुढ़िया, मौगी आ छौंड़ी सब तथा धोती, बिष्ठी, अंगा, कुर्त्ता, बनिआइनि लदने नंगा-अधनंगा छौड़ा, जुआन, बयसाहु, बूढ़ पुरुष सभ हाट मे कार्यव्यस्त छल। बनिञा गहिंकी आ गहिंकी बनिञा यैह दृश्य।...परोड़...परोड़ आठ आने...साग छ' पैसे; छबे पैसे...झिंगुनी...माछ टटका रोहु...सबे टके...सिंगही...चेचरा... अंडायल...पोठी...की भाव चाउर? एक पौवा मरचाइ दैह...एहि सजमनिक की दाम ?...ई गमछा कतेक मे हेतैक ठीक...ठीक कहक; मोल-मोलाइ नइ...रे रमचरना ओम्हर की तकैत छें एम्हर आ, झोरी ला, महाग ढकोल छें! आदि-आदि।

हम डाकघर सँ अपन चिट्ठी-पत्री आ अकबार, पत्रिका कँखियौने हाट अयलहुँ, खद्धड़क कुर्त्ता मे एकटा बट्टम टूटि गेल छल तकरा सरिअबैत।

पानक दोकान...हमरा सन बहुतो खुदरा गहिंकी...किछु बाबू-बबुआन...सिकरेटक आ बीड़ीक चमत्कार...किछु पैकार सब पान ल' क' घेरने...ढोलीक मोल-जोल, नीक बेजाय होइत ता ओम्हर सँ अयलाह इयार।

पिंडश्याम...साँची धोती...पानक दाग लागल...कोकटी रंगक मैलहा कुर्त्ता...ऊपर सँ मालाकार तौनी...श्रीखंडक ऊर्ध्वपुण्ड...ऊपर सँ भुअंकर छाउड़क त्रिपुण्ड...सिनुरक मोट ठोप...ठोर पर हल्लुक मुस्कान...। की ओ इयार... ? (कने ऊँच सुनैत छथि) हम टोकलिअनि।

कहू-कहू...पान लेल जयतैक? (पंडिताइक दाबी रखैत छथि) कोंचिआक' पुछलनि हमरा मुँह दिस ताकि क'। हँ-हमर ई उत्तर छल।

बेस, बेस। ई हमर यजमाने थिक-ओ बजलाह आ हम किना दैत छी कहैत ओ पान बालाक ढाकी लग बैसि गेलाह।

ता' हमर नजरि दोसर दिस गेल।...झिल्ली-घुघनीबाली मोदिआइनिक दोकान...थार-थारी आ काठक छिपली सब मे घुघनी...झिल्ली, मुरही, फुटहा,

बतासा, तेलही जिलेबी आ चिनिञा लड्डू, पियाजुक खुण्डीबाला कचड़ी...बिढनीक झुंड।

आ लग मे दू गोट पृथ्वीपुत्रक संतान। एक छौंड़ी, गोर आठेक उमरि। दोसर छौंड़ा, पाँच-छ सालक खिच्चा। से अचानक मोन पड़ि गेल-

बगड़ा जेना लगाबय खोंता
तेहने रुच्छ केश छउ तोहर
दू छर हारी मात्र गरामे
केहन विचित्र वेश छउ तोहर... ।

आ हमरा लागल जेना यात्री जी एहीठाँ ठाढ़ भ' ई लिखने छल होयताह।

ओ सभ मोदिआइनिक तराजू आ गहिंकीक गमछा सँ धोखा सँ खसि पड़ल घुघनी आ झिल्ली सभक अंशक बीछि क' नहि, लूझिक' टप् द' मुँह मे द' दैत।

सावधान, सतर्क, साकांक्ष आ सतृष्ण।

एकटा अल्हुआक दिबड़लग्गू छीप जे कोनो तरहें नहि खैल गेल तें फेकल छल तकरा उठाक' हबर-हबर छौंड़ी मुँह मे ल' लेलक।

छोट होयबाक कारणे छौंड़ाक आँखि करुण...दीन आ उपालम्भयुक्त मूक याचना सँ बहिनिक मुँहक उठब-खसब पर उठि आ खसि रहल छल।

आ कि तखने-

मोदिआइनिक थारी सँ एकटा झिल्ली बिढनी हौंकैत पात लगने खसल छौंड़ा लुपुकि क' उठा लेलक, झपटि क'। जेना बाज आ बगड़ा।

आ छीनि ने लेअय...से ट्प द' मुह मे ल' लेलक। चट्-चट्-चट्कि-चटाक...छौंड़ी केँ नहि रहल गेलैक...मातृत्व...बहिनित्व...स्त्रीत्व...अभिभावकत्व सब ओहि चाट मे एकाकार भ' हाहाकार क' उठल। छौंड़ाक मुह लाल, अड़हुल सन लाल, आँखि मे पानि आ कि पानिञे मे आँखि डूबैत...।

कतेक मूल्य संग मे अछि ? तावत पानबलाक ढाकी सँ नीक-नीक पान बीछि क' हाथ मे लेने इयार हमर कुर्त्ताक छोर हिलबैत पुछलनि। हम हठात् चौंकि जकाँ उठलहुँ।

'जीवनक मूल्य यैह थिकैक'-अनायास हमरा मुह सँ बहरैल जे ओम्हरे तकैत आँखि सँ जीवनक मूल्य जोखि रहल छल।

वैदेही : सितम्बर 1954

रहस्य

विद्यालय जयबा लेल तैयार छलहुँ कि देयाद पहुँचलाह—‘हौ जी, लोक सब वाराह क्षेत्र जाइत अछि।’ देयादक अभिप्राय बूझि हृदय मे तरंग तँ आयल, मुदा परीक्षा समीप छल आ हम अधिक काल असक्के रही तें। भेल नहि जाइ तँ नीक। कहलिअनि, ‘देयाद कथी ले हरान होइले जयबह।’ ‘बेस, जे तोहर इच्छा’ कहि क’ ओ मुँह लटकओने ठाढ़ भ’ गेलाह। अयला पर जे दीप्ति छल से मिझा गेल छल। देयाद हमरा सँ अवस्था मे जेठ छलाह। नाम छलनि रामदेवझा। हमर सहाध्यायी छलाह। हृदयक शुद्ध। पैघ होइतो हमर अनुगामी। हम दुहू गोटे धनपुरा मे डेरा राखि क’ पढ़ैत छलहुँ। सिनेहक कारणे ‘देयाद’ लगओने छलहुँ। हुनका मन पर विषण्ण रेखा देखि परीक्षा बिसरि गेल आ कहलिअनि—‘बड़ दिब, जँ तोहर इच्छा छहु तँ चलह।’

‘नहि, नहि हम नहि, हम तँ अहिना कहय आयल छलिअहु।’

‘के सब जाइत छथि?’ हमर जिज्ञासा छल।

‘वैद्यजी, गणेश बाबू, सेठजी, मूसन झा आ स्त्रीगण बहुतरास ओहि टोलक आ एहि टोल सँ मालिक, नन्दन जी, तिरपित, पंडित तथा स्त्रीगणक नाम सुनैत छिऐक’ देयाद कहलनि। मन हमरो डोलि रहल छल।

‘चलह तैयारी करह।’ हम हुनका उत्साहित करैत बजलहुँ।

‘सरिपहुँ की?’

‘हँ हौ तँ तोरा फुसियबैत छिअहु हम?’

‘बेस।’

आ करीब एगारह बजैत दिन मे हमरा लोकनिक सताइस व्यक्तिक दल धनपुरा सँ बिदा भेल।

सखरा भगवतीक स्थान, हनुमान नगर, बरहमजिया, कंचनपुर आदि होइत दोसर दिनुक साँझ मे बेलका पहाड़ लगक एकटा टोल पर पहुँचैत गेलहुँ।

टोलक नाम छलैक बोचही।

कोइलारीक बाबू साहेबक कामत छलनि। कामते पर डेरा रहल। स्त्रीगण सब आँच टा पजारि देलक आ पुरुष सब भानस-भात मे लागल। हमरालोकनि तँ सहजहि विद्यार्थी जी छलहुँ। सभक पहुने।

खबास सब सभक ओछाओन-बिछाओन क' देलक, जा क' पड़ि रहलहुँ। दू दिन लगातार चलबाक कारणे बेस थाकि गेल छलहुँ। ओछाओनि पर पड़ले होइ कि कच्च-बच्च करैत फेर एक दल पहुँचल करीब सत्तरि-पचहत्तरिक। केयो महराइ तँ केयो विदेसिया, केयो फुल चोभी तँ केयो रसक गीत उठओलक।

स्त्रीगणो सब कने बिलमिक' रंग-बिरंगक गीत उठओलनि। कातिक मास आ इजोड़िया राति।

पहाड़क कात आ नानादिग् देशादागत्य जमकल लोक-समूह। काल्हि थिक पूर्णिमा। सामा जे नहि भसा सकतीह से सब आरे भमरा आरे भमरा हमर भैया सूतल की जागल...आदि अपन भाइ सभक नाम ल'ल' गाबय लगलीह। हमरा पड़ल नहि गेल, उठि क' भानस लग अयलहुँ। विलम्ब छल। दोसर दल दिस गेलहुँ। सब अपना-अपनी मे मस्त। केयो चूड़ा फँकैत तँ केयो पिड़किया तोड़ैत। कामत सँ बहरा क' सटले खेत मे अयलहुँ। तोड़ी सरिसोक कनी-कनी गाछ। गुलाबी जाड़क मादक ठंढइ। एक गोटे एक आरि पर बैसल वंशी बजा रहल छल। भेल जे ई के सनकाह थिक। लग जा क' देखै लगलहुँ। साफ धोती पर हरियरका डिजाइनक कमीज, ऊपर सँ कारी रंगक इंगलिश कोट। केश पैघ-पैघ आ सीटल, पयर मे फूल शू। देखबा-सुनबा मे नीक लोक सन।

हम कने ठाढ़ रहलहुँ। मुदा ओ जे आँखि मुनने कोनो भावना जगत् देवीक-स्वर वन्दना करैत छल से ओहिना तन्मय रहल। ओकर ध्यान भंग करबाक निष्ठुरता हमरा बुत्ते नहि भ' सकल। बंशीक स्वर केँ वंशीवादकक तन्मयता आ इजोड़ियाक हिम-धौत वातावरणक सरस स्पन्दन हृदय केँ अतिशय भावुक बना देने छल। घूमि क' ओछाओन पर लेटि गेलहुँ। मन मे जे भाव उठय लागल तकर अनुभव अहूँ क' सकैत छी।

भिनसरबे मे पीह-पाह उठय लागल। हमरोलोकनिक दल मे हड़बड़ी पसरि गेल। चलू-चलू, उठू-उठू, मोटरी बान्हू आदि-आदिक कोलाहल सँ निन्न टूटल तँ अधिकांश स्त्रीगण आ पुरुषपात तैयार छलहुँ। बिदा होइ गेलहुँ तँ रस्ते भुतिआ गेल। कास पटेरक खुरुरबट्टी धयने पहाड़क कात पहुँचलहुँ। रास्ता तँ नहि छल, मुदा बरिसात मे जे एकटा पहाड़ी झरना छल होयत से सम्प्रति सुखायल छल आ

तकरे रास्ता बूझि ऊपर चढ़ै गेलहुँ। थाकि गेल छलहुँ खूब, मुदा पहाड़ देखबाक उत्कंठा नेनपनहि सँ छल से सुअवसर अकस्मात् रहस्यक जवनिका उठाक' सम्मुख छल। कत' गेल थकान आ कत' गेल विषाद तकर कोनो सुधि नहि रहल। हर्षक कारणे सब सँ आगाँ हमहीं छलहुँ। ओहिना पहाड़ परक घोर जंगल मे आगाँ बढ़य लगलहुँ। सूर्यक प्रकाश अस्पष्ट रूपें मात्र अबै छल। नीचा मे भरि-भरि ठेहुनक घास, छोट-पैघ झाड़-झंखाड़, दहिना भाग सँ पचास हाथ सँ नीचा मे नदीक जलधारा, बाम भाग घोर जंगलक सघन भीति, आगाँ दिशाहीन जकाँ अन्तरहित पहाड़, पाछाँ चुट्टीधारी भेल लोक। कनेक दूर गेल होयब कि हमरालोकनिक बामा कात किदन हुमड़लैक। चिड़ै चुनमुन्नी सब 'चेँ-चेँ' कर' लागल। सब सकदम भ' गेला। प्राय: बाघ हुमड़ल छल। सब गोटे चिन्तित आब की होयत? कोमहर पड़ा क' जायब? बचबाक कोनो उपाय नहि, दहिना कात सहजहि कतेक बाँस गहींर मे नदी बहैत छल जे देखला सँ पयर मे झुनझुनी भर' लगैत छल। आगाँक परिस्थिति आर अधिक भयंकर। जेना पहाड़क माथ पर ठाढ़ रही आ साठि-सत्तरि हाथ नीचा मे सुखायल पहाड़ी नदी छल। ढरकाह जकाँ ढलुआह पहाड़ रहितैक तखन तँ कोनो बात नहि, मुदा छलैक जेलक देबाल जकाँ सोझ कटान। सभक प्राण मे अदंक समा गेल। स्त्रीगणक तँ कोंढ़-करेज फाट' लागल। 'जय सलहेस बाबा...जय सलहेस बाबा...तोरे फुलवारी मे छी...एहि बेर जान बकसि दैह...' अनेक प्रकारक विनय गोहारि सुन' लगलहुँ। भयक अधिकता सँ हमरोलोकनि उक्त गोहारिक अनुमोदन कर' लगलहुँ। एहि सँ पहिने सलहेस बाबाक कतेको चमत्कारक गप्प सब सुनि चुकल छलहुँ। वराह-क्षेत्रक यात्री सब केँ कतेक बेर भीड़ पड़ला पर कतेक रूप मे सहायता भेटल छलैक। पहिने तँ ई सुनला पर मनहिमन खूब हँसल रही, मुदा एखन कतेक विश्वास कर' लगलहुँ जे अपनहुँ आश्चर्य होम' लागल।

सब केयो थकमकाइते छलहुँ कि आगाँ मे वंशीक स्वर सुनल। सब चौंकि उठलाह। कने आगाँ ससरि क' देखैत छी तँ वैह व्यक्ति जे राति मे खेतक आरि पर बैसि क' वंशी बजबैत छल, ओहिना तन्मय भावें वंशी बजा रहल छल। मन अस्थिर भ' उठल कि ओ इशारा कयलक अपना पाछाँ अयबा ले आ अपने वंशी कोटक जेबी मे राखि कने दूर पर हाथ सँ घास हटब' लागल। लग पहुँचला पर देखैत छी जे ओहिठाम सँ किछु दूर धरि, एक बेस पैघ धोधड़ि जकाँ छल जे ढरकाह रहबाक कारणे नीचा उतरबा मे सुविधाजनक छल। धोधड़ि पहाड़क जड़ि सँ किछु उपरे समाप्त भ' गेल छल, मुदा जाहिठाम धोधड़ि समाप्त होइत छल, ततय सँ एकटा बेस मोटगर साँखुक गाछ सुखयलहा नदीक तलभूमि धरि झुकल

खसल छल। वंशीवादक केँ देखि पहिने तँ लोक केँ भेलैक जे ई साक्षात् सलहेस बाबा थिकाह, साक्षात् देवता थिकाह, साक्षात् भगवान थिकाह, किन्तु जखनहि धोधड़ि मे बैसबाक उपक्रम भेल कि मालिक कहलनि—'ई डकैत थिक। एहि गुफा मे ओकर दल छैक जत' ल' जा क' ई हमरा सबके मरबा देत।'

बिजली जकाँ ई भावना लोक मे क्षण भरि मे भ' गेलैक। हम देयाद केँ कहलिअनि—'चलू देयाद, अपना दूहू गोटे अजमाबी जे की बात थिकैक।' ओ हमर अनुगामी छलाह, चलि देलनि। हमरालोकनि जखन नीचा सकुशल उतरि गेलहुँ तँ मालिक लोकनि केँ जोर सँ शोर कयलिअनि। पछाति ओहो लोकनि क्रम-क्रम सँ अबैत गेलाह। नीचा उतरैत देरी लोक मे कतहु सँ जेना फक्क द' प्राण आयल होइक। तकर बाद सँ सब केयो दहिन भाग नदी दिस बढ़ि क' लोटा ओ डोल सँ पानि ल' मुँह हाथ धोबा मे पनपिआइ मे तेना ने लागि गेल जे ओ व्यक्ति नहि कहि कखन आ कोमहर ससरि गेल। एकर पता पुनि नहि लागल, सब आश्चर्य-चकित भेल तखन, जखन कि लोक हाथ-मुँह धो क' ओहि प्राणरक्षक केँ भक्ति-भाव सँ भोजन करयबाक ओरिआन-पात कर' लागल। देयाद आब एहि लोक मे नहि छथि, मुदा आइयो हमरा लेल ई घटना रहस्ये बनल अछि।

प्रकाशित : रचना संग्रह (प्रथम भाग) 1956 ई.

प्रेम नित्य थिक

किशोर सँ हमर परिचय छोट होइतो गहींर छल। विद्यार्थी-जीवनक उमंग भरल मोन प्रत्येक 'प्रिय'क स्वागत करैत अछि आ अनुराग करैत अछि ओना तँ अनुराग प्रत्येक अवस्थाक लक्ष्य होइछ। प्राय: जीवनक अतिरिक्त मरणो अनुरागेक कारण मे लक्षित होइछ। अस्तु, हमरा एखन तर्क करबाक नहि अछि। कहबाक अछि ई जे अनुरागे संसार-सृष्टिक उपादेय वस्तु थिक।

...किन्तु छात्र जीवनक अनुराग आन अनुराग सँ विशिष्ट स्थान रखैत अछि। एक अतुल रसानुभूति...अपरूप सौन्दर्य...जे हो, एहने समय मे एक दिन किशोर सँ हमर छोट-मोट परिचय भेल आ नहुँ-नहुँ जेना होइ छैक ओ परिचय मित्रता मे परिणत भ' गेल। किशोरक पिता कतहु सँ बदलि कें हमरा गामक दारोगा भ' क' आयल छलाह।

आब ओ जखन हमरा सँ दूर छल आ हमरालोकनि अपना-अपना कर्त्तव्य मे परिस्थितिक अनुसार अपन-अपन संसार बना कें जीवनक हँसैत कनैत दिन काटि रहल छलहुँ। पत्र द्वारा गप्प-सप्प क' लेल करी।

एम्हर कतेक मास भेल से ठेकान नहि जे ओकर कोनो पत्र नहि आयल छल आ पलखति पओला पर हम कहियो-कहियो ओकर चिन्ता क' लैत छलहुँ कि एक ओकर चिट्ठी भेटल। लिखने छल-

'प्रिय बंधु!

बहुत दिनक चुप्पीक बाद तोरा पत्र लिखि रहल छिअहु। जनै छी जे तों चिन्तित होयबें आ एहि लेल तमसायलो।...मुदा, माफ क' दिहह।

एहि दिन मे हम बड़ अशान्त छी आ एकमात्र तोरे सँ शान्ति भेटक भरोस अछि तें पत्रे नहि लिखैत छिअहु।

हमर प्रश्न अछि जे की प्रेम अनित्य थिक जखन कि ओकर सम्बन्ध नित्य

आत्मा सँ छैक? की प्रेम केवल धोखे टा नहि थिक?

हमर ई दुहू विरोधी प्रश्न हमरा बताह होयबाक प्रतीक थिक से सत्ते। हम बताह भ' गेल छी वा पहिनहि सँ एहि मे पड़ल छलहुँ जे आब उतरि गेल अछि।

प्रिय सखा, आह! आइ हमरा जीवनक समस्त अभिलाषा आ उत्साह समाप्त भ' गेल। शोभा हमरा धोखा देलक। भरिसक हम तोरा लिखने छलिअहु जे हमरा लोकनि एकसूत्र मे शीघ्र आबद्ध भ' रहल छी। मुदा ओह! ओ सबटा स्वप्न मिथ्या भ' गेल। शोभाक सभ प्रतिज्ञा, सभ प्रेम आ सभ बात निछक्का स्वप्न छल। सरासरि धोखा। हमरा होइत छल जे शोभा हमरा बिनु नहि रहि सकैत अछि।...बाबूजी सेहो मानि गेल छलाह जे ई विवाह हो तँ कोनो हर्ज नहि! ओकर माय-बाप तँ पहिनहि सँ प्रयत्न करैत छलैक। किन्तु बहुत दिनक बाद छुट्टी मे पटना सँ मुजफ्फरपुर अयलहुँ तँ ज्ञात भेल जे शोभा सासुर मे अछि। हमरा सँ दू सप्ताह पूर्वे ओकर विवाह आ संगहि द्विरागमन सेहो भ' गेलैक। सुनल जे ओ अपना मातृक गेल छलि से ओ ओतहि एक कौलेजिया छौंड़ा केँ पसिन्न क' अपना मायक कोशिश पैरवी सँ विवाह निश्चित करा लेलक। आब हमरा जीवन मे अपना समाजक वर्त्तमान तथाकथित सभ्यता आ शिक्षा, प्रगतिशीलता आ नव-जागृतिक प्रति अत्यन्त कटु विरक्ति एवं विकर्षण भ' गेल अछि।

की तँ प्रेमे अनित्य थिक वा शोभा केँ हमरा सँ सिनेहे नहि छलैक। जे हो मुदा हमरा एहि कथित सुसंस्कृत समाजक एक विचित्र कटु अनुभव भेल अछि जकरा स्थायी बनयबाक हेतु हमरा किछु दिन साधना करय पड़त। हमरा होइत अछि जे प्रेम केवल धोखा थिक, शब्दजाल मात्र, आर किछु नहि...लिखबा लेल तँ बहुत-बहुत गप्प अछि मुदा एखन हृदय स्थिर नहि अछि। हमर प्रश्न सभक उत्तर दिहह। सम्भव जे किछु हल्लुक भ' जाय।'

-किशोर

(तोहर अपदस्थ बंधु!)

पत्र पढ़ि क' किछु क्षणक हेतु स्तब्ध भ' गेलहुँ। सोचल जे ई तँ आजुक संसारक बहुसंख्यक घटना सब मे सँ एक थिक। व्यक्ति विशेषक हेतु असाधारण होइतो ओहि समाज आ संसारक हेतु एक साधारण सनक बात थिक जकरा सँ दूर रहक कारणे हमरा लोकनिक समाज अपना केँ पछुआयल बूझि रहल अछि आ जकरा अपनयबाक हेतु आब हमरा लोकनिक समाज पर्याप्त प्रयत्न क' रहल अछि।

जनै छलहुँ जे किशोर केँ एहि सँ गम्भीर आघात लागल होयतैक ओ भावुक

अछि आ शोभा सँ बहुत अधिक सिनेह करै छल। यैह दूहू कारण ओकर विक्षिप्त होयबा लेल पर्याप्त छल। हम ओहि पत्रक उत्तर शीघ्र देब उचित बूझल। किछु दिन पछाति एक अपरिचित लिपि भेटल। लिफाफ परक मोहर सँ बुझना गेल जे मुजफ्फरपुर सँ चिट्ठी आयल अछि। किछु हरान जकाँ होइत चिट्ठी पढ़लहुँ तँ ज्ञात भेल जे किशोरक छोट बहिनि सुधा पत्र लिखने अछि। पत्र एहि तरहेँ छल—

'पूज्य अपरिचित भाइ!

अपन एक अपरिचित बहिनिक प्रणाम स्वीकार कयल जाय। क्षमा कयल जाय, हम अपनेक पत्र पढ़लहुँ। किशोर भैया किछु दिन सँ घर सँ अनुपस्थित छथि। सम्भवत: अपने लग होथि से खबरि देब। एतय माँ बेशी व्याकुल छथि। बाबूजी चिन्तित भ' रहला अछि। की भैयाक लेल ई उचित छल? अपनहि कहल जाओ, एक साधारण गप्पक हेतु बतहपनी करबेक नाम थिक भावुकता? भावुकता...कमजोरी कोनो सीमे धरि उचित। मुदा ई...अस्तु; आशा अछि भैया सकुशल होयताह। शीघ्र सूचना देल जाय।'

'हमरा जे किछु सन्देह भ' रहल छल सैह विषय भेल। एहि लेल दुख भेल आ बहुत मन भेल ओकरा ताकिऐक कने जे ओ कतय अछि। किन्तु वैयक्तिक झंझट सभक कारणे नहि ताकि सकलिऐक। सुधाक उक्त पत्रक उत्तर द' देलिऐक जे किशोर एखन धरि एतय नहि आयल अछि। अयला पर खबरि देब। दोसर खेप सुधाक पत्र आयल जे ओ एखनधरि एतय नहि अयलाह अछि। हुलिया करा देल गेल अछि। समाचार पत्रो सभ मे छपाओल गेल अछि। खोजो भ' रहल छैक। आ ई सब लिखलाक बाद सुधा हमरा पहिलुका पत्रक उल्लेख दैत लिखने छलि जे-

अपने जे प्रेम केँ अनित्य कहलिऐक अछि, ताहि मे हमरा किछु सन्देह अछि। अपने लिखने छिऐक-प्रेमक सम्बन्ध आत्मा सँ अछि। आ परिवर्त्तन प्रकृतिक नियम थिक, आत्माक नहि। तें प्रेम नित्य थिक ई मानि लेब निश्चय भ्रम थिक। एहि हेतु जे नित्य वैह थिक जकर सृष्टि नहि हो। सृष्टिक बाद पदार्थ मात्रक प्रलय होइछ। आत्मा अजर थिक ओकर सृष्टि नहि होइ छैक से सत्ये मुदा जखन कोनो व्यक्ति किंबा वस्तु सँ हम प्रेम करैत छी तँ ओहि समय प्रेमक सृष्टि होइत अछि। सम्बन्ध होयबे सृष्टि थिक। एहि तरहेँ ओकर प्रलयो छैक-ओकर अन्तो छैक। दोसर विषय ई जे व्यक्ति परिस्थितिक दास आ परम्पराक अनुगामी होइत अछि। ओहि परिस्थिति-संघात आ परम्परा-समूहक कारणे हृदयक एक अन्यतम विकार केँ हम प्रेम कहैत छी। विचार सभक हेतु वातावरणक आवश्यकता आ वातावरण

परिवर्त्तनशील होइत अछि। एहि कारणे प्रेमो परिवर्त्तनशील आ तें अनित्य थिक। नित्य वस्तु निर्विकार होइछ आ अपरिवर्त्तनीय।

धृष्टता क्षमा करब। प्रायः तर्कशील आ तर्कप्रिय किशोर भैया केँ एहि तरहें तर्क द्वारा शान्त बनयबाक हेतुए अपने लिखने छलियनि। हम अपने सँ तर्कक हेतु नहि अपितु अपन शंका निवारणक हेतु लिखि रहल छी। हमरा बुझबा मे प्रेम आत्मा जकाँ नहि होइ छैक अपितु अनुकूल वातावरण पाबिक' एकर विकास होइ छैक। हँ, ई भ' सकैत अछि जे कहियो ई किछु कालक हेतु दबि वा कमि जाय मुदा, मेटा नहि सकैत अछि।

अस्तु, कृपया अपना नाबुझ बहिनिक शंका केँ क्षमा क' देल जाय।'

हम पत्र पढ़िक' आश्र्यचकित भ' उठलहुँ ओकर प्रतिभा पर। हमर ओहि चाकर चौरस व्याख्या केँ छोटकी आरी सनक तर्क सँ कोना विलक्षण रीतिएँ ओ खंडित क' देने छलि? तमसाइयो क' प्रसन्न भ' गेलहुँ। तहिया सँ हमरा दूहू गोटेक पत्र-व्यवहार जारी अछि। मुदा, अहाँ केँ आश्चर्य होयत जे आइधरि हम दूहू गोटय एक दोसराकें नहि देखने छी। किशोर बम्बइ मे एक महाराष्ट्री युवती सँ विवाह कय ओतहि नोकरी करैत अछि। सुधाक विवाहो मुजफ्फरपुरे मे भेल छैक। हँ, एकबेर हम सुधा केँ देखने छलिऐक अवश्य मुदा चीन्हिक' नहि। प्रायः ओहो देखने होयत।

बात ई भेल जे हम गाम सँ पटना आयल छलहुँ आ ओहो अपन पिताक संग पटना आयल छलि। हम प्रदर्शनी मे घूमि रहल छलहुँ कि एक बुकस्टाल पर नजरि गेल। विचारल जे मन बहटारबाक हेतु कोनो पत्रिका कीनि लेल जाय। देखल...क एक अंक छल। उठाक' देखय लगलहुँ तँ मुखपृष्ठ पर हमर एक कविता छपल छल। हम कविता पढ़ि रहल छलहुँ कि पाछाँ सँ केयो बाजलि—'महाशय! एहि पत्रिकाक एके प्रति अछि आ हमरा किनबाक इच्छा अछि। गप्प ई थिक जे एहि मे हमर भाइक कविता छपल अछि। मुदा अहाँ...'

हम घूमिक' देखल जे एक सुकुमारि बालिका ओ पत्रिका लेबाक हेतु व्यस्त-विह्वल भ' रहलि अछि। हम दाम द' चुकल छलिऐक। ओकर विह्वलता देखि हँसैत-हँसैत कहलिऐक—'लिअ।'

'धन्यवाद!'—ओ बाजलि आ खिलैत जकाँ पत्रिका ल' चल गेलि।

पटना किछु दिन रहलाक बाद डेरा पर अयलहुँ तँ सुधाक चिट्ठी भेटल ओ पत्र मे पटना अपना पिताक संगे जयबाक बात लिखिक' लिखने छलि जे ओतय

प्रदर्शनी मे एक दोकान पर गेलहुँ...पत्रिकाक एक अंक लेने एक सज्जन भेटलाह। हम पहिनहि ओहि दोकान पर ओहि पत्रिका केँ देखने छलहुँ मुदा हम पछाति कीनि लेब ई विचारि नहि किनने छलहुँ। संयोग एहन जे ओहि मासक ओ अंक आर कोनो दोकान मे प्राप्त नहि छल। हड़बड़ा क' पुनि ओहि दोकान पर अयलहुँ तँ उक्त सज्जन पत्रिका केँ किनबाक उपक्रम मे छलाह। मुखपृष्ठ पर अहाँक अपरिचित शीर्षक कविता प्रकाशित छल। हम घबड़ाक' जे कहीं ई ल' ने लेथि माँगि बैसलियनि आ ओहो द' देलनि। तखन तँ ततेक खुशी छल जे होशे नहि रहल दाम देबाक। पछाति कतबो तकलियनि ओ नहि भेटलाह...इत्यादि इत्यादि।

चिट्ठी पढ़ि हम पुलकि उठलहुँ। कहि नहि किऐक आइधरि हम ओकरा नहि लिखि सकलियैक अछि जे ओ सज्जन व्यक्ति हमहीं छलहुँ आ अपना भाइक कविता लेल व्यग्र होइबाली बहिनि केँ हुनक भाइये पत्रिका देने छलनि।

एखनधरि हमरालोकनिक पत्र-व्यवहार चलि रहल अछि। ओ कतेको बेर हमरा अयबाक हेतु लिखैत अछि मुदा हम ई सोचिक' नहि जाइत छी जे की होयतैक, जँ जीवन भरि एहिना निमहि जाय आ हम एक दोसरा केँ नहि देखी। हमरा एहि अदृष्ट मित्रता पर गर्व अछि विशेष क' सुधा सन स्नेहमयी, नेक, भावुक आ प्रतिभाशालिनी बहिनी पयबा पर जकर तर्क नहि, प्रेम सिद्ध क' देलक अछि जे—

प्रेम नित्य थिक...
प्रेम अजन्मा थिक...
प्रेम अमर थिक....!

वैदेही, अप्रैल 1957

संकल्पक आधार

देबू दरबज्जा पर पयर देलक कि आँगन सँ कलहक स्वर-संघर्ष सुनबा मे अयलै। एक स्वर पुरुषक आ दोसर स्त्रीक। निमिष मात्र लेल ओकरा बड़ आश्चर्य भेलैक।

शशिधर सन गम्भीर आ मनस्वी तथा पूर्णिमा सन मृदु, कोमल आ मधुर स्वभाव वाली आ तखन...तखन...!

देबू ठाढ़े-ठाढ़ एक-एक बेर चारूकात नजरि फेकलक। बीच दरबज्जा पर गाड़ल मेह...दरबज्जाक एक कोन पर इनार, ढेकुल कात मे गोहाली, एकटा लादि...पूब मुहेँ चौखड़ा दलानक घर...घर गोबर सँ नीपल...एकटा चौकी...एकटा आधा घोरल खाट...तीनटा कुरसी...एकटा बड़का तक्खा पर किछु किताब, किछु अखबार, किछु कागत पत्तर।

देबू किछु उदास जकाँ भ' उठल। ओकरा भेलैक जे हम बड़ अनुपयुक्त अवसर पर पहुँचलहुँ अछि। एक मोन भेलै जे घूमि जाइ उनटे पयरें, मुदा शशिधर जखन ई बात बुझत तँ...।

ता' आँगनक स्वर किछु तीव्र भेलैक, 'अहाँक कोनो दोष नहि, ई हमर जरलहा करमक दोष थिक।'

देबू केँ ई बुझबा मे भांगठ नहि रहल जे पूर्णिमाक विषाद थिक। ओ ओकरा सँ परिचित छल, स्वभाव सेहो नीक जकाँ बुझल छलै; ओकर पति स्नेह सेहो ओकरा सँ अविदित नहि छलै आ तखन ई उक्ति...। से ओकरा बड़ आश्चर्य भेलै आ ई बुझबा मे आबि गेलै जे प्राय: झगड़ाक कारण कम गम्भीर नहि होयतै।

ता' उत्तर मे शशिधरक स्वर सुनि पड़लै, 'हँ हँ, किएक नहि, हमरा सन जरल व्यक्तिक संग भेल तखने अहाँक अदृष्ट जरि गेल।'

देबू केँ बुझबा मे अयलै जेना एहि स्वर-प्रवाह मे शशिधरक हृदयक सम्पूर्ण क्षोभ आ ग्लानि बहि गेल हो। अपन सब पिसिऔत भाइ मे देबू शशिधर केँ रवि सँ बेसी मानै छल, सिनेह करै छल। से ओकर वैवाहिक जीवनक असफलता

अथवा एहि प्रकारक कटुता सँ ओकरा बड़ दुख भेलै। अनायास ओकर करुणा, निरीह, सरल आ लौह शशिधरक प्रति उमड़ि गेलै। निमिष मात्र मे देबू केँ मोन पड़ि गेलै शशिधरक पछिला जीवन आ विवाह कालक ओकर मानसिक उद्वेग...

शशिधर, पूर्णियाक ओकील साहेबक दुलारि कन्या पूर्णिमा सँ विवाह कयने छल, चारिम वर्ष कॉलेज मे पढ़ैत काल दुहू गोटा मे परिचय भेलै, घनिष्टता भेलै आ सिनेह भेलै। शशिधर अधिक खन अपन पितिऔत भाइक मामक डेरा पर जाइ छल जे माम बूढ़ भेला पर ओही गर्ल स्कूलक भूगोल शिक्षक छलाह जाहि मे पूर्णिमा पढ़ै छलि। से ओहि मामक डेरा पर पूर्णिमा सँ अधिकखन भेट होइ छलनि। कते दिन तँ पढ़ाइयो देने रहथिन।

पूर्णिमा नामानुरूपे सुन्नरि, पूर्णियाक बंगीय प्रभावें भावुक, कोमल, संगीतप्रिय, पढ़बा मे साधारण मुदा परिधान-परिवेश मे मॉडर्न, अल्ट्रा मॉडर्न। मुदा तैयो कतेकरास तिरहुत, मलार आ नचारीक विलक्षण अभ्यास। सिनेमा गीतक तँ कथे कोन। एते होइतो घरक काज उदेम, भानस भात, आ स्वेटर-टकुड़ी मे कम प्रवीण नहि।

...से शशिधर केँ बड़ दीब लगनि। अपन कल्पनाक अनुरूपे। आदर्श। शिक्षा समाप्ति धरि विवाह-विरोधी शशिधर केँ अपन तर्क-पक्ष बड़ कमजोर बुझबा मे अयलनि। पाछू तँ मोनक मलसी मे पूर्णिमाक आकृतिक टकुड़ी सदिखन नाचै लगलनि। शशिधर कवि नहि, मुदा, श्रेष्ठ कविहृदय, नीक वक्ता आ प्रान्तक कम्युनिस्ट नेता सँ बेस अपेक्षा—पात, 'सिम्पथाइजर'। बाप नेन्ने मे मरि गेल रहथिन मुदा, माम बड़ चतुर, कहुना कहुना पूर्णिया स्कूलक खर्च जुटबैत रहथि। कॉलेज मे जाइत देरी दूटा ट्यूशन सेहो ध' लेलनि शशिधर।

...से अनन्तपूजा छलै आ ओकील साहेब-पूर्णिमाक पिता शशिधरो केँ नोत देने रहथिन। सब मिलिक' शशिधर केँ सत्पात्र घोषित कयलथिन। आ माम सँ विचार पुछैत ओकील साहेब शशिधर सँ वचन ल' लेलनि। शशिधर केँ एकान्त मे पाबि पूर्णिमा कहने छलै, 'हमर गौरी-पूजा करब सार्थक भेल।'

सिद्धान्त भेल आ घुरती साल आइ.एस-सी.क रिजल्ट होइत विवाह भेल। सबटा मोन पड़ि अयलै देबू केँ। मोन पड़ि अयलै राति भरि जागि जागि क' शशिधर पूर्णिमा सँ पहिल परिचय, रूप, स्वभाव आ किदन कहाँदन सब कहैत रहैक।

ओकरा ठोर पर एकटा विचित्र प्रकारक हँसी पसरि गेलैक।

...से पूर्णिमा आब एहन भ' गेलि शशि लेल? शशि एहन भ' गेल पूर्णिमा लेल? एहन...एहन...? मने ओ एहि सब झंझटि मे नहि पड़ल, ता सुनबा मे अयलै—'केयो अपना मोने किछु बुझि लेताह तँ हम की क' सकै छिऐ... ?' नारी स्वर छल।

'हँ, हम अपने मोने ई सब बूझि लै छी, किने। तँ अहाँ केँ हमहीं दूरि क', देल...। नहि तँ जेठे बहीनि जकाँ अहूँ कोनो डाक्टर ओकीलक घर जाय करितहुँ, एना माटि तँ नहि फोड़ितहुँ...।'

'अहाँ कथीले हमरा दूरि करब, हमहीं अहाँ केँ दूरि क' देल। हमरे लेल अहाँक पढ़बा-लिखबा मे बाधा भेल; हमरे कारणे ने अहाँ किछु नहि क' सकलहुँ, नहि तँ आइ दोसरे दिन दुनिया होइतै, एम ए. क कतहु...।'

'हम की ई सब नहि बुझै छिऐ जे अहाँ माने-मतलब लगा क' कहि रहल छी। से हम की मिथ्या कहने छलहुँ ? जँ ओकील साहेब जे सब गछने रहथि आइ दितथि तँ...।'

'हे ! गोड़ लागै छी, पच्चीस दिन कहलौं जे अहाँ केँ हमरा जतेक जे—किछु कहबाक हो से कहू, मुदा बाबूजी केँ एहि मे नहि सानियौन।'

'एहन जँ बाप रहितथि तँ रखबे करितथि ने दू-एक वर्ष...से तँ...'

'तँ किऐ एहन उताहुल रही दुरागमन लेल ?'

'आब हमरा तामस जुनि उठाउ, हम रही उताहुल ?'

'बाजू तँ...। अच्छा छोड़ू, आइ पाबनि-तिहार थिक, लड़ाइ-झगड़ा जुनि करू।'

'हम झगड़ा करै छी ? हमहीं झगड़ाहि छी किने ? कहियौन महादेव केँ जे हमरा उठा लेता तखन गोटेक नीक क' लेब... ?'

देबू तकरा बाद कोनो उत्तर शशिक दिस सँ नहि सूनि सकल। ओ एहि झगड़ा सँ बेस असंतुष्ट भ' उठल। ओकरा भेलै, भने हम बियाह नहि कयने छी, एहि झंझट आ कटुता सँ जी तँ बाँचि गेल कम-सँ-कम।

एतेक दिन धरि ओकरा होइत छलैक जे वैवाहिक जीवन मे बड़ माधुर्य छैक, मुदा आइ जे वस्तु ओ देखलक, ताहि सँ ओकर धारणा आमूल परिवर्त्तित भ' गेलैक। आ, ताहू मे शशिक वैवाहिक जीवन देखि क' जे प्रेम-विवाह कयने छल, जे स्वयं पढ़ल छल, जकर पत्नी शिक्षिता छलैक आ तकर ई हालति...देबू केँ आइ पहिलुक बेर अपन विवाह नहि करबाक कारणे अपनापर अत्यन्त हर्ष भेलैक। आ, एही प्रसन्नताक स्थिति मे दृढ़ निश्चय कयलक जे विवाह नहि करबाक चाही, ई बाधा थिक, अभिशाप थिक, जंजाल थिक, झंझटि थिक आ, थिक घोर प्रवंचना...।

हठात् डेउढ़ीपर टाट लग पदचाप सुनबा मे अयलैक देबू केँ । ओ बूझि गेल जे शशि आबि रहलाह अछि। ओ सकपका उठल, बचबाक हेतु। मोनहिमोन औना रहल छल कि ता शशि देखि लेलकैक।

'अरे, देबू भाइ, कखन सँ ठाढ़ छ'? कुशल किने... ?'

'हँ, यैह तुरत्ते दरबज्जा पर पयर देल अछि।'

'से हम ई कहाँ कहै छियहु जे तों बड़ीकाल सँ आँगनक मधुर सम्भाषण सुनै छलह'—शशि तीक्ष्ण दृष्टि सँ देबूक भावहीन तथा निष्प्रभ आकृति दिस तकैत मन्द-मन्द कुटिल मुसुकान मुसकि बाजल—'मुदा, यदि एहि कारणे अविवाहित रहिक' भूदानी, जीवनदानी आदि बनबाक विचार मे एखन हठात् दृढ़ता आबि गेल हो तँ बड़ मिथ्या मे पड़ि जेबह, से कहि दै' छियहु।'

'से बात नहि, से नहि...!' देबू बाजि सकल कहुना।

'हे ! सुनै छी'—शशि बीचे मे आँगन दिस साकांक्ष ताकि किछु उच्च स्वर मे बाजल—'देबू अयला अछि, किछु पनिपिआइ-पातक ओरियौन करू फुर्ती। चलह ने आँगने।' आ, हाथ पकड़ने आँगन दिस विदा भेल।

शशिक ई आवेश आ उद्‌गार देखि देबू गद्‌गद् भ' गेल, चलैत-चलैत बाजल-'भाइ! हम एखन जलखै नहि करब; आब एके बेर, तों तँ बुझिते छह जे हम प्राकृतिक विधियेँ....'।

'हँ, हँ, से तँ बुझले अछि'-शशि बिहुँसैत बाजल-'हमहूँ तोहर शिष्यत्व स्वीकार क' लेलियहु अछि। गोरखपुर सँ 'आरोग्य' मँगबै छी। प्राकृतिक-चिकित्साक कते रास पोथी सभ मँगा-मँगा पढ़ल अछि। आब तँ गाम मे हम कतेक गोटाक रोगो छोड़ा रहल छी...।'

'अच्छा... ? तखन तँ माटि-पानि बेसी महत्व ल' नेने हेतहु'—एक निमिष बिलमिक' बाजल—'आ समाज-सेवाक एकटा साधन...।'

'तें ने माटि-पानिक काज आरम्भ कयल अछि'। एहि पर दूहू गोटे हँस' लागल।

देबू जँ-जँ आँगनक निकट भेल जाइ छल, तँ-तँ ओकर मोन संकोच सँ भरल जाइ छलैक। भौजी सँ दृष्टि मिलला पर की स्थिति हेतैक? केहन मन:स्थिति ?...

ता, डेउढ़ी टपल आ हुलसिक' पूर्णिमा आगू बढ़लि आ बिहुँसैत बाजलि-'आउ बच्चा आउ, ...कतेक दिन पर मोन पड़ल अछि ? हँ देहाती लोक केँ आब के पुछतै ?' आ कटाक्ष क' पति दिस तकलक।

'देवी-देवताक दर्शन करबा लेल तँ लोक जंगले-जंगल बौआइते अछि...।' देबू बिहुँसिक' उत्तर देलक आ आँगन मे ओछाओल पटिया पर बैसैत बाजल। ओ पूर्णिमाक व्यवहार सँ विस्मित छल। ओ कटुता, खिन्नता आ अन्यमनस्कताक आशा रखैत छल। मुदा से कहाँ छै ?

—'बच्चा! अहूँ सन लजकोटर केँ आब एते फुरि जाइ छै! अच्छा बाजू तँ की जलखै करब ?'

'भौजी! आब एके बेर खायब, जलखै नहि...।'

'ओ! अहाँ केँ तँ हठो नहि करब बेसी। चेलाक जखन ई हाल तखन गुरुक की? सत्ते कहै छी बच्चा, जहिया सँ बूढ़ी मुइली, सदिखन नङो-चङो करैत रहै छथि। माथो दुखयतनि तँ कहथिन सानू माटि...। हँ, पाछू कहब ई सभ, एखन सरबत पीब किने?'

'अहाँ हाथक पीबि लेब...।' देबू बिहुँसैत उत्तर देलक आ चारूकात ताक' लागल घर आँगन दिस। उतरबरिया आ पछबरिया घर ईंटाक, छाड़ल खपड़े सँ...आँगन मे इनार लग ढेक...।

'तों तँ एहि बेर ई अढ़ाइ वर्षपर अयलह अछि, ई सभ हिनके व्यवस्थाक प्रतापें...' पछबरिया घर सँ बहराइत पूर्णिमा दिस आँगुर देखाक' शशि बाजल।

'सदिखन बनबै मे बड़ मोन लागै छै किनको।' पूर्णिमा कृत्रिम उपरागक स्वर मे बिहुँसिक' बाजलि आ इनार दिस डेग उठौलक।

'अहाँ केँ बनबै छथि की नहि से तँ अहीं कहब, मुदा अहाँ धरि बनाइए देलिअनि हिनका...।' पूर्णिमा दिस तकलक। ओ झगड़ा बला रूप ताकि रहल छल।

'है दूनू तँ तेहने बतकट छी।' बाजलि आ झटकिक' इनार दिस विदा भेलि। देबू सरबत पी नेने छल। आँगनक पटिया पर बड़ी काल धरि एम्हर-ओम्हरूक गप्प-सप्प होइते रहल देबू आ शशि मे।

पहिल साँझ आरम्भ भ' गेल छलैक। ता पूर्णिमा थारी मे फलहारक वस्तु नेने आबि क' आगू मे ठाढ़ि भ' गेलि, बाजलि—'गप्पे टा लड़बैत रहब कि हाथो पयर धोब? देखू फलहारक बेर भ' गेल। तीनटा तारा उगि गेलैक।'

'कथीक फलहार हौ शशि भाइ?' देबू केँ बड़ आश्चर्य भेलैक।

'की...पुछै छी, हम लाख कहलिऐन जे अहाँ व्रत नहि करू, मुदा हमरा गप्पक मोजर कहिया देलनि! आ देखिऔन मुँह चोंचाक खोता जकाँ लटकि गेल छनि, जाउ, उठू फुर्ती सँ हाथ पयर धोने आउ...।' पूर्णिमा बाजलि आ पतिक बाँहि पकड़िक' उठबय लागलि।

'ओ हँ, आइ तँ नरकनेवार चतुर्दशी छलैक किने, तोरो एहि सब मे मौगी जकाँ विश्वास छह भाइ...?' देबू हँसल।

'साल मे एकटा क' लैत छी, ओहिना बहुत दिन सँ करैत आयल छी तें, कोनो खास गप्प नहि—!' शशि लजायल बाजल आ बाजि थारी दिस तकलक, पुनः पूर्णिमा दिस ताकि क' बाजि उठल—'हम नहि करब फलहार...?'

'किऐ?' पूर्णिमा चौंकलि।

'अहाँक दुष्टताक कारणे।'

'की? पूर्णिमा पुछलकैक। देबू अवाक छल, कखनहुँ शशि दिस, कखनहुँ पूर्णिमा दिस बकर-बकर तकैत छल।

'सबटा फल हमरे थारी मे परोसि देलिऐ, अपना लेल किछु नहि रखलिऐ?'

'सबटा कथी लेल देब...?'

'हमरा एतेक मूर्ख बुझै छी, हमहीं हाट सँ अनने रही आ हमरे बुझबै छी, जाउ, हम नहि करब फलहार...।'

'देखैत छियैन बच्चा, एहिना सदिखन हमरा नङो-चङो करैत छथि, देखू हम अपनो लेल राखि लेने छी। गोड़ लागै छी एना जुनि करू, हमरा फेर भानसो करबाक अछि।'

'जा धरि अपना लेल अदहा बाहर नहि करब ताधरि हम नहि करब फलहार।'

'कोन जन्मक अहाँ हमर मुद्दै छी से नहि जानि...।'

देबू विस्मित छल, विमुग्ध। इएह झगड़ा थिकैक? तखन सिनेह ककरा कही? झगड़ा आ सिनेहक बीचक सीमा-रेखा कत' छैक? कोन सत्य थिकैक? की छैक वियाह मे, की...? की...मधुरता? सिनेह? झगड़ा?

ओ किछु नहि बुझि सकल। मात्र बकलेल जकाँ बकर-बकर ताकिते रहि गेल। मुदा एतेक धरि अवश्य बुझलक जे आजन्म कुमार रहबाक संकल्प डगमगा रहल अछि। देबू तकलक पूर्णिमा दिस। पूर्णिमा शशिधर दिस ताकि रहल छलि। एकेबेर सब भभाक' हँसि पड़ल।

अभिव्यंजना : 1960

जीवनक असौकर्य

बात किछु वर्ष पहिलुके थिक। रेलगाड़ी फुज'-फुज' पर छल कि रिक्सा सँ कूदिक' बुझू जे एक तरहें दौड़िेयेक' फुजलाहा फाटक वाला सोझाँक डिब्बा मे चढ़ि गेलहुँ।

'आउ, आउ; कोमहर चललहुँ अछि?'

—'कने सहरसा जयबाक अछि।' देवता भाइक उत्तर दैत, माथक घाम पोछि हम हुनके लग सुस्थ भावें बैसि रहलहुँ।

किछु व्यक्ति जातिवाद पर बहस क' रहल छलाह। एकटा सरदारजी खिड़की पर अपन दुनू टाँग रखने, खाकी हाफपैंट पर उजरा कमीज झाड़ने बड़ बेसुरा ढंग सँ सिनेमाक कोनो गीतक डाँड़ तोड़ि रहल छलाह। सामने बला बेंच पर बैसल एक विद्यार्थीजी छन-छन माथपरक अलबटाह झुलफीक लट केँ झटकैत तन्मय भावें चिनिया बदाम सेहो खा रहल छलाह आ अपना संगी सँ 'समाज अध्ययन' मे भेटल एसेसमेंटक नम्बरक प्रसंग गप्पो क' रहल छलाह। सौंसे घिनाओन जकाँ खोंइचा छिड़ियायल छल। एकगोटे तमाकू चुनाक' तेना थपड़ी देलथिन जे लगक दू-तीन गोटे पटापट छीक' लगलाह। केयो ग्रामीण अपन बड़का लाठी बेढंग जकाँ उकड़ू रखने टाहि लगौने छल—'रमया रौ नेका गेलौ पुरुबे बनिजिये रौ ना।' बड़ी काल धरि अपन स्वभावानुसार मौन रहलहुँ।

रेलगाड़ी मे सभ सँ पैघ असौकर्य ई होइत छैक जे अहाँ जे नहियो देख'-सुन' चाहैत छी, सेहो सुन'-देख' पड़त। एहि सँ बाँचब कठिन। हम कहिते छलहुँ कि तावत कोठलीक भीतर दिस सँ मने पछुलका भाग सँ (हम मुँहे लगक बेंच पर छलहुँ) तीनटा रिफ्यूजी छौंड़ी छपलाहा प्रमाणपत्र लेने हमरा सभ लग पहुँचलि।

सभ सँ जेठकीक मुँह श्रीहीन छलैक, जेना समय सँ पहिने पाकल चोकरनुमा आम। दोसर, पिंडश्याम नहि, जमुनियाँ रंगक छलि, जकरा मुँह पर पानि मुदा गोटीक दाग बेस छलैक। तेसरि, गोर चामक साधारण मुखाकृतिवाली भरल-पुरल देह आ एक विचित्र प्रकारक करुणाप्लावित नजरि रखैत छलि। तीनू युवती सजलि-सँवारलि छलि।

पाइ-ताइ देला-लेलाक बाद ओ सभ जखन फाटक लग ठाढ़ भ' क' अपना मे हँसि-हँसि क' फदक' लागलि तँ देवता भाइ जेना साधिकार-स्वरें कहलनि, 'ई सभ आइ-काल्हि खूब पैसा कमाइत अछि।'

'से कोना?—हम जिज्ञासा कयलियनि।

'अरे, सेहो नहि बूझल अछि?' मुँह केँ रहस्यात्मक मुद्रा मे टेढ़ करैत आ गोरकी छौंड़ी दिस कनखी मारि, हँसैत सन बजलाह—'जे दिन भरि तँ पैसा मंगैत अछि आ राति मे पेशा करैत अछि। देखैत नहि छिऐक बगय-बानि।'

'लाचारी छैक।' हम संक्षिप्त उत्तर देलियनि।

'की लाचारी रहतैक? ई सभ बड़ छहतरि होइत अछि।'

'भाइ'—हम कहलियनि 'हमरा—अहाँक भाइ-बहीनि केँ खयबा-पीबाक सुविधा छैक। रहबा-सहबाक, बाहर-भीतर होयबाक, झाँपन-परदाक सभ सुविधा छैक। काज-उदेम, सर-कुटुम्ब, पर-पाहुन, लोक-वेद, नेना-भुटका, घर-आँगन, पर-पड़ोसी कतेक ने साधन छैक जीवन-यापनक। जँ ओकरो सभ केँ एहि सभक असौकर्य भ' जाइक तँ पेटक हेतु नहि-जीबा हेतु की नहि कर' पड़तैक। एकरा सभक समक्ष जीवनक भयंकर असौकर्य छैक। जड़ि-मूल सँ विच्छिन्न, सर-समाज सँ दूर, देश-कोस सँ भिन्न अनपेक्षित माटि-पानि मे जीबाक हेतु एकरा सभ केँ अगत्या किच्छु कर' पड़ि सकैत छैक। मुदा...'

तावत् गाड़ी परसरमा स्टेशन पर पहुँचि गेल छल। देखलियैक जे एकटा बुढ़बा स्टेशन लगक गाछी सँ-जत' ओकरा सभक नितान्त अस्थायी डेरा छलैक-दौड़ले आबि, एकटा पचकलहा सिलबरिया लोटा, जकर पेन ईंटाक चूल्हि पर चढ़ल रहलाक कारणे कारी भ' गेल छलैक, ओहि गोरकी छौंड़ीक हाथ मे द' देलकैक। जेना दुधगरि गाय केँ लोक बड़ यत्न सँ हरियरी दैत छैक।

छौंड़ी हँसि-हँसिक' ओहि महक पानिवला दूध ठाढ़े-ठाढ़ पीब' लागलि।

दोसर करिक्की छौंड़ी केँ ओकर अधवयसू माय जनेरक रोट द' गेलैक, जाहि पर नोन-तेलक संग पियाजुक खंडी छलैक। जेना बिसुखैत महींस पर सँ लोकक नजरि उचट' लगैत छैक।

सभ सँ जेठकी, मने हम की नेना छी? हमरा कथीक कमी? सभ किछु भोगि चुकलि छी-एहने सन क्रमवला मुद्रा मे अतृप्त नजरि सँ ओकरा सभ दिस ताकि रहलि छलि। जेना ठाँठ गाय केँ मड़ुओक नार दुर्लभ! हम कहलियनि—'इएह थिक जीवनक असौकर्य?'

गाड़ी चलि पड़ल। देवता भाइ प्लेटफार्म सँ घसकैत गाड़ी पर सँ कूदि जकाँ पड़लाह आ जोर सँ बजैत कहलनि—'आब काल्हिए भेंट होयत सुपौल मे।'

हम सोचय लगलहुँ देवता भाइ केँ कथीक असौकर्य छनि जे चलैत गाड़ी पर सँ फानि गेलाह! ओना तँ मनुष्यक जीवन मे असौकर्यक पथार लागले रहैत छैक, मुदा देशक विभाजन सँ एक एहन जातिक जन्म भेल अछि, जकरा सोझ भाषा मे शरणार्थी कहल जाइत छैक–तकर असौकर्य केँ कोन सीमा मे बान्हल जा सकैत अछि! कोनो मे नहि। ओकर असौकर्य असीम अछि, अनन्त अछि।

मिथिला मिहिर : 16 अक्टूबर 1960

पुरान पत्र आ टटका बात

प्रिय विनय,

हम स्वयं अपना मन सँ ई प्रश्न करैत रहैत छी जे कहिया धरि बतहपनी करैत रहब? मुदा...मुदा उत्तर किछु नहि भेटैत अछि। नहि कहि जीवन भरि एहि सर्वग्रासी बतहपनीक चक्कर सँ उबरि सकब वा नहि?

हाल मे फेर एक दिन एक घटना भ' गेल अछि। ओहि दिनक बात थिक। मानसी स्टेशन पर पटनाक हेतु ट्रेनक प्रतीक्षा मे अपन मीतक संग मुसाफिर खाना मे 'होल्ड आल' ओछाक' पड़ैत छलहुँ कि सोझाँ मे देखैत छी जे एक परिवार कोन मे बैसल अछि। एक संभ्रान्त महिला, एक नववधू आ एक कुमारि कन्या जे भरिसक अपना केँ चिन्हबा-बुझबाक अभिशाप वा वरदान जे कही दुहू सँ अपरिचित छलि। एक बदमास छौंड़ा, जे अपना बदमासी सँ माय केँ तंग क' रहल छल। लगे मे बैसल एक वयस्क पुरुष, जे अपना शून्य आ भावहीन आँखि सँ लोकक आवागमन केँ अन्यमनस्क जकाँ देखि रहल छलाह। हम कने विश्राम करक विचारें ओछाओन पर बैसबे कयलहुँ कि देखलहुँ जे ओ कन्या टकटकी लगाक' हमरे दिस ताकि रहलि अछि। हम, जे मनहिमन ई चाहि रहल छलहुँ, ई देखिक' प्रसन्न होयबाक बदला खौंझा उठलहुँ। मन मे भेल ई प्राय: ठीक नहि क' रहलि अछि। एकरा एना नहि करक चाही। शील नामक पदार्थ तँ किछु थिक।...आ कि देखलहुँ जे मीत अपना सर्वान्त: कारण सँ ओकरा आँखियें द' क' गीड़ि जयबाक इच्छा क' रहल छथि।

मुदा की ई पुरुषक-आजुक युवक समुदायक सभ सँ पैघ निर्लज्जता नहि थिक? की ई उचित थिक? समाजक लेल, नैतिकताक लेल, चरित्रक लेल आ सभ सँ बढ़िक' मनुष्यताक लेल ई कतेक कलंकक बात थिक? हमरा लोकनि सामाजिक प्राणी थिकहुँ। समाजे सँ अपने सभ बनैत छी या अपने सभ सँ समाज बनैत अछि। अपन उत्पादनक धरातल केँ विकृत क' की केयो आगाँ बढ़ि सकैत

अछि ? मनुष्य जानि-बूझिक' अपना पर बन्धनक नियंत्रण लेने अछि। बन्धन, हँ-हँ, हम एकरा बन्धने मानैत छिऐक। मुदा, ई ओकर शान्तिक हेतु आर प्रजनन शक्ति केँ जीवित रखबाक हेतु आवश्यक अछि-अनिवार्य अछि। मनुष्य बर्बर-युग केँ पार क' सभ्य आ सभ्यताक उपासक बनल आगाँ बढ़ल जा रहल अछि। किन्तु, विनय, हम पुछैत छियहु जे अपन उद्दाम वासनाक शिकार बनल, अपना चारूकात कलुष ओ अविश्वासक वातावरण पसारिक' की सरिपहुँ सभ्यताक आडम्बर रचिक' आदिम युगक असभ्य आ जंगली मनुष्य हमरालोकनि नहि बनल जा रहल छी ? डारविनक अनुसार जत' सँ विकास भेल छल, की पुन: ताहि दिस मनुष्य प्रत्यावर्त्तित नहि भ' रहल अछि ?

मीत दिस तकलहुँ तँ देखलहुँ जे ओ किछु अपूर्वे मुद्रा सँ बिहुँसि रहलाह अछि। हमर आँखि अनचोके ओहि कन्या दिस गेल तँ ओकरा आँखि सँ टकरा गेल। ओ तत्क्षण लाल भ' उठलि। हमर मन कोना-कोना दन भ' उठल आ चोट्टहि अपन आँखि खसा लेलहुँ। पड़िक' एक पुस्तक बहार कयलहुँ आ पढ़बाक बड्ड चेष्टा मे भिड़ि गेलहुँ। मुदा, ओ चेष्टा व्यर्थे नहि, विकृत भ' गेल। तकरा बाद जँ भगवान फूसि नहि बजाबथि, ओही अवचेतन रूपें ओकरा दिस तकलहुँ, एकबेर-दू बेर...आ एहि तरहें अनेक बेर।

एहि बीच मे हमरा अनुभव भेल जे ओ किछु सशंकित अछि-भयभीत अछि। ओकर आँखिक लालसा स्पष्टत: कहि रहल छलैक जे ओ एखन आर जीब' चाहैत अछि मुदा जेना बलिवेदीक खड्ग माँजि-मूजि क' साफ कयल जा रहल अछि आ ओ डूबलि जा रहलि अछि निराशाक अनन्त अपरिचित ओ अथाह सागर मे।

प्रिय बन्धु, तोरा भेंटे भेलापर सभ बात खोलिक' कहि सकबहु। लिखबा मे सभ बात नहि आबि पबैत अछि। संक्षेप मे गाड़ीक एक डिब्बा मे अकस्मात् चढ़ि गेला पर गप्प-सप्पक क्रम मे ज्ञात भेल जे एहि कन्याक नाम थिकैक नमिता, आ ओ पुरुष नमिताक पित्ती थिकथिन। गया मे नमिताक पिता नोकरी करैत छथिन। पटना मे किछु काज छनि तें ई लोकनि पटना होइत गया जा रहल छथि। काज ई जे नमिता दाइक विवाह पटनाक सचिवालयक कोनो पैंतीस वर्षक बयसाहु किरानीजी सँ होम' बला छनि। एहन किरानीजी सँ जे एहि सँ पहिने एक पत्नीक स्वर्ग गमन सँ विधुर भ' चुकलाह अछि। आ से हुनके कन्या देखयबाक योजना छनि। व्यवस्थाक टाका पर्याप्त नहि द' सकबाक कारणे हारिक' एना कर' पड़ि रहल छनि। पटना सँ ई काज क' लेलाक बाद ई लोकनि गया जाइ जयताह।

तरे-तर सभक नजरि बचाक' हम नमिता दिस तकलहुँ तँ देखबा मे आयल

जे ओ पीयर-पीयर सन भेलि हमरा दिस जेना सहायता चाहैत जकाँ अद्‌भुत याचनापूर्ण दृष्टि सँ बड़ करुण आ दयनीय रूपें देखि रहलि छथि।

'तँ की विवाहक सभ निश्चय भ' गेल अछि आ ओहि किरानियेजी सँ विवाह होयब आवश्यक अछि?'—कनेक प्रगल्भ मुदा तटस्थ भावें हम पुछलियनि।

'की कहलहुँ?' भद्र पुरुष, नमिता दाइक पित्ती अर्थपूर्ण दृष्टि सँ हमरा पर कने तमसायल जकाँ प्रश्नक उत्तर प्रश्ने मे देलनि।

'कहलहुँ जे किछु अवस्था बेसी बुझि पड़ैत अछि।'—हम कहलियनि।

'अहाँ की करैत छी?'—अकस्मात ओ सोझे प्रश्न क' देलनि।

'जी, हम?'—नमिता दिस देखैत, जे विस्फारित नेत्रें हमरा भीजल पिपनी सँ करुणा बरिसबैत देखि रहलि छलीह, हम कहलियनि—'हम तँ पटना मे पढ़ि रहल छी। एम.ए. क फाइनल थिक एहि वर्ष।'

देखलहुँ जे नमिता दाइक हृदय हुनका आँखि मे हेलि रहल अछि आ ओ जेना किछु माँगि रहलि छथि।

हमर पता-ठेकान आ परिचय-पात पुछलाक बाद आ पुनः एक बेर जेना हमर सर्वे करैत सम्पूर्ण शरीर केँ परीक्षाक दृष्टियें देखिक' पुछलनि—'विवाहक सम्बन्ध मे अहाँक की विचार अछि सुधीर बाबू?'

'जी!' हम कनेक लजाइत सन कहलियनि—'एखन तँ नहि भेल अछि।'

देखलहुँ जेना नमिता विकसित भ' उठलीह। कहलियनि—'आ एखन करबौक विचार नहि अछि (नमिता जेना मुरझाय लगलीह)। हमर अभिप्राय जे (नमिता जेना फेर किछु माँगि रहलि छलीह) अवसर अयला पर देखल जयतैक। (नमिता मादक स्मितिक संग अनुनय-अनुरोध, एकान्त-विश्वास, अनन्य-आशा सभ किछु एक्के संग देने जा रहलि छलीह जे अहाँ हमरा उबारि लिय' ने।)'

कहि नहि, किएक, नमिताक पित्ती बिहुँसि क' हमरा दिस वात्सल्य भाव आ सतृष्ण दृष्टिएँ देखय लगलाह। शेष बात दोसरा पत्र मे।

पटना — तोहर अंतरंग
18/3/1952 — सुधीर

(बीचक पत्र नहि भेटल। एक आरो पत्र एहि प्रकारक छल।)

प्रिय विनय,

आइ बहुत दिनक बाद एक अपरिचित लिपिबला लिफाफ खोलला पर नमिता दाइक छोट भाइक टेढ़-टूढ़ अक्षर मे पत्र भेटल जे हमरा बाबूजी आ नमिताक पिता

मे सौदा नहि पटलनि। ओतेक टाका नमिताक पिता नहि द' सकलथिन आ हमर बाबूजी नहि पाबि सकलाह। आ एहि तरहें नमिताक विश्वास टूटि गेलनि...आ हमर हृदय टूटि गेल...आ की टाका-पैसाक ई सर्वग्रासी दानव एहि तरहें सभ केँ तोड़ि-फोड़ि क' अनेक हृदय केँ खाक' ढेकरैत रहत? ...आ की आइ विद्रोहक सभ सँ पैघ आवश्यकता नहि अछि? की समाजक एहि भयंकर कंकाल केँ खंड-पखंड नहि कयल जयतैक? एहि फूसि आ आडम्बर सँ भरल एहि कृत्रिम जीवन केँ समाप्त क' देब अनिवार्य नहि भ' गेल अछि? आ बन्धन... ? वा व्यवस्था जे मानव-सभ्यताक सहायक छल, आब मनुष्यता केँ जकड़ि क' निर्जीव-निष्प्राण नहि क' रहल अछि? हम ई सभ नहि होम' देबैक। विद्रोह करबैक आ तोड़ि-फोड़ि देबैक एकरा। अपना हृदय मे ज्वालामुखी लेने नमिताक लेल, अपन नमिताक लेल हम विद्रोह करब। सोचि रहल छी जे की ई एके नमिताक प्रश्न थिकैक? की आइ हजारो-हजार नमिता सभक जीवन पर ई पहाड़ नहि ढहि रहल छैक? की समाजक एहि पद्धति केँ बदलबाक हेतु, टाका-व्यवस्थाक एहि दुर्दान्त राक्षसक दाँत तोड़बाक हेतु प्रत्येक युवक केँ विद्रोह नहि करक चाही? ई अवश्य जे किछु व्यक्ति एना करबाक प्रयास कयलनि अछि। मुदा ओ अपवादे थिक। मात्र अपवाद सँ आब काज नहि चलतैक। व्यवस्थाक सुरसा मुँह पसारनहि जा रहल अछि। काटरक टाकाक डाक बढ़िते जा रहल अछि तें सभ जाति आ वर्गमे, सभ समाजमे, भयंकर रूपें ई धुधुआ रहल अछि। सभ जाति मे आब अपवाद नहि, नियम चाही। हम एहि रचनात्मक आन्दोलनक लेल नमिताक सहयोग पयबाक हेतु गया जा रहल छी। शेष दोसर पत्रमे। तोहर स्नेह, सहयोग आ संगक अटूट विश्वास अछि।

पटना — तोरे

3/7/1952 — सुधीर

(ई दुहू पत्र हमरा ओहि मकानक एक कोन मे भेटल जकरा छोड़िक' एक सज्जन दोसरा शहर चल गेलाह अछि आ हम जाहि मे आइ अयलहुँ अछि।)

मिथिला मिहिर : 21 मइ 1961

एक अंक तीन दृश्य

'कनेक आर दही लेल जाय।' देवीजी परसनिहार केँ स्मित आँखि मे संकेत करैत हमरा आग्रह कर' लगलीह।

'नहि, नहि, आब नहि चलतैक।' एक दीर्घ ढेकारक संगहि अपन दूनू हाथ ओरैत हम कहलियनि। मुस्कीक हल्लुक मुदा मिठगर सनक धन्यवाद दैत देवीजी आगाँ बढ़ि गेलीह।

देवीजी बड़ प्रभावशालिनी महिला छथि। नगरक इंटलेक्चुअल वर्गक कोनो सामाजिक वा सांस्कृतिक आयोजन देवीजीक सहयोग बेत्रेक भइये नहि सकैत अछि। हाकिम-हुक्काम सँ ल' क' सेठ-साहूकार धरि पर देवीजीक बेस प्रभाव। सरकारी, गैर-सरकारी कोनो आयोजन हो, देवीजीक पोर्टफोलियो अक्षुण्ण रहैत छलनि।

आइ देवीजीक एकमात्र कन्याक जन्मदिन छलनि। 'बर्थ डे सेरिमनी' कने ठाठ-बाट सँ मना रहल छलीह। ओना, बेबी शेफालिकाक आविर्भाव आइ सँ आठ वर्ष पहिनहि भेल छलैक। मुदा, ता देवीजीक पतिदेव जिबिते छलथिन आ ओ गामे पर रहैत छलीह, जत' एहि मॉडर्न संस्कृतिक ज्ञान ककरो नहि छलैक। आब से बात नहि छैक। आब तँ देवीजी शहर मे चल अयलीह अछि। एहिठामक लोक गाम-घरक लोक जकाँ संकीर्ण, असंस्कृत, असभ्य आ अनुदार नहि अछि। तें देवीजी खूब फैल सँ विकास आ प्रगतिक ठारि छितरा रहलि छथि। बचत योजनाक विभाग मे रहिक' केवल एकर प्रचारेटा नहि करैत छथि, स्वयं बचत सिद्धान्तक अनुसारें अपन जीवनो ढारि रहलि छथि। मुदा बेबीक जन्मदिन मनयबा मे देवी जीक एक विशेष उद्देश्य छनि। अगिला एलेक्शनमे, मने कारपोरेशनक एलेक्शन मे वार्ड न. 5 सँ ठाढ़ भ' रहलि छथि। से बीछि-बीछिक' मुँहगर, कनगर लोक केँ जनसहयोग प्रेसक कलात्मक ढंग सँ छापल कार्ड बिलहल गेल छल। नोतिहारीलोकनिक लिस्ट बड़े सोच-विचारक बाद तय भेल छल जे कतहु केयो

छुटि नहि जाथि। देवीजी वार्ड न. 5क विभिन्न दलक सेठ-मुखियाक संग-संग अपना क्लबक कतिपय मित्रो प्रभृति केँ बजआने छलथिन। स्थानीय पत्र-पत्रिकाक कतिपय संवाददातालोकनि सेहो निमंत्रित छलाह। हम यद्यपि उपर्युक्त तीन वा तेरह मे नहि छलियनि तथापि हमरा सँ हुनका अकस्मात् सब्जीबागक मोड़पर भेंट भ' गेल रहनि। ओ सब्जीबाग दिस सँ बहराइत छलीह आ हम ढुकैत छलहुँ। ओ छलीह रिक्शा पर धूप-चश्मा लगौने आकर्षक मुद्रा मे मुस्काइत, बेबी-शेफालिकाक सरियाओल केश केँ बामा हाथें पोछैत कि हमरा पर नजरि पड़ि गेलनि।

'ऐ, रोको जरा'—रिक्शाबाला केँ कहि अकस्मात उतरि गेलीह।

'हेल्लो कविजी'—बड़े आवेश सँ हमरा छेकि लेलनि।

'कहल जाय, कहल जाय'—नमस्कारक मुद्रा मे हम अभिवादन कयलियनि। कुशल-क्षेमक उपरान्त रातिखन अयबाक अर्थात् भोज मे सम्मिलित होयबाक वचन ल' लेलनि। चटक्की मे छलीह तें डेरेपर गप्प करक आमंत्रण दैत रिक्शा पर चढ़ि गेलीह।

से, तें हमहूँ नोतिहारीक विस्तृत सूचीक एक वरिष्ठ सदस्य भ' गेल छलहुँ।

'अरे, मिस्टर शुक्ला केँ रसगुल्ला दहुन...रसगुल्ला'—देवीजी बारीक केँ बजबैत शुक्लाजी केँ आग्रह कयलथिन।

'जी, हें-हें-हें-हें, रहय देल जाय।' शुक्लाजी गोङिअएलाह।

'शास्त्रीजी, हाथ किएक बारने छिऐक ? खयबा योग्य भेलैक अछि कि नहि ?' कने' बेसीकाल धरि बिलमिक' देवीजी शास्त्रीक आहे-माहे करैत रहलथिन। पत्रकारक संतुष्टि सभ सँ अधिक महत्वपूर्ण आ दमगर होइत छैक जनतंत्रक युग मे, से बात देवीजी नीक जकाँ जनैत छलीह।

दाँत खोधैत हम एक बेर चारूकात नजरि खिरौलहुँ तँ देखलहुँ जे सभ टेबुल पर सामग्री सभ सँ अच्छौंह भेल लोक आब उठबाक चेष्टा मे छलाह। देवीजी घूमि-घूमि क' पुछारी-पात क' रहलि छलथिन। प्लेट सभ मे पोलाव, दालि, तरकारी, मिठाइ सभ, फल सभ, दही आदि उगरल पड़ल छल। भोज बुझू जे थइ-थइ भ' गेल छल।

मोन पड़ल देवीजीक ओहिदिनक व्याख्यान। तृतीय पंचवर्षीय योजनाक प्रचारार्थ योजना-प्रचार सप्ताह हाले मे सरकार दिस सँ मनाओल गेल छल। पहिल दिन बचत-दिवसक क्रम मे क्लब मे एकटा आयोजन कयल गेल छल। नाच-गानक बिना आइ-काल्हि कोनो गोष्ठी नहि भ' सकैत अछि से तँ प्राय: अहूँ मानिते होयब। नाच-गान तँ भेलैके जे देवीजीक ओहि अवसर पर बड़ चोटगर भाषण भेल

छलनि। अखबारो सभ मे रिपोर्ट छपल छल। हमरा सभटा बात तँ मोन नहि अछि, मुदा संक्षेप मे देवीजीक भाषणक आशय ई छल जे—'जीवन मे बचतक प्रवृत्ति बड़ आवश्यक अछि। ई बचत केवल टके-पैसाक मद मे नहि, जीवनक प्रत्येक क्षेत्र मे करक चाही। अपना देशक खाद्य-समस्या सर्वाधिक जटिल अछि। स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद बाढ़ि, अनावृष्टि, भूकम्प आदि दैवी प्रकोपक फलस्वरूप अकालक आ महगीक जे चक्कर चलल से एखन धरि त्राण नहि देलक अछि। अपना देशक जनसंख्या बढ़ि रहल अछि तीव्रगतिएँ आ उपजा घटि रहल अछि। विदेश सँ अन्न मंगाक' काज चलाओल जा रहल अछि। अन्नक कमी केँ टारबाक हेतु अन्नक बदला मे फल पर, साग-तरकारी पर, माछ-मांस पर जोर देब आवश्यक अछि। अन्नक बचतक हेतु सात दिन मे एकदिन उपवास करब स्वास्थ्योक दृष्टि सँ नीक थिक। सभ धर्म मे उपवास केँ महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। अपना लोकनिक शास्त्र मे तँ मास मे अनेक दिन उपवास आ फलाहारक नियत विधान अछि। आयुर्वेद आ नेचरोपैथी मे स्वास्थ्य-लाभक हेतु उपवास केँ बड़ पैघ साधन मानल गेल अछि। तात्पर्य जे विवाह-दान मे, श्राद्ध, एकोदिष्ट मे, मुण्डन-उपनयन वा एहि तरहक कोनो पाबनि-तिहार या यज्ञ-प्रयोजन मे बहुभोजक प्रथा अछि से अधलाहे टा नहि आजुक युग मे राष्ट्रद्रोह थिक। आदि-आदि।'

मोन पड़ल अयबा कालक टटका घटना। जमाल रोडक अपना डेरा सँ बहराक' आइ जखन विदा भेल छलहुँ कि सरमेटा कोठी लग जितू भाइ भेटि गेलाह। हुनका चिरैयाटाँड़ दिस जयबाक छलनि। दुनू गोटय गप्प-सप्प करैत वीणा सिनेमा धरि अयलहुँ। भाइ ओम्हरे मुहें विदा भेलाह आ हम अबेर भेल जाइत अछि से विचारि हड़बड़ाक' एकटा रिक्शा पर चढ़ि देवीजीक डेरा दिस विदा भेलहुँ। तिरमुहानी लग जे साइन बोर्ड सभ अछि ताहि मे सब सँ बेसी जगजगार अछि-राष्ट्रीय बचत संस्थाक साइन बोर्ड आ तकरा बाद अलंकार ज्वेलर्स तथा वस्त्रालयक। सिपाहीक आदेशें रिक्शा कनेक रूकल। एक नजरि नेशनल हिन्दू होटल, प्रकाश हिन्दू होटल, दीपक होटल, न्यू मारवाड़ी होटल आदि सभ केँ देखैत आगाँ बढ़लहुँ कि ओहि सँ आगाँक तिरमुहानीपर रिक्शा रूकि गेल। आगाँ मे केयो भिखमंगा कोनो ट्रक सँ पिचा गेल छल। दुर्घटना होइते लोक जमा भ' गेल छलैक। ओम्हर अभ्युदय प्रेसक समीप फुटपाथपर भात बिकाइत छैक। भात, माछ, दालि, किसिम-किसिमक तरकारी सभ। बड़का-बड़का परात मे भात साँठल रहैत छैक। पता लागल जे भात मँगैत काल दोकानदार ओहि भिखमंगा केँ डाँटिक' भगा देने रहैक से भूखें व्याकुल भेल ओ जा रहल छल कि कोनो ट्रक सँ थकुचा गेल। ठीक ओहि भातबालाक दोकान

लग रिक्शाबाला कहलक जे–'बाबूजी, भूख लागल हइ, तनी खा लेती।' कहि नहि किएक मोन कोनादन भ' उठल। कहलिऐक—'खा लैह।'

रिक्शाबाला अपन सिलबरिया बाटी मे चारि आनाक भात लेलक आ एक आनाक माछक झोर। हाहुत्ती जकाँ बड़का-बड़का क'र मे भात ओरा गेलैक। ओकरे सँ पानि माँगि ओहि बाटी सँ दू बाटी पानि पीलक आ तकर बाद भातबाला ओहि परात दिस तथा माछवाला देगची दिस जाहि सर्वहारा असन्तोष आ सर्वग्रासी तृष्णा सँ आँखि निड़ारिक' ओ रिक्शाबला जीह सँ ठोर केँ चटैत तकलक से एखन फेर जोर सँ हृदय मे गड़य लागल।

देवीजीक ओहि दिनक उपर्युक्त भाषण, रिक्शाबालाक क्षुधातुर लाल-लाल आँखिक भयंकर तृष्णा आ शताधिक लोक सभक द्वारा परित्यक्त टेबुल सभपर भोजक उगरलहा, छुतौलहा सामग्रीक धमगज्जर! बूझि पड़ल जे ई तीनू दृश्य एके अंकक अभिनय थिक।

मिथिला मिहिर : 16 जुलाइ, 1961

मासान्त

खाटपर पड़ल-पड़ल महेन्द्र अपना विगत, आगत ओ अनागतक चिन्तन मे व्यस्त छल। गतानक बेत्रेक खाट गाभिन महिसिक पेट जकाँ लरकि गेल छलैक, मुदा एक दुर्निवार अलसभावें सभ दिन सोचियोक' खाट केँ गतानि नहि सकैत छल। छोट सनक कोठली, खपड़ा सँ छारल। बसात मे खपड़ाक उनटि-पुनटि जयबाक कारणे चारक दोग सँ रौदक छोट-पैघ खण्ड यत्र-तत्र हुलकी द' रहल छलैक। चीन द्वारा भारतक सीमातिक्रमण जकाँ एहि काण्डक विस्तार यद्यपि भैए रहल छल, तथापि महेन्द्र सरकार जकाँ त'रे-त'रे सोचि रहल छल, मुदा किछु क' नहि रहल छल। आगाँ मे नोटीफाइड एरिया भ' गेलाक बाद सँ आओरो अधिक विकृत भेल साक्षात् नरकक वैतरणी जकाँ शहरक नाला छल, जाहि मे महल्ला भरिक स्त्रीगण आ नोकर-चाकर सड़ल-गलल वस्तुजात आ किदन-कहाँदन सभ फेकैत रहैत छल। जाहिल-गमार सभक महल्ला। कतेक देवें-सेवें महेन्द्र केँ ई नोकरी भेटल छलैक आ ताहू सँ बेसी दौड़-बरहा कयलाक बाद, कतेक गोटेक ओत' छिछिअयलाक बाद ई कोठली भाड़ापर भेटल छलैक।

औफिस सँ अयलाक बाद महेन्द्र अपना मे ओ स्फूर्ति नहि पबैत छल जे कोठलीक मार्जन वा अपन स्टैण्डर्ड आफ लिभिंग (जीवनस्तर) क मार्जन क' सकय। साप्ताहिक पत्रक सम्पादन, लेख, कथा, कविता, विभिन्न स्तम्भ सभक सामग्री जुटौनाइ आ ताहू सँ बेसी रचना सभक मार्जन करैत-करैत विशेषत: पुनर्निर्माणे करब ई एहन काज छल, जकर अन्त द्रौपदीक चीर जकाँ कहियो होइते नहि छलैक। ताहिपर सँ कतेक महापुरुषक दरबार! प्रतिष्ठा खूब छलैक मुदा ततबे धरि निट्ठाह उधारे। नगदी खाता किछु नहि। दू मे सँ दू गेल हाथ रहल शून्य सैह नहि, दू मे सँ तीन गेल पैंच रहल एक। महेन्द्रक जीवन-गणित यैह छलैक। आइ अवकाशक दिन छलैक, से चुपचाप खाटपर पड़ल छल। सोचि रहल छल जे हमरा बाद जे कलम पकड़ब शुरूहे कयने छल से सभ कतेक संग्रह प्रकाशित क' चुकल अछि,

मुदा सम्पादक भेलाक बाद सँ हम किछु मौलिक नहि लिखि सकलहुँ अछि। अनके लिखबा सँ फुरसति नहि, अपन की लिखू! अनके सजयबा सँ पलखति नहि, अपन की सजाउ?

विचारिए रहल छल कि केयो केबाड़ ढकढकौलकैक। एक-दू खेप तँ कुनमुनाक' रहि गेल, मुदा अकछा गेलाक बाद उठिक' केबाड़ फोलि देलकैक। पहिल वस्तु जे कोठली मे प्रवेश कयलक से छल ओहि सदानीरा नालीक दुर्गन्ध आ तकरा बाद श्री यादवजी प्रकट भेलाह।

'की महान भाइ, यैह डेरा थिकहु? नमस्कार-नमस्कार।' ई यादवजी कहैत ओही खाटपर बैसि गेलाह। खाटक अतिरिक्त एक कुर्सी ओहिठाम अवश्य छलैक, मुदा ताहिपर किछु सामयिक पत्र-पत्रिका, धोबिक द' गेल थोड़ेक नूआ, औफिस सँ आनल अपन व्यक्तिगत डाकक तीन चारि दिनक चिट्ठी-पत्री आदि अस्त-व्यस्त भेल राखल छल।

'आबह, आबह। एह! बहुत दिन पर भेंट भेलह अछि, महान् भाइ...' मने महेन्द्र स्वागत-सत्कार करैत बाजल।

प्रणाम-पातीक बाद यादव बाजल-'महान् भाइ, कोना एहिठाम तों रहैत छह से नहि कहि। की तोरा रहबाक लेल आर कतहु जगह नहि भेटलहु?'

'भेटैत तँ एही मे रहितहुँ? एक तँ एहन मकान आ ताहिपर किराया सुनबह तँ चौंकि उठबह। ताहूपर सदिखन अगोबारे भाड़ा चाही। मुदा आइ-काल्हि शहर मे मकान पाबि लेब स्वर्ग मे सीढ़ी लगयबा सँ कठिन थिक। की करू?' महेन्द्र बाजल।

ओ जनैत छल जे यादव एक स्कूल मास्टर अछि। हमरा सँ नीक स्थिति एकर कदापि नहि होयतैक। साइंसक मास्टर रहैत तँ ट्यूशनोक बात छलैक। ई तँ विशुद्ध लिटरेचर टीचर थिक। बड़ बेसी तँ परीक्षाक दिन मे एक दू मास हेरायल-भोतिआयलक ट्यूशन करैत होयत। मुदा 'परोपदेशे पाण्डित्य' एकर सभ दिन आदति रहलैक अछि। पढ़बा काल मे ई सदानन्द यादव महेन्द्रक रूम पार्टनर छलैक। तखने सँ एकरा ओ जनैत छैक। महेन्द्रक तँ सहजहिँ, जे जकरे सँ एकरा परिचय छलैक, तकरा सँ आइ ने काल्हि अवश्ये किछु झीटि लैत छलैक। जकर पैंच लेलकैक, घुमाक' फेर कहियो नहि देलकैक, सैह यादव आइ ओकरा स्थितिक विश्लेषणात्मक आलोचना क' रहल छलैक। बात ठीके, मुदा महेन्द्र केँ ई नीक नहि लागि रहल छलैक।

'हम तोहर बात नहि मानि सकैत छिअहु। जतय अपना योग्य सोसाइटी नहि

हो, जतय रहबा-सहबाक एकटा चिक्कन व्यवस्था नहि हो, ओतय रहब कथमपि नीक नहि। ताहिपर सँ शहरभरिक आउटलेटक ई उत्कट गन्ध! हम जँ एहन ठाम रहितहुँ तँ आइ धरि काँकैक पागलखाना मे वा कोनो 'सेनीटोरियम' मे जाय पड़ैत। देखैत छिअहु जे तों एखन धरि बिजली नहि ल'क' लालटेमेक इजोत सँ काज चला रहल छह। एकर धुआँ बड़ खतरनाक होइत छैक। जनैत छह एकरा धुआँ सँ पसरल कार्बन पारटिकिल्स साँस द्वारा जखन लंग्सक भीतरी लाइनिंग्सपर डिपोजिट भ' जाइत छैक आ क्रमश: डिजीज बैक्टीरिया देह मे जखन फुल स्टेज मे पहुँचि जाइत छैक तखन लाइफक कोनो होप नहि रहि जाइत छैक।'

महेन्द्र ओकरा विचार मे फुसिए सहमतिसूचक माथ झुलयबाक प्रक्रिया अवचेतन मने क' रहल छल। ओकरा बुझल छलैक जे जखन यादव केँ झोंक अबैत छैक तँ एकछाहा अंगरेजी शब्दसभक बिहाड़ि बहय लगैत छैक।

'बेस, बेस, हम तोरा बेसी बोर नहि कर' चाहैत छिअहु,' हठात् यादव कहय लगलैक-'एक्सक्यूज मी, हम एक टा एकदम पर्सनल काज सँ तोरा कने...बात ई छैक जे ई मन्थक लास्ट वीक थिकैक कि ने। काइन्डली दस-पन्द्रह टाकाक कोनो मैनेजमेन्ट...।' एक अत्यन्त प्रच्छन्न करुणा सँ विवश भेल कठहँसी हँसिक' यादव चुप्प भ' गेल।

महेन्द्र केँ नीक जकाँ बूझल छलैक जे मंथक लास्ट वीक केवल यादवे टाक लेल नहि, प्रत्येक मध्यमवर्गीय नोकरी कयनिहारक वास्ते छलैक। ओकरा ईहो नीक जकाँ बूझल छलैक जे गाम सँ चिट्ठी द्वारा घर छरयबाक, बाबूजीक गयारी पूजा करबाक, मुन्ना लेल पैंट आ हाफशर्ट सिअयबाक तथा श्रीमतीजी लेल अशोकारिष्ट किनबाक हेतु तगेदा आबि चुकल अछि। होटलबाला पाठकजीक बेटाक मुण्डन थिकनि से एक मासक अगोबार टाका चाही। मकानवाली बुढ़िया गुदड़ी बजारपर पिपरक गाछतर महादेवक मन्दिर बनबा रहल अछि से अल्टीमेटम द' चुकलि अछि। मुदा यादवक निगूढ़ करुणा सँ अवसन्न भेल आँखिक विवश-मुद्रा महेन्द्र केँ तेना ने विचलित क' देलकैक जे ओ उदास, व्याकुल आ अधीर भ' उठल।

बात ई छलैक जे काल्हि ओ अपन सूटकेस झाड़िक' ताकि चुकल अछि, किताब केँ उनटा-पुनटाक' देखि चुकल अछि, जाहि मे कहियो-कहियो टाका राखि दैत छल-कतहु टाका केँ के कहय, एक टा चौअन्नी धरि नहि भेटल छलैक। घर सँ विदा भेल छल जे कोनो आप्त व्यक्ति सँ किछु पैंच ल' आनी तँ सड़कपर अबिते एक टा कारी खटखट छौंड़ा बड़ दयनीय रूपें माँगि बैसल छलैक-'बाबू,

एक आना पैसा देल जाय। बड़ भूख लागल अछि, बाबू!' सरिपहुँ ओकरा बड़ भूख लागल छलैक; कारण जे ओकरा मुँहपर पेशेवर भिखमंगा जकाँ नहि, वस्तुतः बड़ कातर आ निराश भाव पसरल छलैक। महेन्द्र केँ भेल छलैक जे एकरा किछु देबाक चाही, मुदा संग मे केवल दू आना पैसा छलैक आ दरमाहा भेटबा मे एखन चारि दिनक देरी छलैक जे-आगाँ बढ़ैत ओ डाँटि देने छलैक—'इह, खुम्हने सनक देह छनि आ कतहु नोकरी-चाकरी नहि क' होइत छनि। भागह एतय सँ की!' डरें कँपैत-दहसैत छौंड़ा हँटि गेल छल आ महेन्द्र हँसि उठल छल मोने मन जे नोकरी भेटब तँ भीखो भेटब सँ कठिन छैक। आगाँ बढ़लापर बेगर्ते आन्हर एक रिक्शाबाला लग आबि पुछारी करय लागल छलैक जे कतय जयबाक अछि? टोकि देने यात्रा बिगड़ि गेलैक तें नहि, अपितु रिक्शाबाला केँ कैंचा कतय सँ देतैक तें चुपचाप ओ पिंड छोड़ाक' तेजी सँ चलि देने छल। ओहिना हड़बड़ायले जकाँ रमेश बाबूक डेरापर गेल छल। रमेश बाबू जलखै क' रहल छलाह। हुनक पत्नी महेन्द्र केँ देखिक' तेना सियाह भ' गेलि छलीह जेना ई कोनो अनपेक्षित पाहुन पहुँचि गेल हो। शिष्टतावश रमेश बाबू आग्रहो कयलथिन, मुदा हुनक पत्नीक मुखमुद्रा देखिक' ओ फुसिये कहि उठल छल जे-'जी, हम ई सभ कइएक' आबि रहल छी।' आ जेब केँ टोबिक' अपन बारह नवका पाइक विश्वास दोहरा लेने छल। रमेश बाबू कहलथिन-'बेस-बेस, कोनो बात नहि। असल मे ई मासक अन्त थिकैक कि ने? तें बेसी आग्रहो नहि करबहु।' हँसिक' रमेश बाबू एहि उक्तिक द्वारा महेन्द्रक सम्पूर्ण साहस केँ तत्काल तोड़ि देने रहथिन। कने काल ओ एम्हर-ओम्हरक निरर्थक आ प्रसंगहीन उखड़ल-पुखड़ल गप्प क' चलि देने छल।

बहरायले छल कि ओतय सँ ओ वर्मा भेटि गेल छलैक।

'अरे, महेन्द्र छह हौ? वाह-वाह खूब भेटलह अछि। चलह, चलह कने चाह पीबि ली। नीकेँ छह कि ने?'

'हँ, बजारे भाओ बूझह।' महेन्द्र मिझायल जकाँ कहने छलैक। चट वर्मा लग आबिक' महेन्द्रक हाथ बड़े आवेश सँ पकड़ि लेने छलैक—'कोनो बात नहि, एना घबराइ किएक छह? हमहीं देबैक चाहक पाइ। तों निश्चिन्त रहह।' ठहाका दैत वर्मा महेन्द्र केँ केबिन मे ल' गेल छलैक। चाह पिबैत काल ओ कहलकैक—'भाइ, एक टा बड़ विपत्ति मे पड़ि गेल छी। किछु नहि फुरैत अछि। भने तों भेटि गेलह। हमरा पच्चीस टा टाका पैंच दैह। पे भेटितहि दै अयबह। मासक अन्तिम सप्ताह थिकैक तें एकदम खाली छी।'

महेन्द्र केँ मोन पड़लैक कोनो सिनेमाक एक दृश्य, जाहि मे केयो व्यक्ति

अपना मित्र द्वारा पाइ मँगलापर चुपचाप अपना कोटक दुहू जेब तकलक, पैंटक दुहू जेब उनटाक' देखा देने रहैक। महेन्द्र वर्माक आत्मीयता सँ भरल ई बात सुनितहि चौंकि उठल, जेना ई बात नहि हो, लुत्ती हो आ ओ अनजान मे सहसा पाकि गेल हो। वर्मा प्राय: ई बूझि गेल छलैक। कहलकैक—'कोनो बात नहि। आइ थिक 30 तारीख माने मासान्त, काल्हि थिक रवि दिन माने संक्रान्ति, परसू थिक दू तारीख, फातेहा दोआज दुहूमक छुट्टी माने मासादि। तें यात्रा बनतहु मासान्त, संक्रान्ति आ मासादिक बाद तीन तारीख क'। आ कि नहि ?' बाजिक' वर्मा खूब जोर सँ हँसि उठल छल।

मुदा ई सदानन्द यादव जे एखन अंगरेजी मिश्रित भाषा मे हितोपदेशक संग-संग पैंच प्रार्थना क' रहल छैक, तकरा महेन्द्र की जबाव देतैक ? यादवो सँ बेसी करुण आ दयनीय भेल महेन्द्र ओकर बात सुनि भावहीन नेत्रें अपन कोठली, लरकलहा खाट, पालिस उड़ल सूटकेस, चनकलहा सीसाक गिलास, कारी भेल लालटेन आ ताहू सँ बेसी धुँआयल यादवक मुँह दिस चुपचाप ताकय लागल।

मिथिला मिहिर : 10 सितम्बर, 1961

ताँगाबाला

किछुए दिन भेल अछि। हम कोनो आवश्यक काज सँ जे गया पहुँचलहुँ तँ स्टेशन सँ बहराइते एक विचित्र संकट मे पड़ि गेलहुँ। हमर वस्तुजात एक रिक्शापर लदा गेल छल आ हम ओहिपर चढ़िए रहल छलहुँ कि एकटा ताँगाबाला ओहि रिक्शाबाला सँ बाझि गेल आ हमर सामान उठाक' अपना ताँगापर राखय लागल। रिक्शाबाला लड़ि रहल छल आ सामानक झीका-तीरी क' रहल छल। हम फराके विखिन्न भ' रहल छलहुँ जे ई सभ हमरा वस्तु-जात केँ अपन मानि लेबाक असंगत चेष्टा किएक क' रहल अछि? ई तँ खूब ताल भेल! जेना हम ओहि वस्तु-जातक ने तीन मे रही ने तेरह मे। बात एतबे धरि रहैत तँ कोनो विशेष तेहन नहि, ई दुहू गोटय तँ वस्तु-जातक संग-संग हमरो झीकि-तीरि रहल छल, जेना हमहुँ कोनो सामाने रही। रिक्शाबाला बाजि रहल छल-'हमरा सँ ठीक क' लेने छथि बाबू!'

ताँगाबाला कहि रहल छल-'बड़े अयलाह अछि ठीक करयबाला? मिजाज दुरुस्त क' देबौक। हमर सभ दिनुका गहिकी केँ तों के होइत छें अपना रिक्शापर चढ़बयबाला?'

रिक्शाबालाक मिजाज दुरुस्त होइ वा नहि, हमर धरि तँ मिजाज दुरूस्त भइए रहल छल जे पंडा सभक बात तँ सभ जनिते छी; आब की गयाक सवारियो बला सभ एना करय लागल? कतेक बहादुरी सँ फूसि बाजि रहल अछि ई ताँगाबाला? सभ दिनुका गहिंकी बनाक' हमरा कतेक बढ़िया जकाँ अपदस्थ क' रहल अछि? एम्हर हम छी जे ई दोसरे खेप गया आयल छी आ ई हमरापर 'सभ दिनुका गहिंकीक मोहर पर्यन्त लगा देलक?

अन्तत: आजिज भ' क' हम कने डाँटिक' कहलिऐक—'हौजी, झगड़निहार सभ, तोरालोकनि किएक झगड़ा क' रहल छह? ई तँ बेस रंगताल भेल? जाह, जाह, हम तोरा ताँगापर नहि चढ़बहु। हम एहि रिक्शाबाला केँ पहिनहि कहि देने छिऐक।'

असल मे ओकरा लोकनिक झगड़ा सँ बेसी आपत्तिजनक हमरा ई बूझि पड़ैत छल जे लग-पासक लोक सभ ओहि दुहू व्यक्तिक संग-संग हमरो तमाशा बूझि रहल छल।

ताँगाबाला कहलक—'वाह मालिक, इहो कतहु भ' सकैत अछि? हम जँ कने देरी सँ पहुँची तँ अहाँ कतहु दोसर सवारीपर चढ़ि जाइ?'

'तों की हमरा कीनि लेने छह? की हमरा तोरे सवारी पर चढ़' पड़त? किएक ने दोसरा व्यक्ति सभ केँ चढ़ा लैत छह? कतेक रास तँ लोक सभ ठाढ़ भेल छथि?' हम कने खिसिया क' कहलिऐक।

ओ बाजल-'हमरा आन लोक सँ की सरोकार सरकार, जखन अहाँ आबि गेल छी?'

'हौजी, बताह तँ ने भ' गेलाह अछि?'—हम ताँगाबालाक ई अजगुत बात सुनिक' कहलिऐक।

'से अहाँ जे कही सरकार।'—ओ बिहुँसैत बाजल।

हमरा आरो तामस लेसि देलक। खौंझाक' कहलिऐक—'ई तँ बेस घनचक्कर भेल। बोर क' क' छोड़ि देलह। पिंडो छोड़ह ने जे कतहु जाक' वस्तु-जात राखी आ कने साँस ली। ई गयो बेस भ' गेल अछि। तों दुहू गोटा अनेरे झगड़ा क' रहल छह। हम दुनू सवारीपर तँ चढ़बे नहि करब, आ ने यैह भ' सकैत अछि जे अपने रही तोरा ताँगापर आ वस्तु-जात रहय ओकरा रिक्शापर? दोसर बात जे हम रिक्शाबाला केँ ठीक क' चुकल छी। तों जाइत छह कि हम पुलिस...'

बीचे मे बात लोकिक' ओ बाजल—'की हेतैक सरकार? रिक्शाबाला केँ किछु पाइ द' देल जाय आ अपने ताँगापर चढ़ि गेल जाय।'

'खूब मजेदार छह तोहूँ—हम कहलिऐक—रिक्शाबाला केँ पाइ द' दिऐक आ तकरा बाद तोरो भाड़ा दिअहु कि—ने?'

'अपने चढ़ियौक ने, सरकार।'—ओ बाजल।

रिक्शाबाला एखनधरि झगड़ा क' रहल छलैक, मुदा फोकट मे पाइ पाबि जयबाक प्रस्ताव सुनिक' कने ढील पड़ि गेल। हम विचारलहुँ जे ई तँ अद्‌भुते झंझट मे फँसि गेलहुँ? कहलिऐक—'मुदा तों चाहैत छह की?'

'यैह जे अपने सोझ ताँगापर सवार भ' जाइ आ हम ताँगा हाँकि दी।'

'आ हम जँ नहि चढ़ी...'

'जी?...जी, से कतहु होइक?'

'से किऐक नहि भ' सकैत छैक?'

'सरकार अपने अनेरे देरी क' रहल छी। रातुक बात थिकै। आब अपनेक ओ दोस्त नहि छथि जे कखनहुँ पहुँचि जयबैक तँ भोजन तैयार भेटत। आखिर ठहरबाक अछि कतहु ने कतहु। से कने जल्दिए कयल जाय जे बन्दोबस्त क' सकी अपनेक खयबा-पीबाक आ आराम करबाक। अपने कने जल्दिए चढ़ि जइयौक। बलहुँ देरी कयला सँ की फायदा?'

हम ओकरा बात सँ बिखिन्न भ' उठल छलहुँ। विचारलहुँ जे रिक्शाबाला केँ किछु कैंचा द' क' एकरे ताँगापर चढ़ि जाइ। दोबर खर्च पड़त सैह कि—ने, कोनहुना एहि झंझटि सँ फुरसति तँ भेटि जायत। आ हम सैह कयलहुँ। एतबा निर्विवाद जे हमर किछु मित्र हमरा 'दब्बू' कहैत छथि।

एहि बीच हमर सामानो ताँगापर लदा गेल छल आ ओ रिक्शाबाला मंगनी मे भाड़ा पयबाक शर्त्तपर सन्धि क' लेने छल। हमरा डाक्टर सभक बात बूझल छल जे ओ सभ एही तरहें परस्पर रोगीक टाकाक बाँट-बखरा करैत छथि। केयो मल-परीक्षक, केयो मूत्र-परीक्षक, केयो रक्त-परीक्षक तँ केयो थूक-परीक्षक बनिक' रोगी केँ ओ लोकनि लूटि लैत छथि। अन्तर केवल एतबे होइत अछि जे ओ सभ झगड़ाक' ई कांड नहि करैत छथि, बड़ सुन्दरता तथा गम्भीरताक संग ई अनिवार्य बाँट-बखरा सम्पन्न होइत अछि। एकर कारण तँ भरिसक ई थिक जे ओ सभ पढ़ल-लिखल, सभ्य-सुसंस्कृत होइत छथि आ ई सभ छल अनपढ़-असभ्य।

ताँगा जा रहल छल आ हम अनायासे ताँगा सँ अपन सामंजस्य स्थापित क' रहल छलहुँ। ताँगा चलैत अछि...ओहिपर कतेक लोक बैसैत अछि...प्रतिदिन आयब आ जायब...विभिन्न स्थान सभक चक्कर लगायब...यैह तँ हमहुँ करैत छी। हम चलैत छी...परिस्थिति द्वारा उद्भूत जीवनक अनेक घटनाचक्र हमरा पर चढ़ल रहैत अछि, आवश्यकता-आकांक्षा आदिक अनेक सवारी केँ लदने हमरालोकनि विभिन्न स्थानसभक चक्कर लगबैत रहैत छी आ ताँगाक वाहक जकाँ हमरो केयो वाहक होइत अछि जे अपन इच्छाक अनुसार हमरा चलबैत रहैत अछि...नियंत्रण कयने रहैत अछि। मुदा, मुदा की ताँगा जकाँ हम अपना मालिकक इच्छा पूर्ण नहि करैत छी?

दार्शनिकताक ओहि झोंक सँ हठात् वर्त्तमानक इजोत भक् द' मोन मे उठल जे आखिर ई लेने कतय जाइत अछि? ताँगोबालाक मुखाकृति बिजलीक प्रकाश मे कनेक नीक जकाँ देखलहुँ तँ बुझना गेल, ओ शान्त, निर्विकार आ परितृप्त अछि। जेना कतय जयबाक अछि से ओ तय क' चुकल अछि आ दुर्घटना सभ सँ बचाक' ताँगा निरापदरूपें ल' जायब मात्र ओकर कर्त्तव्य रहि गेल हो।

नाटक कम्पनीक कोनो माँजल एक्टर जकाँ कने झुकिक' हम पुछलिऐक–'कने ई बात फड़िछाक' कहितह ने कतय चलि रहल छह ?'

उत्तर मे ओ कहलक–'बड़ नीक छलाह अपनेक ओ मित्र। सरिपहुँ अपूर्व लोक छलाह। सत्ते कहैत छी सरकार, जखन कतहु जयबाक होइनि तँ ताकिक' हमरा संग क' लेथि। बिना हमरा एहि ताँगाक ओ कतहु जयबे नहि करथि। एक दिनक बात कहैत छी सरकार, ओ कतहु सँ आबि रहल छलाह आ हम हुनका बगल सँ ताँगा बढ़ा रहल छलहुँ कि ओ टोकलनि–'की हौ, नीके छह कि ने ?' हम कहलियनि—'मालिक, आइ दिन भरि मे किछु नहि परि लागल अछि। ककर मुँह देखिक' आइ उठल छलहुँ से नहि कहि, जे सौंसे दिन खाली बीति गेल। घर जाक' की कहबैक, से किछु नहि सुझैत अछि।'

'किऐक, की आइ किछु नहि कमयलह ?'

'नहि मालिक, किछु पाइ भेलै तँ हम ओ पीबहि मे सठा देलिऐक।'

'ओ, ई बात छैक ? तँ चलह, हमरे चढ़ा लैह, किछु पाइ भेटि जयतहु।' आ ओ ताँगापर चढि गेलाह। हम चुपचाप ताँगा चलबय लगलहुँ। किछु दूर गेलापर हम पुछलियनि जे कतय ल' चलू तँ कहलनि जतय तोहर मरजी। एहि तरहें दू घण्टाक चक्कर लगौलाक बाद ओ चुपचाप उतरि गेलाह आ हमरा हाथ मे दू टाकाक एकटा नोट राखि देलनि। ओहि दिनक बाद जे भेंट भेल तँ ओ एक्के बात मे हमरा सँ पीबाक आदति छोड़ि देबाक शपथ ल' लेलनि। आ हमहूँ सरकार, हुनक वचन कहियो टारैत नहि छलहुँ। तकरा बादे हम एकदम पीब छोड़ि देलहुँ। किछु उकासी आ अबलता धक्को देलक, मुदा हुनक बात हम कोना काटि सकैत छलियनि ?

हम ओकर बकबक सँ तंग भ' क' कहलिऐक–'हौ जी, हम की पुछैत छियहु आ तों की कहैत छह। भाँग तँ ने पीलह अछि ?'

'राम, राम, सरकार, कथी लेल हमरा पाप चढ़बैत छी ? हम तँ ताहि दिन सँ कोनो तरहक अमल नहि रखने छी। बीड़ी पर्यन्त छोड़ि देने छी।'

'नीक कयलह जे सभ किछु छोड़ि देलह। हमरो छोड़ि देबह तँ बड़ पुण्य होयतहु।'

'ई की कहै छी सरकार, एतेक दिनपर पऔलहुँ अछि आ ओहिना छोड़ि दी ?'

'ओहिना नहि तँ की हमरा लूटि लेबह, तखन छोड़बह ?'

'अहूँ सरकार, बेस किचकिचबैत छी।' कहिक' ओ जोर सँ हँसय लागल।

ओ तँ बताह छलहे, जे बुझू हमरो अपना संगहि बताह बनौने जा रहल छल। हम फेर टोकलिऐक–'अयँ हौ, तों हमरा कतय लेने जा रहल छह?'

'आनठाम कतय लेने जायब सरकार? हमरा की ई बात नहि बूझल अछि जे अपनेक ओ मित्र जी एहिठाम नहि छथि। बजार मे तँ हम रहय देब नहि, कारण जे खयबाक तेहन ने सामग्री बिकाइत छैक जे की कहू? सातुओ खोआयब तँ अपने घरक। कम सँ कम असक पड़बाक अन्देशा तँ नहि रहत। परदेश मे के ककरा देखैत छैक सरकार?'

सरकार–सरकारक रट लगौनिहार ओहि वाचाल सँ हम तंग भ' गेल छलहुँ। हमरा मुँह सँ बहरा उठल–'हे भगवान, केहन विपत्ति मे पड़ि गेलहुँ अछि?'

'विपत्ति कोन मालिक, हम की कोनो डकैत छी जे अपनेक सभ किछु ल' क' पड़ा जायब? आइ जँ अपनेक मित्र रहितथि तँ अपने केँ एतय देखिक' कतेक हर्षित होइतथि? मालकिनी तँ बुझू जे नाचय लगितथि आनन्दें। ओह, की कहू सरकार...'

देखलिऐक जे ओ दीर्घ नि:श्वास छोड़य लागल। सहसा ओकर ई दशा देखि किछु पुछय चाहैत छलहुँ कि ओ बाजल—'बड़े भाग्य सँ अपने भेटि गेलहुँ सरकार...' आ ताँगा केँ जोर सँ हाँकय लागल। मन मे विचार उठल जे ई रतनक सम्बन्ध मे तँ ने कहैत अछि? एकबेर आइ सँ बारह साल पहिने हम गया आयल छलहुँ। तखन रतन एहिठाम नोकरी करैत छल। भेल जे भरिसक ई रतनेक विषय मे कहैत अछि। पुछलिऐक—'तों हमरा चिन्हैत छह?'

'वाह सरकार, अपनहुँ बेस कहैत छी। ई कन्हाइ की एतबो मोन नहि राखि सकैत अछि? अपने सभ तँ मोटक मोट पोथी सभ मोन रखैत छी, हमरा बुतें एतबो मोन नहि राखल होयत?'

हम अपना विश्वास केँ पुष्ट करक हेतु पुछिलऐक–'की कहलह अपन नाम? कन्हाइ?'

'हँ सरकार, मुदा अपने हमरा 'मियाँ जगाती' कहैत छलहुँ आ ओहो सरकार अपनहिक देल नाम सँ हमरा सम्बोधित करैत रहथि।'

बाहरन–सोहरनक ढेरी केँ कोड़िक' दाना बहार क' लेनिहार मुर्गा जकाँ ई नाम हमरा गया अयबाक स्मृति केँ कोड़िक' बहार क' देलक। सम्पूर्ण स्मृति जगजगार भ' उठल। बारह साल पहिलुक सभटा घटना तेना स्पष्ट भ' उठल, जेना अन्हार घर मे दीप लेसि देलाक बाद भीतरक सभ अप्रकट वस्तु सभ प्रकट देखि पड़ैत अछि।

किछु दिन पूर्व रतन बदलिक' हजारीबाग सँ गया आयल छल। तार भेटल जे शीघ्र गया आबह। तारे सँ सूचना देलिऐक जे अमुक ट्रेन सँ गया पहुँचि रहल छी। सभ काज छोड़ि जाय पड़ल। साकी जी ओतहि छलीह। साकी जी रतनक धर्मपत्नीक (हमरा लोकनिक मित्र परम्पराक अनुसारें राखल) शुभ नाम छलनि। पहुँचिते ज्ञात भेल जे साकी जी केँ बोधगया, रामशिला, ब्रह्मयोनि आदिक दर्शन करबाक छनि से हुनका संगे हमर रहब नितान्त आवश्यक। पिकनिकक हेतु एक अपरिहार्य सदस्य अपना मित्र-मंडलीक लेल हम छी, ई बात तँ पूर्ण गम्भीरता सँ हमरा बूझल छल, मुदा एतेक महत्वपूर्ण कार्यक हेतु अकाल आह्वानो भ' सकैत अछि, से ओहीकाल बुझना गेल।

दोसर दिन रवि छलैक आ औफिस बन्द छलैक। प्रात:कालक कार्यक्रम किछु पुण्य-संग्रह करबाक छल से विष्णुपद जयबाक हेतु हमरालोकनि उद्यत भेले छलहुँ कि रतन केँ बजबय लेल कलक्टरक संवाद आबि गेलैक। फलत: रतन केँ एहि कार्यक्रम सँ वंचित होम' पड़लैक।

हमरालोकनि निश्चित कार्यक्रमानुसार विष्णुपदक दर्शनार्थ पहुँचलहुँ तँ पुण्य-संग्रहक भार साकी जी केँ सौंपिक' कनेक गुरु गोविन्द सिंहक बाड़ा मे ओतय पहुँचल भक्त आ दर्शनार्थी सभ सँ गप्प करय लगलहुँ। आकि लगले पंडाजी आबिक' कहय लगलाह—'बाबू साहेब, मालकिन तँ फल्गु जी सँ आचमन आदि क' अयलीह, आब कने संगहि-संग दुहू गोटय संकल्प ल' लितिऐक तँ ठीक छल'। हम ई सूनि घबराक' साकी जी दिस तकलहुँ तँ ओ बड़े दुष्टतापूर्ण ढंग सँ मुसुका रहलि छलीह। हम बजलहुँ 'महराज जी, पानि-तानि उछलबौलहुँ मालकिनी जी सँ तँ आब संकल्पो-विकल्प हुनके सँ करा लिय'। महाराज जी की बुझलनि से तँ ओएह जानथि, मुदा साकीजी खिलखिला उठलीह।

'अच्छा, तँ दर्शनो धरि तँ कम सँ कम क' लेल जाय।' पंडा जी बजलाह। एकर सम्पूर्ण अर्थ तखन लागल, जखन अनेक स्थान मे प्रसाद आ पैसा चढ़यबाक आज्ञा दैत महाराजजी अन्त मे भोजन-दक्षिणा माँगय लगलाह।

डेरापर अयलाक बाद तय भेल जे जखन पुण्यतीर्थ मे हिनक नाम साकीक स्थान मे मालकिनी भ' गेल तँ आब इएह नाम बरकरार। अस्तु, सभ बात भेलाक बाद हम आ रतन खूब हँसलहुँ। भोजनोपरान्त बोध गयाक हेतु विदा भेलहुँ। कतेक दौड़-बरहाक उपरान्त इएह कन्हाइ भेटल छल से ताँगा चलले छल कि सोझे एकटा मोटर सँ भीड़ि गेल। ओ तँ बुझू जे मालकिनीक पुण्य प्रसादें रोइयों नहि भंग भेल। तकरा बाद सँ तँ भरि बाट कन्हाइ हमरा विनोदक केन्द्र बनल रहल।

बोध गया मे हमरालोकनिक एकटा समवेत फोटो लेल गेल छल, जाहि मे कन्हाइ सेहो सम्मलित छल। घुमती काल ताँगा ओकरा घरो गेल छलैक, जतय सँ लालटेन ल' क' चलबाक छल। एतबाकाल मे हमरा लोकनि ओकरा आँगन मे उतरि पानि पीने छलहुँ आ भरिपोख आशीर्वाद देने छलिऐक।

'उतरू सरकार।' ताँगा ठाढ़ भेल। देखलिऐक जे प्राय, ई कन्हाइयेक घर छल।

ओ बाजल—'सभ ठीक भ' जयतैक सरकार।' आ एहि तरहें कन्हाइक पाहुन बनिक' हम ओकरे ओतय रहि गेलहुँ। पयर-हाथ धोलाक बाद कोठली मे एकटा चौकीपर ओ ओछाओन क' देलक तँ लालटेमक इजोत मे देखलिऐक जे हमरालोकनिक ओ फोटो जे बोध गया मे खिंचाओल गेल छल, ओहि कोठली मे देवताक चित्र जकाँ बड़े सुरक्षा सँ टाँगल छल। पुछलापर ज्ञात भेल जे मालकिनी सँ चुपचाप ई फोटो माँगि अनने छल आ प्राय: एहि चित्रक कारणे ओ बारह वर्षक बादो हमरा चीन्हि लेलक।

अपन काज समाप्त क' जखन हम गया सँ बिदा होमय लगलहुँ तँ कन्हाइ एक जोड़ा 'इयरिंग' हमरा हाथ मे राखि देलक। पुछलिऐक तँ बाजल जे सरकार, की कहू हम अपन जरलाहा कप्पारक बात? जखन मालिकक बदली भ' गेलनि आ जाय लगलाह तँ हमरे ताँगापर स्टेशन अयलाह। बाटहि मे मालिक बक्सा सँ किछु बहार करक हेतु मालकिनी केँ कहलथिन। भरिसक ताही हड़बड़ी मे ई एकटा कूटक डिब्बा मे छल, से बहारे रहि गेल। मालकिनी बिसरि गेलीह बक्सा मे राखब। स्टेशनपर हुनकालोकनि केँ उतारि आ विदा क' जखन हम अपना ताँगा लग अयलहुँ तँ कूटक छोटका डिब्बा देखलिऐक। खोलला पर हमरा जरलाहा कपारपर पाप चढ़ि गेल आ हम ओकरा नुका लेलहुँ। मालिक एकबेर अयबो कयलाह जे किछु छूटि तँ ने गेल अछि, मुदा हमरापर कंचनक माया चढ़ि गेल छल। मुदा आँगन अयलापर नहि कहि किएक, हमर मन धिक्कारय लागल आ तखन बुझना गेल जे हम बड़ पैघ पाप कयलहुँ अछि। तहिया सँ आइधरि हम बेचैन बनल रहलहुँ अछि। ओहि दिन अपने केँ देखिक' एही लेल बड़े हर्ष भेल जे आब हमर पाप हेठ भ' जायत। हमरा हुनक पता-ठेकान बूझल रहैत तँ कहिया ने हम पठा देने रहितियनि। सरकार, अपने सभ-किछु कहिक' हमरा दिस सँ कहि देबनि जे कन्हाइ पापक ज्वाला मे सदिखन जरैत रहल अछि। आब ओकरा क्षमा क' दियौक।

हम देखलहुँ जे ओ चुप्प भ' गेल अछि आ ओकर आँखि सँ पश्चातापक

अनमोल मोती खसिक' धूराक हीरा बनि रहल छैक। मुँह परक सन्तोषक रेखा व्यक्त क' रहल छलैक जे आइ एक बहुत पैघ बोझ उतरि गेलैक अछि।

आइ बारह वर्षक बाद कन्हाइ ई इयरिंग घुमा रहल अछि। बारह वर्षक बाद...मने एक युगक बाद। बूढ़-पुरान आ पंडित-विद्वानक मुँह सँ सुनल अछि जे कलियुगक बाद सत्ययुग अबैत अछि। युग सभक यैह क्रम थिक। सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग आ पुनः सत्ययुग...। एक युगक बाद दोसर युग। कलियुगक बाद सत्ययुग। एकरा नुकौनिहार कन्हाइ कलियुगक छल आ घुमौनिहार कन्हाइ सत्ययुगक थिक।

मिथिला मिहिर : 4 मार्च 1962

सुभद्राक डायरी

2 फरवरी 1960

आइ बाबूजी बड़ हरान भ' क' अयलाह। हम दरबज्जापरक लादि लग गोबर उठबैत छलहुँ। पदध्वनि सुनिक' ओम्हर तकलहुँ तँ ओ अत्यन्त थाकल आ हारल जकाँ बूझि पड़लाह। मुँह सियाह भ' गेल छलनि। हमरा दिस एक बेर जाहि नजरियें देखलनि से पीड़ा आ निराश विवशता सोझे हमरा मर्म केँ आहत क' देलक। आजुक समाजक केहन अभद्र स्थिति भ' गेलैक अछि से बेटीक बाप भेनहि क्यो बूझि सकैत अछि। टाका जँ पर्याप्त रहितनि तँ कोनो तेहन बात नहि छलनि। मुदा साधारण स्थितिक मध्यवित्त व्यक्तिक ऊपर जे कुमारि कन्याक बोझ होइत छैक से केहन असह्य होइत छैक तकर बोध हमरा बाबूजीक दयनीय मुखाकृति देखिक' सहजें भ' गेल।

भेल जे कोनो तेहन चमत्कार होइत जे हम बेटी सँ बेटा भ' जैतहुँ तँ भगवानक बड़ गुण माननितियनि। धरती फाटि जाय आ हम ओहि मे समा जाइ से इच्छा होम' लागल। आइ दू साल सँ बाबूजी केँ वर तकबाक हेतु हम व्यग्र रूपें बौआइत देखैत छियनि। कहियो-कहियो अझक्के कोनो-कोनो बात कान मे पड़ैत अछि जे फल्लाँ गाम मे एतेक टाका मँगैत छनि तँ चिल्लाँ गाम मे एतेक। कतहु जँ कम्मो टाकाक गप्प होइत छनि तँ वरे पसिन्न नहि पड़ैत छनि। हमरा पढ़ा-लिखाक' बाबूजी हमरा लेल जे उपकार कयने होथि, मुदा अपना लेल तँ विपत्तिक पहाड़े ठाढ़ क' लेलनि। पढ़ल-लिखल वरक दाम बेसी भ' गेल छैक। आब तँ ई बातसभ सुनैत-सुनैत होइत अछि जे कोनो पोखरि-झाँखुर मे डूबि जाइ, तखने निस्तार भ' सकैत अछि। हे दैव! के हमर पीड़ा बूझत?

13 फरवरी 1960

सुनलहुँ जे मंगलपुरक कथा पटि गेलनि। टाका कतेक लगलनि से नहि सुनलहुँ

अछि, मुदा एतबा धरि सुनैत छी जे खेत सुदभरना नहि राख' पड़तनि। वर केहन, की पढ़ल-लिखल, कतेक अवस्थाक, ई सभ बुझबाक उत्साह आब नहि अछि। शुरुहे मे ई उत्सुकता रहैत छल, मुदा जखन बाबूजी केँ बड़ बौआइत देखलियनि आ सभठाम सँ निराशे भेल अबैत छथि से बरमहल देखैत रहलहुँ तँ आब ओ सभ जिज्ञासा समाप्त भ' गेल अछि। खाली एतबे बूझिक' प्रसन्न छी जे कथा ठीक भ' गेलनि। हमरा बियाहक हेतु ततेक उत्कण्ठा नहि अछि जतेक एहि बातक हर्ष, जे बाबूजीक चिन्ता समाप्त भ' रहल छनि। हमर अन्तर्यामी जनैत छथि जे हमरा एक्को मिसिया कौतूहल कोनो गप्प बुझबाक हो। से मनोभाव रहल कहाँ? सौंसे जीवन दुखक ज्वाला मे दग्ध भ' जाय तँ क्षति नहि। तकर कोनो चिन्ता एखन नहि अछि। केवल एतबे होइत अछि जे कहुना बाबूजीक माथपरक भार धरि कम होइनि। से कथा पटि गेलनि, इएह हमरा लेल पर्याप्त थिक। आब होइत अछि जे बियाहक दिन जतेक शीघ्र हो से नीक। भय होइत अछि जे कतहु कथा भंगठि नहि जाइन। परुकाँ एहिना सभ ठीक भ' गेल छलनि कि सहसा तेहन ने बात केयो लेसि देने छल हमरा विषय मे, जे भेल कथा बड़दा गेलनि। वर केँ एतुक्का केयो माने-मतलब सँ बड़े अप्रत्यक्ष रूप मे कहि देलकैक जे कन्या केँ ठीक छाती पर चरक फूटल छैक। बात तेहन जे एकर मार्जन कोना कयल जा सकैत छल? ओहि दिन ई सुनिक' हम गोसाउनिक घर मे बैसिक' चुपचाप ततेक काननि छलहुँ जे मोन पड़ैत अछि तँ एखनो आँखि नोरा जाइत अछि। तें होइत अछि जे कहुना शुभ-शुभ क' बाबूजी कन्यादानक भार सँ मुक्त भ' जाथि तँ हुनकेटा नहि, हमरो जी निश्‍िंचत भ' जाइत। लोक सुनत तँ कहि नहि, एकरा की बूझत? मुदा हमर मनोभाव तँ एकटा भगवाने बुझैत छथि। कुमारि छी, बियाहक प्रसंग मिथिलाक कन्या केँ जे औत्सुक्य होमक चाही से आबक युग मे ककरो-ककरो होइत होयतैक, जकर बाबूजी पर्याप्त टाका गनि सकैत होयथिन। ई जरलाहा समाज-व्यवस्था तँ कुमारि कन्यासभक हृदय केँ खुक्ख आ दग्ध बना देलकैक अछि। युवावस्था रहितो अपना घर-आँगनक तथा टोल-पड़ोसक वातावरण आ माय-बापक चिन्ता-निराशा एवं घोर दुख ओ अपमानक कारणे कन्या अपना जीवन सँ अपने अकच्छ भ' जाइत अछि। ताहू मे जँ दुर्भाग्य सँ ओ पढ़लि-लिखलि हो। बिनु वयसेक बूढ़ि माउगि भ' जाइत अछि। मुदा लोक कहैत छैक जे जमाना बड़ तेजी सँ प्रगति क' रहल अछि? नारी जातिक उन्नतिक ढोल पीटल जाइत अछि!!

15 फरवरी 1960

ई बूझि तँ आइ सरिपहुँ हमरा होइत अछि जे हर्षे बताहि भ' जायब। खाइत काल बड़े तृप्त भाव सँ बाबूजी माय कें कहैत छलथिन जे 'वर' बड़े भविष्णु छथि, पढ़ि रहलाह अछि, पिता नहि छथिन, जेठ जाय छथिन अभिभावक। अपने बड़ आदर्शवादी छथि। बिनु टाका लेनहि बियाह करक हेतु वचन देलनि अछि। भाय कें खबरि क' देने छथिन आ अगिले रवि दिन (अर्थात् फागुन वदि नवमी उपरान्त दशमी रवि 21 फरवरी 1960 कें) सोझे कालेजे सँ बरियातीक संग विवाह करक हेतु आबि जयताह। देखबा मे कने पिंडश्याम छथि, पातरे-छितरे देह, देखबा-सुनबा मे बेस सुन्दर, मुँह मे कने-कने गोटीक दाग छनि। हमरा ई सभ सुनलाक बाद आरो नहि रहल गेल। भेल जे बियाह सँ पूर्वो जँ ओ भेटि जाथि तँ हम हुनक पदधूलि ल' ली। आदर्श आ व्यवहार जखन दुहू मिलिक' एक भ' जाइत अछि तँ एक अपूर्व उच्चता ओकरा भेटि जाइत छैक। दौड़ल-दौड़ल बहिनाक आँगन चल अयलहुँ। बहिना नहि छलि। ओकरा घर मे एक टा महादेवीक फोटो टाँगल छैक। हाथ मे भिक्षापात्र लेने महादेव जी भिक्षा माँगि रहल छथिन आ भगवती अन्नपूर्णा भिक्षा द' रहलि छथिन। बड़ी काल धरि ओ फोटो देखैत रहलहुँ। गोड़ लगलियनि आ फेर बताहिये जकाँ आँगन घूरि अयलहुँ। बहिनाक माय दोरुखा लग माछ निकबैत रहथिन। बैस' लेल ओ कहबो कयलनि, मुदा हुनका किदन-कहाँदन कहिक' चलि अयलहुँ। तकरा बाद सँ मन मे रत्नाकरक उद्वेग जकाँ की सभ भाव-रत्न उधिआइत रहल से नहि बीछि सकलहुँ। जेहो बिछलहुँ से नुकाक' हृदय-सम्पुट मे राखि लेलहुँ। ई कतहु अनका देखयबाक थिकै?

18 फरवरी 1960

बियाहक सभ ओरिआओन भ' गेल अछि। दहीक हेतु दूधपर दाम लगा देल गेल छैक। घी, चीनी, बेसन आदि मिठाइक हेतु सामग्री सभ आबि गेल अछि माय से अदौरी, तिलौरी, दनौरी आदिक ओरिआओन क' लेलक अछि। बहिना आ हम एहि सभक विषय मे बड़ी-बड़ी काल धरि फदका क' चुकल छी। की-कहाँ सब ने गप्प हमरालोकनि कयने छी। हमर रोम-रोम एहि आनन्दें प्रफुल्लित अछि जे बाबूजीक बड़ पैघ मनोरथ सफल भ' रहल छनि। एकटा बातक आशंका कखनो-कखनो होइत अछि जे बाबूजी केवल वरे टा सँ गप्प कयने छथि कि हुनक भाइयो-लोकनिसँ, से नहि कहि।

19 फरवरी 1960

आइ जे भनक लागल अछि आ माय तथा बाबूजी केँ घबरायल देखलियनि अछि से हमर अन्तरात्मा काँपि उठल। आधारे जेना विचलित भ' गेल। हे भगवती, हमर लाज आब अहींक हाथ अछि। बहिना सँ पता लागल अछि जे वरक जेठ भाय हुनका फुसिये अपना असकक तार द' क' गामपर बजा लेलथिन अछि आ ओतय सँ बाबूजी केँ समाद अयलनि अछि जे मंगलपुर आबिक' कथाक निर्णय करब आवश्यक छनि। बाबूजी केँ जाहि गतातें ई काज पटल छलनि ओ मास्टर साहेब सेहो चिट्ठी लिखलथिन अछि। बाबूजी मंगलपुर जयबाक काल हमरा दिस जाहि नजरियें तकलनि से हमरा करेज केँ दू खण्ड क' देलक अछि। होइत अछि जे कतहु साँप डसि लितय वा कोनो रोगे तेहन भ' जइतय जे बाबूजीक एहि निराशाक अथाह मोनि मे डूबल नजरि सँ बचि जइतहुँ। भगवती केँ गोहरा रहल छियनि जे कहुना ई कथा नहि भंगठनि। ई निगूढ़ लज्जाक बात थिक जे अपना बियाहक लेल हम अपनहि बड़ आतुर भ' गेलि छी। मुदा की करू? आइ-माइक व्यंग्य-वाण, टोल-पड़ोसक लोकसभक गप्पक टोन, बाबूजीक करुण मुख-मुद्रा, मायक डबडबायल आँखि, अप्पन धुआ-कब्जाक बाढ़ि आ ताहिपर सँ समाजक ई व्यवस्थाक बलिवेदी। होइत अछि जे एहि पुरुष-समाजपर एक्के बेर किएक ने भयंकर वज्र खसि पड़ैत छैक जे स्त्रीगणक ई दुर्गंजन क' रहल अछि। जँ हमरा बुतें होइत तँ हम भयंकर अभिशाप द' क' एहन क्रूर आ वधिक पुरुष जातिक, जकर पितृसत्ताक समाज की-की ने अनर्थ क' रहल अछि, सौंसे पृथ्वीपर सँ सर्वनाश क' दितिऐक।

20 फरवरी 1960

बाबूजी घूमिक' मंगलपुर सँ निराश भेल आइ चल अयलाह। झमान भ' क' जे दरबज्जाक चौकीपर बैसलाह-बैसलाह नहि, खसि पड़लाह से देखिते हम ज्ञान-शून्य भ' गेलहुँ। बाबूजी-बाबूजी कहैत हम हुनका बेहोश होइत देखि लग जाक' पकड़ि लेलियनि। लग गेलापर ओ हमरा दिस जाहि नेत्रें तकलनि ताहि मे एके ठाम गहन विषाद, तीव्र असन्तोष, हिंस्र क्रोध आ करुण निराशा भरल छलनि। हमर रोम-रोम काँपि उठल। मोन घूम' लागल आ चीत्कार करैत-करैत कोनहुना अपना केँ रोकि सकलहुँ। हे दैव, आब की करू? पुरुष रहितहुँ तँ आजन्म कुमार रहबाक निश्चय क' लितहुँ। स्त्री-गणक हेतु अपना समाज मे तँ सेहो सम्भव नहि छैक। काल्हि बियाह होइत, मुदा आब दोसरे बात होयत। मोन पड़ैत अछि, सखीक बियाह, मोन पड़ैत अछि, बड़की दादी, महियामवाली मैयाँ, लालकाकी आ

एकमावाली दीदीक विष-मिश्रित कटाक्ष तथा वज्रसनक बोल; मोन पड़ैत अछि, माइक कबुला-पाती आ भगवतीक गोहारि; मोन पड़ैत अछि, बाबूजीक भयंकर निराशाक कारणे कारी झमान भेल मुखाकृति; मोन पड़ैत अछि, आइ सँ दू-चारि दिन पहिलुक अपन उमंग; मोन पड़ैत अछि, बहिनाक संग भेल गप्प-सप्पक मधुर, मनोहर मनोरथ आ अपन जरलाहा कर्म...

ककरा की कहबै, सुनत के आइ
फाट' हे धरती समा हम जाइ।

आब हम जीबिक' की करब? आत्म-हत्या पाप थिक से बुझल अछि, मुदा हमरा लेल आब यमराजे शरण।

(ई डायरी जकर किछु अंश बीछिक' अक्षुण्ण रूपें अहाँलोकनिक समक्ष अछि से हमरा श्री चन्द्रकिशोर बाबू सँ पढ़य लेल भेटल, जे हमर मित्र थिकाह, जे एतय नैयायिक दण्डाधिकारी छथि, जे मंगलपुर रहैत छथि, जे 21 फरवरी 1960 केँ जेठ भाइक द्वारा व्यवस्थाक माँग कयलोपर तकरा नहि मानि चुपचाप विवाह करक हेतु रामपुर गेल छलाह, जे ओतय जाक' सुनलनि जे काल्हिये सुभद्रा, मने ओ कन्या सौंसे देह मे मटिया तेल ढारि आगि लगा लेलक आ जरिक' मरि गेल, जे ओतय जाक' सुभद्राक कोनो चेन्ह मँगने छलथिन आ तखन ई डायरी भेटल छलनि, जे एहि डायरीक बल सँ सुभद्राक परिवार केँ एहि अग्निकांडक मामिला सँ बरी करौने छलथिन, जे सुभद्राक पिता केँ अपन पिता बुझैत छथिन, आ जे आजन्म कुमार रहबाक प्रतिज्ञा क' व्यवस्था आ काटरक विरोध मे जाति-पाति केँ तोड़िक' अन्तर्जातीय विवाहक प्रचार खूब जोर-शोर सँ क' रहल छथि।)

मिथिला मिहिर: 24 जून 1962

अन्हार आ इजोत

आइ चौठचन्द्र थिकैक। चौठचन्द्र आ रवि दिन। गामपर रहैत तँ एखन चौरचनक छाँछ-छाँछी आ डाली-साजी घर-बाहर करक ओरिआओन-पाती मे व्यस्त रहैत। मुदा एतय... ? रवि रहितो हुनका सँ गप्पक के कहय, जे भेंटो होयब कठिन भ' गेल छैक।

पूरी तरकारीक अतिरिक्त थोड़ेक पिडुकिया सेहो बनौलक अछि अनुराधा, आ एक दीर्घ निश्वास छोड़ैत बिनु हाथ-मुँह धोनहि भनसाघर सँ बहराक' दोसर कोठली मे ओ चल आयलि। चल आयलि आ खिड़कीक पल्ला पकड़िक' शून्य दृष्टियें गली दिस ताकय लागलि। सहसा बल्बसभ मिझा गेलैक। जहिया सँ डी.वी.सी. क बिजली अयलैक अछि तहिया सँ बेसी काल राति मे तीन-चारि खेप एहिना होइत छैक। अनुराधा आन दिन एना अन्हार भ' गेला पर खौंझा उठैत छलि। ...मुदा आइ ओकर मन:स्थिति खौंझयबो जोगर नहि छैक। से खिड़की लग आबिक' तेना ठाढ़ि भ' गेलि जे कखन अन्हार भ' गेलैक जेना सेहो नहि बूझि सकलि।

ओकरा मस्तिष्क मे पछिला बात सभ एक-एक क' उधिआय लगलैक। यैह पन्द्रह अगस्तक बात थिक। ओ चौदहे अगस्त केँ गाम गेल छलाह तँ राति मे जखन अनुराधा सासु केँ जाँति-पीचिक' अपना कोठली अजबारि जानि, जानि-बूझिक' ओहीठाम सासुक पौथान मे सुतय लागलि तँ सासु डेन पकड़िक' उठा देलथिन।

'जाउ, जाउ। कने बच्चा केँ जाँति दियौ ग'। कतेक दिनपर गाम आयल अछि। थाकल-ठेहिआयल होयत।'

सासुक स्नेहसिक्त आदेशें अनुराधा उठिक' जखन अपना कोठली लग नहुँ-नहुँ पहुँचिक' केबाड़ हटौलक तँ देखलक जे ओ कृत्रिम रूपें संचमंच भेल फोंफ कटबाक लाथ कयने पड़ल छथि। अनुराधा केँ हँसी लागि गेलैक। जी कूचिक' हँसी दबबैत ओ ओछाओन लग पयर मारिक' पहुँचले छलि कि तरे-तरे कनखी

सँ देखैत ओ चट द' नमरिक' अनुराधा केँ अपना लग घीचि लेने छलथिन। अनुराधा बाजलि छलि—'जाउ, हम अहाँ सँ नहि बजै छी।'

'से किएक? तमसायलि छी हमरापर?' गुदगुदी लगबैत ओ पुछ' लगलथिन। हाथ सँ अपन आँचर सरियबैत अनुराधा दुलार छिड़ियाक' मुँह फुला लेलक—'नहि बाजब?'

ओ, मने अनुराधाक पति सुधीर, बड़े अधीर भ' क' ओकरा बड़े अनुराग सँ ओछाओनपर सँ उठाक' लग मे ल' लेलथिन आ ओकर कारी-कारी आ पैघ-पैघ केश पर हाथ फेरय लगलथिन। अनुराधा केँ बूझल छलैक जे हिनका हमर ई नमहर केश बड़ पसिन्न छनि। तें जहिया सुधीर गाम अबैत छलाह ओ केश केँ सरियाक' तेना बन्हैत छलि जे छुबिते देरी फूजि जाइक।

'नहि बाजब तँ हम काल्हिये चलि जायब।' सुधीर ओकर मुँह केँ दुनू हाथें उठाक' सिनेह सँ अपना छाती मे सटा लेने छलथिन।

ऊँ...ऊँ करैत ओ बाजलि छलि आ हँसलि छलि, हँसलि छलि आ बाजलि छलि...'हम आब अहीं लग रहब। ...हमरो लेने चलू।' कहिक' ओ लजा गेलि छलि आ पतिक छाती मे जोर सँ मुँह नुका लेने छलि। सुधीर ओकर पीठ थपथपबैत कहने छलथिन—'यैह तँ हमहूँ कहय अयलहुँ अछि जे आब हमहूँ अहाँ बेत्रेक नहि रहि सकैत छी। अहाँ केँ लेम' अयलहुँ अछि।' अनुराधा हुलसिक' पतिक दुनू गाल अपन दुहू तरहत्थी सँ पकड़ि लेने छलि आ पतिक आँखि मे आँखि मिलबैत बाजल छलि—'सरिपहुँ?'

'हँ हँ अहीं केँ लेम' अयलहुँ अछि।' पतिक अनुराग आ आवेश भरल एहि मधुर शब्दक श्लेष सँ ओ तेना लज्जाकुल आ भाव-विह्वल भ' गेल छलि जे ओकरा भेल छलैक-दौड़िक' सासु केँ गोड़ लागि आबी, गोसाउनि लग दीप लेसि आबी आ एखनहि बक्कस सरियाब' लागी। ओ पतिक गाल मे अपन गाल सटाक' कानय लागलि। सुधीर केँ ई बुझबा मे भाँगठ नहि रहल छलनि जे ई आनन्दातिरेकक नोर थिक। तें ओ चुपचाप अनुराधाक केश पर हाथ फेरैत रहलथिन। सुधीर केँ बूझल छलनि जे अनुराधा बड़ भावुक छथि। भावुक होयबाक कारणो बूझल छलनि। अनुराधा पढ़ल-लिखल बापक पढ़लि-लिखलि दुलारू बेटी छलि।

माइ-बापक कोरपोच्छ एके टा बेटी। माय रखने छलथिन तरहत्थीपर तँ बाप रखने छलथिन आँखि मे। जेहने सुन्नरि तेहने भागवन्ति, जेहने पढ़लि-लिखलि तेहने लूरि-भासवाली, जेहने दुलारू, तेहने भावुक। ई बात दुहू व्यक्तिक बीच अनेक बेर चर्चाक विषय बनि चुकल छल आ अनुराधा सभ बेर पतिक उपर्युक्त

बात सुनिक' लजा-लजा गेलि छलि।

ओकरा ओहिना मोन छैक जे सासुर अयलापर किछु दिन तँ कनियाँ-कनियाँ अनघोल रहल, मुदा किछु दिनक बाद भानस-भात, कुटिया-पिसिया आदि आन-काज उदेम मे कनेको त्रुटि भेलापर कहियो कुबोल नहि सुननिहारि अनुराधा सासुरक विशाल सम्मिलित परिवारक वैयक्तिक अवकाशरहित वातावरण सँ अकच्छ भ' गेलि छलि; तकर अतिरिक्त बात-बात मे अभिधा, लक्षणा आ व्यंजना शक्तिक प्रखरता सँ चोख भेल प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष उक्तिबाण सँ मर्माहत भेलि ओ तेहन आकुल-व्याकुल भ' गेलि छलि जे सासुरक राँड़ी बेट-खौकीक अशान्त कलह, दियादिनीसभक ओल सनक बोल आ ननदि-सासुक जहराओल-महुराओल तीर सन व्यंग भरल उलहन-उपराग सभ ओकरा कंठ लग ठेकि गेल छलैक। से, अपना संगहि ल' केँ जयबाक प्रसंग पतिक विचार ओहि दिन बूझिक' अनुराधा हर्षातिरेकें आर्द्र भ' गेलि छलि। सुधीर कहने रहथिन-'हमर नोकरी कोनो तेहन भारी नहि अछि जे खूब ठाठ-बाट सँ रही तें सभ ओरिआओन जुगताइये क' करय पड़त। मकानो तेहन बढ़ियाँ नहि भेटि सकल अछि। दुइए टा कोठली अछि। एक टा छोट-छीन बरन्डा, पानिक पाइप साझी अछि आ पैखाना सेहो साझिये। बगल मे एक टा बूढ़ मास्टर साहेब रहैत छथि, अपना बूढ़ीक संग।' सुनिक' अनुराधाक हर्ष मे रंचोमात्र कमी नहि भेल छलैक।

अनुराधा केँ नीक जकाँ स्मरण छैक जे एतय अयलाक बादो आरम्भे मे शहरक एक कातक साधारण लोकक मोहल्ला मे खपरैल घरसभक बीच मसोमातक एहि कोठानुमा पुरना ढाठीक मकान सँ ओकरा कोनो असन्तोष नहि भेल छलैक। सुधीर कहनो रहथिन जे दोसर मोहल्ला मे एकटा नीक सनक मकान ताकि रहल छी। अनुराधा ओहिपर ध्यान देब आवश्यक नहि बुझने छलि। सत्रह अगस्त केँ तँ ओ आयले छलि, मुदा ओकर दुइए दिनक बाद उन्नैस अगस्त केँ रवि छलैक आ तखन जे मनोहर बाबूक पत्नी अपना स्वामीक संग रिक्शा पर चढ़िक' अपना स्वामीक मित्र सुधीरक पत्नी अनुराधाक खोज-पुछारि कर' अयलथिन से अनुराधाक मन मे आ दाम्पत्य जीवन मे एकटा आगि सुनगा देलथिन।

'मास्टरक पत्नी बुढ़िया डाइनि अछि। एहि घर मे एक टा ओकर परिचित लोक रहैत छलथिन तकर कोखिये ल' लेलकनि। ...ई मोहल्ला बड़ खराब छैक। सभ टा छोटके लोकक घर सभ। दिन भरि रिक्शा, ताँगा चलाओत कि कुलीक काज करत आ राति मे ताड़ी पीबि बुत्त भेल घर आबि बहु सँ महाभारत करत। आँखिक कनेको अओढ़ भेलापर एकरा-सभक धियापुता जैह पाओत सैह निपत्ता

क' देत। ई कोनो नीक आदमीक रहबाक मोहल्ला थिकैक? मास्टर तँ बूढ़ अछि, केयो कतहु नहि छैक, आब बुढ़ारी मे कतय जायत; तें एतय पड़ल अछि। नोकरियो की तँ मास्टरी। ...हमरा मोहल्ला मे एकटा मकान खाली होब' वाला छैक। कहियौन जे तकर उद्योग करथि।'

सुवेशा चंचला, मने मनोहर बाबूक पत्नी अपन परिधान-परिवेश, सौन्दर्य-विन्यास आ आभिजात्यक अहंकार-प्रदर्शन द्वारा अनुराधा केँ सहजें अपन हीनताक बोध करा देलकनि। ओ स्पष्ट देखने छलि जे बीच-बीच मे चाह वा पान लेबक हेतु बरन्डारपर सँ एहि कोठली आयल ओकर पति सुधीर सेहो चंचलाक सुरुचिपूर्ण रूप-सज्जा सँ जेना भीतरे-भीतर प्रभावित जकाँ भ' गेल रहथिन।

'अरे अनु... ?' सहसा (दुइए टा कोठली रहक कारणे) अनुराधा केँ देखिक' मनोहर चौंकि उठल छलाह। अनुराधो चौंकि उठलि छलि। ....कि ओम्हर बिलाड़ि ताख पर सँ दूधक जार खसा देने छलैक। ऊपर सँ ढनमनाक' खसल जार, सभ केँ चौंकाक' टुकड़ी-टुकड़ी भ' गेल छलैक आ दूध सौंसे कोठली पसरि गेल छलैक। ...चंचलाक साड़ियो दूरि भ' गेल छलैक। अनुराधा दौड़िक' शीशाक टुकड़ा बीछय लागलि आ चंचला उठिक' साड़ी धोब' लागलि। मनोहर एहि कोठली दिस बढ़ि आयल छलाह आ सुधीर चंचलाक साड़ी पर पानि अलगाब' लागल छलाह। साड़ी धोक' चंचला बिदा भ' गेलि छलि आ सुधीर शीशा बिछैतकाल आँगुर मे शीशा गड़ि गेने शोणित बहैत अनुराधाक आँगुर मे 'आयोडेक्स' बाहर क' लगब' लागल छलाह।

'बेस, फेर दोसर दिन सुधीर बाबू...' कहैत मनोहर चल गेल छलाह।

मनोहर केँ अनुराधा पहिने सँ चिन्हैत छलि। ओ ओकर मात्रिकक छलथिन, मामक दियादी सम्बधे ममियौत भाय होयथिन। पढ़ैत काल अनुराधाक अपन ममियौत भायक संग ओ बरमहल अनुराधाक डेरा पर अबैत छलाह। अनुराधा बेसी काल चाह-जलखै सँ दुहू भायक सत्कार करैत छलि। ओकरा ई जानि प्रसन्नते भेल छलैक जे एहिठाम एकटा परिचित लोक भेटलाह अछि।

सुधीर घूमिक' अयलाह तँ पयर धोक' खयबा लेल सबेरे बैसि गेल छलाह जेना कोनो हड़बड़ी मे होथि।

'सत्ते, कोनो नीक मोहल्ला मे मकान ताकू ने!' चंचला लोकनिक गेलाक बाद खाइत काल सुधीर केँ अनुराधा अनुरोधक स्वर मे कहने छलि-'एतय भद्र लोकक रहबा जोगर...' ओकरा मन मे चंचलाक बात सभ स्मरण भ' अयलैक।

'से तँ ठीके; मुदा हम तँ अपस्याँत छीहे ओहि पाछू। नीक मकान केँ के

कहय, केहनो सनक मकान भेटब आइ-काल्हि बड़ कठिन भ' गेल छैक।' सुधीर मिझायल जकाँ बाजल छलाह।

'मनोहर बाबूक घरे लग एकटा मकान खाली छैक।' अनुराधा अपना स्वामीक एहि भाव-परिवर्त्तन केँ नहि बूझि सकलि छलि।

बीच मे कनेक कालक हेतु एक बेर बल्ब जरि उठल छलैक आ अनुराधा जेना सोझाँक गली मे उघाड़े ठाढ़ि हो तेना जकाँ हड़बड़ा उठलि छलि कि फेर भुक द' बल्ब सभ मिझा गेलैक।

अनुराधा कने सम्हरिक' फेर सोचय लागलि—'केहन कुयात्रा मे आयलि छलहुँ से नहि कहि। ओतय सोचैत छलहुँ जे हिनका सँ भरिपोख गप्प करब, सिनेह करब, हरदम हिनक सेवा मे लागलि रहब। मुदा ओहि दिनक बाद सँ तेहन ने चंचल भ' गेल छथि जे दूटा बातो करय लेल सेहन्ता लागल रहैत अछि। ...भोरे उठैत छथि, हबर-हबर दू लोटा पानि ढारि जलखै करैत छथि आ बिदा भ' जाइत छथि...आफिस जयबाक बेर अबैत छथि आ जल्दी-जल्दी जे खाक' जाइत छथि से नओ दस बजैत राति सँ पहिने कहियो नहि अबैत छथि...। अनुराधा समुद्र लग रहियोक' अपना केँ पियासलि अनुभव कय रहलि छलि। ओकरा भेलैक जेना एखन कंठ सुखा गेल छैक। सभ टा कल्पना जेना ढहि रहल होइक तेना जकाँ।

बीस अगस्त सँ दू सितम्बर धरि आइ बारह-तेरह दिन सँ ओ उदास, हताश आ विषण्ण भ' रहलि छलि।

सुधीरक अयलापर ओ सभ राति बिचारैत अछि जे आइ हुनका छाती मे मुँह नुकाक' खूब कानब...खूब कानब। कहबनि...'हमरा बुत्ते कोन अपराध भेल अछि जे अहाँ एना हमरा सँ पड़ायल फिरैत छी? हमरा नहि चाही मकान आ नहि चाही आरो किछु। हमरा केवल अहाँ चाही। हम एही मे संतुष्ट छी।' मुदा जखन सुधीर अबैत छथि तँ हुनका मुँहपर एक प्रकारक अवसाद, थाकल निराशा तथा गहन उदासीनता केँ देखि अनुराधा मोने-मोन अहुरिया काटिक' चुप्प रहि जाइत अछि, ओकर समस्त निर्णय समाप्त भ' जाइत छैक। किछु कहबाक साहसे नहि होइत छैक। जेना स्नेहक स्रोत एक-एक क' सुखायल जा रहल होइक। अनुराधा जेना टूटल जा रहलि हो...।

आइ मुदा ओ नहि मानति...खास क' आजुक अनुभव ओकरा आओरो बेसी अशान्त आ अधीर बना देने छलैक।

अनुराधा केँ मोन पड़लैक जे आइ जखन मनोहर अपने सँ सुधीर केँ अपना ओहिठाम सत्यनारायणक पूजाक हकार देमय अयलथिन तखन संयोग सँ अनुराधा

बरन्डापर छलि आ सुधीर नहा-सोनाक' बहरा गेल छलाह। मनोहर बाबू अपने मने कोठली मे जाक' कुर्सी पर बैसि गेलाह आ कहलथिन 'अनु, चाह बनाक' पियाउ। बहुत दिन भ' गेल अछि अहाँक हाथक चाह पिउना।'

अनुराधा केँ नहि चाहितो पतिक मर्यादा-रक्षार्थ चाह बनाक' मनोहर केँ देबय पड़ल छलैक। मनोहर चाह पिबैत छलाह कि सुधीर धड़फड़ायल आयल छलाह आ मनोहर केँ चाह पिबैत तथा अनुराधा केँ अन्यमनस्क भावें भनसा घर मे ठाढ़ि देखिक' जेना चौंकि उठल छलाह। मुदा शिष्टताक रक्षार्थ तुरत मनोहर सँ पूछि लेने छलाह—'कहू, कखन अयलहुँ?' अनुराधा केँ भेल छलैक जे दौड़िक' पति केँ पकड़ि लेअय आ कहि उठय जे एखने अयलाह अछि। मुदा एक आन व्यक्तिक उपस्थिति मे पतिक आँखिक आक्रोश देखि सकदम्म भ' गेलि छलि। एक कप चाह पतियो केँ ओ द' आयलि छलि जे सुधीर एकेबेर मे तप्त रहितो पीबि लेने छलाह आ बनबनाक' छूटल घाम केँ पोछि, अनुराधा दिस बिनु तकने, मनोहर बाबूक संग उठिक' चलि गेल छलाह से एखन धरि नहि आयल छलाह।

ई बात अनुराधा केँ बूझल छलैक जे हकारक अतिरिक्त दुहू गोटे केँ नोत सेहो छलनि। अनुराधा केँ ल' जयबाक हेतु चंचला रिक्शा लेने आयलि छलीह तँ मोन नहि रहितो ओकरा जाय पड़ल छलैक। पूजा मे आनो-आन स्त्रीगण सभ आयलि छलीह। कथारम्भ होइते जे स्त्रीगण सभ मे जोर-जोर सँ गप्प-सप्प आरम्भ भेल ताहि सँ अनुराधा आरो व्याकुल व्यथित भ' गेलि छलि। गप्पक मुख्य विषय छलैक परोक्ष रूपें एक दोसर स्त्रीगणक अदखोइ-बदखोइ। चंचलाक अनुपस्थिति मे एक गोटय बड़े वीभत्स रूपें बाजलि छलि जे 'एकरा धिया-पूता नहि होइत छैक से कहाँदन डाक्टर कहलकैक अछि मनोहरे बाबू मे कोनो दोष छनि। ...तहिया सँ ई एम्हर-ओम्हर मुँह मार' लागलि अछि। बगल मे जे मकान खाली भेलैक अछि ताहि मे एकटा प्रोफेसर रहैत छलैक से एक दिन ओकर स्त्रीये देखलकैक...। तकर बाद बिनु मकान बदलने ओ नहि रहलि। पुरुषक कोन विश्वास? एकरा तँ जँ सम्हारिक' नहि राखी तँ रास-पगहा तोड़िक' अनकर हरियरी दिस कहुँखन दौड़ि सकैत अछि। ...आइ-काल्हि एकटा संयत पुरुषपर जाल छपने अछि...।' अनुराधा केँ ओहि 'संयत पुरुष'क मर्म बुझबा मे भाँगठ नहि रहल छलैक आ भेलैक जे बजनिहारिक ओ तुरन्त मुँह नोचि लेअय।

एखन ओकरा मन मे जेना किछु बरकि रहल छलैक। ओहि गलीक सभटा अन्धकार जेना क्रमशः अनुराधाक प्राण मे पैसि रहल छलैक। अन्धकार...घोर अन्धकार...।

सहसा बल्ब जरि उठलैक। अनुराधा ओहिना भावहीन मुद्रा मे ठाढ़ि छलि, आँखि मूनल छलैक आ नोरक टघार गालपर होइत छाती पर खसि रहल छलैक कि तखने सुधीर घर मे अयलाह। अनुराधा अपना केँ सम्हारि नहि सकलि ओ पतिक अबिते खसि पड़लि। सुधीर दौड़िक' अनुराधा केँ सम्हारि लेलथिन।

'अनु...अनु, की भ' गेल?' घबड़ाक' सुधीर अनुराधाक मुँह अपना छातीपर राखि ओकर केशपर हाथ फेरैत पुछलथिन।

'हमरा द' आउ गाम...' अनुराधा कनैत कण्ठें बाजलि।

'हमरा क्षमा करू, अनु!' भीजल स्वरें सुधीर बजलाह—'एखन हमरा मनोहर कहलनि अछि जे ओ अहाँक मात्रिकक थिकाह...अहाँक ममियौत होयताह।'

'स्वामी... ?' अनुराधा अपना स्वामीक उदार आ विशाल वक्ष पर माथ टेकि जेना आश्वस्त भ' गेलि।

मिथिला मिहिर : 9 सितम्बर 1962

कंडोलेन्स

प्रिय कमल बाबू,

ई बात यथार्थ जे अहाँ पैघ लोक छी। केन्द्रीय सरकारक एतेक ऊँच ओहदापर अपना समाजक कतेक लोक छथि? दिल्ली मे रहैत छी। ओतुक्का समाजक प्रभाव, परिवेश आ परिस्थितिक प्रभाव, अपन स्टैन्डर्ड आ प्रेस्टिजक प्रभाव, सभ सँ बढ़ि वर्तमान इंडस्ट्रियल सिविलिजेशनक प्रभाव, ई सभ किछु अहाँ केँ अपना माटि-पानि सँ पृथक् रहबा लेल प्रोत्साहित क' रहल अछि। (बाध्य क' रहल अछि से मान' लेल हम तैयार नहि छी।) मुदा एहू सत्य केँ कोनो तरहें नहि नुकाओल जा सकैत अछि जे अहाँक पिता एक हाइ स्कूलक अध्यापक छलाह आ पित्ती घर-गृहस्थी केँ चलौनिहार अगबे गृहस्थ। जँ अहाँक पित्ती नहि रहितथि तँ परिवारक पालन-पोषण नहि भ' सकैत। अगबे मास्टर साहेबक टाका सँ की होइतनि? परिवार चलैत रहल, घर-गृहस्थी चलैत रहल, तें मास्टर साहेब अपन कोनो सुख-सेहन्ता नहि देखि, पढ़ौलनि-लिखौलनि। असमय हुनक दिवंगत भ' गेलापर हुनक प्रोभिडेन्ट फंडक संग-संग खेत-पथार पर्यन्त सुदभरना राखि अहाँक पित्ती खर्च जुमबैत रहलाह।

भगवतीक कृपा सँ अहाँ सरिपहुँ गोबरौरक कमल भेलहुँ। पढ़ि-लिखि विद्वान भेलहुँ आ अपना नसीबें एतेक पैघ औफीसर बनलहुँ। अपन बुद्धिमत्ता, कार्य-कुशलता, युगोचित प्रतिभा आ टैक्टिसक कारणे अपना डिपार्टमेंटक अतिरिक्त आनो डिपार्टमेंट सभ मे महत्त्वपूर्ण होल्ड रखने छी। अपना विभागक मिनिस्टरो अहाँक मुट्ठी मे छथि। ई सभ किछु अछैतो लोक केँ जे आशा छलैक, गोबरौरक कमल गौबरौर केँ सरोवर बना देत; से नहि भ' सकलैक। मास्टर साहेब बेचारे सभ सुख-दुख मने मे रखने आँखि मूनि लेलनि। अहाँ की देलियनि आ ओ की पौलनि तकर हिसाब-किताबक प्रयोजन आब नहि रहलैक। जे भेलैक से भेलैक। विवाहो अहाँ अपनहि मने कमिश्नर साहेबक कन्या सँ कयलहुँ। अहाँक जँ ई धारणा अछि

जे अहाँक उन्नति मे एहि 'लव-मैरेज'क, मने हुनक आ हुनका पिता कमिश्नर साहेबक बड़ योगदान छनि तँ हमरा ताहू सँ विरोध नहि अछि। हम केवल एतबे टा सोचि रहल छी जे अहाँक जड़ि ने कटि जाय। जड़ि माने गाम। गाम सँ जँ सम्बन्ध टूटि जायत तँ अहूँ ओम्हरे कतहु अमरलत्ती जकाँ बिनु मूलक अनके सँ रसग्रहण क' लतरि क' रहबा लेल बाध्य भ' जायब। धिया-पूता सभ अपन समाज सँ पूर्णत: अपरिचिते रहत आ समाज केँ जे गौरव-बोध होमक चाही, से नहि भ' सकतैक। अहाँक पित्ती-पितियाइनि केँ बड़ सेहन्ता छनि जे एकबेर गाम आबि सभ केँ देखि जैयनि। अहाँक नेनासभ केँ देखबाक लालसा दुहू गोटा केँ मोह मे आविष्ट कयने छनि। आउ वा हिनकेलोकनि केँ एक बेर दिल्ली ल' जैऔन। अहाँक पित्ती केँ वात रोग जकड़ि लेने छनि से प्राय: अहाँ केँ बुझले होयत।

पहिने हम खूब चिट्ठी लिखि चुकल छी आ अहाँक घनिष्ठ उत्तर पौने छी। ते बहुत दिनपर ओही पूर्व घनिष्ठताक कारणे एहि तरहें पत्र लिखि रहल छी। अधलाह नहि बुझी से आग्रह कयनहि की भ' सकैछ? चि. टॉप्सी तथा पप्पू केँ शुभाशी: आ श्रीमती मधुरिमा देवी केँ स्नेह। डुमरी आयल छलहुँ तें एतहि सँ पत्र लिखलहुँ अछि।

अहाँक
धीरेश्वर

आइ सँ तीन दिन पूर्व अपन बहिनोइक एहि पत्रक प्रतिक्रिया कमल अर्थात् कमल किशोर मल्लिक पर-फाइनेन्स डिपार्टमेंटक मुख्य सचिव मिस्टर के.के. मल्लिक पर-एतबे भेल छल जे ओ जे सिगार पीबि रहल छलाह से पत्र पढ़लाक बाद एकटा दोसरो सिगार तुरन्ते सुनगा लेने छलाह...। साधारणत: आध घंटाक अभ्यन्तर बिनु असाधारण (एबनॉर्मल) भेने ओ नहि पिबैत छलाह। ...आ एशट्रे मे सिगारक छाउर झाड़ैत काल ओ अपना मन मे उठल थोड़-बहुत उष्णता केँ सेहो जेना झाड़ि देने छलाह। आ जेना कोनो बात नहि तेना जकाँ सोफापर सँ उठि इजीचेयरपर पसरि गेल छलाह।

मुदा आइ ऑफिस सँ अयलाक बाद—'डार्लिंग, कने महेश केँ एक कप हॉट काफी आन' कहि दियौक।' मिस्टर मल्लिक अपन टाइ केँ कने ढील करैत, बेड रूम दिस ताकि किछु जोर सँ बाजल छलाह आ थाकल जकाँ अपना पर्सनल चेम्बर मे ढुकि गेल छलाह। अर्थात् एकर अर्थ जे किछु फाइलवर्क करबाक छलनि।

मधुरिमा, माने मिसेज मल्लिक बहराक' पहिने ड्राइंग रूम दिस गेलीह आ

तखन ओत' पति केँ नहि पाबि चेम्बर मे पहुँचलीह। माथपरक छिड़िआयल लट केँ सरियबैत ओ अत्याधुनिक शैली सँ मुस्कुराक' कुहुकि उठलीह।

'हलो डियर, आइ तँ अहाँ बहुत टायर्ड बुझि पड़ैत छी।'

'की कहू? ई नेशनल डिफेन्सक प्रश्न पार्लियामेंट केँ तेना ने हीटेड क' देने अछि जे डिफेन्सो सँ बेसी फाइनेन्से डिपार्टमेंट केँ सक्रिय बना देलक अछि।

'मुदा एना तँ हेल्थपर अधलाह असरि पड़त।'

एतबे मे फोनक घंटी टनटना उठल। मधुरिमा रिसीवर उठा लेलनि—'हेलो,...के मिसेज मिश्रा? ...हँ...हँ...घरेपर छथि। ...प्लीज जस्ट होल्ड द लाइन।'

'ककर फोन थिक डार्लिंग?'

'मिसेज मिश्राक, अरे ओ एजुकेशन डिपार्टमेंटक मनोहर मिश्र नहि छथि? हुनके वाइफक। ...ओ अहाँ केँ चाहैत छथि।'

मधुरिमाक आकृतिपर एक भाव अयलनि आ नहूँ-नहूँ तिरोहित भ' गेलनि। जेना चन्द्रमापर एकटा पतरका मेघखंड आबि गेल हो आ चुपचाप ससरि गेल हो।

'ओह डार्लिंग, हाउ सिली? ...मिस्टर मिश्राक सार हमरे डिपार्टमेंट मे ट्रान्सफर्ड भेलथिन अछि। हुनक प्रमोशन ड्यू छनि...।' एतबा कहि मिस्टर मल्लिक फोन अटेंड कर' लगलाह-'हलो, के मिसेज मिश्रा...(मड़े मधुर स्वर मे) ओह नो,...प्लीज एक्सक्यूज मी...हम इंगेज्ड छी...हँ, क्लबक फंक्शन मे अयबाक प्रयत्न करब...(हँसैत-सन) सर्टेनली, सर्टेनली...आइ विश योर सक्सेस...हँ, हँ...मधुरिमा किने? ...कहैत छियनि (कने उदास जकाँ)...सात बजे कि ने? ...यस... यस...ओके...बाइ-बाइ।'

मिस्टर मल्लिक कने संकुचित जकाँ मधुरिमा सँ बिनु आँखि मिलौनहि एक बेर छत मे घुमैत पंखा दिस देखलनि जे चुहचुहा उठल घाम केँ सुखा देबाक हेतु एकर गति केँ बढ़ब' तँ ने पड़त? आ पुनि फाइल दिस व्यस्त भावें देख' लगलाह। मिसेज मिश्रा सर्विस क्लबक कल्चरल सेक्सनक सेक्रेटरी छथि। मिस्टर मल्लिकक विषय मे मिसेज मिश्रा केँ ल' क' एक बेर कतेको फूसि-साँच गप्प सभ हाइ सर्किल मे पसरल छल, तें मिस्टर मल्लिक एकटा मिथ्या संकोच आ मिसेज मल्लिक एकटा निगूढ़ उदासीक कने-मने अनुभव आ कि अभिनय कयलनि।

'सर्विस क्लब मे आइ कोनो कल्चरल शो थिकै, मिसेज मिश्रा ताही लेल रिक्वेस्ट कयलनि अछि। हमरे प्रिजाइडो कर' कहलनि अछि। अहूँ केँ अयबाक आग्रह कयने छथि।' मिस्टर मल्लिक नतानन आ केन्द्रित-नयन भेल गम्भीर भावें

बजलाह। प्रतिक्रिया बुझबाक हेतु एक बेर मिसेज मल्लिक दिस तकलनि आ पुनि फाइल मे डूबि गेलाह।

'मधु डार्लिंग, अहाँ किछु बजलहुँ नहि ?' ओ कनखी सँ एक बेर पुनि मिसेज मल्लिक दिस देखिक' बड़े हल्लुक ढंगक पोज सँ पुछलथिन।

'सारी, डियर, हम तँ नहि जा सकब।' कने आविष्ट जकाँ मिसेज मल्लिक हठात् बाजि उठलीह।

मिस्टर मल्लिक मधुरिमाक एहि उत्तर सँ सहसा कने चौंकि जकाँ उठलाह आ भौंहु टेढ़ करैत पुनि प्रकृतिस्थ जकाँ भेल निमिष भरिक हेतु मिसेज मल्लिक दिस मर्मवेधी दृष्टियें तकलनि कि तावत् महेश एकटा प्लेट मे कने भूजल काजू आ दू तीनटा बिस्कुटक संग काफीक प्याला राखि गेल। मिस्टर मल्लिक अन्यमनस्क भावें महेश केँ जाइत देखि काज करैत रहलाह।

'असल मे हमर मन नीक नहि अछि। कने हेविनेस बूझि पड़ैत अछि।' मधुरिमा एहि बीच अपना केँ सम्हारि लेने छलीह—'ओना आइ अपना सभ केँ विमल बाबूक ओतय जयबाक चाही। ओ पहिनहि इनभाइट क' चुकल छथि आ से एक्सेप्टो क' लेने छियनि।' मधुरिमा एकटा स्मैश दैत बजलीह।

मिस्टर मल्लिक बजलाह–'ओह, हम तँ बिसरिये गेल छलहुँ। आइ तँ हुनका बेबीक छठिहार थिकनि। ...अच्छा, प्रेजेन्ट करबा लेल वस्तु-जात मँगा लेने छी ?'

'नहि, हमहूँ बिसरि गेल छलहुँ। दूपहर मे फोन सँ ओ रिमाइंड करौलनि तँ मोन पड़ल। सोचलहुँ जे अहाँक अयलापर शापिंग कर' चलब'—मधुरिमा अपन स्मैश (आघात)क प्रतिक्रिया ताकि रहलि छलीह।

मिस्टर मल्लिक जनैत छथि जे विमल कान्त चौघरी आ मधुरिमा दुहू गोटे क्लासफेलो रहथि। ...क्लासफेलो रहथि आ विवाह सँ पूर्व एकटा स्कैंडलोक अफवाह पसरल छल! मुदा तावत् हिनक पिताक बदली भागलपुर सँ मुजफ्फरपुर भ' गेल छलनि। तें बात बड़ अप्रसिद्ध छल। मधुरिमा केँ प्लाजा मे (सिनेमा घर मे) प्लेजर ऑफ हिज कम्पनी (एक खेल) देखैत काल विमल चौधरी आजुक हेतु अयबाक आग्रहो बड़ कयने रहथिन, सेहो मिस्टर मल्लिक केँ बूझल छलनि। मधुरिमा मिस्टर मल्लिकक दुर्बलता जनैत छलीह तें एकटा हिट दैत विमल चौधरीक एप्रोच मन पाड़ि स्मैश देबाक चेष्टा कयने छलीह।

मुदा पार्लियामेंट मे राजनीतिक दाओ-पेंचक धुरंधर लोकसभक बीच आ हुनकेसभक सम्पर्क मे काज कयनिहार मिस्टर मल्लिक काछु जकाँ समटले रहि गेलाह। एहि आघातक कोना असरि लक्षित नहि होम' देलथिन। एक कृत्रिम मुस्कीक

अभिनय करैत बजलाह—'अहाँ तैयार होउ ने, चली शापिंग लेल। ...टॉप्सी कत अछि?'

'टॉप्सी आ पप्पू आयाक संग पार्क दिस गेल अछि।' मधुरिमा असफल शिकारी जकाँ संक्षिप्त उत्तर द' ड्रेसिंग रूम दिस चल गेलीह।

कनेक काल मे ललछाओन रंगक आकर्षक जार्जेटक साड़ी, साड़ी सँ मैच करैत ब्लाउज, पर्स आ ऊँच ऐंड़ीक शू मे सजलि-धजलि मिसेज मल्लिक अबिते बाजि उठलीह-'डियर, एना सीरियस किएक भ' रहल छी?'

'ओह,' मिस्टर मल्लिक हुनका दिस ताकि बाजि उठलाह—'लुकिंग वंडरफुल?'

'थैंक्स, मुदा कहू ने जे अहाँ सीरियस किएक भ' गेल रही?' मधुरिमा सोफापर बैसैत आ आरो बेसी मधुर होइत स्नेहपूर्ण दृष्टियें पति दिस ताकि कह' लगलीह-'डियर...प्लीज...डियर?'

'की कहू, ई वायस ऑफ अमेरिकावला काण्ड ल' क' ऑफिस मे एकटा नबे एक्टिविटीज शुरू भ' गेल छैक। एहि सम्बन्ध मे हमरोपर एकटा बड़ पैघ रिस्पॉन्सिबिलिटी द' देल गेल अछि।' मिस्टर मल्लिक गम्भीर स्वरें बाजि पुनि अपने अपन मनोभावक प्रत्याख्यान करैत उल्लसित स्वर मे बजलाह—'एक टा बात तँ भ' सकैत अछि डार्लिंग? ...अहाँ विमल बाबूक ओत' चलि जाइ आ हम क्लब...। एहि तरहें दुहू ठामक पर्पस सर्व भ' सकैत अछि। ...अहाँ केँ कोनो ऑब्जेक्शन तँ ने?'

'नो, नो, आइ हैव नो ऑब्जेक्शन...।' मिसेज मल्लिक बिनु देखार भेनहि बजलीह।

दुहू व्यक्ति मे एहि तरहें आक्रमण-प्रत्याक्रमणक शीत-युद्ध चलिये रहल छल कि तावत कॉलबेल टनटना उठल। हीरोशिमाक एटम बम जकाँ एकटा प्लेट मे तारवला लिफाफ लेने महेश चेम्बर मे आयल। मिस्टर मल्लिक पेपर कटर सँ लिफाफ फाड़ि तार पढ़' लगलाह। हुनका आकृतिपर उदासीक एक छोट-छीन मेघ उमड़ि आयल।

'की बात थिकैक डियर?' मधुरिमाक स्वर मे आतुरता आ जिज्ञासा छल।

'ट्रैजेडी, डार्लिंग!' मिस्टर मल्लिक तार बढ़ा देलथिन। तार पढ़ि बिनु किछु बजनहि मिसेज मल्लिक उठिक' चल गेलीह। मिस्टर मल्लिक फाइल केँ हटाक' उदस्त भावें सोफापर ओठङि गेलाह।

हुनका आँखि मे आइ-काल्हिक पीच रोड सँ पहिलुका समयक बैलगाड़ी

छोड़ि बिनु कोनो सवारीक पयरें जायबला सुपौल सँ गणपतगंज धरिक बालु भरल सड़क...गणपतगंज सँ अपना गाम 'डुमरी' जयबाक आरि-धूर, डुमरी गामक ओहि घरक चित्र, सभटा एक-एक क' स्पष्ट होम' लगलनि जाहि मे ओ रहैत छलाह आ ओ घर-आँगन जाहि मे हुनक पिता रहैत छलथिन, पित्ती रहैत छलथिन। पित्ती, ...जे हुनका पढ़' लेल सुपौलक चन्द्रा होस्टल मे माथ पर सिदहाक मोटा लेने अबैत छलथिन...जे हुनका पिताक प्राभिडेन्ट फंड सठि गेलाक बाद जमीन-जाल धरि सुदभरना राखि खर्च पठबैत छलथिन...जे अपना बेटा नहि रहबाक कारणे अपन समस्त आशा, आकांक्षा, ममता आ सिनेह हुनकेपर केन्द्रित कयने छलथिन...जाहि पित्ती कें वात रोग जकड़ि लेने छलनि आ ओहि अस्थिपिंजर कें देखबा लेल हिनका पलखति नहि भेटि सकल छलनि...आ जाहि पित्तीक मरि जयबाक ई तार भेटल छलनि...सभटा प्रसंग, बहिरंग आ अन्तरंग सभ किछु बड़े क्षिप्र गति सँ मोन पड़य लगलनि।

'शापिंग कैन्सिल क' देमक चाही...' मिसेज मल्लिक बजलीह।

'हँ, हँ; शापिंगे टा नहि, क्लब आ विमल बाबूक ओहिठाम जयबाक प्रोग्रामो कैन्सिल क' देमक चाही।' मिस्टर मल्लिक एक दीर्घ श्वास लैत बजलाह।

'मुदा...सोशल फंक्शन कें अटेंड नहि करब नीक होयत?...ई तँ रेसीप्रोकल, (पारस्परिक लेन-देनक) बात थिक...' मिसेज मल्लिक विमल बाबूक ओतय जयबाक विषय कें आवश्यक सिद्ध करबाक प्रयास करैत सहसा अपना पतिक अनपेक्षित मुखमुद्रा आ विरूपित देखि चुप भ' गेलीह।

'नो नो...नॉट एट ऑल।' मिस्टर मल्लिक कने तिक्त-कटु भ' उठलाह। 'सबटा कैन्सिल क' देमक चाही। लोक की कहत? आइ हमरा सभ कें कन्डोलेन्स मनाबक चाही।' अन्त मे नॉर्मल होइत ओ मधुरिमाक तर्कक गम्भीर स्वर मे प्रतिवाद क' देलथिन।

वातावरण मे किछु गरमी आ गम्भीरता आबि गेल। जहिना मिसेज मल्लिक कें विमल बाबूक ओतय नहि जयबाक दुख छलनि प्रायः तहिना मिस्टर मल्लिक कें मिसेज मिश्राक आमंत्रण छोड़ि देबाक। दुहू व्यक्ति अभ्यन्तर सँ अपन-अपन मनोवांछित प्रोग्राम कैन्सिल भ' जयबाक आ बाह्यतः सद्यः प्राप्त तारक कारणे पूर्ण गाम्भीर्यक संग मौन रहिक' कंडोलेन्स मनबैत रहलाह।

किछु कालक निस्तब्धताक बाद वातावरण कें कने हल्लुक बनबैत मिसेज मल्लिक उठिक' रैकपर सँ एकटा सादा तारक फार्म आनि मिस्टर मल्लिकक आगाँ मे राखि देलथिन।

मिस्टर मल्लिक जिज्ञासाक भावें पत्नी दिस तकलनि। मिसेज मल्लिक बजलीह—'अहाँ डुमरी कोना जा सकब डियर? एहि टीडियस जर्नीक हेतु अहाँक हेल्थ परमिट नहि करैत अछि।...तेँ गाम एकटा कन्डोलेन्सक तार पठा दियौक।'

'एक्सेलेन्ट डार्लिंग, यू आर भेरी प्रैक्टिकल।' मिस्टर मल्लिक तार भरि कॉल बेल दबौलनि। महेशक अयलापर कहलथिन—'ड्राइभर केँ कहक जे मेम साहेब केँ विमल बाबूक ओतय छोड़ि औतनि आ तों घुमैत काल जी.पी. ओ. मे ई एक्सप्रेस तार द' दिहक।'

ड्रेस बदलबाक हेतु कृतज्ञ भावें मिसेज मल्लिकक ड्रेसिंग रूम दिस आ तार ल' क' चुपचाप मोटर गैरेज दिस महेशक चलि गेलाक बाद मिस्टर मल्लिक जेना एकटा बड़ पैघ दायित्व आ चिन्ता सँ मुक्त भ' गेल होथि तेना जकाँ हाफी करैत अंगैठी कयलनि आ घड़ी दिस देखि ठाढ़ होइत नहुँ-नहुँ बजलाह—'केवल दसे मिनट तँ लेट भेल अछि। प्राय: मिसेज मिश्रा एहि लेटक हेतु हमरा अवश्य क्षमा क' देतीह।'

आ उठिक' अपना फियेट कार केँ चलि गेलाक बाद अपना माली केँ टैक्सी आनक आदेश द' अपने तैयार होम' लगलाह।

मिथिला मिहिर : 15 सितम्बर 1962

स्वयम्बर

गप्प सत्य थिक तें गाम नाम नहि कहब। नहि कहब तँ कहबो मे आ सुनबो मे असुविधा होयत। तें मानि लिय' जे पिताक नाम धनंजय बाबू छलनि आ हुनक कन्याक नाम दीप्ति छल। धनंजय बाबू धनबाद मे काज करैत छथि आ दीप्ति पढ़ैत अछि दरभंगा कालेज मे। दरभंगा मे दीप्तिक माम मृत्युंजय बाबू ओकालति करैत छथिन। ममियौत बहिन सरलाक संग कालेज जयबा-अयबा मे दीप्ति केँ कोनो असुविधा नहि होइत छैक। माम छथिन पण्डिताह लोक मुदा विचारें अपटुडेट। ममियौत बहिन सरला तँ सहजहिं माडर्न विचारक अछि। डेरा लालबाग मे छैक, जतय गाम जकाँ इसकुलिया छौंड़ी सभ केँ दुहू कुलक पुरखाक उद्धारक दायित्व-बोध करौनिहार केयो बूढ़-बुढ़ानुस लोक नहि छैक आ नहि एकरा लोकनि केँ देखिक' ककरो देह मे धाहे फुकैत छैक। तें दीप्ति बड़े निश्चिन्त भाव सँ अपना व्यक्तित्व संग अपन बौद्धिक मनःस्तरक निर्माण आ विकास क' रहल अछि। कालेजक डिबेटिंग सोसाइटी, कलचरल क्लब आ साहित्यिक गोष्ठी सभ मे दीप्तिक एक विख्यात एवं महत्वपूर्ण स्थान छैक। पढ़बा-लिखबा मे सेहो नीक अछि। जेहने सुदर्शना तेहने मधुभाषिणी। मुदा दीप्तिक ममियौत बहीनि सरला केँ गाम्भीर्यक अपेक्षें चाञ्चल्य बेशी पसिन्न छैक। पढ़बा मे जतेक मनोयोग दैत अछि ताहि सँ बेशी इनडोर आ आउट-डोर गेम सभ मे मन लगैत छैक। विचारक कनेक उग्र रहबाक कारणे ईंटक जवाब पाथर सँ देनिहारि आ एक कहनिहार केँ दस टा सुना देनिहारि। स्वभावक ई अन्तरे जेना दीप्ति आ सरलाक घनिष्ठताक कारण बनि गेल अछि।

दीप्ति उदात्त आ स्पष्ट विचार रखनिहारि एक सुशिक्षिता कन्या अछि जे अपन दायित्व नीक जकाँ बुझैत अछि। पिता लग धनबाद, ममियौत भाइ-भाउजि लग कलकत्ता तथा पित्ती-पितिआइन लग किछु दिन दिल्ली रहि आयलि अछि तें वर्त्तमान जीवनधारा आ आधुनिक समस्या आदि सँ परिचित रहबाक कारणे जीवनक सम्बन्ध मे ओकर एकटा अपन निजी दृष्टिकोण छैक। मिथिलाक साधारण कन्या ओ लजौनी

जकाँ नहि रहैत अछि आ ने सीमाक अतिक्रमण कयने तितलीनुमा दिल्ली, बम्बइक छौंड़ी जकाँ रहैत अछि। दीप्ति मे सभ गुण छैक से धरि निश्चय मुदा एकटा बड़ पैघ अवगुणो छैक से स्पष्ट अछि। दीप्ति बेटी थिक! बेटी...आ सेहो मिथिलाक, ओहि मिथिलाक जतय सुनैत छी पहिने दू टा गाय द' क' आर्षप्राजापत्य विधि सँ कन्यादान होइत छल आ जतय, डीह-डाबर बेचियोक' आब लोक केँ काटरक व्यवस्था नहि ओरिआइत छैक आ तें कन्या भ' गेलि अवग्रह तथा जामाता दशमो ग्रह (ग्रह:)।

दीप्तिक सुसंस्कृत पिता धनंजय बाबू जथगर लोक। गामोपर नीक आस्था-पात आ कमाइयो नीक। तें सोनक कली दीप्ति केँ मणिक मधुप सन वर चाही तखने मणि-काञ्चन संयोग कहल जा सकत। ई बात पहिनहि सँ धनंजय बाबू बुझैत छथि। दीप्तिक अनुरूप तकैत-तकैत धनंजय बाबू कहराक सीतापति बाबूक बालकक प्रति कथाक उपन्यास कयलनि। नाम थिकनि राजीव। राजीव मेडिकल कॉलेज मे पढ़ैत छथि। बेश आधुनिक लोक। खेल-धूप, नाटक-सिनेमा, पहिरब-ओढ़ब, हास-परिहास आदि सभ मे अत्याधुनिक। क्लब मे आकि सभ्य-समाज मे केहनो सोसाइटी हो, प्रत्येक वर्गक लोक मे प्रत्येक आधुनिक विषय मे राजीव अपन विचार स्वस्थ रूपें आ परिमार्जित तर्क शैली द्वारा व्यक्त क' सकैत छथि। वेश-भूषा सँ राजीवक पाश्चात्य संस्कृतिक स्पष्ट रंग आओर अधिक जगजगार भ' जाइत अछि। वेषें यूरोपियन, विचारें यूरोपियन, केवल वंशपरम्परें मैथिल। राजीव केँ बूझल छनि जे हमरा विवाहक गप्प चलि रहल अछि धनंजय बाबूक कन्या दीप्ति सँ। दरभंगा सँ टोबि-टाबिक' दीप्तिक सम्बन्ध मे जे किछु अभिज्ञान भेल छलनि ताहि सँ राजीव सन्तुष्टे भेल छथि। सन्तोष बहुत किछु आकर्षण आ आसक्तिक सीमा धरि पहुँचि चुकल अछि। विद्यापति-स्मृति पर्वक अवसरपर पुरस्कार पबैत कालक दीप्तिक फोटो जे पत्र-पत्रिका मे छपल छल ताहि मे फोटोक प्रति ममत्व आ सम्बद्ध समाचारक प्रति गौरव-बोधक अधिकारोक अनुभव राजीव केँ भेल छलनि। तथापि विवाह सँ पूर्व एक इन्टरभ्यू दीप्ति सँ होयब आवश्यक ई विचारने छलाह राजीव। विचारने छलाह अपना मोन मे आ संयोगात् मित्र-मंडली मे गप्प चलला पर अपन विचार स्पष्टो कयने छलाह, मुदा सेक्स विषयक अनेकानेक ग्रन्थ पढ़ने-देखने, उन्मुक्त स्वभावक अनुसार विवाह विषयक अपन आधुनिक मान्यता रखने आनठाम जतय जे विचार सुविधापूर्वक प्रकट कयने होथि मुदा अपना माटि-पानिक संस्कारक रक्तगत अभिक्रमणक कारणे अपना पिता लग प्रत्यक्षत: अपन इन्टरभ्यू विषयक विचार राजीव नहि राखि सकल छलाह। राजीवक मोन टोबक हेतु हुनक भाउजि एक दिन चर्चा चलौने रहथिन तँ एहि तरहक किछु आभास पाबि ओ अपना सासु केँ कहने रहथिन। आभास एहि लेल जे खुलिक'

कहला पर दीप्ति सम्बन्धी उत्सुकता आ आकर्षण प्रकट भेने राजीव अपन हीनता बुझैत छलाह। एहि तरहें एहि माध्यमे क्रमश: राजीवक दृष्टिकोण सँ, हुनक पिता सीतापति बाबू परिचित भ' गेल छलाह। प्रत्यक्ष भेने तँ इन्टरभ्यूक विरोधो करितथि मुदा ई तँ अप्रत्यक्ष रीतियें ज्ञात भेल छलनि।

सीतापति बाबू लग धनंजय बाबू कथाक प्रसंग जखन गेल छलथिन तँ ओ कहने रहथिन जे हम आदर्श विवाहक पक्ष मे छी। टाका-पैसा थिक हाथक मैल। की करब हम ओ ल' क'? ककरो देने-लेने कतहु केयो धनिक भेल अछि? हमरा पर्याप्त देने छथि भगवान। 'सन्तोषामृततृप्तानां यत् सुखं शान्तचेतशाम्'....सौंसे श्लोक सुनाक' मारि कतहु आहे-माहेक उपरान्त कहने रहथिन जे 'बौआ केँ पढ़बाक आकांक्षा छनि। एम.बी.बी.एस. कयलाक बाद विदेश जयबाक विचार राखने छथि। हम तँ बड़ मना कयलियनि अहाँ केँ कथीक कमी अछि; पढ़ि लेलाक बाद प्राइवेट प्रैक्टिस सहरसे मे करू; लोकोक उपकार आ अपनहु मनस्तोष; मुदा कहैत छथि जे इंग्लैंड सँ भ' अयलाक बाद प्रैक्टिस वा नोकरी जे विचार होयत से देखल जयतैक। से राजीव भेलाह अपनेक। अपने हुनका इंग्लैंड पठाबियौन वा अमेरिका। जेना जे विचार हो। हमरा कोनो आपत्ति नहि। हे, एकटा बात आर जे...ओ कन्या केँ एकबेर अपनहि साक्षात्कार करय चाहैत छथि। आब तँ नबका लोकक जमाना भेल, जानय नबका लोक। हमरा अहाँ केँ ताहि सँ की? आ कि ने...।' सुनिक' धनंजयबाबू कनेक हिचकिचयलाह अवश्य मुदा बेटीक भविष्य विचारि सीतापति बाबूक उपर्युक्त आदर्श विवाहक विचार सँ सहमत भ' गेलाह। विवाहक पूर्व कन्या केँ वर स्वयं देखय चाहैत छथि, ई एकदम कोनादन बुझना गेलनि। जेना जीवित माछी गिड़य पड़ैत हो तेना मोन भ' धनंजयबाबू मनहि-मन पन्द्रह हजार टाका द' क' आदर्शे विवाह करक निश्चय क' लेलनि। प्रकट मे कहलथिन जे बात निश्चिते बूझल जाय, कने गामपर समाद द' क' विचार क' ली। 'अवश्य, अवश्य' ई कहैत खेलायल पहलवान जकाँ एक दोसराक दाव-पेंच केँ नीक जकाँ मनहिमन अजमबैत दुहू गोटय एहि अर्धस्वीकृति केँ पूर्ण स्वीकृति मानि लेने छलाह।

दीप्ति केँ जखन ई बात ज्ञात भेल छलैक तँ कने कालक हेतु ओकरा ई विषय कोनादन लागल छलैक जे बाबूजी केँ आदर्श विवाहक नाम पर पन्द्रह हजार टाका भरय पड़ि रहल छनि। विदेश जाक' खर्च कयल गेल टाका स्वदेश अयलापर एकहि वर्ष मे ऊपर क' लेब डाक्टरक हेतु एकदम सहज छैक। तखन एतबा टाका कोनो व्यक्ति केँ अपने खर्च करबा मे कोनो दिक्कति नहि होमक चाही। दीप्ति केँ सुनल छैक जे विदेश सँ एम.आर.सी.पी. डी.टी.एम., डी.सी.पी., डी.एन.ओ. अथवा

एफ.आर.सी.एस. आदिक डिग्री ल' क' आयल डाक्टरक कोनो कैपिटल टाऊन मे प्रैक्टिस क' तीन सँ पाँच हजार मास धरि कमा लेब तँ बड़ साधारण बात थिक। ओ पन्द्रहो हजार टाका बाबूजी केँ लगतनि से दीप्ति केँ अनर्गल अवश्य बुझना गेलैक तथापि मिथिलाक साधारण कन्या जकाँ ओ सब स्वीकार क' लितय मुदा जखन आन सभक संग-संग पिता पर्यन्तक प्रति अविश्वासक कारणे स्वयं राजीव द्वारा अपन इन्टरभ्यूक बात सुनलक तँ ओकर संवेदनशील मन मे पन्द्रह हजार टाका लेबाक छद्मक आवरणयुक्त रीति, आदर्श विवाहक दोहाइ आ एतेक पढ़ला-लिखबाक बादो केवल कन्या होयबाक कारणे अपन मूल्यहीनता, तकर क्षति-पूर्त्तिक हेतु पन्द्रह हजार टाकाक अप्रत्यक्ष माँग आ ताहू सभ सँ बेसी राजीवक ई घोर अविश्वास आदिक विचार ओकर मनस्थिति केँ तेना कटु-तिक्त बना देलकैक जे ओ एहि विषय केँ सहज रूपें स्वीकार नहि क' सकलि। सखी-सहेली मे विवाह, दाम्पत्य जीवन, सेक्स, फेमिली-प्लानिंग आदि अनेक विषय पर यदा-कदा जे गप्प-सप्प होइत छलैक ताहि मे दीप्तियो भाग लैत छलि। वर केहन होमक चाही, सेहो सब गप्प बेसी काल दीप्तिक संग सरला आ आन-आन सखी बहिनपा करैत छलैक। दीप्ति एहि विषय मे सामुदायिक रूपें सिद्धान्तक पर परिचर्चा करैत छलि किन्तु कहियो ओकर व्यक्तिगत आशा-आकांक्षा केयो नहि जानि सकल छल। पाश्चात्य आ भारतीय सिद्धान्त एवं दृष्टिकोणक समन्वय मिथिलाक वातावरण तथा परिवेशक अनुकूल करब ओकरा पसिन्न छलैक। ई ओकर व्यक्तिगत रुचिमात्र छल। एहि लेल कहियो ओकरा दुराग्रह नहि छलैक। भरिसक तें क्रमश: किछु दिन बितैत-बितैत दीप्ति इंग्लैंड जयबाक इच्छा रखनिहार व्यक्तिक संग ओकर महत्वाकांक्षी दृष्टिकोणक कारणे विवाह करबा मे कोनो आपत्ति वा विरोध नहि प्रकट कयने छलीह आ ने विवाहक पूर्व भेंटे करबा मे।

मुदा आइ जखन एतेक दिनक बाद मामक नामे आयल अपना पिताक पत्रक सम्बन्ध मे सरला सँ दीप्ति केँ ई ज्ञात भेलैक जे सीतापति बाबूक पत्रानुसार ओकरा राजीवक सम्मुख इन्टरभ्यू हेतु शीघ्र उपस्थित होयब आवश्यक तँ दीप्ति पुन: विचार' लागलि जे एहन अविश्वासी व्यक्तिक संग सम्पूर्ण जीवन एक भ' क' निमाहब दुष्कर त' ने भ' जायत... ? पत्र मे एहि विषयक स्पष्टीकरण करैत धनंजय बाबू लिखने छलथिन जे सीतापति बाबू केँ ई लिखलापर जे अपना सभक ओतय एहि तरहक प्रचलन नहि अछि जे वर स्वयं कन्याक इन्टरभ्यू लेथि। गाम पर तँ ई बाजलो नहि जा सकैत अछि तें वैद्यनाथधाम वा आने ठाम कतहु कन्या केँ अपने देखि ली से नीक। बाजाप्ता इन्टरभ्यू कोनादन लगैत अछि। तें सीतापति बाबू हमरा विचारें सहमत होइतहुँ अपना पुत्रक इच्छा केँ मानि लेबाक अनुरोध कयलनि अछि। दीप्ति एकरा

अपन अपमान बूझय लागलि। धनंजय बाबू अपना पत्र मे दोसर इहो विषय लिखने छलथिन जे इंग्लैंड जयबा सँ पूर्व कन्यादान करबा मे रिस्कक सम्भावना कयल जा सकैत अछि। विशेषत: राजीवक सम्बन्ध मे पटना मे जे किछु पता लागल अछि ताहि सँ एकर पुष्टिये भेल अछि। इंग्लैंड सँ अयलाक बाद विवाह करबा मे अतिकाल भ' जायत तें एहि सम्बन्ध मे विचार करैक हेतु दीप्ति तथा सरला केँ ल' क' अहाँ धनबाद चल आबी। गाम पर तँ इन्टरभ्यूक चर्चो नहि कयल जा सकैत अछि तें धनबादे चलि आयब नीक। एतय के बुझैत अछि आ ककरा कोन प्रयोजन छैक? मस्तिष्क मे 'रिस्क' 'अतिकाल' 'राजीवक सम्बन्ध मे जे पता लागल' आदि बिजलीक असह्य इजोत जकाँ चमकि उठलैक आ दीप्ति जेना असन्तुष्ट, क्षुब्ध तथा गम्भीर भ' गेलि।

दू-तीन दिनक बाद कालेज मे कोनो छुट्टी छलैक ताही मे अपना माम आ सरलाक संग दीप्ति धनबाद पहुँचलि। पिता धनंजय बाबू बड़े उदार आ साफ विचारक लोक रहबाक कारणे इन्टरभ्यूक बड़ हल्लुक चर्चा करैत इंग्लैंड जयबा सँ पूर्व आ ओतय सँ अयलाक बाद विवाह करबाक प्रसंग अपन मनोभाव सरला केँ सुनाक' दीप्तिक विचार सुनबाक आग्रह प्रकट कयलनि। दीप्ति यद्यपि बड़ सोझरायल मस्तिष्कक शिक्षिता कन्या छलि मुदा अपना सम्बन्ध मे एहि तरहें स्वयं निर्णय करक एहि अद्‌भुत अवसर पर किछु नहि बाजि 'जे बाबूजी लोकनिक इच्छा होइनि' से कहि तटस्थ भावें मौन रहि गेलि।

दोसरे दिन राजीव अपन बालसंगी दिवाकरक संग धनबाद पहुँचलाह। नेमप्लेट सँ धनंजय बाबूक डेराक निश्चय क' दूहू गोटे गेटपरक लोहाक जालीबला फाटक हटाक' जखनहि प्रवेश कयलनि सोझाँ मे दूटा कुर्सी पर दू गोट युवती रूपसी केँ बैसलि कोनो गम्भीर गप्प मे तल्लीन देखलनि। आ कुर्सी फाटक आ मकानक बीच महक छोट-छीन लॉन मे छल जतय आरो चारि-पाँचटा कुर्सी राखल छल। राजीव निस्संकोच मुद्रें आ हुनक संगी दिवाकर आँखि झुकौने जकाँ कुर्सी लग पहुँचलाह। मार्च मासक पाँच बजबाक समय छल। धनंजय बाबू आफिस सँ नहि आयल छलाह। माम मृत्युंजय बाबू घूमय बाहर गेल छलाह। दीप्ति सरलाक संग पिताक अयबाक प्रतीक्षा करैत 'सुजाता' फिल्म पर गप्प क' रहलि छलीह। आधुनिक भेष-भूषा सँ सुसज्जित एहि दुनू युवक केँ अकस्मात आयल देखि दीप्ति आ सरला कने चकित-विस्मित जकाँ ठाढ़ि भ' गेलि। राजीवक आकृति पर गर्वोन्नत औद्धत्य आ दिवाकरक आकृति परक विनयजात सौम्यता देखि दीप्ति जा किछु बाजय-बाजय कि राजीव एकदम माडर्न ढंग सँ अभिवादनक ईषत संकेत क' अपन बैग समीपक टेबुल पर राखि बाजि उठलाह—'माइ नेम...आइ मीन हमर नाम थिक राजीव आ ई हमर

चम...मीन बालसंगी थिकाह प्रोफेसर दिवाकर। पटना साइन्स कालेज मे दू मास पूर्व फिजिक्स डिपार्टमेन्ट मे नियुक्त भेलाह अछि। माइ कजन ब्रदर मीन हमर मसिऔत भाइ।' 'इफ यू डांट माइंड' सरला दिस तकैत पुछलथिन—'अहाँ लोकनिक परिचय'? सरला मुस्कीक संग कटाक्ष करैत बाजि उठलीह—'माइ नेम इज सरला मुदा जनिक इन्टरभ्यूक हेतु अहाँ आयल छी से थिकीह ई दीप्ति दाइ हमर कजन सिस्टर मीन पिसियौत बहिन। प्लीज टेक द' चेयर (कृपया कुर्सी ग्रहण कयल जाओ)।' 'थैंक्यू' कहैत राजीव कुर्सी पर बड़े स्टाइल सँ फुलपैन्टक क्रीज सम्हारैत बैसि गेलाह। दिवाकर नमस्कारक मुद्रा मे हाथ जोड़ने दीप्ति आ सरला दिस संभ्रमपूर्ण सम्मानित दृष्टियें देखैत खाँटी मैथिली मे कहलथिन—'अहूँ लोकनि बैसैत ने जाउ!'

हाथ जोड़िक' प्रत्यभिवादनक लज्जा सँ कनेक संकुचित जकाँ होइत दीप्ति दिवाकरक सौजन्य भरल सम्मानित दृष्टिक आदर करैत आरो अधिक आदरपूर्ण दृष्टि सँ ताकि बाजलि—'जी हँ, जी हँ...। अपने बैसल जाओ।'

सभक बैसलाक बाद दीप्ति केँ भेलैक जे जेना, जे चाही से नहि बाजि सकलि, आ जे चाही, से जेना नहि भ' रहल छैक। जेना कतहु कोनो त्रुटि हो...जेना तकर सम्मार्जन करब आवश्यक हो...दीप्ति दिवाकरक अभ्यर्थना करय चाहलक। राजीव दिवाकरक दिस दीप्तिक एतेक साकांक्षताक प्रति असहिष्णु भेल गेलाह। मनक भाव केँ दबबैत दीप्ति सँ सोझ प्रश्न करय लगलथिन 'ह्वाट डू यू रीड? (अहाँ की पढ़ैत छी?)'

दीप्ति केँ प्रश्नक ई ढंग आ पृष्ठभूमि नीक नहि लगलैक। बाजलि–बी.ए. सेकेंड पार्ट मे पढ़ैत छी।' स्वर सँ अरुचिक ध्वनि स्पष्ट भ' रहल छल। दिवाकर एहि हठात उत्पन्न भ' गेल अशोभन सन स्थिति सँ कुंठित भ' उठलाह। यद्यपि दिवाकर केँ एहि सँ कोनो प्रयोजन नहि छलनि; ओ केवल एक गौण व्यक्ति मात्र छलाह, जनिका ने राजीवेक दिस सँ मुख्यता भेटल छलनि आ ने दीप्तिये वा दीप्तिक परिवारे दिस सँ कोनो स्थान भेटक प्रश्न छलनि। संवेदना आ सहानुभूतिक एहि अन्त:सम्बन्धक कारणें दीप्ति केँ दिवाकरक मनोभाव बुझबा मे कोनो भाँगठ नहि रहलैक। ओ एहि स्थितिक निराकरण कर' चाहैत छलि कि पुन: पोखरिक शान्त पानि मे ढेप फेकब जकाँ राजीव दीप्ति सँ पूछि बैसलाह–'यू आर एन एजुकेटेड गर्ल, सो आइ नो जे अहाँ मॉडर्न लाइफ एण्ड इट्स इंटरटेनमेंट्स मीन आधुनिक जीवन आ ओकर मनोरंजन, कलचर एंड एटीकेटक पर्फेक्ट दृष्टिकोण (संस्कृति आ शिष्टताक सम्यक दृष्टिकोण) रखैत हौयब। तें आइ वांट टू नो (हम जानय चाहैत छी) जे म्यूजिक आ डान्सक सम्बन्ध मे अहाँक केहन विचार आ जानकारी अछि।'

दीप्ति एहि सम्बन्ध मे अपन विचार नीक जकाँ व्यक्त क' सकैत छलि मुदा अप्रिय परीक्षक जकाँ पुछल गेल एहि अप्रत्याशित आ अप्रासंगिक प्रश्न सँ राजीवक एहि ढंग केँ एकदम अशिष्ट मानि ओकर उपेक्षा क' देलक। सरला एहि बात केँ जेना किछु लक्ष्य क' बाजि उठलि—'इट इज ए ग्रेट एंड क्रिटिकल कोएश्चनायर एंड दिस इज नॉट द प्रोपर टाइम फॉर इट (ई एक पैघ आ समालोचनात्मक प्रश्नावली थिक जकर ई समीचीन अवसर नहि थिक।)'

दिवाकर विषण्ण भावें राजीव दिस आ क्षमा-याचनाक नजरियें दीप्ति दिस ताकि प्रसंग बदलबाक ढंग सँ बाजि उठलाह जे धनंजय बाबू कखन औताह ऑफिससँ? आ स्वयं अपना प्रश्नक व्यर्थताक उपहार सँ अपनहि विवश भ' उठलाह। भारी भेल जाइत वातावरण केँ हल्लुक करबाक दिवाकरक एहि मनोभावक मार्मिकता सँ स्निग्ध होइत दीप्ति दिवाकरक नतदृष्टि केँ लक्ष्य क' सोझे राजीव केँ कहय लागलि जे 'जीवन आ मनोरंजक यथावसर ज्ञान तथा अभिरुचि रखैत संगीत एवं नृत्यक सैद्धान्तिक आ व्यावहारिक शास्त्रीय पक्ष आ सुगम पक्ष दुहूक अभ्यास थोड़-बहुत कयने छी मुदा जीवन मे कहियो ने डान्स पार्टी ज्वाइन करक विचार रखने छी आ ने म्यूजिक पार्टी।'

नहला पर दहला जकाँ प्रश्नक उत्तर देनिहरि दीप्ति दिस आ पराजित योद्धा जकाँ हताश राजीव दिस निगूढ़ करुण दृष्टि सँ तकैत दिवाकर सँ दीप्ति हठात पूछि बैसलि—'अहाँ पटना मे सपरिवार छी?'

दिवाकर प्रश्नक मर्म केँ बिनु बुझनहि हड़बड़ाक' कहि देलथिन जे 'परिवार मे बाबूजी छथिये नहि आ माय गामपर रहैत छथि...आ...आ...कहैत दिवाकर केँ हठात् प्रश्नक मर्म बूझि पड़ला सँ कनेक संकोच जकाँ भ' गेलनि आ विवाह नहि कयने छी ई बात कहब कठिन भ' गेलनि। दीप्ति केँ जेना एहि उत्तर देबाक विधि सँ प्रसन्नते भेलैक। दीप्तिक आँखि मे तृप्तिक पीयूष छलकल देखि दिवाकर एम्हर-ओम्हर ताकय लगलाह जेन दीप्ति सँ नजरि मिलयबाक साहस नहि हो। एहि बीच मे नोकर द्वारा आनल चाह जल्दी-जल्दी पीबैत राजीव, कप मे आँगुर बझौने दिवाकर आ अन्त:सलिला सरस्वती जकाँ अनुरागक अव्यक्त छवि सँ तरलायित भेलि दीप्ति दिस देखि सरला अपन उपस्थिति व्यर्थ बुझय लागलि मुदा राजीव पुन: इन्टरभ्यूक मूडमे बाजल—'आइ हैव नो टाइम' (हमरा समय नहि अछि) तें एक्सक्यूज मी (क्षमा करू)। भानस-भात करय तँ जरूरे अबैत होयत। कटलेट बनयबाक विधि कहि सकैत छी?'

दीप्ति उग्र भ' उठलि, शिष्टता पालन असह्य भ' गेलैक। बाजलि—'राजीव

बाबू, मिथिलाक कन्या केँ ई नहि कहक चाही, मुदा जाहि रूपें प्रश्न सभ पूछल गेल अछि तकर प्रत्युत्तर बिनु देने प्राय: इन्टरभ्यू पूर्ण नहि भ' सकत। तें हम कहय चाहैत छी जे 'हम भानस-भात करय नीक जकाँ जनैत छी...बट नाट इन दैट वे...(मुदा एहि तरहें नहि)। कटलेट आ आमलेट आदि खायबला लोकक हेतु अपना सभक समाज मे 'कुक' (भनसिया) राखब जरूरी।' कनेक आओर तिक्ख होइत बाजलि—'जकरा बापक टाका सँ केयो विदेश जा सकैत अछि तकरा बेटीक हेतु भनसिया राखिक' भानस करायब आ नोकर राखिक' परसायब आवश्यके नहि, अनिवार्य। से सामर्थ्य जकरा नहि होइक से यदि एहन भोजनक दुराग्रही हो तँ से अनर्गल, तें हमरा भानस-भात करय अबैत अछि कि नहि से प्रश्ने व्यर्थ थिक।'

सरला स्तब्ध छलि आ दिवाकर किंकर्त्तव्यविमूढ़। कि तावत् कार सँ धनंजय बाबू जूमि गेलाह। वातावरणक तनाव स्वयमेव खतम भ' गेल आ मजलिस भंग भ' गेल।

तकरा बाद राजीव आ दिवाकरक सविस्तर परिचय-पात आदि पुछलाक बाद धनंजय बाबू भीतर जाक' सरला तथा दीप्ति सँ सभ विषय सांगोपांग अवगत कयलनि। भोजनोपरान्त आन-आन गप्प-सप्पक बाद धनंजय बाबू राजीव केँ सम्बोधित करैत बड़े संकुचित स्वरें कहलथिन—'हमर कन्या विदेश-गमन सँ पूर्व विवाह केँ रिस्क बुझै छथि आ हम ओतेक दिन धरि प्रतीक्षा नहि क' सकैत छी। ई बात तँ हमरा सीतापति बाबू सँ करक चाही मुदा अहाँ नव विचारक लोक छी तें अहाँ केँ कहबा मे कोनो हर्ज नहि। एकरा अन्यथा नहि बूझब से हमरा विश्वास अछि।'

ई कहैत-कहैत तिक्त जकाँ भेल धनंजय बाबू हठात् मधुर भ' स्नेह-तरल वात्सल्य आ सुमधुर ममत्व सँ दिवाकर दिस ताकय लगलाह।

केबाड़क दोग सँ एहि स्थिति केँ देखैत सरला केँ भेलैक जे ओ दौड़िक' दिवाकर लग चल जाय आ गाबि उठय—'चेयरयो, माइ स्वीट....भेरी स्वीट एंड डियरेस्ट ब्रदर इन लॉ। (बधाइ हमर, अति मधुर आ अतिशय प्रिय बहनोइ जी)!

वैदेही : जून 1963

मुक्ति

गोपाल बाबू पहिल पत्नीक मुइलाक बाद निश्चय क' लेने छलाह जे आब दोसर विवाह किन्नहु नहि करब। एहि लेल नहि जे हुनका पत्नी सँ ततेक ने असौकर्य भेल छलनि जे नारी जातिये सँ विरक्ति भ' गेल छलनि...कि एहि लेल नहि जे गृहस्थी केँ ओ एकदम झंझटि बुझैत छलाह...कि एहि लेल नहि जे अपन परलोकक चिन्ता होब' लागल छलनि। असल बात ई छलनि जे हुनका रमेश सनक एकटा सुन्दर पुत्ररत्न भेटि गेल छलनि आ स्वयं अपन सतमायक ईर्ष्या-द्वेषक तेहन कटु अनुभव छलनि जे रमेश केँ ओहि सम्भावित कठोर यंत्रणा सँ, ओकर मनोदाह सँ सुरक्षित राखय चाहैत छलाह।

रमेशक अवस्था चारि वर्षक छलैक। ओकरा ओ अपनहि लग सुतबैत छलथिन। आश्रम मे जेठ बहीन रहनि निस्सन्तान-बाल-विधवा। रमेश केँ पीसी खूब मानैत रहथिन, मुदा तैयो गोपाल बाबू रमेशक लेल बड़े सतर्क-साकांक्ष रहैत छलाह। बिनु माइक नेना...टूगर! रमेश अपन माइ लेल पिताक जे सिनेह सुरक्षित छलैक तकरो उत्तराधिकारी बनि गेल छल आ गोपाल बाबू मातृ-स्नेह, पितृ-वात्सल्य दुनूक पूर्त्ति करबा मे तल्लीन-तन्मय।

दिवंगता पत्नीक एकटा फोटो गोपाल बाबू अपन घर मे टँगने छला, जकरा देखिक' कहियो-कहियो रमेश 'माय केँ आनि दिय' के जिद्द क' दैत छल। अपने विचलित नहि भ' जाइ ताहि लेल गीतापाठ, प्राणायाम आ योगासन आदि पर सेहो निष्ठा रखैत छलाह-उपयोग करैत छलाह। पत्नीक ओहि फोटोक बाम भाग मे एकटा कूटपर पैघ-पैघ अक्षर मे गीताक ई श्लोक लिखल छल—

चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढ़म्
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।

(मन चंचल, इन्द्रिय बलवान; निग्रह दुष्कर वायु समान)

ओहने दोसर कूट फोटोक दहिन भाग मे टाँगल छल जाहिपर ओहिना मोट

अक्षर मे श्लोक आ पातर अक्षर मे अर्थ छल—

असंशयं महाबाहो, मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय, वैराग्येण च गृह्यते।

(ई निश्चय जे मनकेर निग्रह सरिपहुँ दुष्कर काज मुदा सत्य संभव अभ्यासें, वैराग्यें निर्व्याज)

ई दुनू कूट आ पत्नीक फोटो सीरम दिस छल तथा पयर दिसक देवाल पर एकटा बड़का कूटपर लिखल छल-

यतो यतो निश्चरति मनश्चंचलमस्थिरम्
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयत्।

(जाहि-जाहि कारणे मन चंचल आ अस्थिर भ' जाय ताहि-ताहि विषय केँ रोकि मन केँ आत्माक वशवर्ती बनयबाक चाही।)

पत्नीक मुइना दू वर्ष भ' गेलनि। अपनहि संग हाइ स्कूल मे काज कयनिहार सहयोगी, सहकर्मी मास्टर सभ, सर-समाज, कर-कुटुम, पर-परिचित आ इष्ट-मित्र के नहि आग्रह कयलथिन, बुझौलथिन, मुदा गोपाल बाबू सरिपहुँ जेना अभ्यास आ वैराग्य द्वारा मनोनिग्रह क' लेने छलाह। सभक बात सुनिक' 'बरनी देखल जयतैक'क मुद्रा मे हँसि दैत रहथिन। एहि तरहें दू वर्ष बीति गेल।

रमेश छठम वर्ष मे छल। स्कूल मे छोटका-छोटका संगतुरिया धीया-पूताक साज-शृंगार, काजर-पाउडर देखि रमेशो केँ माइक सेहन्ता होब' लगलैक। स्कूल सँ आबि ओ आब बेसी काल हाइ स्कूल सँ थाकल-झमारल आयल गोपाल बाबू केँ 'माय केँ आनि दिय'के' जिद्द सँ नङो-नङो करय लगलनि। पहिने धोती पकड़िक' पछाति जाँघ पकड़िक' रमेश ठुनकय आ तखन कान' लागय। गोपाल बाबू अवग्रह मे पड़ि जाथि।

एकदिन की भेलनि से तँ नहि कहि, मुदा स्कूल सँ अयलापर ओ तीनू टा कूट आ पत्नीक फोटो केँ उतारि, झाड़ि-पोछि, जुगताक' बड़का बाकस मे बन्द क' देलथिन आ फोटोक जगहपर 'वर्मा शेल'क एकटा कैलेन्डर टाँगि देलथिन, जाहि मे शृंगी ऋषिक सुन्दरी सभक द्वारा सत्कार क' क' अनैत कालक चित्र छल। कुरता खोलैत कने जोर सँ गोपाल बाबू बहिन केँ कहलथिन—'आइ वा काल्हि जखन पलखति हो, कने ब्रज मोहन बाबू, जे हमरे स्कूल मे मास्टर छथि, हुनका बासापर जाक' हुनका बहिन केँ देखि अबिऔन। रमेश माइ लेल बड़ जिद्द करैत छथि।'

घरे लगक सिनेमाक 'बोल, राधा बोल संगम होगा कि नहीं' 'आ हे गंगा मैया तोरा पियरी चढ़इबो सैंया से कर दे मिलनमा' सनक गीत सभ गीतापर विजय पाबि

गेल...कि गीताक स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह:क असरि सँ अपन गार्हस्थ्यधर्म (अवस्थोचित पुरुषधर्म) वैराग्य धर्मक अपेक्षें श्रेयस्कर बुझना गेलनि...कि काटरक जोगार नहि क' सकबाक कारण बहिनक बियाह लेल बौआइत-छिछियाइत सी.टी. पास मास्टर ब्रज मोहन बाबू आ हुनका बहिनक प्रति सहानुभूतिक तीव्रताक कारणे...कि अपना बहिन केँ नीक-अधलाह सभ अवस्था मे दुहू साँझ भानस-भातक झमेल मे देखि उत्पन्न दयाक कारणे...कि लगन-पातिक एहि गनगनौआ शुद्ध मे ढोल-पिपही आ क्लारनेट-शहनाइक स्वर-संगीतक कारणे...आ कि अपन पैंतीस वर्षक आयुक अतृप्त अवस्थाक प्रणयाकांक्षाक कारणे...जे-से, मने गोपाल बाबू रमेश केँ माय आनि देलथिन।

गौरी, ब्रजमोहन बाबूक छोटकी मातृ-पितृहीन बहिन, मने रमेशक नवकी माइक सासुरक चौखटि पर पयर रखिते जे सर्वप्रथम घटना भेलैक से ई जे केयो आइ-माइ टोल-पड़ोसक स्त्रीगण रमेश केँ सोझाँ मे आनिक' बाजलि—'रमेश, नीक जकाँ देखि लैह ई थिकथुन तोहर नवकी माय।' एहि 'नवकी' शब्दपर गौरी मनेमन क्षुब्ध भ'क' मरमसि क' रहि गेलि। भेलैक जे एहि कहनिहारि केँ कने पुछिऐक—'माय तँ केवल माइये होइत छैक। ई नवकी आ पुरनकी की थिक?' छोट-छीन घोघक तर सँ गौरी ओहि कहनिहारिक व्यंग्य आ दानवीय तृप्ति सँ तिक्त-विकृत मुँह दिस देखि चुपचाप सिरागू मे खोइँछक संग-संग रमेश केँ कोर मे उठौने कुलदेवता केँ गोड़ लागय चल गेलि। आ तखने गौरीक अनेक कुमारि इच्छा-आकांक्षा, उमंग-उल्लास आ सुख-मनोरथक स्वप्न, सभ किछु टुस्सी टूटि गेल कोमल लतिका जकाँ मुरुझा गेलैक आ गौरी कनियाँ, रमणी वा पत्नी बनबा सँ पहिनहि हठात् एकटा माय बनि गेलि।

रमेश पहिने तँ कने अनचिन्हार-अनभुआर जकाँ लजाइत-धखाइत रहल, मुदा किछुए दिन मे मायसँ-नवकी मायसँ-तेना रीति गेल जे गोपाल बाबू स्वयं आश्चर्य करय लगलाह। रमेश तकरा बाद सँ जा धरि आँगन मे रहय माय-माय अनघोल कयने रहय। स्कूल सँ अबिते बस्ता फेकि बड़े वेग सँ माइक कोर मे छड़पिक' चढ़ि जाय आ माइक गाल मे गाल सटाक' स्नेह विभोर भ' उठय। कोनो वस्तु-जात लेल आब बाप वा पीसि केँ नहि कहि माइक आँचर पकड़ि, साड़ी मे लटपटाक' ओ ठुनकय।

मनुक्खक मोन अद्‌भुत होइत छैक। ओकरा सिनेहक एकटा कोनो-ने-कोनो आश्रय चाही, संबल चाही। तकरा अभाव मे लोकक जीवने फोंक आ निरर्थक भ' जाइत छैक। तखन लोक जिबैत नहि अछि, विवश जकाँ ओकरा जीब' पड़ैत छैक।

गौरी एकरा अपन सौभाग्य बुझलक जे ओकरा ई मधुर आश्रय भेटि गेलैक। गौरीक भाउजि-बहिन द्वारा पुछलापर 'रमेशक वास्ते विवाह कर' पड़ल' विवाह कालक पतिक एहि उत्तर केँ ओ बिसरि नहि सकलि आ तें अपन सार्थकता ओ एही आश्रय मे बुझलक। एहि तरहें आँगनक बहारे सँ सड़के पर सँ रमेशक अनघोल करैत माय-मायक ध्वनि सँ गौरीक मन मे जेना एक प्रकारक अपूर्व, अद्‌भुत आ मुग्ध स्नेह-तरंग झंकृत भ' उठैक। हुलसिक' ओ देहरिपर चलि आबय आ लपकिक' रमेश केँ कोर मे उठाक' नेरू केँ चटैत गाइक तृप्ति-भाव सँ उच्छ्‌वसित भ' उठय। मातृत्वक एहि उद्दाम वेग मे गौरीक पत्नीत्व कनेको कालक हेतु नहि टिकि सकैक। रमेश, रमेशक स्नेह आ रमेशक दुलार-मलार, गौरीक स्वत्व बस एही मे क्रमश: लय भ' रहल छलैक।

आ तखन ओकरा मन मे आशंकाक लुत्ती चमकि उठैक जे काल्हि जँ हमरा अपना कोखि सँ बच्चा जन्म लेत तखनो की हमर ई भाव बनले रहत? ओकरा अपन विवाहक काल 'रमेशक लेल माय चाही' बला पतिक उक्ति सँ आ टोल-पड़ोसक जनी-जाति सँ पतिक दृष्टिकोणक जे ज्ञान भेल छलैक ताहि सँ पति केँ, पति सँ बेसी पिताक रूप मे, बूझ' लागलि छलि। से, ओकरा होइक जे की तखनो हमर ममता एतेक उदार भ' सकत जे अपन कोखिक जनमल आ एहि रमेश मे कोनो भेदभाव नहि आबय देत? आ ओ रमेश केँ जोर सँ छाती मे सटा लैत छलि...आ ओकर शरीर सँ मन पृथक् भ' कोनो खोल मे जेना नुका जाइत छलैक...आ गोपाल बाबू केँ गौरीक केवल देह भेटैत छलनि, गौरीक मन नहि।

आगि आगि केँ पाबिक' बेसी धधकैत अछि, मुदा हिमखंड लग तँ पैघ सँ पैघ दावानलो कुनमुनाक' सूति रहैछ। से, गोपाल बाबू केँ गौरीक एहि बर्फ सनक ठंढा, निष्प्राण, अनुष्ण आ बासि सनक शरीरटाक प्राप्ति होइनि तँ ओ गौरीक एहि अनुपस्थिति आ अप्रस्तुत समर्पण सँ शंकालु भ' उठलाह। से, पैघ सँ पैघ अपराध आ क्षति कयलो पर हँसिक' रमेश केँ चुम्मा ल' लेनिहार गोपाल बाबू आब बेसी काल रमेशक छोटो छीन सनक बदमासीपर ओकरा पीटि देथिन। गौरी तखन सभ किछु बुझियोक' पतिक लाल आँखि, कुण्ठित क्रोध आ आरक्त मुँह देखि चुप्प भ' उठय, क्षुब्ध भ' उठय आ जेना एकटा अवश घृणाक माहुर ओकरा सौंसे देह मे पसरि उठैक।

क्रमश: पारिवारिक स्थिति जेना स्वयमेव विभक्त भ' गेलैक। रमेश आ (रमेश लेल विवाह कयनिहार) गोपाल बाबूक पत्नी, मने रमेशक माय गौरी, एक बिन्दुपर, गोपाल बाबू दोसर बिन्दु पर तथा हुनक बहिन सभ सँ असम्पृक्त तटस्थ दर्शन जकाँ तेसर बिन्दुपर। परिवारक दायित्व-वृत्तपर केन्द्रित रहितो जेना चुपचाप ई सभ अपने भ' गेल छल।

एक दिन स्कूल सँ अबैत काल एकटा चिड़ै बेचनिहार केँ किछु कमानीबला पिजड़ा आ सुग्गा सभ बेचैत देखि, माय लग आबि रमेशो एकटा सुग्गा माय सँ किनबा लेने छल। से, एक दिन मरचाइ दैत काल रमेशक आँगुर मे सुग्गा काटि लेलकैक। गौरी 'डिटौल' ढारि तुरन्त पट्टी बान्हि देलकैक। आ कि तखने स्कूल सँ आबि गोपाल बाबू अपन बहिन केँ कहय लगलथिन—'रमेशक मौसीक विवाह थिकनि। नोत-पता आयल अछि। रमेश आ रमेशक नवकी माय केँ सेहो लेने अयबाक हेतु बड़ आग्रह कयने छथि।' कि कनैत-खिजैत रमेश पिताक ई गप्प सुनि चुप्प भ' गेल आ माय केँ गोहराबय लागल जे 'हम जरूर जायब आ अहूँ केँ चल' पड़त।' गौरी टेबुलपर राखल गोपाल बाबूक पहिलुक सासुर सँ आयल ई पत्र पढ़ि चुकलि छलि, ओ पतिक इच्छा बूझय चाहैत छलि। गोपाल बाबू कहलथिन जे 'रमेशक माइ केँ ल' जायब नीक नहि होयतैक। रमेश केँ हम लेने जयबनि।' रमेश मायक संगहि जयबाक हेतु जिद्द करय लागल तँ गोपाल बाबू बड़ी जोर सँ एक चाट मारलथिन। गौरी दौड़िक' रमेश केँ उठाक' कोर मे लैत एक बेर आग्नेय नेत्रेँ पति दिस तकलक आ सुग्गाक काटि लेने अपस्याँत भेल कनैत रमेशक चाट लागक गाल केँ हाथ सँ पोछय लागलि। चाट कतेक जोर सँ लगलैक जे ओहि सँ ज्वर भ' जयतैक से तँ नहि कहि, मुदा रमेश केँ ज्वर भ' गेलैक। ज्वरावस्था मे ओ मायक संगे मौसीक विवाह मे जयबा लेल ततेक ने अनशन-सत्याग्रह कयलक जे बाध्य भ' क' गोपाल बाबू केँ गौरीक संगे रमेश केँ ल' जयबाक स्वीकृति देब' पड़लनि। दवाइ-दारू सँ हो वा एहि बातसँ, रमेश दुइये तीन दिन मे निकेँ भ' गेल।

जगतपुर, मने रमेशक अपन मातृक पहुँचलापर नानी आ मौसी दौड़लि अयलथिन। ई सभ बैलगाड़ी सँ आयल छलाह। गौरीक अपन नैहर तँ रहैक नहि जे गाम घर लग पहुँचलापर कनितय से गुमसुम बैसलि रहय। गाड़ी सँ उतरिते छलि कि नानी हपसिक' रमेश केँ कोर मे लैत अपन स्वर्गीय बेटीक स्मृति सँ आर्द्र भेलि कहलथिन—'आहा! बच्चा दुबरा केहन गेल अछि! मुँह केहन पीयर लगैत छैक?' आँगुर मे पट्टी बान्हल देखि जिज्ञासा कयलथिन जे ई की भेलैक अछि? गोपाल बाबू कहलथिन जे सुग्गा काटि लेलकनि अछि। नानी उच्छ्वसित होइत कनेके जोर सँ कहलथिन—'अप्पन माय रहितनि बाबू केँ तखन ने? सतमाय बाली बात...ने तँ सुग्गा केँ कतहु नेना खाय ले' दैक?' आ आँखि सँ नोर बहय लगलनि। गौरीक जी धक् द' उठलैक। गोपाल बाबू गाड़ी सँ उतरि जूता सरियबैत छलाह, गौरी उतरबाक क्रम मे अपरिचयक एक संकोच मे पड़लि छलि जे केयो स्त्रीगण आबथि तँ उतरी कि रमेशक मौसी अपना बहिनोइ गोपाल बाबू केँ पुछलथिन—'निकेँ रहैत छी कि ने?' कने हँसैत

विनोदक स्वर मे जी जाँतिक' कहलथिन—'बूझि पड़ैछ, नवकी कनियाँ हमरा बहिन सँ बेसी मान-दान नहि करैत छथि। देह-दशा एना झमान किएक अछि?'

गोपाल बाबू कहलथिन—'भाग्यहीन लोक लग कतहु देवी रहथि?' आ मुँह तेहन ने बना लेलथिन जे गौरी केँ बूढ़िक एहि 'सतमाय' आ पतिक देवी...नहि, देवी नहि तँ? दानवी...? हँ दा...न...वी बला ध्वनि आ सभ सँ बेसी रमेशक नानीक आक्रोश आ घृणापूर्ण मुद्रा, गोपाल बाबूक-अपना पतिक अत्यन्त तिक्त, असह्य, निगूढ़ आ मर्मच्छेदी उपेक्षा देखि एकटा तेहन आघात लगलैक, भीतरे-भीतर तेना ने झनझनाक' किछु टूटि गेलैक जे आँखि भरि गेलैक, जकरा चट द' आँचर सँ ओ पोछि लेलक।

विवाह-दानक आँगन। रमेश केँ नानी दुलार सँ अपने लग रखथिन। गौरी डरें अलगे-बलग रहय। से, की-कहाँ दन अगड़म-बगड़म खयला सँ ज्वर पलटिक पुनि भ' गेलैक आ गौरी आशंकित-आतंकित लत्तो-पत्तो रमेश केँ ल' क' पतिक संग घुरि आयलि। तीन-चारि दिन धरि रमेश टाइफाइड मे बड़-बड़ाइत रहल आ सुग्गा केँ 'चित्रकूटके घाटपर' कहैत-कहैत रमेशक प्राण-कीर खाली पिजड़ा छोड़ि उड़ि गेलैक। आँगन मे टोल-पड़ोसक जनी-जाति, बूढ़ि-बुढ़ानुस, स्वामी-ननदि सभ हाकरोस कर' लगलथिन, मुदा गौरी जे स्तब्ध भेलि बैसलि रहलि से रमेशक निर्जीव देह केँ ओहिना कसकसाक' पकड़ने बैसलि रहलि-स्तब्ध, पाषाण, भाव शून्य।

चारि-पाँच दिनक बाद गौरी नैहर लेल चुपचाप तैयार भ' ननदिक द्वारा स्वामीक आज्ञा माँगि लेलक। गोपालो बाबू चुपचाप गौरी केँ पहुँचा अयलाह। दस-पन्द्रह दिनक बाद एकदिन स्कूल सँ अयलाक बाद सूर्यास्तक समकाल उदास बेला मे सुग्गा केँ खोअबैत काल ई खबरि भेटलनि जे गौरी बताहि भ' गेलीह अछि, मस्तिष्क विकृत भ' गेल छनि से गोपाल बाबू चुपचाप पिजड़ाक कमिचा हटाक' मुँह खोलि देलथिन। सुग्गा एकबेर पाँखि फड़फड़ौलक आ उड़ि गेल। गोपाल बाबू कनेकाल सुग्गा केँ उड़ैत देखि ओकर मुक्तिक अनुभूति मे डुबल रहलाह आ तखन एक दीर्घश्वास ल' नहूँ-नहूँ खाली पिजड़ा केँ आनि घर मे टाँगि देलथिन। संगहि बाकस मे राखल पहिल पत्नीक फोटो आ गीताक श्लोकबला कूट सभ सेहो बड़े यत्न सँ यथास्थान टाँगि देलथिन।

मिथिला मिहिर : 6 सितम्बर 1964

प्रतिशोधक सन्तोष

डेरा सँ ओहि प्रचंड रौद आ असह्य गर्मी मे पयरे स्टेशन लग अयलाक बाद काली केँ बूझि पड़लैक जे रेलगाड़ी भरिसक चल गेल अछि। आब ओम्हर जयबा लेल दोसर ट्रेन साँझखन भेटतैक। ट्रेन चल गेलाक बाद ओहि स्टेशनक शान्ति ओहने निर्जीव छलैक, जेहन ओकर मुइल आ सर्द भेल जीवनक भविष्य मे ओकरा भेटैत छलैक। ओ एक दीर्घ श्वास छोड़ि प्लाटफार्मपरक अमलतासक गाछ लग एक टा बेंच पर बैसि गेलि। आँचर सँ माथपरक चुह-चुहायल घाम केँ पोछिक' एक बेर चारू कात तकलक। सोझाँ मे मालगोदाम दिस जाइत किछु कुली, सभक देह पसेना सँ भीजल, एक केहन दन गन्ध। ओ आँखि फेरिक' दोसर दिस देखय लागलि। ओहि दिस लाइनक कात मे किछु दूर हटिक' माल-जालक हाड़ जमा छलैक-गाय महीसक हाड़, उज्जर, गोताइन, नाम-नाम, मुँहक हाड़, जाहि मे आँखिक स्थान मे दूटा खाधि, छोट-पैघ रंग-बिरंगक हाड़, पाँजरक, रीढ़क, टाँगक सोर-पोर, टूटल, खूर लागल, सिंग लागल। समीपे बाँसक फट्ठा पाटिक' बनाओल गेल हाड़ तौलबाक तराजू। एक टा कुकूर बड़े तन्मयता सँ हाड़ चिबा रहल छल। हठात् ओकरा मोन मे भेलैक जे ओहो एक टा हाड़े थिक। हाड़, साबूत हाड़। सुखायल नहि, आर्द्र हाड़। आ ओकरा चिबा रहलैक अछि कुकूर! कुकूर मने ओकर पति...मने जीवकान्त। जीवकान्त जे एतय, स्टेट बैंक मे क्लर्क अछि। अपना पति केँ कुकूर बुझबा मे एकबेर ओकर मन कनेक कोनादन भेलैक अवश्य, मुदा काली मिथिलाक माटि-पानिक रूढ़िपरक संस्कार केँ बलपूर्वक दबा देलक। अनायास दाँत सँ जी कुचा गेलैक, देह झनझना उठलैक, जेना भीतर मे किछु टूटि रहल होइक, मुदा काली एखन सरिपहुँ काली बनलि छलि, तामसी, खड्ग-खप्पर आ कपालधारिणी। शवपर महादेवक छातीपर पयर रखने—'जय-जय भैरवि असुर भयाउनि...' बस एहि सँ ने बेसी, ने कम...। से, देहक झनझनाइत देरी जोर सँ एक बेर माथक घाम पोछलक आ सोच' लागलि-ओकर पति, मने जीवकान्त जे एतय स्टेट बैंक मे

क्लर्क अछि, जकरा सँ विवाह भेला चारि वर्ष भ' गेल छैक, जे अपन बाप द्वारा कालीक पिता सँ खेत-पथार बेचिक' देल गेल काटर गना लेलाक बादो ससुर सँ ट्रांजिस्टर, साइकिल, सोफासेट आ मारि कतहु भोग-विलासक वस्तुजात सभ विदाइ नहि पाबि सकल, केवल पिंडश्याम रंगक अपने एतेक पढ़लि पत्नीक रूप मे काली टा केँ पाबि सकल, हरदम खौंझायल रहैत अछि; जे जखन-तखन राति मे कुकूरे जकाँ नाँगड़ि हिलबैत देह चाटिक' अपन भूखक निवृत्ति क' लैत अछि आ फेर एक निरर्थक वस्तु जकाँ कालीपर भूक' आ झपट' लगैत अछि।

एक बेस तेजगर गरम बसातक झोंक कालीक कनपट्टी केँ छूबिक' बहि गेलैक। काली कनेक सिहरिक' विचार' लागलि-आइ भोर मे एहन कोन मनहूस क्षण छलैक, जे टेबुलपर राखल चाहदानी आ कप-प्लेट केहुनी लागि गेला सँ खसिक' फुटि गेलैक। ओना चिनिया माटिक ओहि साधारण सन चाहदानी आ कप-प्लेटक दाम कोनो ततेक बेसी नहि होइत छैक जे फेर कीनल नहि जा सकैत हो मुदा जखन केयो झगड़ा करबा लेल फाँड़ बान्हिक' ताल ठोकैत हो तँ ओकर कोन उपाय भ' सकैत छैक? काली केँ की-की ने कहल गेलैक, नैहर सँ किछु नहि विदाइ भेटल छलैक, तकर उलहन-उपरागक संग ओकरा जे गारि फज्झति भेलक, से तँ सहजें, जे ओकर माय-बाप केँ सेहो बड़े नीच-नीच गारि आ फज्झति सँ तर क' देल गेलैक। काली चुपचाप सुनैत रहलि; धुआँइत रहलि आ कि सन्न द' ओकरा माथपर जुत्ता आबिक' लगलैक। ओकरा मोन मे एक बेर बड़े उग्र प्रतिक्रिया भेलैक आ ओ माथ पकड़िक' बैसि रहलि। ओना, चोट बेसी नहि लागल छलैक, मुदा जे चोट ओकरा मोन मे लगलैक से ततेक असह्य भ' उठलैक, ततेक, जकर अटकरो नहि लगा सकलि।

काली बैसि गेलि छलि आ जीवकान्त ओहिना हन-हन पट-पट करैत जूता पहीरिक' बिन खयनहि पीनहि अपने तामसे लाल-पीयर भेल कोठरी सँ बहरा गेल छलैक। ओना तँ प्रत्येक सप्ताह उठौना जकाँ एहि तरहें ओकरा गारि-फज्झति भेटिते छलैक। सभ दिन ओकर पति खौंझायले रहैत छलैक। बैंक जाइतो काल खिसिआयले रहैत छलैक आ ओतय सँ अयलोपर। ओकर संगी-साथीसभक वर-विदाइ, संगीसभक किचारब, समाज मे ओकर उपहास, एकर उलहन सासु-ननदि सँ आ अपन पति सँ सुनैत-सुनैत काली अकच्छ भ' गेलि छलि। काली पहिने कथा-पिहानी लिखैत छलि। पत्र-पत्रिका मे मने, मिहिर, वैदेही, दर्शन आदि मे छपैत छलैक। मुदा जखन ओ पतिक खौंझाहटि मे वृद्धि होयबाक कारण अपने सन सुशिक्षिता पत्नी-कालीक एहि साहित्यिक ख्याति सँ उत्पन्न जीवकान्तक हीनभावना

केँ बुझलक तँ लिखब-पढ़ब छोड़ि देलक। आब कहियो-कहियो पढ़ि तँ लैत अछि, मुदा लिखैत किछु नहि अछि। ओ एक बेर विचारने छलि जे ओहो कोनो नौकरी करय, एकटा स्कूल मे अध्यापिकाक नोकरी देलो जाइत छलैक, मुदा पतिक एहि हीन भावनाक कारणे नहि कयने छलि। तखन ओकरा भेल छलैक जे ओ किएक पढ़लक-लिखलक। बाप बड़ तमसाह व्यक्ति छथिन। जेठकी बहिनि केँ पढ़यला-लिखयलाक पुरस्कारस्वरूप जखन, अपन जमीन बेचिक' काटर देलापर पढ़ल-लिखल वर भेटल छलनि तँ तकरा बाद सँ कन्या केँ पढ़ायब ओ अभिशाप बूझ' लागल छलाह मुदा काली बड़ जिद्दी छलि। माय लग खेखनियाँ क' बाप सँ रूसि-फूलिक' मामक ओतय जाक' रह' लागलि। कोनहुना पढ़ि-लिखि गेलि। मामा कथो-वार्ताक जोगार करैत छलथिन कि धनुष्टंकार रोग सँ अकस्मात् मरि गेलथिन। मामक मरिते ममियौत सभ मे भिन्न-भिन्नाउज भ' गेलैक। काली हारिक' बाप लग चल आयलि। परीक्षाफलक प्रकाशन सँ कालिये नहि, सभ केँ हर्ष भेलैक, मुदा कालीक बाप, बेटीक एहि सफलतापर माथ ध' लेने छलथिन। बेटी जतेक पढ़त, काटरो ततेक बेसी गन' पड़त। से, मिथिलाक पढ़ैत-लिखैत बेटीक बाप सभक एहि वर्त्तमान दुश्चिन्ता सँ आक्रान्त भेल कालीक पिता सरिपहुँ उदास भ' उठल छलाह। कहि नहि, काली केँ ई किएक नहि बिसरैत छैक। ओकरा होइत छैक जे किएक एहन पतित, घृणित समाज मे ओकर जन्म भेलैक? एहि प्रकारक धनपिशाच सभक माटि-पानि मे कन्या केँ केयो कोना पढ़ा-लिखा सकैत अछि आ तखन ई मिथिला रसातल मे कोना ने चल जायत? की सीते जकाँ मिथिलाक बेटी केँ रसातलेटा शरण छैक?

हठात् ओकरा बुझना गेलैक जे ओकर देह पर सँ गाछक छाहरि ससरिक' हटि गेलैक अछि। ओ छाहरि दिस घुसकि गेलि। डेरापर सँ चलैत काल ओ किछु ने सोचने छलि जे की करत? कत' जायत? एकटा कागतपर केवल लिखि देने छलि जे 'हमरा ताकब निरर्थक।' पुर्जी टेबुलपर राखि केबाड़ बन्द क' ताला लगाक' ओ बिरड़ो-बिहारि जकाँ स्टेशन दिस चलि देने छलि। चाभी दुनू व्यक्ति लग एक-एकटा छलैक तें चाभी राखि देबाक विचारो नहि उठलैक। एहि समय मे चलबा काल एकबेर ओहूठाम मिथिलाक माटि-पानि ओकरा डेग केँ थरथरा देने छलैक, मुदा तकरा पयर मे लागल गरदा जकाँ झाड़िक' ओ वेग सँ चलि पड़लि छलि। ओ एकबेर विचारलक जे आत्महत्या क' ली। तकर उपायोसभ विचारलक। ओकरा बुतें ट्रेन सँ कटब पार नहि लगतैक, देह मे आगि लगाक' मरब घिनाओन बुझयलैक; फँसरी लगाक' मरब सेहो नीक नहि बुझना गेलैक, पोटाशियम साइनाइड जँ भेटितैक?

मुदा से भेटबे कठिन। अगत्या मरबाक विचार छोड़ि ओ एहि ठाम सँ चलि देबाक विचार कर' लागलि। कतय जाइ ? नैहर मे घरक आर्थिक दु:स्थिति, बापक तामस, टोल-पड़ोसक कन-फुसकी, सखी बहिनपाक अर्थ लगा-लगाक' करेज छूब' बला बातक तीर, सभटा मोन मे साकार भ' उठलैक। मातृकक तँ प्रश्ने नहि छलैक, सभ ममियौत भाइ भिन्न भ' क' मामिला-मोकदमा मे बाझल छलैक। कालीक मोन मे एक बड़ तीक्ष्ण घृणाक लहरि पसरि रहल छैक, मुदा ओ अपन जन्म-भूमिक कोनो अदृश्य गीरह सँ जकड़लि अछि, से अनुभव क' रहलि छलि। किछु एहन संस्कार छलैक जे ओकर घृणा केँ ओहि तीव्रता सँ नीक जकाँ उघर' नहि दैत छलैक आ से ओकरा लेल आरो अधिक कष्टकर बुझना जाइत छलैक।

ओकरा मोन पड़लैक, कोनो अखबार मे ओ पढ़ने छलि जे गया-नवादा दिस कतहु एकटा मौगी अपन स्वामीक नाक छेबि लेने छलि, कतहु एकटा स्त्री अपन दुश्चरित्र स्वामी केँ बान्हिक' मारने छलि, कोनो खिस्सा मे ओ पढ़ने छलि जे एक स्त्री अपना पति केँ पिटैत छलि आ ओकर पति ओकरा सोझाँ मे भीजल बिलाड़ि बनल रहैत छलैक। ओकरा भेलैक जे जँ पुरुषक सवारी-बला कोनो टाँगा होइत, जाहि मे पुरुष केँ लगाम लगाक' दौड़ाओल जइतैक, तँ ओ ओहिपर चढ़िक' लगाम पकड़ि खूब कोड़ा चलबैत।

काली केँ फेर एकटा झटका जकाँ बुझना गेलैक आ कहि नहि, भीतर मे की एक बेर पुन: झनझनाक' टूटि गेलैक जे ओकर आँखि भरि अयलैक। ओ चट् द' सम्हरिक' बैसलि। अनुभव भेलैक जे ओकरा भूख लागि गेलैक अछि, भूखो सँ बेसी पियास लागल छैक मुदा ओ पानि नहि पीबि एक बेर चापाकल दिस देखिक' निरुद्देश्य ठाढ़ि भ' गेलि। स्टेशन सँ बहार होइते ओकरा एकटा रिक्शाबला जे तुरन्ते कोनो सवारी केँ मालगोदाम दिस पहुँचाक' स्टेशन लग आयल छल, देखयलै। कारी भुजंग शरीर, डाँड़ मे मारकीनक चेफड़ी लागल करिक्का पैंट, देहपर ललका एकरंगाक अधकट्टी गंजी, पैघ-पैघ रुक्ख सनक भुल्ल केश, पानक लाली सँ घिनाओल दाँत आ ठोर, पयर मे टायरबला खिआयल बनौआ चप्पल, पुरान सनक रिक्शा। रिक्शाबला एहि अकलबेरा मे एक स्त्रीगण केँ एना फुफड़ी पड़ल ठोर आ उखड़ल-पुखड़ल चेहरा मे देखि कहि नहि, कोन भावें कनेक व्यंग्य भरल मुस्की सँ ओकरा दिस ताकय लगलैक। काली केँ भेलैक जे एक रोड़ा उठाक' ओकर कप्पार पर खूब कसिक' मारय जे ओकर सौंसे मुँह शोनिते-शोनितामय भ' जाइक। आ ओ बड़े दर्प सँ रिक्शा पर जाक' बैसि गेलि। रिक्शाबला पोसा कुकूर जकाँ तुरत नरम बनिक' पूछि बैसल- 'तँ माइ जी ?' आ रिक्शा चलब' लागल। काली केँ रिक्शाबला जे पहिने चाकर-

चौरस आ हृष्ट-पुष्ट बुझना गेल छलैक, से सीट पर बैसिक' सोझाँ दिस झुकल छोट बुझना गेलैक। ओकर पाँखुर ऊपर उठल छलैक, दुनू पाँखुरक बीच मे गरदनि धसल छलैक, पीठपरक गंजी घामे भीजि गेलाक कारणे पीठ मे सटल छलैक। काली केँ कहि नहि किएक, तामस भ' उठलैक। ओ मैथिली मे तामस व्यक्त करब नीक नहि बुझि हिन्दी मे बाजलि—'महावीरी मुहल्ला होकर अपर बाजार चलो और वहाँ से फिर यहाँ रेलवे पुल के पास आना है। खूब तेजी से चलाओ, एकदम तेजी से'। बाजिक' काली सोझ भेलि, तनिक' बैसि गेलि।

रिक्शाबला हबर-हबर पैडिल देबय लगलैक। पहिनहि सँ थाकल रहबाक कारणे एहि अटट रौद मे ओ बेसी काल तेना नहि चला सकल। ओकर चालि क्रमश: मन्द होब' लगलैक। एकटा दोसर रिक्शा जे दोसर दिस सँ मोड़पर अयलैक, कालीक रिक्शा सँ आगाँ बढ़ि गेलैक। काली क्रोधें सबिक्ख भेलि बाजलि-'जल्दी-जल्दी चलाओ न।'

'जी माइजी...' उकासी करैत रिक्शाबला एक बेर नाक सुड़कैत मुँहक घाम एकटा मैल सनक फटलहा कप्पा सँ पोछलक आ फेर सीट पर सँ उठल सन जोर-जोर सँ पयर मारय लागल। रिक्शा कनेक तेज भ' आगाँ जाइत एक रिक्शा सँ बढ़ि गेल। काली केँ भेलैक जे ओ लगाम पकड़ने अछि, कोड़ा बजारि रहल अछि, आ कोड़ा लगने ओ पुरुष खूब झटकारिक' दौड़य लागल अछि। ओकरा मने-मन एक प्रकारक तृप्तिक अनुभव भेलैक। अकस्मात् ओकरा बुझना गेलैक जे एहि तरहें पलायन तँ पराजय थिक। जीवन-संग्राम मे पराजय... । की काली सरिपहुँ मिथिलाक सीते थिक ? एक अबला मात्र ? नहि, नहि, काली वर्तमान युग-बोध सँ दीक्षा पौने अछि। ओ नहि हारत; ओ लड़त, कसिक' युद्ध करत...'कट-कट विकट ओठ पुट पाँडरि लिधुर फेन उठ फोका...'। हठात् ओकर मुट्ठी कसा गेलैक। ओ गरम होइत रिक्शाबला केँ आरो तेजी सँ चलयबा लेल डाँटिक' कहलकैक। रिक्शाबला हपसि रहल छल, घाम दहो-बहो टघरि रहल छलैक, सीटपर सँ उठि-उठिक' ओ रिक्शा चला रहल छल।

रिक्शा महावीरी मोहल्ला मे आबिक' ठाढ़ भेलैक कि ओकरा नहि बुझयलैक जे ओ किएक एतय आयलि। ओ झोंक सँ उतरि हठात् सोझाँक एक दोकान मे गेलि आ एक जोड़ पुरखाहा मौजा झट द' कीनि लेलक; जीवकान्तक पयताबा कुट्टी-कुट्टी भ' गेल छैक, से कहि नहि ओहिकाल मोन मे उठलैक वा नहि। दोकान सँ आबि ओ पयताबा केँ घृणा सँ एक कोन मे राखि देलक। पयताबा देखि ओकरा जीवकान्तक फेकलहा जूता मोन पड़ि गेलैक। रिक्शाबला सड़कक कातबला एकटा

पाइप मे मुँह सटाक' हाथक आँजुर बना पानि पीबि रहल छल। आबिक' पुन: रिक्शा केँ अपर बाजार दिसक सड़क पर हाँकय लागल। कालीक मोन मे भेलैक जे ओ किन्हु पराजय नहि मानत, युद्ध करत, आधिपत्य करत, एना दबिक' रहलासँ, ढील छोड़ला सँ तँ सौंसे जीवन नरक बनि जयतैक। सीताक युग नहि छैक जे रसातले गेने त्राण। ओ संग्राम करत। हठात् ओ सोझ भ' गेलि आ रिक्शाबला केँ तेज चलबा लेल कहय लगलैक। अपर बाजार आबि ओ रिक्शा सँ उतरि बिनु सोचल जकाँ डाबर औषधालय मे जाक' एक बोतल आँवला तेल कीनि लेलक। मोन पड़लैक जे ओकरा अपना लेल टाटाक नारियल तेलबला डिब्बा एखन अधिअयलो नहि छैक, पुरखाही तेल सठि गेल छलैक। की ने-की सोचि ओ एकटा डाबर गुलाब-शर्बतक बोतल सेहो कीनि लेलक, ओना ओकरा स्वयं शर्बत आदि मीठ वस्तु पसिन्न नहि छलैक। दोकानदार एहि दुपहरिया मे एहन तमतमायलि गहिंकी देखि कनेक अद्‌भुत दृष्टियें काली दिस तकने छल, काली तामसें तिलमिला उठलि आ रिक्शा पर बैसिक' एकबेर निचला ठोर केँ जीह सँ पोछि दाँत सँ दबा लेलक। रिक्शाबला एहन समय मे मार्केटिंग कयनिहारिक डरें आतंकित जकाँ रेलवे पुल दिस रिक्शा जोर-जोर सँ चलबय लागल। जँ जँ डेरा दिस रिक्शा बढ़य लागल, कालीक आक्रोश बढ़ैत गेलैक आ रिक्शाबलाक घामे-पसीने लथपथ भेल शरीर केँ देखि आ बेर-बेर उठैत उकासी केँ दबयबाक निष्फल प्रयत्न करैत जानि एक विचित्र सन्तोष सँ मने-मन ओ तृप्त होइत गेलि। रस्ता भरि काली जीवकान्तक अमानवीय झनकी, तामस, बकनाइ-झकनाइ आदि पर खौंझाइत रहलि। डेरा लग आबि ओ रिक्शा केँ रोकबा क' उतरि गेलि। रिक्शाबला सेहो उतरल। ओ पस्त-पस्त भ' गेल छल, सर्वांग घाम सँ भीजल छलैक। पुछलापर ओ जतेक पैसा मंगलकैक, काली चुपचाप द' देलकैक, कोनो बहस नहि कयलक। रिक्शाबला ओही पुरनका मैलहा कप्पा सँ एकबेर मुँह पोछि एकदम शिथिल जकाँ रिक्शापर बैसि गेल आ रिक्शा मोड़ि लेलक। काली केँ ओकर ई दुर्गति देखि दया नहि, एक प्रकारक प्रतिशोधक सन्तोष भेलैक। घर दिस घुमल तँ घर फुजल छलैक आ जीवकान्त भुखले-पियासल, डरें सुखायल-पुखायल सन अखरे चौकीपर सूतल छलैक। काली अपन पुर्जा दिस तकलक, जे ओ जाइत काल लिखिक' टेबुलपर रखने छलि, तँ ओ जीवकान्तक हाथ मे रहैक। काली केँ भेलैक, जेना जीवकान्त निन्दो मे कानल हो। आँखि भीजल छलैक। सौंसे देह भीजल छलैक। ओ बड़े तृप्त दृष्टियें एकबेर जीवकान्त केँ एहि अवस्था मे देखि सौंसे घर केँ देखलक आ ओकरा भेलैक जे एहि घर मे तँ ओकरे राज छैक, ओकरे शासन चलि रहल छैक...।

मिथिला मिहिर : 12 सितम्बर 1965

जय पराजय

रामदेव बाबू आफिस सँ नहि आयल छलाह। डेरापर आसन्न संकटक एकटा आतंक-एक टा विचित्र औनाहटि पसरल छल। जेना कोनो अजगुत-अद्‌भुत घटना केँ देखबाक हेतु धर्रोहि लागल लोक जाइत अछि। आकाश मे मेघ उड़िआइत आबि रहल छल। माघ मासक जड़काला आ ताहिपर मेघाच्छन्न दिन। एक ओझरायल सनक उदासीक कुण्ठा वातावरण केँ भरियौने छल आ निरंजनक माय हाथ मे चिट्‌ठी लेने सोचि रहलि छलीह। ...सोचि रहलि छलीह अपना पतिक सम्बन्ध मे, मने रामदेव बाबूक तामसक सम्बन्ध मे, निरंजनक सम्बन्ध मे, मने अपन बेटाक सम्बन्ध मे आ निरंजनक पठाओल एहि पत्रक सम्बन्ध मे। ...सोचि रहलि छलीह जे कहि नहि, आब की होयत?

रामदेव बाबू बड़ खिसियाह लोक छथि, ताहिपर सँ ब्लडप्रेशरक शिकाइत। निरंजन सभ सँ छोट बेटा जे सिन्दरी मे पढ़ि रहल छलनि। एहन आज्ञाकारी आ सुशील बेटा, से अपने सँ मुँह फोड़िक' अपना विवाहक प्रसंग लिखने छनि, एहि सँ बरू गोली चला दितनि तँ से नीक होइतनि। रामदेव बाबू निरंजनक विवाह अनेक नीक-नीक कथाक उपन्यास भेलोपर नहि करौने छलथिन। निरंजनक माय एक-आध बेर कोनो-कोनो कथा लेल सुगबुगयलो छलीह। मुदा पतिक गम्भीर स्वभाव सँ परिचित रहबाक कारणे बेसी जोर नहि द' सकलि छलथिन। रामदेव बाबू दृढ़ व्यक्तित्वक लोक, एक बेर जे निश्चय क' लैत छथि ताहि पर एकदम दृढ़ रहैत छथि। आगाँ-पाछाँ करब हुनका प्रकृतिक विरुद्ध छनि। कोनो निश्चय तुरन्त क' लैत छथि आ तखन कोनो परिस्थिति मे परिवर्तन असम्भव। टुटबाक स्थिति भेलापर टूटि जयताह, लिबताह नहि।

निरंजनक माइये टा नहि, निरंजनो अपना पिताक आतंकक सीमाधरि पहुँचल एहि वृत्ति सँ नीक जकाँ परिचित छलाह। तें आइ धरि पिताक आज्ञा आ इच्छाक अक्षरशः पालन करैत पूर्ण अनुशासित युवक छलाह। निरंजनक माय नीक जकाँ जनैत छलीह जे टोल-पड़ोसक आन-आन परिचित युवक जकाँ निरंजन कहियो

कोनो रंच मात्रो अनुशासन-हीनताक काज आइ धरि नहि कयने छलाह। सम्पूर्ण सन्तुलित, सम्पूर्ण संयमित। पिते जकाँ गम्भीर, अल्पभाषी आ सदाचारी।

ओही निरंजनक पत्र सिन्दरी सँ आयल छलनि। स्वामी आफिस जयबा लेल तैयार भ' रहल छलथिन कि डाकपिउन एक्सप्रेस पत्र द' गेलनि। निरंजनक माय पनबट्टी मे पानक खिल्ली भरिक' द' रहलि छलथिन। कोट पहिरैत रामदेव बाबू पिउन सँ लिफाफ ल' क' फाड़लनि। निरंजनक पत्र छल। पढ़िक' मुँह तमतमा गेलनि। बिनु किछु बजने खिसिआयल जकाँ ओ चिट्ठी पत्नीक दिस फेकि देलथिन आ जाइत जाइत की फुरलनि की नहि कि घूमिक' सिरमा मे राखल चाभी ल' क' छोटका कोठली केँ खोललनि। कोठली सँ बन्दूक उठा क' अनलनि आ खाकी वस्त्रक खोल हटाक' दुनाली बन्दूकक घोड़ा दबा देलथिन, जेना ककरो फायर क' रहल होथि। आकृतिपर गहींर आकुंचन बढ़ि गेल छलनि। पुन: खोल पहिराक' सिरमा लगक कोन मे बन्दूक केँ ठाढ़ क' देलथिन आ ओहिना बिहाड़ि अयबा सँ पहिलुक स्तब्धता जकाँ चुपचाप आफिस केँ विदा भ' गेलाह।

निरंजनक माय किछु ने पूछि सकलथिन। पतिक आकृति देखि ओ बुझि गेलि छलीह। बूझि गेलि छलीह आ काँपि उठलि छलीह जे कोनो अप्रत्याशित घटना होब' लेल अछि। पतिक गेलाक बाद चिट्ठी खोलिक' पढ़य लगलीह। लिखल छल-

आदरणीया माय,

गोड़ लगैत छियहु।

नीके छी, तोरालोकनिक चाही। ई पत्र बाबूजी केँ लिखबाक साहस नहि भेल, तें तोरा लिखि रहल छियहु। तोरा एकबेर हम अपना मित्रक विषय मे कहने छलियहु। वैह गन्धवारिक मास्टर साहेबक बालक महेशक मादे मे। एक टा फोटो सेहो देखय देने रहियौक। मोहन मामाक कन्याक प्रसंग मे गप्प उठल छलैक से मोन होयतौक। महेशक पिता (मास्टरसाहेबक)क अकस्मात् मधुबनिये मे देहान्त भ' गेलनि अछि। मास्टर साहेबक पूर्व पक्षक सन्तान मे सँ महेश आ महेश सँ छोटि बहिन कल्याणी तथा दोसर विवाह सँ तीन टा बालक आ एक टा कन्या छथिन। सभ सँ जेठ होयबाक कारणे महेशपर परिवारक भार आबि गेलनि अछि। महेशक माम मने सतमायक भाय जी.पी.ओ. मे पोस्टर मास्टर छथिन। अपना बहिन आ भागिन-भगिनी सभ केँ पटना ल' गेलथिन अछि। कल्याणी मधुबनी कालेज मे पढ़ैत छलथिन आ सतमायक सेवा मे बहिकिरनी भेलि रहैत छलथिन। आब से सभ

गड़बड़ा गेलनि अछि। बाप-मायक संगे मधुबनी मे रहैत छलीह। गामपर एकसरिये कोनाक' रहथिन से समस्या छनि। एखन सतमायक संगे पटना मे छथिन, मुदा ओत' रहबा मे बड़ कष्ट छनि। पढ़ाइ सहजहि बन्दे भ' गेलनि अछि। कुमारि कन्या छथिन। घरक आस्था-पात सेहो तेहन नहि छनि जे पढ़ल-लिखल नीक घर-वरक मूल्य चुका सकथिन। अपना महेश कैँ शिक्षाक अन्तिम वर्ष थिकनि। छओ मास एतय नहि रहला सँ एतेक दिनुका खर्च निरर्थक भ' जयतनि। बहिनक विवाह लेल बड़ चिन्तित छलाह। एक दिन हमर रूम मे कानय लगलाह आ कनिते-कनिते बेहोश भ' क' खसि पड़ताह। पढ़बा मे हमरालोकनि सँ बड़ बेसी मेधावी छथि मुदा पढ़ब कठिन भ' गेलनि अछि। उन्माद जकाँ भ' रहल छनि। बिनु टकेँ नीक कथा होयतनि नहि आ टाकाक जोगाड़ छनि नहि। तखन तँ एच.एम.डी. (हास्पिटल फार मेंटल डिजीजेज) काँके एकमात्र शरण! तें बहुत दिनधरि बहुत सोच-विचार कयलाक बाद हम हुनका ई वचन द' देलियनि अछि जे कल्याणी सँ हम विवाह क' लेब।

हम जनैत छी जे बाबूजी जाति-पाति कैँ बड़े मानैत छथि। मान-मर्यादा आ कुल-प्रतिष्ठाक सेहो गम्भीर समर्थक छथि। ईहो जानल अछि जे बरदाहा-बाला कथा हुनका पसिन्न छनि। बाहर हजार टाका, ओहन प्रतिष्ठित घर, बी.ए. मे पढ़ैत कन्या आ अपना जोड़ीक समतूल समधि। मुदा एक टुटैत परिवारक रक्षाक हेतु हमरा तोरा लोकनि सँ टूटय पड़ि रहल अछि। बूझल अछि जे बाबूजी हमरा क्षमा नहि क' सकताह। तोरा मोन होयतौक जे एक बेर ओहि अलसीसियन कुकूर कैँ, जकरा ओतेक दाम द' क' किनने छलाह, ओतेक यत्न सँ पोसने छलाह कोना अपने सँ एक साधारण बातपर बन्दूक उठाक' दागि देने रहथिन। कुकूर भरिसक पड़ोसिया इंजीनियर साहेबक एक टा मुर्गी कैँ खेहारने छलैक आ कहाँ दन झपटैत काल ओकर पाँखि नोचा गेल छलैक। उपराग द' क' ओ ओम्हर गेल आ एम्हर बाबूजी बन्दूक ल' क' अलसीसियनपर गोली चला देने रहथिन।

हमरा बड़ दुख भ' रहल अछि, मुदा विवश छी। कल्याणी कैँ तँ नहि मुदा हुनक फोटो देखने छियनि। तोरा पसिन्न होइतथुन किन्तु तोरा लग कोना लेने अयबनि! हमरा आरो किछु नहि, तोहर आ बाबूजीक आशीर्वाद चाही। विवाहक दिन फागुन सुदि अष्टमी सोम निश्चित छैक।

तोरे-'नीरू'

चिट्ठी पढ़िक' निरंजनक मायक आँखि डबडबा गेलनि। तावत् जेठ देयादिनी

जे इलाज कराब' एतय आयलि छलथिन, आबि गेलथिन। हुनका बुकौर लागल देखिक' ओहो अकचका गेलीह, आ पत्र पढ़िक' गुम्म भ' गेलीह। अपना देयोरक-पढुआ बाबूक, स्वभाव सँ ओहो नीक जकाँ परिचित छलीह। निरंजन सनक बेटा एना करथिन से हुनको आशा नहि रहनि। जमानाक एहि रंग-तालपर ओहो क्षुब्ध छलीह।

दुपहरिया मे दुनू देयादिनी आँगन दिसक कोठली मे बैसलि छलीह। मोन मे अजुका दुर्दिने जकाँ मेघ लागि रहल छलनि। जँ-जँ आफिस सँ पतिक अयबाक बेर भेल जाइत छलनि, निरंजनक मायक मोन मे मेघौन दिनुका साँझ जकाँ पहिने सँ आशंकाक अन्हार भर' लागल छलनि। मेघ मे सूर्य औना रहल छलाह।

देयादिनी कहलथिन-'आगि लगौक एहि जमाना केँ। एहनो कतहु भेलैक अछि? ...छीया-छीया। निरंजन केँ एना नहि करबाक चाहियनि। बाप बूढ़ भेलथिन, रक्तचापक रोगी छथिन आ तकरा सभक कनेको विचार तँ करबाक चाहियनि? लोक एही लेल धीया-पूता केँ पढ़बैत अछि? एहि सँ तँ मूर्खे बेटा नीक। की होयतैक ई शिक्षा ल' क'? कहू जे कोन कहाँ गामक, केहन लोकक बेटी आ तकर ई सपरतीब जे पढुआ बाबूक पुतोहु होयबा लेल वृत्त अछि।'

'नहि, नहि। हमर निरंजन एहन नहि अछि। ओ एना नहि क' सकैत अछि। ओ तँ मस्टरबाक बेटा ओकरा फुसिया लेलकैक अछि।'

निरंजनक मायक विकृत स्वर बहरयलनि।

'से जे हो, मुदा पढुआ बाबू आब निरंजनक मुँहो देखथिन? पढुआ बाबू बड़ बेजाय कयलनि जे निरंजन केँ ओहन ठाम पढ़य जाय देलथिन। ई तँ भरल-पुरल घर मे आगि लगायब भेल। विधाता केँ एहन नहि करबाक चाहियनि। सात घरक शत्रुओ केँ एना नहि होइक।'

'हमरा तँ किछु नहि फुरैत अछि बहिनदाइ... ?' बजैत-बजैत निरंजनक मायक कण्ठ भरि अयलनि।

कनेक काल चुप रहि हताश स्वर मे देयादिनी कहलथिन-'कहि नहि की क' बैसताह, की नहि? पढुआ बाबू सन तमसाह लोक आ अहाँ कहलहुँ जे आफिस जयबा काल ओ कोठली सँ बन्दूक उठाक' एहि घर मे ल' अनलनि अछि। हे भगवती?'

दीर्घश्वास लैत चुप्प भ' गेलीह। चुप होइत देरी रामदेव बाबूक कोठली सँ बन्दूक छुटबाक शब्द सुनि पड़ल। दुनू देयादिनी बताहि जकाँ कोठली दिस चेहाक' दौड़लीह।

रामदेव बाबू खिड़की लग बैसल बन्दूकक नली केँ आँखि मे भिरौने बजलाह– 'बहुत दिन सँ बन्दूक पड़ल छल, सैह देखैत छलिऐक जे ठीक काज करैत छैक की नहि।' कनेक काल दुनू नली केँ आँखि सँ बेराबेरी देखैत पुनः बजलाह—'हम आफिस सँ छुट्टी ल' क' चल अयलहुँ आ बड़ी काल सँ अहाँलोकनिक गप्प सुनैत छलहुँ।'

पत्नी दिस ताकिक' कहलथिन–'ओहि मूर्ख केँ चिट्ठी द' दियौक जे हमर नाक एना नहि कटाबय। हम कोनो बिलटल–उपटल लोक नहि छी जे ओ एकसरे जाक' विवाह क' लेत। विवाह ओकरे निश्चित कयल तिथि आ स्थान मे होयतैक, मुदा एना चोर जकाँ नहि। हमरा ओ की बुझलक जे हमरा ओ हरा देत? आ कि हम मरि गेलहुँ?'

बजैत–बजैत बन्दूक केँ खाकी खोल पहिराक' कोठली मे राख' चल गेलाह। दुहू देयादिनीक नोरायल आँखि हुलसि उठलनि। आकाश मे मेघक धुन्ध केँ फाड़िक' सूर्य बिहुँसि उठलाह।

मिथिला मिहिर : 20 फरवरी 1966

एकटा मनः स्थिति

'मिसेज ठाकुर...मिसेज ठाकुर छथि डेरा मे?'

पातर आ मेहीं कण्ठ सँ बहराक' ई प्रश्नवाचक स्वर बसातपर हेलैत सन, दोमहलाक उपरका कोठली मे खिड़की लग ठाढ़ि हेमाक कान मे बिनु पूर्व स्वीकृतिक, ढुकि गेलैक। कान लग 'नो एडमीशन' कहाँ लिखल रहैत छैक? ...आ एहन-एहन स्वर ततेक अनुशासित वा शिष्ट कहाँ होइत अछि जे परमीशन ल' क' कान मे प्रवेश करत?

हेमा केँ बुझल छैक जे नीचा मे सीढ़ी लग अचला ठाढ़ि छैक आ दाइ सँ ओकरे पुछारि क' रहल छैक आ दाइ कहि देलकैक जे मलिकाइन सूतलि छथि। ओ चुप्पे रहलि। आइ तँ भोरे सँ एकर 'मूड ऑफ' छैक। ओना तँ शुक्र-शुक्र आठ, शनि नौ, आ रवि दस; एहि दस दिन सँ आश्चर्यजनक रूप मे दुहू व्यक्ति मे बाजाभुक्की बन्द जकाँ छैक। पति हरदम व्यस्त रहबाक आ हेमा निरपेक्ष तथा उदासीन रहबाक प्रदर्शन क' रहलि अछि। मुदा आइ खयबा बेर मे स्वामी सँ जेना ई आन दिनक अपेक्षें बेसी रुष्ट रहलि, हेमा केँ तेहने बोध भ' रहल छैक।

ई अचला कुहकैत अछि कोना? जेना केहन ने हमर प्रिय हो, जेना केहन ने नीक स्त्रीगण हो! हेमा केँ मोन पड़ि गेलैक जे ओ जखन स्वामीक संग एतय रहय लेल आयलि छलि तँ पता लागल छलैक जे ओकर स्वामी, ई मदन नामक व्यक्ति अचला सँ बेस मेल-जोल रखने छल। सिनेमा सरकस पर्यन्त संगे-संग देखैत छल। ई केहन मेल-जोल छलैक?

हेमाक ठोर विकृत भ' गेलैक आ मोन घोरल पानि सनक कोनादन। ओ अचला पर सँ हटिक' अपना मादे मे सोचय लागलि।

की कमी छैक ओकरा मे? देखबा-सुनबा मे तेहन छलि जे कालेज मे पढ़ैत काल जखन ओ पहुँचैत छलि कि तीन दर्जन सँ बेसी आँखि ओकरे लेल कालेजक 'गेट' लग ओछाओल रहैत छलैक। ओ बिनु तकनो देखि लैत छलि आ बिनु देखनो

बूझि लैत छलि। ओकरा भेलैक जे एखन एक बेर ओ सीसा लग जाक' परीक्षकक नजरियें अपना सुन्दरताक निश्चय क' लेअय जे ओहिना छैक की नहि?

हेमाक माय केँ होइत छलैक जे संसार भरि मे एहन सुन्दरि बेटी ककरो नहि छैक। बाबूजीक सिनेह सभ सँ बेसी एकरे भेटैत छलैक। शीला आ वीणा एकर दुहू बहीनि कनेक-कनेक जरैतो रहैत छलि एही लेल।

बी.ए. मे गेलाक बादे एहि मदन नामक व्यक्ति सँ विवाह भ' गेलैक। मदन नामक ई व्यक्ति...? हेमा एक बेर सिहरि उठलि एहि व्यक्ति शब्द पर-व्यक्ति शब्दक तटस्थ अर्थ पर। मुदा ई भाव बिजली जकाँ चमकि क' विचारक एहि उमड़ैत मेघ-पुंज मे तुरन्त विलीन भ' गेलैक। व्यक्ति-व्यक्ति-व्यक्ति। एक नहि, हजार बेर ओ व्यक्ति कहत। की होयतैक? किएक ओ बाज आओति? ओकरा भेलैक जे 'सायरन' जकाँ ओ व्यक्ति चिचिया उठय।

मदन नामक ई व्यक्ति नीक नोकरी पर लागल छल आ कमासुत व्यक्तिक विवाह शीघ्रे भ' जयबाक चाही, ओकर घर बसि जयबाक चाही। नहि तँ कोनो दोष लागि जयबाक डर रहैत छैक। मदनक पिता सँ हेमाक पिता केँ कालेज जीवनक दोस्ती छलनि। दुहू गोटे मे भरिसक एहि तरहक गप्प एक दिन कहियो भेल छलनि। हेमा केँ ई मोन नहि छैक जे ई गप्प ओ कहिया आ कोना सुनने छलि, मुदा ई मोन पड़ैत छैक जे भरिसक कहियो सुनने धरि छलि अवश्य। सचेतन नहि अवचेतन मनसँ। मुदा आइ ई बात जेना कोनो शीतला सँ मुइल व्यक्तिक सारा मे सँ बहराक' सड़ल मुर्दा जकाँ हेमा लग ठाढ़ भ' गेल छलैक; घिनौन, सड़ल, दुर्गन्धियुक्त। से मदन नामक एहि कमासुत व्यक्तिक संग हेमाक विवाह क' देल गेलैक। हेमा केँ मोन नहि छैक जे ओ एकर कोनो रूप मे बहार कि भीतर विरोधक अनुभव कयने हो। ओकरा मोन छैक जे ओकरो ई नीके लागल छलैक।

आ एहि तरहें ई मदन नामक व्यक्ति हेमाक जीवन-निर्वाहक आसरा भ' गेल छलैक आ हेमा मदन केँ दोष सँ बचयबाक साधन। हेमा केँ सहसा अपनापर करुणा भ' उठलैक तथा मदनपर दया।

दयाक ई संक्रामक भाव हेमा केँ आरो विषण्ण क' देलकैक। दया-दया-दया। एही दयाक कारणे तँ हेमा अचला केँ नोचि नहि लेलक, झोंट पकड़िक' लीरी-बित्ती नहि क' देलक, हबकिक' झमारि नहि देलक, गरदनि पकड़िक' मोचाड़ि नहि देलक। उनटे आगाँ बढ़िक' हेमा सिनेह करय लागलि। अचला धोंछी, निरासी, जनपिट्टी नहि...अचला भ' गेलैक बहिनदाइ।

हेमाक आकृतिपर एकटा पराजयक नोनछराह घाम चुहचुहा अयलैक। ओ

ओही अनुपस्थितिक भावें चुपचाप खिड़की लगक परदा केँ समेटि देलकैक।

हेमा केँ बहुत दिन धरि एकर आश्चर्य एकदम निभृत एकान्त मे होइत छलैक जे एहि पिंडश्याम अचला मे; चाकर मुँह आ छोटका नाकवाली अचला मे ओकरा स्वामी केँ...मदन केँ–कोन आकर्षण भेटल छलैक। हेमा अपना दयाभावक उदारता आ उदारताक गौरवक कारणे एहि आश्चर्य केँ सदति मोन मे गोड़नहि रहैत छलि। एकान्त मे जखने ई बात कनेक माथ उठबैत छल कि हेमा ओकरा मूड़ी पकड़िक' डाबरक सरुकी–कड़हर जकाँ माटि तर मे गाड़ि दैत छलि। मुदा आइ ई हठात् फुफुआ क' ठाढ़ भ' गेल अछि, लहलहा उठल अछि, बरिसातक गोबरछत्ता जकाँ निरीह बनिक' नहि, सापक पोआ जकाँ विष सँ लहलह करैत। सरिपहुँ कोन आकर्षण छैक अचला मे?

अनायास ओकरा मोन पड़लैक जे ओ कतहु पढ़ने छलि–'पुरुषक मोन ओहिना एक नारीक सीमा मे नहि बन्हा सकैत अछि। प्राप्त दिस सँ मोन फेरि क' अप्राप्त दिस नजरि दौड़ायब ओकरा लेल अस्वाभाविक नहि थिकैक। नैतिकताक डोर जतेक सक्कत भ' क' पुरुष केँ स्त्री सँ बान्हि क' रखैत अछि, ओकरा प्रेमक जुआरि ओतबे जोर सँ उठैत छैक। अपरिचित बाँहिक स्पर्शक आसक्ति ओकरा मोन मे व्याकुलता उत्पन्न क' दैत छैक आ मधुराह 'न' कार सँ बन्हायल आँखिक तरल भाव ओकरा विद्रोही बना दैत छैक। एकान्त समर्पणक तृप्ति सँ अकछा क' व्यक्ति अव्यक्त तृषाक हेतु बौआइत अछि।'

की थिक ई तृप्ति? की थिक ई अव्यक्त तृषा?

हेमा केँ पुलिस द्वारा अपराधीक घर जकाँ अपना मोनक 'सर्च' कयलापर अपनो अव्यक्त तृषाक एकटा मैलछाह सन, बीझ लागल सन अनुभव भेलैक। ओ जेना सेन्हपर पकड़ल गेलि हो, चौंकिक' एकबेर चारुकात तकलक आ पुनि अपना लेल कयल गेल अचलाक सम्बोधन 'मिसेज ठाकुर' पर खौंझा उठलि। हेमा केँ भेलैक जेना 'मिसेज ठाकुर' शब्द बड़ आपत्तिजनक हो।

जेना जानि–बूझिक' ओकरा व्यक्तित्व केँ तुच्छ मानि पतिक व्यक्तित्व सँ हेमा केँ मूल्य देबाक षड्यंत्र कयल गेल हो। की हेमाक अपन कोनो मूल्य नहि छैक? की ओकर अपना समस्त परिचय पोछि–पाछिक' अस्तित्त्वहीन बना देल गेल? की आब ई केवल मदननाथ ठाकुरक पत्निये भ' क' चीन्हलि जा सकैत अछि?

हेमा केँ ई अपना स्वतंत्र सत्ताक 'अस्वीकार' असह्य बुझना गेलैक। विशेषत: असह्य बुझना गेलैक एहू लेल जे ई सम्बोधन साधारणत: अचला द्वारा भेटल छलैक।

विद्रोहक धुआँ सहसा ओकरा मन केँ औना देलकैक। एहि औनाहटि सँ मुक्त होयबाक हेतु हेमा खिड़की लग सटिक' सोझाँक छतपर किछु देखय लागलि। देखय लागलि आ किछु ताकय लागलि। सहसा आकाश सँ टूटिक' खसल ताराक उल्का जकाँ ओकरा आर.के. तुली मोन पड़ि गेलैक जे अनेक दिन ओहि छतपर आबिक' हेमाक खिड़की दिस तकैत देखल गेल छल। तुलीक सम्बन्ध मे ओकरा अपना पति सँ गप्प-सप्पक क्रम मे पता लागल छलैक जे ई पंजाबक शरणार्थी छल। आब एतहि बसि गेल अछि। एतुक्का रेडियो स्टेशनक दुपहरिया सिफ्ट मे 'पेड' कलाकारक रूप मे काज करैत अछि। अविवाहित अछि। हृष्ट-पुष्ट शरीरवला एहि 'तुली' सँ हेमा केँ जेना डर होइत छलैक।

आरम्भ मे हेमा अपना पति केँ खोआ-पियाक' जखन औफिस पठा दैत छलि तँ अपने खा-पी क' आ भनसा घरक काज-उदेम सँ पलखति पाबिक' एहि खिड़की लग आबि, नीचाक सड़क दिस, सोझाँक छत सभ दिस आ छत सभक ओहि पार दूर महक नदी कातक गाछ-वृक्षक फुनगी दिस देखय लगैत छलि।

कहि नहि, तुली केँ ई कोना पता लागि गेलैक। ओ तकरा बाद सँ प्राय: सभ दिन छतपर आबय लागल। आबिक' हेमा दिस पियासल नजरियें बेर-बेर ताकय लागल। ओकरा आँखि मे एकटा अव्यक्त तृषा छलैक। आरम्भ मे ई बेजाय नहि लागल छलैक मुदा नहुँ-नहुँ हेमा तुलीक एहि अव्यक्त तृषा सँ जेना आतंकित भ' गेलि। तकरा बाद सँ ओ खिड़कीक परदा हटायब बन्द क' देने छलि। ओतय आयब बन्द क' देने छलि आ ओहि बाटें सड़क केँ, छत केँ तथा छत सभक ओहि पारक गाछ-वृक्षक फुनगी केँ देखब छोड़ि देने छलि।

छोड़ि देने छलि तँ तुली केँ बिसरि गेलि छलि। एहि तरहें ओ तुलीक आँखि केँ, ओकरा आँखिक अव्यक्त तृषा केँ आ ओहि अव्यक्त तृषाक आतंक केँ बिसरि गेलि छलि।

एखन हेमाक मोन जेना जिद्द पकड़ि लेलकैक। ओ एक विचित्र साहस सँ तुलीक छत दिस ताक' लागलि। छत खाली छलैक। ओहिठाम तुली नहि छल। हेमा केँ तामस भ' उठलैक। अपनापर, आ कि खाली छतपर, खाली छतपर आ कि तुलीक अनुपस्थिति पर, से नहि बुझना गेलैक।

बहुत दूर सँ पयरे अयबाक कारणे थाकलि ठेहिआयलि जकाँ हेमा शिथिल बनलि कुर्सी पर बैसि गेलि। आगाँ मे टेबुल छलैक आ टेबुलपर भोरुका डाक सँ मदनक नामे आयल ओकरा कोनो मित्रक अन्तर्देशीय-पत्र छलैक। हेमा ओही स्वप्नाविष्ट मुद्रा मे बिनु ज्ञानेक नहुँ-नहुँ पत्र केँ खोलि देलक। एक बेर भगजोगनीक

इजोत जकाँ ओकरा मोन मे अयलैक जे 'अनकर' पत्र एकांत मे चोरा क' नहि फाड़बाक चाही, मुदा फाड़ि देलापर बिनु पढ़ने राखल नहि गेलैक। ओ ओहिना अनुपस्थितिक भावें चिट्ठी पढ़' लागलि। दार्जिलिंग सँ क्यो रामलाल नामक व्यक्ति लिखने छलैक।

प्रिय मदन,

प्रोग्राम बनाइयो क' तों केवल भौजी सँ रूसि रहबाक कारणे दार्जिलिंग नहि अयलह से हमरा अपना सारि अचलाक पत्र सँ ज्ञात भेल। भौजी सँ तों एतेक प्रभावित छह से नहि बुझल छल। पता लागल जे हमर साढ़ू अपना पत्नी अचलाक संग आ तों भौजीक संग दार्जिलिंग आब' लेल छलह, मुदा भौजी केँ कहि नहि की भेलनि जे ओ एहि कम्पनीक संग यात्रा करबाक विचारपर तमसा गेलीह।

कहाँदन एही बातपर तोरा दुहू गोटे मे झगड़ा भ' गेलह। इहो पता लागल जे तों कोनो योगी-महात्मा सँ किदन-कहाँदन सिखबाक विचार क' रहल छह। ई अंट-संट काज नहि करिहह। करिहह तँ भौजी सँ सलाह-सुतरा क' लिहह।

भौजीक सम्बन्ध मे तों कतेक कमजोर छह से हमरा पहिनो सँ बूझल अछि। तों एकसरो दार्जिलिंग आबि सकैत छलह मुदा भौजीक बिना नहि अयलह से एहि बातक प्रत्यक्ष प्रमाण थिक। हम जनैत छी जे तों हुनका वेत्रेक एक क्षण नहि रहि सकैत छह। ई तँ तो अपनहुँ एक हजार दिन हमरा कहने छह। ई प्राणायाम आसन ओकरो प्रतिक्रिया थिकह।

बेस। अयबाक दोसर प्रोग्राम बनाक' शीघ्र लिखह जे कहियाधरि तों दुहू गोटे अबैत छह। हमर डेरा हमरा कालेजे लग अछि। हमर पत्नी भौजीक कालेज कालक सखी थिकथिन। भौजी केँ हमर सिनेह कहबहुन तँ खिसिअयतीह तँ ने?

हठात् पत्र केँ राखिक' हेमा उठलि आ 'बाथरूम' मे जाक 'पाइप' खोलि देलक। कहि नहि किएक ओकर आँखि भरि अयलैक। हेमा जल्दी सँ पाइपक पानि चुरू-चुरू ल' क' मुँह, आँखि आ कपार पोछैत जेना अपन एहि भावनाक दाग केँ साफ कर' लागलि।

मिथिला मिहिर : 11 सितम्बर 1966

संस्कारक मोह

डेरा सँ बेसी काल अनुपस्थिते रहैत छलहुँ तें हमरा किछु बेसी नहि बूझल छल मुदा सुलोचना (हमरा पत्नी) केँ जखन नाक ठेकि गेलनि तँ एक दिन हमरा कहलनि-'डेरा बदलि लिय' नहि तँ हमरा गाम पर द' आउ।'

भोजन करैत-करैत हम एहि 'अल्टीमेटम' पर कनेक हड़बड़ा गेलहुँ। पुछलियनि तँ कहलनि जे 'भारती आब सात बरखक भेलि आ मन्नू तीन बरखक। एहिठाम रहने एकरा सभ पर बड्ड अधलाह असरि पड़तैक। तें एहिठाम आब रहब संगत नहि थिक।'

बहुत पुछलापर हँसैत आ लजाइत जकाँ थम्हि-थम्हि क' कहलनि—'ई मोहल्ला तँ नवका सोनागाछी थिक। उपरका कोठली मे जे पंजाबी मौगी सुबिन्दर कौर रहैत अछि से द्रोपदियो केँ टपने अछि। एकरा पाँचेटा नहि, पचासटा साँय छैक। दिन भरि हुड़दंग मचौने रहैत अछि। रंग-बिरंगक लोक अबैत छै आ धोंछिया हँसि-हँसिक' सभ सँ बतियाइत अछि। मुदा ई सभ केवल दिने मे; सेहो तखने टा होइत छैक, जखन एकर दुनू टा बेटा-बेटी पढ़' लेल स्कूल चल जाइत छैक। साँझ मे अहाँ रहिते नहि छी जे देखबैक। अहाँ तँ चल जाइ छी 'चन्द्रोदय कार्यालय' मुदा हमर कहियो-कहियो अवग्रह भ' जाइत अछि, जहिया धीया पूता केँ साँझ मे सुताक' ई केलि कर' लगैत अछि। बाप रे एहन अगियाहि मौगी नहि देखने रही?'

हम पुछलियनि—'मुदा रवि दिन केँ तँ हम रहैत छी डेरापर, तखन किछु ने देखैत छिऐक।'

ओ बजलीह—'आहि रे बा? से तँ ओहि दिन दुनू नेना रहिते छैक एकरा लग। ओहि दिन तँ ओ अनुसूया बनि जाइत अछि।'

'आ, ड्राइभर बाबू एकर स्वामी जे छैक से नहि किछु कहैत छैक?' हम खाइत-खाइत पुछलियनि।

'एक तँ ओ नवकी बहु लग बेसीकाल रेलवे क्वार्टर मे रहैत अछि। ओतय

सँ पलखति भेलापर जहिया ओ राति मे अबैत अछि, तहिया ई नहा-धोक' एकदम सती-सावित्री बनि जाइत अछि।' ओ भारती आ मन्नू केँ दोसर कोठली मे सुतल देखिक' एक बेर निश्चिन्तताक साँस छोड़ि बजलीह।

हमरा बूझल छल जे ई सुबिन्दर कौर ड्राइभरक पहिलुकी स्त्री थिक जकरा सँ लाहौर मे विवाह क' ड्राइभर रहैत छल। भारत विभाजनक दंगा मे दुनू व्यक्ति हेरा-भोतिया गेल। भारत अयलापर ड्राइभर दोसर विवाह क' लेलक। तखन एक दिन शरणार्थी 'कैम्प' मे सुबिन्दर कौर केँ देखि एकरा ग्रहण क' लेलक आ एकरा एहि डेरा मे राखि लेलक। हम दुहू गोटेक विवशताक अनुभव क' रहल छलहुँ।

'अहाँपर तँ ने एकर प्रभाव पड़ैत अछि?' हम परिहास करैत कहलियनि।

'दुर जो, अहाँ केँ तँ एहिना रहैत अछि। स'खे पकड़िक' डाहि देबनि।' ओ कृत्रिम रोषें बजलीह।

हमरा नहि बुझना गेल जे ककर स'ख पकड़िक' डाहि देथिन। ढेकार करैत कहलियनि—'की करबै एहि ले'? जे जेहन करत, तेहन पाओत। हमरा लोकनि केँ ककरो सँ की प्रयोजन?'

'हमरालोकनि केँ तँ नहि प्रयोजन मुदा नेना सभ केहन बनत?' हमरा चुप्प देखिक' बजलीह—'अगुलका मकानक जे मिस्टर मुखर्जी अछि ओ कहाँदन सँ एकटा ऐंग्लो इंडियन नर्स केँ बझाक' ल' अनने अछि। कहियो-कहियो दुनू गोटे पीबिक' तेहन बॉलडान्स छतपर करय लगैत अछि जे मोहल्ला भरिक धीयापूताक संगे भारतीयो खिड़की लग सहटि क' नाच देखय लगैत अछि। एक दिन तँ हम एक चाट मारबो कयलिऐक मुदा ताहि दिन सँ नुका-चोरा क' देखल करैत अछि।'

एक बेर हमरा मुँह दिस ताकिक' हमरा भावना केँ पढ़बाक चेष्टा कयलनि आ निराश होइत बजलीह—'अहाँ ध्याने ने दैत छिऐक-बामा भाग जे पड़ोसिया रहैत छथि मित्रा बाबू, तनिक बेटी मिस जयन्ती मित्राक कतेक दोस्त महिम छैक से कहि नहि। जखन-तखन हाहा-हीही आ सिनेमाक गीत सभक रिहर्सल करिते रहैत अछि।'

बहुत दिन धरि तँ एकसरे हरीसन रोड मे (एकटा गौआँ रहैत छथि, हुनके कोठली मे) रहलहुँ। ओ कारपोरेशन मे शिक्षक छथि। स्कूलक बाद दू गोट सेठजीक कोठी पर जाक' धीया पूता केँ पढ़बैत छथिन। 'कूकर' रखने छथि आ बस खीचड़ि-साना दिन मे तथा रोटी-दालि वा रोटी तरकारी राति मे बनाक' खाइत छथि। आपादमस्तक खादी भंडारक शुद्ध खद्धर पहिरैत छथि आ सम्पूर्ण निरामिष विचारक अहिंसावादी लोक छथि। हम युनिवर्सिटी सँ आबी तँ 'चन्द्रोदय' मासिक पत्रिकाक

कार्यालय चल जाइ। दिनुका भोजन युनिवर्सिटीक रस्ताक एकटा होटल मे करी आ रतुका भोजन चन्द्रोदय कार्यालय लगक सिंधिया उपाहार गृह मे।

पेपटिक अलसरक रोगी। बहुत दिन धरि आयुर्वेदक लीला विलास रस, महाशंख बटी, नारिकेर लवण आ कुष्मांडावलेहक सेवन कयलहुँ। निराश भ' क' एलोपैथीक एल्यूडौक्सक एवं इन्ट्रेनिल डूप्लेक्स आदि गोलीक शरण मे बितौलहुँ। ओहो जखन कारगर नहि भेल तँ हारिक' होमियोपैथीक ऐनाकार्डियम, लाइकोपोडियम, आइओडम आ कोलोसिन्थक मदति लेलहुँ। मुदा सभक अनुभव उठा लेलाक बाद ई अखंड ज्ञान भेल जे नेचरोपैथीक सिद्धान्त पेटक रोग लेल सदति मान्य थिक। पथ्य-परहेज सँ जँ रही तखन नीकेँ रहि सकैत छी। खाहे दवाइ जे सेवन करी। से पथ्यक हेतु गामपर सँ बिनु हुनका अनौने दोसर की प्रबन्ध भ' सकैत छल? कोनो शहर मे पथ्यक होटल नहि देखने छिऐक। कलकत्ता मे तँ नहिये भेटल अछि।

गामपर माय बूढ़ि छथि से हुनका सेवा लेल ककरो रहब आवश्यक। छोट भाइक द्विरागमन भेना कनेके दिन भेलनि अछि। मुदा तैयो गामपर पत्र देलिऐक तँ बहुत न नु-नु च'क उपरान्त सुलोचना अयबा लेल स्वीकार कयलनि। बहुत दिन धरि दौड़-बरहा कयलाक बाद एक दोसर सहयोगी प्रोफेसरक सहायता सँ ब्रजनाथ मित्रा लेन मे ई डेरा प्राप्त भ' सकल छल। तें दोसर डेरा तकबाक साहस नहि भ' रहल छल।

मुदा एहि तरहें अनेक दिन ई सभ सुनलाक बाद तंग भ' क' बड़े मोशकिल सँ ओहिठाम सँ हटि, बाल मुकुन्द मक्कर रोडबला मोहल्ला मे एकटा डेरा लेलहुँ। ई डेरा अद्‌भुत अछि। चारि तल्ला मकान, एक-एक तल्ला मे अनेक-अनेक कोठली आ एक-एक कोठली मे गजगज करैत परिवार।

हमरालोकनि जाहि मे छी, तकरा सोझाँबला मे रामप्रकाश गुप्ता रहैत अछि। ओकरा परिवार मे ओकर पत्नी छैक-मिसेज गुप्ता, जे मिडवाइफक काज करैत छैक। बेटी छैक उत्पला, मने मिस उत्पला गुप्ता टाइपिस्ट आ संगहि-संग कोनो प्राइवेट कालेज मे पढ़ैत अछि। रामप्रकाश सेहो कोनो फर्म मे टाइपिस्ट थिक। कहियो-कहियो, जहिया हमरा युनिवर्सिटी मे छुट्टी रहैत अछि आ चन्द्रोदय कार्यालय नहि जयबाक रहैत अछि तँ डेरापर पड़ल-पड़ल डाक्टर अघोरनाथक विधवा बहीनिक, जकर एही मोहल्ला मे कनेक हटिक' डेरा छैक, अपना पत्नी (सुलोचना) सँ मद्धिम स्वर मे होइत रहस्यवार्त्ता सुनना जाइत अछि जे-चारिम कोठलीक अधीरक बहीनि दीपाक मेलजोल चन्द्रकान्तक बेटा सँ बेस छैक। पी.के. चटर्जीक बेटी गांगुलीक बेटा संगे दू राति धरि कहि नहि कतय नापत्ता रहल अछि। पत्रिकाक

स्टाफ रिपोर्टर सुब्रत मुखर्जी अपना विधवा बहीनि केँ कतेक दिन समीरक संगे एस्प्लेनेड मे ऐश-मौज करैत देखने अछि। मिस उत्पला गुप्ता कालेजक एकटा छौंड़ा सँ नाबालिग इश्क करैत अछि। चौधरी बाबूक बेटी मंजुलताक एबार्शन यैह मिसेज गुप्ता करा देलकैक अछि आ अपने मिसेज गुप्ता बेस उड़नबाज अछि, आदि-आदि।

हम सुलोचनाक मनोभाव बुझैत छी। डेराक समस्या आ एहि मोहल्लाक समस्याक द्वन्द्व हुनका बड़े निर्दयता सँ मथि रहलनि अछि। ओ एहि नवीन डेराक प्रसंग खुलिक' किछु नहि कहि पबैत छथि। आधुनिक नागरिक जीवनक ई अमेरिकन पैटर्न, पाश्चात्य दृष्टिकोण आ सघन जनसंख्याक अपरिचित समवेत। हम सुनियो क' नहि सुनि रहल छी आ बुझियो क' किछु नहि सोचि पबैत छी।

आइयो छुट्टी छल। हम खाटपर चुपचाप पड़ल छलहुँ। शंकरक 'चौरंगी' पढ़ैत-पढ़ैत आँखि लागि गेल छल। आँखि फुजलापर देखलहुँ जे सुलोचना नीचा मे बैसि क' ककबा सँ केश थकरि रहल छथि। टुटलहा केश, जे ककबा मे बाझि जाइत अछि, तकरा रहि-रहि क' बहार क' लैत छथि आ आंगुर मे लेपटौने जाइत छथि। बेसी भ' गेलापर गोल-ठोल बनाक' पयरक औंठातर दाबि लैत छथि। कनेक कालक बाद माथ बान्ह' लगैत छथि। दुहू बाँहि ऊपर उठाक' आगाँ मे राखल सीसा मे देखने जाइत छथि आ केश केँ सिटने जाइत छथि।

हम अलस भावें हुनका दिस चुपचाप देखि रहल छलहुँ कि-'बाबा, कने...' ठुनकैत सन मिस उत्पला गुप्ताक स्वर सँ ध्यान ओम्हर सोझाँक कोठली दिस गेल।

रामप्रकाश एकटा आराम बेंचपर चित पड़ल-पड़ल सिकरेट पीबि रहल छल। उत्पला नूआ बदलबा लेल अ'ढ़ चाहैत छलि तें ठुनकल छलि। से राम प्रकाश उत्पलाक ठुनकिते देबाल दिस करौट फेरि लेलक। उत्पला साड़ी ब्लाउज उतारिक' एकदम देह मे सटल-कसल स्कर्टनुमा कमीज जकरा पाछाँ मे घुमौने बाप केँ सम्बोधित करैत पुनः ठुनकलि—'बाबा...प्लीज...' आ पीठपरक बटम बंद क' देबाक हेतु बाप दिस पीठ घुमा देलकैक।

एतेक काल टाइट सलवार मे ओकर नितंब कोनादन लगैत छल, आब कसलहा कमीज मे ओकर अग्रभाग एक प्रकारक अस्वस्थताक बोध कराब' लागल।

बटम बंद करौलाक बाद उत्पला अयना लग जाक' स्नो लगब' लागलि। आँखि बंद क' माथ, गाल आ गरदनि मे पालिस कयलाक बाद 'पफ' ल' क' 'रूज' वा एहने किछु गालपर नहुँ-नहुँ लगौलक। 'आइ ब्रो' सँ भौहुँ ठीक कयलाक बाद दुहू ठोर मे बड़े यत्न सँ 'लिपिस्टिक' लगौलक आ अन्त मे 'मेकअप' केँ

'फिनिशिंग टच' दैत समावर्त्तनक साँस छोड़लक।

रामप्रकाशक कोठली मे केबाड़ लगक परदाक अभाव हमरा ओहि समय बड़ कोनादन लागल। उत्पला हाइ हिलक स्लीपर पहिरैत एक बेर अपना कमीज, सलवार, आदिक सूक्ष्म निरीक्षण क' आश्वस्तिक मुद्रा मे किछु किताब आ बही ल' क' बिहुँसैत सन बहराइत हमरा देखि क' तिरस्कारक स्वर मे कुहरैत एकदम स्मार्ट स्टाइल मे बाजि उठलि-'नोमोश्कार अंकल?' आ हमरा किछु कहबा सँ पूर्वे ओ बढ़ि गेलि।

अकस्मात हमर दृष्टि गेल जे भारती अपना स्कूल सँ आबि गेल छलि आ बड़ी काल सँ एकटक उत्त्पलाक प्रसाधन आ चालि देखि रहल छलि। हमरा तकैत देखि बाजलि—'बाबूजी, हमरो ओहने फ्राक-सलवार सिया दिय'ने।' हम असहज भ' उठलहुँ, मुदा बलपूर्वक अपना केँ रोकि लेलहुँ। मोन मे भेल जे की करू, कतय जाउ? कतेक डेरा बदलू! डेरा नहि दुनिये जँ बदली तखने बाँचि सकैत छी। सौंसे दुनिया एहने भ' गेल अछि। दुनियाक जे हो, मुदा अपन देश तँ एकदम बताह भ' उठल अछि पाश्चात्य अनुकरण करबा मे। स्वतंत्रताक बाद सँ सौंसे देश केँ की भ' गेलैक अछि?

कनेके कालक बाद उत्पला घूमि क' आयलि तँ ओकर सलवार कमीज जेना मीड़ल-मोड़ल भ' गेल छलैक। क्रीज एकदम टूटि गेल छलैक आ कोनादन लगैत छलैक। उत्पलाक माय तावत आबि गेल छलैक। बेटीक परिधानक ई दु:स्थिति देखि ओकर आँखि चढ़ि गेलैक। रामप्रकाश ई अनुभव करिते बाजि उठल-'आइ काल्हि 'बस' मे ततेक ने भीड़ कसल-कूसल रहैत छैक जे नीक सँ नीक नूआ दूरि भ' जाइत छैक।' यद्यपि ई बात ओ नीक जकाँ जनैत छल जे उत्पला केँ अपना कालेज जयबा मे कतहु 'बस'क 'रूट' नहि छैक।

अगिले दिन सँ दोसर डेराक प्रबंध मे लागि गेलहुँ। ओहि दिन जैक्सन लेनक पिक्चर इम्पोरियम मे मदन बाबू सँ भेंट नहि भेल तँ कैनिंग स्ट्रीटक चौधरी ब्रदर्स मे जाइत छलहुँ तँ देखलिऐक जे एकटा स्लीवलेस कसल-कसल ब्लाउज आ कसल-तनल आधुनिक ड्रेस मे सुसज्जित एक मुक्तोदरा अत्याधुनिका युवती आकर्षक पोज सँ सिकरेट पिबैत पिक्चर इम्पोरियम सँ बहरा रहलि अछि। प्रसाधन पूर्ण मुँह, कारी-कारी केश-राशि, बेस कटगर नाक, लाल-लाल ठोर, आ पैघ-पैघ आँखि, पातर, नाम, सघन एवं कारी भौंहु, एक हाथ मे चमकैत चेन, चेन मे घड़ी आ दोसर हाथ निराभरण, गरदनि मे चकमक करैत पाथरक सुन्दर सन माला, ललाटपर साधनाकट केशक छिड़िआयल सन किछु लट। मोन किछु सुस्त जकाँ छल तें

टैक्सी क' लेने छलहुँ। से टैक्सीपर कैनिंग स्ट्रीटक नाम कहि सवार होइते छलहुँ कि ओहो आबिक' ठाढ़ि भ' गेलि। सिकरेट फेकैत अंगरेजी मे लिफ्टक उन्मुक्त अधिकार मे बाजलि-'कैनिंग स्ट्रीट धरि हमहुँ संग दी?'

हम स्वीकारात्मक मुद्रा मे टैक्सीपर चढ़ि जयबाक संकेत करैत बैसि गेलहुँ। भेनिटी बैग सँ सिकरेट बहार करैत देखिक' हम कहलिऐक—'नो, थैंक्स। हम नहि पिबैत छी।'

'हाउ फनी, अहाँ नहि पिबैत छी?' कनेक काल चुप रहलाक बाद सिकरेटक धुआँ पोज सँ फेकैत पुछलक—'एक बात पूछू?'

'पूछू!'

'अहाँ एत' की करैत छी?'

अपन परिचय देलिऐक तँ ओ बाजलि—'तमसाइ नहि तँ एक बात कही।'

'कहू।'

'अहाँ केँ देखिते हम तुरन्त बूझि गेलहुँ जे अहाँ बुद्धू छी।' हम ओकर निर्भीकतापर गुम्म रहि गेलहुँ।

'तमसा गेलहुँ?'

'नहि।'

'जी?'

'बुझिए नहि पड़ैत अछि जे कोन बुद्धूपनी कयलहुँ?'

'जी, यैह तँ अहाँ नहि बुझैत छी।'

'जी...?' कहिक' ओकरा मुँह दिस तकलहुँ तँ ओकरा परिहास मिश्रित मुद्रा मे एकटा विस्मय, कनेक हीनता, किछु उपेक्षा आ थोड़ेक अस्पष्ट श्रद्धाक भाव देखना गेल। तकरा बाद ओ सिकरेटक सुख उठयबा मे लागि गेलि आ हम सरिपहुँ बुद्धू बनल चुप भेल रहलहुँ।

चौधरी ब्रदर्स लग उतरलापर ओहो उतरि गेलि आ आश्चर्य मिश्रित हास्य मे बाजलि-'ह्वाट ए फनी? ...अहूँ केँ एतहि उतरबाक छल।' आ बिनु उत्तर सुनने 'थैंक्स' कहि, मुस्की दैत, चट द' आगाँ बढ़ि गेलि। हठात हमरा बोध भेल जे सरिपहुँ हम बुद्धू छी-बेवकूफ छी। तकरा दू-तीन दिनक बाद मदन बाबूक संगे वामन पाड़ा लेन, सैयद साली लेन, चेतला, खेलात घोष लेन आदि अनेक मोहल्ला मे बौआइत-बौआइत लेक गार्डेन्स मोहल्ला मे एकटा मनपसिन्न डेराक पता लागल। ओहि डेराक लकबा सँ ग्रस्त एकटा वृद्धा अपना कुमारि कन्याक संग रहैत छलि। वृद्धा महिला सँ ज्ञात भेल जे अगिला सप्ताह मे भरिसक कन्याक विवाह होब'बला

छैक आ तकरा बाद ई वृद्धा अपना बेटी जमाइ लग बालीगंज मे रह' लागति। ई डेरा ओकरा पुतोहुक थिकैक जे एही विवाहक प्रसंग ओरिआओन-पात कर' लेल बहार गेलि अछि। बेटा कोनो हवाइ जहाजक पायलट छलैक जे पछिला पाकिस्तान युद्ध मे मारल गेलैक अछि। पतिहीना पुतोहु 'एयर होस्टेस' छैक जे अपना सासुक दुरवस्था देखि नोकरी सँ छुट्टी ल' क' एतय आयलि अछि आ ननदिक कोनो एहन व्यवस्था कर' चाहैत अछि जे सासुक जीवन-यापनक सुव्यवस्थित प्रबंध भ' जाइक। पुतोहु अपना नोकरीपर तखने जा सकैत अछि। बुढ़िया अपना सोनसन पुतोहुक प्रशंसा करैत-करैत कानय लागलि। हमरालोकनि बुढ़ियाक संप्रति अनुपस्थित देवीस्वरूपा एयर होस्टेस पुतोहुक प्रति आदर सँ भरि उठलहुँ।

दोसर दिन अयलापर देखैत छी जे ओहि दिनुका जैक्सन लेन सँ कैनिंग स्ट्रीटधरि टैक्सी मे संग आयलि वैह आधुनिका रमणी टैक्सी सँ उतरि मारि कतहु सामग्री सभ दुनू हाथें उठौने वृद्धा लग आबि केँ रखलक आ पंजाबी टैक्सी-ड्राइभर सेहो एकटा पैघ सनक ट्रंक आनिक' राखि गेल। ड्राइभर केँ टका दैत-दैत हमरापर नजरि पड़लैक तँ चिहुँकि क' अंगरेजी मे बाजलि—'ओ गुडनेस? हाउ फनी?' तुरन्त बंगला मे बाजलि—'अहाँ सँ एतय भेंट होयत से सपनायलो नहि छलहुँ।'

हम कहलिऐक—'एहू सँ बेसी फनी ई जे हम एहि डेराक अभ्यर्थी छी।' ओ तुरन्त बूझि गेल जे हम बंगाली नहि छी। विशुद्ध आलंकारिक उर्दू मे बाजलि-'की अहाँ हिंदोस्तानी छी? माफ करब। हम बंगालीलोकनि बंगालक रहनिहारक अतिरिक्त लोक केँ हिंदोस्तानी कहैत छिऐक। हाउ फनी? अहाँ कत' रहैत छी?' हम कनेक हँसैत आ चकित होइत कहलिऐक—'हम मिथिला रहैत छी। मैथिल छी।'

'मैथिल? तखन तँ अहाँ हमर गौंआ-घरुआ भेलहुँ। हाउ फनी? डेरेक अभ्यर्थी छी कि ने? डेरावालीक नहि ने?' विशुद्ध मैथिली मे बजैत ओ जोर सँ हँसि पड़लि। हम आ मदन बाबू स्तब्ध रहि गेलहुँ।

ओ कहलक जे ओकर जन्म दरभंगा मे भेल छैक। पिता दरभंगा राज मे इंजीनियर रहथिन। ओकर शिक्षा-दीक्षा आइ. एस-सी. धरि दरभंगे मे भेल छैक। तकरा बाद पिताक मृत्यु भ' गेला सँ ओ अपना जेठ भाइक संगे यत्र-तत्र बौआइत रहलि। भाइ दिल्ली मे रहैत छैक सेंट्रल गवर्नमेंटक सर्विस मे आ ई एयर होस्टेस भ' गेल अछि। डेराक सम्बन्ध मे एकटा सरकारी आंकिकीक चर्चा करैत कहलक-'एत' डेरा भेटब महान कठिन अछि। कलकत्ता नगरक कुल जनसंख्याक पन्द्रह प्रतिशत भाग दोकान सभ मे रहैत अछि, तीस प्रतिशत भाग एहन अछि जे एक

कमरा मे तीन परिवारक हिसाब सँ रहैत अछि आ सतरह प्रतिशत लोक एहन अछि जकरा घर नामक कोनो पदार्थ नहि छैक।' कनडेरियें हमरा आकृति परक विस्मय आ निराशा केँ देखि कनेक हँसैत सन बाजलि—'ई मकान हमर पिताक थिकनि जे हमरा नामे लिखि गेलाह अछि। हम एकरा बेचब नहि। ई हमरा मोनक भावनाक प्रश्न थिक। नोकरीपर चलि गेलाक बाद ई दुनू कोठली अहाँक अधिकार मे रहत। बाँकी कोठली सभ भाड़ा लागल छैक। हम आठ-दस मासपर एक-आध दिनक हेतु आयब तँ अहींक संगे पेयिंग गेस्ट भ' क' रहि जायब। जँ से अहाँ केँ पसिन्न नहि होयत तँ कोनो होटले-तोटल मे रहि जायब। दू कोठली मे सँ एक कोठलीक भाड़ा लागत आ दोसर कोठलीक भाड़ा तर मे ई काज क' देबाक होयत जे सभ गोटे सँ मासे-मासे भाड़ा ओसूल क' ओहि मे सँ तीन सय टाका हमर सासु केँ पहुँचा देबनि आ शेष टाका हमरा पासबुक मे बैंक जाक' जमा क' देबैक। कनेक विहुँसैत सन एक मर्मभेदिनी दृष्टिएँ हमरा आँखि मे आँखि मिलाक' बाजलि-'माफ करब, अहाँ बेवकूफ छी, एही विश्वास सँ अहाँ केँ ई भार सौंपि रहल छी।' आ हमरा सभक संगे ओहो जोर सँ हँसि पड़लि। एही गप्प-सप्पक बीच हमरा लोकनि केँ किछु चाकलेट आ नमकीन बिस्कुटक संग चाह बनाक' पियौलक आ ननदिक विवाहक निमंत्रण द' अयबा लेल वचन ल' लेलक।

विवाहक समय गेलहुँ तँ श्वेत रंगक बड़े शालीन साड़ी आ ब्लाउज मे बिहुँसैत आबिक' स्वागत कयलक आ हमरा भाइक मित्र थिकाह, ई कहिक' परिचय करौलक। तकरा बाद दू-तीन खेप यत्र-तत्र आरो भेंट भेल तँ अत्यन्त स्नेह सँ बड़े आत्मीय भावें गप-सप्प कयलक। हम ओकर ज्ञान, तर्क-शक्ति आ व्यावहारिकता सँ प्रभावित भ' गेलहुँ।

विवाहादिक बाद हम सपरिवार ओहि डेरा मे रह' लेल ओकरा आदेशानुसार ओकरे निश्चित कयल दिन आ समयपर अयलहुँ तँ तखने ओ जयबा लेल प्रस्तुत छलि। टैक्सी लागल छलैक। बूझि पड़ल जेना हमरे लोकनिक प्रतीक्षा क' रहल छलि। हमरालोकनिक पहुँचिते ओ मन्नू आ भारती केँ एक-एक टा चाकलेटक डिब्बा दैत आ गाल थप-थपाक' दुलार करैत, कोठली सभक तालाक चाभीवला रिंग सुलोचना केँ सुनझबैत, कर जोड़ि सुलोचना केँ प्रणाम कयलक आ हमरा पयर छुबिक' गोड़ लगलक।

कहि नहि, विदा कालक एहि परिवेश आ हृदयस्पर्शी क्षण मे हमर दुहू आँखि किएक भरि आयल। ओ एकदम निरपेक्ष स्वरें बाजि उठलि—'गुड बाइ?'

'गुड बाइ एण्ड गुड लक?' हमरा मुँह सँ अवचेतन स्थिति मे बहरा गेल।

ओ तुरंत टैक्सी मे जाक' बैसि गेलि।

हम भावाविष्ट भ' उठलहुँ। मोन मे भेल जे 'एकरा कत' कत' जाय पड़तैक। आह, बेचारी?' कि तुरंत मोन पड़ल, ई एक दिन कहने छलि–'हमरालोकनि केँ होम सिकनेस जे अछि से वस्तुत: अपना संस्कारक मोह थिक। भिन्न सांस्कृतिक परिवेश मे एडजस्ट क' सकब की नहि, ताहि आशंका सँ ग्रस्त रहैत छी। मुदा आब तकर विस्तार अपेक्षित अछि। लोकक जेना भौगोलिक सीमा बढ़ि गेलैक अछि, तहिना सांस्कृतिक सीमा केँ सेहो बढ़ा लेबाक चाही। ताहि लेल पूर्वग्रहरहित विस्तृत धैर्य आ पर्याप्त सहनशीलता चाही, उदारता आ आतंकरहित आग्रह चाही।'

मोन मे ओकरा लेल एकटा मोह आ आदरक भाव भरि गेल। सुलोचना नवका डेरा मे वस्तुजात सरियाब' लगलीह।

मिथिला मिहिर : 6 नवंबर 1966

तृप्ति-बोध

शहर मे अयलापर देहातोक लोक मे थोड़ बहुत परिवर्तन भ' जाइत छैक। ताहू मे जँ पढ़ल-लिखल लोक हो तँ कहबाक कोन बात? विशेषत: मध्यम वर्गक लोक एहन स्थिति मे सामर्थ्य एवं सुविधाक अनुसारें अपन अंतर्हित आ प्रच्छन्न कुंठा कें हटाक' कनेक उन्मुक्त, स्वेच्छाचारी बनबा मे आनंदक अनुभव करैत अछि। तें घर आ बहार मे केवल शाब्दिके नहि, आर्थिक आ तात्त्विको अंतर छैक से मूलत: देहातक रहनिहारि कमला कें राँची अयलाक बाद नीक जकाँ बूझल भ' गेल छलैक।

आइ जखन ओ शापिंग कर' लेल जाय लागलि तँ बाकस सँ डायक्रोनबला फ्राक आ नीक सनक पैंट पहिराक' केश थकड़ि, स्नो-पाउडर आ काजर लगाक' मिन्नी कें तैयार कयलक आ अपने आसमानी रंगक साड़ी-ब्लाउज पहिरि, बन्हलाहा केश कें फेर ठीक कयलक तथा रूमालपर कनेक सेंट छीटिक' कनपट्टी आ आगाँ-पाछाँक साड़ी मे सेंट लगा लेलक। पाउडर, काजर आ सिनूरक प्रसाधन पहिने क' लेने छलि।

एक बेर अपना आकृति कें फेर सँ अयना मे देखि संतुष्टिक भावें अपन रूप-छविपर अपने मुग्ध जकाँ भेलि घर सँ बहरा गेलि। गेटपरक ताला कें हिलाक' देखि लेलाक बाद आश्वस्तिक मुद्रा मे कनेक तेज चालि सँ सड़क धरि आबि रिक्शा ल' लेलक।

ई कार्यक्रम राँची अयबाक बाद सँ प्राय: प्रत्येक मास मे एक बेर एहि तरहें होइत छल, जहिया दरमाहाबला चेक ओकर स्वामी महेश भजबैत छलैक। महेश कें दरमाहा चेक मे भेटैत छलैक। चेक भेटलाक बाद दुनू प्राणी मिलि-जुलिक' मास भरिक आवश्यक वस्तु-जातक सूची बनबैत छल आ दोसर दिन महेश किछु पहिने औफिस सँ जाक' बैंक मे चेक भजबैत छल। अपराह्नक अंत होइत-होइत कमला तैयार भ' क' डेरा सँ रिक्सा द्वारा बैंक लग पहुँचैत छलि। प्राय: सभ दिन

महेश ठीक बैंकक गेट लगक गाछतर ठाढ़ प्रतीक्षारत भेटैत छलैक। कमलाक पहुँचिते महेश मुँह सँ सीटी बजाक' कमला केँ रिक्शा सँ उतारैत छल जेना कमला ओकर पत्नी नहि, कोनो कुमारि प्रेमिका हो।

कमला केँ महेशक ई आदति जेना नीक नहि लगैत हो तहिना कने कृत्रिम रोष देखबैत ओ बजैत छलि...'लोक की कहत?' आ सभ बेर महेश तकर बिनु कोनो परवाहि कयने, कि उत्तर देने, मुस्कुराइत विदा भ' जाइत छल। एहिना रशियन होस्टल लग आबि आ बस पकड़ि ओ दुनू गोटे अपने मे लीन, अपने मे तन्मय भेल धुर्वा सँ राँची अबैत छल। मेन रोडबला टैक्सी स्टैंडपर उतरि सभ सँ पहिने दुहू व्यक्ति धनबादबला मिठाइक दोकान मे जाइत छल। ओत' जलखै कयलाक बाद एक टा भजिआयल दोकान मे जाक' 'एस्प्रैसो काफी' पीबैत जाइत छल। तकर बाद सूचीक अनुसारें वस्तु-जात किनैत छल आ घुरती काल वस्तु-जातक कारणे टैक्सी क' धुर्वा-अपन डेरा पहुँचैत छल आ संगहि रस्ता भरि टैक्सी-रोमांसक लाभ सेहो उठबैत छल।

आरम्भ मे तँ कमला केँ ल' क' प्राय: प्रत्येक सप्ताह, पछाति पंद्रह दिनपर महेश एक टा ने एक टा पिक्चर अवश्य देखैत छल। सिनेमो देखबाक कार्यक्रम नियत छलैक। प्रत्येक शनि केँ कमला किछु सबेरे जलखै आदि बनाक' तैयार रहैत छलि। महेश ओहि दिन औफिस सँ सबेरे आबि जाइत छल। दुहू व्यक्ति जलखै क' धुर्वा सँ राँची अबैत छल। सिनेमाक बाद कोनो रेस्तराँ मे जाक' दुहू गोटे इच्छानुसार किछु खा लैत जाइत छल आ ओहि राति भानस-भात नहि क' दुहू व्यक्ति जल्दी सँ जल्दी डेरापर आबि उन्मद भावें सिनेमाक रंग-रसक अनुभूति-अनुकृति मे डूबि जाइत छल।

मुदा ई होइत छलैक बहुत पहिने, जखन मिन्नीक जन्म नहि भेल छलैक। तखन दुहू प्राणी एक दोसरा मे ततेक ने डूबल छल जे ने बहिर्जगत्क कोनो परवाहिये छलैक, ने तेसरक व्यवधाने छलैक आ ने एखनुका जकाँ आवश्यकताक सीमा-विस्तारे भेल छलैक।

कमला जँ कोनो सुन्नरि स्त्रीगण केँ देखिक' कहैत छलि जे-'देखियौ-देखियौ, ओकरा मुँहक 'काट' केहन विलक्षण छैक।' तँ महेश एकदम पण्डितक मुद्रा बनाक' कहैत छलैक—'हम पर-स्त्री दिस नहि तकैत छी। मातृवत् परदारेषु। हमरा अपने सुन्नरि ब'हुपर एक बखारी घमंड अछि। हमर ब'हु की कोनो कम अपूर्व सुंदरी अछि?'

आ कमला उपरका मोन सँ 'धुर जो' कहिक' पुलकित भ' उठैत छलि। जँ

कहियो महेश संयोगवश कोनो स्त्रीक साड़ीक, खोपाक, कि कोनो स्टाइलक सौंदर्य-वर्णन करैत छल तँ दोसरे दिन कमला ओकर पूर्ण अनुकृति क' महेश केँ विस्मित-विमुग्ध क' दैत छलि।

कमला केँ मोन पड़लैक जे एक दिन महेश केँ औफिस सँ अयबा मे बेसी विलंब भ' गेल छलैक तँ ओ रूसि रहलि छलि ओ बहुत खुशामदक बाद बौंसलि गेलि छलि। एहिना एक दिन शापिंग प्रोग्रामक मोताबिक कमला बैंक लग पहुँचलि छलि तँ देखलक जे महेश एक टा बेस स्मार्ट छौंड़ी सँ बड़े तन्मय भावें गप्प क' रहल छल। छौंड़ी 'वाटिक' डिजाइनक खूब कसल कमीज पहिरने छलि। कमीजक ऊपर मे मैचिंग ओढ़नी छलैक आ माथपर बेस पैघगर 'बुफा' जूड़ा छलैक। कोनो बातपर ओ छौंड़ी जोर सँ हँसिक' विदा भ' गेलि छलि आ तखन महेशक ध्यान कमला दिस गेल छलैक।

तकरा बाद सँ ओहि साँझुक सभ प्रोग्राम गड़बड़ा गेल छलैक आ डेरापर घुरलाक बाद कमला खूब हिचुकि-हिचुकि क' काननि छलि आ महेश केँ बड़े बौंस' पड़ल छलैक आ पछाति कमला केँ बुझना गेल छलैक जे ओ छौंड़ी महेशेक औफिस मे स्टेनो थिकैक आ ओकरा सँ एकटा दोसर व्यक्ति केँ छकयबाक योजना बनयबाक बातपर दुनू गोटे हँसल छल आ तखन बहुत कहला-सुनलाक बाद बड़ी राति मे जाक' कमलाक मानभंग भेल छलैक।

एहि तरहें कमला पहिने बड़ रूसैत छलि, मुदा आब से बात नहि छैक। आब तँ कमला मासक मास नहि रुसैत अछि। एमहर कतेक दिन सँ ओ नहि रूसलि अछि से आब मोनो नहि छैक कमला केँ। मिन्नीक जन्मक बाद सँ कमला मे जेना किछु बदलि गेलैक अछि से कमलो बूझैत अछि आ महेशो जनैत अछि। मिन्नी आबिक' ओकरालोकनिक स्नेहावेश केँ जेना पनिसोह बना देलकैक अछि। आब अपन साड़ी, साया, ब्लाउज आ स्नो-पाउडरक संग-संग मिन्नीक फ्राक, सलवार, पैंट, रीबन, खेलौना, बिस्कुट, टाफी आ बेबीफूड आदिक चिंता सेहो बढ़ि गेलैक अछि।

रिक्शापर जाइत कमला यैह सभ सोचि रहलि छलि कि सहसा कात मे बैसलि मिन्नी केँ कने आरो अपना लग सटा लेलक जेना मिन्नी खस'-खस' पर हो आ फेर मिन्नीक हाथ केँ अपना सँ पकड़िक' हठात् तेना क' दाबि देलकैक जे मिन्नी कानय लागलि।

तावत रिक्शा बैंक लग आबि गेल छलैक। रिक्शा सँ उतरैत-उतरैत कमला मिन्नी केँ चुप कर' लेल कोरा मे उठा लेलक आ रिक्शाबला केँ पाइ द' महेश

केँ ताक' लागलि। मिन्नी दुलार छिड़ियबैत बाजलि–'मम्मी, हम फुकना लेब।' 'अच्छा-अच्छा। डैडी औथुन तँ फुकना कीनि देथुन।' 'नहि। हम एखने लेब।' मिन्नी हाथ-पयर छिड़ियाब' लागलि।

अतीतक स्मृति सँ आविष्ट कमला महेशक अनुपस्थिति, संग मे पैसाक अभाव आ कि मिन्नीक जिद्दसँ, कहि नहि किएक, खौंझा उठलि। मिन्नीक बाँहि पकड़िक' आ झमारिक' ओ एक चाट मारलकैक आ अस्वाभाविक रूपें जोर सँ बाजलि– 'चोऽऽप, बदमास, फुकनाक बच्ची।'

मिन्नी ओहीठाम बैसिक' कानय लागलि। एक टा लाठी मे रंगबिरंगक फुकना बान्हिक' बेचैत एक व्यक्ति केँ किछु निम्न वर्गक धिया-पूता घेरने छलैक। ओकरा सभ केँ अपना दिस तकैत देखि कमला आरो तमसाक' बाजलि–'उठैत छेँ कि आरो मारबौ? ठाढ़ि हो। ठाढ़ि हो जल्दीसँ।'

तावत ओम्हर सँ महेश पहुँचल। 'ई की कम्मी? लोक की कहैत होयत जे ई केहन अशिष्ट परिवारक लोक थिक?' महेश मिन्नी केँ उठाक' गरदा झाड़' लागल। ओहिठाम सँ दुहू गोटे मिन्नीक आंगुर पकड़ने रशियन होस्टल लग आयल। कमलाक मन:स्थिति एहन नहि छलैक जे ओ महेश केँ विलंबक कैफियति पुछैत। आ, आब एतेक छोट-छोट बातक कोनो महत्त्वो नहि रहि गेल छलैक।

ओ सभ बसक प्रतीक्षा मे छल कि तावत राँची दिस सँ एकटा टैक्सी आबिक' आगाँ मे कनेक हटिक' ठाढ़ भेलैक। ड्राइभर बहराक' पछुलका सीटक फाटक खोललकैक। सभ सँ पहिने एक टा पुरुष तंग मोहरीबला बेस क्रीज कयल ग्रे कलरक सूट पहिरने बहरायल। नीचा उतरि ओ एक टा सुंदरी आधुनिका केँ बाँहि पकड़ि बड़े यत्न सँ गाड़ी सँ उतारलक।

सुच्चा गुलाबी रंगक जापानी जार्जेट आ ओही रंगक जापानी स्लीवलेस पहिरने जे नारी मूर्त्ति बहरायलि, तकरा ई सभ तेहन पोजिशन मे छल जे आगाँ सँ नहि देखि सकल। साँझुक पहर सड़कपरक यातायात किछु बढ़ि गेल छलैक। पर्स झुलबैत तथा एक विशेष तरहक चालि सँ जाइत ओहि स्त्रीक निर्लोम गरदनि आ बाँहिक गौर वर्ण आर्टिस्टिक वेशभूषा आ तरंगित गति देखिक' ई सभ एतबा धरि पाछाँ सँ अनुमान क' लेलक जे रमणी सौंदर्य-गर्विता अछि।

भीड़ यद्यपि बहुत नहि छलैक तथापि पुरुष बेर-बेर ओहि गुलाबी पीठक पाछाँ मे अपन बाँहि भिड़ाक' संरक्षण दैत जेना स्त्री केँ भीड़क धक्का सँ बचा रहल छल। आगाँ गेनिहारक नजरि ओकरे दुहू गोटेपर लागल छलैक।

कमला हठात् हड़बड़ा गेलि। जेना ओहि ठामक निरर्थकता आ मूल्य-हीनताक

हीनभावना सँ उबरबाक औनाहटि मे ओतय सँ तुरन्त हटि जयबा लेल व्यग्र भ' उठलि। ठीक तखने राँची गेनिहारसभक हेतु ओमहर सँ दुर्गा ट्रांसपोर्ट आबि गेलैक।

'देखि लेलिऐक कि ने ? अपना स्त्रीक हिफाजति कोना कयल जाइत छैक ?' स्मित मुद्रें बजैत कमला बसपर चढ़ि गेलि।

मिन्नी केँ उठाक' बस मे रखैत महेश सेहो मौनभावें फुर्ती सँ चढ़ि गेल। कमलाक बात केँ तत्काल ओ हड़बड़ी मे कोनो स्थान नहि देलक। बसपर चढ़लाक बाद महेश कमलाक कान लग झुकिक' बाजल—'हमरा लागल जे 'घी' शुद्ध 'नेनु'क नहि छल। वनस्पतिक फेंट बुझना गेल।'

'जे एकर व्यापार करैत अछि ताहि व्यापारी केँ एकर चीन्ह-पहिचान बेसी होइते छैक।' कमला कटाक्ष मिश्रित व्यंग्य कयलक।

'नहि, नहि। व्यापारी नहि। शुद्ध घी खयनिहार केँ डालडाक महके तुरंत बुझा जाइत छैक।'

'डालडाक स्वाद तँ चिखनहि बूझल जाइत छैक।' कने संकुचित सन होइत कमला फुसफुसा उठलि।

'से तँ रूपे-रंग देखिक' बुद्धिमान लोक बूझि जाइत अछि।' सतर्क जकाँ भेल महेश बाजल।

कमला कने काल चुप रहलाक बाद बाजलि—'अहाँ केँ डालडाक भ्रम कोना भेल ? की ओ पुरुष ओकर पति नहि छलैक ?'

'कहू, एतबो नहि बुझबैक ? कत' देखलिऐक अछि जे केयो नीक लोक अपन ब'हुक डाँड़-पीठ मे बाँहि सटाक' चलैत अछि ?'

'अहाँ तँ एहिना केवल किदन-कहाँदन सोचैत रहैत छी।' बाजलि तँ कमला रोषक बात, मुदा मुद्रा छलैक प्रच्छन्न हर्षक।

राँची मे ओहि दिन वस्तु-जात नहि कीनि सकल। धनबादबला मिठाइक दोकान मे पहुँचलाक बाद महेश कहलकैक जे 'आइ बैंक बंद छलैक, तें चेक नहि भजल।' कमलाक कने कुपित जकाँ होइत पुछलापर महेश बाजल जे—'अहाँ केँ धुर्वा मे तमसायलि देखिक' डरें नहि कहलहुँ जे आब अहाँ मिन्नीक बाद कहीं हमरे ने डाँट' लागी। दोसर बात जे एहि तरहें सजि-धजिक' जे आयलि छलहुँ तकर सार्थकतो तँ होमक चाही। तें राँची चल अयलहुँ। निरर्थक घुमबाक जे मौज होइत छैक, एक दिन सेहो उठाबक चाही कि ने ?'

कमला एकरा अपन प्रति पतिक अनुराग बूझि प्रसन्न भ' उठलि। बाजलि 'अनेरे ई खर्च भ' गेल कि ने ?'

'की करबै, एक दिन ऐश-मौजे सही।' किछु बेपरवाह जकाँ बाजिक' महेश कमला दिस साकांक्ष दृष्टियें देखैत मिठाइक आर्डर द' देलकैक।

एहि तरहें मेन रोड मे घूमि घामि किछु छोट-मोट वस्तु कीनिक' दुहू व्यक्ति बलराम बस पकड़ि धुर्वा घुरि आयल।

बस सँ उतरलापर देखलक जे ओही बस सँ जयबा लेल ओ लाल साड़ी बाली स्त्री ब्राउन रंगक सूट पहिरने एक टा दोसर पुरुषक संग जगन्नाथ मंदिर दिस सँ आयल रिक्शा सँ उतरि रहलि छलि। लग अयलापर देखलक जे ओ ए. जी औफिसक एक टा एसिसटेंट एकाउंट औफीसर मिस्टर चौपालक पत्नी मिसेज उर्वशी चौपाल छथि जे एखन एक टा गुजराती ठीकेदारक संग जगन्नाथ मंदिर दिस सँ आबि रहलि छलि। किछुए दिन पहिने कमला केँ मिसेज चौपालक परिचय भेल छलैक। ओकरा बूझल छलैक जे मिसेज चौपाल निस्संतान अछि। कहाँदन चौपाले साहेब केँ डाक्टर दोषपूर्ण कहने छलनि आ संतानक हेतु मिसेज चौपाल बहुत झाड़-फूक, यंत्र-मंत्र, पाठ-पुरश्चरण करौने छलि आ आब प्रायः ओही उद्देश्यक सिद्धि लेल मातृत्वक भूखलि बेचारी छिछिआयलि फिरैत अछि।

अकस्मात् कमला मिन्नी केँ महेशक कोरा सँ छीनि जकाँ लेलक आ अपना कोर मे ल' क' नीक जकाँ देह मे सटा लेलक। महेश हँसिक' कमलाक पीठ दिस सँ डाँड़-पर बाँहि सटाक' चल' लागल। जेना अन्हार भ' जयबाक कारणे महेश एहि ऐशक आनंद उठब' लागल।

किछु दूर चललाक बाद कमला महेशक बाँहि केँ स्ट्रीट लाइनक बल्बबला खाम्ह लग अबिते जोर सँ हटाक' पृथक् क' देलकैक।

'की बात थिकैक?' महेश पुछलकैक।

'अहाँक कपार। बात की रहतैक? नीक लोक कतहु अपना ब'हुक डाँड़ पीठपर बाँहि सटाक' चलैत अछि? लोक देखत तँ की बूझत?' कमला बाजलि आ कनडेरिये पति दिस देखैत एक टा तृप्ति-बोधक मुस्कुराहटि सँ जेना परिपूर्ण भ' उठलि।

मिथिला मिहिर : 17 सितंबर 1967

इंटरभ्यू

कथा सँ पहिने कथाक शीर्षकक प्रसंग हम कथा कहि देब' चाहैत छी। हमरा मोन छल जे हम एहि कथा केँ खाहे तँ लिखबे नहि करब आ जँ लिखबो करब तँ एहि रूप मे नहि, जाहि रूप मे ई अछि। आ ई शीर्षक तँ किन्नहु नहि होइत। जँ से अनिवार्य भ' जाइत तँ 'इंटरभ्यू'क भाषान्तर थिकैक 'अंतर्वीक्षा'। सैह एकर शीर्षक दितिऐक, मुदा हमरा अपना एक यथार्थ पात्रक ई शब्द बड़ी काल धरि अनुगुंज जकाँ मन-मस्तिष्क मे औनाइत रहल आ तें बाध्य भ' क' ई शीर्षक राख' पड़ल। हुनक शब्द पछाति कहब, पहिने अहूँ आउ, ओहि पात्र सँ भेंट क' लिय'।

हिनक नाम थिकनि रतीशजी। कवि छलाह, आब नहि छथि, जे छथि, से बुझिये जायब। मुख्यत: हिनके सँ भेंट करबाक हेतु मानसिक चिकित्सालय, काँकेक उपाधीक्षक श्री झाजीक अभिस्ताव सँ अधीक्षक डाक्टर के. भास्करण सँ आधिकारिक अनुमति लेल। पहिने ई कौनोली वार्ड मे रहैत छलाह मुदा एही भेंटक प्रसंग पता लागल जे एखन ई रीहैबिलिटेशन वार्ड मे जे क्रॉनिक वार्डक नाम सँ प्रसिद्ध अछि, रहैत छथि। हमर परिचित आ अपेक्षित व्यक्ति। बहुत दिन संगे-संगे रहलहुँ, पढ़लहुँ आ नोकरी कयलहुँ। रतीशजी पिताक मृत्युक बाद पित्तीक अभिभावकत्व मे शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कयलनि। पित्ती जाधरि निस्संतान रहथिन ताधरि तँ यैह एकमात्र वंश-स्तंभ रहथिन मुदा पछाति से बात नहि रहल।

पत्नीक मृत्युक बाद जखन हिनक पिता दोसर विवाह कयलथिन, तखन ई पटना मे एम. एड. क' रहल छलाह। पित्ती छलथिन एकटा सनगर ओकील। कानूनक दाओ पेंचक विशेषज्ञ। से एही विवाह सँ रतीशक दुर्भाग्यक जन्म भेलनि। ओ कन्या संयोगिता, जकरा सँ ओकील साहेबक द्वितीय विवाह भेलनि, एकटा मामूली शिक्षकक पुत्री छलि जे पटने मे बड़े कठिनता सँ डिप. इन. एड्. क ट्रेनिंग ल' रहलि छलि। रतीश सँ संयोगात् संयोगिता केँ बड़ संपर्क छलैक। रतीशक कवि-हृदय मे मास्टर साहेबक आर्थिक विपन्नता आ संयोगिताक महत्त्वाकांक्षा घर क' लेने छल। अनेक प्रसंग मे संयोगिता अपन सुख-दुख रतीश लग निवेदित

कयने छलि। रतीशक सहानुभूतिक अनेक अर्थ लगाक' सहपाठी सभ घोल-फचक्का मचौने छलनि आ संयोगिताक सखी-बहिनपा सभ सेहो कतेको संभव-असंभव गप्प दुहू व्यक्तिक प्रसंग बिलहने छलि।

सभ केँ विश्वास छलैक जे शीघ्रे दुहू गोटे दम्पतिक रूप मे परिणत भ' जयताह। रतीश मुदा हमरा कहियो फड़िछाक' नहि कहने छलाह जे ओ की नेआरने छथि। ओम्हर काटरक जोगार करबा मे असमर्थ, सभ तरहें असोथकित मास्टर साहेब केँ जखने ओकील साहेबक दोसर विवाहक वार्त्ता भेटलनि कि बेटीक सुख-सौभाग्यक कामना सँ ओहि कथा मे भिड़ि गेलाह। कनेके दौड़-बरहाक बाद कथा पटि गेलनि। ई समाचार सुनिते संयोगिता सहसा पटना सँ चल गेलि। तावत ट्रेनिंग सेहो समाप्त भ' गेल छलैक। संयोगिताक मनोभावक पता तँ नहि अछि, मुदा रतीशक मन:स्थिति अव्यवस्थित भ' उठलनि। उन्मादक पहिल आक्रमण ओही दिन मे रतीश केँ भेल छलनि जे पटने मे चिकित्सा करओलाक बाद शांत भ' गेल छलनि। निकेँ भेलाक बाद एक दिन साहित्यिक गप्पक प्रसंग ओ हमरा कहने छलाह जे—'केवल मने पूर्ण जीवन नहि थिक। मन, बुद्धि, चित्त, देह एवं आत्मा एहि सभ केँ मिलाक' जीवन, मने पूर्ण जीवन कहबैत अछि तें हमरा साहित्य मे जे केवल मनोविश्लेषण मात्र मुख्यत: आच्छादित रहैत छल से आब नहि रहत। ई पूर्ण जीवन नहि थिक, तें पूर्ण सत्यो नहि भ' सकैछ। एतबाधरि अवश्य जे जीवन-गतिक एक विराट शक्ति ई मन थिक, मुदा मनुष्य केवल मनेक अधीन नहि रहि सकैछ। ओकरा आनो-आन आवश्यकता संचालित-प्रभावित करैत छैक। आ तें...तें संयोगिताक एहि मे कोनो दोष नहि छैक।' कहैत-कहैत हठात् चुप्प भ' गेलाह जेना एकाएक स्विच आफ क' देलापर विद्युत्-प्रवाह कटि जाइत छैक। साहित्यक चर्चा मे संयोगिताक एहि क्षेपक सँ हमरा ओही दिन बुझना गेल छल जे हिनका लेल संयोगिता धूमकेतु बनिक' जीवन मे अयलनि अछि।

सैह भेलनि। जेना-तेना एम. एड्. कयलाक बाद सरकारी सेवा मे (शिक्षा विभाग मे) नियुक्त भेलाह। सूत्र रूप मे ओहि दिन कहल गेल बात हिनका साहित्य मे साकार होब' लागल। मनोविश्लेषणक संगे ई देह-गाथा दिस प्रवृत्त भेलाह। साहित्य जगत मे हिनक एकटा पृथक जीवन-दर्शन छल। व्यक्तिगतो जीवन मे ई बड़ ओझरायल आ विवादास्पद होब' लगलाह। विवाह नहि कयलनि आ तकरा बाद सँ कहियो गाम नहि गेलाह। पिता छलथिने नहि, बूढ़ि माय बेटा-बेटा करैत फकड़ि क' प्राण त्याग कयलथिन तँ ई आरो स्वच्छंद भ' गेलाह। कतेक प्रकारक अपवाद सभ सुनबा मे आयल। कहियो सुनल जे कोनो पंजाबिन सँ विवाह क' रहल छथि तँ कहियो कोनो महाराष्ट्री परिवारक जमाय बन' पड़ि रहल छनि, से

सुनल। चाइबासा मे छलाह तँ सुनलहुँ जे कोनो एंग्लो इंडियन सँ विवाह क' इसाई भ' रहल छथि। रमणी तँ बहुत भेटलनि मुदा पत्नी नहि आ एही अभाव-अभियोग मे ओतहि उन्मादक दोसर दौरा भेलनि। ताधरि पित्ती केँ तीन टा बेटा आ एक टा बेटी भ' गेल छलनि। वंशधरक कोनो चिन्ता नहि रहलनि आ पित्ती, ओकील साहेब कानूनक जुआयल पहलमान छलाह से ओ तेहन ने दाओ मारलथिन जे रतीशक स्थान आजीवन सुरक्षित भ' गेलनि मानसिक चिकित्सालय काँके मे। सरकारी सेवा मे संलग्न व्यक्तिक सुविधा उठाक' नाम मात्र खर्च देला सँ (प्रायः पचास टाका मासिक) ई काज ओकील साहेब बड़े चतुरता ओ तत्परता सँ सुतारि लेलनि। रतीशक मंत्र भ' गेल—'संयोगिताक एहि मे कोनो दोष नहि।' जखन-तखन ओ एही वाक्यक जप करैत रहथि।

ओना हुनका सँ कइ-एक खेप हम आओरो भेंट कयने छलियनि। एहू 'इंटरभ्यू' सँ पहिने ओ कौनोली वार्ड मे रहैत छलाह से कहनहि छी। मानसिक चिकित्सालय मे हमरा किछु सुविधा अछि तें भेंट करबा मे कहियो बेसी झंझटि नहि भेल छल मुदा आब जे बदलिक' क्रौनिक वार्ड मे चल अयलाह अछि से चिकित्सालयक घेरलहा परिधि सँ बहार एकटा पृथक् वार्ड थिक। तें औपचारिक रूप मे अनुमति प्राप्त कर' पड़ल।

हम जखन हुनका सँ भेंट कर' गेल छलहुँ तखन दिनुका आठ बजैत छलैक। खोज-पुछारि कयलापर पता लागल जे एखनधरि सुतले छथि। हम मुदा भीतर ढुकि गेल छलहुँ, तें भेल जे कनेक काल बिलमिक' हुनक उठबाक प्रतीक्षा करबाक चाही। हमरा देखिते एकटा व्यक्ति हड़बड़ायल जकाँ हमरा लग अयलाह। हिनक नाम भेलनि प्रथम पात्र।

प्रथम पात्र हमरा लग आबिक' थोड़ेक काल नीचा सँ ऊपर धरि बड़े गम्भीरता सँ हमर निरीक्षण कयलनि। थोड़े कालक बाद खूब जोर सँ ठहाका मारिक' हँस' लगलाह। कनेक काल फेर मूक निरीक्षण कयलाक बाद कल जोड़िक' बजलाह—'आजई एशे छेन की? आशुन, आशुन। आमी आपनाके स्वागोत जानाय।' (आइये अयलहुँ अछि की? आउ-आउ। हम अहाँक स्वागत करैत छी।)

हम निषेधात्मक संकेत मे मूड़ी डोलौलहुँ तँ ओ पुछलनि—'आपनी बेंगाली होच्छेन ना की हिंदोस्थानी?' अहाँ बंगाली छी की आन? (अनका सभ केँ बंगाली हिंदुस्तानी कहैत छैक जेना अपने ओ हिंदुस्तानी नहि हो।) हम प्रतिनमस्कार करैत कहलियनि-'आमी हिंदुस्थानी मोशाय, आमी मैथिल।' ई सुनिते ओ हर्ष सँ भरि जकाँ गेलाह। जेना हम हुनक अपन लोक होइयनि, बड़े प्रेम सँ बहुत किछु कहलनि। सारांश जे 'बंधुवर, हम यक्ष छी। एम्हर किछु दिन सँ निर्वासित भ' क' रामगिरि

मे रहि रहल छी। हमर प्रिया प्रियदर्शिनी अलका मे छथि। ओत' इंद्रक संगे विहार क' रहल छथि। अहाँ तँ थर्मल पावर स्टेशन बोकारोक नाम अवश्य सुनने होयब? ओही बोकारो मे ओ मिस्टर दासगुप्ता नहि अछि? सैह हमर बॉस थिक, हमर मालिक। अलका ओकरा पैलेसक नाम थिकैक ओ तकरे इंद्र थिक। हम तें प्रिया केँ प्रोमोशन लेल कहय लेल कहने छलिऐक मुदा हमर स्त्री हमरा उनटे निर्वासित करा देलक। अपन गरीब स्वामी केँ अलकाक सुख मे मस्त भ' रामगिरि मे पठा देलक। मुदा ओ खाँटी पतिव्रता अछि। मासे-मासे खर्चा पठा दैत अछि। मुदा हम विरही छी। आ अहीं मेघ छी। दूत छी। हमर समाद कहि देबैक।' आ ओ मेघ दिस तकैत पढ़' लगलाह—'संतप्रप्तात्नां त्वमसि शरणं तत् पयोद प्रिय या: । संदेशं मे हर धनपति क्रोधविश्लेषितस्य।'...आदि-आदि। पता लागल जे एहि प्रथम पात्र केँ जखन दौरा अबैत छनि तखन एहिना काव्यमय भ' उठैत छथि। पढ़ैत-पढ़ैत ओ टरि गेलाह।

हम कनेके अवकाश पओलहुँ कि तावत् द्वितीय पात्र जे नमछोर सनक गौर वर्णक एकटा मराठी सज्जन छलाह, लग आबिक' कहलनि-'हल्लो मिस्टर, कम ऑन...कम ऑन। ह्वेयर डू यू कम फ्रॉम?' (आयल जाओ, आयल जाओ। अहाँ कत' सँ आबि रहल छी?) हम कहलियनि—'हम एतहि रहैत छी।' ओ बड़े उदास स्वर मे बजलाह-'आर यू आलसो चाइल्डलेस?' (की अहूँ निस्संतान छी?) हम अन्यमनस्क जकाँ भेल रतीशजीक प्रतीक्षा मे दोसर दिस ताक' लगलहुँ तँ अपने हमरा सुना-सुना क' बड़बड़ाय लगलाह—'आइ आस्क, ह्वाटिज आवर फाउल्ट इन दिस?' (हम पूछै' छी, एहि मे हमरा लोकनिक कोन दोष अछि?) हमरा साकांक्ष नहि देखि बड़े हताश आ विषण्ण स्वर मे ओ जे सभ कहलनि तकर आशय जे—'हमर जेठ भाइ गुंडा अछि। ओकरा अवश्य एरेस्ट करा देबाक चाही। हमर स्त्रियो छुतहरि अछि। संतान नहि भेलैक तँ हमर कोन दोष? हमरा भाइ केँ मारते रास बेटा-बेटी छैक, तें की सभ मौगी ओकरे बहु भ' जयतैक? हम स्वयं वीर्यवान छी, शक्तिशाली छी। भाइ केँ हम दोष की दियौक? हमर पत्निये कुलटा अछि।' आ तकरा बाद गारि पढ़ैत ओ अपना कोठली मे ढुकि गेलाह।

ओ जाइते छलाह कि तावत तेसर महापुरुष हमरा लग मोंछ पिजबैत अयलाह आ हिंदीक टाँग तोड़ैत गमारू भाषा मे बाजल लगलाह—'नेहरूजी मरि गेलाह मुदा ओ लालबहादुर शास्त्री केँ कंठ पकड़िक' राजगादी लग डिल्ली मे पहुँचा देने रहथिन तें हम चुप रहि गेलहुँ। हम की आइ-काल्हुक दलबदलू नेता छी? हम तँ सिद्धांतवादी छी। हमरालोकनि राजनीति केँ कहियो उद्योग क' कय नहि मानलहुँ। राजनीति केँ लगहरि गाय नहि लोक सेवाक वस्तु मानलहुँ। लालबहादुर शास्त्रीक

बाद हमहीं प्रधानमंत्री बन' लेल छलहुँ, मुदा नेहरूजीक पुत्री इंदिराजी जखन प्रधानमंत्री बन' चाहलनि तँ फेर हम चुप्प भ' गेलहुँ। हुनका सँ चुनाव युद्ध करब हमरा नहि सोहायल। मुदा आब तँ किन्हु नहि मानबनि। आब हमहीं एक मात्र सर्वोच्च कैन्डीडेट छी। हिंदुस्तानक के कहय, पाकिस्तानो मे हमर धाख अछि। पाकिस्तान मे तँ अयूब मियाँ केँ निस्संदेह हम हरा देबनि। राजनीति तँ हमर धाँगल थिक। बड़की बियाहने छोटकी सारि। ओ गुंडबा मुखियाक चुनाव मे जे हमरा हरा देलक से तँ ट्रिक्स रहैक। हम तँ एम. एल. ए. लेल ठाढ़ भ' सकै छी। चाही तँ एम. पी. लेल सेहो। मुदा एम. पी. बनब तँ डिल्ली मे हेरा जायब। केयो जनबो नहि करत आ एम. एल. ए. बनब तँ मिनिस्टरे भ' जायब। टिकट नहि देत से नहि भ' सकैत अछि। सभ दिन कंगरेसिये रहलहुँ। टिकट नहि देत तँ चट द' सोसलिस्ट, जनसंघी नहि तँ कौमनिस्टे बनि जयबनि। हमरा की? जखन बड़का-बड़का लीडर गादी लेल पाटी बदलि लैत छथि तँ हमरा के की कहत?' आ नमहर-नमहर डेग दैत ओ घूर बहोर कर' लगलाह।

चारिम पात्र उपरौंझ करैत सन हमरा लग आबिक' स्वीकारात्मक मुद्रा मे अनेरे नहूँ-नहूँ मूड़ी डोलबय लगलाह। बेस प्रतिष्ठित अधवयसू व्यक्ति। धोती, कुर्त्ता, ऊपर सँ चौपेतल एकटा तौनी। दाढ़ी-मोंछ साफ। भव्य ललाटपर एकटा पैघ सनक माँस वृद्धि। वेश-भूषा सँ ई उत्तर प्रदेशक रहनिहार बुझयलाह। मंद-मंद स्वर मे गरा जाँतिक' फुसफुसाइत जकाँ बजलाह 'आखिर आप आ ही गये न? मैं तो जानता ही था।' आ ओ तेना हँसय लगलाह जे भेल जेना हिचुकि-हिचुकि क' कनैत होथि। कनेक कालक बाद जे बजलाह तकर सारांश छल जे-'हम अंतर्जातीय विवाहक पक्ष मे छी से कने हमरा बेटी केँ कहि देबैक। हम तिलक-दहेजक ओरिआओन नहि क' सकैत छी तें की हमर बेटी अविवाहिते रहत? नहि-नहि। ओकरा कहि देबैक जे ओ अंतर्जातीय विवाह क' सकैत अछि। ओ कालेज मे पढ़ैत अछि। सभ किछु नीक-अधलाह बुझैत अछि। ओ की मामूली लोकक बेटी थिक? काशीक पंडित चंद्रमोहन दीक्षित केँ के नहि जनैछ? आइ दिन घटि गेला पर ओ पागलखाना मे पड़ल अछि, मुदा कहियो ओकरा दरबज्जापर हाथी झूमैत छलैक। आ तकर बेटी अविवाहिता-अंतर्जातीय विवाह...दशाश्वमेघ घाट मे डूबि गेलि...? नहि-नहि। ओ जीवित अछि। एखने खिड़की लग ठाढ़ि छलि। विश्वनाथ...विश्वनाथ ते हि नो दिवसा गताः। हमर बेटी दमयन्ती...।' आ ओ पहिने जकाँ हँसैत-कनैत चुप्प भ' गेलाह। कने काल ठाढ़ रहलाह आ नहूँ-नहूँ एक दिस सहटि गेलाह।

हम ओम्हर तकिते छलहुँ कि एकटा आन व्यक्ति हाथ मे बालटी लेने हमरा

दिस अयलाह। ई पाँचम पात्र छलाह एकटा दक्षिण भारतीय। सहसा हमरा लग आबिक' ठाढ़ भ' गेलाह आ हमरा सँ बेस आपकता देखबैत पूछ' लगलाह-'ताँग, गल अतयवक्ति अल्ले, यन्ड्रे कुड़ विशाखापट्टनत्त पड़िचिरनद।' (अहाँ तँ वैह छी ने जे हमरा संग विशाखापट्टनम् मे पढ़ैत छलहुँ?)

हम हुनका मुँह दिस ताकय लगलहुँ। ओ कनेक अप्रसन्न जकाँ होइत कहय लगलाह-'इविडे इंदुक बन्नू? इविडे ताँगगलुके आवश्यम इल्ला। इविडे मरुनाटुकार वारुन्नद येनिके इस्टम अल्ला।' (एतय किएक अयलहुँ? एतय अहाँक हेतु जगह नहि अछि। हम नहि चाहैत छी जे एतय केयो आबय।)

हमरा बकर-बकर मौन भावें अपना दिस तकैत देखि जखन ओ बूझि गेलाह जे ई विशाखापत्तनम् बला हमर सहपाठी नहि, केयो आन व्यक्ति थिकाह, तखन मलयालम बाजब छोड़ि काज चलाउ हिंदी मे जे बाज' लगलाह तकर सारांश भेल-'अनेरे एतेक पढ़लहुँ। मूर्ख रहितहुँ तँ नारियरक डोरियो बाँटिक' गुजर करितहुँ। पढ़ि-लिखिक' चौपट्ट भ' गेलहुँ। हम कोनो मिनिस्टरक बेटा-भातिज, भागिन वा सरबेटा नहि छी आ ने कोनो आफिसरक सार वा भाइये बंधु छी जे हमरा नोकरी भेटत। ई दक्षिण भारत आ उत्तर भारतबला 'फीलिंग' सेहो हमरा लाभ नहि द' सकल। की करू? सभक मनोरथ टूटि गेलैक। माय, बाप, बहीनि, भाय, स्त्री, धीया-पूता, सभ हमरे खाय लेल मुँह बौने अछि। हम की करू? की देबैक खाइ लेल?' आ ओ बालटी पटकि क' भयभीत जकाँ निच्छोह पड़ा गेलाह।

हम रतीशजीक प्रतीक्षा करैत उकस-पाकस क' रहल छलहुँ कि हनहना क' एकटा सरदारजी आगाँ मे ठाढ़ भ' गेलाह। टकुआतान भेल कड़कि क' कहलनि-'यार? कित्थे देर कर दित्ती? मैं तेनू ई उड़ीक रहया सा।' (यार, अहाँ कतय विलंब क' देलिऐक? हम तँ अहींक बाट तकैत छलहुँ।)

ई कहैत-कहैत ओ तुरत पैंतरा बदलिक' आँखि लाल क' लेलनि आ मुँह केँ विकृत बनबैत कहलनि-'तुसी मेरे पेओनू जाणदाँ? मैं ओणादे णाल घिन कर दायाँ।' (अहाँ हमरा बाप केँ जनै छी? हम ओकरा सँ घृणा करैत छी।)

फेर चट द' पैतरा बदललनि आ बरकैत स्वर मे बड़बड़ाइत विदा भेलाह जे—'स्साला, कायर छल। हमरा बहीनि केँ दुश्मन सभ बेइज्जति क' देलक। मायक दुनू हाथ काटि लेलक, हमरा स्त्रीक संग घोर अत्याचार कयलक, घर मे आगि लगा देलक, सभ किछु लूटि-पाटि लेलक, मुदा हमर बाप अपन जान बचाक' भागि गेल। हम तँ छलहुँए नहि। नहि तँ दुश्मन सँ पहिने हम अपना बाप केँ गोली मारि देतिऐक।' आ तुरंत ओ गोली मारबाक मुद्रा मे सन्नद्ध भ' गेलाह।

आब हम अगुता गेल छलहुँ। जयबाक इच्छा करिते छलहुँ कि देखलहुँ जे

रतीशजी अपना स्थान सँ हमरा दिस आबि रहल छथि। हमरा देखिते ओ दौड़िक' हमरा सँ लपटि गेलाह। कहलनि—'अहीं एकटा एहन बंधु छी जे हमर खोज-पुछारि करैत छी। एहिठाम सभक इंटरभ्यू लेल लोक सभ अबैत रहैत छैक। हमरा तँ ने केओ कहियो देख' अयलाह आ ने संयोगिते कहियो साधारणो औपचारिक 'विजिट' वा इंटरभ्यू लेब' आयलि।...अँय औ, जँ सरिपहुँ संयोगिता हमर इंटरभ्यू लेब' आबय तँ हम की करबैक?...ओ आब संयोगिता नहि, हमर काकी थिक।...कनेक नीक जकाँ विचारिक' कहू।...मुदा हम, संयोगिता केँ खून क' देबैक। आ कि नहि? ओ के थिक हमर इंटरभ्यू लेनिहारि?'

हठात् चुप्प भ' गेलाह। कने कालक बाद बजलाह—'हमर इंटरभ्यू केयो किएक लेत? एहि सँ ओकरा की लाभ होयतैक?' एकाएक हमरा पकड़िक' बड़े अनुनयक स्वर मे कहलनि-'मुदा अहाँ तँ इंटरभ्यूपर कथा लिखि सकै छी। लिखब कथा?...लिखू ने?...कहुना लोक तँ बूझि जायत कि ने जे संयोगिता केहन छलि?...लोक नहि तँ कम सँ कम ओ धरि तँ बूझत जे ओ केहन अछि। हे, गोड़ लगै छी। अहाँ एहि इंटरभ्यूपर कथा अवश्य लिखू। अहाँ केँ हमर सप्पत।...मुदा संयोगिताक एहि मे कोनो दोष नहि छैक।' कहैत-कहैत ओ हठात् ओहिना चुप भ' गेलाह जेना एकाएक स्विच आफ क' देलापर विद्युत्-प्रवाह कटि जाइत छैक। आ तखन शिथिल जकाँ भेल ओ कान' लगलाह। हमरो आँखि डबडबा गेल। भेल जे रतीश जीक अनुरोध केँ नहि टारल होयत। आ तें 'इंटरभ्यू' एनमेन एही रूप मे प्रस्तुत कयलहुँ अछि।

मिथिला मिहिर : 15 सितंबर 1968

आत्मदंशक वेदना

ओ पंखा केँ फूल स्पीडपर क' बैसि गेल। सीलिंग पंखाक गति खूब तेज भ' गेलैक जेना एखन ओकरा हृदयक गति तेज भ' उठल छलैक। कोठली मे टाँगल कैलेंडर सभ फड़फड़ाक' अपना अस्तित्व मौन केँ ध्वनि देब' लगलैक। मेज परक प्लास्टिक बला मेजपोश उधिया रहल छलैक आ कागत-पत्र सभ तीव्र बसातक आवेग मे पेपरवेटक नियंत्रण सँ विद्रोह कर' लागल छलैक। पंखाक घों-घों तेज भ' क' कोठली केँ शब्द सँ भर' लगलैक।

मुदा ओ बाहरक कोनो क्रिया सँ आंदोलित नहि भ' रहल छल। बहार सँ निश्चेष्ट, निष्क्रिय आ उपराम, मुदा भीतर सँ खदकैत-बरकैत ओ तेना भ' क' कुर्सीपर बैसल छल जेना ओ कुर्सीपर नहि हो, कोनो पोखरिक तल भाग मे डूबल पाथर सँ बन्हायल कोनो नृशंस हत्याकाण्डक लहाश हो। सत्ते ओ डूबि रहल छल...डूबल जा रहल छल। ओकर डुबबो तेहन नहि छलैक जे ककरो तकर भान भ' सकितैक। ने ऊपर मे कम्पन, ने पानिक करेजपर बुन-बुन्नी आ ने वायुमण्डल मे गुड़गुड़ाइत कोनो सूचना मूलक ध्वनि। एकदम शब्दहीन स्पंदन आ कंपनहीन डूबब।

कनेक कालक बाद जेना पाथर सँ बान्हल लहाशक बन्हन ससरि गेल हो आ ओ ऊपर अलग' लागल हो, तहिना ओकर चेतना सजग होब' लगलैक आ एक-एक टा घटना ओकरा सोझाँ मे रूपायित होब' लगलैक।

ओ उठल आ सुराही सँ ढारि घट-घट क' एक गिलास पानी पीबि गेल। कमीजक अगिला अधोभाग सँ मुँह पोछैत-पोछैत सहसा ओकरा रूमालक सोह भेलैक। ओ हात्रि-हात्रि जेबी सँ रूमाल बहार कयलक आ एक बेर रूमाल केँ दुनू हाथपर पसारि क' ओकरा अपना मुँहपर ल' लेलक जेना ओ रूमाल नहि कोनो 'बाम' हो-कोनो लेप हो जकरा ओ अपना आँखि, नाक, गाल, ललाटपर लगाक' शीतलताक अनुभव कर' चाहैत हो...कोनो दर्द, कोनो टीस केँ हटब' चाहैत हो।

ओ अपना दुनू जाँघपर रूमाल केँ पसारि लेलक जकरा एक कोनपर ललका ताग सँ एक टा वृत्त आ वृत्तक बीच मे एक टा अक्षर 'म' काढ़ल छलैक।

'म' माने महालक्ष्मी। 'म' माने माया, मोह, ममता, मधु आ माहुर। ओकरा भेलैक जे जँ सरिपहुँ कतहु माहुर भेटैत तँ बड़ नीक होइत आ ओ कोठली मे चारूकात नजरि खिरब' लागल। कतहु ओकर नजरि नहि अटकलैक, कतहु माहुर नहि भेटलैक।

ओकरा एक-एक टा बात मोन पड़' लगलैक जे कोना एक दिन ओकरा अपना जेठ भाइक पत्र भेटल छलैक जे 'हम छुट्टी ल' क' अहाँक भौजीक चिकित्सार्थ हुनका संग कयने काशी आबि रहल छी। अहाँ नीलकंठ मंदिर जाक' ओहि ठामक पुजेगरी श्री देवकांत मिश्रजीक भेंट करू। अपने इलाकाक लोक छथि। पत्र देने छियनि। डेराक ओरिआओन क' देताह। मंदिरो मे रहि सकैत छी। ओत' सँ श्री ब्रजमोहन दीक्षित वैद्यजीक औषधालय सेहो समीप रहत। हुनके सँ चिकित्सा करयबाक अछि। सभ ठीक-ठाक क' हमरा सूचित करू।'

आ ओ पत्र पबिते नीलकंठ गेल छल। पुजेगरी गाम गेल छलाह। हुनक बालक कृपाशंकर अपन रह'बला मुख्य कोठली खाली क' देबाक आश्वासन देलथिन। होस्टल आबि तुरत भैया केँ सूचित कयलक। पाँचे-सात दिनक बाद रुग्णा बनलि भौजी केँ ल' क' भैया आबि गेलथिन। ओ बड़े तत्परता सँ प्रयाग पैसेंजरक पहुँचबाक टाइम मे छोटी लाइनक 'काशी' स्टेशन पहुँचि गेल छल। ओत' सँ सभ गोटे सोझे नीलकंठ मंदिर अबैत गेल छल। नीलकंठ मंदिर मे आरो सभ साधारण सुविधा छलैक केवल बिजलीक अभाव छलैक। मंदिरक ऊपर मे बिजली छलैक मुदा पुजेगरीबला कोठली मे नहि। ओ एकरा मामूली असुविधा नहि बुझैत छल आ तें ओत' सँ कतहु आन ठाम डेराक प्रबंध करबाक हठ कयने छल। ओकर भैया आ भौजी एहि लेल कोनो विशेष उत्सुक नहि छलथिन। ओ लोकनि कोठली मे वस्तुजात सरिया क' रखबा मे संलग्न छलाह कि तावत बगलबला कोठली मे रहनिहार एक टा अपरिचित व्यक्ति ओत' आबि ओकरा भैया सँ परिचयपात पूछ' लगलथिन। भैया अपन परिचय देलाक बाद ओकरा सम्बन्ध मे कहने छलथिन जे ई हमर छोट भाइ थिकाह। एत' हिंदू विश्वविद्यालय मे पढ़ैत छथि। होस्टल मे रहैत छथि मुदा आब किछु दिन अपना भौजीक संग रह' पड़तनि कि सहसा ओकर नजरि एक टा कन्यापर पड़ल छलैक। ओ देखलक जे कन्या बड़े तन्मयता सँ ओकरे दिस ताकि रहल छलैक। ओकरा सम्बन्ध मे ई सूचना पाबि जे ओ पढ़ैत अछि आ किछु दिन एतहि रहत, जेना ओहि कन्या केँ बड़ आनंद भेल छलैक। ओकरा पैघ-पैघ आँखि

मे जेना कोना इजोत चमकि उठल हो तहिना बुझयलैक। आ ओ हठात् चुप भ' गेल। चुप भ' गेल जेना बिजलीक अभावक असुविधा खतम भ' गेल हो।

पूजावकाशक कारणे विश्वविद्यालय बंद भ' रहल छलैक ते भौजीक एटेंडेंट बनिक' नीलकंठ रहबा मे ओकरा कोनो असौकर्य नहि भेल छलैक। भैयाक चिकित्सादिक व्यवस्थाक बाद चल गेलापर ओकरा पुरुष सत्ताक अभिभावकत्व पाबि अधिकारक संग स्वतंत्रताक उपभोग सेहो नीक लागल छलैक। भैया जखन छलथिने, तखने परिचय-पातक क्रम मे बगलबला कोठली मे रहनिहार ओहि दोसर परिवारक अभिज्ञान ओकरा भ' गेल छलैक। ई परिवार ओकरालोकनि सँ पहिनहि एत' आयल छल। परिवार मे एक टा बूढ़ी छलथिन जे काशीलाभक हेतु आनल गेल छलीह। संग मे जेठका बेटा। नाम छलनि इंद्रनाथ। भानसभात कर' लेल इंद्रनाथ जीक विधवा बहीनि संग मे छलथिन आ ओही बहीनिक बेटी मने इंद्रनाथ जीक भगिनी महालक्ष्मी। महालक्ष्मी माने महासुंदरी...गौरवर्ण, सौम्य, आकर्षक आकृति जाहि मे सर्वाधिक आकर्षक दू टा पैघ-पैघ भाव-तरल आँखिक दृष्टि-भंगिमा। महालक्ष्मी मने अबोध, सरल, अल्हड़ि कुमारि कन्या। महालक्ष्मी मने अपना माइक एक्केटा संतान...बड़ दुलारू तें माइक संगहि काशी आयल छलि।

इंद्रनाथ चाहैत छलाह जे बूढ़ी केँ जतेक शीघ्र काशी-लाभ होइनि, नीक थिक; मुदा ओ मनबैत छल जे बूढ़ी अधिक सँ अधिक दिन जीबथि, जे ई परिवार रहि सकय। संगहि इहो कतहु ओकरा अवचेतन मे छलैक जे भौजी जल्दी नीकेँ नहि होथि। ओकरा भेल छलैक जे ई नीचता थिक, स्वार्थपरता। ओ अपना भौजीक अनिष्ट नहि चाहैत छल मुदा ओ एहि भावना केँ हटा नहि पबैत छल। ओ एहि बौआइत मनोभावक दुराग्रह सँ परास्त छल। आ ओ ई गप्प एक दिन सिंघिया घाटपर महालक्ष्मी सँ कहनहु छल।

सिंघिया घाट। संकटा भगवतीक दर्शन कयलाक बाद जखन महालक्ष्मी अपना माय केँ भगवती लग स्तुतिपाठ मे तन्मय देखि सिंघिया घाटपर चल आयल छलि तँ ओ घाटक सौंदर्य आ विशेषता बुझबैत महालक्ष्मी केँ कहने छलैक जे 'ई समस्त घाट पीलरपर छैक-स्तंभपर कंकरीट सँ ढारिक' बनाओल गेल। तर मे गंगा बहैत छथिन आ ऊपर मे ई चिक्कन-चुनमुन घाट, जेना ऊपर सँ हम भौजीक स्वास्थ्य लेल व्यग्र छी मुदा अंतर मे एक टा दोसरे भावनाक गंगा बहि रहल अछि। होइछ जे बेसी दिन हम एत' रही आ अहाँक सान्निध्य बनल रहय आ...आ।' महालक्ष्मी पढ़ल-लिखलि आ ओकरा सँ धखछुट्टू रहितो, ई सूनि अस्तव्यस्त भ' उठल छलि आ भागिक' निचला सीढ़ीपर जाक' गंगाजीक जल केँ घोंक' लागल छलि।

ओकरा एहि भावनाक पता ओही दिन लागि गेल छलैक जाहि दिन ओ अपना भौजी, महालक्ष्मी तथा ओकरा माय केँ संग क' इंद्रनाथ जीक आग्रह सँ काशीक दर्शनीय स्थान सभ देखब' ल' गेल छल। विश्वनाथक दर्शनक काले मे ओ देखने छल जे महालक्ष्मी महादेव केँ जल्दी सँ गोड़ लागि खूब एकाग्रता सँ ओकरे दिस देखि रहल छलि जखन सभ केओ महादेवजी केँ एकाग्र भावें गोड़ लागि रहल छलनि। बीच मे अक्षयवट अन्नपूर्णाजी, ढुंढिराज गणेशजी आदिक दर्शन करैत साक्षीविनायक गली मे आबि महालक्ष्मी चमत्कृत भ' उठल छलि। दिनो मे ओहिठाम हजार पावरक बल्ब सभ जरैत रहबाक कारणे रेशमी गूआ सभक प्रदर्शनी लागल सनक ओहि दोकान सभक चाकचिक्य अद्भुत बुझना गेल छलैक। ओत' सँ बहरयलाक बाद ओहि गली मे अन्हरी कोठाक घोरतम अंधकार सुखक बाद दुख जकाँ कष्टप्रद बुझायल छलैक।

ओहिठाम सँ बहरयलापर आगाँ मे एक टा पानक दोकानपर ओ सभ रूकल छल। पानबलाक भांगक निसाँ मे भेर, चढ़ल-चढ़ल आँखि, विन्यासपूर्वक बड़े यत्न सँ ऐंठल-ऐंठल अधखिचरा मोंछ आ आगाँ मे पसरल पीरा पानक कतरल बनाओल ढेरी, पाछाँ मे पीठ लग टाँगल बघछाला सभक संग-संग रंग-बिरंगक चँवर सभ। सम्पूर्ण परिवेश बड़ नाटकीय आ बड़ प्रभावोत्पादक छलैक। ओ पानवला सँ पान ल' क' पहिने भौजी केँ देने छल आ तकरा बाद धखाइत, महालक्ष्मी दिस पानक खिल्लीबला हाथ बढ़ौने छल। महालक्ष्मी आरक्त होइत पान लेने छलि आ पान लैत काल ओकरा हाथ सँ स्पर्श भ' जयबाक कारणे बिनु पान खयने ओकर ठोरे टा नहि समस्त मुखाकृति कुंडाबोर भ' गेल छलैक। ओ अपनो एहि स्पर्श सँ सहसा अस्तव्यस्त अनुभव कयने छल आ ओकरा हिस्साक खिल्ली, हाथ सँ खसि पड़ल छलैक। पानबला अनुभव गम्भीर स्वर मे आँखि उठबै लागल छल—'आर लइली लाला।' आ महालक्ष्मी अपना मुँह दिस सँ हठात् घुमाक' अपन खिल्ली ओकरा दिस बढ़ा देने छलि आ ओ थरथराइत हाथें ओ पान ल' क' खा लेने छल आ महालक्ष्मी दिस तकने छल तँ ओकरा आकृतिपर एक टा अपूर्व सन्तुष्टिक भाव तरलायित भ' उठल छलैक। भरिसक ओकर भौजी सेहो किछु बूझि गेल छलथिन आ महालक्ष्मीक भाइयो। दुनू गोटे ओकरा दिस ताक' लागल छलीह। भौजीक नजरि मे परिहास मिश्रित आश्वस्ति तथा महालक्ष्मीक मायक दृष्टि मे वात्सल्य भरल स्वीकृतिक मुद्रा ओ देखने छल आ जेना कृतज्ञता सँ भरि उठल छल। पानबलाक फेर सँ लगओल खिल्ली भौजी ल' क' महालक्ष्मी केँ देने छलथिन आ कनडेरियें ओकरा दिस तकैत महालक्ष्मी हँसी केँ नुकयबाक क्रम मे पकड़ल गेलि जकाँ

हड़बड़ाक' पान अपना मुँह मे ल' लेने छलि।

ओ एक बेर वेग सँ घूमि रहल पंखा दिस देखलक आ फेर स्मृतिक चक्कर मे घूम' लागल।

ओहि ठाम सँ ओ सभ दशाश्वमेधक मोड़पर बहरायल छल। ओत' सँ बनारसी एक्कापर चढ़ि गुदौलिया होइत विश्वविद्यालय आयल छल। एक्काक झुनुर-झुनुर बूझि पड़ैत छलैक जेना कोनो नवविवाहिता अल्हड़ि कनियाँ अपना गहना गुड़ियाक रुनझुन मे डूबलि पतिगृह जा रहलि हो। ओ सभ केँ ल' क' विश्वविद्यालय सँ जखन विदा होब' लागल छल तँ ई पुछैत प्रथम-प्रथम ओहीकाल महालक्ष्मी ओकरा सँ बाजल छलि जे अहाँ एहीठाम पढ़ैत छी ? आ ओकरा स्वीकार सँ जेना महालक्ष्मी हर्षविभोर भ' उठल छलि।

डेरापर अयलाक बाद महालक्ष्मीक माय बड़ सिनेह भरल स्वर मे ओकर प्रशंसा करैत अपना भाइ इंद्रनाथ जी केँ ओहि दिनुक भ्रमण वृतान्त सुनौने छलथिन। तकरा बाद इंद्रनाथजी जाहि अपेक्षित वत्सल नजरियें ओकरा देखने छलथिन ताहि सँ महालक्ष्मी सहित ओकरा एक टा शुभ कल्पनाक सुखद अनुभव भेल छलैक। तकरा बाद सँ महालक्ष्मीक व्यवहार जेना एकटा नव रूप ल' लेने छल। ओकर सुखाइत वस्तु सभ केँ बड़े यत्न सँ चौपेति क' घर क' देब, ओकर खयबा काल अपन बनाओल तीमन-तरकारी चुपचाप मूड़ी गोंतने लाजें लाल भेल लग मे द' आयब, ओकरा लेल बेसी साकांक्ष-सचेत रहब आदि एहन क्रिया सभ छल जे ओकरा भविष्यक जिज्ञासा मे उद्ग्रीव भेल मोन केँ दुलार सँ सराबोर क' दैत छल।

आ ओकरा मोन पड़लैक ओहि दिनुक घटना जखन ओ भौजीक दवाइ ल' क' डेरापर अयलाक बाद देखने छल जे बूढ़ीक स्थिति लटपटायल छनि। सभ सँ बेसी उदासीनता आ घबराहटि ओकरा महालक्ष्मीक आकृतिपर बुझायल छलैक। इंद्रनाथ जी निविष्ट लाोक। चटपट माइक गोदान करौलनि। स्वस्तिदानक समस्या उठल। पुजेगरीजीक बालक तखन कतहु गेल छलाह। अगत्या ओकरे बजाक' इंद्रनाथजी स्वस्ति दान लेने छलाह। अपना कोठरी दिस अयलापर ओ महालक्ष्मी केँ भौजी सँ पुछैत सुनने छल जे—'कन्यादानो काल मे तँ गोदान होइ छैक ?' आ लजाक' भौजी लगसँ एक टा रहस्य-संकेत करैत जकाँ महालक्ष्मी पड़ा गेल छलि। सुनिक' ओकरा मोन मे जेना दीयाबातीक फुलझड़ी छूट' लागल छलैक। ओ दीर्घ श्वास लैत एक बेर फेर ओहि 'म' काढ़ल महालक्ष्मीक देल रूमाल सँ मुँह पोछिक' ओहि दिनक स्मृति मे डूबि गेल जाहि दिन बूढ़ीक त्रिरात्रि क' ओ परिवार काशी सँ विदा भ' गेल छल।

डेरापर सँ ल' क' बडी लाइनक 'वाराणसी' स्टेशनक प्लाटफार्मधरि पर

महालक्ष्मीक ओड़हुल सन लाल भेल आँखि सँ नोर बहब बन्न नहि भेल छलैक आ बेर-बेर कोनो मूक याचनाक करुण मुद्रा मे महालक्ष्मीक पैघ-पैघ भीजल आँखि ओकरा दिस मर्मस्पर्शी भंगिमा सँ उठि पड़ैत छलैक। एखनो महालक्ष्मीक ओ मुखाकृति ओकरा सोझाँ मे जेना साकार भ' रहल छलैक...ओकरा तोनिये चारि दिनक बाद ओकर भौजी सेहो चलि गेल छलथिन आ ओकर भैया जाइत काल भौजी सँ की गप्प कयने रहथिन की नहि जे भौजी ओकरा कहने छलथिन-'अहाँक काज भ' जायत, हड़बड़ाउ जूनि।' आ ओही भौजीक पत्र आइ एक्के मासक बाद ओकरा भेटलैक अछि, जे फूल बाबू अहाँक भैया केँ अहाँलोकनिक मादे हम कहने छलियनि आ इंद्रनाथो बाबूक पत्र भगवानपुर सँ आयल छलनि दोसर पत्र फेर अयलनि अछि। हमरा बड़ दुख अछि जे अहाँ केँ अबिती काल देल हमर आश्वासन फूसि भ' गेल। समगोत्री होयबाक कारणे महालक्ष्मी हमर दियादिनी नहि भ' सकतीह। महालक्ष्मी एहि दारुण व्यथा केँ सहि लेतीह। ओ मैथिल कन्या थिकीह। सहनशक्ति मिथिलाक कन्याक सहज धर्म थिकैक। एकरा अहाँ आन रूप मे नहि बुझबैक। जे लोक एकरा भीरूता, गतिहीनता वा रूढ़िवादिता बुझैछ ओकरा ई नहि बुझल छैक जे पीड़ा केँ समग्र रूपें सहिक' अङेजि लेब एक टा तपस्या थिक। ई तप: शक्ति मिथिलाक बेटी मे जन्मजात रहैत छैक। सीताजी तँ सभ किछु सहि गेलीह। महालक्ष्मी एकरा अवश्य सहि लेतीह। अहाँ पुरुष छी। तें इहो भरोस अछि जे अहूँ एहि आघात केँ सहि लेब।'

मुदा ओ एहि आघात सँ टूटि गेल अछि। एक टा अनाम...अरूप पीड़ा कतहु अंतर मे विषकीट जकाँ ओकरा दंशाहत कयने जा रहल छैक। एक टा गुह्य वेदनाक चरम परिणति मे ओ डूबल जा रहल अछि...गहींर...आरो गहींर...आरो गहींर जत' ने कोनो स्तर छैक ने कोनो चेतना। छैक केवल एकटा गम्भीर आत्मदंशक प्राणान्तक आवेश।

मिथिला मिहिर : 10 नवंबर 1968

स्थिति आजुक जिनगीक

मनोज केँ ऑफिस सँ अयबा मे कनेक विलम्ब भ' गेल छलैक। पाँच बजे जखन ओ विदा होम' लागल तँ विमलकांत आग्रह क' देलकैक जे 'हमरे डेरा पर होइत चलू ने। गाम सँ लोक-वेद आयल अछि। कने चाह-ताह पीबि लेब।'

मनोज एकबेर विमलकांतक मुँह दिस तकलक आ ओकरा आकृति पर आग्रहक सद्भाव देखिक' तैयार भ' गेल। एकबेर कनेक कुनमुनायल अवश्य जे 'डेरा पर कने जल्दीए जयबाक अछि।' मुदा एहि उक्ति मे ओकरा दम नहि बुझयलैक। ओ विमलकांतक संग सहज भावें विदा भ' गेल। ओहुना मनोज केँ ऑफिस मे सभ सँ बेसी विमलकांते सँ मैत्री छलैक।

विमलकांतक डेरा पर जखन ओ लोकनि पहुँचैत गेलाह तखन धरि अगस्त मासक सूर्यास्त पूर्णतः नहि भेल छलैक। अस्तगामी सूर्यक एकटा रुग्ण सनक किरण विमलकांतक कोठली मे खिड़की बाटे आबि रहल छलैक। कहि नहि, किएक मनोज रुग्ण भ' उठल मोने-मोन। किरण केँ देखिते मनोजक मोन मे एत' अयबाक एकटा असह्य निरर्थकताक बड़ तीख बोध भ' उठलैक। तकर कारण कि तँ रौदक पियराह आ रोगियाह ओ छोट-छीन टुकड़ी छल कि डेरा अबिते विमलकांतक बाथरूम ढुकि जायब छल अथवा पति केँ दोसराइतक संग आयल देखिक' विमलक पत्नीक असंतुष्ट मुख मुद्राक बोध छल।

विमलक पत्नी जे ओहि कोठली मे पहिनहि सँ बैसल छलि आ पतिक प्रतीक्षा मे स्वेटर बुनिक' समय बिता रहलि छलि, उठिक' ऊन, काँटा आ अधबुनुआ स्वेटर आगाँक टेबुल पर राखि भनसाघर दिस एकटा दीर्घ साँस छोड़ैत विदा भ' गेलि। मनोज ओकर अनिच्छापूर्वक उठबाक, आ विरोधसूचक साँसक अनुभव कयलक। ओकरा जयबाक सरसराहटि मनोज केँ जेना कनेक सर्दी जकाँ छुबिक' सिहरा देलकैक। स्थिति यद्यपि भारी भ' गेल छलैक मुदा जाइत काल पीठ दिस सँ भीमरंगक साड़ी सँ झाँपल ओकर 'फीगर' मनोज केँ कनेक आश्वस्त जकाँ क'

रहल छलैक। जेना माथपरक कोनो अनपेक्षित बोझ खुलिक' छिड़िया गेल हो आ भार कम भ' गेने माथ हल्लुक भ' गेल हो। मनोज सुस्थ सनक भ' गेल। भेलैक जे किएक ने ओहो बाथरूम जाक' फ्री भ' जाय?

विमल बाथरूम सँ आबि गेल छल। मनोज बिनु किछु कहनहि बाथरूम दिस विदा भेल। कोठली सँ बहराइते एकटा ठंढा सनक लहरि ओकरा बुझयलैक। ओकर रोइयाँ भुटकि गेलैक। भेलैक जे जल्दी सँ ओ अपना डेरा पर जाक' अपना पत्नी केँ ...अपना पत्नी केँ ...। मोनक स्मृति मे तुरत्ते एकटा आर स्थितिक-कोठली सँ भनसाघर दिस जाइत कालक विमलक पत्नीक पीठ, पीठपरक साड़ी, साड़ी तरक एक जुट्टी कयल नमगर केश, तकरा छोरक ठीक नीचा मे (चलैत कालक) दू भाग मे विभाजित उधकैत असाधारण नितंब, सहसा क्षणभरिक हेतु चमकि उठलैक। एटेंशन भ' क' ओ अपना मोनक अभद्रता केँ एकटा थापड़ लगौलक। मुदा जे गड़बाक छलैक से तँ मोन मे गड़िये गेल छलैक। ...आ ओ एकटा अनुशासित नेना जकाँ अपने खेलौना सँ खेलयबाक संतोष बलात् ओढ़ि लेलक। मोन केँ बोझिल भ' जयबाक अछैत एकटा अद्‌भुत पुलक ओकरा कनेक काल हेतु संवेदित क' देलकैक।

बाथरूम सँ बहराक' ओ जल्दी मे विदा भ' जयबाक-जल्दीये अपना डेरा पहुँचि जयबाक आकुल इच्छा लेने कोठली मे आयल। बाहरक अपेक्षें कोठलीक वातावरण आ परिवेश गरम बुझयलैक। गरम-गरम, मोंकल औनायल। तुरन्ते खोलिक' राखल घमाइन महकैत नूआ सनक कोनादन। तावत विमलक पत्नी कोठली मे आबि गेल छलि आ एकटा गोलका टेबुल पर राखल ट्रे मे सँ चाह बना रहलि छलि। चाह दिस देखिक' अनायास मनोज थूक फेक' खिड़की लग चल गेल। खिड़कीक छड़ सभ मे बहुत पहिनहि सँ फेकल गेल थूक, कफ आ पानक सिट्ठीक खंड सभ सटल-सुखायल लागल छलैक। रूमाल सँ मुँह पोछैत घूमिक' कुर्सी दिस अबैत शिष्टाचारक विरुद्ध होइतो ओ जयबा लेल उद्यत भ' गेल। आ चाहक प्याली उठबैत विमलक पत्नी सँ पूछि उठल—'कहू, कहिया अयलहुँ?' (यद्यपि ओकरा ऑफिस मे विमलकांत लोकवेदक अयबाक बात सुना देने छलैक।)

'काल्हिए अयलहुँ'—कहिक' अपना पति दिस कनेडेरियें तकैत विमलक पत्नी मुस्कुरा उठलि।

'कुशल-मंगल किने?' (यद्यपि मुँह परक लाली आ ओकर स्वस्थ शरीर सोझे मे छलैक।)

'अप्पन कहू ने?' आँखि सँ मुस्कुराइत ओ बाजलि-'मीना बहीनि कोना

छथि ?' (मीना मने मीनाक्षी, मने मनोजक पत्नी।)

'सभ ठीके चलि रहलैक अछि।' मीनाक, अप्पन आर आगाँक, एकरा बादोक संभावित संकेतित प्रश्नक सेहो उत्तर एक्के बेर मनोज द' क' निवृत्त सन भेल जेना छुट्टी पाबि लेने हो, निश्चिन्त भ' क' चाह पीब' लागल।

'ठीके चलि रहल छैक कि ने ?' हँसिक' उत्तर केँ प्रश्नक रूप दैत विमलक पत्नी जेना कोनो निगूढ़ गप्पक प्रच्छन्न भेद केँ पकड़ि लेने हो...जोर सँ हँसि पड़लि।

'हाँ-हाँ, चलि तँ रहले छैक।' कहैत मनोज ओकर जासूसी केँ स्वीकृति दैत जेना काटि देने हो, हँसी सँ प्रत्युत्तर देलक ओ सोझ भ' क' तनि गेल। विमलक पत्नीक एहि प्रश्नान्तक प्रशंसा सँ ओकरा कनेक लसलसाहटिक अनुभव भेलैक। अपना 'पौरुष' पर कने गर्वो भेलैक। अपन आकृति पर आयल तृप्त मुस्कुराहटि केँ देख' लेल ओ अयना ताक' लागल आ नहि पाबिक' एकटा उपेक्षात्मक निसास छोड़लक। हड़बड़ी मे पैघ घोंट पीबि जयबाक कारणे गरम चाहक धाह छातीक बीचो-बीच होइत पेट मे पसरि गेलैक आ मुँह, ठोर, तारू, मसुहरि, जीह आ दाँत केँ कनेक तिलमिला देलकैक। ओहि झोंक मे चाह केँ जल्दी-जल्दी खतम क' विमल दिस तकलक तँ ओकरा एकदम तटस्थ तथा ठंढा भेल देखिक' मनोज पराजित भ' उठल, सहसा उठिक' ठाढ़ भ' गेल आ चलबाक उपक्रम करैत बाजल-'तँ आब हुकुम भेटय ?'

ओ किछु दोसर बात बाज' चाहैत छल जे विमलक पत्नियेटा केँ नहि, विमलो केँ सम्बोधित करितैक, मुदा से नहि भ' सकलैक। उत्तरक अपेक्षा बिनु कयनहि ओ विदा भ' गेल। विमल केवल कोठलीक चौकठि धरि आबिक'-'बेस। मुदा गप्प तँ किछु नहिए भेल। फेर आयब कि ने ?' मनोज केँ विदा क' देलकैक।

मनोज केँ ई छुबि लेलकैक आ कहि नहि किएक घूमिक' एकबेर विमलक पत्नी दिस तकलक। ओकरा यद्यपि ग्लानि जकाँ बुझयलैक, मुदा विमलक पत्नीक आकृति पर एकटा विषादक उद्वेग जकाँ बुझि पड़लैक। मुस्कुराहटि बिला गेल छलैक। ओ चुपचाप चाहक चुस्की ल' रहलि छलि। किछु सोचैत। जेना अनचोक मे सड़क पर सूतल कुकूर केँ देखिक' ओ ओकरा मुइल बूझि लेने हो आ सहसा कुकूर केँ कान पटपटाक' अंगैठी करैत उठल देखिक' अपना बुझल पर खौंझा उठलि हो। मनोज केँ बड़े तीव्रता सँ अपना पत्नीक—मीनाक उपस्थिति तुरन्त आवश्यक बुझना गेलैक। ओ वेगसँ—'हँ-हँ। दोसरा दिन पुनि आयब।' कहि

अपना कहला पर अपने व्यंग्यात्मक हँसैत जकाँ विदा भ' गेल।

डेरा पर आबिक' सोझे अपना सुतबाक कोठली मे गेल। ओकरा भरि रस्ता यैह होइत छलैक जे मीनाक्षी ओही कोठली मे बैसिक' हमर प्रतीक्षा करैत होयति। आ, हम जाक' मीनाक्षीकेँ, मीनाकेँ ...आलिंगन...।

कोठलीक केबाड़ भिड़काओल छलैक। कोठली मे आबिक' ओकर नजरि मीनाक मुँह पर गेलैक। मीना साँझुक पसाहनि क' क' भरिसक अलसाक' प्रतीक्षा करैत-करैत सूति रहलि छलि। दुनू टा नेना सभ खेलयबा लेल बहार गेल छल। खिड़की लग ड्रेसिंग टेबुल छलैक। ओकर दराज सभ फुजले छलैक। टेबुल पर क्रीम, पाउडर, स्नो, तेलक शीशी, बिंदी, लिपिस्टिक, दू-तीन टा कंघी, छोट-छोट डिब्बा, एक गिलास पानि, मुँह पोछना तौलिया, थकड़ल केशक टूटल कुंतल-गोलक, सभ किछु निश्चल, एकटा मूक अस्तित्वक संग पड़ल छल। टेबुल मे 'फिट' भेल बड़का अयना मे मीनाक्षीक प्रतिबिंब पड़ैत छलैक।

मीना सूति रहलि छलि। बेसुधि। नेना जकाँ। अस्त-व्यस्त नहि, जुगताक'। माथपर केशक किछु लट छिड़िआयल छलैक। बीच मे ललका टीका। उधिआइत पतरका मेघ मे जेना चंद्रमा। ई सभ ओ अयनाक प्रतिच्छाया मे देखि रहल छल। जँ मीना ओकर पत्नी नहि रहितैक-ओकरा स्वाद लागल नहि रहितैक तँ ओ अवश्ये चूमि लैत। एकबेर इच्छा होयबो कयलैक तँ फेर ओ इच्छा स्वत: शिथिल भ' गेलैक। जे प्राप्त छलैक, भरिसक तें। आ कि अयना मे जे सौंदर्यक अप्रत्यक्ष, कल्पित-भाव-बोध छलैक से प्रत्यक्ष मे ओहन नहि रहलैक तें। फेर भेलक जे ई कृतघ्नता थिक। बैमानी!...ओ लग जाक' मीनाक ठोर...मुदा एकटा गुमसड़ाइन वितृष्णा सँ मोन भरि गेलक। एकटा बासि महक जेना नाक-मुँह मे बुझना गेलक। मोन केँ कुस्वाद क' देलकैक।

ओ सहटिक' जे लग गेल छल से मीना लग सँ हटि गेल। जेना मीना नहि कोनो ढेङ पड़ल हो ओकरा पलंग पर। ओ अपना केँ समेटि लेलक। अपना एकाकीपन केँ सेहो। ओकरा तखने बुझयलैक जे ओ एकाकीपनक कृत्रिम भीत अपना चारूकात ठाढ़ क' लेने अछि। कल्पित! बलात्! स्वनिर्मित्त! अपन चालाकी बुझना गेलैक एकाकीपनक ई बोध। अदहा-छिदहा फूसि।

ई फजूल बात थिक। ओ मने-मन सोचलक। सोचलक आ अपना एहि फजूल केँ अपना खोलक भीतर झाँपि देलक जत' पहिने सँ एहि तरहक बहुत रास फजूल सभ झाँपल छलैक आ भविष्य मे झँपैत रहत।

साँझ बरखा सँ तीतल। शिथिल। श्लथ। शीतल। ताहि पर सँ बसात।

मनोज थोड़ेक काल पुनि मीनाक्षी केँ देखलक। ओकरा सूतब दिस तकलक। टांग पर टांग चढ़ौने ओ निसभेर सूतल छलि। एकटा हाथ छाती पर छलैक। जेना वर्जनाक मुद्रा मे तैयार हो। हाथ मे चूड़ी। आंगुर मे लाल पाथरवला औंठी। पाथर चमकैत। गोर-नार, पातरे-छितर देहयष्टि। सुचिक्कन गरदनि। आकृति ढील। सज्जित। एक्के बेर देखनिहार लेल मोहक। चमड़ी कसल। सुगठित आँखि अधनिनियाँ जकाँ बेसी बंद। कनेक फूजल गरदनिक नीचा 'भी' कट ब्लाउजक आवरण सँ अतिरिक्त (बाँचल) नग्न वक्षक उपरका अंश। तकरा नीचा हाथक दुनू कात कसल पिचायल जकाँ 'बान्हि धयल उड़ि जाएत अकासे' उरोज।

नहुँ-नहुँ साँझक अन्हार पसर' लागल छलैक। मनोज केँ भेलैक जे अन्हार बहुधा मोन मे कोमलता छिड़िया दैत छैक। अन्हार मे कतेको अनावश्यक बात सभ बिसरि क' लोक शुद्ध आकृतिक परिचय पाबि जाइत अछि। ओकरा भेलैक जे जँ ओ आन्हर होइत तँ प्राय: ओकरा मोन मे ई शिथिलताक अवसाद-बोध नहि उपजितैक। भरिसक एतेक शीघ्र ई ठंढापन एकरा ग्रस्त नहि करितैक। तखन मीना केँ ओ एना वितृष्णा सँ नहि, स्नेह सँ प्राप्त करैत। ने ओ आँखि सँ देखैत आ ने अनुराग-भावना एना रित्ती-छित्ती होइतैक। ओकरा स्मरण भेलैक जे रातिक अन्हार मे स्वीच ऑफ क' क' जखन ओ सुतैत अछि तँ ओकरा होइत छैक जे सौंसे दुनिया मे ओ दुइए गोटे अछि। आरो संसार नहि छैक। ओ क्षण विचित्र होइत छैक।

ओ एखन आरो बेसी अन्हार चाहैत छल जे अपना ठंढापन सँ-शैथिल्य आ अवसाद सँ मुक्ति भेटि सकय आ ओ आइ सँ पाँच वर्ष पहिने जकाँ खूब प्रेम सँ मीना केँ दुलार-मलार क' सकय। ओ एकबेर अपना मे सटल एहि अवसाद केँ झाड़' चाहलक। झाड़बो कयलक एकबेर। जेना भीजल कुकूर देह झाड़ैत अछि। फेर तुरन्त ओकरा भेलैक जे ई सभ नकली थिक। वस्तुत: ओ एहि बोध सँ, एहि थमकल ठकुआयल स्थिति सँ बहरा नहि सकल। ओतहि ओ अटकल रहल, बाझल रहल, जत' कि पहिने एत' अयला पर जकड़ि गेल छल।

ओकरा भेलैक जे ओ आगाँ बढ़िक' एहि घेरा सँ बहरा जाय। आगाँ नहि, पाछाँ। मुदा नहि, ने ओ आगाँ जा सकैत छल ने पाछाँ। ओ मात्र ओतहि रहि सकैत छल। केवल ओतहि। ओहि स्थिति मे। जेना यैह ओकरा नियति होइक।

ओकरा ग्लानि होम' लगलैक। एना किएक भ' रहल अछि? नहि बूझि सकबाक कारणे ग्लानि गाढ़ बुझना गेलैक। नहि हटा सकबाक कारणे आरो बेसी। घबराहटि। विषाद। खौंझाहटि। ओकरा भेलैक, निस्तार पयबाक कोनो उपाय नहि छैक। ओ बढ़ल आ लग जाक' पलंग पर बैसि गेल। बैसि गेल आ मीना दिस झुकि

गेल। मुदा भेलैक जे कोनो तीत दवाइ पीबाक हेतु जी-जाँतिक' अपना केँ तैयार क' रहल अछि।

ओ आुजक जीवन-संघर्ष...युग-वैषम्य...सभ किछु मे कृत्रिमता... मिलावटि...दू-दू बच्चाक मायक समयान्तराल...सहवास आ सहस्थितिक नैरन्तर्य...सदति बनल रह'बला मानसिक तनाव...कुंठा...प्रतिक्षणक एकटा अतिरिक्त सतर्कता...व्यवहार...जीवनक रंग-बिरंग खोलक अनिवार्यता...आरो किदन-कहाँ दन, सभ मे पिसाक' चूर-चूर भेल, थाकल-ठेहिआयल मोन केँ अपना सँ फराक फेकिक' एक बेर ओ खूब ऊष्मा आवेग सँ मीना केँ शुद्ध प्रेम कर' चाहैत छल। ओ ई सामर्थ्य पयबा लेल व्याकुल भ' उठल। आ एकटा अतिरिक्त प्रयत्न क' जोर सँ चिचिया उठल 'मीऽऽऽ...नाऽऽ...।'

मिथिला मिहिर : 14 सितंबर 1969

• • •

प्रतिबिंब

काव्य-साधना

साहित्यक वैज्ञानिक परम्परा सँ समीक्षा कयलाक पूर्व समस्त वाङ्मयक कलात्मक रचना काव्येक नामे अभिहित होइत रहल अछि—'वाक्यं रसात्मकम् काव्यम्' रसयुक्त वाक्ये काव्य थिक। एत' काव्य शब्द द्वारा साहित्यक ओएह व्यापक परिव्याप्ति अभिप्रेत अछि।

काव्य-स्रष्टा कविक कवित्व-शक्तिक विकास अथवा ह्रासक प्रसंग मे साहित्यक ऐतिहासिक विवेचना सँ ई बात स्पष्टत: परिलक्षित होइत अछि जे युग-विशेष मे कवित्वक अवस्था मे परिवर्तन होइत रहल अछि। ई स्थिति अन्यान्यो काल सभक विकास वा ह्रास मे समान रूपें देखल जाइछ।

वस्तुत: काल-विशेषक जातीय जीवनक जे उन्नत वा अनुन्नत स्थिति रहैत अछि, तदनुरूपे युग होइत अछि आ युगक तात्कालिक परिस्थिति कला-सृष्टिक एक मौलिक आधार-पीठिका थिक। जे युग कला सभक उन्नतिक हेतु प्रख्यात भ' चुकल अछि; ओ जातिक इतिहास मे स्वर्णयुग बूझल जाइत अछि। कला सभ सँ जातिक कर्तृत्व-शक्ति व्यक्त होइत अछि। अतएव जाहि युग मे जातीय चेतना जाहि रूप मे प्रकट होइछ, ओही अनुपात मे कला-क्षेत्रक समृद्धियो प्रकट होइत अछि। एही पृष्ठभूमि मे कवित्व-कलाक विवेचन कयला पर साहित्यिक इतिहासवेत्ता ज्ञान, भक्ति, श्रृंगार, यथार्थ आदि पृथक्-पृथक् काल, वाद आ विचारक संस्थापन-विभाजन करैत छथि। मुदा जत' जातीय चेतनाक शक्तिमत्ता अछि, तत' वैयक्तिको चेतनाक गरिमा उपेक्षणीय नहि अछि। कविलोकनिक अपन-अपन प्रतिभा आ वैशिष्ट्य सेहो हुनक अपन वैयक्तिक परिवेश मे भासमान होइत अछि। ई एहि लेल जे काव्य मे सदैव व्यक्तित्वेक अभिव्यक्ति होइत अछि। एके विषय-वस्तु, एके दृष्टिकोणक पृथक्-पृथक् कवि लोकनिक काव्य-चेतना भिन्न-भिन्न रूपक होइत अछि। प्रत्येक काव्य मे कविक अन्तरात्माक दर्शन होइत अछि। कविक काव्य-चेतना हुनक अपन साधनाक फल थिक। कवि मे सहज प्रतिभा होइत छनि, ताहि

सँ ओ बाह्य-जगत्क सौन्दर्य केँ आत्मसात् क' लैत छथि आ हुनक समस्त अनुभूति रसक रूप ग्रहण क' लैत छनि। उपयुक्त रसे काव्यक आत्मा थिक।

एहि प्रकारें कवि एकमात्र अपन परिस्थितियेक वशवर्त्ती नहि होइत छथि। हुनक आनन्द-वृत्ति विषमो परिस्थिति मे हुनका वाणी मे परिस्फुट भ' जाइत छनि।

वस्तुत: काव्य आनन्दक सृष्टि थिक, दोसर शब्द मे रसानुभूतिमूलक चेतनाक सृष्टि थिक। ओ सौन्दर्यक विशुद्ध भावना सँ उद्‌भूत होइत अछि। ओहि मे व्यक्तिक अपन कर्तव्य-शक्ति विद्यमान रहैत छैक। एतबा धरि निस्सन्देह जे यदि जन-जीवन मे रोग, कष्ट, दरिद्रता, शोषण, अनय, दमन आदि छैक तँ कवि एहि यथार्थक कदापि उपेक्षा नहि क' सकैत छथि। जे करैत छथि ओ अपन काव्यक प्रति बैमानी आ युगक प्रति अक्षम्य विश्वासघात करैत छथि। सत्य तँ ई थिक जे कविक अन्तर्दृष्टि उपर्युक्त रोग, कष्ट आदि भावना सँ अस्पृष्ट नहि रहि सकैत अछि। मुदा एहू लेल कविक वैयक्तिक काव्य-चेतना सर्वथा अपेक्षित अछि जे हुनका रचना मे विशाल संवेदना आ यथार्थ अभिव्यक्ति उत्पन्न क' सकनि।

काव्यक सम्पूर्णता वस्तुत: बाह्य-जगत् मे नहि, अन्तर्जगत् मे अछि। कविक ओहि अन्तर्जगत् केँ एतेक चेतन ओ भावप्रवण होमक चाही जे ओकरा युगक समस्त चेतना केँ आत्मसात् करबाक क्षमता होइक। एतदर्थ कविक पर्याप्त साधना अनिवार्य अछि। तखने ओ सत्यक अनुभूति क' सकताह।

मिथिला मिहिर : 16 अप्रील 1961

काव्यक प्रयोजन, लक्ष्य ओ आदर्श

काव्यक प्रयोजन केँ निर्दिष्ट करैत आचार्य मम्मट अपन काव्य प्रकाश मे लिखने छथि—

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।

अर्थात् काव्य यशःप्राप्ति, सम्पत्तिलाभ, व्यावहारिक ज्ञान, अरिष्टनिवृत्ति-पूर्वक कल्याण-प्राप्ति, उच्च-स्तरीय आनन्दक सद्यः अनुभूति तथा प्रेयसी स्त्री सदृश मधुर उपदेश देबाक साधन होइत अछि। एहू सँ अधिक सशक्त आ स्पष्ट रीति सँ दर्पणकार कविराज विश्वनाथ कहने छथि—

चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते।

तात्पर्य जे अल्पो बुद्धिबला लोक केँ सरलता सँ सुखपूर्वक धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष, जे ऐहलौकिक पुरुषार्थ (चतुर्वर्ग) थिक, तकर फल-प्राप्ति काव्येक द्वारा भ' सकैत अछि। एकर पुष्टि प्राचीन उक्ति द्वारा करैत कहने छथि—

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिषेवणम्।

अर्थात् सत्काव्यक अध्ययनादि सेवन कयला सँ धर्म, अर्थ, काम आ मोक्षक साधन एवं कला सभ मे विलक्षणताक प्राप्ति, संसार मे कीर्ति तथा ह्रदय मे प्रीति (आनन्द) होइत अछि। एहने सनक विचार अपन काव्यालंकार-सूत्रवृत्ति मे आचार्य वामन लिखने छथि—

काव्यं सद् दृष्टा दृष्टार्थं प्रीति कीर्तिहेतुत्वात्।

सत् काव्य (कवि तथा ओकर पाठक दुहूक) प्रीति (आनन्द)क तथा जीवन काल आ मृत्युक उपरान्तो स्थायी कीर्तिक हेतु (कारण) भेला सँ दृष्ट (ऐहिक)

एवं अदृष्ट (पारलौकिक) फल देनिहार थिक। काव्यालंकार प्रणेता आचार्य रुद्रटक कहब छनि जे—

ज्वलदुज्जवलवाक्प्रसरः सरसं कुर्वन्महाकविः काव्यम्।
स्फुटमाकल्पमनल्पं प्रतनोति यशः परस्यापि।।

आशय जे काव्यक द्वारा जगद्व्यापी यश, धन, विपत्तिनाश, असाधारण आनन्द तथा समस्त कामनाक पूर्ति आदिक लाभ होइत अछि तथा धर्म, अर्थ, काम आ मोक्षक उपलब्धि होइत अछि। भारतीय प्राचीन आचार्य लोकनिक मतें काव्यक मौलिक प्रयोजन इएह थिक।

मनुष्य विवेकशील प्राणी थिक, विवेके मनुष्य केँ पशु-कोटि सँ पृथक् करैत अछि। एहि विवेकक अस्तित्वक सार्थकता दृष्टिपथक आगाँ निरंतर ओहि महान् आदर्श तथा लक्ष्य केँ प्राप्त करबा मे वैयक्तिक अथवा सामूहिक प्रयत्न मे अछि, जकरा प्राप्त करबा मे मनुष्य अपन मस्तिष्क एवं हृदयक समस्त शक्तिक सम्मिलित प्रयत्न द्वारा पूर्ण समर्थ अछि।

वैदिक काल सँ ल' क' पौराणिक कालधरि वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, स्मृति, पुराण आदि मे तथा तकरा बाद सँ आइधरि मनीषीलोकनिक अनुभूतिजन्य विचार मे समवेत स्वर सँ मनुष्य-जीवनक लक्ष्य कोनो ने कोनो रूपेँ इएह स्थिर भेल अछि, जे उपनिषद् मे एहि तरहें स्पष्टतः उद्घोषित भेल अछि—

रसो वै सः, रसंह्येवायं लब्ध्वाऽनन्दी भवति। आनन्दाद्ह्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। आनन्दादेव जातानि जीवन्ति।...

तें ओहि आनन्दक प्राप्ति, जाहि मे जीवनक समस्त विरोध शान्त भ' जाइत अछि, जाहि मे बुद्धि आ भावनाक व्यावहारिक अन्तर समाप्त भ' जाइत अछि तथा एकरस आ अखण्ड आनन्द भेटैत अछि, सैह मनुष्य-जीवनक चरम लक्ष्य थिक। गम्भीरतापूर्वक विचारला सँ जीवनक समग्र चेष्टा-प्रचेष्टाक तात्पर्य एही उद्देश्य मे समाहित दृष्टिगोचर होइत अछि। इएह महान् आनन्द आ रसे काव्य-साधनाक लक्ष्य थिक। धर्म, दर्शन, ज्ञान, भक्ति, कर्म, योग, कला आ साहित्य आदि जीवनक विविध साधना एही आनन्दक प्राप्तिक हेतु अपन-अपन विशिष्ट माध्यम सँ तथा भावक पद्धति सँ ओही आनन्दक साधना करैत अछि। अपन एही महान् उद्देश्यक कारणे मानव-जीवन मे काव्यक महत्व एहि तरहें प्रतिष्ठित अछि। तें काव्यक सार्थकता केवल मनोरंजन, अर्थ-प्राप्ति वा यश-प्राप्तिए धरि सीमित बूझब यथार्थ नहि थिक।

एतबा धरि अवश्य जे काव्यक सृष्टि कविक अपन अनुभूति, मर्मज्ञता, प्रतिभा आ साधनाक अनुरूप मूलतः स्वान्तः सुखाय होइत अछि। मुदा एहि स्वान्तः सुखायक

अर्थ यदि व्यक्तिगत सुख मात्र हो तँ से काव्यक लक्ष्य नहि थिक। एकर अर्थ तँ वस्तुत: ई थिक जे कविक अभिव्यक्ति सँ ओकर विलक्षण अनुभूतिक संस्पर्श आ रसानुभव पाठको केँ भ' सकैक। अर्थात् कविक अभिव्यक्ति अनुभूतिक रसास्वादन वैयाक्तिक परिधि सँ टपिक' सामूहिक विस्तार मे शाश्वतरूपें कयल जा सकय। यद्यपि अभिव्यक्तिक हेतु कविक हृदय पूर्ण स्वतंत्र अछि तथापि कवि-हृदयक ई स्वातंत्र्य समुद्रक ओहि स्वातंत्र्य जकाँ होमक चाही, जाहि मे समुद्र अपन तटीय मर्यादाक अन्तर्गत लहरिक वेग केँ रखैत अछि। मर्यादा तथा संयमक सौन्दर्य उच्छृंखलता एवं असंयमक अपेक्षेँ बहुत श्रेष्ठ होइत अछि।

एही बात केँ आचार्य क्षेमेन्द्र औचित्य-विचार-चर्चा मे विस्ताररूपें प्रकट करैत लिखने छथि—

काव्य स्यालमलंकारैः किं मिथ्या गणितैर्गुणैः।
यस्य जीवितमौचित्यं विचिन्त्यापि न दृश्यते।
औचित्यं-रस सिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।
प्रतिमाभरणं काव्यमुचितं शोभते कवेः। इत्यादि

जाहि प्रकारें फूल अपना वृत्त सँ संयुक्त भेल ओकरा द्वारा गाछ, गाछक द्वारा जड़ि आ जड़िक द्वारा पृथ्वीक रस सँ सम्पर्क राखि रसपान करैत विकसित होइत अछि तथा वृन्तक मर्यादा केँ त्यागि देलापर मौलाक' सुखा जाइत अछि, ताही प्रकारें जा धरि कवि उपर्युक्त मर्यादा मे अपन अनुभूति द्वारा जीवनक रस ग्रहण करैत छथि, ता धरि लोक मे सार्वजनीन आनन्द-सुरभिक संचार करैत जन-गण-श्लाघ्य होइत छथि आ औचित्यक त्याग कयला पर क्रमश: क्षीण-प्रभाव बनि जन-मानस मे सुखाक' उपेक्षित भ' जाइत छथि। अत: विवेकशील मनुष्य केँ मर्यादाक सौन्दर्य बिनु स्वीकार कयने वास्तविक सुखानुभव नहि भ' सकैत छैक। एहि तरहें स्वान्त: सुखाय मे लोक-सुखाय, बहुजन-सुखाय आ कि सर्वजन-सुखाय निहित रहैत छैक। इएह थिक कविक प्रतिभा-वैशिष्ट्य।

यदि कविक काव्य-कला सत्य केँ शिव-भावना सँ सुन्दर बनाक' सभ देश आ सभ कालक हेतु चिरन्तन ओ अक्षय सन्देश देनिहार, अपन भाव-धारा मे निमज्जित क' शाश्वत रसानुभूति देनिहार नहि हो तँ ओ मौलिक रूप मे भारतीय आदर्शक अनुसारें कदापि वरेण्य नहि थिक। सिनेमाक तुकबन्दी, सामयिक बजारू गीत आ कविता मे एही तथ्यक अनुसारें भेद आ स्थायित्व प्रतीत होइत अछि। ई सर्वदा स्मरण राखक थिक जे भारतीय काव्य जीवनक सर्वोच्च लक्ष्य केँ बिसरिक' कहियो नहि रहल।

संक्षेप मे, काव्य मानवताक साधना थिक। काव्यक द्वारा लोक जीवनक सर्वोच्च लक्ष्य धरि पहुँचि सकैत अछि। जड़ता सँ उठाक' चेतनाक उच्चस्तर धरि मानवता केँ ल' जयबाक कार्य काव्ये करैत अछि। ओ मनुष्य केँ आहार, निद्रा, भय, मैथुन धरि सीमित पशु वा विलासप्रिय कल्पित देवता नहि, पुरुषार्थी, सहृदय एवं समस्त मानवीय गुणराशि सँ सम्पन्न अनुभूतिशील 'मनुष्य' बनबैत अछि। ओ मनुष्यक कुसंस्कार, निकृष्ट स्वार्थवृत्ति हटाक' मनुष्यक हृदय, बुद्धि आ समस्त चेतना केँ स्वस्थ, स्वाभाविक, संयत, सरस आ स्वच्छ बनबैत अछि। इएह भारतीय दृष्टिएँ काव्यक प्रयोजन, लक्ष्य आ आदर्श थिक।

मिथिला मिहिर : 3 सितम्बर 1961

साहित्यक शाश्वत सत्ताक आधार

एहि विशाल विश्वक सम्पूर्ण सत्ता मे सभ सँ पैघ वस्तु थिक काल। एहि काल-शक्तिक आगाँ छोट सँ पैघ धरि केयो अपराजित नहि रहलाह। भारतीय लोक-जीवनक श्रेष्ठ आदर्शक प्रतीक बनल राम आ हुनक सर्वश्लाघ्य शासन-नीतिक सुन्दर उदाहरण रामराज्य, नहि रहि सकल, मुदा बाल्मीकि-रचित रामायण आइयो अछि। विक्रमादित्यक प्रतापक अवदान आइ कथानके बनिक' रहि गेल अछि, मुदा कालिदासक काव्य-कृतिक रस-मन्दाकिनी ओही रूप मे आइयो प्रवाहित भ' रहल अछि। शिव सिंहक शौर्य समाप्त भ' गेल, मुदा कवि-कोकिलक काव्य-काकली आइयो लोक-जीवन केँ मधु-सिक्त कइए रहल अछि। एहि तरहें व्यक्ति क्षणजीवी होइत अछि आ व्यक्तिक अपेक्षा जाति दीर्घजीवी होइत अछि। जातियो सँ दीर्घजीवी होइत अछि मानव समाज आ मानव-समाज सँ दीर्घजीवी वस्तु थिक मनुष्यक जीवनधारा। ई जीवनधारा एक काल सँ दोसर काल धरि प्रवाहित होइत रहैत अछि आ ओही वृहत्तर जीवन-धारा सँ साहित्यक शतदल प्रस्फुटित भ' अपन रस-सुरभिक मादकता द्वारा युग-युग सँ विश्व-मानवक मनप्राण केँ पोषित, वर्द्धित आ आनन्दप्लावित करैत अपन चिरन्तनताक परिचय दैत अछि। ताही लेल साहित्य नित्य तथा शाश्वत कहबैत अछि। कालक अनन्त प्रवाह मे जातीय शक्तिक ह्रास भ' जाइत अछि, भौतिक समृद्धि विनष्ट भ' जाइत अछि, शस्त्र-शक्तिक प्रभुता दम तोड़ि दैत अछि मुदा अमरताक माला काल अपना हाथें साहित्येक कालजयी ग्रीवा मे पहिरा दैत अछि।

साहित्य वस्तुत: राष्ट्रक कालजयी सम्पत्ति थिक। कोनो राष्ट्र जँ शक्तिसँ, सम्पत्ति सँ, स्वातंत्र्यक सुशासन सँ सम्पन्न हो, मुदा ओकरा स्वस्थ साहित्य नहि होइक तँ ओ कथमपि जीवित राष्ट्र नहि कहा सकैत अछि। तें साहित्यक सुरक्षा एवं एहि सम्पत्तिक अभिवृद्धिक हेतु सर्वदा ओ सर्वथा प्रयत्नशील रहक चाही।

आब विचारणीय ई थिक जे साहित्यक सुरक्षा आ अभिवृद्धि कोन तरहें भ'

सकैत अछि। ताहि लेल सर्वप्रथम साहित्यक निर्माण-प्रक्रिया पर दृष्टिपात कर' पड़त। सत्साहित्यक सृष्टि समर्थ साहित्यकार द्वारा सम्पन्न होइत अछि। एकर निर्माण मानव-जीवनक भाव आ अनुभूति सँ होइत अछि। साहित्यक एक परिभाषा ई जे साहित्य ओकरा कही जे समग्र भाव-समूह एवं अनुभूति-राशि केँ गुम्फित क' जीवनक मूल्यवान उपलब्धिक रूप मे प्रस्तुत कयल जाय, जाहि सँ लोक सुप्रभावित हो, ओहि मे लीन हो तथा सर्जकक भाव-भूमि पर पहुँचिक' स्रष्टाक समान रसानुभव क' सकय। एहि प्रकारें ई स्पष्ट बोध होइत अछि जे साहित्य मे सामाजिक जीवनक विभिन्न रूप, दृश्य, हर्ष-विवाद, अनुरक्ति-विरक्ति, स्नेह-घृणा आदि विविध मनोवृत्तिक अभिव्यक्ति होइत अछि। अर्थात् साहित्य-रचना ओ प्रक्रिया थिक, जे सामाजिक जगत् सँ सामग्री ग्रहण क' ओकरा एक विधान मे तेना रूपायित करैत अछि जाहि सँ व्यक्तिक अनुभूति समुदायक अनुभूति बनि जाइत अछि। साहित्यक निर्माण कयनिहार व्यक्ति केहनो व्यक्तिवादी हो, अन्ततः ओ सामाजिक प्राणी तँ थिके। ओ अपन अनुभूति अपना समाजे सँ ग्रहण करैत अछि।

समाज-संघटन सँ पूर्व जखन मनुष्य प्रकृतिक एकान्त अंग मात्र बनल घोर व्यक्तिवादीक रूप मे आखेट सँ उपार्जित सामग्रीक ऊपर जीवित रहैत छल, तखने सँ ओकरा हृदय मे रागात्मक वृत्तिक उन्मेष नैसर्गिक रूपें परिलक्षित होइत अछि। जाहि पशु सँ ओकरा आहार भेटलैक, जे निरीह भ' क' ओकरा लग अयलैक, तकरा ओ सिनेह कर' लागल, जे भयंकर छल तकरा सँ ओ डेराय लागल आ ओकरा पर आघात करब आरम्भ कयलक। जाहि फूलक सौन्दर्य तथा सुवास सँ ओकरा तृप्ति भेटलैक, जाहि गाछ-वृक्ष सँ ओकरा शीतल छाहरि आ सुस्वादु फल भेटलैक, ओहि सभक प्रति मनुष्यक आसक्ति बढ़' लागल। तीत फल, काँटबला झाँखुर आ अपना प्रयोजन सँ अतिरिक्त वस्तुक प्रति विरक्ति होम' लगलैक, फलतः ओहि कालक रचना मे तकरे वर्णन भेटैत अछि। क्रमशः सामाजिक संघटन प्रारम्भ भेल। पुरुष नारी दिस आ नारी पुरुष दिस आकृष्ट भेल। दुहू एक दोसराक पूरक बन' लागल। एहि प्रकारें पहाड़क कठोरता, आकाशक विस्तार, फूलक कोमलता, फल-प्रसूनक भारें अवनत लतिकाक सौष्ठव, सरित्प्रवाहक चांचल्य, चन्द्र-ज्योत्स्नाक उन्मद उल्लास, मृगदम्पत्तिक प्रणय-माधुर्य आ क्रौंच-मिथुनक कामोद्रेक आदि सँ प्रभावित एवं अनुप्राणित मनुष्य अपना मनोभाव केँ अभिव्यक्त करक हेतु संकेत आ भावसूचक ध्वनि सभक सृष्टि कयलक। एहि विकासक्रम मे शब्द थोड़बे छल आ ओकर अर्थो सरल छल।

मनुष्यक सामाजिक परिवेश, जीवनयापनक परिस्थिति आ समाज-संघटनक प्रक्रिया सोझ तथा सरल छल तें ओहि काल मे वैदिक ऋषिलोकनिक ऋचा तथा मंत्रसभ मे भावाभिव्यक्तिक योजना नितान्त सरल एवं सोझ भेल। क्रमशः समाजक जीवन जटिल होम' लागल आ एहि कारणें व्यक्तिक भाव-समूह, अनुभूति-राशि आ भाषाक अभिव्यक्ति संश्लिष्ट भ' गेल। फलतः साहित्यक सर्जना मे सेहो संश्लिष्टताक प्रवेश होम' लागब स्वाभाविके छल।

विद्यापतिक युग मे अपन अनुभूति केँ जाहि सोझ तरहें अभिव्यक्त कयल गेल से क्रमशः जटिल बन' लागल। पहिलुक वस्तु रीति बनि गेल आ वर्त्तमानक रचना प्रगतिशील। जँ-जँ लोक-जीवन मे संघर्ष, असन्तुलन, विविध अभाव, आवश्यकता ओ आकांक्षाक बाहुल्य होम' लागल तँ-तँ ओकर सामाजिक जीवन दुरूह, जटिल ओ संघर्ष-संश्लिष्ट बनैत गेल। एहि क्रियाक प्रतिक्रिया ई भेल जे साहित्यकारक आत्मानुभूति सेहो तद्रूपे भेल आ तकर अभिव्यक्तियो तेहने दुरूह एवं जटिल भेल।

एहि तरहें ई स्वतः सिद्ध बुझना जाइत अछि जे समाजक जीवन जतेक जटिल भेल जयतैक, साहित्यो मे ताहि परिमाण मे संश्लिष्टता प्रविष्ट भेल जयतैक।

एहि गतिशील सामाजिक संघटनक सभ सँ अधिक प्रभावकारी शक्ति सम्प्रति समाजक अर्थ-व्यवस्था भ' गेल अछि। ई आर्थिक युग थिक। अर्थेक आधार पर एखन राज्य, सरकार, धर्म, आचार-विचार, विवाह आदिक लोकसंस्कार, एत' धरि जे मानव-मूल्यक निर्धारण भ' रहल अछि। सामाजिक जीवन मे एहन कोनो संघ नहि अछि जे आर्थिक व्यवस्था सँ प्रभावित नहि हो। ई अर्थव्यवस्था समाज मे वर्गवादक जन्म देने अछि। तें साहित्यक एक प्रबल धारा एकर त्वञ्चाहञ्चक मार्मिक अभिव्यक्ति मे संलग्न भ' रहल अछि। मुदा केवल वर्ग-स्वार्थ केँ अभिव्यक्त कयनिहार साहित्ये टा साहित्य नहि थिक। उपेक्षित आ शोषित वर्गक पक्षपाती बनि बहुमतक ओकील जकाँ अल्पवर्गक विरुद्ध घृणा, आक्रोश आ जुगुप्साक सृष्टि करबेटा विधेय नहि कहल जा सकैछ। ओकरा संगहि-संग मनुष्यक जे विराट भावराशि, ओकर स्नेह, ममत्व, वात्सल्य, आशा, आकांक्षा, सहानुभूति, त्याग, सन्तोष, दया आदि भावनाक सांस्कृतिक परिवेश छैक तकरा चेतनाक उद्‌बोधक बनाक' अपन रचनाक माध्यमे लोक-मानसक समक्ष उपस्थित करब सेहो साहित्यक परम हितकर प्रकरण थिक। एकरे द्वारा युगक रचना अपना बादक युगो मे जीवित रहि सम्पूर्ण मानव-समुदायक हृदय मे एकसूत्रता स्थापित क' सकैत अछि। सार्वजनीन भाव-भूमि पर निर्मित साहित्य युगीनेटा नहि चिरन्तन

आ युगयुगक अनमोल विभूति होइत अछि। सर्वमानवक एही अखण्डता-बोध मे साहित्यिक नित्यता अछि आ शाश्वत साहित्य मे जीवनक एही चिरन्तन सत्यक प्रकाश पाओल जाइत अछि। युग-युग सँ चलि अबैत ओहि जीवन-धाराक अनुपम रस-प्रवाह केँ, जाहि मे समस्त संसारक सम्पूर्ण मानव-समुदायक मानवीय भावना एकाकार भेल रहैत अछि, तकर संवर्द्धन, सम्पोषण आ सम्मार्जन करबे साहित्यक सुरक्षाक सर्वोत्तम साधन थिक। तें युगक वस्तुक संगहि युग-युगक विषय-वस्तुक समावेश साहित्यक शाश्वत सत्ताक आधार थिक।

मिथिला मिहिर : 11 फरवरी 1962

साहित्यक स्थायित्व आ राजनीति

भीष्म जखन शर-शय्या पर छलाह तँ युधिष्ठिर केँ अपन सुदीर्घ जीवनक अनुभवक आधार पर बड़े पैघ तथ्यक कथा कहने छलथिन जे—

न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्।

अर्थात् मनुष्य सँ बढ़िक' पैघ दोसर कोनो वस्तु नहि थिक। हिन्दी मे इएह बात एना कहल गेल अछि—

और तब इन मंदिरों के देवता से
मस्जिदों, गिरिजाघरों के गॉड या अल्लाह से ऊँचा रहेगा
हाड़-मांसों का बना यह मनुज सर्वश्रेष्ठ।

बंगला भाषाक प्रसिद्ध कवि चंडीदास कहने छथि—

सुनह मानुष भाइ,
सबार ऊपरे मानुष सत्य ताहार ऊपरे नाइ।

एही बात केँ मैथिली मे यात्रीजी 'परम सत्य' शीर्षक कविताक अन्तर्गत एहि तरहें कहने छथि—

सत्य की, तँ—
सत्य थिक ई माटि
सत्य थिक ई पानि
सत्य थिक संसार
सत्य धरती, सत्य थिक आकाश
हम, अहाँ, ओ, ई,
थिकहुँ सब गोटय बड़का सत्य

सत्य थिक मानव-समाजक
क्रमिक उन्नति क्रमिक वृद्धि विकास

सत्य थिक संघर्षरत जनताक ई इतिहास।

एहि तरहें मनुष्य, अर्थात् मानव-जीवन सभ सँ पैघ वस्तु थिक। एही तथ्य केँ साहित्य, दर्शन, विज्ञान, राजनीति सभ आधार बनाक' अपन विस्तार, सुधार आ प्रचार-प्रसार कयने अछि।

साहित्यक तँ मूलाधारे थिक मानव-जीवन। जीवनक अर्थ थिक कार्य-कारण-परम्परा, जाहि मे इच्छा, वासना, संस्कार, वातावरण, परिवेश आ परिस्थितिक कारणें देश, काल तथा पात्रक अनुसार सब किछु होइत रहैत अछि। ओकरे व्यक्तीकरण थिक साहित्य। यद्यपि सामान्यत: मनुष्यक बाह्य क्रिया अन्तर्जीवनक अनुसारे होइत अछि, तथापि दैनिक जीवन मे अन्तर्जीव तथा बाह्य क्रियाक सामंजस्यक स्थान मे वैषम्यो दृष्टिगोचर होइत अछि। जेना दुखी रहितो लोक अनका पुछला पर कहि दैत छैक जे 'निकेँ छी।' हृदय सँ कनितो रूप मे लोक केँ हँसबाक हेतु बाध्य होम' पड़ैत छैक। ई अवास्तविक स्थिति थिक। सत्-साहित्य मे ई नहि होइत अछि। ओहि मे यथातथ्यक अभिव्यंजना रहैत अछि। सत्-साहित्य यथार्थ मे जीवनक वास्तविक अभिव्यक्ति थिक। अत: जीवनक समस्या साहित्यक समस्या बनैत अछि आ जीवनक व्यापार साहित्यक प्रेरणा बनैत अछि। ई जीवन-व्यापार परिवर्तनशील थिक। एकर परिवर्तन कालक अनुसारें होइत रहैत अछि।

संक्षेपमे, ई एना बुझल जा सकैत अछि। आदिम-युगमे, जीवन-व्यापारक मुख्य केन्द्र आ प्रेरक उद्‌देश्य छल जिज्ञासाक निवृत्ति, जीवन-यापनक संबल आ सुरक्षाक हेतु संघर्ष। वैदिक रचना मे उपर्युक्ते दृष्टि सँ अनुभूति, स्तुति, याचना आ विकासक हेतु बढ़ैत जन-चरणक सुनियोजित चिह्न भैटैत अछि। तकरा बादक रचना मे क्रमश: समाज-संघटन, शासन-प्रबंध, दैहिक शक्तिक अतिरिक्त नैतिक मूल्यक प्राधान्य परिलक्षित होइत अछि। तकरा संगहि-संग धर्म अध्यात्म सेहो साहित्य-रचनाक पाथेय बनल अछि। एही प्रकारें सामाजिक जीवन-व्यापार परिवर्तित होइत गेल आ तदनुरूपे साहित्योक विधा मे परिवर्तन होइत गेल। अर्थ-प्रधान युग मे अर्थ आ विज्ञान प्रधान युग मे विज्ञान साहित्य केँ अपना दिस आकृष्ट कयलक। अधुनातन वस्तुस्थिति ई अछि जे अर्थ आ विज्ञान केँ राजनीति अपन प्रभु-सत्ता सँ संचालित एवं अनुशासित क' रहल अछि।

सम्प्रति हमरा सभक जीवन राजनीति सँ तेना प्रभावित अछि जे एकर कोनो कोन एहि सँ बाँचल नहि अछि। राजनीति वर्तमान युगक सर्वग्रासिनी शक्ति बनि गेल अछि। फलत: आन सभ क्रिया-कलाप जकाँ एकर तीव्र शक्तिक प्रभाव साहित्यो पर पड़ल अछि। तें आजुक साहित्यकार राजनीति सँ कथमपि तटस्थ नहि रहि

सकैत अछि। जेना भक्ति-युग मे खाहे शृंगारक रचना हो, खाहे आने कोनो रसक, बिनु भक्तिक ओ लोक-जीवन मे ग्राह्य नहि भ' सकैत छल। ओहि युग मे भक्तिक भावना केवल धार्मिक वा साम्प्रदायिक आवेश मात्र नहि छल, अपितु सम्पूर्ण जीवनक समस्त व्यापार केँ ओ आत्मसात् क' लेने छल। तें विद्यापतिक शृंगार-रचना राधा-कृष्णक भक्तिक आश्रये ल' क' लोकप्रिय भेल। कहबाक तात्पर्य जे प्रत्येक युगक एक-एक आधिकारिक प्रवृत्ति होइत छैक। जहिना भक्ति वा धर्म युग मे धर्म छल तहिना वर्तमान राजनीतिक युग सँ पहिने युगक आधिकारिक प्रवृत्ति छल अर्थव्यवस्था।

मधुपजीक 'घसल अठन्नी', 'नवान्न' आदि कविता मे आर्थिक वैषम्य नीक जकाँ मार्मिक रूप मे अभिव्यक्त भेल अछि। यात्रीजीक बहुतो रचना एहि प्रवृत्तिक प्रतिनिधित्व करैत अछि।

एखन जे युग अछि ताहि मे सामाजिक पुन:संघटन अर्थव्यवस्था, मनवीय वासना, शिक्षा, संस्कृतिक तथा विज्ञान आदि सभ किछु राजनीति द्वारा नियंत्रित भ' रहल अछि। एहना स्थिति मे साहित्य केँ राजनीति सँ अस्पृष्ट रखबाक दुस्साहस के साहित्यकार क' सकैत अछि? सामाजिक जीवनक तात्कालिक सत्य जे जन-जीवन केँ आन्दोलित क' रहल छैक तकर उपेक्षा दुस्साहसे कहल जा सकैत अछि। तें चाही ई जे साहित्यिक मूल्यक सत्ता केँ प्रधानता दैत सामाजिक जीवन केँ संचालित कयनिहार राजनीति केँ अपन अनुभूतिक माध्यम सँ साहित्यकार ग्रहण करथि। आइ जन-जीवन मे कोनो प्रकारक परिवर्तन राजनीतिएक माध्यम सँ भ' सकैत अछि। तें वर्तमान सामाजिक गतिरोध केँ हँटयबाक हेतु लोक राजनीतिएक भरोस क' रहल अछि। नि:शस्त्रीकरण, वैज्ञानिक परीक्षण वा प्रयोग, आर्थिक साम्य, उपभोगक सामग्रीक समान-वितरण, सुख, सुविधा, शांति आदि समग्र इच्छा, आकांक्षा वा उपलब्धि हेतु राजनीति अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर साधन बनल अछि। भिन्न-भिन्न मतवाद आ दल अपन-अपन मान्यताक अनुसार अपना उद्‌देश्यक पूर्त्ति मे संलग्न अछि। एहि राजनीतिक साहित्यिक मूल्य एतबे धरि रहक चाही जे ई नवीन समाजक निर्माणार्थ आइ प्रबल साधन बनल अछि तें ओकरा ग्रहण क' अपन बौद्धिक सघनता आ कलात्मक वैशिष्ट्यक रंग सँ ढोरिक' ओकर संदर्भ तथा प्रसंग-सौंदर्यक संग अभिधाक अपेक्षें लक्षणा, व्यंजना आ ध्वनिक भाषा मे अभिव्यक्त कयल जाय।

राजनीतिक व्यंग्यक बड़े मार्मिक अभिव्यक्ति अमरजीक 'युगचक्र' मे भेल अछि। यात्रीजी राजनीतिक एक दोसरे पक्ष केँ उद्‌घाटित कयने छथि।

ई सत्य जे राजनीतिक मूल्य जखन साहित्य केँ बलात् आक्रान्त क' लैत अछि

तँ साहित्यक स्थायित्व नष्ट भ' जाइत छैक आ ओ रचना केवल युगीन भ' क' क्षणजीवी बनि जाइत अछि। संगहि साहित्य-रचनाक नाम पर पार्टी सभक प्रचार-साहित्य लिखल जाइत अछि। मुदा ई थिक साहित्यकारक निर्बलता वा अयोग्यता। साहित्यकार जखन साहित्य-पक्ष केँ नीक जकाँ शक्तिसम्पन्न नहि बना सकैत अछि तखने एहि तरहक स्थिति उत्पन्न होइत छैक।

जँ साहित्यकारक अनुभूति मे साधनाक बल आ सत्यता हो, जाहि विषय वस्तु केँ ल' क' ओ साहित्य-रचना कयने हो तकरा संग ओकर रागात्मक सम्बन्ध हो, केवल उपरे-उपर सुनल-देखल बात पर आधारित नहि भ' साहित्य अपना रचनाक समय मे आत्ममंथनक तन्मयतापूर्ण स्थिति सँ उद्‌भूत भेल हो, ओहि मे केवल बौद्धिक आवेशे टा नहि, अपितु साहित्यकारक मार्मिक अनुभूति आ अभिव्यक्ति सन्निहित हो तथा शाश्वत सत्य केँ अनुप्राणित साहित्यकारक पूर्वाग्रह-मुक्त हृदयक समस्त चेतना सँ निबद्ध तन्मयता एवं गांभीर्यक प्रसाद रचना केँ प्राप्त भेल हो तँ ओ वाद-विशेषक प्रतिनिधित्व करितो अपन साहित्यिक मूल्यक प्राचुर्य तथा महत्वक कारणे शाश्वत रचना बनि जाइत अछि; तथा युग बदलि गेलाक उपरान्तो भावी पीढ़ी केँ जीवंत प्रेरणा दैत रहैत अछि। जेना बाल्मीकिक राजनीति-प्रभावित रामायण जे रावणवादक विरोधी तथा रामवादक पोषक थिक, तथा व्यासक राजनीतिक रचना महाभारत, जे कौरववादक विरोधी तथा पाण्डववादक समर्थक थिक, आइयो अपन राजनीतिक दृष्टिकोण रखितो साहित्यक एक श्रेष्ठ विभूतिक रूप मे समस्त भारतीय वाङ्मय केँ अनुप्राणित, आलोकित आ उद्‌भासित कयने अछि। एहन कतिपय उदाहरण अन्यान्यो साहित्य मे अछि। एहि प्रकारें साहित्यक स्थायित्व मे राजनीति बाधक नहि प्रतीत होइत अछि।

मिथिला मिहिर : 27 मइ 1962

साहित्य आ सौन्दर्य-बोध

रसो वै स:रसं ह्येवायं लब्ध्वाऽनन्दी भवति। आनन्दाद्ह्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते।

उपनिषद मे सृष्टिक आरम्भ आनन्दे सँ होयबाक उल्लेख क' एक बहुत महत्वपूर्ण संकेत कयल गेल अछि। आनन्दक मूल थिक रस आ रसक अनुभूति सौन्दर्य सँ होइत अछि। तें समस्त सृष्टिक प्राथमिक प्रयोजन सौन्दर्यबोधे बुझना जाइत अछि। विकासवादी लोकनिक सिद्धान्तानुसार सृष्टि मे सभ सँ पाछाँ मानव आयल अछि। एकर तात्पर्य ई थिक जे विधाता मानव केँ पृथ्वीपर तखन पठौलनि जखन पृथ्वी ओकर प्रयोजन आ ताहू सँ बेसी आनन्ददायक सामग्री अर्थात् 'ऊपर अनेक नक्षत्र आ ग्रहयुक्त अम्बर, नीचा अवनी-गिरि-अब्धि-गहन-सरिता-निर्झर, ई महाभूत जल-अग्नि-पवन-क्षिति-नभ, अनन्त कोटानुकोटि जीवनधारी, चर-अचर निखिल अति सूक्षम पृथुल, अणु-महत्, वृहत्-लघु, दिग्-दिगन्त, तरु-लता-सुमन-मधुकर-शुक-पिक, प्रावृत्त निदाघ-मधु ऋतु वसन्त' आदिक सौन्दर्य सँ सुसज्जित भ' गेल छल। मानव आयल आ वसुन्धराक सौन्दर्य पर मुग्ध भ' गेल। उदाहरणार्थ वैदिक साहित्य मे ऊषाक जे वर्णन सृष्टि भेल अछि से समस्त भारतीय वाङ्मय मे अतुलनीय अछि। सौन्दर्यानुभूति सँ ओत-प्रोत भेल वैदिक ऋषि ब्राह्ममुहूर्त मे जागिक' जखन प्राची दिस तकलनि तँ अरुणांशुकवसना ऊषाक अपरूप सौन्दर्य सँ अभिभूत भ' गेलाह।

एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि व्युच्छन्ती युवति शुक्रवासा:
विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व ऊषो अद्येह सुभगे व्युच्छे।

वैदिक साहित्यक अध्ययन-अनुशीलन सँ ई स्पष्ट बुझना जाइत अछि जे मंत्रद्रष्टा ऋषि लोकनिक सौन्दर्यबोध बड़े विराट्, परिष्कृत, सुस्पष्ट, मौलिक आ गम्भीर छलनि।

एहिठाम ई ध्यान देबाक थिक जे 'सुन्दर' शब्दक स्पष्ट प्रयोग वेद मे नहि

भेटैत अछि। सुन्दरक पर्याय मे 'सुनर' शब्दक प्रयोग भेल अछि।

वभुरेको विषुण: सूनरो युवाज्यङ्के हिरण्यम्।
यो बाधते ददाति सूनरं वस्तु सधत्ते अक्षितिश्रव:।
प्रतिष्या सूनरी जनीं व्युच्छन्ती परिस्वसु:
दिवो अदर्शिदुहिता य ऋत्वि जे ददाति
सूनरं शोभनं वसु।
सूनरं सूप सृष्टाद्त्ते:।

इत्यादि अनेक ऋचा मे सुनर शब्दक प्रयोग सुन्दरक अर्थ मे भेल अछि। सौन्दर्य शब्दक सिद्धि संस्कृतक सुन्दर शब्द सँ भाव मे ष्यञ प्रत्यय लगाक' भेल अछि आ सुन्दर शब्दक व्युत्पत्ति अनेक प्रकारें होइत अछि। 'सु' उपसर्गपूर्वक 'उन्द्' धातु सँ 'अरन्' प्रत्यय लगाक' निष्पन्न भेल, सुन्दर शब्दक अर्थ थिक नीक जकाँ आर्द्र वा सरस कयनिहार। दोसर व्युत्पत्ति भेल सुष्टु नन्दयति इति सुन्दरम् अर्थात् जे नीक जकाँ प्रसन्न-आनन्दित करय से सुन्दर थिक। संस्कृत साहित्य मे मूर्त्त वस्तुक हेतु सुन्दर थिक आ अमूर्त वस्तुक हेतु बहुधा शोभन शब्दक प्रयोग भेल अछि। अमर कोष मे सुन्दर शब्दक पर्याय एहि प्रकारें परिगणित होइत अछि—

सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम्। कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मंजु मंजुलम्। रम्य मनोहरं सौम्यं...

एहि सँ ई स्पष्ट बुझना जाइत अछि जे सुन्दर शब्दक प्रयोग पुराण, महाभारत, तन्त्रसार आदि मे खूब भेल अछि, जकरा आधार पर कोषकार शब्द चयन कयने छथि।

आदिकाले सँ मानव समुदाय सौन्दर्यक उपासक रहल अछि। ऊषा, सन्ध्या, पर्वत, सरिता, सरोवर, मेघ, चन्द्रमा, नक्षत्र-निकर, पशु, पक्षी, स्त्री, पुरुष सँ ल' क' शृंगार, वीर, करुणा, अद्‌भुत, हास्य, भयानक आदि विविध भावनाक सौन्दर्यक वर्णन वेद सँ ल' क' आधुनिक साहित्य मे विभिन्न रूप मे स्रष्टाक (साहित्यकारक) दृष्टिकोणक आ अनुभूतिक अनुसारें होइत रहल अछि।

संस्कृत साहित्य मे सौन्दर्यक परिभाषा भिन्न-भिन्न रूप मे परिलक्षित अछि—

अंग-प्रत्यंगकानां य: सन्निवेशो यथो चितम्
संश्लिष्टसन्धि बन्ध: स्थात्त सौन्दर्यमितीर्य ते।

उज्ज्वल नीलमणिकारक मत छनि जे सब तरहें अंग-प्रत्यंग सँ यथोचित सन्निविष्ट आ सुगठित रूप मे सौन्दर्य रहैत अछि। एहिना रूपगोस्वामी रचित श्री हरिभक्ति रसामृतसिन्धु मे कहल गेल अछि—

भवेत्सौन्दर्यभंगानां सन्निवेशो यथोचितम्।

कालिदासकृत कुमारसम्भव मे कहल गेल अछि—

प्रियेषु सौभाग्य फलाहि चारूता।

अभिज्ञानशाकुन्तल मे अछि—

अहो सर्वास्ववस्थासु रमणीयत्वमाकृति विशेषाणाम्।

माघकृत शिशुपाल वध मे अछि—

क्षणे-क्षणे यन्नवता मुपैति तदेव रूपं रमणीयताया:।

अर्थात् जे प्रत्येक क्षण मे नवीन प्रतिभासित हो सएह थिक सौन्दर्य। एकर पूर्ण अभिव्यंजना महाकवि विद्यापति ठाकुरक अनेक पदावली मे भेल अछि। सखि कि पुछसि अनुभव मोय। सेहो परीति अनुराग बखानिय तिल-तिल नूतन होय। जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल आदि पद मे सौन्दर्य बोधक जेहन अभिव्यक्ति भेल अछि तेहन अन्यत्र दुर्लभ अछि। एही सौन्दर्य बोधक अभिव्यक्ति केँ काव्य अर्थात् साहित्य कहल गेल अछि। रस-गंगाधर मे पण्डितराज जगन्नाथ कहने छथि—

रमणीयार्थ प्रतिपादक: शब्द: काव्यम्।

चिन्तामणि मे पंडित रामचन्द्र शुक्लक कथन छनि जे सौन्दर्य मन सँ बहिर्भूत कोनो वस्तु नहि थिक। ई तँ मनक भीतरक वस्तु थिक। चिद्विलास मे बाबू सम्पूर्णानन्दक मन्तव्य छनि जे किछु एहन विषय अछि जकरा देखि हृदय मे रसक संचार होइत अछि। एहि सब मे जे मनोहारिता भेटैत अछि सएह थिक सौन्दर्य। भारतीय विचारक लोकनिक अतिरिक्त पाश्चात्य विद्वान सभक सौन्दर्य सम्बन्धी धारणा सेहो बहुत व्यापक तथा विशाल अछि। हिगेल, काँट, क्रोचे, ह्यूम आदि सौन्दर्य केँ पूर्णत: आंतरिक आ काडवेल प्लैखानेव आदि ओकरा पूर्णत: बाह्य मानैत छथि। नार्टन आदि किछु विचारक एहनो छथि जे मध्यवर्गी छथि। एहि तरहें साहित्य मे वस्तुपरक, आत्मपरक तथा समन्वयात्मक एहि तीनू दृष्टिकोण सँ सौन्दर्य-बोध अभिव्यक्त होइत अछि।

वस्तुपरक सौन्दर्य मे मानव-सौन्दर्य एवं प्रकृति-सौन्दर्यक अतिरिक्त मानवकृत वस्तुक सौन्दर्य सेहो परिगणित होइत अछि—

माधव कि कहब सुन्दरि रूपे।
कतेक जतन बिहि आनि समारल,
देखल नयन सरूपे।

तथा

सहजहिं आनन सुन्दर रे,
भौंह सुरेखलि आँखि
पंकज-मधु पिबि मधुकर रे,
उड़य पसारल पाँखि।

आदि विद्यापतिक रूप-वर्णन सँ ल' क' आधुनिक मैथिली साहित्य धरि मानव-सौन्दर्यक अनेक मनोहर उदाहरण भेटैत अछि। प्रकृति सौन्दर्य मे तहिना ऋतु-वर्णन, पर्वत, नदी, समुद्र, तरु, लता, पशु, पक्षी, चन्द्रमा, मेघ आदिक भूरिश: उदाहरण साहित्यक भण्डार मे भरल अछि। हिमालयक विराट सौन्दर्य सँ ल' क' चुट्टीधरिक सौन्दर्य वर्णन आधुनिक साहित्यकारलोकनि (सर्वश्री मधुप, सुमन, किरण, यात्री आदि) कएने छथि। मानवकृत वस्तुक सौन्दर्य मे सुन्दर नगर, प्रसाद, मन्दिर, चित्र, मूर्ति आदि अनेक वस्तुक वर्णन साहित्य मे पर्याप्त भेटैत अछि। यूरोपक किछु सौन्दर्यशास्त्री अपन स्थूल तथा साधारण ऐन्द्रिक अनुभव केँ सौन्दर्यक अनुभूति मानि लेने छथि। एकर संकेत टॉल्स्टाय 'कला की थिक' (What is art?) नामक अपना ग्रंथ मे कएने छथि। हुनका लोकनिक विचार छनि जे व्यक्ति आ वस्तुक ओ समस्त गुण अथवा धर्म-सौन्दर्यक मूलभूत आधार थिक जे आँखि, कान, नाक, जीह आ त्वचा एहि पाँचोक हेतु सुखद तथा आनन्ददायक प्रतीत हो।

भारतीय आचार्यलोकनि मे औचित्य विचार चर्चाकार क्षेमेन्द्र, रूप गोस्वामी, भरतक रस-सूत्रक व्याख्याता भट्ट लोल्लट, शंकुक आदि (यद्यपि किछु गोटयक दृष्टि मे समन्वयवादी छथि, तथापि) सौन्दर्य केँ विषय मे बेसी मानैत छथि। अलंकारवादी (सौन्दर्यमलंकार: ई काव्यालंकार मे आचार्य वामनक कथन छनि) गुणवादी, रीतिवादी तथा वक्रोक्तिवादी आचार्यलोकनि सौन्दर्य केँ बाह्ये विषय दिस आरोपित करबा मे प्रवृत्त बुझना जाइत छथि। ई वस्तुवादी विचारकलोकनि वस्तु वा व्यक्ति केँ बेसी महत्व दैत छथि, द्रष्टा अथवा ओकर आत्मसत्ता केँ नहि।

आत्मपरक दृष्टिकोणक क्रम मे हिगेलक कथ्य छनि जे समस्त दृश्य जगतक मूल मे एक चिरनिगूढ़ आध्यात्मिक सत्ता विद्यमान अछि जे प्रत्येक क्षण सक्रिय रहिक' हमरा सौन्दर्य-बोध करबैत अछि। तहिना काँट, क्रोचे, ह्यूम आदिक कहब छनि जे सौन्दर्य केवल एक मानसिक वृत्ति थिक। ओ सार्वदेशिक, अखण्ड, एकरस तथा आत्मतत्त्व केँ विकसित कयनिहार, सात्त्विक सुख केँ बढ़ौनिहार आ सहज ज्ञान-गम्य थिक, अभ्यास-साध्य नहि। सुन्दर वस्तु केँ देखिक' सभ केँ एक रंग

आनन्दानुभूति नहि होइत छैक। जे जतेक ज्ञान सम्पन्न अछि, जकर आत्मतत्त्व जतेक विकसित छैक तकरा ततेक सौन्दर्य-बोध आ आनन्दानुभूति होइत छैक। एहि हेतु सौन्दर्य केँ आत्मपरक कहल जाइत छैक।

पाश्चात्य विचारकक अतिरिक्त भारतीय विचारकक दृष्टि तँ सम्पूर्णत: आध्यात्मिक अछिए। शंकराचार्य तँ मानव-सौन्दर्यक तेहन विरूप वर्णन करने छथि जे जाही सौदर्य सँ लोक आसक्त भ' जाइत अछि तकरे विरूप वर्णन क' ओ विरक्तिक भाव जागृत क' दैत छथि—

नारी स्तनभर नाभि निवेशं
मिथ्या माया मोहावेशम्
एतन्मांस वसादि विकारम्
मनसि विचारय बारम्बारम्।

अर्थात् ई जे नारीक स्तन आ नाभि निवेशक आसक्ति अछि जकरा अहाँ सौन्दर्यक खानि बुझि रहल छी से सब फूसि मोहक आवेश थिक। तत्वत: ई माउस आ वसा आदिक विकार मात्र थिक। ततबे नहि, शंकराचार्यक ब्रह सत्यं जगन्मिथ्या ई आदर्शवाद तँ जगत-प्रसिद्ध अछि। तात्पर्य जे ब्रह्म सँ युक्त जे जगत से तँ सत्य थिक, स्पृहणीय थिक अर्थात् सौन्दर्ययुक्त थिक (सत्यं शिवं सुन्दरम्, सत्ये शिव आ सुन्दर थिक) मुदा बह्महीन (आत्मभावहीन) जगत मिथ्या थिक, तें त्याज्य आ असुन्दर थिक। एही तत्त्व केँ मानिक' भारतीय साहित्य मे सगुण भक्तिधाराक प्रतिनिधि कविलोकनि अपन अमरकृतिक अवदान द' गेल छथि। वस्तुत: भारतीय विचारधारा मे अगबे बाहरी सौन्दर्य क्षुद्र थिक। ओ बह्मभावना सँ युक्ते भ' क' रमणीय, आकर्षक आ ग्राह्य थिक।

मुदा वस्तुपरक आ आत्मपरक दुहू विचारधारा मे किछु ने किछु त्रुटि रहिये जाइत अछि। ने केवल वस्तुए टा मे सौन्दर्य अछि, आ ने केवल आत्मेटामे। केहनो सुन्दर वस्तु हो यदि ओकर सौन्दर्य ग्रहण करबाक वातावरण, परिवेश आ मन:स्थिति नहि हो तँ ओकर किछु मूल्य नहि। तहिना केहनो जागरूक मन हो, मुदा सौन्दर्यक कोनो उपादान वा भावे नहि हो तँ सौन्दर्यानुभूति कोना भ' सकैत अछि? तें सौन्दर्य सम्बन्धी वएह दृष्टिकोण साहित्यक दृष्टि सँ उपयुक्त भ' सकैत अछि जे भाव (आश्रय) आ विभाव (आलम्बन) दुहूक पूर्ण महत्त्व स्वीकार करैत हो। बिनु से भेने रसानुभूति भइये नहि सकैत अछि। इएह कारण थिक जे पाश्चात्य अतिवादक अपेक्षें अपना देश मे सौन्दर्यक धारणा अपेक्षाकृत पूर्ण आ व्यापक रहल अछि! एहिठामक साहित्यकार बाह्य आ आभ्यान्तर दुहू पक्ष केँ समरूप सँ सन्तुलित

रीतियें ग्रहण क' अपन सौन्दर्य-बोध केँ साहित्यक माध्यमे अभिव्यक्त कएने छथि। यथार्थ साहित्यिक अपन सौन्दर्यानुभूतिक स्पर्श सँ बाह्य तथा आभ्यान्तर सभ केँ सजीव, सरस, पुलकित, अनुपम, उदात्त आ आकर्षक बना दैत छथि। साहित्य मे प्रमाता आ प्रमेय, द्रष्टा आ दृश्य अर्थात् वस्तुगत आ कलागत दुहू सौन्दर्य केँ समन्वित क' साहित्यकार अपन अनुभूतिक माध्यम सँ सौन्दर्य-बोधक अनमोल रत्नराशि भारती-मन्दिर मे समर्पित करैत छथि। एहि तरहें भारतक प्राचीन आ अर्वाचीन सब सौन्दर्य चिन्तक तथा सौन्दर्यक अभिव्यंजनाकार वैदिक ऋषिगण, वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, भवभूति, भास, भारवि, माघ, श्रीहर्ष, दण्डी, जयदेव, शंकर, वल्लभ, विद्यापति, गोविन्दास, सूर, तुलसी, मीरा, रसखान, भारतेन्दु, प्रसाद, गुप्त, निराला, पंत, महादेवी, दिनकर, चन्दा झा, भानुनाथ, सीताराम झा, मधुप, सुमन, किरण, यात्री, आरसी आदि सौन्दर्यक एही समन्वयवादी दृष्टिकोण केँ मानिक' अपन विचार आ रचना प्रकट कएने छथि।

संक्षेप मे इएह थिक साहित्यक सौन्दर्य-बोध जे ओकर प्राण थिक, आत्मा थिक, उद्देश्य आ विधेय थिक।

मिथिला मिहिर : 12 अगस्त 1962

काव्य मे दोष

काव्यप्रकाश मे आचार्य मम्मट काव्यक स्वरूप निर्धारित करैत कहने छथि—तद्दोषो शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि। अर्थात् दोषरहित, गुण एवं अलंकारसहित (अथवा कतहु अलंकार रहितो) शब्दार्थ केँ काव्य कहल जाइत अछि। एहि मे काव्य केँ सर्वप्रथम दोषरहित होयब आवश्यक कहल गेल अछि। दोसर विषय ई ध्यान देबाक अछि जे काव्यक हेतु शब्द आ अर्थ दुनू केँ महत्त्वपूर्ण कहल गेल अछि। तें शब्दक दोष आ अर्थ-दोष पर सावधान रहब अपेक्षित भ' जाइत अछि।

काव्यालंकार मे आचार्य भामह काव्य-लक्षण वर्णित करैत कहने छथि—शब्दार्थौ सहितो काव्यं, गद्यं पद्यं च तद्द्विधा।' अर्थात् शब्द आ अर्थ मिलियेक' काव्य होइत अछि, जकर गद्य आ पद्य ई दू टा भेद थिक।

साहित्यदर्पण मे कविराज विश्वनाथ कहने छथि—वाक्यं रसात्मकं काव्यम् अर्थात् ओ वाक्य, जकर आत्मा रस थिक, काव्य कहबैत अछि। एहि लक्षणक द्वारा काव्यक प्रधान वस्तु रस सिद्ध होइत अछि।

सारांश जे काव्यक प्राण रस थिक। रस अर्थगत होइत अछि आ अर्थ शब्दगत। एहि प्रकारें शब्द, अर्थ आ रसक दृष्टियें काव्य केँ दोषरहित होयबाक चाही। अग्निपुराणक एगारहम अध्याय मे कहल गेल अछि—'उद्वेग ननको दोषः।' दोष काव्यक आस्वाद मे उद्वेग उत्पन्न क' दैत अछि। स्याद्वपुः सुन्दरमपि श्वित्रेणेकेन दुर्भगम्। जेना केहनो सुन्दर शरीर एकोटा चरक (श्वेत कुष्ठ) क चिह्न रहला पर असुन्दर भ' जाइत अछि, तहिना दोष रहला पर काव्यक रमणीयता दूषित भ' जाइत छैक।

काव्यक दोष भरतमुनि अपन नाट्यशास्त्र मे दस प्रकारक मानने छथि गूढ़ार्थमर्थान्तरमर्थहीनं, भिन्नार्थमेकार्थमभिप्लुतार्थम्। न्यायादपेतं विषमं विसन्धिः शब्दच्युतं वै दश काव्य दोषा।

अर्थात् गूढ़ार्थ, अर्थान्तर, अर्थहीन भिन्नार्थ, एकार्थ, अभिलुप्तार्थ, न्यायापेत,

विषम, विसन्धि, शब्दच्युत ई दस दोष काव्यक थिक। एहि दोष सभक विश्लेषण-क्रम मे ओ कहने छथि जे गूढ़ार्थ ओ कहबैत अछि जे पर्याय शब्द सँ कहल गेल हो। अवर्णनीय केँ जत' वर्णित कएल जाय तकर नाम अर्थान्तर, असम्बद्धार्थ केँ अर्थहीन, असभ्य आ ग्राम्य केँ भिन्नार्थ कहल जाइत अछि। जँ विवक्षित हो कोनो अर्थ आ कहि गेल हो भिन्न अर्थ तँ ओहो भिन्नार्थ थिक। जत' शब्द सभक अर्थभेद वा अर्थसाम्य पर ध्यान नहि द' ओहि सँ एक अर्थक कथन हो से एकार्थ कहबैत अछि। जकरा प्रत्येक पद मे वाक्यार्थ संक्षेपत: पूर्ण कएल जाय से अभिलुप्तार्थ आ प्रमाणरहितक नाम न्यायापेत थिक। छन्दक दोषक नाम विषम थिक आ जत' शब्द अनुप्रतिष्ठ (संधिरहित) हो ओ विसंधि कहल जाइत अछि। अशब्द केँ जोड़बाक नाम शब्दहीन (शब्दच्युत) होइत अछि।

नेयार्थ क्लिष्टमन्यार्थ मवाचकमयुक्तिमत्
गूढ़ शब्दाभिधानंच कवयो न प्रयुञ्जते।

काव्यालंकार मे आचार्य भामह सामान्य दोषक उल्लेख करैत कहने छथि जे कविलोकनिक नेयार्थ (जबरदस्तीक अर्थ) क्लिष्ट, अन्यार्थ, अवाचक, अयुक्त आ गूढ़ शब्दक प्रयोग नहि करैत छथि। वाणी दोषक प्रसंग हुनक कथ्य छनि—

श्रुति दुष्टार्थ दुष्टेच कल्पनादुष्टमित्यपि
श्रुतिकष्टं तथैवाहुर्वाचां दोषं चतुर्विधम्।

अर्थात् श्रुतिदुष्ट, अर्थदुष्ट, कल्पनादुष्ट तथा श्रुति-कष्ट, ई चारि प्रकारक वाणी-दोष थिक। दोष सभक अन्य भेदक सम्बन्ध मे कहने छथि—

अपार्थ व्यर्थ मेकार्थ ससंशयमप-क्रमम्
शब्दहीन यतिभ्रष्टं भिन्नवृत्तं विसन्धि च
देश काल कला लोकन्यायागम विरोधि च
प्रतिज्ञा हेतु दृष्टान्तहीनं दुष्टं च नेष्यते।

अर्थात् अपार्थ, व्यर्थ, एकार्थ, ससंशय, अपक्रम, शब्दहीन, यतिभ्रष्ट, भिन्नवृत्ति, विसन्धि, देशविरूद्ध, कालविरूद्ध, प्रतिज्ञाहीन, हेतुहीन, दृष्टान्तहीन ई दोष सभ काव्य मे नहि होयबाक चाही।

काव्य-दोषक स्वरूप विवेचक प्रसंग अपन काव्यप्रकाश नामक ग्रंथ मे आचार्य मम्मट कहने छथि—

मुख्यार्थहति र्दोषो रसश्च मुख्यस्तदाश्रयाद्वाच्य:
उभयोपयोगिन: स्यु: शब्दाद्यास्तेन तेष्वपि स:।

अर्थात् मुख्य अर्थ विघातक सभ केँ दोष कहल जाइत अछि। काव्य मे रस

तँ मुख्य होइते अछि मुदा ओही रसक आश्रित (उपकारक होयबाक कारणे अपेक्षित) वाच्य अर्थो मुख्य होइत अछि। एहि तरहें रस आ वाच्य अर्थ एहि दुहक उपयोग मे शब्दादिको मुख्ये थिक। अत: ओहि शब्द आ अर्थो सभ मे दोष होइत अछि।

कहबाक भाव ई जे मुख्य अर्थक जाहि सँ अपकर्ष हो तकरा दोष कहल जाइत अछि। कवि जाहि वस्तु मे जत' चमत्कार देखब' चाहैत छथि सएह मुख्य अर्थ होइत अछि। जत' रस आ भाव आदि मे सर्वोत्कृष्ट चमत्कार होइत अछि तत' रस, भाव आदि मुख्य अर्थ थिक। जत' वाच्य अर्थ मे उत्कृष्टता होइत अछि तत' शब्द मुख्य अर्थ बुझक चाही। काव्य मे रसक मुख्यता रहैत अछि, रसक प्रतीति अर्थक द्वारा होइत अछि आ अर्थक ज्ञान शब्दक अधीन रहैत अछि। अत: काव्य मे सामान्यतया तीन प्रकारक दोष भ' सकैत अछि, शब्द-दोष, अर्थ-दोष आ रस-दोष।

काव्यप्रकाश मे सत्तरि प्रकारक दोष कहल गेल अछि। सैंतीस शब्दक, तेइस अर्थक आ दसटा रसक। एहि प्रत्येक प्रकारक नाना भेद-प्रभेदक कारणे दोष सभक प्रसंग बड़े विस्तार आ सूक्ष्मता सँ वर्णन करैत काव्य-जगत मे एकरा एक सुदीर्घ व्यापार मानल गेल अछि। ताहिमे सँ किछु दोष सभक वर्णन कएल जाइत अछि।

शब्द-दोष—शब्द, पद तथा वाक्यक रूप मे काव्य मे उपस्थित होइत अछि आ अर्थक हेतु उपयोगी होइत अछि। पदक कोनो अंशो मे दोष पाओल जा सकैत अछि। एहि तरहें शब्द-दोष मुख्यत: तीन प्रकारक होइत अछि—पद-दोष, पदांश-दोष आ वाक्य-दोष।

1. श्रुतिकटु—जे सुनलापर कान केँ अप्रिय बुझना जाय। पर की न विषयोत्कृष्टता करइछ विचारोत्कृष्टता? एहिठाम विषयोत्कृष्टता आ विचारोत्कृष्टता एहि शब्दसभ मे अक्षरक तेहन योग अछि जे कोनोदन बूझि पड़ैत अछि। एहि तरहक दोष शृंगारादि कोमले रस सभ मे होइत अछि। वीर, रौद्र आदि रस सभ मे एहि तरहक प्रयोग दोष नहि बुझल जाइत अछि।

2. ग्राम्य—ग्रामीण शब्दक प्रयोग द्वारा अर्थक अपकर्ष।

राग-द्वेष सँ रहित पूर्ण निष्काम
अयला कोप भवन मे निश्छल राम
बापक आज्ञा तत्क्षण पड़ितहि कान
बहु आ भाइक संग कयल प्रस्थान।

एहिठाम बाप आ बहु शब्दक ग्राम्य-प्रयोग दोषावह थिक।

3. असमर्थ—जाहिठाम अभीष्ट अर्थक प्रतीति नहि हो। कुंज-हनन कामिनि

करय पाबि समय-संकेत। एहिठाम गमनक अर्थ मे हनन शब्दक प्रयोग कयल गेल अछि। हन हिंसागत्योक अनुसारें हन् धातुक गति अर्थ अवश्य होइत छैक, मुदा हनन पदक सामर्थ्य सँ गमनक अर्थ-प्रतीति नहि होइत अछि।

4. अप्रयुक्त—पदक प्रचलनोक बड़ आवश्यकता होइत अछि। कोष मे उल्लिखित रहलोपर जँ कविलोकनिक द्वारा प्रयुक्त नहि भेल रहैत अछि तँ ओ पद अप्रयुक्त कहबैत अछि।

पुत्र जन्म सुनि उपजल अतिशय हर्ष
द्विज गण केँ कयलनि पुनि गाइक स्पर्श।

एहिठामक स्पर्शक प्रयोग दानक अर्थ मे कयल गेल अछि। कोष कहैत अछि विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम्। मुदा दानक अर्थ मे स्पर्शक प्रयोग अप्रयुक्त अछि।

5. अश्लील—ई दोष तीन प्रकारक होइत अछि—ब्रीड़ा व्यंजक, घृणा व्यंजक, अमंगल व्यंजक।

रति-श्रम सँ स्वेदित परम
थाकल दुहू जन गात
लज्जित दुह केँ क' देलक
सहसा दीर्घ बसात।

एहिठाम दीर्घबसात (बसातक झोंक दुहूजन नायक-नायिका) लग सहसा उपस्थित भ' दुनू केँ लज्जित क' देलक से भाव छल, मुदा बसात सँ एत' अधोवायुक भान सेहो होइत अछि।

6. हतवृत्त—छन्दोभंगक कारणे जे दोष हो।

लट छिड़ियौने आइ कामिनी मधुर मुसुकाय
पसरल घन पर जेना चंचला चमकि छिड़िआय।

एहि दोहा मे कामिनी आ चंचला शब्दक प्रयोग तेना भेल अछि जे छंदक नियमानुसार विरामक कारणे दुहू शब्द बड़े बेढंग भ' जाइत अछि।

7. निहितार्थ—दू अर्थवला शब्दक अप्रसिद्ध अर्थ मे प्रयोग—

हे हे शठ नीरद भेलह
चपला विधु चित आनि
भव-मकरध्वज तरनहित
करह यत्न-हित मानि।

अर्थात् हे शठ, तों आब नीरद (दाँतरहित, बूढ़) भेलह। तें चपला (लक्ष्मी)

आ विधु (विष्णु) केँ हृदय मे राखह। संसाररूपी मकरध्वज (समुद्र) केँ पार करबाक यत्न करह। एत' नीरदक प्रसिद्ध अर्थ मेघ, चपलाक प्रसिद्ध अर्थ बिजली, विधुक प्रसिद्ध अर्थ चन्द्रमा आ मकरध्वजक प्रसिद्ध अर्थ कामदेव केँ छोड़ि अप्रसिद्ध अर्थ मे प्रयोग भेल अछि।

8. अनुचितार्थ—अभीष्ट अर्थक तिरस्कार कर'वला प्रयोग।

भ' क' पशु रण-यज्ञमे
अमर होइ छथि शूर।

अर्थात् शूर व्यक्ति रण रूपी यज्ञ मे पशु बनिक' (अर्थात् बलिदान भ' क') अमर भ' जाइत छथि। एहिठाम शूर केँ पशुक उपमा देब अनुचितार्थ दोष थिक।

9. न्यूनपदता—अभीष्ट अर्थक वाचक शब्दक अभाव।

राजन अहँक कृपाणसँ
प्रकट भेल यश-फूल।

अर्थात् हे राजन! अहाँक कृपा सँ यशरूपी फूल प्रकट भेल। एत' यश केँ फूल कहल गेल अछि। तखन कृपाण केँ लता कहबाक चाही। लतापदक अभाव सँ न्यूनपदता दोष भेल।

10. अधिकपदता—अनावश्यक शब्दक प्रयोग।

काटय अहँक विपक्ष केँ
खड्गलता अहि राज।

अहाँक तरुआरि रूपी नागराज शत्रु केँ काटि रहल अछि। एहिठाम लतापदक प्रयोग अनावश्यक अछि।

11. भग्न-प्रक्रम—क्रमभिन्न शब्दक प्रयोग।

उदय होइ छथि लाल सूर्य
आ ताम्रे होइ छथि अस्त
सम्पत्ति आ विपत्ति मे कहुखन
सज्जन होथि न अस्त-व्यस्त।

एहिठाम सूर्यक एकबेर लाल आ दोसरबेर ताम्र विशेषण देला सँ क्रमभंग भ' गेल।

12. क्लिष्ट—एहन शब्दक प्रयोग जाहि सँ अर्थ ज्ञान बहुत कठिनता सँ हो।

अहि-रिपु-पति-तिय-सदन सन
आनन अति कमनीय।

सर्पक रितु गरुड़, तकर पति विष्णु, हुनक पति लक्ष्मी, तनिक सदन (निवास)

कमल सदृश कमनीय मुँह। एहिठाम प्रस्तुत अर्थक ज्ञान बहुत कष्ट-कल्पना सँ आ विलम्ब सँ होइत छैक। तें ई क्लिष्ट-दोष भेल। एकरा स्थान मे विकसित सरसिज सदृश अछि आनन अति कमनीय मे शब्द बदलि देला सँ ई दोष नहि रहैत अछि।

एकर अतिरिक्त च्युत संस्कार, निरर्थक, अवाचक, संदिग्ध, अप्रतीतार्थ, नेयार्थ, अविमुष्टविधेयांश, विरूद्धमतिकृत, प्रतिकूलवर्णना, आहत विसर्ग, लुप्त विसर्ग, विसन्धि, कथितपदता, समाप्त-पुनरात्तता, पतत्प्रकर्ष, अर्थान्तरैक वाचक, अभवन्मतता, अनभिहित वाच्य, अस्थानस्थपद, समास, संकीर्ण, गर्भित, प्रसिद्धि त्याग, अक्रम, अमृत-परार्थता नामक शब्द-दोष होइत अछि।

अर्थ-दोष—अर्थक सौन्दर्य आ स्पष्टता मे जे बाधक होइत अछि से अर्थ-दोष थिक।

1. **कष्टार्थ**—अर्थ-प्रतीतिये कठिनता भेला सँ ई दोष होइत अछि।

माली पुष्प-लता नहि रोपू
मरत असंख्य पतंग।

अर्थात् हे माली, पुष्प-लता नहि रोपू, कारण जे एहि सँ असंख्य फतिंगा मरि जायत। लता सँ जे फूल फुलायत तकर सुगंधि सँ आकृष्ट भ' मधुमाछी आबि छत्ता लगाओत; से उतारिक' मोम बनत, ताहि सँ मोमबत्ती आ से लेसल जायत तँ तकरा इजोतपर फतिंगा सभ आबिक' मरि जायत, तहिना—

अहँक ललित लावण्य पर
हे वर यौवति नारि
वारि देल अछि चारि मृग
चारि विहग, फल चारि।

चारि मृग—आँखि पर हरिण, घोघपर हय, गतिपर हाथी, कटिपर सिंह। चारि विहग—वचन पर कोकिल, ग्रीवापर कपोत, केशपर मोर, नासिका पर सुग्गा। चारि फल—दाँतपर दाड़िम, कुचपर श्रीफल, अधरपर बिम्बफल, कपोलपर मधुक।

एहि तरहें दुहू पद्यांश मे अर्थक प्रतीति अत्यन्त कष्ट सँ होइत अछि। एहि मे शब्द-प्रकरणक क्लिष्ट-दोष जकाँ शब्द बदलियो देला सँ अर्थ-प्रतीति मे सुगमता नहि होइत अछि। शब्द-दोषक क्लिष्ट दोष आ कष्टार्थ-दोष मे इएह अन्तर अछि।

2. **पुनरूक्त**—एक शब्द अथवा वाक्य द्वारा अर्थ-विशेषक प्रतीति भ' गेलोपर ओही अर्थक दोसर शब्द वा वाक्य द्वारा प्रतिपादन—

कुमति कुसंगति मात्रसँ, होइछ सदैव अनिष्ट
सुमति सुसंगति कृपासँ, सिद्ध होइछ निज इष्ट।

एहिठाम पूर्वार्द्ध मे अनिष्टक कारण कुमति आ कुसंगति केँ कहल गेल अछि। एहि सँ स्पष्ट भ' जाइत अछि जे सुमति आ सुसंगति सँ इष्ट साधन होइत अछि। तें उत्तरार्द्ध पुनरूक्त भेल।

3. दुष्क्रम—लोक अथवा शास्त्र विरुद्ध क्रम—

चटनी खयलहुँ, चीनी खयलहुँ
घी खयलहुँ आ भात
दालि, दही, मरिचाइ तथा
खयलहुँ तरकारी सात।

एहिठाम भोज मे की सभ खयलहुँ? ई पुछलापर उपयुक्त उत्तर मे भोजन सामग्रीक वर्णन क्रम-विरूद्ध अछि।

4. विद्या-विरुद्ध—शास्त्र विरूद्ध वर्णन—

अधर पर नख-क्षत प्रकट सभ करै छल।

अधर पर दन्त-क्षत भ' सकैछ, मुदा एहिठाम नखक्षत वर्णित अछि; जे काम शास्त्रक विरुद्ध अछि।

5. प्रसिद्धि-विरूद्ध—अप्रसिद्ध बातक उल्लेख—

कङना जे एकरा कहय
छैक तकर मति वक्र
कामिनीक कर मूल ई
मदन लेल निज चक्र।

एहिठाम कामिनीक कङना केँ कामदेवक चक्र कहल गेल अछि। कामदेवक शस्त्र धनुष प्रसिद्ध अछि, चक्र नहि। चक्रक सम्बन्ध तँ विष्णुक संग प्रसिद्ध अछि।

6. ग्राम्य—अर्थक ग्राम्य होयबाक कारणें उद्वेग—

की गाउ, गाबि ककरा सुनाउ?
हम दैत अपन छी ह्रदय खोलि
जड़ प्रकृति निरखितहिं उठय डोलि
छन मे लै छी जन-मन टटोलि
तखनहुँ सजीव निर्जीव बनल
रहि जाइछ बाबि मुँह बनल हाउ।

एहिठाम हाउक प्रयोग समस्त अर्थ केँ ग्राम्य बना देने अछि।

7. विध्ययुक्त—अविधेयक विधान—

वंदी जन प्रतिबद्ध भ'

सुख सँ सुतू नृपाल
करब अपांडव जगत केँ
काटब हम रण-जाल।

एहिठाम अश्वत्थामा द्वारा दुर्योधन केँ कहल गेल अछि जे हम समस्त संसार केँ पाण्डवहीन क' देब। हे महाराज, आब अहाँ बंदीजनक स्तुति सँ उठिक' सुखपूर्वक सुतू। सुतलाक बाद उठबाक विधान उचित थिक। उठिक' सुतब अविधेयक विधान भेल।

एकर अतिरिक्त अपुष्ट, व्याहत, सन्दिग्ध, निर्हेतु, अनवीकृत, सनियम परिवृत्तता, अनियम परिवृत्तता, विशेष परिवृत्तता, अविशेष परिवृत्तता, साकांक्ष्य, अपदयुक्त, सहचर भिन्न, प्रकाशित विरूद्ध, अनुवाद अयुक्त, त्यक्त पुनः स्वीकृत, अर्थ अश्लील आदि अर्थ दोष होइत अछि।

रस दोष—रसोन्मीलनक विषय मे प्राचीन आचार्यलोकनि कतिपय आधारभूत नियमसभक निर्देश कयने छथि, तकर उल्लंघन रस-दोष थिक।

1. **स्वशब्दवाच्यता**—रस सर्वदा व्यंजनाशक्ति द्वारा उन्मीलित होइत अछि। अभिद्या द्वारा ओकर प्रकाशन नहि भ' सकैछ। अतः रसक श्रृंगार आदि शब्द द्वारा कथन अनुचित थिक। एहि सँ स्वशब्दवाच्यता नामक रसदोषक उदय होइत अछि। काव्यानुशासन मे हेमचन्द्र कहने छथि—रसस्थायिव्यभिचारिणां स्व शब्देन वाच्यत्वम्। आ रस गंगाधर मे पंडितराज जगन्नाथ कहने छथि—एवं स्थायिव्यभिचारिणामपि शब्दवाच्यत्वं दोष। यथा—

ओहि शूरक भेल हमरा जखन दर्शन
वीर रस उमड़ल ह्रदय मे प्रबल तत-क्षण।

एहिठाम वीरताक अभिव्यक्ति विभाव आदिक द्वारा नहि भ' वीर रस शब्दक द्वारा भेल अछि।

2. काव्योक्ति मे अनुभाव तथा विभावक उन्मीलन सरस स्वाभाविक रूपें होमक चाही। यदि विभाव-अनुभावक कष्ट-कल्पना सँ रसक प्रतीति हो तँ से रसदोष थिक—

एवं विभावानुभावयोरसम्यक्
प्रत्यये विलम्बेन प्रत्यये
वा न रसास्वाद इति तयो र्दोषत्वम्।

रसगंगाधर।

यथा—

रहि नहि चाहिय विगत मति
चित्तहु भरल अपाय
विषमदशा भ' गेल अछि
कि हो आब उपाय?

ई वियोगिनी नायिकाक दशा वर्णन थिक। रति नहि चाहय आदि अनुभाव द्वारा केवल वियोगेटा नहि अपितु भयानक आ वीभत्स-रस सेहो सूचित होइत अछि। अतएव विप्रलम्भ शृंगारक विभाव विरहिणी नायिकाक प्रतीति कष्ट-कल्पना सँ होइत अछि।

3. वर्णनीय रसक विरोधी रसक सामग्री (विभावादि)क वर्णन नहि होमक चाही। विभावादि प्रातिकौल्यं रसादेर्दोषः।—हेमचन्द्रकृत काव्यानुशासन। एहि लेल रसक पारस्परिक विरोधक भाव जानब आवश्यक।

(क) शृंगारक विरोधी करुण, वीभत्स, रौद्र, वीर, भयानक आ शान्त रस थिक।
(ख) वीरक विरोधी भयानक आ शान्त रस थिक।
(ग) करुण रसक विरोधी हास्य आ शृंगार थिक।
(घ) हास्य रसक विरोधी भयानक या करुण थिक।
(ङ) भयानक रसक विरोधी हास्य, शृंगार, वीर आ शान्त थिक।
(च) शान्त रसक विरोधी रौद्र, शृंगार, हास्य, भयानक आ वीररस थिक।
(छ) वीभत्सक विरोधी शृंगार थिक।
(ज) रौद्ररसक विरोधी हास्य, शृंगार आ भयानक थिक।

ई दोष तीन प्रकारें होइत अछि।

एक आलम्बन विरोध—अर्थात् विरोधी रस सभक केवल एके आलम्बन होएबाक कारणे विरोध। वीर रस केँ शृंगारक संग एक आलम्बन मे विरोध अछि। कारण जे जाहि आलम्बनक कारणे शृंगार रस उत्पन्न होइत अछि, ओही आलम्बनक कारणे वीर-रसक उत्पत्ति होयबा मे दुहू रस आस्वादनीय नहि रहि सकैत अछि। रौद्र, वीर वीभत्सक संग सम्भोग शृंगारक एक आलम्बन मे विरोध अछि कारण जे जकरा संगे-संगे प्रेम-व्यापार भ'रहल हो, तकरा पर क्रोध आ घृणा भेला सँ शृंगारक आस्वाद नहि रहि सकैत अछि। विप्रलम्भो शृंगार केँ वीर, करुण, रौद्र एवं भयानकक संग एक आलम्बनक कारणे विरोध अछि।

एक आश्रय विरोध—अर्थात् परस्पर विरोधी रससभक केवल एके आश्रय

होयबाक कारणे विरोध। वीर रस केँ भयानकक संग एक आश्रय मे विरोध अछि, कारण जे निर्भीक आ उत्साही पुरुष वीर होइत अछि, जँ ओहि व्यक्ति मे भय दर्शित हो तँ वीरत्व कोना संभव भ' सकैछ?

नैरन्तर विरोध—अर्थात् दू विरोधी रसक बीच मे कोनो तेसर अविरोधी रसक व्यंजना नहि भेला सँ विरोध। शान्त केँ शृंगारक संग आ वीभत्सक संग नैरन्तर विरोध अछि।

रसक विरोधा-विरोध प्रकरण मे 'रस' पद सँ स्थायीभाव बूझक चाही।

रस शब्देनात्र स्थायीमान उपलक्ष्यते—काव्य प्रकाश।

करु मानिनी, मान छोड़िक'
शीघ्रे प्रेम-सुधा-रस-पान
यौवन केर रसाल-योगमे
कालरोग अछि अति बलवान।

मानिनी नायिकाक प्रति उक्ति थिक, अतः विप्रलम्भ शृंगार भेल एहिठाम काल-रोगक कथन द्वारा यौवनक अस्थिरता सूचित कयल गेल अछि। ई शृंगार रसक विरोधी शान्त रसक उद्दीपन विभाव थिक, अतः दोष थिक।

क्रमांक 4 सँ 10 धरिक निम्नलिखित सातो टा रस-दोष कोनो एक पद्य मे नहि अपितु काव्य वा नाटकक प्रबंध-रचना मे भ' सकैत अछि तँ एहि दोष सभक उदाहरण नहि देल जा रहल अछि।

4. रसक पुनर्दीप्ति—कोनो रसक परिपाक भ' गेला पर ओहि रसक पुनः वर्णन करब दोष थिक।

5. अकाण्ड प्रथन—असमय मे रसक विस्तार करब दोष थिक।

6. अकाण्ड छेदन—वर्ण्यमान रसक असमय मे उच्छेद (रसभंग) क' देब दोष थिक।

7. अंगाति विस्तृति—प्रधान रसक प्रतिकूल अंगीक (नायकक) एहन वर्णन करब जाहि सँ अप्रधान रसक विस्तृत वर्णन हो, दोष थिक।

8. अंगीक अनुसंधान—काव्य मे अंगीक वर्णन एवं अनुसंधान नहि क' कोनो रूपें ओकरा बिसरि जायब दोष थिक।

9. प्रकृति-विपर्यय—प्रधान नायकक जे प्रकृति (दिव्य-देवता आ दिव्य-मनुष्य, दिव्यादिव्य दुहू गुणक मिश्रित भाव) तकर अनुरूप वर्णन नहि क' यदि प्रतिकूल वर्णन हो तँ से दोष थिक।

10. अनंग वर्णन—एहन रसक वर्णन करब, जाहि सँ प्रकरणगत रस केँ

किछु लाभ नहि हो, दोष थिक। जेना—

(क) देश विरुद्ध—स्वर्ग मे वृद्धत्व, व्याधि आ पृथ्वी पर अमृतपान आदि।

(ख) काल विरुद्ध—शीत काल मे जल बिहार, ग्रीष्म मे अग्नि सेवन।

(ग) वर्ण विरुद्ध—ब्राह्मणक शिकार करब, क्षत्रियक दान लेब आदि।

(घ) आश्रम विरुद्ध—संन्यासीक भोग-विलास करब।

(ङ) अवस्था विरुद्ध—बालक आ वृद्धक स्त्री-सेवन करब।

(च) आचरण स्थिति विरुद्ध—दरिद्रक धनाढ्य जकाँ आ धनवानक दरिद्र जकाँ वर्णन।

उपर्युक्त अनौचित्य वर्णन सँ रसानुभव मे आनन्द नहि प्राप्त होइत अछि।

अनौचित्याहतेनान्यद्रसभंगस्य कारणम्।
प्रसिद्धौचित्य बन्धस्तु रसस्योपनिषत् परा ध्वन्यालोक।

एहि तरहें काव्यक दोष सभ मे रसदोष अन्तरंग-दोष मानल जाइत अछि तथा आन-आन दोष तदपेक्षया बहिरंग दोष मानल जाइत अछि।

ई दोष दू वर्गक होइछ। नित्य-दोष जे कोनो तरहें सुधरि नहि सकय। जेना च्युत-संस्कार दोष। अनित्य दोष, जे अवस्था विशेष मे दोषत्व केँ छोड़ि गुण रूप बनि जाय। जेना श्रुतिकटु दोष शृंगार रस मे दोष थिक मुदा वीर, वीभत्स वा रौद्र रस मे गुण थिक।

संक्षेप मे इएह काव्यक दोष थिक जाहि सँ मुक्त भेला पर कोनो काव्य प्रशंसनीय आ उत्तम भ' सकैत अछि। तें काव्यक रचना कयनिहार केँ दोष सभ सँ मुक्त रहक हेतु एकर सम्यक ज्ञान आवश्यक कहल गेल अछि।

मिथिला मिहिर : 22 सितम्बर 1963

शेक्सपियर आ कालिदास

अंग्रेजी साहित्य मे महाकवि विलियम शेक्सपियर कें सर्वोच्च कवि आ नाटककारक स्थान प्राप्त छनि। 'लभ्स लेबर्स लॉस्टस' सँ आरम्भ क' रिचार्ड थर्ड टेम्पेस्ट, कॉमेडी ऑफ विंडसर, रोमियो जूलियट, मर्चेन्ट ऑफ वेनिस, हेनरी सिक्स, मच ए डू एबाउट नथिंग, जूलियस सीजर, हैमलेट, ओथेलो, किंगलियर, मैकबेथ सनक विश्व-विख्यात नाटकक क्रम मे हेनरी अइट धरि (1590 सँ 1613 ई. धरि) 37 नाटक, दूटा पैघ-पैघ कविता आ प्राय: डेढ़ सय सँ किछु बेसी सॉनेटक अमर रचना कयनिहार 23 अप्रैल 1564 कें उद्भूत महाकवि विलियम शेक्सपियर वस्तुत: संसारक नमस्य छथि।

जहिना महाकवि कालिदासक कृति सभ मे तत्कालीन भारतक जनजीवनक अनुभूति साकार भेल छनि तहिना महाकवि शेक्सपियरक नाटक सभ मे महारानी एलिजाबेथक समयक साहित्य-समृद्धि परिपूर्ण छनि। ओहि नाटक सभ मे ओहि समयक सामाजिक स्थितिक साहित्यिक अभिव्यंजना नीक जकाँ भेल अछि। शेक्सपियरो सँ पूर्व यद्यपि 'मोरेलिटी' आ 'मिरेकिल' सनक रूपक विद्यमान छल (जकरा सभक भाषेटा नहि, भाव बोधो क्लिष्ट छल) तथापि शेक्सपियरे सर्वप्रथम नाटकीय संविधान कें दृष्टि मे राखि लोकरुचिक अनुरूप बोधगम्य रीति सँ नाटकावलीक निर्माण कयलनि।

ठीक तहिना महाकवि कालिदास सभक समक्ष भासक तेरहोटा नाटक आ सौमिल्ल एवं कवि पुत्र आदि नीक-नीक नाटकारक कृतिक अछैतो कालिदासे सर्वप्रथम एहन नाटकावलीक रचना कयलनि जे अपूर्व कहल जाइत अछि।

प्रत्येक रचनाक पृष्ठ मे व्यक्ति आ व्यक्तिक पृष्ठ मे एक जाति सन्निहित रहैत अछि। कालिदास अपन जाति तथा जातीय प्रतिभाक विश्वसनीय प्रवक्ता छलाह। महर्षि अरविन्दक कथन छलनि जे वाल्मीकि, व्यास आ कालिदास प्राचीन भारतवर्षक इतिहासक सारतत्व थिकाह तथा आन सम्पूर्ण सामग्रीक अभावो मे ओ ओकर

सांस्कृतिक इतिहास केँ आलोकित करैत रहताह। जाहि तरहें वाल्मीकि मानवात्माक विकास मे भारतीय जातिक मुख्यतया नैतिक मनोवृत्तिक तथा व्यास मुख्यतया बौद्धिक मनोवृत्तिक व्याख्यापक छथि ओहि तरहें कालिदास प्रधानतया ओकर भौतिक मन:स्थितिक प्रतिनिधि एवं व्याख्याता थिकाह।

ठीक तहिना शेक्सपियर अपना युगक दोसर-दोसर नाटककार—ग्रीन, मार्लो, पील, नैश, बेन, जॉनसन जकाँ नियमित रूप सँ शिक्षा प्राप्त विद्वान नहियो रहैत साक्षात् जीवन सँ एहि रूपें शिक्षा पौने छलाह जे प्रत्यक्ष आ परोक्ष जीवनक बाह्य एवं अंतरक सुन्दर तथा कुरूप तथ्य, सरल आ जटिल तत्त्व, निगूढ सँ निगूढ रहस्य, कुटिल चक्रजाल आ सूक्ष्म सँ सूक्ष्म अन्त: सत्यक अनुभव-सिद्ध-ज्ञान हुनक असाधारण अन्तश्चेतना आ सहज अनुभूतिशील जाग्रत चेतना केँ उपलब्ध छलनि। फलत: अपन जातीय जीवनक मर्मगत यथार्थताक मूलगत सन्देशक अभिव्यक्ति हुनक रचना मे भेल अछि। जाहि प्रकारें कालिदास अपन पूर्ववर्ती रचना पुराणादि सँ कथानक ल' क' ओहि निर्जीव तथा निष्प्राण कथानक मे अपन अद्वितीय प्रतिभा-पीयूष सँ एक अनुपम जीवन्त प्राणप्रतिष्ठा क' मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशी, आ अभिज्ञान शाकुन्तलक रचना कयने छथि तथा अपना प्रवीण प्रतिभाक पारस सँ संयुक्त क' एक सर्वथा अभिनव सृष्टि क' देने छथि, तहिना शेक्सपियरक अधिकांश नाटक यद्यपि प्राचीन ग्रीस आ रोमक पौराणिक वा ऐतिहासिक कथा सभपर आधारित अछि, तथापि ओ ग्रीक आ रोमन युगक जीवनक वर्णन अपन युगक प्रत्यक्ष एवं यथार्थ जीवनक आधारपर तेना कयने छथि जे ओहि मे एक अभिनव चमत्कार उत्पन्न भ' गेल अछि।

मानवीय संवेदना आ प्रतिवेदनाक मूलगत भावतत्त्व सभ युग मे समान होइत अछि। तें जखन कोनो युगक प्रवृत्ति तथा भाव-वेदनाक चित्रण अपन अन्तरतम अनुभूतिक संग करैत छथि तँ ओ अपना रचना द्वारा अपन अनुभूतिक सूत्र युग-युग सँ जोड़ि दैत छथि आ तखन एहने रचना शाश्वत-रचना कहबैत अछि। एहि दृष्टियें मानवक सामूहिक अवयेना-सागरक मन्थन क' महाकवि कालिदास आ महान् नाटककार शेक्सपियर दुहू गोटे विभिन्न पात्र सभक पृथक-पृथक मानसिक स्थिति सभ केँ प्रत्यक्ष क' तेहन सूक्ष्म-सँ-सूक्ष्म अन्तर्विश्लेषण कयने छथि जे आइयो लोक मुग्ध आ चकित भ' जाइत अछि।

एहि सभक कारणे शेक्सपियर आ कालिदास दुनू एहन महान नाटककार एवं कवि भेलाह अछि जनिक असाधारण कृतित्व केँ आइ समस्त काव्य प्रेमी संसार बड़े श्रद्धा सँ स्मरण करैछ। एहने कविलोकनिक लेल कहल गेल अछि—

'कालिदासक नाटक विदूषक आ शेक्सपियरक मूर्ख, कल्पितविषयक समावेश, गद्य-पद्यक मिश्रण, हास्य आ गम्भीर विषयक मेल, पात्र सभक वर्गगत चरित्र-चित्रणक अपेक्षें व्यक्तिगत चरित्र-चित्रणक व्यापकता आदि दुनू नाटककार मे समान रूपें देखल जाइत अछि।'

एही सभक कारणे शेक्सपियर केँ यूरोपक कालिदास कहल जाइत अछि। मुदा एतबा धरि सत्ते जे शेक्सपियर भलें यूरोपक कालिदास होथि किन्तु कालिदास केँ भारतक शेक्सपियर कहब समीचीन नहि।

एहि सम्बन्ध मे पहिल विषय तँ ई जे शेक्सपियर सँ प्राय: एक-डेढ़ हजार वर्ष पूर्व महाकवि कालिदास भेल छलाह। विभिन्न विद्वानलोकनि पृथक-पृथक हुनक काल मानने छथि। एहि तरहें शेक्सपियर सँ एक-डेढ़ हजार वर्ष पूर्वे महाकवि कालिदासक जाहि प्रकारक शाश्वत-रचना भेल ताहि प्रकारक परिपूर्णत: शेक्सपियर एतेक दिनुका बादो भेलापर अपना रचना मे नहि आनि सकलाह। दोसर बात ई जे कालिदासक काव्यात्मक प्रतिभा जतेक परभूमि केँ आच्छन्न कयने अछि ततेक शेक्सपियरक प्रतिभाक सीमा सँ बहुत आगाँ अछि। कालिदास महाकाव्य, गीति-काव्य एवं नाटकक प्रणयन कयलनि आ शेक्सपियरक प्रतिभा केवल नाट्य-कले केँ सुसज्जित करबा मे ओझरायल रहि गेल। प्रकृतिक चित्रण तथा मानव जीवन आ प्रकृति जीवनक समस्याक निदर्शन जेहन कालिदासक कृति सभ मे दृष्टिगोचर होइत अछि तेहन शेक्सपियरक रचना मे तकनहुँ नहि भेटि सकत।

कालिदास यद्यपि मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशी तथा अभिज्ञान शाकुन्तल नामक तीनटा नाटक लिखने छथि, तथापि एतबे रचना ततेक ने परिपूर्ण अछि जे परवर्त्ती आलोचकलोकनि उक्त नाटक सभक कारणे उद्घोषणा कयलनि-काव्येषु नाटकं रम्यम्, ओहू तीनू मे शाकुन्तल तँ आरो अद्भुत-अनुपम अछि। तें तत्र रम्या शकुन्तला। वस्तुत: कालिदासक काव्य सरस्वतीक सर्वोत्कृष्ट प्रसाद अभिज्ञान शाकुन्तल थिकनि।

कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञान शकुन्तलम्
तत्रापिच चतर्थोऽको यत्र याति शकुन्तला।

तें संक्षेप मे एहि नाटकक चर्चा एहिठाम प्रस्तुत अछि। शाकुन्तलक चित्रपट अत्यन्त व्यापक तथा समृद्ध अछि। एक नव-प्रस्फुटित यौवना प्रकृति किशोरी अछि जे आश्रमस्थ लता-वृक्षक सेवा-परिचर्या करैत अछि, यैह थिक कथानकक आरम्भ-विन्दु। ओ किशोरी अन्तत: राज-महिषी बनि जाइत अछि ई थिक कथानकक पर्यवसान विन्दु। एहि दुनू विन्दुक अभ्यन्तर सौन्दर्यक पवित्रता एवं मादकता, प्रेमक

निश्छलता एवं विवशता, प्रकृतिजन्य सरलता एवं मुग्धता, ऋषिकुलक उदारता एवं दयालुता, महर्षि कण्वक आदर्श वात्सल्य, दुर्वासाक निर्मम दण्ड, दुष्यन्तक प्रणय, विस्मरण, विरह एवं अनुपात वासनाक मांसलताक प्रक्षालन तथा आत्माक सुशान्त निर्मलीकरण, रोमांसक आसव एवं आर्य संस्कृतिक पीयूषक मंगलमय सम्मिलन, प्रेयस् आ निःश्रेयसक मनोग्राही ग्रथिबन्धन, एहि समस्त उपादान कें मिलाक' कालिदास शाकुन्तल मे जे अभूतपूर्व काव्य-रस प्रस्तुत कयलनि अछि से सरिपहुँ अपूर्व अछि। सन् 1784 ई. मे रायल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगालक आदेशानुसार सर विलियम जोन्स नामक अंग्रेज विद्वान नाटकक सर्वप्रथम अंगरेजी अनुवाद कयलनि। एहि तरहें पढ़लापर एहि नाटकक विदेशी पाठकलोकनिपर असाधारण प्रभाव पड़लनि। जर्मनीक प्रसिद्ध कवि गेटे तँ शाकुन्तलम् पढ़लाक बाद स्वर्णाक्षर मे लिखबा योग्य उद्‌गार व्यक्त कयलनि। ओ मूल जर्मन भाषा मे अछि जकर अनुवाद ई थिक—जँ यौवन-वसन्तक पुष्प-सौरभ आ प्रौढ़त्व, ग्रीष्मक मधुर फल परिपाक देख' चाहैत छी अथवा अन्तःकरण कें अमृत जकाँ सन्तृप्त आ मुग्ध कयनिहार वस्तुक अवलोकन कर' चाहैत छी, किंवा स्वर्गीय सुषमा आ पार्थिव सौन्दर्य, एहि दुनूक अभूतपूर्व सम्मिलनक अपूर्व छटा देख' चाहैत छी तँ एकबेर अभिज्ञान शाकुन्तलक अनुशीलन आ मनन करू।

वस्तुतः अभिज्ञान शाकुन्तल महाकविक अन्तिमो नाटक थिक आ सर्वश्रेष्ठो। नाट्य-कलाक समस्त वैशिष्ट्य सँ समन्वित एहि नाटक मे शीलसत्व-सौन्दर्य पूर्ण भारतक आत्माक जेहन नाटकीयरूप प्रस्तुत भेल अछि, तेहन अन्यत्र नहि। दुष्यन्त आ शकुन्तला ई दुनू नाटकीय चरित्र सृष्टिक दू अप्रतिम प्रतिमान थिकाह।

शाकुन्तलक तुलना शेक्सपियरक सुखान्त नाटक 'टेम्पेस्ट' सँ कयल जाइत अछि आ शकुन्तलाक तुलना ओकर नायिका 'मिरांडा' सँ। दुनू नाटक महान रचना थिक, मुदा दुनूक कल्पना मे मौलिक अन्तर अछि। टेम्पेस्टक संक्षिप्त कथा-वस्तु एना अछि—

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः
नास्ति येषां यशः कार्ये जरामरणजं भयम्।

एक द्वीपक केवल दू गोटे निवासी छथि—प्रास्पिरो आ ओकर नवयौवना सुन्दरी कन्या मिरांडा। प्रास्पिरो बारह वर्ष पूर्व इटलीक एक नगरक ड्यूक छलाह। हुनका इन्द्रजाल विद्याक व्यसन छलनि। अपन अध्ययनशील आ एकान्तसेवी स्वभावक कारणे राज्यक देखा-सुनीक भार अपन छोट भाइ एंटोनियोपर द' प्रास्पिरो निश्चिन्त छलाह। एंटोनियो नैपुल्सक राजा आ प्रजा कें मिलाक' षड्यन्त्र क' प्रास्पिरो कें अधिकारच्युत

क' देलकनि आ एक छोट सनक नाव पर तीन-चारि वर्षक मिरांडा सहित प्रास्पिरो केँ चढ़ाक' समुद्र मे भसा देलकनि। पिता-पुत्री कोनो तरहें एक द्वीपक कात लगलाह आ ओहि निर्जन द्वीप मे रह' लगलाह। प्रास्पिरो मिरांडा केँ पढ़ब' लिखब' लगलाह आ अपने इन्द्र-जालक पुस्तक सभक अध्ययन मे लागल रहलाह। संगहि इन्द्रजाल विद्या सँ एरियल नामक उत्तम कोटिक एकटा प्रेत आ कैलिबन नामक अधम श्रेणीक प्रेत केँ वशवर्ती बनाक' एहि शक्तिशाली समुद्रक लहरि आ बसातपर शासन कर' लगलाह। एक दिन प्रास्पिरो समुद्र मे अन्हड़-बिहाड़ि उठा देलथिन। ओहि मे एकटा बड़का जहाज बाझि गेल। जहाजपरक लोक सभ केँ डूबैत देखि मिरांडा करुणार्द्र भ' अपन पिता सँ ओकरा लोकनि केँ बचा लेबाक प्रार्थना कर' लागलि। बेटी केँ आश्वासन द' सभ कथा बुझाक' अपन ऐन्द्रजालिक ठेङा सँ प्रास्पिरो मिरांडा केँ सुता देलनि आ जहाज केँ कात मे लगबा लेलनि। नैपुल्सक राजकुमार फर्डिनैंड केँ द्वीपक एक कक्ष मे एरियल द्वारा सुरक्षित राखल गेल। ओकर पिता आ एंटोनियो तक्का-हेरी कर' लागल। प्रास्पिरोक आदेशें राजकुमार एरियल द्वारा ओत' अनाओल गेल। ओ मिरांडा सन अप्रतिम सुन्दरी केँ देखि अत्यन्त विस्मित भेल आ ओकरा ओहि द्वीपक अधिष्ठात्री देवी कहिक' सम्बोधित कयलक। मिरांडा सुन्दर राजकुमारपर मुग्ध भ' गेलि। दुनू मे प्रणय-भाव जाग्रत भेलैक। ओकरालोकनिक प्रेम-परीक्षार्थ प्रास्पिरो राजकुमार केँ बड़का-बड़का ढेङ एकत्र करबाक काज द' अपने गुप्तरूपें स्थितिक परिज्ञानार्थ नुका रहलाह। राजकुमार एहि तरहक काजक अभ्यस्त नहि रहबाक कारणे लगले थाकि गेल। अपन पिताक अनुपस्थितिक लाभ उठाक' मिरांडा उपस्थित भ' गेलि आ तखन दुनू गोटे एक-दोसरा केँ प्रेम-निवेदन कर' लागल। प्रास्पिरो केँ जखन विश्वास भ' गेलैक जे आब हमरा कन्या सँ राजकुमार विवाह क' लेत तँ बेटीक नैपुल्सक रानी होयबाक आयोजित संभावना सँ बड़े प्रसन्न भेलाह। अन्ततः प्रास्पिरोक आज्ञा सँ नैपुल्सक राजा आ एंटोनियो केँ एरियल ओत' उपस्थित कयलक। चिन्हा-परिचय भेलापर राजा आ एंटोनियो दुनू गोटे अपन पूर्वकृत जघन्य कृत्यक हेतु प्रास्पिरो सँ क्षमा याचना कर' लागल। तावत मिरांडा आ फर्डिनैंड सेहो ओत' पहुँचल। एहि मिलन मे अपराधी अपन कृत्यपर अनुताप व्यक्त करैछ, प्रास्पिरो एहि सभ केँ बिसरि जयबाक उदारतापूर्वक अनुरोध करैत छथि। ओ एरियल केँ मुक्त क' दैत छथिन आ सभ गोटे नैपुल्स अबैत छथि जत' मिरांडा आ फर्डिनैंडक विवाह बड़े समारोह सँ सम्पन्न होइछ।

मिथिला मिहिर : 2 अगस्त 1964

कालिदासक उपमा-सौन्दर्य

काव्यक दृष्टि सँ उपमा एक बड़ व्यापक तथा महत्त्वपूर्ण अलंकार मानल गेल अछि। अलंकार-मतक प्रधान प्रवर्त्तक आचार्य भामह आ भामहक टीकाक उद्‌भट, रुद्रट आदिक मतें अलंकार केँ काव्यक जीवन बूझल गेल अछि। चन्द्रालोक मे कहल गेल अछि जे जाही तरहें आगि केँ उष्णतारहित मानब उपहासास्पद थिक ताही तरहें काव्य केँ अलंकारहीन मानब अस्वाभाविक थिक—

अंगी करोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृती
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलं कृती।

भरत मुनि अपना नाट्यशास्त्र मे चारि प्रकारक अलंकार मानने छथि—

उपमा रूपकं चैव दीपकं यमकं तथा
अलंकारास्तु विज्ञेयाश्चत्वारो नाटकाश्रयाः।

एहि प्रकारें भरत मुनि उपमा, रूपक, दीपक आ यमक मे आदि अलंकार 'उपमा'क विशद वर्णन कयने छथि।

विचार आ विश्लेषण कयला सँ ई स्पष्ट प्रतिभासित होइत अछि जे उपमा वस्तुतः सभ अर्थालंकारक मूल थिक। उपमाक एहि महत्त्व केँ प्रतिपादित करैत कहल गेल अछि जे उपमे एकमात्र ओ नटी थिक जे काव्यरूपी रंगमंचपर विभिन्न आ विचित्र भूमिका मे नृत्य करैत अछि तथा काव्यमर्मज्ञ सभक मनोरंजन करैत अछि—

उपमैषा शैलूषी संप्राप्ता चित्रभूमिकाभेदान्
रंजयति काव्य-रंगे नत्यन्ती तद्विद्वां चेतः।

भारतीय वाङ्मयक सर्वप्रिय रससिद्ध महाकवि कालिदास अपन समस्त काव्यगुणक बीच जाहि विशिष्ट कृतित्वक हेतु काव्यमर्मज्ञसभक हृदय सम्राट भेलाह से छल उपमाक अनुपम उपयोग तथा सशक्त प्रयोग। तें 'उपमा कालिदासस्य'

उक्ति लोकप्रसिद्ध अछि। हुनक उपमा वैशिष्ट्यक किछु उदाहरण एहि ठाम द्रष्टव्य थिक।

महाकवि अपना रघुवंश महाकाव्यक प्रथम श्लोक मे जगज्जननी पार्वती तथा जगत्पिता परमेश्वर शंकरक वंदना करैत कहने छथि—

वागर्थाविच संपृक्तौवागर्थप्रतिपत्तये
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।

अर्थात् शब्द आ ओकर अर्थ जेना परस्पर संश्लिष्ट रहैत अछि तहिना परस्पर एकीभूत अभिन्न बनल पार्वती आ शिव जे जगन्माता एव जगत्पिता छथि तिनका शब्द आ अर्थक प्राप्ति हेतु हम वंदना करैत छियनि। एहिठाम अपन अद्‌भुत उपमाक प्रयोग द्वारा महाकवि अर्द्धनारीश्वरक जाहि समग्र स्वरूप निर्दशन कयने छथि से अन्यत्र दुर्लभ अछि। जेना शब्दक उच्चारण मात्र सँ अर्थक स्वरूप स्वतः स्फुट भ' जाइछ, शब्द आ अर्थक कोनो विभाजक रेखा नहि देखाओल जा सकैछ, तहिना पार्वती शंकरक (अर्द्धनारीश्वरक) अभिन्नताक अभूतपूर्व अभिव्यक्ति एहि उपमा सँ भ' गेल अछि, जे वस्तुतः महाकविक अभिप्रेत छलनि। संगहि काव्यपक्ष मे सेहो एहि उपमाक प्रयोग अत्यन्त सटीक अछि। 'अर्थ' भेल काव्यक अन्तर्निहित भाव आ शब्द भेल ओकरा प्रकट करबाक माध्यम, ई दुहू ओहिना नित्य सम्बन्ध युक्त थिक जेना सृष्टिक आदि माता ओ आदि पिता पार्वती परमेश्वर नित्य सम्बन्धयुक्त थिकाह। तें उपयुक्त अभिव्यंजनाक बिना जेना अर्थ असतमात्र थिक तहिना अर्थक घनिष्ठ योग सँ रहित अभिव्यंजना शब्दाडम्बर आ निरर्थक थिक। काव्यक शब्दगत आ अर्थगत विश्लेषण वस्तुतः यैह थिक। उक्त उपमाक आध्यात्मिक विश्लेषण सेहो अपूर्व अछि। भारतीय आध्यात्मिक चिन्तकलोकनिक मतें शिव थिकाह निराकार, विशुद्ध, चिन्मय, भावमात्र-तनु, जनिका त्रिगुणात्मिका शक्तिये भव-तनु मे प्रकट करैत छथि। मायाक माध्यमे सँ बह्मक आभास विश्व मे भासित होइत अछि। प्रकृतिक आश्रय बिनु लेने पुरुष व्यक्त नहि भ' सकैत छथि। ठीक तहिना शब्दक आश्रय सँ अर्थ नीक जकाँ व्यक्त होइत अछि। शिवाश्रयक बिना जेना शक्तिक लीला नहि भ' सकैत अछि तहिना अर्थक बिना शब्दक कोनी किम्मति नहि होइत अछि। शक्तिहीन शिव जँ 'शव' थिक तँ शिवहीन शक्ति निरर्थक थिक। शब्द आ अर्थक परस्पर यैह सम्बन्ध होइत छैक जे एहि उपमा द्वारा नीक जकाँ परिस्फुट भेल अछि। वास्तव मे अर्थक भावरूप शिव एवं शब्दक शक्ति परस्पर अन्योन्याश्रित होइत अछि जेना उमा महेश्वर छथि।

तें कुमारसम्भव मे पार्वती प्रदानक प्रसंग महर्षि अंगिकाक मुँहे ओ कहौने छथि—

तमर्थमिव भारत्या सुतया योक्तुमहेसि।

अर्थात् भारती (शब्द)क संगे अर्थ जकाँ अहाँक कन्या पार्वतीक संगे महादेवक योग उचित थिक। एहि तरहें शब्द आ अर्थक ओहि सहितत्व एवं अद्वय योग मे सहज विश्वासे कालिदासक एहि उपमाक मूल रहस्य थिक जकर प्रतिपालन ओ अपना समस्त काव्य-रचना मे कयने छथि।

ओना तँ कालिदास प्रत्येक उपमा अनुपात आ औचित्यक दृष्टि सँ अक्षुण्ण, अनिन्द्य एवं अद्भुत अछि, मुदा महादेवक सम्बन्ध मे तँ जतए कतहु महाकवि उपमाक प्रयोग कयलनि अछि—तेहन सावधान प्रयोग बुझना जाइछ जे देवाधिदेवक महिमा मे कनेको न्यूनताक बोध नहि भ' सकैछ।

कुमारसंभवक एक प्रसंग अछि—योगस्थ महादेव तप: समाधि मे लीन छथि, लतागृहक देहरिपर नन्दी द्वारपाल रूप मे बैसल मुँहपर आंगुर राखि प्रथमगण केँ चंचलताक परित्याग करक मौन इंगित कए रहल छथिन। समस्त गाछवृक्ष निष्कम्प अछि, भ्रमरगण निश्चल अछि, चिड़ै-चुनमुनी सभ नीरव अछि। एहि अवसर मे अकाल वसन्तक समागम होइत छैक आ कामदेवक वाण चलैत अछि। वाण लगला सँ एक क्षणक लेल योगीश्वर शंकरक विराट् आ प्रशांत मोन मे कनेक चांचल्य उद्भूत होइछ, समाधिस्थ शिवक ध्यान भंग होइछ। एहि स्थितिक अभिव्यक्ति लेल बड़े मार्मिक उपमाक प्रयोग भेल अछि।

हरस्तु किंचित परिलुप्तधैर्यश्चन्द्रोदयारम्भ इवाम्बुराशि:
उमामुखे विम्बफल धिरोष्ठे व्यापारयामास विलोचनानि।

अर्थात् चन्द्रोदयक आरम्भ मे अम्बुराशि समुद्र जकाँ कनेक परिलुप्त धैर्य सन भेल महादेव पार्वतीक विम्बफल (तितपरड़ीक पाकल लाल फड़) सदृश अधरोष्ठ दिस दृष्टिपात कयलनि। महादेवक ध्यान समाहित प्रशांत चित्तक ईषत् धैर्य-च्युति जेना चन्द्रोदयक आरम्भ मे विराट वारिधिक वक्ष मे ईषत् उद्वेलना। कतेक अद्भुत अछि उपमाक प्रयोग?

शिव थिकाह अम्बुराशि। अम्बुक नाम थिक जीवन, शिव थिकाह जीवनक मूलतत्त्व, सृष्टिकर्त्ता—जगत्पिता। अम्बुराशि थिक प्रलय-सूचक-प्रलयपयोधि; महाप्रलय भेलापर केवल जले रहैछ, हर थिकाह संसारकर्त्ता, प्रलयोपरांत केवल शिव रहैत छथि—शिवतत्त्व मात्र। चन्द्रोदयक आरम्भ मात्रक स्थिति अछि। चन्द्रोदय माने समस्त सृष्टिक आह्लादकारक। कुमारक जन्म भेलापर असुरत्रस्त लोक आह्लाद

पाओत, ई तकरे भूमिका थिक। चन्द्रमा केँ अपना किरण नहि छैक, सूर्य सँ किरण भेटैत छैक, कामदेव देवतालोकनि सँ प्रेरित भ' शर-सन्धान कयलनि अछि जाहि सँ शिव परिलुप्तधैर्य भेलाह अछि। आ हुनक दृष्टिपात 'उमामुखे' होइत अछि, परम्परागत संस्कारें उमामुख चन्द्रमा जकाँ अप्रत्यक्ष रूपें स्वयमेव अनुभूत भ' उठैत अछि। चन्द्रक उदय एखन नहि भेलैक अछि, उदयक आरंभिक मुहूर्त्त मे विराट अम्बुराशि मे जे ईषत् चांचल्य होइत अछि, केवल ओकरे द्वारा महादेवक योगसमाहित चित्तक चांचल्य मर्यादित रूपें अभिव्यक्त भ' सकैत छल।

सरिपहुँ महादेवक चित्त एहन विराट छनि जे समुद्र वक्ष जकाँ जहिना ओ उद्वेलित भ' सकैत छनि तहिना समुद्रे जकाँ भीषण रौद्र मूर्तियो धारण क' सकैत छनि। महादेवक विक्षुब्ध चित्तक समुद्रवत् प्रचण्डाघात मात्र सँ एक निमिष मे समस्त सृष्टि त्रस्त भ' उठत। एहि गर्भित सम्भावनाक पृष्ठभूमि मे देवाधिदेवक मोनक ईषत् उद्विग्नता कतेक सार्थक आ अनुपम रूप मे अभिव्यक्त भेल अछि?

वस्तुतः कालिदासक उपमा मे जे आनुपातिक सम्बन्धक आनुषंगिक संस्थापन अछि जे बड़ चमत्कारिक अछि। रूप-सादृश्यक द्वारा गुणकर्मक जे आनुपातिक सम्बन्ध परिस्फुट होइछ से अभिव्यक्ति केँ मधुर सँ मधुरतर आ गम्भीर सँ गम्भीरतर बना दैछ। एक टा दोसर चित्र अछि—काम-दहनक बाद उमा जखन महादेव द्वारा प्रात्याख्यात होइत छथि तँ बड़ मर्माहत भ' क' घर दिस केँ प्रत्यावर्तित होइत छथि। पिता हिमालय अपन दुलारि कन्याक एहि स्थिति केँ मनेमन बूझिक' द्रवित आ वत्सल भ' उठैत छथि। ओ चट द' आबिक' बेटी केँ कोर मे उठा लैत छथि।

सपदि मुकुलीताक्षी रूद्रसंरम्भभीत्या
दुहितरमनुकम्प्यामद्रिरादाय दोर्भ्याम्
सुरगज इव विभ्रत् पद्मिनी दन्तलग्नां
प्रतिपथगतिरासीद् वेगदीर्घीकृतांग:।

शिव द्वारा प्रत्याख्यात भेलापर रुद्रक कोपाग्नि सँ भयभीत, आँखि मुनने अपन दुलारि बेटिक मर्मन्तुद स्थिति देखि दयाद्रवित भेल हिमालय सहसा ओत' आबि, दुहू बाँहि पसारिक' कोर मे उमा केँ उठा लेलनि आ जेना सुरगज एरावत दन्तलग्न नलिनी केँ जुगताक' लेने चलैछ, तहिना पैघ-पैघ डेग दैत अपन शरीर विस्तृत क' विदा भेलाह।

नगाधिराज हिमालयक दुहू हाथ मे सुकुमारि उमा बूझि पड़ैत छथि जेना ऐरावतक दुहू दाँत मे संलग्न सुकोमल कमलिनी हो। कर्कश देह, धूसरवर्ण विराट हाथीक दुग्धधवल दुहू दाँत मे लेपटायल छोट-छीन सन कोमल कमलिनी जेना सुशोभित

हो तहिना नगाधिराज ऊभर-खाभर, धूसर, विराट वक्ष मे सटलि हिमश्वेत दुहू बाँहिपर उठाओल आतंकित, लज्जाकुल, लाल सन भेलि कोमलांगी तन्वी, उमा सुशोभित भ' रहलीह अछि। बलवान विराट हाथी जेना क्षणभरि मे गाछ-वृक्ष केँ तोड़ि-ताड़ि समस्त वन केँ भयत्रस्त क' दैछ, मुदा कखनो ओही भीषण बलवान हाथीक कर्कश शरीरक भीतर सँ एहन कोमल स्नेहभाव प्रकट होइछ जे ओ बड़े स्नेह सँ अतिशय कोमल कमलिनी केँ तेहन यत्न आ प्रेम सँ उठौने रहैत अछि जे ओकर कोनो दल केँ कनेको आघात नहि लगैक। तहिना जे हिमालय क्रुद्ध भेलापर निमिष मात्र मे सम्पूर्ण परिवेश केँ अस्तव्यस्त क' प्रचण्ड संहारक दृश्य उपस्थित क' दैत छथि तिनका छाती मे पितृस्नेहक वत्सल करुणा कतेक मधुर अछि?

कमलिनी सदृश उदास, मुरुझायलि, संकुचित तखुनका मुकुलित नयना पार्वतीक भीत, कुंठित, दयनीय मन:स्थिति, हिमालयक वात्सल्य, हठात् आगमन आ रूसलि कन्या केँ दुलार सँ उठा लेब, दुहू बाँहिक विस्तार, देहक विस्तार तथा पैघ-पैघ डेग द' क' वेग सँ प्रस्थान। वस्तुस्थितिक संगहि भाव-स्थितिक अद्‌भुत चित्र उपर्युक्त उपमाक माध्यमे एहिठाम साकार भ' उठल अछि।

कुमारसम्भवक एक टा आरो प्रसंग द्रष्टव्य अछि। महादेव बह्मचारीक छद्‌मवेष मे कठोर तपस्विनी पार्वतीक आश्रम मे अबैत छथि आ वार्त्तालापक क्रम मे बड़ दुराग्रह सँ शिव-निन्दा कर' लगैत छथि। पहिने तँ पार्वती बहुत प्रतिवाद करैत छथिन, पछाति हारिक' अपन अभीष्ट देवताक निन्दा सँ अकच्छ भ' क' दुहू कान मूनि लैत छथि आंगुर द' क'। मुदा वाचाल, चंचल, बह्मचारी, बटुक कोनो तरहें चुप्पे नहि होइत छथि। भारतीय संस्कृतिक परम्परा अछि जे अपना आश्रम मे आगत अतिथि केँ चलि जयबा लेल नहि कहल जा सकैछ। बटुकक वाचालता स्थिति केँ असह्य बना देने अछि। पार्वती तामसें आकुल-व्याकुल आ आवेशें उत्तेजित भेलि हठात् उठिक' अपनहि अन्यत्र चलि जयबाक वेगवती इच्छा सँ जाय लगैत छथि। हड़बड़ीक कारण स्तन-वल्कल ससरि जाइत छनि। डेग उठौने पराङमुख भेलि पार्वतीक हाथ पाछाँ सँ भगवान शंकर सहसा पकड़ि अपना रूप मे प्रकट भ' जाइत छथि। पार्वतीक मुँह दोसर दिस छनि तें हाथ पकड़ब केँ ओ धृष्ट बटुकक उद्‌दण्डता बुझैत छथि। फलत: पार्वतीक क्रोध आरो बढ़ि जाइत छनि। उत्तेजनापर उत्तेजना। क्रोधस्थिति पराकाष्ठापर पहुँचि जाइत छनि। एकदम असह्य भेलि ओ बड़े वेग सँ घूमिक' देखैत छथि—

तं वीक्ष्य वेपथुमती सरसांगयष्टि
नक्षेपणाय पदमुद्-धृतमुद्वहन्ती

मार्गाचल-व्यतिकरा-कुलितेव सिन्धुः
शैलाधिराजतनया न ययौ न तस्थौ।

जाहि इष्टदेवताक प्राप्ति लेल एतेक उग्र तपस्या पार्वती क' रहलीह अछि ताहि शंकर केँ सोझाँ मे प्रत्यक्ष देखि, घामें भीजलि आ आवेशें थर-थराइत गिरिराजनन्दिनी आगाँक हेतु प्रस्थानोद्यत चरण उठाइयोक' ने जाइये सकलीह आ ने ठाढ़िये रहि सकलीह। 'न ययौ न तस्थौ' एनमेन जेना पहाड़ द्वारा प्रतिरूद्ध गतिवाली वेगाकुल नदी हो। पार्वतीक हृदय मे जे एकहि संग प्रवाहित क्रोध, आक्रोश, आनन्द, अनुराग, लज्जा आ संकोचक भाव तरंगित भ' उठल तकरा सभमे सँ ककरो ने ओ प्रकटे क' पाबि रहल छलीह आ ने रोकिये पाबि रहल छलीह। सोझाँ मे ठाढ़ महादेव कालप्रवाहित नदीक समक्ष अचल पाषाणस्तूप जकाँ छलाह। पार्वतीक केवल बाह्ये गति नहि आभ्यन्तरिको प्रवाह औना उठल। उपमाक एतेक सूक्ष्म, मार्मिक, सर्वांगपूर्ण, सुन्दर आ सशक्त रूप महाकविये द' सकैत छलाह।

उमा-महेश्वरक सम्बन्ध मे हिनक एक टा आरो उपमा-सौन्दर्य देखू। पार्वती आ महादेवक विवाह भ' गेलनि अछि। विवाहोपरांत शुक्ल दुकूल परिहित महादेव केँ शुभ्र फेनपुंज शोभित समुद्र सँ आ नववधू उमा केँ तटभूमि सँ उपमा दैत कुमारसम्भव मे कालिदासक उक्ति छनि—

दुकूलवासाः स वधूसमीपं निन्ये विनीतैरवरोधदक्षैः
वेला-सकाशं स्फुट फेनराजिर्नवै रुद्रन्वानिव चन्द्रपादैः।

अर्थात् जेना नवोदीयमान चन्द्रकिरण, फेनयुक्त समुद्र केँ तटभूमिक समीप अग्रसर क' दैत अछि तहिना वर-देशी महादेव केँ परिचारिकागण उमाक निकट ल' अनलनि। एहिठामक शब्दगत चित्रमयता केहन अपूर्व अछि? फेनयुक्त समुद्र जकाँ शंकर (फेन शब्दक अन्तर्गर्भ अर्थवत्तापर ध्यान देब आवश्यक) समुद्रक अम्बुरस सँ आर्द्र भेलि रसमयी तटभूमि जकाँ उमा। चंचल, सुन्दर चन्द्रकिरणावली सदृश सुमुखी सखी सभक समूह। वस्तुतः अद्‌भुत बिम्बयोजना अछि। अगाध पितृत्व सँ युक्त रत्नाकर समुद्र सँ सुमर्यादित शंकरक उपमा जहिना सुगम्भीर आ अद्‌भुत अछि तहिना अनन्त मातृत्व सँ परिप्लुत सर्वसहा, वसुन्धरा, धरित्रीक संग पार्वतीक उपमा सर्वांगपूर्ण सार्थक अछि। उपमाक ई सर्वांगपूर्णता महाकविक काव्य मे भरल अछि।

कालिदास अपन उपमा वा व्यंजना द्वारा केवल देवते टाक महिमा केँ अनन्त व्याप्ति देने छथि से नहि, मनुष्यो केँ अपना कौशल सँ अतिशय महिमा देने छथि। रघुवंशक आठम सर्ग मे इन्दुमती स्वयंवरक क्रम मे महाकवि लिखने छथि जे

सुनन्दा नामक वेत्रधारिणी प्रतिहारिणी राजकन्या इन्दुमती केँ स्वयंवर-सभा मे एक राजाक बाद दोसर राजा लग कोना ल' जा रहलि अछि, जेना मानसरोवरक जल मे वायुक कारणे उठल 'लहरि' कोनो राजहंसिनी केँ अनायास एक कमल लग सँ दोसर कमल लग पहुँचा दैत अछि।

तां सैव वेत्र-ग्रहणे नियुक्ता राजान्तरं राजसुतां निनाय।
समीरणोत्थेव तरंग-लेखा पद्मान्तरं मानव-राजहंसीम्।।

प्रतिहारिणी वास्तव मे समीरणोत्थित तरंगलेखा थिक, जेना लहरिक अस्तित्व क्षणिक होइत छैक तहिना ओकर स्थिति क्षणिक छैक। जेना लहरि मे लास्य छैक, कौतूहल छैक आ किंचित् विनोदयुक्त संगीतमयता छैक तहिना सुनन्दा सखीजनोचित आनन्द, कौतूहल, आन्दोलित गतिमयता आ लास्यपूर्वक चलि रहल अछि। लहरि समीरणोत्थित रहैछ तँ प्रतिहारिणी राजाज्ञाप्रेरिता अछि। राजकुमारी इन्दुमती मानस-राजहंसी थिकीह। ओ राजकुमारलोकनिक प्रणयाकांक्षा रूपी जल मे नीरक्षीर विवेचन कर'वाली निर्मल धवल राजहंसिनी जकाँ बंकिम भावभंगिमा सँ विचरण करैत वरणानुकूल गुण-दोषक विवेचन क' रहलीह अछि। प्रस्फुटित नवयौवनवल प्रत्येक राजकुमार प्रस्फुटित कमल थिकाह। वास्तव मे प्रत्येक वस्तुक सूक्ष्मतम गुणकर्म आ रूपक सादृश्य संयोजन सँ जाहि रमणीय रसध्वनिक सृष्टि कालिदासक उपमा मे भेल अछि से हिनका काव्यक बड़ पैघ सम्पदा थिक।

रघुवंशक द्वितीय सर्ग मे महाकविक उक्ति छनि जे साध्वीपतिव्रता लोकनि मे अग्रगण्या महाराज दिलीपक धर्मपत्नी सुदक्षिणा पुत्रप्राप्तिक हेतु महर्षि वशिष्ठक आदेशानुसार गो-सेवाव्रतक क्रम मे जखन मुनिक कामधेनु नन्दिनीक पवित्र पादस्पर्श सँ पुनीत धूलिमय पथपर धेनुक अनुसरण करैत चलि रहलि छथि तँ बुझना जाइछ जेना मूर्तिमती स्मृति मूर्तिमती श्रुतिक अर्थरूपी पथक अनुसरण क' रहलि छथि।

तस्याः खुरन्यास-पवित्रपांसुमपांसुलानां धुरि कीर्त्तनीया
मार्ग मनुष्येश्वर धर्मपत्नी श्रुतेरिवार्थ स्मृतिरन्वगच्छत्।।

एहिठाम नन्दिनी केँ श्रुति (वेद), पदधूलि सँ पवित्र बनल पथ केँ ओकर धर्मभावपूत अर्थ आ रानी केँ स्मृति कहि, महाकवि अपना उपमाक अद्भुत चमत्कार देखौने छथि।

आगाँ गर्भवती रानी सुदक्षिणाक वर्णन आरो अपूर्व आ विलक्षण अछि।

शरीर सादादमसमग्रभूषणा मुखेन साऽलक्ष्यत लोध्रपाण्डुना।
तनु-प्रकाशेन विचेय-तारका प्रभातकल्पा शशिनेव शर्वरी।।

गर्भवती रहबाक कारणे रानीक देह किछु दुबरा गेलनि अछि तें आब सभ टा

आभूषणो शरीरपर धारण नहि क' पबैत छथि से नहुँ-नहुँ आभूषण सभ ससरि क' खसि पड़लनि अछि। एहि तरहें निराभरण रानीक मुँह लोध्र कुसुम जकाँ पाण्डुर भ' गेलनि अछि। एहि रूप मे रानी केँ देखि क' लगैछ जेना ईषत् प्रकाशित चन्द्रमा संगे लुप्ततारका प्रभातकल्पा (भिनुसरबाक) राति हो। एहि एक उपमा द्वारा कालिदास रघुक समान पुत्रक माता सुदक्षिणाक रूपक जे माधुर्य आ महिमा व्यक्त कयने छथि से साधारण भाषा कथमपि संभव नहि छल।

रानी सुदक्षिणा एक एहन पुत्रक प्रसव कर' वाली छथि जनिका नाम सँ एक राजवंश (रघुवंश नामसँ) चिरकालधरि परिचित होइत रहत। ओ गर्भिणी माता वस्तुत: प्रभातकल्पा शर्वरी थिकीह। सूर्यरूपी पुत्र केँ गर्भ मे धारण क' आसन्नप्रसवा विराट रातिक जेहने महिमामयी मूर्त्ति होइत अछि, एन मेन ओहने आसन्न मातृत्त्वक गौरव सुदक्षिणाक छनि। ओहि आसन्न प्रसवा सुदक्षिणाक अंग सँ जखन विविध रत्नरचित गहनासभ ढील भ' क' ससरि जाइत अछि-खसि पड़ैत अछि तँ आभूषणहीन शरीर लगैछ जेना प्रभा कल्पा शर्वरीक देह सँ ओकर असंख्य चमकैत नक्षत्र सभक अलंकार ससरिक' खसि पड़ल हो आ सुदक्षिणाक लोध्रपाण्डु मुँह लगैछ जेना समाप्तप्राय रात्रिक ईषत् दीप्त चन्द्रमा हो। उपमाक ई सूक्ष्मातिसूक्ष्म दृष्टि एवं बहुत्तम व्यंजना महाकविक बड़ पैघ काव्य वैभव थिक।

एहने अनेकानेक उदाहरण सँ हुनक काव्य परिपूर्ण अछि जाहि सँ महाकवि कालिदास समस्त भारतीय वाङमयक सर्वश्रेष्ठ उपमामर्मज्ञ महाकवि बूझल जाइत छथि।

मिथिला मिहिर : 3 सितम्बर 1967

साहित्यक मूल उत्स:सौन्दर्य

ई विषय स्वत: तर्कसिद्ध अछि जे भाषाक उत्पत्ति भाव तथा आचरणक पछाति भेल। तें ई सर्वथा सत्य जे सुन्दर आ ओकर पर्यायवाची शब्द सभक निर्माण सँ बहुत पहिनहि मानव-हृदय मे सौन्दर्य-बोधक उदय भेल। हमरा बुझने तँ इहो कहब अत्युक्ति नहि जे सौन्दर्य-बोधे सँ मानव-सभ्यताक विकास भेल। सभ्यताक प्रथम प्रभात मे किरण प्रस्फुटित भेल, ओहि मे मानवक सौन्दर्य-बोधक अवदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण छल। मानव प्रगतिशील प्राणी थिक। आइ मानव-सभ्यता प्रगतिशीलताक क्रम मे मध्याह्नकालीन सूर्य जकाँ अपन विकासक उच्चता दिस क्रमश: बढि रहल अछि। ओकर सौन्दर्य बोधो आइ सुविकसित छैक। सभ्यताक ओहि आदियुग मे मनुष्यक सौन्दर्य भावना केहन छलैक तकर वर्णन संसारक समस्त प्राचीन ग्रंथ सभ मे भेटैत अछि। प्राचीन ऐतिहासिक सभ्य देश सभक इतिहास, ओकरा सभक अवशिष्ट निधिसभ आ उपलब्ध चिह्नसभ घोषित क' रहल अछि जे सौन्दर्य साधना मनुष्यक स्वाभाविक आ आदि-वृत्ति थिक। प्राचीन इतिहास अनुसंधानक आधारपर ई सिद्ध भ' चुकल अछि जे मिस्त्र, बेबिलोन आ फीनीसिया निवासी सभ बड़े सभ्य, शिल्पी एवं सौन्दर्योपासक छलाह। मिस्त्र तूतेन खामेनक खोदाइ आ पिरामिड सभक अन्तर रहस्यक उद्घाटन सँ प्राचीनकालक सौन्दर्य भावनाक तथ्यपूर्ण प्रमाण भेटि चुकल अछि। ओहिठामक पुरुष सौन्दर्य वृद्धिक हेतु आँखि मे काजर लगबैत छल। स्त्रीगण अपना भौंहुक केश कटाक' एक विशेष प्रकारक कीड़ा सभ सँ हरियर रंग बनाक' लगबैत छलि। पुरान वस्त्राभूषण, माटिक बासन आदि मे चित्रित तत्कालीन चित्रकला दर्शनीय अछि। एटलांटिक महासागर मे जाहि प्राचीन द्वीप एटलांटिसक लय भ' गेल छैक ओकर सौन्दर्य-साधनाक अनेक प्रमाण भेटि चुकल अछि। बेबिलोनक स्त्रीगण खूब गाढ़ बैंगनी रंगक आँजन आँखि मे लगबैत छलि। फिलस्तीन सँ उत्तर आ एशिया माइन सँ पश्चिमक उर्वर भूमि मे बसनिहार फिनीसियाक लोक रंग बनयबा मे अत्यन्त चतुर

छल आ सौन्दर्य प्रसाधन हेतु अनेक प्रकारक ऊनी वस्त्र बनबैत छल। प्राचीन ग्रीसक सौन्दर्य साधना सर्वविदित अछि। भारतवर्षक वैदिक साहित्य तँ सौन्दर्य भावनाक अभिव्यंजना सँ भरल अछिये जे एहिठामक प्राग्-वैदिक इतिहासो सँ एतुक्का सौन्दर्यप्रियताक प्रमाण भेटैत अछि।

एहि सभ सँ सिद्ध अछि जे सौन्दर्य-बोध आ सौन्दर्य-साधना मनुक्खक-आदिम प्रवृत्ति थिक। एहि तरहें मनुष्य अपन साधनाक फल-सिद्धि केँ अभिव्यक्ति देबाक हेतु, अपन समस्त मनोभाव आ अनुभूति केँ प्रकट करक हेतु (मूर्त्तिकला, चित्रकलाक अतिरिक्त आ ओहि सँ संतुष्ट नहि भ') भाषाक अर्थात् साहित्यक आश्रय लेलक। तें एहि बात मे कोनो संदेह नहि जे साहित्यक मुख्य विषय सौन्दर्याभिव्यक्तिये थिक। एही सौन्दर्य-बोधक सम्बन्ध मे टॉल्सटायक कथन छनि जे 'सौन्दर्यानुभव सँ बढ़िक' जीवन मे आरो किछु नहि अछि।...जे सौन्दर्य मे निमग्न भ' जाइत अछि ओकरा कोनो इच्छा नहि रहि जाइत छैक।'

सौन्दर्यक सम्बन्ध मे भारतीय आ भारतेत्तर देशक विचारकलोकनिक विचार-मन्थन कयलापर ई ज्ञात होइत अछि जे सौन्दर्य ने केवल वस्तुगत आ ने केवल आत्मगते थिक, अपितु ई वस्तु तथा द्रष्टाक भावना एहि दुहूक संयोग मे अछि। कोनो पदार्थ केँ देखिक' लोकक मोन मे सम्बन्ध भावनाक कारणे अनेक मधुर भाव आ सुखद कल्पना जाग्रत होइत छैक। वस्तु स्वयंमेव सुन्दर हो वा नहि, मुदा ई नवोदित भावना आ कल्पना ओहि वस्तुक सौन्दर्य केँ अभिवृद्धि करबा मे सहायक होइत छैक। कतेक मनोवैज्ञानिकक कथ्य छनि जे सौन्दर्य उत्पत्तिक मुख्य कारण लोकक यौन भावना थिक। तें कोनो युवतीक सौन्दर्यानुभव करबा मे ओकरा प्रति द्रष्टाक प्रेमक प्रगाढ़ता, ओकर कामवेग, शारीरिक बल, ओकरा प्राप्त करबाक आकांक्षा, उद्वेग, तृप्ति आ अतृप्ति आदि अनेक विषय सहायक होइत अछि। यौन-भावनाक क्षीणता अथवा ओकर समाप्तिक संगहि-संग संबद्ध द्रष्टाक हेतु सौन्दर्यानुभव क्षमतो क्षीण वा समाप्त भ' जाइत छैक। एकरा अतिरिक्त आयुक कारणे सेहो सौन्दर्य निर्धारण मे न्यूनता आ आधिक्य होइत अछि। देश, काल आ पात्रक अनुसारो सौन्दर्य-बोध मे कमी-बेसी होइत अछि। चीन मे प्रथा छल जे ओहिठाम शैशवे मे कन्या केँ लोहाक जुत्ता पहिरा देल जाइत छलैक जाहि सँ ओकर पयर पैघ नहि होइक। ओत' छोट पयर सुन्दर बूझल जाइत अछि। आस्ट्रेलिया मे थपरल नाक मे सौन्दर्य बूझल जाइत अछि आ भारतीय ठाढ़ नाक मे सौन्दर्य बुझैत छथि। हब्सीसभ मोट ठोर केँ सुन्दर कहैत अछि आ भारतीय पान सन पातर ठोरकेँ। अंग्रेज नील रंगक (कुइर) आँखि मे सौन्दर्य पबैत छथि तँ भारतीय कारी आँखि मे। कतहु कैल

केश केँ सौन्दर्यक खानि बुझल जाइत अछि तँ कतहु सघन कारी केश-राशिकेँ। एहि तरहें देशक अनुसारें सोन्दर्य-बोध पृथक्-पृथक् अछि।

कोनो अत्यावश्यक काजें जाइत काल चंचल रहबाक कारणे रस्ताकालक सरोवर आ सरोवर मे विकसित शतदलक सौन्दर्य हमरा नहि बूझि पड़ैत अछि, मुदा निश्चिन्त मन:स्थिति मे कोनो-कोनो समय साधारण सँ साधारण वस्तुओ मे अद्‌भुत सौन्दर्य-बोध होइत अछि। विवाह-दान कालक गीत की, गारियो धरि सुन्दर लगैत अछि से आन काल नहि। प्राचीन काल मे सौन्दर्य-बोधक जे मानदण्ड छल से कालक्रमे बदलि गेल अछि आ ओ सभ पुरान मान्यता (पुरुषक मोट टीक, स्त्रीगणक गहना जेवर सँ छारल देह आदि) असुन्दर भ' गेल तथा नवीन सौन्दर्य-बोधक स्थापना भेल अछि। ई थिक कालक अनुसारें सौन्दर्य-बोध। सभ केँ समान रूप सँ सौन्दर्य-बोध नहि होइत छैक। जकर ज्ञान विकसित नहि छैक, शिक्षा आ संस्कार द्वारा जकर बोध-वृत्ति समुन्नत नहि भेलैक अछि ओकरा कोनो मूर्ति, चित्र, काव्य अथवा सौन्दर्याभिव्यक्ति कयनिहार कोनो वस्तुक सौन्दर्य-बोध नहि भ' सकैत छैक। ततबे नहि, एके वस्तुक सौन्दर्य भिन्न-भिन्न व्यक्ति केँ भिन्न-भिन्न रूप आ स्तर मे अभिभूत अथवा प्रभावित करैत अछि। ई थिक पात्रक अनुसारें सौन्दर्य-बोधक भिन्नता। देश, काल आ पात्रक अतिरिक्त व्यक्ति अथवा वस्तुक अत्यधिक सामीप्यो सँ आ साहचर्यो सँ सौन्दर्य भावना मे क्षीणता ओ वृद्धि होइत अछि। जे लोकक हेतु अप्राप्त वा अप्राप्य अछि, जे रहस्यपूर्ण अथवा पुरुषार्थ सापेक्ष अछि तकरा प्रति अधिक सौन्दर्यानुभव लोक करैत अछि। शिक्षा, संस्कार, सामाजिक परंपरा आ सौन्दर्य सम्बन्धी पूर्व निर्णय आदि सेहो लोकक सौन्दर्य-सम्बन्धी धारणा केँ स्थिर करबा मे सहायक होइत छैक। ई सभ सौन्दर्य-बोधक मनोवैज्ञानिक आधार थिक। तदनुसार रूप सौन्दर्ये टा नहि, अपितु प्राण-सौन्दर्य, स्पर्श-सौन्दर्य, वाक्-सौन्दर्य, स्वर-सौन्दर्य, प्रेम-सौन्दर्य, भाव-सौन्दर्य, कर्म-सौन्दर्य तथा चरित्र-सौन्दर्य आदि सभ प्रकारक सौन्दर्य केँ ग्रहण करक हेतु आँखियेटा नहि, आनो-आन इन्द्रिय सभक संग अन्त:करणक जागरुकताक आवश्यकता होइत अछि। सौन्दर्य-बोधक हेतु मन केँ सभ कर्मेन्द्रियक प्रयोग कर' पड़ैत छैक। एही लेल सौन्दर्य-प्रतिष्ठा मे मनोवैज्ञानिकलोकनि मन केँ मुख्याधार मानने छथि। एहि तरहें ई स्पष्ट अछि जे इन्द्रिय व्यापार आ बाह्य जगतक संयुक्त योजने यथार्थ सौन्दर्य-बोध थिक। यैह सौन्दर्य-बोध जखन हृदय केँ स्पर्श क' लैत अछि तखन ओ साहित्यक वस्तु बनि जाइत अछि। तें प्रेमचन्दक कथन छनि जे 'मनुष्य संसार मे जे किछु सत्य आ सुन्दर पऔलक अछि आ पाबि रहल अछि ओकरे साहित्य कहल जाइत अछि।'

ऊपर सौन्दर्य-बोधक जतेक प्रकार उल्लिखित अछि ताही समस्त भिन्नताक रहितो साहित्य मे सौन्दर्यक एक निश्चित आदर्श छैक। साहित्य मूलत: सौन्दर्यक ओहि प्रेरक भाव केँ अभिव्यक्त करैत अछि जाहि अनुराग वृत्ति सँ प्रेरित भए क्यो मोट ठोर पर तँ क्यो पातर ठोरक सौन्दर्यपर मुग्ध होइत अछि। एहि भिन्न-भिन्न रुचि केँ प्रकट करबा मे जे हृदयक अनुरागात्मक रसवृत्ति अछि सैह थिक साहित्यक मूल उत्स। तें समस्त विश्वसाहित्य मे सौन्दर्यक एकता बनल रहैत अछि। कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम् पढ़िकए जहिना भारतीय ओकर साहित्यिक सौन्दर्यपर मुग्ध होइत अछि तहिना पाश्चात्यो देशक मनीषी आ जनसाधारण एकर अनुवाद पढ़िक' आनन्द सँ गद्-गद् भ' जाइत छथि। जर्मनीक जगत प्रसिद्ध विद्वान आ कवि 'गेटे' अभिज्ञान शाकुन्तलम् पढ़िक' कहने छथि—

'यदि अहाँ यौवनक फूल आ वार्द्धक्यक फल तथा अन्य एहन सामग्रीसभ एके स्थानपर ताक' चाही जाहि सँ आत्मा प्रभावित होइत हो, सन्तृप्त होइत हो आ शांत होइत हो अर्थात् यदि अहाँ स्वर्ग आ मृत्युलोक केँ एक्के स्थानपर समन्वितरूपें देख' चाहैत होइ तँ हमरा मुँह सँ सहसा एक्के नाम बहरायत आ ओ नाम थिक— 'शकुन्तला।'

साहित्यक मूल उत्स सौन्दर्य होयबाक कारणे शेक्सपीयर, शेली, कीट्स, वर्ड्सवर्थ, एजरा पाउण्ड, गोल्डस्मिथ, गाल्सवर्दी, बर्नार्ड शा, आस्कर वाइल्ड, टॉल्सटाय, मोपासाँ, स्टिफेनज्विग, पर्लबक, दस्तावएस्की आदिक साहित्यक सौन्दर्य देश, काल, पात्र आदिक सीमा तोड़ि आइ समस्त विश्व साहित्यक निधि बनल अछि। जहिना वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति, भास, तुलसी, सूर, मीरा, विद्यापति, गोविन्ददास, चन्दा झा आदि हमरा अपना साहित्यक सौन्दर्य सँ प्रभावित करैत छथि तहिना पाश्चात्यो साहित्यिक हमर सौन्दर्य बोध केँ परिष्कृत क' रहलाह अछि। कारण जे सभ साहित्य हमरालोकनि केँ अपन रसात्मक पद्धति सँ सौन्दर्य निरूपणक द्वारा जीवनक सर्वोच्च तत्वक दर्शन करबैत अछि। सभ साहित्यकार धर्म, दर्शन, विज्ञान आदि सभ क्षेत्रक सारभूत ज्ञान ल' क' ओकरा अपन सौन्दर्यक रंग सँ ढौरि हमरालोकनिक समक्ष प्रस्तुत करैत छथि। तें बाह्य जगत मे जे असुन्दरो अछि से साहित्यक अभिव्यक्ति पाबिक' सुन्दर बनि जाइत अछि। जामुन सनक कारी रंग, मुँह मे गोटीक दाग, रुक्ख आ ओझरायल माथक केश, मैल-फाटल चेफड़ी लागल नूआ एहि समस्त असौन्दर्यक उपादान रहितो ओ साहित्यक स्वर्ण स्पर्श सँ सौन्दर्यक अनुपम एवं अद्भुत वस्तु बनि जाइत अछि। यात्रीजीक गोठ बिछनी शीर्षक कविता एकर एक नीक उदाहरण अछि।

बीछि रहल छें वन गोइठा तों
घूमि-घामि कँए बाध-बोनमे
पथिआ नेने भेल फिरइ छें
तिनू खूट, चारिओ कोनमे
मैल पुरान पचहत्थी नूआ
सेहो फाटल चेफड़ी लागल
देहक रंग जमुनिआ तइपर
मुह माइक गोटी सँ दागल।
बगड़ा जेना लगाबय खोंता
तेहने रुच्छ केश छउ तोहर
दू छर हारी भाग गराँमे
केहन विचित्र भेस छउ तोहर आदि

एहि प्रकारें ई स्पष्ट बुझना जाइत अछि जे साहित्य द्वारा सौन्दर्यक सृष्टि होइत अछि आ सौन्दर्ये साहित्यक सर्जना मे मूल प्रेरक तत्व बनैत अछि। सौन्दर्यक भावावेश आ सौन्दर्यक अनुभूति जीवनक विविध आरोह-अवरोह आ द्वन्द्व-संघर्षक क्रम मे साहित्यकारक चेतना द्वारा आत्मघात भेला पर जखन ओकर मन: प्राण मे भक्ति रंग उत्पन्न करैत अछि, तखन साहित्यकारक अपन अनुभूति केँ साहित्यक सौन्दर्य सँ समलंकृत आ प्रतिभाक विभूति सँ सम्पन्न बनाक' साहित्यक माध्यमे अभिव्यक्ति करैत छथि। शृंगार, वीर, करुण, अद्‌भुत, हास्य, भयानक, वीभत्स आदि प्रत्येक रसक अपन-अपन निजी (रसानुरूप) सौन्दर्य होइत छैक जे साहित्य रचनाक हेतु साहित्यकार केँ उत्प्रेरित करैत अछि। जाधरि साहित्यकारक हृदय मे रस-सृष्टि नहि होइछ, जाधरि रस-सौन्दर्यक प्रेरणा नहि भेटैछ ताधरि साहित्यक अमृत निर्झरणीक स्रोत हृदय सँ नि:सृत नहि होइछ। तें ई निर्भ्रान्त सत्य थिक जे साहित्यक आत्मा सौन्दर्य थिक आ साहित्यक मूल उत्स सौन्दर्य थिक।

मिथिला मिहिर : 21 अक्तूबर 1962

संस्कृत साहित्यक किछु सौन्दर्य-दर्शन

त्वद् विश्वा सुभग सौभगान्यग्ने
वियन्ति वनिनो न वया:
श्रुष्टीरयिर्वाजो वत्रतूर्ये दिवो
वाष्टिरीड्यो रीतिरपाम्।

अर्थात् हे सौन्दर्यक स्रोत, परम विभु ईश्वर, अहाँ सँ सौन्दर्यक धारा सभ बहराक' ओहिना विश्व मे पसरि रहल अछि, जेना गाछ सँ ओकर ठाढ़ि सभ चतुर्दिक बहराइत अछि। अहाँक (सौन्दर्यक) उपासक भक्त धन, शक्ति, दैवी दृष्टि आ स्तुत्य ज्योति शीघ्रे पाबि लैत अछि। सौन्दर्य-भावनाक ई सरस स्वर भारतीय कंठ सँ सर्वप्रथम (ऋग्वेदमे) सप्तसिन्धु प्रदेशक सरस्वती तटपर स्थित ओहि यज्ञ-धूम-सुरभित अरण्य-कुंज सँ सौन्दर्य-निधान परम सत्ताक सौन्दर्य भावना सँ उल्लसित भ' क' नि:सृत भेल छल, जत' ज्ञान, दर्शन आ चिन्तनक माध्यमे विश्वक समस्त स्थूल एवं सूक्ष्म सौन्दर्यक योग सूत्र सत्य तथा शिवक संग स्थापित कयल जा रहल छल। स्मरणीय जे भारतीय साहित्य मे सभ सँ प्राचीन एवं मूर्धन्य संकलन थिक ऋग्वेद जे समस्त विश्व-साहित्यक प्राय: सभ सँ पहिलुक आ अमूल्य विभूति बूझल जाइत अछि।

क्रतूयान्ति क्रतवो हृत्सुधीतयो
वेदन्ति पतयन्त्यादिश:
न मडिता विद्यते अन्य एभ्यो
देवेषु मे अधिकामा असंयत।

ऋग्वेदक एक अन्य ऋचा मे ऋषि-चेतनाक आरो स्वर सुनि पड़ैत अछि जे 'ओ के थिकाह, जनिका दिस हृदयक सभ संचित संकल्प स्वयंमेव जा रहल अछि, सौन्दर्य सँ अभिभूत भेल इच्छा-आकांक्षा जनिक कामना करैत अछि ? निस्संदेह ओ दयामय देव थिकाह जे सौन्दर्य रूप होयबाक कारणे सुख प्रदान क' रहल छथि।'

एहि तरहें वैदिक साहित्य सँ ल' क' पौराणिक साहित्यधरि सौन्दर्यक अनेक प्रकारक वर्णन उपलब्ध होइत अछि। आदिकवि वाल्मीकि तँ सौन्दर्यक विश्वकविये थिकाह। सुन्दरकाण्ड मे सीताक आध्यात्मिक सौन्दर्यक चित्रण तँ नारी-सौन्दर्य-चित्रणक क्षेत्र मे विश्व साहित्यक अद्वितीय वस्तु थिक। रामचन्द्रोक शारीरिक रूप-सौन्दर्यक बड़े चित्ताकर्षक तथा सूक्ष्म चित्रण वाल्मीकीय रामायण मे भेल अछि। प्राकृतिक सौन्दर्यक वर्णन तँ हुनक आर अधिक सुन्दर अछि। ओ सभ ऋतुक यथातथ्य, संश्लिष्ट आ रसात्मक वर्णन कयने छथि। ताहू मे किष्किन्धाकाण्ड मे वर्षा, शरद् आ वसन्तक तथा अरण्यकाण्ड मे हेमन्तक वर्णन अत्यन्त मनोहर भेल अछि। प्रकृतिक संग आदिकविक पूर्ण तादात्म्य तेना भ' गेल अछि जे प्रकृति मानव केँ केवल अपन सौन्दर्य माधुरी सँ तृप्ते टा नहि करैत अछि, अपितु ओ मानवक सुख-दुख मे सम्मिलितो होइत अछि। विरही राम केँ आ दुख-सन्तप्त सीता केँ प्रकृति मौन उत्तर दैत छनि, आश्वासन दैत छनि, धैर्य विलम्बन करबैत छनि आ हुनके लोकनिक संग हँसैत-कनैत छनि।

प्राकृतिक सौन्दर्यक एक संश्लिष्ट चित्र कतेक मनोरम अछि—

व्यामिश्रितं सर्ज कदम्ब पुष्पै-
र्नवं जलं पर्वतधातुताभ्रम्
मयूर—केकाभिरनु प्रयातं
शैलापगाः शीघ्रतरं वहन्ति
रसाकुलं षट्पद सन्निकाशं
प्रभुज्यते जम्बफलं प्रकामम्
अनेक वर्ण पवनावधूतं
भूमौ पतत्याम्रफलं विपक्वम्।

किष्किन्धाकाण्ड मे वर्षाकालीन प्रकृति-सौन्दर्यक एहि अद्भुत वर्णन मे नवीन वर्षाक गेरु सँ मिलल पहाड़ी नदीक लाल पानि, जाहि मे सर्ज (शाल) आ कदम्बक ढेरी फूल खसल छैक, मयूरक शब्द, भ्रमर सनक कारी, रस सँ भरल जामुनक फल तथा बसातक आन्दोलन सँ भूमिपर खसैत पकलाहा आम आदिक कतेक सुन्दर चित्रण भेल अछि।

स्वप्नवासवदत्तम् मे सन्ध्याक वर्णन करैत भास कवि कहने छथि—

खगाः वासोपेताः सलिलमवगाढ़ो मुनिजनः
प्रदीप्तोऽग्निर्भाति प्रविचरति धूमो मुनिवनम्
परिभ्रष्टो दूराद् रविरपिच संक्षिप्तकिरणो

रथं व्यावर्त्यासौ प्रविशति शनैरस्त शिखरम।

अर्थात् 'चिड़ै-चुनमुनी अपना खोंता लग पहुँचि गेल अछि, जलाशय मे मुनि लोकनि स्नान क' रहल छथि, यज्ञक अग्नि प्रज्वलित भ' रहल अछि आ धुआँ चारूकात पसरि रहल अछि, सूर्य अपन किरणजाल समेटि रथ घुमाक' नहुँ-नहुँ अस्ताचल दिस जा रहल छथि।' संध्याक कतेक (तत्कालीन) सुन्दर आ यथार्थ वर्णन एहि मे भेल अछि।

शूद्रककृत मृच्छकटिक मे वसन्त सेनाक सौन्दर्य वर्णन एहि तरहें अछि—

अपद्मा श्रीरेषा प्रहरणमनगस्य ललितं
कुलस्त्रीणां शोको मदनवरवृक्षस्य कुसुमम्
सलीलं गच्छन्ति रतिक्षेत्रे रंगे
प्रिय पथिकसार्थैरनुगता।

अर्थात् 'वसंत सेना कमल रहित लक्ष्मी जकाँ छविमयी अछि, ई कामदेवक सुन्दर हथियार थिक, ई कामवृक्षक फूल थिक। जाहि वसन्त सेनाक प्रेमी सभक समूह तीर्थयात्रीक समूह जकाँ जाइत-अबैत अछि से वसन्त सेना प्रणय-कार्यक हेतु अपन विविध हाव-भावक लीला प्रदर्शित करैत जा रहल अछि।' कामदेवक हथियार, कामवृक्षक पुष्प आदि द्वारा वसन्त सेनाक अद्भुत सौन्दर्य-वर्णन भेल अछि।

कविकुल गुरु कालिदास तँ सौन्दर्य वर्णनक सम्राटे थिकाह। शकुन्तलाक रूप-सौन्दर्यक वर्णन करैत कहने छथि—

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्मी लक्ष्मीं तनोति
इयमधिक मनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिवहि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्

अर्थात् 'जेना सेमार सँ आवृत रहलोपर कमलक सुषमा मे कोनो त्रुटि नहि होइत अछि आ चन्द्रमा मे कारी दाग रहलोपर शोभाक वृद्धिये होइत अछि, तहिना अतीव सुन्दरी शकुन्तलाक कोमल शरीर बल्कलो मे मनोहर प्रतिभासित होइत अछि।' एहि मे कोमलांगी शकुन्तलाक वल्कल सँ सुशोभित स्वाभाविक रूप-सौन्दर्यक मर्मस्पर्शी वर्णन भेल अछि। हिनक अभिज्ञान शाकुन्तल, कुमारसंभव, रघुवंश, मेघदूत, ऋतुसंहार, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र आदि ग्रंथसभ मे मानव-सौन्दर्य (शकुन्तला, पार्वती, अज, विक्रम, अग्निमित्र, उर्वशी, मालविका, इन्दुमती आदि) तथा प्राकृतिक सौन्दर्यक चित्रण वस्तुतः अनुपम अछि। हिनक प्रकृति तँ

आलम्बन आ उद्दीपन दुहू रूपक अद्‌भुत चित्रण विश्वसाहित्यक निधि कहल जाइत अछि। कुमारसम्भवक एक अद्‌भुत प्रसंगक अलौकिक सौन्दर्य वर्णन संस्कृत साहित्य मे अद्वितीय अछि। तपस्या मे लीन पार्वतीक आश्रम मे महादेव बह्‌मचारीक रूप मे आबि जखन प्रेम परीक्षणार्थ पार्वतीक समक्ष वार्ताक्रम मे महादेवक बहुत निन्दा करैत छथि तँ शिष्टाचारवश आगत अभ्यागत बह्‌मचारी केँ किछु नहि कहिक' पार्वती स्वयं उठि जाइत छथि आ ओत' सँ हँटि जयबाक हेतु डेग उठबैत छथि कि महादेव अपन रूप धारण क' हाथ पकड़ि लैत छथिन। आवेश आ क्रोध सँ भरल पार्वती जखन तमसाक' घुमैत छथि, बह्‌मचारी दिस तकैत छथि तँ साक्षात अपन प्रियतम महादेव केँ देखि हुनक दशा तेहन भ' जाइत छनि जे ने ओ जाइते छथि आ ने ठाढ़े रहैत छथि।

तं तीक्ष्य वेपथुमती सरसांग यष्टि-
र्निक्षेपणाय पदमुद्‌धृतमुद्‌वहन्ती
मार्गाचलव्यतिकराकुलितेव सिन्धुः
शैलाधिराज तनया न ययौ न तस्थौ।

अर्थात्‌ 'पर्वतराजपुत्री पार्वतीक थरथराइत शरीर घाम सँ भीजि गेल आ आगाँक हेतु उठाओल डेग उठौओले रहि गेल। जेना आकुल धारा-मार्ग मे पहाड़ पड़ि गेलापर ने पाछाँ जाइत अछि आ ने आगाँ बढैत अछि तहिना गिरिराज कन्या ने गेलीह आ ने रहलीह।' ने गेलीह ने रहलीह-एहि मर्मस्पर्शी भावनाक अपार्थिव सौन्दर्यक वर्णन एहि मे जे भेल अछि से वस्तुतः अद्वितीय अछि।

कालिदासक कोमल सौन्दर्य वर्णनक संगहि-संग उत्तर रामचरितकार भवभूति शारीरिक एवं प्राकृतिक सौन्दर्यक विविध रूपक अत्यन्त रसपूर्ण वर्णन कयने छथि। करुण रसक तँ ई आचार्ये बुझल जाइत छथि। बिना व्यर्थ अलंकारक आश्रय लेने पूर्ण विवरणक संग स्पष्टतापूर्वक भाव तथा वस्तुक सौन्दर्य राशिक साक्षात्कार कराक' रसमग्न क' देबा मे ई अपन सन अपनहि टा छथि। बारह वर्षक दीर्घ वियोगक उपरान्त दण्डकारण्य मे राम सँ भेंट भेला पर सीताक विविध भावाकुल हृदयक परम गम्भीर दशाक अद्‌भुत वर्णन करैत उत्तररामचरित मे ओ कहैत छथि—

तटस्थं नैराश्या दपिच कलुषं विप्रियवशात्‌
वियोगे दीर्घेऽस्मिन्‌ झटितिघटनात्स्तम्भितमिव
प्रसन्नं सौजन्या-द्‌यित करुणैर्गाढ़ करुणं
द्रवीभूतं प्रेम्णा तव हृदयमस्त्रि क्षण इव।

एहि मे प्रेममयी सीताक उदासीनता, निराशा, क्षोभ, स्तब्धता, निश्चलता, प्रसन्नता,

शोक आ द्रवणशीलताक सम्मिलित भावस्थितिक समन्वित सौन्दर्यक स्निग्ध तथा सुकुमार चित्रण भेल अछि।

तदुत्तर परवर्ती संस्कृत-साहित्य अलंकार-बहुल, परम्पराक रूढ़ि सँ आक्रांत आ बुद्धि-जटिल भ' गेल अछि। तथापि भारवि, माघ, श्रीहर्ष आदिक साहित्य मे सौन्दर्यक मनोरम वर्णन पर्याप्त भेल अछि। संस्कृत साहित्य मे नायिका सभक सौन्दर्यक वर्णनक संगहि-संग नायकोलोकनिक सौन्दर्य चित्रण बेस रुचिपूर्वक भेल अछि। भारविक किरातार्जुनीयम मे शरदाकाश मे उड़ैत शुक-पंक्तिक सौन्दर्य एहि तरहें वर्णित अछि—

मुखैरसो विद्रममंगलोहितैः
शिखापिशंगी कलमस्य विभ्रती
शुकावलिर्व्यस्त शिरीषकोमला
धनुः श्रियं गोत्रभिदोऽनुगच्छति।

अर्थात् 'सुन्दर हरियर सुग्गा सभक पंक्ति जे शिरीषक फूल जकाँ कोमल अछि, अपन मूँगा सनक लाल-लाल चोंच मे धानक पीयर सीस लेने शरदाकाश मे उड़ैत इन्द्रधनुष जकाँ बूझि पड़ैत अछि।' तहिना जलक्रीड़ा निरत अप्सरा सभक सौन्दर्य-वर्णन करैत ओ कहने छथि—

तिरोहितान्तानि नितान्तमाकुलै-
रपां विहागादलकैः प्रसारिभिः
ययुर्वधूनां वदनानि तुल्यतां
द्विरेफवृन्दान्तरितै सरोरुहैः।

अर्थात् 'जलक्रीड़ाकाल पानि सँ भीजल मुँहपर छिड़िआयल केश सभक कारणे रुपसी सभक सुन्दर प्रफुल्लित मुँह भ्रमर-माला सँ आच्छादित विकसित कमल जकाँ बूझि पड़ैत अछि।'

एहिना माघकृत शिशुपालवधम् मे भोरक सुन्दर चित्रण करैत कहल गेल अछि—

अरुणजलजराजीमुग्धहस्ताग्रपादा
बहुल मधुपमाला कज्जलेन्दी वराक्षी
अनुपयति विरावैः पत्रिणां व्याहरन्ती
रजनिमचिरजाता पूर्वसन्ध्या सुतेव।

अर्थात् 'राति बीति गेलापर जे प्रभात बेला आयल अछि से बूझि पड़ैछ जेना ओ ओहि लाल-लाल, कोमल-कमल सन हाथ-पयरवाली, कमलपर मँडराइत भ्रमर-माला सदृश काजर सँ सुशोभित आँखिवाली बालिका सदृश हो जे अपना

मायक (रातिक) पाछाँ-पाछाँ दोड़ैत आबि रहल हो।'

प्रभातक एक दोसर मर्मस्पर्शी सौन्दर्य-चित्र देखू—

उदय शिखरि शृंगप्रांगणेष्वेव रिंगन्
स-कमलमुखहासंवीक्षितः पद्मिनीभिः
वितत मृदुकराग्रः शब्दयन्त्या वयोभिः
परिपतति दिवोऽङ्के हेलयाबालसूर्यः।

अर्थात् 'हँसैत-खेलैत आ किलकारी भरैत बालक कोमल हाथ पसारने जेना अपना मायक कोर मे दौड़िक' खसि पड़ैत अछि तहिना प्रातःकालीन सूर्य अपन कोमल किरणक हाथ पसारि, हँसैत-फुलाइत कमलक आँखि सँ देखैत-देखैत चिड़ै-चुनमुनी सभक स्वर-व्याजें किलकारी मारैत आकाशरूपी मायक कोर मे आबिक' खसि पड़ल।'

नैषधीयचरितम् मे श्रीहर्ष तहिना दमयन्तीक सौन्दर्यक एक भावपूर्ण चित्र उपस्थित कयने छथि—

हृत-सारमिवेन्दुमंडलं दमयन्ती वदनाय वेधसा
कृतमध्यविलं विलोक्यते धतगम्भीर खनी खनीलिमाम्

अर्थात् 'ब्रह्माजी दमयन्तीक मुख रचना चन्द्रमाक सारभाग काटिक' कयलनि अछि। ई जे कारी भाग देखि पड़ैत अछि से चन्द्रमाक कलंक नहि थिक, अपितु घसल चन्द्रमाक भूर थिक, जाहिमे सँ आकाशक नीलिमा देखि पड़ैत अछि।'

तरल-सरस भाव सौन्दर्य सँ आप्लावित कोमलकांत पदावली समन्वित गीत-गोविंदक अमर गायक जयदेव कविक सुकुमार सौन्दर्य-वर्णन तँ संस्कृत साहित्यक एक अनुपम अवदाने बुझल जाइत अछि। समस्त गीत गोविन्द सौन्दर्यक माधुर्य सँ ओत-प्रोत अछि। गोपिका सभक संग क्रीड़ा-विलास करैत कृष्णक सौंदर्य वर्णनक प्रसंग कवि कहने छथि—

चन्दन चर्चित नील कलेवर
पीत वसन मनमाली
केलि चन्द्रमणि कुंडल मण्डित
गण्डयुगस्मित शाली

अर्थात् 'चानन सँ सुशोभित कृष्णचन्द्रक श्याम शरीर पीताम्बर आ वनमाला सँ युक्त भेल अछि एवं केलिक्रीड़ाक कारणे झुलैत मणिकुण्डल द्वारा उद्भासित गण्डस्थलक (गालक) छवि मुस्की सँ आरो बढ़ि रहल अछि। एहिना प्रकृतिक एक सुन्दर आ सुकोमल चित्र एहि मे अभिव्यक्त भेल अछि—

ललित लवंग लता परिशीलन
कोमल मलय समीरे।
मधुकर निकर करम्बित कोकिल
कूजित कुन्ज कुटीरे
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते

अर्थात्, 'सुन्दर लवंगक लत्ती सँ छुबैत आ नहुँ-नहुँ बहैत मलय समीर सहित भ्रमरावली सँ गुंजित, कोयलीक कुहुकब सँ कूजित कुंजक कुटीरबला एहि वसन्त ऋतुक सरस समय मे श्रीकृष्ण विहार क' रहलाह अछि।'

एकटा भाव सौन्दर्यक मनोहर चित्र उपस्थित करैत संस्कृत साहित्यक एक कवि कोनो नायिकाक मनोभावक मौन मुखर-सौन्दर्य देखबैत कहने छथि—

(प्रसंग अछि जे नायक विदेश जयबा लेल प्रस्तुत अछि आ नायिकाक अनुमति मांगि रहल अछि।)

मा गा इत्यपि नोचितं व्रजपते स्नेहेन हीनं वचः
तिष्ठेति प्रभुता यथा रुचि कुरूष्वैषाप्युदासीनता
इत्यालोच्य मृगीदृशा नवघनप्रारम्भसंसूचके
प्रादुर्भूत कदम्बकोरकचये दृष्टिः समारोपिता।

अर्थात् 'नहि जाउ, ई कहब उचित नहि थिक। चलि जाउ, ई कहला सँ स्नेहहीनता प्रकट होइत अछि। रुकि जाउ, ई कहला सँ प्रभुताक दर्प बुझल जायत। जे इच्छा हो से करू, एहि उक्ति सँ उदासीनता बहराइछ। तें की कही, की नहि, ई सभ तारतम्य क' मृगनयनी रुपसी नवीन मेघ (बरिसात) क' प्रारम्भ होयबाक सूचना देनिहार नवोत्पन्न कदम्बक कोंढी दिस ताक' लागलि। बरिसात आबि गेल तखन हम की कहू... ?'

कतेक विलक्षण भाव सौन्दर्यक चित्र अछि ?

उपर्युक्त ग्रंथ सभक संगहि-संग वाणभट्ट कृत कादम्बरी, दण्डीकृत दशकुमार चरित आदि अनेकानेक संस्कृत साहित्यक अगाध रत्नाकर मे सौन्दर्य रत्नक विविध, विलक्षण आ अनमोल राशि भरल-पड़ल अछि जकर प्रस्तुतिकरण एहि लघुकाय निबंध मे असम्भव अछि। वस्तुतः वस्तुगत सौन्दर्य आ आत्मगत सौन्दर्य भाव पक्ष, स्थूल पक्ष, सूक्ष्म पक्ष, कला पक्ष आदिक सम्यक् वर्णन संस्कृत साहित्यक शाश्वत सम्पत्ति थिक।

मिथिला मिहिर : 16 दिसम्बर 1962

काव्येषु नाटकं रम्यम्

काव्य दू प्रकारक मानल गेल अछि, एकटा श्रव्य काव्य, दोसर दृश्य काव्य। नाटक दृश्य काव्य थिक। भारतीय नाट्यशास्त्रक आदिप्रणेता भरतमुनिक समय ईसवी सदीक सयवर्ष पूर्व मानल गेल अछि मुदा, वाल्मीकि, पाणिनि तथा पतंजलि आदि हुनका सँ पहिनहि भेल छथि, जनिकालोकनिक कृति मे नाट्य-परम्पराक उल्लेख भेटैत अछि। ओना, किछु विद्वानक मत छनि जे भारत मे नाट्यकलाक उद्भव भरिसक सभ सँ पहिनहि भेल। ताधरि यूनानमे, जे साहित्य एवं संस्कृतिक दृष्टियें उन्नत देश सभ मे प्राचीन मानल जाइत अछि, नाट्यकलाक जन्म नहि भेल छल। वैदिक कालक नाट्य-परम्पराक प्रामाणिक सूत्र केँ जँ छोड़ियो देल जाय, तथापि ई सर्वविदित अछि जे ईसा सँ चारिसय वर्ष पहिनहि भारतवर्ष मे भास सन प्रतिभाशाली नाटककार भेल छलाह जनिक लिखल तेरह गोट नाटक भेटैत अछि। हुनको सँ पूर्व अश्वघोष, सोमिल आ कविपुत्रक नाम नाटककारक रूप मे उल्लेखनीय अछि।

ई लोकनि नाटकक रचयिता छलाह, मुदा नाट्यशास्त्रक प्रणेता भरतमुनि छलाह जे अपन शास्त्र मे नाट्य-रचनाक उद्देश्य, ओकर विधान, महत्व, व्यापकता, रम्यता आदिक नीक जकाँ वर्णन-विवेचन कयने छथि। एहि क्रम मे भरतमुनि सभ प्रकारक कला एवं साहित्यक समस्त रूप मे नाटक केँ सर्वश्रेष्ठ प्रतिपादित कयने छथि।

हुनक कथन छनि—'नाटक संसारक सभ प्रकारक प्राणीक हेतु विनोदकारी थिक। एहि सँ लोकक रंजनक संगहि लोक केँ धृति, क्रीड़ा, सुख-दुख आदि रस-भाव आ समस्त कर्मक दिग्दर्शन द्वारा सभ प्रकारक उपदेश भेटैत छैक। एकरा द्वारा दुखी, आर्त्त, शोकाकुल, श्रान्त, तपस्वी आदि सभ तरहक लोक केँ शांति भेटैत छैक।

ईसाक दोसर-तेसर शताब्दीक मध्यकाल मे अभिनय-दर्पणक रचयिता नन्दिकेश्वर भेलाह जे नाटकक विशेषता पर प्रकाश दैत लिखलनि जे—'नाटक सँ

कीर्ति, वाक्-चातुर्य, सौभाग्य आ विद्वताक विकास होइछ जे व्यक्ति मे उदारता, स्थिरता, धैर्य आ विलास केँ उत्पन्न कयनिहार तथा दुख, पीड़ा, शोक, असन्तोष आ ह्रदयक व्यथाक नाशक होइछ।'

तेरहम शताब्दी मे आचार्य शारदातनय अपना 'भावप्रकाश' मे नाटकक विशेषताक प्रसंग लिखनै छथि जे—'लोकक रुचिभिन्नता एवं स्वभाव वैविध्यक आधारेपर नाटकक रचना होइत अछि तें लोक केँ अपन-अपन शिल्प, शृंगार, व्यवसाय, कर्म, वचन, आदिक अनुसारें नाटक प्रिय लगैत छैक! युवक, वृद्ध, धनी, वैरागी, वीर, बुद्धिमान, मूर्ख, नेना, स्त्रीगण सभ केँ समान रूपें संतुष्टि आ मनोरंजन देनिहार नाटके होइत अछि'।

महाकवि कालिदास नाटकक वैशिष्ट्य वर्णन अपन नाटक मालविकाग्निमित्र मे नाट्याचार्य गणदासक मुँह सँ करौने छथि जे—'नाटक मे सत, रज, तम, तीनू गुणक समावेश रहैत अछि, ओहि मे अनेक रसक आस्वाद रहैत अछि तथा अनेक प्रकारक चरित्रक निदर्शन रहैत अछि। तें भिन्न-भिन्न रुचिक व्यक्ति केँ समान रूप सँ एक्के संग आनंद प्राप्तिक एकमात्र साधन नाटक होइत अछि।'

आचार्य वामन साहित्यक विविध विधा सभ मे नाटके केँ श्रेष्ठतम स्थान देने अछि। हुनक कथ्य छनि जे—'काव्य सभ मे नाटकक विशेषताक कारण ई अछि जे कथा, आख्यायिका, महाकाव्य आदिक पठन-पाठन सँ रसास्वाद तखने भ' सकैत अछि जँ एकरा सभ मे नाटकत्वक आभास भेटैत हो। अर्थात् कथा आख्यायिका वा महाकाव्यादि मे वर्णित पात्र जँ नाटकक सजीव पात्र जकाँ अभिनय करैत दृष्टिगत भ' सकय तखने पूर्ण काव्यरसक प्राप्ति भ' सकैत अछि।'

एहिना आचार्य अभिनवगुप्त साहित्यक विभिन्न अंग मे नाटकक सर्वश्रेष्ठता प्रतिपादित करैत कहलनि अछि जे 'अनुभाव, विभाव, संचारी भावादिक साम्प्राधान्य रसास्वादक उत्कर्ष थिक आ से नाटके द्वारा संभव अछि। जखन नाटकक अभिनय होइत अछि तखन रंगमंचक वातावरण, पात्र सभक वाचिक, आंगिक एवं आहार्य अभिनय आ क्रिया-व्यापार सँ ह्रदयहीनो दर्शक सह्रदये जकाँ भव्य रसास्वादन करैत अछि।'

उपर्युक्त उद्धरण सभसँ, जे काव्यशास्त्रक प्रसिद्ध आचार्य सभक थिकनि, ई सिद्ध होइत अछि जे काव्यक सभ प्रकारक रचना मे सर्वाधिक रमणीयता आ रसोपलब्धिक साधन वस्तुतः नाटके थिक।

काव्यक जे दू भेद मानल गेल अछि ताहि मे श्रव्यकाव्यक अन्तर्गत मुक्तक, प्रबन्धकाव्य, उपन्यास, कथा, निबन्ध आदि साहित्यक अनेक विधा परिगणित अछि।

मुदा दृश्यकाव्यक अन्तर्गत नाटकक अतिरिक्त अन्य कोनो विधा नहि अछि। रसानुभूतिक दृष्टि सँ यदि नाट्य-कलाक तुलना साहित्यक अन्यान्य विधा आ आन कला सँ कयल जाय, तँ जतेक रसानुभूति नाटक मे भ' सकैत अछि, ततेक आन कला वा विधा मे नहि।

रसानुभूतिक सिद्धान्त प्रथमतः भरतमुनि नाटकेक सम्बन्ध मे प्रतिपादित कयने छलाह जे पछाति समग्र काव्यक आनो-आनो विधाक मुख्य गौरव बनि गेल। रसनिष्पत्तिक सम्बन्ध मे ओ लिखलनि अछि—'विभावानुभावव्यभिचारि भावसंयोगात् रसनिष्पत्तिः।' अर्थात् विभाव, अनुभाव, आ व्यभिचारी भावक संयोग सँ रसनिष्पत्ति होइत अछि। अन्य आचार्यलोकनि एही सिद्धान्त केँ आधार बनाक' दर्शकक हृदय मे स्थायी भावक स्थिति मानने छथि आ वएह स्थायी भाव अभिनयकर्त्ता लोकनिक विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भावक संयोग सँ उद्यीप्त भ' क' दर्शकक मन मे रसरूप ग्रहण करैत अछि आ दर्शक केँ रसानुभूतिक आनन्द दैत अछि।

वस्तुतः कवि अपना काव्य मे भावक सजीव बिम्ब उपस्थित क' पाठक केँ रसानुभूति करबैत छथि। काव्यक एक-एक पंक्तिक प्रभाव पृथक-पृथक पड़ैत अछि जे खंड-खंड रूप मे होयबाक कारण रसानुभूतियो खंड-खंड रूपे मे करबैत अछि। आन कोनो विधा मे समग्र रसानुभूति अखंड रूप मे संभवे नहि अछि।

नाटक मे दर्शक सभकिछु अपना सोझाँ मे होइत देखैत अछि। रंगमंचक उपस्थापित दृष्टियोजनाक संगहि अभिनेताक निम्नांकित चारू वस्तुक समवेत प्रभाव दर्शकपर पड़ैत अछि। ई चारू वस्तु थिक नाटकीय पात्रक सदृश अंगादिक चेष्टा, मूल-चरित्र जकाँ सम्भाषणादि, ओकरा अनुरूप वेशभूषा (वातावरण आ परिवेश), नाटकीय पात्रक अनुरूप अवस्था विशेषक कम्प, स्वेद, हर्ष, शोकादि जे क्रमशः आंगिक, वाचिक, आहार्य तथा सात्विक नाम सँ नाटकक चारिटा अंग मानल गेल अछि।

एहि तरहें दर्शक नाटकक पात्र सभक संग एतेक एकात्म भ' जाइत अछि जे ओकरा हर्ष सँ हर्षित आ शोक सँ विह्वल भ' हँसय आ कानय लगैत अछि। तहिना शृंगार, वीर, हास्य, भयानक आदि विभिन्न मुद्राक अभिनय सँ दर्शक सतत् भावक स्वानुभव करैत अछि। वास्तव मे जेहन यथार्थ आ मूर्त बिम्ब नाटक द्वारा प्रस्तुत भ' सकैत अछि, तेहन काव्यक आन कोनो विधा द्वारा नहि। तें दर्शक पात्रक संगे तन्मय भ' क' अपना स्वतंत्र (पृथक्) स्थिति केँ बहुधा बिसरि जाइत अछि आ पात्रेक स्थितियानुकूल शृंगार, वीर आदि रस सभ मे एकात्म भ' जाइत अछि।

एकर अतिरिक्त नाटक मे दर्शकक सभ ज्ञानेन्द्रिय एके संग सजग आ केन्द्रित

भ' उठैत अछि। आँखि सँ अभिनय देखैत अछि, कान सँ कथोपकथन सुनैत अछि, मोनपर दृश्य आ सुनलाहा सम्वादक माध्यमे मुख्य भावक समवेत प्रभाव पड़ैत छैक, बुद्धि सँ दर्शके ग्रहण करैत अपना केँ पात्रक भूमिका मे राखि रसानुभूति करैत अछि।

आन-आन कला मे वा काव्यक आन-आन विधा मे ई समवेत रसानुभूति नहि होइत अछि। संगहि आन कोनो कला वा विधाक रसानुभव ततद् विषयक विशेष ज्ञानक अपेक्षा रखैत अछि। चित्रक आनन्द उठयबाक हेतु चित्रकलाक सूक्ष्म आ विशेष ज्ञान चाही। नृत्य, संगीत आदि कला मे सेहो सम्बद्ध विषयक नीक ज्ञान रहलापर ओकर पूर्ण रसानुभूति भ' सकैत छैक। तहिना काव्य, कथादिक सम्यक् रसानुभूतिक हेतु एक तँ साधारण लोक सँ किछु बेसी ज्ञानक आवश्यकता रहैत अछि, दोसर सभ ज्ञानेन्द्रियक द्वारा एके संग समवेत रूप मे रसानुभूति नहि होइत अछि।

नाटके एहन वस्तु थिक जाहि सँ सभप्रकारक लोक आनन्द प्राप्त क' सकैत अछि, खाहे ओ शिक्षित हो खाहे अशिक्षित। नाटक मे चित्र, नृत्य, संगीत आदिसभ कला तथा साहित्यक कविता, कथा, उपन्यास आदिसभ विधा अभिनय एवं कथाक अंग बनि सभ कोटिक लोकक हेतु सहज, बोधगम्य आ आस्वाद्य बनि जाइत अछि। नाटक अपना सामूहिक प्रदर्शन, सामूहिक आस्वादन, मानव-जीवनक विविध भाव वा अवस्था आदिक यथार्थ एवं सजीव चित्रण प्रस्तुत करबाक कारणे साहित्यक अन्यान्य विधाक अपेक्षें अधिक व्यापक एवं लोककला थिक। उपर्युक्त एहीसभ विशेषताक कारणे नाट्यकलाक महत्ता 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' कहिक' घोषित कयल गेल अछि।

मिथिला मिहिर : 11 अगस्त 1968

भारतीय नाट्य साहित्यक विकास परम्परा

पौराणिक कालधरि

भारतीय साहित्य मे नाट्य-सम्बन्धी साहित्यक विषय मे सभ सँ प्राचीन लक्षणग्रंथ भरतमुनिक 'नाट्यशास्त्र' अछि। भरतमुनिक समय ईसाक प्रथम शताब्दीक लगपास मानल जाइछ। किछु विद्वान् ईसवी सन् सँ दू सय वर्ष पूर्व भरतमुनिक काल मानने छथि। भरतमुनि अपन नाट्यशास्त्र मे नाटकक उत्पत्तिक प्रसंग जनौने छथि जे त्रेता युग मे वैवस्वत मन्वन्तर आरम्भ भेलापर जखन लोक काम क्रोधादि दुर्व्यसनसभ मे लिप्त भ' रहल छल तँ देवतालोकनि ब्रह्मा लग जाक' संसारक सभटा दुखनामा सुनौलथिन। ओ लोकनि ब्रह्मा सँ आग्रह कयलथिन जे कोनो एहन उपाय कयल जाय जाहि सँ सभ वर्णाश्रमक लोक समान रूपें एकत्र बैसिक' आनन्द प्राप्त क' सकय आ जे देखि-सुनिक' लोकक जीवन सुखमय आ सदाचरणशील बनि सकय।

न वेदोव्यवहारोऽयं संश्राव्यः शूद्रजातिषु
तस्मात्सृजापरं वेदं पंचमं सार्ववार्णिकम्।

(एहिठाम सार्ववार्णिक शब्द मे जे साम्यवादक सार्वभौम, उदार आ साहसपूर्ण स्वर मुखरित भेल अछि से ध्यान देबाक योग्य अछि।) तखन ब्रह्माजी देवतालोकनिक अभीष्टपूर्तिक संकल्प क' चारू वेदक स्मरण कयलनि आ ॠग्वेद सँ कथा, सामवेद सँ गीत, यजुर्वेद सँ अभिनय तथा अर्थवेद सँ रसग्रहण क' पाँचम वेदक रूप मे नाट्यवेदक रचना कयलनि—

जग्राह पाठ्यं ॠग्वेदात्
सामभ्यो गीतमेव च
यजुर्वेदादभिनयान्
रसानाथर्वणादपि
वेदोपवेदैः सम्बद्धो
नाट्यवेदै महात्मना

एवं भगवता सृष्टो
ब्रह्मण सर्ववेदिना।

एतए जे विशेष द्रष्टव्य थिक से ई जे वेदसभ सँ वस्तु ग्रहण क' नाटकक निर्माण भेल। तात्पर्य ई जे वेद मे नाटकीय-तत्त्व विद्यमान छल से एहि सँ स्पष्ट बुझना जाइत। वस्तुत: भरत मुनिक कथन 'जग्राह पाठ्यम् ऋग्वेदात्'क आधारेपर वेद मे नाटकीय तत्त्वक अनुसन्धान विद्वान सभक द्वारा कयल गेल। ऋग्वेदक निर्माणकालधरि जे वैदिक साहित्यक प्राचीनतम भाग थिक आ जे भारतीये वाङ्मयटा नहि, विश्वसाहित्यक क्षेत्र मे पहिल ज्ञानसंग्रह थिक, नृत्यकला (नाट्यकला) पर्याप्त प्रकाश मे आबि गेल छल। ह्विटने, स्काडर जैकोबी, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक आदि ऋग्वेदक सर्जनकाल ई.पू. 6000क लगभग मानने छथि। ह्यूगो विंकलर तथा विंटरनीत्सक मतानुसार ई. सन्क 2000 वर्ष पूर्व वेदक विद्यमानता सिद्ध होइछ। अस्तु सभ सँ प्राचीन वेद ऋग्वेद मे ऊषाक वर्णन-प्रसंग ओकर उपमा शैलूषी अर्थात् नर्त्तकी सँ देल गेल अछि। एतदिरिक्त नाटकक मुख्य अवयव 'संवादो'क उल्लेख पुरुरवा-उर्वशी, यम-यमी, इन्द्र-इन्द्राणी, वृषा-कपि, सरमापाणिसक कथोपकथन मे उपलब्ध होइत अछि।

'कात्यायन श्रोतसूत्र' मे तँ सोमयाग नामक यज्ञक क्रम मे सोमरसिक आत्मवादी इन्द्रक अनुयायीलोकनि द्वारा सोमपानक अवसरपर एक छोटछीन अभिनयोक प्रसंग अबैत अछि। यथा—

क्रय-प्रकारमाह—
स आह सोमविकयिन् क्रय्यस्ते सोमो राज।
क्रय्य इत्याह सोमविक्रयी।
(सोमक्रयार्थं विक्रेता सह व्यवहार:)
तं वैते क्रीणानीति।
क्रीणाहीत्याह सोम विक्रयी।
कलया ते क्रीणानीति।
भूयो व अत: सोमो राजाऽर्हतीत्याह
सोमविक्रयी। *इत्यादि*

एहि तरहें कात्यायन श्रोतसूत्रक सप्तम् अध्यायक अष्टम् कण्डिकाक (25)म सूक्त मे अछि—

हिरण्यग्वं सहसाऽऽच्छिद्या पृषता वस्त्राकाण्डे नाहन्तिवा।

एहि मे सोम बेचनिहार आ किननिहारक संवाद तथा माँझ-माँझ मे स्वर्ण हाथ

मे ल' क' कहब, सोम-विक्रयी केँ प्रलोभन देब, सोमविक्रयी द्वारा सोन ग्रहण करब, पांग उतारब, सोमविक्रयीक पीठपर प्रहार करब आदि नाटकीय निर्देशक रूप दृष्टगोचर होइछ। एहि संवादसभ मे क्रिया-व्यापार, कथा आदि नाटकीय तत्त्व स्पष्टत: प्रतिभासित अछि।

मैक्समूलर, प्रो. सिलवाँ लेवी, प्रो. श्नोदर, डॉ. हर्टेल, डॉ. बिंडिश, ओल्डेनवर्ग प्रभृति विद्वानलोकनि सेहो वेद मे प्रयुक्त एहि प्रकारक संवादात्मक सूक्त सभक आधारपर भारतीय नाट्य-कलाक उत्पत्ति वैदिके युग सँ सिद्ध कयने छथि। डॉ. विंटरनीत्स तथा डॉ. कीथ इहो लोकनि वेद-मंत्र सँ नाटकक विकास मानैत छथि। डॉ. दासगुप्त आ डॉ. एस. के. दत्त आदि एहि अभिमत सँ सहमत छथि जे वेद-मंत्र सभ मे नाटकीय तत्त्व प्रचुर रूप मे विद्यमान अछि।

एतए ई ज्ञातव्य जे वेद कोनो एक समयक रचना नहि थिक, ई विषय विद्वान्लोकनि सिद्ध क' चुकल छथि। ई मानव-इतिहासक क्रमबद्ध इतिहास थिक। तें वेद आ वैदिक सूक्ते सभटा केँ नाटकक उत्पत्तिक मूल-स्रोत मानि लेब उचित नहि। ई तँ साधारणो बुद्धि सँ बूझल जा सकैत अछि जे प्राग्वैदिक कालमे—आदि काल मे नाटकक आरम्भिक रूप उत्पन्न भेल होयत जखन मनुष्य दल बनाक' संघटित आ व्यवस्थित जीवन व्यतीत करब सीखब शुरू कयने होयत।

ई तथ्य थिक जे नाटकक उत्पत्ति कोनो एक दिन, अनायास कोनो एक कारण सँ नहि भेल अछि। ई अनेक शताब्दीक विकास-क्रमक गुणात्मक परिणाम थिक। नाटकक उत्पत्तिक अनुसन्धान मानव-विकासक समाजशास्त्रीय अध्ययनक वैज्ञानिक शोधक विषय थिक।

ऋग्वेदक अतिरिक्त शुक्लयजुर्वेदक वाजसनेयि संहिताक तीसम अध्याय मे अभिनय कयनिहार सूत तथा शैलूष नामक जाति सभक उल्लेख भेटैत अछि आ रंगशालाक चर्चा भेटैत अछि। 'नृताय सूतं गीताय शैलूषं, धर्माय समाचरं नरिष्ठायै भीमलं नर्माय रेभं हसाय कारिमानन्दाय स्त्रीषखं प्रमदे कुमारे पुत्रं मेधायै रथकारं धैय्याय तक्षाणाम्।' अर्थात् नृत्त (ताल-लय युक्त नाच)क हेतु सूत केँ, गीतक हेतु शैलूष (नट)केँ, धर्मव्यवस्थाक हेतु सभायतुर केँ, सभ केँ विधिवत् बैसयबाक हेतु भीमकाय युवक सभ केँ, विनोदक हेतु विनोदशील केँ, शृंगारक हेतु कलाकार केँ, समय बितयबाक हेतु कुमारपुत्र केँ, चातुर्यपूर्ण कार्यक हेतु रथकार केँ तथा धैर्ययुक्त कार्यक हेतु कमार केँ नियुक्त करक चाही।

उपर्युक्त उद्धरण सँ प्रतीत होइत अछि जे यज्ञक समय नृत्य आ गीतक लेल सूत तथा शैलुषक नियुक्ति कयल जाइत छल। नृत्य आ गीत मिलिक' नाटकाभिनयक

पूर्वरूप निर्मित होइछ। एहि सँ प्रमाणित होइछ जे शुक्ल यजुर्वेदक रचनाकाल मे नाटकक कोनो-ने-कोनो प्रारम्भिक रूप अवश्य प्रचलित छल।

एही तरहें अर्थवेद मे अछि 'यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति भूम्यां मर्त्याब्यैङलवाः।' एहिसभ उद्धरण सँ स्पष्ट भ' जाइत अछि जे मानव-विकासक आरम्भिक स्थिति सँ कोनो समय नाटकक विभिन्न तत्त्वक जन्म भेल होयत जे क्रम-क्रम सँ विकसित वेदकालधरि अपन विकासक एक बड़का धार पार क' लेने छल आ तदुपरान्त ओत' सँ विकास करैत-करैत भरतमुनिक नाट्य-शास्त्र मे विकासक पूर्णता प्राप्त क' परिष्कृत नाट्य कलाक रूप धारण क' लेलक। नाट्यशास्त्रक प्रणयन कालधरि सामान्य जनता सँ ल' क' उच्चवर्ग धरिक हेतु नाटक आनन्दक एक तेहन साधन बनि गेल जे ओकर विधिवत् शास्त्रीय विवेचनक स्थिति उत्पन्न भ' गेल आ तें भरतमुनि नाटक मे रसानुभूतिक सिद्धान्त प्रतिपादित कयलनि जे पछाति साहित्य मात्रक प्राण वा आत्माक रूप मे स्वीकृत क' लेल गेल।

वेदक उपरान्त परवर्त्ती साहित्य मे तँ नाटक आ नाट्यकलाक शिल्प-विधि सभक स्पष्ट इतिहास भेटैत अछि।

पातंजलि महाभाष्य मे 'कंसवध' आ 'बालिवध' नाटकक स्पष्ट उल्लेखक आधार पर डॉ. कीथ नाटकक धार्मिक उत्पत्तिक मत प्रतिपादित कयलनि आ डॉ. रिजवे 'ड्रामाज एंड ड्रेमेटिक डान्सेज इन नान यूरोपियन रेसेज' मे आदिमानवक वीरपूजा भावना केँ नाटकक उत्पतिक मूल मानने छथि। 'टाइप्स ऑफ संस्कृत ड्रामा' मे मर्कंड नामक पाश्चात्य विद्वान नृत्य केँ नाट्य के आदि रूप मानने छथि। जर्मन विद्वान् पिशेल पुत्तलिका नृत्य सँ नाटकक उत्पत्ति मानलनि अछि। 'सूत्रं धारयतीति सूत्रधारः, इयह शब्द एहि मतक प्रमुख आधार थिक। पिशेल छाया नाटको सँ नाट्योत्पत्ति मानने छथि जकर समर्थन स्टेनकोनो कयने छथि। प्रो. डोनल्ड क्लाइब स्टुअर्ट धीआपूताक स्वाभाविक क्रीड़ा सँ नाटकक उत्पत्ति मानने छथि। श्री जयनाथ 'नलिन' मनुष्यक तीनटा स्वाभाविक प्रवृत्ति—आत्मविस्तार, अनुकरण आ आत्मप्रकाशन केँ कारण मानलनि अछि।

व्याकरण शास्त्रक सुदीर्घ परम्पराक ऐतिहासिक केन्द्रविन्दु आचार्य पाणिनिक काल युधिष्ठिर मीमांसक, सत्यव्रत सामश्रमी, रजवाड़े आ वैद्य, बेलबेलकर, भंडारकर, उपाध्याय, मेक्डोनल, मैक्समूलर, कीथ आदि 2800 ई. पूर्व सँ ल' 300 ई. पूर्व धरि मानने छथि। आचार्य पाणिनिक अष्टाध्यायी मे 'पराशर्य शिलालिभ्यां भिक्षु नट सूत्रयोः' आदि सूत्रसभक द्वारा ओहि समय नाटकक विद्यमानताक ज्ञान होइत अछि।

सुरभारतीक आदि महाकाव्य वाल्मीकि रामायण मे तँ नाटकमंडली, कुशीलव

(नट-नर्तक) आदिक पर्याप्त वर्णन अछि। जेना—अयोध्याकाण्ड 69म् सर्ग मे रामक वनवासोत्तर महाराज दशरथक उद्विग्नता तथा व्यथा केँ शान्त करबाक लेल गीत, नृत्य, नाटक आदिक आयोजन करबाक वर्णन-क्रम मे अछि 'वादयन्ति तदा शान्तिलास—यन्त्यपि चापरे। नाटकायपरे स्माहुर्हास्यानि विविधानि च।' ओहिना रामक राज्याभिषेक वर्णन-क्रम मे लिखैत अछि—

'नट-नर्त्तक संघानां गायकानां च गायताम। यत: कर्ण सुखा वाच: सुश्राव जनता तत:' आदि। रामायणक समय 500 ई. पूर्व मानल जाइत अछि। महाभारत मे 'रामायण-नाटक' तथा 'कौबेर रम्भाभिसार' एहि नाटक सभक स्पष्ट उल्लेख आ अन्यान्य नाट्य-प्रकरणक पर्याप्त चर्चा अछि। श्रीमद्‌भागवत पुराण नट-नर्तक-गन्धर्वा: सूतमागध बन्दिव:। गावन्ति चोत्तम श्लोकं चरितान्यद् भुतानि च।' तथा मार्कण्डेय पुराणक—

कदाचित् काव्य संलाप गीत नाटक सम्भवैः
रे मे नरेन्द्र पुत्रोऽसौ नरेन्द्रतनयैः सह।

एहि श्लोक सभ सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे भारतीय नाटकक मूल उत्पत्ति वैदिक नहि, प्राग्वैदिके काल मे भेल छल, जकर निरविच्छिन्न विकास पौराणिक कालधरि क्रमश: होइत गेल आ आइधरि भ' रहल अछि।

मिथिला मिहिर: 23 अगस्त 1964

भारतीय नाट्य साहित्यक विकास-परम्परा

सोलहम शताब्दी धरि

एहि सँ पूर्व पौराणिक कालधरि नाट्य-साहित्यक विकासक प्रसंग कहल जा चुकल अछि। पौराणिक कालक उपरान्त विनयपिटक आदिक आधार पर बौद्ध तथा जैन कथा सभा मे सेहो नाटकक पर्याप्त उल्लेख भेटैत अछि।

मौर्य-साम्राज्यक कीर्त्तिकथा केँ समस्त संसार मे प्रसारित कयनिहार अद्‌भुत विद्वान कौटिल्यक 'अर्थशास्त्र'क अध्ययन सँ पता चलैत अछि जे आन-आन कालक अतिरिक्त जतेक ललित-कला अछि, सभक शिक्षा-दीक्षाक हेतु ओहि समय मे राज्यक दिस सँ पूर्ण प्रबन्ध छल। अर्थशास्त्र एक सुगठित राज्य-व्यवस्था लेल विधान देने अछि जे ओहि मे गणिका, दासी, अभिनेत्री, गायिका आदिक हेतु चित्रकारिता, वीणावादन, वेणुवादन, मृदंग वादन, गंध निर्माण, शरीर श्रृंगार आदि कला सभक शिक्षणार्थ सुयोग्य आचार्यलोकनिक प्रबन्ध राज्यक दिस सँ होयबाक चाही।

गीत वाधापाठ्यवृत्त नाट्याक्षर चित्रवीणा वेणु मृदंग परिचित
ज्ञान गंध माल्य संयूहन-सम्पादन-संवाहन वैशिक कला ज्ञानानि
गणिका, दासी रंगोपजीवनींश्च ग्राह्यता राजमण्डलादाजीवं कुर्यात्।

अर्थशास्त्रे सँ ईहो बूझना जाइत अछि जे ओहि समय नट-नर्त्तक, गायक, वादक, कुशीलव, प्लवक (डोरीपर खेल देखौनिहार), सौमित्र (ऐन्द्रजालिक) एवं चारण आदिक विभिन्न मंडली सभ गाबिक' बजाक' आ नाटक क' जीविकोपार्जन करैत छल। एकरा सभ केँ प्रति खेल पाँच 'पण' राजकर (इंटरटेनमेंट टैक्स) देब' पड़ैत छलैक। कामशास्त्रक विख्यात आचार्य वात्स्यायनक कथन छनि जे तत्कालीन कलापूर्ण सरस्वती भवन (नाटकक हेतु सुनिर्मित गृह) सभ मे पक्ष अथवा मासक प्रसिद्ध पर्व सभपर राजाक दिस सँ नियुक्त नटलोकनिक अभिनय होइत छल।

एहि तरहें ई पूर्णत: वस्तु सत्य थिक जे भारत मे नाट्यकलाक उद्‌भव सभ सँ पहिने भेल छल। यूनान मे जे विश्व सभ्यताक द्वितीय प्राचीन केन्द्रस्थल छल,

ताधरि नाट्यकलाक उद्‌भव नहि भेल छल। ईसाक प्राय: चारि सय वर्ष पूर्वे भारतवर्ष मे 'भास' सदृश प्रतिभाशाली नाटककार भ' गेल छलाह आ हुनक मध्यम व्यायोग, दूत घटोत्कच; कर्णभार, उरुमंग, पंचरात्र, दूतवाक्य, बालचरित—ई सातटा महाभारतक आधारपर, प्रतिभा नाटक, अभिषेक नाटक—ई दू टा रामायणक आधारपर तथा अविमारक, दरिद्रचारुदत्त, प्रतिज्ञा, यौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्त ई चारिटा कल्पनाक आधारपर, सभ मिला क' कुल तेरह गोट नाटक लिखल जा चुकल छल।

भासक समकालीन अनेक विदेशी नाटककारक चर्चा अछि, मुदा हुनका-लोकनिक नाटकसभ केँ आलोचकलोकनि नाट्यकलाक दृष्टियें ततेक उत्कृष्ट नहि मानलनि अछि। भासक नाटकसभक कला-विषयक उत्कर्ष देखि सहजें ई कहल जा सकैछ जे भास सँ बहुत पहिने सँ संस्कृत नाटक सभक परम्परा चलि आबि रहल छल। अश्वघोषक किछु नाटक मध्य-एशिया मे प्राप्त भेल अछि। कालिदास अपना पूर्वक नाटककार सभ मे भास, सौमिल्ल आ कविपुत्रक उल्लेख कयने छथि। कालिदास अपन सुप्रसिद्ध ग्रंथ मालविकाग्नि मित्रक प्रस्तावना मे भासक उल्लेख एहि प्रकारें कएने छथि—

प्रथितयशसां भास-सौमिल्ल-कविपुत्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य
कथं वर्त्तमानस्य कवे: कालिदासस्य कृतैबहुमान:।

अर्थात् विख्यात यशस्वी भास, सौमिल्ल, कविपुत्र आदि लब्धप्रतिष्ठ विद्वान लोकनिक रचनाक अतिक्रमण क' कोना हमर रचना अधिक सम्माननीय भ' सकैछ? एहि सँ नहि नाटककारलोकनिक ख्याति स्पष्ट होइत अछि।

द्वितीय वा तृतीय ईसवी सन् पूर्व महाकवि शुद्रक भेलाह जे सुविख्यात मृच्छकटिकक रचना कयलनि। ई एक अनुपम यथार्थवादी रचना थिक, जकर कथावस्तुक प्रधान तत्व तत्कालीन जन-जीवनक एक एहन पक्ष केँ ल' क' निर्मित भेल अछि जे अतीव साहसमय तथा प्रगतिशील अछि आ ओहि युगक धर्म, अर्थ, एवं समाज-तंत्रक हेतु एक पैघ चुनौती थिक। संसारक समस्त आपत्ति सभक खानि दरिद्रताक अभिशाप सँ उत्पन्न दोष सभक वर्णन करैत एकठाम केहन मार्मिक एवं पूँजीवाद विरोधी-स्वर मुखर भ' उठल अछि, तेकर केवल एक उदाहरण एहि प्रकारें अछि—

दारिद्रयाद ह्रियमेति ह्रीपरिगत: प्रभ्रश्यते तेजसो
निस्तेजा: परिभूयते परिभवान्निर्वेदमापद्यते।
निर्विण्ण: शुचमेति शोकनिहतो बुद्धया परित्यज्यते
निर्बुद्धि: क्षयमेत्यहो निर्धनता सर्वा पदामास्पदम्।।

अर्थात् निर्धनता सँ लाज होइत छैक, लज्जित व्यक्ति स्वाभिमानरहित भ' जाइत छथि, आत्माभिमानशून्य व्यक्ति तिरस्कृत होइत अछि, तिरस्कार सँ आत्मपतन आ आत्मपतित व्यक्ति शोक पबैत अछि, शोकाकुल व्यक्ति बुद्धि छोड़ि दैत छथि तथा निर्बुद्धि पुरुष नाश केँ प्राप्त होइत छथि। एहि तरहें निर्धनता सभ प्रकारक कष्टसभक मूल थिक।

शूद्रक उपरान्त संस्कृत नाटक क्षेत्र मे सुरभारतीक अत्यन्त देदीप्यमान रत्न महाकवि कालिदास उपस्थित होइत छथि जे केवल संस्कृते साहित्य मे नहि, अपितु संसारक समस्त साहित्य मे सर्वश्रेष्ठ नाटककार बुझल जाइत छथि। भारतीय वाङमयक उपवन मे कालिदासक समागम एक वसन्त दूतक समान कहल गेल अछि, जनिका कारणे समस्त आर्यभाषा-साहित्यक उपवनक कोन-कोन शाश्वत साहित्य सुमनक स्वर्गीय सुगंधि-सुधा सँ सुवासित भ' उठल। महाकवि कालिदासक सम्बन्ध मे गेटेक भाव केँ विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरक शब्द मे एहि तरहें कहल जा सकैत अछि—स्वर्ग आ मर्त्यक जे ई मिलन थिक तकरा बड़े सहज भावें कालिदास सम्पादित क' लेने छथि। ओ फूल केँ एहि सहजता सँ फल मे परिणित क' लेलनि अछि, मर्त्यक सीमा केँ ओ एहि प्रकारें स्वर्गक रंगमे मिला देलनि अछि जे मध्यक व्यवहार ककरो बुझियो ने पड़ैत अछि।

हुनका नाटक मे तत्कालीन भारतक जनजीवनक अनुभूति साकार भेल अछि। कालिदास वस्तुत: एहन महान नाटककार एवं कवि भेलाह अछि, जिनक असाधारण कृतित्व केँ समस्त काव्यप्रेमी संसार बड़े श्रद्धा सँ स्मरण करैत कहैत अछि—

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धा: कवीश्वरा:
नास्ति येषां यश: काये जरामरणजंभयम्।

ई मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय तथा अभिज्ञान शाकुन्तल नामक तीनटा नाटक लिखलनि। कालिदासक बाद ईसवी सनक प्रथम किंवा द्वितीय शताब्दी मे बौद्धकवि अश्वघोष सारिपुत्र प्रकरण तथा दू गोट अन्य नाटक लिखलनि। सातम शताब्दी मे सम्राट हर्षवर्द्धन प्रियदर्शिका, रत्नावली तथा नागानन्द नाटक लिखलनि जे संस्कृत साहित्य मे अपन महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। सातम शताब्दीक उत्तरार्द्ध मे महाकवि भवभूति महावीर चरित, मालती माधव आ उत्तर रामचरितक अनमोल रचना कयलनि। उत्तर रामचरित मे ओ एको रस: करुण एवं निमित्त भेदाद् भिन्न: पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्त्तानक ऐतिहासिक घोषणा कयने छथि। भवभूतिक करुण रसक सम्बन्ध मे गोवर्द्धनाचार्य जे गौरवोक्ति कयने छथि से नि:स्संदेह स्वर्णाक्षर मे लिखबाक योग्य अछि—

भवभूते: सम्बन्धाद् भूधरभूरेव भारती भाति
एतत् कृत कारुण्ये किमन्यथा रोदिति ग्रावा।।

अर्थात् भवभूति (कवि भवभूति वा भगवान शंकर)क सम्बन्ध सँ सरस्वती पार्वती सदृश सुशोभित भ' रहल छथि, कारण जे जखन भवभूतिक वाणी अथवा पार्वती करुण भावक व्यंजना करैत छथि तँ चेतन प्राणीक कोन कथा, पाषाण सन जड़ पदार्थो करुण क्रन्दन करए लगैत अछि।

भवभूति सँ किछु पूर्व विशाखदत्त भेलाह जे घटना-प्रधान नाटक मुद्राराक्षसक रचना कयलनि। सातम शताब्दीक उत्तरार्द्ध मे भट्ट नारायण वीररसक वेणीसंहार नाटक लिखलनि। आठम शताब्दी मे मुरारि नामक नाटककार अनर्घराघवक रचना कयलनि। हुनका सम्बन्ध मे किछु आलोचक-लोकनिक उक्ति छनि—

देवीं वाचमुपासते हि बहव: सारं तु सारस्वतम्
जानोते नितरामसो गुरुकुलक्लिष्टो मुरारि: कवि: ।।

एहि मे मुरारि कविक महत्व प्रतिपादित भेल अछि। दशम शताब्दी मे राजशेखर कवि बाल रामायण महानाटक, विद्धशालमंजिका, कर्पूरमंजरी नामक प्रसिद्ध नाटक सभक प्रणयन कयलनि।

ईसाक आठम शताब्दीक आरम्भे मे मुसलमानक भारत मे प्रवेश भेल। तकर प्रभाव एहिठामक साहित्य एवं संस्कृतिपर पर्याप्त रूपें पड़ब स्वाभाविक छल। फलत: एहि बीच कोनो महत्वपूर्ण नाटक रचना संस्कृत साहित्य मे नहि भेल। ओना शक्तिभद्र, दामोदर मिश्र, क्षेमीश्वर, दिङनाग, कृष्ण मिश्र, जयदेव, वत्सराज आदि नाटककारलोकनि कतिपय नाटक लिखलनि। एही तरहें बारहम शताब्दी मे यशचन्द्र 'मुदित कुमुदचन्द्र', कविराज शंखधर 'लटकमेलक' नामक प्रहसनात्मक नाटक लिखलनि जकर एक प्रसिद्ध श्लोक थिक—

ययस्कस्य तरोर्मूलं येन केनापि पेषयेत्
यस्मै कस्मै प्रदातव्यं यद्वा-तद्वा भविष्यति।

ई मूर्ख आ ग्रामीण वैद्य सभपर रोचक व्यंग्य थिक।

बारह मे शताब्दी मे विग्रह राजदेव 'हरकेलि' रामचन्द्र 'नव-विलास', 'राघवाभ्युदय', 'सत्य हरिश्चन्द्र' आदि नाटक, रुद्रदेव 'उषगेंदिय', 'ययाति चरित' नामक नाटकक आ सुभट 'दूतांगद' नामक छायानाट्यक रचना कयलनि। तेरहम शताब्दी मे रामभद्र मुनि 'प्रबुद्ध रौहिणेय', मदन कवि 'पारिजात मंजरी', जयसिंह सूरि, हम्मीर मर्दन, रविवर्मा 'प्रद्युम्नाभ्युदय' चौदहम शताब्दी मे वीररस प्रधान 'सौगन्धिका हरण' मनिक नामक विद्वान 'भैरवानन्द' लिखलनि तथा मैथिली भाषाक

प्रसिद्ध गद्यग्रंथ वर्ण-रत्नाकरक रचयिता कविशेखर ज्योतिरीश्वराचार्य 'धूर्त्त समागम', यशपाल 'मोह पराजय' लिखलनि। पन्द्रहम शताब्दी मे व्यास रामदेव 'रामाभ्युदय', 'पाण्डवाभ्युदय' आ 'सुभद्रा परिणय', वाणभट्ट 'पार्वती परिणय', जीभराम याज्ञिक 'मुरारि विजय' आ सोलहम शताब्दी मे गोकुलनाथ 'मुदित मदालसा', 'अमृतोदय' नोआरवालीक शासक माणिक्यदेव 'कुवलयाश्वचरित', 'विख्यात विजय', कोचीनक कवि बालकवि 'रत्नुकेतूदय', रवि वर्मा; 'विलास' आ तंजोर जिलाक रहनिहार विष्णुपुरम निवासी विलिनाथ 'मदनमंजरी महोत्सव' नामक संस्कृत नाटकक रचना कयलनि। यवन शासन काल मे संस्कृत साहित्यक प्रगति मे जे अवरोध उत्पन्न भेल तकर असरि नाट्य साहित्योपर पड़बे कयल जे नितान्त स्वाभाविक छल।

संस्कृतक क्रमिक ह्रासोन्मुख होयबाक एहि काल मे साहित्यक धारा लोक-भाषा दिस प्रवृत्त भेल। एहि सम्बन्ध मे डॉ. ग्रियर्सन मैथिली साहित्यक अनुसन्धान करैत असमी, बंगला, उड़िया आदि भाषा सभक गंभीर अध्ययन प्रस्तुत कयलनि अछि। ओ ई सिद्ध कयने छथि जे विद्यापतिये प्रथम व्यक्ति छलाह जे चौदहम शताब्दी मे देशी भाषा केँ नाटक रचना मे प्रथम स्थान देलनि। ता धरि संस्कृत नाटक मे प्राकृतक स्थान छल। विद्यापति अपना युगक सर्वोच्च साहित्यिक छलाह। संस्कृत, अपभ्रंश, प्राकृतक अतिरिक्त देशी भाषोपर (देसिल वयना पर) हुनक प्रशंसनीय अधिकार छल। ओ प्रत्येक भाषा मे रचना कयलनि। वस्तुत: विद्यापति साहित्यक अग्रदूत छलाह। संस्कृत, अपभ्रंश, प्राकृत आ देशी भाषाक चतुष्पथ पर ठाढ़ भ' क' ओ दूरदर्शी कवि भारतक साहित्यिक भविष्य केँ देखि रहल छलाह। प्रत्येक पथक अनुसरण क' ओ दूर-दूर धरिक दृश्य देखलनि, विचार कयलनि आ अपन अनुभव प्रकट कयलनि। फलत: ओ भविष्यद्रष्टा आ युगस्रष्टा महाकवि मैथिली भाषाक उपयोग अपन गोरक्ष विजय नाटक मे क' आब' बला युगक हेतु एक सुगम मार्गक उद्घाटन कयलनि। परवर्ती काल मे एहि प्रकारक नाटकक परम्परा चारि सय वर्ष धरि चलैत रहल। एहि परम्परा मे लगभग पैंतीस नाटककार भेलाह जे एक सय छौ सँ ऊपर नाटक सभक रचना कयलनि। मिथिला मे एहि नाटक सभ केँ 'किरतनियाँ नाटक', आसाम मे 'अंकियानाट' कतिपय विद्वानलोकनि मानने छथि। विद्यापतिक 'मणिमंजरी' नाटिका हेबनिपर प्राप्त भेल अछि।

गोविन्द कवि रचित नलचरित नाटकक एकटा पद अछि 'भेल सुचरित मंत्रिवर परवेस। अनुखन जसुमन धरम उदेस आदि हें' एहि तरहें आनन्द विजय नाटिका, ऊषाहरण आदि नाटक लिखल गेल। पन्द्रहम वा सोलहम शताब्दीक विरचित विद्याविलाप नामक एक नाटकक हस्तलिखित प्रति नेपाल सँ प्राप्त भेल अछि

जकर आधार पर भारतेन्दु विद्यासुन्दर नाटकक रचना कयलनि। सोलहमे शताब्दी मे रामचन्द्र आ वीरनारायण दूटा प्रसिद्ध नाटककार भेलाह। महाराजा जगज्योतिर्मल्ल 'मुदित कुवलयावक' रचना कयलनि।

एहि तरहें उड़िया भाषा मे पन्द्रहम शताब्दी मे वीर महाराज कपिलेन्द्र देव भेलाह जे परशुराम विजय नामक नाटक लिखलनि। ओकर एक पद एहि तरहें अछि—

'केवल मुनि कुमर, परशु दक्षिण कर, वामेण सौहे घनशर ना कोपेन बोलइ वीरतात्तु से मोबोधिलु तात, आज तोरे छेदिवइ माथ, नाशुण राजन हो किए तोरे राज्ये ब्रऊबधेना।'

एहि मे विद्यापतिक शैलीक प्रभाव स्पष्टत: परिलक्षित अछि। तहिना आसाम पन्द्रहमे शती मे एक प्रतिभाशाली कवि शंकरदेव केँ उत्पन्न कयलक जे कालियदमन, रामविजय, रुक्मिणीहरण, केलि गोपाल, पत्नप्रसाद, पारिजातहरण आ रासयाम नामक सातगोट नाटक लिखलनि। एहि नाटक सभक गद्यशैली परिमार्जित प्रतीत होइछ। केवल गीते टा नहि, सम्पूर्ण नाटक मैथिली मे अछि, जाहि मे असमीक पुट पाओल जाइत अछि। उदाहरणार्थ कालियदमन नाटकक प्रारम्भ देख—

सूत्रधार—तदनन्तर नागवधू सभक परम सन्ताप पेखिए श्री कृष्ण कृपा उपजल नागधारी सबक सम्बोधित बोलिल। आए कालिक भार्या नागिनी सब, सन्ताप छोरही इहि बोलि डेग दिया नामि सर्पक मणाहन्ते अन्तर हुआ रहल। पयारा जय-जय जगत महेश्वर। ब्रह्मा शंकर याहे किंकर जय भकतक भयहारी नमो हरिचरण तोहारी आदि।

उपयुक्त उद्धरण सभ सँ ई सिद्ध अछि जे सोलहम शती मे लोकभाषा सभ मे नाट्यरचना होब' लागल। आसाम मे शंकरदेवक अतिरिक्त माधवदेव, गोपाल आ रामचरण ठाकुर आदि नाटककार सोलहमे शताब्दी मे भेलाह। नाटकक एक धारा बंगाल मे 'यात्रा' नाम सँ ब्रजभूमि मे तथा राजस्थान मे 'रास' नाम सँ प्रचलित भ' चुकल छल। गुर्जरो मे एहि प्रकारक रचना एहि काल मे होब' लागल छल।

संक्षेपमे, ई कहल जा सकैछ जे नेपाल, मिथिला, बंगाल, आसाम, उड़ीसा, गुजरात, राजस्थान, ब्रजभूमि आदि मे सोलहम शताब्दी धरि लोकभाषा सभ मे समृद्ध नाट्यसाहित्य सभक सामग्री प्रस्तुत भ' गेल छल।

मिथिला मिहिर : 18 अप्रैल 1965

साहित्य मे शब्द आ अर्थक महिमा

मनुष्य अपना मनक भाव केँ व्यक्त करबाक हेतु; अपना मनक भाव अनका मन धरि पहुँचयबाक हेतु आ ओहि सँ प्रभावित करयबाक हेतु जाहि सशक्त माध्यम 'भाषा'क उपयोग करैत अछि, तकर मूल आधार शब्द थिक। शब्दक महिमा अनन्त अछि। महाभाष्यकार पतंजलि तँ एत' धरि कहने छथि जे एकोटा शब्दक ज्ञान जँ सम्यक् प्रकारें हो आ ओकर सुष्ठु प्रयोग जीवन मे जँ एको बेर क' सकी तँ ओ शब्द भौतिक तथा पारलौकिक दुहू लोक मे कामधेनु जकाँ सभ अभीष्ट केँ पूर्ण क' सकैत अछि। 'एक: शब्द: सम्यक् ज्ञात: सुष्ठु प्रयुक्त: स्वर्गे लोके च कामधेनुम् भवति।' एहि सँ शब्दक महिमा बूझल जा सकैत अछि; शब्दक ज्ञान जँ-जँ लोक केँ बढ़ल जाइत छैक तँ-तँ ओकरा अभिव्यक्ति सामर्थ्यक वृद्धि भेल जाइत छैक आ लोक अर्धधनी शब्दक सम्पर्क प्राप्त कयने जाइत अछि।

भारतीय स्फोटवादक मतानुसार शब्दक चारिटा रूप वा अवस्था अछि—बैखरी, मध्यमा, पश्यन्ती आ परा। वाग्यन्त्रक सहायता सँ उत्थित वायुस्पन्दनक रूप मे जे कान मे प्रवेश करैछ ओ शब्दक एकान्त वाह्य रूप थिक जकरा बैखरी कहल जाइछ। 'मध्यमा' शब्दक सूक्ष्मतर रूप थिक। एकर कोनो बाह्य रूप नहि छैक। ई अन्त: सन्निवेशिनी थिक आ एकमात्र बुद्धिये एकर उपादान थिकैक। बुद्धि व्यापारे मे एकर अस्तित्व छैक। 'पश्यन्ती' अवस्था आरो अधिक सूक्ष्म होइत अछि। भयंकर बिहाड़िक पूर्व प्रकृतिक अन्त: स्तब्धता मे जेना ओकर शक्ति-पुंज अपना मे लीन रहैछ ठीक तहिना चित्तक स्वाभिन्न स्पन्दन मे विधृत जे शब्दक अवस्था 'पश्यन्ती' कहबैत अछि। ई ज्ञान आ ज्ञेयक एकीभूत अवस्था थिक। जेना कोनो 'बीज' मे रूप-रंग, विस्तार, स्वाद आदिक सहित समस्त वृक्षोत्पादनक शक्ति प्रस्फुटित होयबाक हेतु प्रस्तुत रहैछ, तहिना पश्यन्ती सँ सूक्ष्म 'भाविचराचर बीज रूपिणी' परा शक्ति होइछ जाहि सँ विश्वसृष्टि उत्सारित होइत अछि। ओकरे नादरूपिणी पराशक्ति सेहो कहल गेल अछि।

एकर अतिरिक्त शब्द मे तीन प्रकारक शक्ति मानल गेल अछि। प्रत्येक शब्दक कोनो-ने-कोनो अर्थक वाचक होइत अछि। शब्द आ अर्थक सम्बन्धे शब्द-शक्ति थिक। जाहि शक्ति वा कौशल द्वारा शब्दार्थक प्रतीति होइछ ओकरे शब्द-शक्ति कहल जाइछ। कखनहुँ-कखनहुँ कोनो साधारणो शब्दक प्रभाव अद्‌भुत पड़ैत अछि। शब्द आ शब्द-शक्तिक मर्मज्ञ व्यक्ति लोकक जीवन-दिशा धरि केँ मोड़ि दैत अछि। कोनो कविता धरि कविक रूप मे सफल नहि भ' सकैत छथि जाधरि हुनका शब्दक अर्थच्छवि केँ देखबाक दिव्यदृष्टि नहि उपलब्ध रहैत छनि। जे शब्दक अजेय शक्तिक महत्त्व बूझि लेने छथि हुनक वाणी सिद्ध भ' जाइत छनि। शब्द-शक्तिक ज्ञान जीवनक विविध व्यापार-व्यवहारक अतिरिक्त जहिना काव्य रचनाक हेतु आवश्यक थिक तहिना ई ज्ञातव्य थिक जे काव्यक मर्म-बोधक हेतु शब्द-शक्तिक ज्ञान अत्यन्त आवश्यक थिक।

काव्यशास्त्रक मर्मज्ञलोकनि शब्द-शक्ति केँ तीन भाग मे विभक्त कयने छथि।

(1) *'संकेतितार्थस्य बोधनाद ग्रिमाऽभिधा।'* (साहित्य दर्पण) अर्थात् शब्दक ओ प्रथम शक्ति अभिधा थिक जे साक्षात् संकेतित अर्थ (मुख्यार्थ) क बोध करबैत अछि।

(2) *'मुख्यार्थ बाधे तद्‌युक्तो ययाऽन्योर्थः प्रतीयते। रूढ़े प्रयोजनाद्वाऽसौ। लक्षणा शक्तिरर्पित।'* (साहित्य दर्पण) अर्थात् अभिधा शक्ति द्वारा जाहि शक्तिक ग्रहण होइछ सैह मुख्यार्थ थिक आ मुख्यार्थ जखन बाधित भ' जाइछ मने केवल मुख्यार्थ सँ जखन अभिप्राय स्पष्ट नहि होइत छैक तँ शब्दक जाहि शक्ति द्वारा ओही सँ सम्बद्ध कोनो आन अर्थक प्रतीति होइछ ओ लक्षण कहबैछ।

(3) *'विरतास्त्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः। सा वृत्ति व्यंजना नाम शब्दस्यार्थादिकस्यच'* (साहित्य दर्पण) अर्थात् अपन-अपन अर्थ बोधन कराक' अभिद्यादि वृत्तिक निवृत्त भ' गेलापर जाहि वृत्ति द्वारा आन अर्थक प्रतीति होइछ, शब्द तथा अर्थादि मे व्याप्त वैह वृत्ति व्यंजना कहबैछ।

उपर्युक्त तीन शब्द-शक्तिक वैशिष्ट्य प्रयोक्ताक कौशल आ बोद्धाक बुद्धि-वैशद्यपर निर्भर अछि। ई सर्वथा ज्ञातव्य थिक जे शब्द केँ ई महिमा अर्थ सँ प्राप्त होइत छैक। ई शब्द आ अर्थ वस्तुतः अद्‌भुत थिक जकरा प्राप्तिक हेतु भारतीय वाङ्‌मयक रससिद्ध महाकवि कालिदास पर्यन्त अपन अन्तिम रचना रघुवंश महाकाव्यक आरम्भे मे संसारक माता-पिता पार्वती परमेश्वर सँ प्रार्थना करैत कहैत छथि—

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती-परमेश्वरौ।

अर्थात् शब्द आ अर्थ जेना परस्पर संपृक्त (संश्लिष्ट, सम्मिलित) रहैत अछि तहिना परस्पर संपृक्त जे जगतक माता-पिता, पार्वती-परमेश्वर तनिका हम शब्द आ अर्थ ज्ञान प्राप्तिक हेतु प्रणाम करैत छी।

शब्द आ अर्थ काव्यक अन्तर्निहित 'भाव' आ ओकरा प्रकट करबाक माध्यम 'शब्द' दुहू ओहिना, नित्य सम्बन्धयुक्त थिक जेना सृष्टिक आदि पिता परमेश्वर ओ आदि माता-पार्वती नित्य सम्बन्ध युक्त थिकाह। भारतीय आध्यात्मिक चिन्तकलोकनिक मतें शिव निराकार, विशुद्ध, चिन्मय, भाव मात्र-तनु थिकाह, जनिका त्रिभुवणात्मिक शक्तिये भव-तनु मे प्रकट करैत छथि। मायाक माध्यमे सँ ब्रह्मक आभास विश्व मे भासित होइत अछि। प्रकृतिक आश्रय बिनु लेने पुरुष व्यक्त नहि भ' सकैत छथि। जेना शिवाश्रयक बिना शक्तिक लीला नहि भ' सकैत अछि तहिना शक्तिक बिना शिवक अस्तित्वे नहि अभिव्यंजित भ' सकैत अछि। शक्तिहीन शिव जँ 'शव' थिक तँ शिवहीन शक्ति निरर्थक थिक। शब्द आ अर्थक परस्पर यैह सम्बन्ध अछि। अर्थात् साहित्यक क्षेत्र मे अर्थक भाव रूप शिव एवं शब्दक (वैखरी, मध्यमा, पश्यन्ती आ परा रूपिणी) शक्ति परस्पर अन्योन्याश्रित होइत अछि। उपयुक्त अभिव्यंजनाक बिना अर्थ असत्तामात्र थिक आ अर्थरहित अभिव्यंजना शब्दाडम्बर थिक, निरर्थक थिक। साहित्यक ई शब्दगत आ अर्थगत विश्लेषण वस्तुत: आइयो पूर्ण अछि, निर्विवाद अछि, चिरन्तन अछि।

एहि सभ दृष्टियें संस्कृतक साहित्यज्ञलोकनि काव्यक व्याख्या करैत लिखने छथि 'शब्दार्थो साहितौ काव्यम्' अर्थात् शब्द आ अर्थक सहितत्व मे मने भाषा आ भाव दुहूक समन्वित अभिव्यक्तिये काव्य कहल जाइत अछि।

काव्य स्रष्टा कवि भाषा द्वारा जाहि अन्तर्लोकक विशिष्ट अनुभूतिक अभिव्यक्ति कर' चाहैत छथि ओ एक विशेष अन्तर्लोक होइत अछि जे सर्व-साधारणक अन्तर्लोकक हृतस्पन्दन सँ स्वाभाविक रूपें भिन्न होइत अछि, तें कखनो-कखनो एहनो स्थिति अबैत अछि जखन ओहि भावक समस्त सत्ता केँ वहन करबाक सामर्थ्य साधारण भाषा मे नहि रहैत छैक। अभिव्यक्तिक एहि अशक्त, विवश आ व्याकुल क्षण मे कविक ओ विशेष हृत-स्पन्दन (मनक विशेष भाव) वाहनक रूप मे एक विशेष भाषाक सृष्टि करैत अछि। ओहि विशेष भाषा केँ कहल जाइत अछि सालंकार भाषा। एहि तरहें काव्यक जाहि धर्म केँ अलंकार कहल जाइत अछि से कविक ओहि विशेष भावेक धर्म थिक।

एहि अलंकार शब्दक व्यवहार संस्कृतक साहित्यक समालोचक लोकनि दू अर्थ मे कयने छथि—एक तँ साधारण अर्थ मे दोसर गंभीर अर्थमे। साधारण अर्थ

मे अलंकार शब्दक प्रयोग दृष्टि साहित्य दर्पणकार कविराज विश्वनाथक छनि जनिक मत छनि जे काव्य-पुरुषक शरीर शब्द आ अर्थक अछि। रस थिक ओकर आत्मा, अलंकार थिक ओकर शोभावर्द्धन भूषण। 'काव्यस्य शब्दार्थौ शरीरं रसादिश्चात्मा, अलंकारश्च कटकं कुण्डलादिवत्।' मुदा अनेक आलोचक लोकनि अलंकारक गंभीर रूपमे प्रयोग कयने छथि। हुनकालोकनिक मते अलंकार कटक कुण्डलादिवत् बाहर सँ जोड़ल वस्तु नहि थिक, काव्य-पुरुषक ई स्वाभाविक देह-धर्म थिक।

अभिनव गुप्त स्पष्ट शब्दें कहने छथि—

न तेषां बहिरंगत्वम् रसाभिव्यक्तो।

रसक अभिव्यक्ति जे काव्यक मुख्य लक्ष्य थिक ताहि मे अलंकार बाहर सँ आरोपित कारण नहि थिक। एकरे दोसर तरहें कहलनि अछि ध्वनिकार आनन्दवर्द्धन—*'अलंकारान्तराणि निरूप्यमान दुर्घटनान्यपि रससमाहित चेतसा प्रतिभावतः कवेरहंपूर्विया परातपन्ती।'* अर्थात् रस समाहित प्रतिभावान कविक हृदय मे रसक आपेक्ष होइते स्वयं सालंकार अभिव्यक्ति होइत अछि। दोसर उक्ति अछि—

रसाक्षिप्ततया यस्य बन्धः शक्त क्रियो भवेत्।
अपृतन्यग्यत्ननिर्वर्त्यः सोऽलंकारो ध्वनोमतः।

अर्थात् रस द्वारा आक्षिप्त होयबाक हेतु जे अपृथक यत्न द्वारा सहज रूपें स्वतः साधित होइत अछि, स्वतः सृष्ट होइत अछि सैह अलंकार थिक।

यैह अलंकार कतहु प्रतीक तँ कतहु बिम्ब, कतहु अर्थ वैशद्य तँ कतहु रीति, कतहु वक्रोक्ति तँ कतहु ध्वनिक रूप मे दृष्टिगोचर होइत अछि। अलंकार सँ हमर तात्पर्य ओ अलंकार नहि थिक जकरा कटक-कुण्डलादिवत् कहल गेल अछि, अलंकार सँ हमरा अपेक्षित अछि शब्द आ अर्थक सहितत्व सँ युक्त ओ वैशिष्टय जे परमानन्दक उपलब्धि कहबैछ। ई भेल अलंकारक व्यापक परिभाषा।

संक्षेपमे, एक व्यक्तिक भाव केँ सार्वजनिक आ एक क्षणक भाव केँ सार्वकालिक बनयबाक हेतु कवि साधारण भाषा केँ अभिव्यक्तिक वाहन बनबा मे अक्षम पाबि जाहि असाधारण भाषाक आश्रय लैत छथि ओ भाषा जखन कविक प्रतिभा आ रचना-सामर्थ्य सँ नैसर्गिक रूपें अन्तरानुभूतिक सहज एवं स्वाभाविक परिणति बनि स्वतः स्फुट होइछ तँ ओ काव्यमय अभिव्यक्ति शाश्वत रचनाक महिमा प्राप्त करैत अछि। हमरा बुझने एहि दृष्टियें विवेचन कयलापर स्पष्ट भ' जाइत अछि जे एहि सालंकार भाषाक अलंकार कथमपि आरोपित नहि भ' सकैछ। बुद्धिपूर्वक रचना कयनिहार सामर्थ्यहीन कवि द्वारा रचित वस्तु मे अलंकार आरोपित

बुझना जाइत अछि तँ स्वभाविके थिक।

एहि प्रसंग मे इहो ज्ञातव्य जे साहित्य आ संस्कृतिक विकासक संग-संग युग-बोधक अनुसार शब्दक अर्थ मे सेहो परिवर्त्तन होइछ। कोनो-कोनो शब्द स्थिति-विशेष मे निरर्थको भ' जाइछ आ कोनो-कोनो शब्दक अर्थ-सीमा बढ़ि जाइछ। ककरो अर्थक स्वरूप नितान्त परिवर्त्तित भ' नवीने रूप मे प्रकट भ' उठैछ, कोनो निरर्थक शब्द अर्थवान बनि जीवन्त आ सशक्त भ' जाइछ तथा अनेक नवीनो शब्दक उत्पत्ति भ' जाइछ। एहि क्रम मे जे कहियो काव्य भाषा कोनो समय मे रहैत अछि, से कालान्तरे खियाक' पातर, भटरंग, बदरंग, पनिसाह, अशक्त वा मितशक्त भ' जाइछ।

तार सप्तकक भूमिका मे अज्ञेयजी एकरा भाषा विकासक अनिवार्य प्रक्रिया मानने छथि। संगहि-संग प्रतिभावान कवि, शब्दक नवीन संस्कार करैत रहैत छथि आ अपना रचना सँ शब्द केँ नवीन अर्थवत्ता सँ महिमामंडित करैत रहैत छथि जे सार्वजनिक मानस मे प्रतिष्ठित भ' क' लोकमान्य होइत रहैत अछि।

मिथिला मिहिर : 4 जून 1967

समालोचना आ मैथिली साहित्य

कोनो भाषाक साहित्यक सम्यक ज्ञान आ तकर सम्पूर्ण रसास्वादनक हेतु ओकर समालोचना नितान्त अपेक्षित होइत अछि। समालोचनाक अभाव मे साहित्यक गुण अथवा दोषक परिचय नहि भ' सकैत अछि आ गुण-दोष केँ बिनु जनने कोनो साहित्यक आनन्दोपलब्धि संभव नहि। तें साहित्यक वैशिष्ट्य केँ बुझबाक हेतु समालोचनाक बड़ आवश्यकता अछि। साहित्यकार साहित्यक जे निर्माण करैत छथि तकर उपादेयता आ महत्वक निर्धारण क' समालोचना साहित्य-निर्माणक दिशा-निर्देश सेहो करैत अछि। एहि प्रकारें साहित्यक निर्माण आ असत् साहित्यक परिहारक अत्यावश्यक कार्य समालोचने द्वारा होइत अछि।

साहित्यस्रष्टा आ समालोचकक परस्पर सम्बन्धक विषय मे अनेक मत अछि। सर्वाधिक मान्य मत अछि जे साहित्यकार तथा समालोचक मे गुणगत कतिपय साम्य रहितहुँ कार्य-दृष्टियें भेद अछि। साहित्यकारक कार्य थिक साहित्य सर्जन आ समालोचकक कार्य थिक कृतिक समीक्षण। जेना शालग्राम शिला सँ स्वर्णक उत्पत्ति होइत अछि आ कसौटीक पाथर ओकर परीक्षण करैत अछि। दुहू पाथरे थिक, दुहूक रंग कारी होइत अछि, परन्तु एकटा थिक उत्पादक आ एकटा थिक परीक्षक। समालोचक एहनो भाव केँ आ गुण केँ कृति मे ताकिक' बहार करैत छथि, जकरा निर्माता अपने नहि बुझने जनने रहैत छथि। तें तथ्य ई थिक जे समीक्षण वस्तुतः एक विलक्षण एवं स्वतंत्र शक्ति थिक।

उपर्युक्त रूपें ई जानल जा सकैत अछि जे समालोचना कोनो साहित्यक विकासक हेतु कतेक महत्वपूर्ण वस्तु थिक तें भारतीय साहित्य मे समालोचना केँ एक अत्यन्त उपादेय विधा मानल गेल अछि। संस्कृतक एक मान्य प्राचीन आलोचक राजशेखर तँ आलोचना-शास्त्र केँ वेदक सप्तम अंग धरि कहलनि अछि। संस्कृत साहित्य मे समालोचना केँ क्रियाकल्प साहित्य विद्या, अलंकार-शास्त्र आदि नामे प्रयुक्त कयल गेल अछि आ एहि सम्बन्ध मे वात्स्यायन, राजशेखर, वामन, भामह, दण्डी,

रूद्रट, आनन्दवर्द्धन, अभिनव गुप्त, मम्मट, क्षेमेन्द्र, विश्वनाथ, पण्डितराज जगन्नाथ आदि अपन-अपन सिद्धान्त प्रतिपादित क' भारतीय वाङमयक एहि विभाग केँ पुष्ट बनौलनि अछि। मैथिली साहित्यक सम्बन्ध मे समालोचनाक आदि प्रवृत्ति संस्कृतहिक परम्परा सँ प्रभावित अछि तें संस्कृत साहित्यक समालोचना सिद्धान्तक संक्षिप्त संकेत मात्र क' रहल छी।

गुण-दोषक विवेचना करब आलोचना थिक आ सम्यक आलोचना समालोचना कहबैछ अर्थात् समालोचनाक अर्थ भेल कोनहुँ विषयक गम्भीरतापूर्वक विशद रूपें गुण-दोषक विवेचना क' तकर मान मूल्य स्थापित करब।

एहि लेल समालोचकक महनीय गुण सभ मे अन्यतम गुण थिक साहित्यक अन्तस्तल तक पहुँचबाक क्षमता। से बिनु पूर्वग्रह छोड़ने आ निष्पक्ष बनने सत्यत: नहि भ' सकैत अछि। जे व्यक्ति साहित्य-सरिताक केवल ऊपरी भाग मे हेलैत रहत आ ओकरा भीतर मे प्रवेश करक क्षमता नहि राखत वा कोनो प्रकारक पूर्वग्रह सँ ग्रस्त रहत आ पक्षपातक पक्षाघात सँ पीड़ित रहत ओ व्यक्ति कथमपि समालोचकक उत्तरदायित्व नहि निमाहि सकैत अछि। क्षमताक अर्थ व्यापक थिक।

नो शक्य एव परिहृत्य दृढ़ां परीक्षां
ज्ञातुं मितस्य महतश्च कवेर्विशेष:।

मितकवि (सामान्य कवि) तथा महाकवि अर्थात सामान्य साहित्यक रचना कयनिहार आ महान साहित्यक रचना कयनिहारक अंतर केँ स्पष्ट करबाक शक्ति साहित्यक मर्मज्ञे विद्वान केँ भ' सकैत छनि। एतदर्थ व्युत्पत्ति, सम्बद्ध भाषाक साहित्यक गम्भीर परिचय तथा किछु अंश मे समकालीन अन्यान्य साहित्यक न्यूनाधिक ज्ञान, एक नीक समालोचकक हेतु आवश्यक होइत छैक। कारण जे कोनो साहित्यक सृष्टि मे तत्कालीन अन्यान्य साहित्यहुक थोड़-बहुत प्रभाव प्रायश: रहिते छैक। साहित्यक मर्म केँ जानक हेतु प्रतिभाक आवश्यकता छैक। प्रतिभा दू प्रकारक होइत अछि—कारयित्री तथा भावयित्री। कारयित्री प्रतिभा साहित्य स्रष्टा केँ रचना शक्ति मे सहयोग दैत अछि आ भावयित्री प्रतिभा समालोचक केँ साहित्यक गुण-दोषक भावना करबाक साधन बनैत अछि। तें समालोचक केँ भावक सेहो कहल गेल अछि। एहि भावयित्री प्रतिभाक अभाव मे समालोचना तलस्पर्शिणी नहि भ' सकैत अछि। समालोचक जतेक अधिक मर्मज्ञ तथा प्रतिभासम्पन्न होयताह, हुनक गुण-दोषक विवेचना ततेक नीक, यथार्थ आ सर्वांगपूर्ण होयतनि। मत्सरहीनता समालोचकक हेतु आवश्यक अछि। समालोचक केँ उदार होमक चाही। मत्सरता समालोचकक आँखिये बन्द क' दैत अछि। एहि सब दृष्टियें समालोचकक चारिटा

कोटि मानल गेल अछि—

अरोचकी—सूक्ष्म समालोचनाक भावना सँ मंडित व्यक्ति जनिका छोट-छीन वस्तु नहि रूचैत छनि। हिनक दृष्टि बड़ तीक्ष्ण आ सूक्ष्म होइत छनि तथा जखन कोनो साहित्यिक कृति वास्तव मे गुण सम्पन्न नहि होइत अछि तँ ओकर शोभनता केँ मानक हेतु प्रस्तुत नहि होइत छथि।

सतृणाभ्यवहारी—स्थूल दृष्टिबला समालोचक जे गुण तथा दोष मे वास्तविक अन्तर नहि बूझि सकैत छथि।

मत्सरी—साहित्यक रचनाकार-विशेष सँ ईर्ष्या-द्वेष रखनिहार समालोचक जे साहित्यक गुण-दोष दिस नहि जा क' रचयिताक व्यक्तिगत गुण-दोष दिस जाइत छथि, कृतिक अन्यायपूर्ण समालोचना करैत छथि।

तत्वाभिनिवेशी—साहित्यतत्वकेँ चिन्हनिहार समालोचक जे कृतिक अन्तस्तल मे प्रवेश करैत छथि तथा ओकर अन्तर्निहित समस्तगुण-दोष केँ बीछिक' ओकरा उचित शब्दें अभिव्यक्त करैत छथि।

एहि चारू प्रकार समालोचक लोकनि मे प्रथम वा चतुर्थ कोटिक समालोचके विवेकी, श्लाघ्य आ साहित्यक वास्तविक मर्मक उद्घाटन मे वस्तुत: समर्थ होइत छथि आ एहने समालोचक द्वारा सत्यसाहित्यक निर्माण केँ प्रेरणा भेटैत छैक तथा एहि तरहें साहित्य केँ श्रीसम्पन्नता भेटैत छैक।

आधुनिक समालोचनाक चारिटा प्रकार मानल जाइत अछि। सैद्धान्तिक, व्याख्यात्मक, निर्णयात्मक तथा स्वतंत्र अथवा आत्मप्रधान।

एहि सभ मे व्याख्यात्मक समालोचना सर्वाधिक महत्वपूर्ण थिक, जाहिपर अन्यान्य तीनूटा प्रकार सेहो अवलम्बित अछि। पद्धतिक दृष्टि सँ समालोचनाक किछु भेद आओरो अछि, यथा वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक आदि।

समालोचनाशास्त्रक अति संक्षिप्त परिचयक संग मैथिली साहित्य मे समालोचनाक कार्य आ प्रगतिक सम्बन्ध मे बूझब आवश्यक। एहि शताब्दी आरम्भ मे 1905 ई. मे 'मैथिल हितसाधन' नामक मासिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल। तहि सँ पूर्व साहित्यिक वस्तुक समालोचना वा समालोचनात्मक निबन्ध आदिक सामग्री उपलब्ध नहि अछि। एहि पत्रक सम्पादकीय तथा किछु रचना सँ आलोचनाक आरम्भ मैथिली मे भेल। 1905 ई. मे काशी सँ 'मिथिला मोद'क प्रकाशन आरम्भ भेल। एहि दुहू पत्र मे सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा सामयिक प्रसंग पर आलोचनात्मक विचार सभक अभिव्यक्ति आरम्भ भेल। समय-समयपर अलोचना-

प्रत्यालोचना द्वारा खण्डन-मण्डन क्रम मे अलोचनाक विकास-पथक निर्माण आरम्भ भेल।

उपरान्त आलोचनाक विकास दिनानुदिन मिथिला मिहिर, मैथिल प्रभाकर श्रीमैथिली, मिथिला, मिथिला मित्र, मैथिल बन्धु, मैथिल युवक, भारती, विभूति, मैथिली साहित्य पत्र, स्वदेश, मिथिला ज्योति, वैदेही, पल्लव, किरण, मिथिला दर्शन, मिथिला सेवक, चौपाड़ि, मिथिला दूत, निर्माण, प्रवासी मैथिली, अभिव्यंजना, मिथिला मिहिर (नवक्रमांक), इजोत, अभियान, आखर, सोनामाटि आदि पत्र-पत्रिकाक माध्यमे होइत गेल जाहि सँ क्रमश: मैथिली साहित्यक विविध विषयपर आलोचना कार्य भ' रहल अछि।

पत्र-पत्रिकाक अतिरिक्त उमापति विरचित 'पारिजातहरण'क भूमिका मे पं. चेतनाथ झा विवेचनात्मक रीति सँ प्राचीन कवि एवं हुनका लोकनिक कृतिक परिचय देलनि। डाक्टर सर गंगानाथ झा, डा. अमरनाथ झा, डा. उमेश मिश्र, भोला लाल दास, लक्ष्मीपति सिंह, नरेन्द्रनाथ दास प्रभृति विद्वान अनेक ग्रन्थक सम्पादन कयलनि आ ताहि सभ मे जे भूमिका लिखलनि से आलोचनात्मक निबन्ध थिक। एहि परम्पराक समालोचक मे म.म. डा. उमेश मिश्र प्रथम समालोचक छथि जे निबन्धक अतिरिक्त पुस्तकक रूप मे समालोचनाक कृति मैथिली साहित्य केँ देलनि। हिनक पुस्तक थिक 'मैथिली साहित्यक इतिहास' जे मैथिली भाषा मे नहि प्रकाशित भ' हिन्दी मे भाषान्तरित भ' सिरीज रूप मे प्रकाशित भेल। एहिना दोसर प्रमुख समालोचक भेलाह नरेन्द्रनाथ दास जे तुलनात्मक समालोचना पद्धति सँ 'विद्यापति काव्यलोक' लिखलनि। मुदा इहो ग्रंथ मैथिली मे नहि, हिन्दीए मे प्रकाशित भेल। हिनक गोविन्ददास, कृष्णजन्म समीक्षा आदि श्रेष्ठ आलोचना छनि। एहि तरहें पं. शिवनन्दन ठाकुर 'महाकवि विद्यापति' लिखलनि जे विद्यापतिपर आधिकारिक शैली मे लिखल गेल श्रेष्ठ आलोचनात्मक ग्रन्थ थिक, मुदा इहो मैथिली मे नहि, हिन्दी मे प्रकाशित भेल।

उपर्युक्त परम्पराक विद्वान मे सभ सँ सशक्त आ प्रतिभाशाली समालोचक प्रो. रमानाथ झा छथि जनिक गोविन्द दासक डीह, बिसफी, विद्यापति, चन्दा झा, आलोचना साहित्य, किरतनियाँ आदि विषयपर अनेक निबन्ध मैथिली साहित्यक निधि थिक। एकर अतिरिक्त हिनक अनेकानेक निबन्ध, सम्पादकीय आ टिप्पणी उल्लेखनीय अछि। हिनक आलोचनात्मक दृष्टि बड़ तीव्र छनि। एहि परम्पराक समालोचक वर्ग मे उल्लेखनीय छथि श्री शशिनाथ चौधरी (चन्दा झाक रामायण, विद्यापति : एक प्रतिनिधि कवि आदि,) ज्योतिषी बलदेव मिश्र (चन्दा झा, रामायण शिक्षा आदि)

बाबू लक्ष्मीपति सिंह (मैथिली ग्राम्य गीतावली, आधुनिक मैथिली कवि, मैथिलीक वर्तमान रूपरेखा आदि।) हिनका लोकनिक कृति मैथिली साहित्य मे महत्वपूर्ण बूझल जाइत अछि।

एहि तरहें डा. सुभद्र झा, प्रो. श्रीकृष्ण मिश्र, जयदेव मिश्र, डाक्टर जयकान्त मिश्र, पण्डित वेणी माधव मिश्र, प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' 'प्रो. कृष्णकान्त मिश्र आदि मैथिली साहित्यक आलोचना केँ समृद्ध कयने छथि।

डाक्टर सुभद्र झाक विद्यापति गीत-संग्रह (अंग्रेजी भूमिकाक संग) एक प्रशंसनीय ग्रंथ थिक। एकर भूमिका मे जे तत्वान्वेषण कयल गेल अछि से कोनो प्राचीन कविक तात्त्विक अनुसन्धान मे बड़ सहायक भ' सकैत अछि।

प्रो. श्रीकृष्ण मिश्र मनबोध, कन्यादानक समीक्षा, मैथिली मे उपन्यास आदि, जयदेव मिश्रक मिथिलाक हास-साहित्य आदि निबन्ध तथा डाक्टर जयकान्त मिश्रक अनुसन्धानपरक आलोचनात्मक ग्रंथ 'मैथिली साहित्यक इतिहास' (अंग्रेजी मे) तथा 'किरतनियाँ नाटक' आदि अनेक महत्वपूर्ण निबन्ध, वेणीमाधव मिश्रक 'कविक मूड' आदि निबन्धक तथा प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मिथिला मिहिर, स्वदेश आदि पत्रक सम्पादकीय एवं कविगोष्ठीक परम्परा ओ मैथिली आदि अनेकानेक निबन्ध, मैथिली साहित्यक एक बड़ पैघ अवदान थिक। प्रो. कृष्णकान्त मिश्र 'मैथिली साहित्यक इतिहास' मैथिली मे प्रकाशित क' एक बड़ पैघ काज कयने छथि। सुधांशु शेखर चौधरी एहि पीढ़ीक छथि जे 'विवेचना' नामक आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रहक सम्पादन कयने छथि आ स्वयं आलोचनाशास्त्रपर एक निबन्ध ओहि संग्रह मे लिखने छथि।

पंडित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' 'मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण' ग्रंथ द्वारा आ अपन 'एकांकी : वर्त्तमान दशक' आदि अनेक निबन्ध द्वारा आलोचना विभाग केँ सम्पन्न बनौने छथि। हिनक आलोचना गवेषणात्मक होइत अछि।

हिनका लोकनिक संगहि मैथिली साहित्यक आलोचना क्षेत्र मे जाहि सशक्त समालोचक लोकनिक वर्ग काज क' रहल अछि ताहि मे प्रो. शैलेन्द्र मोहन झा, प्रो. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', प्रो. मायानन्द मिश्र, प्रो. रामदेव झा प्रभृति विशिष्ट स्थान रखैत छथि। प्रो. शैलेन्द्रमोहन झाक 'परिचय-निचय', 'मैथिली साहित्यक प्रमुख कवि' आदि ग्रंथ, 'धूर्त्त समागम पर एक दृष्टि; 'धूर्त्तसमागमक मैथिली पद; 'ब्रजबोली साहित्य : एक अध्ययन', 'ब्रजबोली साहित्य : उद्भव एवं विकास', आदि निबन्ध प्रो. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' क 'साहित्य विमर्श', 'आलोचनात्मक निबन्ध संग्रह तथा 'यात्रीजीक काव्य-वैभव, 'आधुनिक काव्यधारा: विचार ओ विश्लेषण, 'साहित्यक

सत्य' आदि निबन्ध, प्रो. मायानन्द मिश्रक 'आधुनिक मैथिली काव्यक वाद परम्परा, 'मैथिलीक नवीन काव्यान्दोलन, 'आधुनिक मैथिली काव्यक किछु प्रेरक शक्ति तथा प्रवृत्ति', आदि निबन्ध एवं 'अभिव्यंजना' माध्यमे प्रकाशित सम्पादकीय, प्रो. श्रीरामदेव झाक 'मैथिली नाटकक विकास यात्रा' आदि निबन्ध बड़ महत्वपूर्ण आलोचनात्मक सामग्री थिक।

एही तरहें 'लोकगीत विरह' आदि निबन्धक लेखक प्रो. आनन्द मिश्र द्वारा सम्पदित 'विद्यापति' नामक पुस्तक विद्यापति विषयक एक नीक आलोचनात्मक सामग्री थिक। प्रो. बालगोविन्द झा 'व्यथित' द्वारा लिखित 'मैथिली साहित्यक इतिहास' नामक पुस्तक सेहो कतिपय दृष्टियें मैथिली साहित्यक नवीन आलोचनात्मक वस्तु थिक। एहिना वैदेही समिति, दरभंगाक तत्वावधान मे आयोजित अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलनक अवसर पर प्रकाशित दुनू रचना-संग्रह तथा अन्यान्य संकलन सब आन-आन वस्तुक संग आलोचनहुक संकलन दिशा मे स्तुत्य प्रयास थिक। पं. जयकान्त झा श्रुतधरक सम्पादकत्व मे मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित 'मैथिली भाषा आ साहित्य' नामक संग्रह आलोचना साहित्यक मननीय पुस्तक थिक।

समसामयिक पत्र-पत्रिका द्वारा आलोचना मे प्रवृत्त नवीन पीढ़ीक आलोचक लोकनि आलोचना क्षेत्र मे नवीन आकांक्षा, नव विधान, नवीन दृष्टिबोध नवीन अभिव्यंजना पद्धति ल' क' मैथिली साहित्यक गगन मे नक्षत्र जकाँ चमकि रहल छथि। हिनका सभक नामावली बड़ वृहत् अछि।

हमरा बुझने मैथिली साहित्यक विकास कार्य मे ई बड़ उत्साहवर्धक शुभ लक्षण थिक जाहि सँ सत् साहित्यक रचनाक संग-संग समालोचनाक महत्व सँ मैथिली पाठक लाभान्वित भ' रहल छथि आ आलोचनात्मक दृष्टि पाबि साहित्यक यथार्थ रसास्वादन मे प्रगति क' रहल छथि। एहि तथ्य केँ आब क्यो अस्वीकार नहि क' सकैत छथि जे मैथिली साहित्य मे समालोचनाक कार्य खूब मनोयोग आ वेग सँ आरंभ भ' गेल अछि। ई मैथिली साहित्यक हेतु वस्तुतः आशावर्द्धक विषय थिक।

प्रो. हरिमोहन झा अभिनन्दन ग्रंथ : 1983

मैथिली साहित्य मे नव कविता

सामाजिक यथार्थ केँ बूझब आ ओकरा प्रतिबिम्बित करब यैह थिक कवि-कर्म। फलतः सामाजिक स्थिति अर्थात अर्थ-व्यवस्था, प्रशासनक पद्धति, उद्योग, उत्पादन, जीवन-यापनक प्रणाली, जटिलता, संकुलता आ स्तर, विज्ञान एवं कलाक जन-जीवनपर प्रभाव, ओकर विकास आ उपलब्धि आदि जेना-जेना बनैत-बदलैत रहैत अछि, तहिना-तहिना युगानुरूप सामाजिक यथार्थ मूलतः स्थिर रहितो रूपतः परिवर्त्तित होइत रहैत अछि आ तें तकरा आत्मसात् क' अभिव्यक्त करबाक शिल्प-शैली सेहो परिवर्त्तित होइत रहैत अछि। उदाहरणस्वरूप विद्यापतिक कविता मे भाव प्रकट करबाक जे रीति छल, बदलैत-बदलैत चन्दाझाक समय मे नीवन रूपें उपस्थित होब' लागल। भावगत एकता रहितो ओकर सम्प्रेषणीयताक माध्यम दोसर भ' गेल। गम्भीरता सँ देखला उत्तर ई स्पष्ट भ' जाइत अछि जे कविता जन-जीवनक समीप आब' लागल। मध्यकालक बाद आधुनिककाल मे सुमनजी, मधुपजी आदिक काव्य-शिल्प परम्परानुवर्त्ती होइतो नवीन रूप-सज्जा धारण कयलक। क्रमशः अभिव्यक्तिक यैह शिल्प, परिवर्त्तित भ' नव कविता केँ परम्परावादी कविता सँ उठाक' पृथक् श्रेणी मे स्थापित करैत ओकर नव-मूल्य-मान घोषित क' देलक। शब्द-शक्तिक अभिधा सँ बेसी लक्षणा आ ताहू सँ बेसी व्यंजनाक प्रमुखता क्रमशः स्पष्टतर होम' लागल। आनुषंगिक रूपें भाषाक रूप आ गति सेहो नवीन परिवेश मे संग देलक। एहि तरहें नव कविताक मैथिली साहित्यो मे सम-सामयिक अन्यान्य भाषा-साहित्य जकाँ सूत्रपात भेल अछि।

नव कविताक स्रष्टालोकनि जे शैली ग्रहण कयलनि अछि ओहि मे चमत्कार-पूर्ण नवीनता अछि। सर्वाधिक ध्यान आकृष्ट करौनिहार विशेषता थिक ओकर मूर्त्त चित्र सभक योजना आ विषयक प्रति नवीन दृष्टि। यात्रीजीक 'गोठबिछनी' कविता एकर एक सुन्दर उदाहरण थिक।

मैल पुरान पचहत्थी नूआ

सेहो फाटल चेफड़ी लागल
देहक रंग जमुनियाँ तइपर
मुह माइक गोटी सँ दागल
बगड़ा जेना लगाबय खोंता
तेहने रुच्छ केश छौ तोहर
दू छड़ हारी मात्र गराँमे
केहन विचित्र वेश छौ तोहर।

मूर्त्त चित्रक कतेक प्राणवंत योजना अछि। तहिना हुनक 'आधुनिक राधा' शीर्षक कविता विषयक प्रति नवीन दृष्टिक एक स्पष्ट उदाहरण अछि।

नव कविताक दोसर विशेषता थिक नवीन बिम्ब-योजना। ओना तँ भाषाक उत्पत्तिक संगहि भावाभिव्यक्ति मे बिम्बक आश्रय लेब आरम्भ भेल अछि आ कविता मे तँ आदिकाले सँ बिम्ब आ प्रतीकक प्रयोग होइत आयल अछि; मुदा जाहि प्राचुर्य तथा जाहि लाघव सँ आइ-काल्हि नव कविता मे ओकर सन्निवेश भ' रहल अछि से पहिने नहि छल।

मधुकर गंगाधरक 'दियासलाई' शीर्षक कविताक किछु अंश एना अछि—

काठक टुकड़ी
छोट-छोट, उज्जर पियर चालीस अछि
छोट-छोट गोल माथ बारूदक कारी धुत्त
जेना आदम युगक नाङट लोक
शैल गह्वर मे सुतै छला गद्द-मद्द।
छोट-छोट काठीमे
भरल छै विद्रोह चिनगी भरल जेना
मनुकेर बेटामे पावभरि माथमे
पसेरी भरि आगि भरल
जखन ओ घसैत अछि
छोट-छिन माथ अपन
मृत्युक नील-परदापर
आगि लहकि जाइत अछि।

शब्द योजनाक सम्बन्ध मे मितव्ययिता एकर तेसर विशेषता थिक। भरतीक शब्द, अनावश्यक विशेषण तथा अगबे संगीतमयताक दृष्टियें प्रयुक्त पदावली सँ मुक्त राखब नव कविताक रचना-पद्धति भ' गेल अछि।

प्रो. मायानन्द मिश्रक 'बिरड़ो' मे एक सुन्दर शब्द योजना आ हृदय-स्पर्शी भाव-सौन्दर्य परिलक्षित अछि—

अछि छोट वृत्त
चंचल, अमांगलिक, क्षण-भंगुर
ईर्ष्याक एक मुट्ठी बसात
असमर्थताक किछु ख'ढ़ पात
सब निराधार।
तैयो क्षण भरि ले बिलमि जाउ
थुक-थुका लिय'
बढ़ि जाउ प्रगतिकेर बाट...

एहिना प्रो. हरिमोहन झा अपन 'गंगा घाटपर' मे समयक प्रसंग कहैत छथि—

जाड़ गेल जार जकाँ लाजे कठुऐल
जकाँ महफा सँ हुलकी दैत शिशिर जा
रहल छथि। ब'स जकाँ धड़धड़ायल
आबि गेल अछि बसंत। काल गनगोआरि
जकाँ आगाँ ससरैत अछि।

तात्पर्य ई जे लयक सार्थक प्रयोग तथा शब्द आ भावक तारतम्यक निर्वाह नव कविताक मुख्य दृष्टि थिक। एहि तरहें नव कविता सभ मे जाहि मन:स्थितिसभक (मूड्सक) अभिव्यक्ति भेल अछि आ ताहि लेल जाहि बिम्ब एवं प्रतीक सभक आश्रय लेल जाइत अछि ओ सर्वथा उपयुक्त तथा बहुधा नवीन अछि। यैह सभ मिलाक' ओकर प्रस्तुतीकरण नवीन विधा मे भ' रहल अछि।

ई अवश्य जे नव कविता पाश्चात्य प्रभाव सँ अभिभूत अछि; मुदा ओकर सम्बन्ध प्राचीन काव्य-परम्परा सँ सेहो अविभक्त अछि। ओहि मे परम्परागत भावुकता, बौद्धिकता, कल्पनाशीलता, आध्यात्मिक संस्पर्श, सूक्ष्म संवेदनात्मकता आ युगानुरूप अन्त:संघर्ष, जीवनक परिवर्तित मूल्य आ परिस्थितिक यथार्थवादी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण, काव्यगत-शैली (पैटर्न) काव्य-सत्य आ सघनतम संवेदनाक अभिव्यक्तिक हेतु सम्प्रेषणक नवीन बिम्ब-योजना, यैह थिक नवीन काव्य-प्रवृत्ति।

मानव-चेतनाक विकासक संग-संग रसबोधक पद्धतियो मे परिवर्तन होइत गेल अछि। तें नव कविताक वैशिष्ट्य-परीक्षण पूर्व प्रचलित निकष (कसौटी) वा प्राचीन रसवादक नियम-लक्षणक आधार नहि भ' सकैत अछि, प्रत्युत ताहि लेल जाहि रूपें रसक धारणा आधुनिक कविते टा मे नहि, जन-मानसो मे बदलि गेल

अछि, तकरा नव कविता मे बिम्ब (इमेज) द्वारा अभिव्यक्त कयल जाइत अछि। ई अस्पष्ट वा दुरूह नहि होइत अछि। (शर्त जे नकलचीक कविता नहि हो) मुदा दुरूह बुझल अवश्य जाइत अछि; कारण जे एहि कविता-सभ मे अपूर्व-परिचित, नवीन आ सघन बिम्ब सभक अधिकता रहैत अछि, जकरा लेल अधिक सुसंस्कृत आ सहृदय पाठकक आवश्यकता अछि। हर्षक विषय जे नव कविताक साधारणीकरण भ' रहल अछि आ ओहि सँ रस ग्रहण कयनिहार पाठक-समुदायक संख्यो दिनानुदिन बढ़ल जा रहल अछि। ओना ई बहुत पहिलके उक्ति थिक जे—

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि तं नरं न रंजयति।

बिम्बक सम्बन्ध मे एक आरो ज्ञातव्य विषय ई अछि जे ओ बड़ सूक्ष्म वस्तु थिक, जकरा आधार पर लिखल गेल कविता कविक अधिक-सँ-अधिक रागात्मक अनुबन्धपर अवलम्बित होइत अछि आ तें अपना संग एक व्यापक संदर्भ एवं पृष्ठभूमि रखैत अछि। 'तह' धरि पहुँचबाक हेतु ओहि सन्दर्भक ज्ञान (अनुभूति-सामर्थ्य) नितान्त अपेक्षित होइत अछि। मैथिली मे एहि पंक्तिक लेखकक अतिरिक्त एहि तरहक नव कविता सर्वश्री यात्रीजी, राजकमल चौधरी, हरिमोहन बाबू, मायानन्द मिश्र, डा. हरिमोहन मिश्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, ब्रजकिशोर वर्मा, रामदेव झा, सोमदेव, केदारनाथ लाभ, हरि नारायण मिश्र, वैद्यनाथ झा, रमेश चन्द्र वर्मा, कीर्त्तिनारायण मिश्र, राधा कृष्ण बहेड़, रामचरित्र पाण्डेय 'अणु', गोपीकृष्ण दास प्रभृति आरो अनेक कविलोकनि लिखि रहलाह अछि। मुदा एत' ई स्पष्ट क' देबा मे हम अप्रासंगिकता नहि बुझैत छी जे मैथिली-साहित्य मे नव कविताक सम्बन्ध मे पर्याप्त आ स्पष्ट चिन्तन-मनन एखन नहि भेल अछि आ ने तकर स्थितिये सरल भ'सकल अछि; कारण जे एक तँ पाठकक मन मे पुरान आग्रह बद्धमूल अछि आ दोसर एखन धरि नव कविताक सम्पूर्ण चित्र सुपुष्ट तथा स्पष्टो नहि भ' पौलक अछि।

एकटा आरो महत्वपूर्ण विषय ई अछि जे काव्यक विषय-सीमा बहुत बढ़ि गेल अछि आ छन्द-तन्त्र-निर्बन्ध भ' गेल अछि। नव कविता तकर प्रचुर उपयोग करैत अछि। एहि तरहें नव कविता उपर्युक्त पृष्ठभूमि मे कविक वैयक्तिक आ सामाजिक परिस्थितिक—परिवेशक तथा युग-जीवनक भावभूमि मे आत्म-मन्थन द्वारा उद्‌भूत जीवित क्षणक तीव्र अनुभूति एवं अतीत आ भविष्यक आलोक मे युग-बोधक नवीन काव्य चेतना थिक।

मिथिला मिहिर : 14 अप्रैल 1963

मैथिली कविताक नवीन दिशा

'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' एहि आर्ष वाक्यक अनुसारें सत्य एके अछि मुदा व्याख्याकारलोकनि ओकर अनेक प्रकारें व्याख्या करैत छथि। तहिना कविताक मूल सत्य एक्के थिक जकर युगदृष्टियें भिन्न-भिन्न व्याख्या होइत रहल अछि। साहित्य दर्पणकार काव्य केँ रसात्मक वाक्य कहलनि तँ 'रसगंगाधर' मे रमणीयार्थ प्रतिपादक शब्द केँ काव्य कहल गेल। क्यो काव्यक आत्मा रीति केँ, क्यो ध्वनि केँ, क्यो वक्रोक्ति केँ तँ क्यो अलंकार केँ मानलनि। एहि तरहें कविताक इतिहास संसारक उपलब्ध समस्त प्राचीन ग्रंथ सभ मे सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेदे सँ आरम्भ होइत अछि। वेद मे इन्द्रसूक्त, वरुण-सूक्त, ऊषा विषयक सूक्त आदि मे कविताक भव्य दर्शन होइत अछि।

वैदिक युगक बाद उत्तरोत्तर काव्यक क्षेत्र आ आयामक विस्तार होइत गेल। उपनिषद्, ब्राह्मण आदि समस्त रचना काव्यमय अछि। पौराणिक काल केँ तँ कवितेक काल कहल जाइत अछि। संस्कृत वाङ्मयक उपरान्त प्राकृत, प्राकृतक बाद अपभ्रंश आ पछाति विभिन्न लोक-भाषा मे कविता मुखर भेल।

लोकभाषा मे सभ सँ पहिने चौदहम शताब्दी मे महाकवि विद्यापति ठाकुर कविताक सुरसरि केँ मैथिली मे अनलनि। विद्यापतिक बाद मैथिलीक अनेक कवि भेलाह जे मैथिलीक कविताक-धारा केँ पुष्ट बनौलनि। ई कविता-धारा क्रमश: विकासक परम्परा मे स्वाभाविक रूपें आगाँ बढ़ैत वर्तमानक परिप्रेक्ष्य मे एक नवीन रूप मे प्रवाहित भ' उठल। यैह थिक मैथिली कविताक नवीन दिशा, जकर व्याख्या आ विश्लेषण सम्प्रति अभिप्रेत अछि।

ई तँ प्राय: सभ जनैत छी जे कविता आ जीवन केँ अटूट सम्बन्ध छैक। सम्बन्धक एहि घनिष्ठता केँ लक्ष्य क' अंग्रेजीक विख्यात कवि आ आलोचक मैथ्यू आरनाल्ड कविता केँ जीवनक आलोचना कहलनि अछि। कविता वस्तुत: जीवनेक आलोचना आ व्याख्या थिक।

एहि प्रसंग मे हम अपन कविता पुस्तक 'आत्मनेपद'क आत्मनिवेदनक किछु उद्धरण प्रस्तुत करैत कह' चाहैत छी जे वस्तुत: जीवनक यथार्थ केँ अभिव्यक्ति देब अर्थात् सामाजिक यथार्थ केँ बूझब आ प्रतिबिम्बित करब वैह थिक कवि-कर्म आ सामाजिक स्थिति अर्थात् समाजक अर्थ-व्यवस्था, प्रशासन पद्धति, युद्ध, उद्योग, उत्पादन, जीवन-यापनक प्रणाली, संकुलता आ स्तर, विज्ञान एवं कलाक जन-जीवन पर प्रभाव; ओकर विकास आ उपलब्धि आदि जेना-जेना बनैत-बदलैत रहैत अछि, तहिना-तहिना युगानुरूप सामाजिक यथार्थ सेहो परिवर्तित होइत रहैत अछि।

अर्थात आजुक कविताक पृष्ठभूमि मे विशाल बौद्धिक, सांस्कृतिक आ समााजिक अन्तर्द्वन्द्व, संघर्ष एवं चेतना शक्तिक योग सन्निहित अछि। देश समाज आ व्यक्तिएक नहि अपितु विज्ञानक कृपा सँ संसारक सीमाक लघुतम भ' जयबाक कारणे सम्पूर्ण संसारक पृथक्-पृथक् समस्या, मानसिक आ सांस्कृतिक कुण्ठा, परिवर्तमान मान्यता आ आस्था आदि समन्वित भ' आजुक कविता मे व्यक्त भ' उठल अछि, व्यक्त भ' रहल अछि, ई स्वाभाविक थिक।

एहिठाम ई बूझि लेब आवश्यक जे कविताक एहि नवीन दिशाक उद्घाटनक पृष्ठिभूमि मे पाश्चात्य, विशेषत: अंग्रेजी साहित्य प्रेरणाक मूलस्रोतक रूप मे अछि। अंग्रेजीक आधुनिक काव्यक मूल थिक विश्व-युद्धोपरान्तक आधुनिक सभ्यता आ संस्कृतिक खंड-पखंड होइत स्थिति, आधुनिक जीवनक विशृंखलता, निराशा, आतंक तथा टूटैत मानव-मूल्य आ व्यापक कुण्ठाक अभिव्यक्ति। एकर प्रभाव समसामयिक समस्त भारतीय आधुनिक साहित्य जकाँ मैथिलीक कवितापर सेहो प्रत्यक्ष रूपें सोझे अंग्रेजीक साहित्य सँ आ किछु हिन्दी एवं बंगलाक माध्यमे पड़ल अछि, जे अनिवार्य छल।

एहि नव प्रवृत्ति द्वारा ई धरि नीक जकाँ स्पष्ट भ' गेल अछि जे आजुक यथार्थ केँ ओकर सम्पूर्ण स्वरूप मे अभिव्यक्ति देबाक सामर्थ्य एकमात्र एही प्रवृत्ति केँ छैक। तखन एहि प्रकारक कविता मे जे एतेक छीटल-छिड़िआयल सन भाव-बोध अछि से थिक वर्तमान युगक अनुभूति जकर जनक निस्सन्देह आजुक विशृंखल जीवन थिक। एकरा नीक जकाँ एना कहल जा सकैत अछि जे आधुनिक कविताक विषय-वस्तु ओकर आत्मा ओहि समस्त मानव-संघर्ष केँ स्वीकार क' सम्भूत भेल अछि जे आजुक सार्वभौम जीवन केँ अस्त-व्यस्त बनौने अछि। फलत: आजुक कविता अपना अनुरूप, अपना अनुभूतिक सम्पूर्ण अभिव्यक्तिक हेतु ओहि प्रतीक, बिम्ब आ साधन सभक प्रयोग क' रहल अछि जे यथार्थ जीवन सँ उपलब्ध भ'

रहल छैक। आधुनिक जीवनक अधिकांश केवल एहि लेल खर-खर कटु आ तीख अछि जे आजुक जीवन मात्र कल्पनाक जीवन नहि थिक आ ने कोनो एहन मन:स्थिति केँ स्वीकार करैत अछि, जाहि मे साम्प्रतिक अनिवार्य संघर्षात्मक सक्रियताक अंश नहि हो। ओकर ई स्थिति अपन मुक्त वेदना थिकैक, स्वयं साक्षात्कार कयल यथार्थ थिकैक, स्वयं अनुबद्ध एवं अनुक्रमित भाव-बोध थिकैक जे देश, काल आ समसामयिकताक परिवेश मे सहज मानव मन:स्थितिक परिचय दैत अछि आ ई स्पष्ट करैत अछि जे ओ, ओहि समस्त कुण्ठा आ पीड़ा केँ भोगनिहार ओ आत्मविश्वासी थिक जे आत्मसमर्पणक अपेक्षें आत्माभिमान केँ अधिक मूल्यवान बुझैत अछि।

उदाहरणस्वरूप 'आत्मनेपद'क हम अपन प्रथम कविताक किछु पंक्ति उद्धृत करैत छी। प्राचीन परम्परा आ बहुत दिनक आबि रहल भाव-बोध राम केँ आ मारीच केँ एकटा सुस्थिर मान्यता प्रदान कयने अछि। आजुक व्यक्ति-गौरव ओकरे माध्यमे एहि तरहें अभिव्यक्त भेल अछि—

मानह अपना केँ राम भनहि
हमरा नहि किछु आपत्ति
मुदा न हम मारीच
मारिक' तों सीकीकेर बाण
उड़ा देबह शत योजन दूर।

एहि मे ई विश्वास मुखर अछि जे आजुक मानव तथाकथित पैघ नहि हो मुदा ओकर स्वाभिमान विश्व मानवता सँ एकाकार भ' क' नीक जकाँ जाग्रत भ' रहल अछि। आगाँक पंक्ति अछि—

हम छी तेज:पुंज प्रखर मार्त्तण्ड
जँ हमरा आक्रान्त करक छह मोह
तँ सम्पाती सदृश
पक्ष सँ हीन
ठुट्ठ, अपंग बन' हित
रहह वृतोऽस्मि।

नव कविताक एकटा विशेषता इहो अछि जे ओ अपना लघु परिवेश मे ओहि छोटो सँ छोट-क्षण आ ओकर लघु सत्यक प्रति आस्था रखैत अछि जकरा आइधरि महत्वहीन बूझल जाइत छल। संगहि-संग नवीन कविताक विषय-वस्तु आ भाव-स्तर रूढ़िग्रस्त कलाप्रियताक अपेक्षा ओहि सत्य केँ बेसी श्रेयस्कर बुझैत अछि जे

महान नहि होइतो मानवीय होइत अछि। एकरे यात्रीजीक शब्द मे एना कहल जा सकैत अछि—

आइ काल्हुक मनुक्खक आगाँ
मानि लेलनि देवतागण हारि
आब एटम बमक आगाँ भ' गेलनि अछि
भोथ चामुण्डाक ओ तरुआरि।

दोसर तरहें 'स्वरगन्धा' मे राजकमलजी महात्माक परिचय दैत कहैत छथि—

देसक माटि जकर परिधान बनल सदिखन
देसक माटि जकर मधुपान बनल सदिखन
थिक वैह महात्मा जे
नै जाय मन्दिर धरि पूजासँ
निर्माण करए परलोक
जे बनि जाइ खेतक आरिसँ सटल मृत जोंक
नहि ताकए आकासक दिस
धरतीपर औंघरायल रहय
समयक बरखा जकर हर्ष
दाही-रौदी जकर शोक
विहुँसय खेतक खरिहानक
अभिमान बनल सदिखन थिक वैह महात्मा।

ई हम स्पष्ट क' देब' चाहैत छी जे आजुक कविता मे जे अहंवाद अछि से मिथ्या, कुण्ठाग्रस्त आ पतनोन्मुख अहंवाद नहि थिक। ओहि मे उदात्त चेतनाक स्वर अछि, आत्म विश्वासक संगहि आत्मनिष्ठाक निष्कलुष इजोत अछि तथा स्वाभाविक विकास-पथक प्रति आस्थावान रहबाक निष्ठा सेहो। तें आजुक भावबोध केँ प्रकट कयनिहार कवि कहि उठैत अछि, 'दिशान्तर'क कवि मायानन्दक स्वरमे—

हम नहि देखैत छी खाधि
अपन असफलताकेर बाधा-पहाड़
आ विपत्तिक शत-शत नदी-जाल
जे वृत्त-इजोतक संग मे अछि
ओ अकलुष अछि
हम बाट अवश्ये बना लेब
आ नवका-नवका बटोहीक हित

मार्ग चिह्न हम छोड़ि देब
निर्मल, निष्कंटक, जगजगार।

भाव-बोधक ई नवीन आयाम जत' देश कालक सापेक्षता मे उत्पन्न होइत अछि तत' ओ अपन समग्रता मे अपना अतीतो केँ पुनर्मूल्यांकन तँ करैत अछि आ ओकरा वर्तमानक सापेक्षता मे एक जीवन्त तत्त्वक रूप मे अभिव्यक्ति दैत अछि। एहि सन्दर्भ मे प्रो. धीरेन्द्रक 'काल नियन्ता आ चाह' शीर्षक कविता द्रष्टव्य थिक—

कालक नियन्ता समयक 'थर्मस' सँ
वर्षक एक कप चाह
ढारि क' पीबि गेल आ गम्भीर भ' बैसि रहल
सोचैत छी हम जे
ई चाह जे हम बनौने छलहुँ,
ओकरा केहन लगलैक
केहन लगलैक ओकरा ई चाह
दूध, लीकर, चीनी सब ठीक छल ने?
मुदा ओ गम्भीर भ' बैसि गेल अछि
आ हम ओकर मुँह ताकि रहल छी
हम की करू???
दोसरा कपक लेल पानि चढ़ा देल अछि।

ठीक तहिना प्रो. धूमकेतुक 'सेड़ड़' कविता मे जीवनक प्रति आधुनिकयुगीन तिक्तताक अवसन्न स्थितिक भाव-बोध होइछ—

जिनगीक लाभर-जीभर
कने-मने चिखलिऐ अछि
लगैत छैक आतिख
नवका कड़ाह महँक
लागि गेल गूड़क डाढ़ी सन
आ मृत्युक पारण तँ
दिन मे सोलह बेर करैत छी (औसतन)
स्वाद मुदा तैयो नहि
बुझबा मे अबैत अछि
कोकिन जेना जीह केँ सेड़ड़ क' दैत छैक
सुन्न प्राण आ चेतना झूठ भ' जाइत अछि

अभ्यास भ' गेने कि स्वाद
कोनो वस्तुक लगैत छैक?

आजुक कविता मे परम्परागत गतानुगतिकता वा रूढ़िक दुर्लंघ्य सीमा-रेखा नहि अछि। ओ जीर्ण आ संकीर्ण बन्धन सँ उन्मुक्त भ' सर्वांगीण अनुभूतिक क्षेत्रमे, चिन्तनक व्यापक परिवेश मे सहज रूपें व्याप्त अछि। तें ओकरा कथ्य मे कोनो दुविधा वा अवरोध नहि रहैछ आ ओकर प्रतीक एवं बिम्बक सटीक अर्थवत्ता आ चिन्तनक अपेक्षित आयाम एवं संवेदना केँ जगा दैत अछि।

राजनीतिक सत्ताक संकेतें होब' बला विज्ञानक संभाव्य परिणतिपर जीवकान्तक यथार्थ बोध 'अनागमिष्यत्क नाम पत्र' शीर्षक कविता मे बड़ सशक्त रूपें प्रकट भेल अछि—

हे अनागमिष्यत् नृवंश ई पत्र
ई पत्र थिक भाव्यताक व्यंग्य
जे प्रेषक आ प्रेषितीक सबटा अस्तित्व
क्षणिकताक नोर मे भसिआयल चलि जाइछ
हम देखने छी धानक बीयाक बखार
जे अग्निकणक छूति सँ
एक मुट्ठी छाउर बनि उड़ि
जाइछ ओहि खेत दिस
जत' संभावनाक लक्षशः अंकुर
अगत्ती छौंड़ा सन हुलि मचा दितैक
मुदा छी देखैत एक बुढ़िया बटोही केँ
माथक मोटरी सँ टांग थरथराइत छैक
मोटरी मे बान्हल छै शतशः परमाणु बम
घोर अनिश्चय सँ ओकर डेग नहि बढ़ैत छैक
ठेहिआयल गात छैक
खौंझायल माथ छैक
देतैक पटकि आब दुर्वह जे भार छैक
एक मुट्ठी छाउर उड़ि जयतैक आकासमे
ओहि आकासमे
जत' कोटि-कोटि अनामिष्यत्क संभावना
आंकुड़ सन धरफराइत

रहि जाइत सुगबगाइत
सभटा संभाव्यता तकिते रहि जायत
सभटा अनागमिष्यत्
निरर्थक, निरर्थक, निरर्थक अनागमिष्यत्।

अभिप्राय जे आधुनिकता जीवन केँ वैज्ञानिक आधार देब' चाहैत अछि तें ओकरा समक्ष ओ सभटा तत्व अर्थहीन होइछ जे केवल परम्परा आ अन्धविश्वासक बलपर समस्त मानवीय अनुभूति केँ एक निर्धारित परिधि मे बान्हल राख' चाहैत अछि। तथापि अपरिहार्य अवमूल्यनक एहि संक्रमण-काल मे पुरना मूल्यक हेतु एकान्त दुराग्रह कयनिहार जे छथि तनिका की कहल जा सकैछ?

एहि प्रसंग कीर्त्तिनारायणक मिश्रक 'स्फीति' शीर्षक कविताक पंक्ति अछि—

स्फीतिकेर एहि युग मे
अवमूल्यन अपरिहार्य अछि
आ ई युग महगी केर नहि
बुजुर्गक दायित्वक अछि।

आगाँक पंक्ति अछि—

सदैव मूल्यक अवमूल्यन मे रह'वला
पुरनका पीढ़ी केँ
आजुक मूल्यक न्यूनाकार
अपना गरिमा-उद्घोषणाक लेल प्रेरित करैत छनि
आ हमरा सामने
फेनिल उच्छ्वासक स्तुप ठाढ़ भ' जाइत अछि
जकरा ओहि पार सँ क्यो हमरा
देखि तँ नहि सकैत अछि
मुदा पुरनका पीढ़ीक
ध्वस्तप्राय व्यक्तित्व आ विघटित मूल्यक
परिचय धरि सभ केँ भेटि जाइत छैक।

संक्षेप मे हमर कथ्य जे एकर विस्तृत विश्लेषण करब हम एत' अपेक्षित नहि बुझैत छी। मैथिली मे नव कविता कयनिहार समस्त कवि लोकनि सँ 'कालध्वनि'क कवि सोमदेव जँ समवेत भ' कविताक आधुनिक धारा केँ निरन्तर प्रवहमान रखबाक हेतु अपील करैत परस्पर दृढ़ समन्वयक हेतु अनुरोध करैत छथिन से एना अछि—

फोलह बन्धु केबाड़
आब दरबारक जुग नहि
चाटुकार पइकार उपरवारक ई युग नहि
बहुत कयल कटमारि
फराके रहब उचित की?
एक मूड़ भै रहह भिन्न आधारक जुग नहि।

अस्तु, मैथिलीक एहि नवीन दिशा मे जँ आगाँ बढ़ि पथ-प्रशस्त करबा मे निरन्तर संघर्षरत आ साम्प्रतिक काव्यक सूक्ष्म भावबोध केँ आत्मसात् क' सामर्थ्यपूर्वक रचना कयनिहार कविलोकनि मे सर्व श्री राजकमल, सोमदेव, मायानन्द, धीरेन्द्र, हंसराज, रामदेव, रमानन्द रेणु, कीर्तिनारायण, धूमकेतु, जीवकांत, रवीन्द्रनाथ, ताराकांत प्रकाश, श्री कान्त प्रभृतिक नाम उल्लेखनीय अछि, जाहि मे हमरो नाम परिगणित कयल जाइत अछि। मैथिली मे एहि प्रकारक प्रारम्भ यात्रीजीक रचना 'आन्हर जिनगी' आदि किछु कविता, 1958 मे राजकमल जीक 'स्वरगन्धा'क प्रकाशन सँ मानल जा सकैत अछि आ 1960 मे पटना सँ प्रकाशित 'अभिव्यंजना' मासिक द्वारा एहि प्रकारक रचना काव्यान्दोलनक रूप लेलक। पछाति एहि दिशा केँ प्रशस्ति देबाक श्रेय 'मिथिला मिहिर' केँ प्राप्त छैक जे एहि नवीन काव्यक प्रवृति केँ प्रोत्साहित कयलक, प्रकाशन देलक आ एहि तरहें कवि-वर्ग केँ रचनाक हेतु प्रेरित कयलक।

एतबा धरि स्वीकार करहि पड़त जे एहि नाम पर बहुत किछु एहनो लिखल गेल अछि जाहि मे कविक सामर्थ्य आ उपर्युक्त मूलतत्त्व केँ नीक जकाँ हृदयंगम नहि करबाक कारणे ने ओ युगबोध अछि आने रसबोध कि जाहि कारणे पाठक क्षुब्ध भ' उठैत छथि।

दोसर दिस इहो जे नवीन बिम्ब आ प्रतीक आदि सँ समन्वित नव-नव अभिव्यक्ति शैली, जीवन-संघर्षक नवीन उपलब्धिक व्याख्या करबाक सांकेतिक प्रणाली वा छन्द-विधानक रूढ़ि सँ ऊपर उठिक' उन्मुक्त रूपें वैचारिकता आ चिंतन केँ प्रस्तुत करबाक प्रक्रियाक कारणे जे एकर अनिवार्यता आ बहुत अंश मे विवशता सेहो थिकैक नव कविता दुरूह बूझल जाइछ। सूत्र रूप मे दुरूहताक कारण एना कहल जा सकैछ।

नव-कविता मे आत्मपरक अनुभूतिक गम्भीरतम अभिव्यक्ति अति गतिशील बिम्ब योजनाक माध्यमे होइछ।

परम्परा सँ भिन्न अपरिचित उपमा, बिम्ब, प्रतीक, लय आ कतिपय नवीन

अर्थ प्रयोजनक शब्द सभक प्रयोग एहि मे होइछ।

समकालीन जीवनक युग-संघर्षक तीव्र अनुभूतिक प्रति जतेक सचेष्ट कवि होइत छथि ततेक सचेष्ट 'पूर्वाग्रह' रहित आ उपर्युक्त माध्यम सभ सँ परिचित, सामान्य जन-वर्ग नहि होइछ।

संक्षेपमे, वर्तमान युग भावुकता युग नहि थिक, विज्ञान आ भौतिकताक युग थिक। नवीन कविताक रचनाक युग जीवन सँ तटस्थ नहि रहि सकैत अछि, तें ओ संक्षिप्ताक एहि स्वीकृत अनिबन्ध मे आनुबर्यहुकक मोह क' रचना केँ निरर्थक विस्तार देबाक पक्षपाती नहि होइछ, अपितु ओ अनुभूति केँ संक्षिप्तता आ भविष्णुताक संग नवीन शब्दावली, नवीन अर्थवत्ता आ नवीन बिम्ब, प्रतीक उपमान आदिक माध्यमे अभिव्यक्त करैत अछि। नव सँ खिसिअयबाक आ भड़कबाक आवश्यकता नहि अछि। ई स्नेह आ सहानुभूतिपूर्वक निरीक्षण, अन्वेषण, विश्लेषण, पर्यावलोचन आ स्वीकृतिक अपेक्षा रखैत अछि।

अन्त मे हम कह' चाहैत छी जे—

सूनू सूनू ई सद्य: घोषणा
क' रहल जे निर्भय आ नि:संशय वर्तमान
'डेथ कालम' लेल एकटा छोट-छीन समाचार छोड़ि
मरि गेल घबहा कुकूर जकाँ
क्षण-क्षण आ कण-कण केँ बीति चुकल
झुल-झुल बूढ़ ई अतीत, ई पुरान
काल बसक चक्कातर पिचाक'
छहोछित्त भेल
सरिपहुँ हे मित्र पुरानक मृत्यु भ' गेल।

आ तें कविताक एक नवीन भाव-भूमिपर—

आबि रहल
नव-शिशुक
करैत जाइ ...स्वागत।

मिथिला मिहिर : 9 अप्रैल 1967

नव लेखन : किछु विचार

स्वतंत्रता-प्राप्ति धरि साहित्य राष्ट्रवाद आ प्रगतिवादक स्वरूप मे परिपक्व भ' चुकल छल। स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद स्वातन्त्र्य-संग्राम काल मे लोक केँ जे एक टा सब्ज-बाग देखाओल गेल छलैक, (यद्यपि ई कटुक्ति थिक मुदा आजुक स्थिति मे विवश भ' क' आब एकरा सत्य मान' पड़ि रहल अछि।) जन-मानस मे भविष्यक सम्भावनाक जे स्वरूपोन्मेष भेल छलैक, से अप्रत्याशित रूपें समाप्त भ' गेलैक। जनसेवाक सभ सँ उत्तम विधि राजसत्ता हथिआयब सिद्ध भेल। महारथीलोकनि (मठाधीश बनि) अन्न, सुरक्षा, शिक्षा, रोजगार, सरकारी आ गैरसरकारी सेवा सभ प्रकारक नियोजन-व्यवस्था वा कुव्यवस्था अपना अधीने मे नहि, अधिकार मे हथियाक' ओहि मे मनोनुकूल (आमूल आ सम्पूर्ण) परिवर्त्तन क' गणतंत्रक सुचिक्कन प्रलोभन द' (एकरा प्रतिक्रियावादी विचार नहि बूझी से आग्रह) जनमतक संग, मने साधारण जनताक संग खुल्लम-खुल्ला व्यभिचार कर' लगलाह। जनमतक एहि अर्धविक्षिप्तता, अनिर्णयक विवशता वा वास्तविक निर्णय-क्षमताक असामर्थ्यक अनुचित लाभ उठाक' राजनीतिक संगठन सभ नव-पुरान पार्टी द्वारा लोक-शोषण करबा मे लागि गेल। बुद्धिमान आ विद्वानो सभक ऋषि भेलथिन राजनेतालोकनि। कोनो साहित्यिक समारोह हो कि शैक्षणिक सम्मेलन, वैज्ञानिक महासभा हो कि चिकित्साविशेषज्ञक गोष्ठी, उद्घाटन करताह सर्वज्ञ (?) मंत्रीलोकनि आ हुनक कथन अखबार सभ मे छपिक' लोक सभ केँ बुझा देत जे एहि सम्मेलन सभक की उपयोगिता आ निष्कर्ष भेल। सर्वसाधारण जनता केँ तँ निर्वाचन-काल छोड़ि आन खन पूछिते के अछि ? ई सभ देखिक' समाजक सर्वाधिक संवेदनशील सदस्य होयबाक कारणे साहित्यकारक क्षुब्ध होयब एकदम स्वाभाविक थिक। ओही क्षोभ-विक्षोभ आ आक्रोश-विद्रोहक अभिव्यक्ति थिक आजुक नवलेखन।

स्वतंत्रताक उपरांत नहि, ओकरा संगे-संग भेल देशक विभाजन, रक्तपात आ हिंसाक धमगज्जर नग्न-नृत्य। दोसर दिस भिन्न-भिन्न जाति (व्यापक अर्थमे)

सम्प्रदायक पृष्ठभूमि मे एहि ठाम सत्ता आ पूँजीक केन्द्रीकरण होइत गेल। धनीवर्ग आरो बेसी धनी आ गरीब लोक आरो बेसी गरीब होइत गेल, पूँजीक विकासक्रम सैह रहल। एकर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़लैक देशक जनतापर। ई देश (चीनी आक्रमण आ पाकिस्तानी युद्ध सहित) युद्धक विभीषिका सँ अधिक कष्ट पौलक अछि भयंकर महगी, दमतोड़ मूल्यवृद्धि आ आन देश सँ भीख मे भेटल अन्नपर आश्रित रहबाक विवशतासँ, संविधान मे ई सार्वभौम सत्ता सम्पन्न देश घोषित भेल। आरो की-की सभ ने शब्दावलीक आकर्षक अलंकृत आ प्रभविष्णु उल्लेख एहि देशक लेल कयल गेल। पंचवर्षीय योजना सभक मोह-जाल पसारल गेल। किछु काज भेल अछि, जाहि सँ हमरा कोनो विरोध नहि अछि। मुदा योजनाक परिणामक अनुशीलन कयलापर ई स्पष्ट भ' गेल जे समस्त आयोजन असन्तुलित भेल। तें अपेक्षित लाभ नहि भ' सकल। यत्किंचित् लाभो भेल से भाइ-भतीजावादक चक्कर मे अटकि क' रहि गेल। फलत: साधारण समाज मे अस्सी सँ अधिके प्रतिशत लोक जाहि स्थिति मे छल, ताही मे कुहरि रहल अछि आ रोटी-रोजीक समस्या ओहिना भयंकर मुँह बौने अछि। शिक्षाक अनिर्धारित लक्ष्य वा परिवर्त्तनमान प्रयोग एवं विश्वविद्यालय सभक स्थापनाक प्रतिद्वंद्विता खूब भेल जाहि सँ डिग्रीधारी बेकार सभक भीड़ खूब बढ़ल। समस्या आरो ओझराइत गेल। दोग-दाग सँ अपन गोटी लाल कर'वला चतुर लोक ब्योंत लगाक' सुविधा-भोग करैत रहल। एहन सुविधाभोगी लोक शेष समस्त जनता केँ कबदबैत रहल। दोसर दिस आधुनिक भारतक नवीन तीर्थ सभक निर्माणक हेतु तथा नौकरीक लेल कोंढ़-करेज तोड़ि देनिहार ओ खोज-बीज आ कोशिश-पैरवी करबाक हेतु नव-पीढ़ी केँ विवश कयल जाइत रहल। कोर्स-सोर्स-फोर्सक गोटी सुतारबाक स्थिति उत्पन्न कयल गेल। नवका पीढ़ी केँ स्वप्न फूसि गप्प सभक लाभ द' क' योजनाक नामपर नीक-नीक आर्टपेपरपर छापि क' बड़े-बड़े सुविधाभोगी ख्यातनामा महापुरुषलोकनि कागतक छुच्छ पुलिन्दा सभ दैत रहलथिन आ नानाविध सामयिक आश्वासनक नक्शापर समाजवादी समाज-व्यवस्थाक तथाकथित लक्ष्य दिस नवका पीढ़ी केँ हाँकल गेल एवं भूखल पेट, नांगट देह केँ अतीतक भ्रामक तथा बाँझ गौरव, उन्मत्त बना देब' बला त्याग ओ आदर्शक हफीम पिया-पियाक' चुप्प, शान्त आ सहनशील बनबाक आर्षोपदेश देल गेल। आइ नवका पीढ़ी एहि कटु-सत्य केँ बूझि गेल अछि। एहि सभक प्रतिफलन साहित्य मे नवलेखनक रूप मे भ' रहल अछि।

दिन-राति दौड़ैत-पड़ाइत जाइत संसार, श्रान्त-क्लान्त व्यक्ति सभक जीविका-संघर्ष, जीवन-संघर्ष आ अस्तित्व-रक्षार्थ व्यग्र प्रयत्न, आर्थिक मारि, राजनीतिक

अस्थिरता, सामाजिक कठोरता, परम्पराक अरगड़ा, आटोमेटिक मशीनक प्रतिद्वन्द्विता एवं मानवक विवशता, अभाव, कुण्ठा, बेकारी, बेगारी, चाटुकारिता, अवसरवादिता, बॉसिज्म, मोन एवं शरीरक बनावटी खोल, धक्कमधुक्की, ग्लानि, आक्रोश, निराशा, जिजीविषा, संत्रास आ विद्रोह एहि सभक अकृत्रिम अभिव्यक्ति भेल नवलेखनमे।

ई एकदम स्वाभाविक थिक जे उपर्युक्त परिवेश मे नवका पीढ़ी मे औनाहटि तामस, थकनी, निराशा ई सभ होयब असंगत वा अप्रत्याशित नहि थिक। नवलेखन मे एहि संघर्ष-चेतनाक रूप रहैत अछि, जाहि मे समस्त प्रतिकूलता, परम्परागत व्यामोह, गतिहीन वा गत्यवरोधक स्थिति मे पहुँचक सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक आ मानवीय मूल्य-व्यवस्थाक अवमूल्यनक स्थितिजन्य भोगल अनुभूति रहैत अछि। ई दिशाहीनता नहि यथास्थितिक भंजन आ नवीन दिशाक अनुसन्धानक प्रयास थिक।

जत' धरि परम्परा सँ कटबाक वा परम्परा केँ काटबाक प्रश्न अछि, से आब एहि स्कूटर, कार, वायुयान, राकेटक युग मे कत' रहल सामन्ती शोभाक गौरव 'हाथी जे बिहारी कविक वासन्ती वायुक वर्णन—

रणित भृंग घंटावली, झरत दान मधु नीर।
मन्द मन्द आवत चल्यौ कुंजर कुंज समीर।

क क्यो रसानुभव करय? ई कल्पना आब आजुक जीवनक एहि अवकाश विहीन दौड़ादौड़ी मे की संभव वा संगत अछि? ककरा पलखति छैक आ कि ककर मजाल थिकैक जे एहि उद्दाम प्रवाह सँ किछु ओ क्षणक हेतु कटिक' अपना केँ बाहर राखि क', एहि यथार्थ गप्प सँ झूमि उठय आ आजुक वास्तविकताक प्रत्यक्ष सत्य केँ फुसिया दैक? सोझाँ मे पसरल जिनगी छैक, जिनगीक नीक बेजाय असंख्य चित्र, चित्र सभक अनेक दृष्टिकोण जकरा सहबाक आ भोगबाक यथार्थता केँ अनठा क' पुरना परम्पराक अपना पूर्वक साहित्यकार लोकनि सँ प्राप्त भावक कल्पनालोकक जर्जर, पुरान, सड़ल लहाश केँ पजियौने रहब कोना सम्भव छैक आजुक साहित्यकारक हेतु?

साहित्यक मैदान मे जे बहुत दिन सँ शामियाना तानल अछि, आब तकर डोर सभ सड़ि गेलैक अछि। माटि मे गड़ल ओकर खुट्टी सभ कोकनि गेलैक अछि आ शामियानाक पुरना बाँस सभमे, जे शामियाना केँ तनने छल—घून लागि गेलैक अछि। शामियाना मे लागल झाड़-फनूस झड़ि-झखरिक' टूटि-टूटि गेल छैक। संगे शामियानाक नूआ, जाहि सँ ओकर अस्तित्व-बोध भ' रहल अछि—समयक पानि-बिहाड़ि सहैत-सहैत अधुनिक बसातक झोंक मे चिरी-चित्ती भ' क' फाटि गेलैक

अछि। तैयो जे पुरनका साहित्यकार खाहे एहि वास्तविकता सँ कोनो प्रयोजन नहि राखि, बेखबरि भेल अपना पुरना परम्पराक भावना मे विभोर बनल कालातीत काव्यक सोमपान मे मस्त छथि, खाहे ओहि सड़लाहा शामियाना केँ बड़े यत्न सँ सीबाक असफल प्रयत्न मे व्यस्त छथि आ शामियाना सँ बाहरक लोक केँ, अपने स्थापित रहबाक दम्भ सँ चूर भेल कबदा रहल छथि—गरिया रहल छथि तँ वस्तुत: नवलेखन केँ एहन महानुभावपर दया होइत छैक। आइ जीवनक समस्त पुरनका मूल्य बदलि गेलैक अछि। वस्तु-मूल्य, नीति-मूल्य, अर्थ-मूल्य, काम-मूल्य, धर्म-मूल्य, मोक्ष-मूल्य, ज्ञान-मूल्य, विज्ञान-मूल्य, प्रतिष्ठा आ राजनीति मूल्य, मने सभ प्रकारक मूल्य जे बहुत दिन सँ लोकमान्य भेल चलि आबि रहल छल, सब किछु एक अनिवार्य प्रक्रियाक प्रभाव सँ बदलि गेलैक अछि। के एहि सँ असहमत होयताह ? तखनो जे पुरने मूल्य मान केँ आधार बनाक' लिखैत रहताह आजुक लिखल केँ ओहि पर कसैत रहताह तनिक दुराग्रह केँ की कहल जाय? नवलेखन एहि दृष्टिभ्रमोत्पादक कुहेस केँ फाड़िक' मिथ्या आवरणाभास केँ हटाय वास्तविकता अंकित सेहो करैत अछि। ओ केवल निषेधमूलके नहि थिक, विधिमूलक सेहो थिक, निषेधक स्वर प्रमुख छैक से धरि अवश्य।

नव लेखन एहि बात केँ मानैत अछि जे जीवन प्रक्रियाक कोनो शर्त कहियो आ कतहु अमान्य भ' जाइत अछि। आचरण आ चरित्र, अपना देश परिवेश, सामाजिक स्वीकृत किछु मान्यता अवधारित मूल्य सभक आधारपर आधृत होइत अछि। मुदा परिभाषाक वास्तविक व्याकरणक नियमावलीक बहार ई शब्द, विभिन्न देश ओ समाजक सम्पर्के (जे आइ एकदम घनिष्ठतम भ' गेल अछि) अपना स्थापित मूल्य केँ—अपना परम्परागत अर्थ केँ बदलैत रहैत अछि। ओकर मानदण्ड आ मापदण्ड नितान्त परिवर्त्तमान आ अस्थिर छैक, तें ओ परम्पराक पोखरिक जन्म लेल हरियरका सड़ल पानि केँ अवगाहन योग्य नहि मानिक', ओकरा बहा-चीरिक' बहा देब' चाहैत अछि आ नवका पानि केँ अपना पोखरि मे खसब' चाहैत अछि, जाहि सँ पोखरिक पानि स्वच्छ आ टटका रहैक, भने ओहि बहलाहा, सड़ल पानिक संग किछु पोसल-पोसल रोहु-भुन्ना बहरा जाइक। एहि तरहें नवलेखन शब्द निर्माण करैछ।

नव लेखन केँ जे पश्चिमक नकल आ यौनविकृतिक कुत्सित एवं कुंठित अभिव्यक्ति मात्र कहिक' एकर दुरालोचना करैत अछि, हम हुनक निन्दा नहि क' केवल एतबे कह' चाहैत छी जे ओ लोकनि रावण सँ अपहृत भ' जयबाक दुराशंका सँ अपना लक्ष्मण रेखा सँ बहराक' वर्त्तमान काव्यान्दोलनक रथक लीखपरक चेन्हटा

देखिक' आविष्ट भ' जाइत छथि आ गोसांई खेलाय लगैत छथि अथवा जनिक अध्ययन-अध्यापन विद्यापति, चन्दा झा, भुवनजी, ईशनाथ झा, सीताराम झा प्रभृति कवि लोकनिटाक काव्य-रचना एवं एहि संस्कृतिवादक काव्य-प्रवृत्ति धरि सीमित अछि ओ लोकनि युगक परिवर्त्तित परिस्थितिक सन्दर्भ मे बदलि गेल संवेदनाक स्वर केँ आ नवोन्मेष केँ आत्मसात नहि करक दुराग्राह क' क' युयुत्स बनि गेल छथि। किछु अभिज्ञो लोकनि परिवर्तन सँ मुँह मोड़िक' पछिलके बाट केँ पटा रहल छथि जे निश्चयत: हुनक हठ मात्र थिक। ओना उपर्युक्त कवि लोकनिक रचना केँ पढ़ब नितान्त आवश्यक। उछलिक' सीढ़ीपर नहि चढ़ल जा सकैछ। मुदा एतबहि मे कूपमण्डूकताक परिचय देब विधेय नहि थिक।

फ्रायड, एडलर, जुंग, मार्क्स, कामू, सार्त्र, कीकेगार्द आदिक चिन्तन कोनो एक्के-एक्के देश केँ नहि संसारक प्रत्येक देशक चिन्तन केँ प्रभावित कयलक अछि। समस्त विश्वमानस एहि सँ प्रभावित अछि। विकसित विज्ञानक अवदान भौगोलिक दूरी केँ निकटतम बनाक' विश्वक व्यक्ति-व्यक्ति केँ बहुत निकट आनि देलक अछि। तेँ पश्चिम आ पूर्वक संपृक्ति स्वाभाविक आ अनिवार्य भ' गेल अछि। मानव मात्रक एहि सुविकसित ओ उदार एक पारिवारिक स्थितिक परिवेश मे अपन-अपन विशिष्ट रूप आकृतिक अछैतो, चिन्तन साम्य आ साहित्यक मूल्यमानक सर्वमान्य एकरूपता केँ अनिवार्यत: मानहि पड़त जे युगधर्म थिक। तें नवलेखन मे एहि सभक संक्रमित एवं समेकित अनुभूति रहब स्वाभाविक थिक।

नव लेखन 'काव्यं यशसेर्थकृते' सँ बहुत आगाँ बढ़ि गेल अछि। ई नवीन सौन्दर्यानुभूति, नवीन सामाजिक चेतना आ नवीन संस्कार सँ सुसम्पन्न भ', प्राचीन रूढ़ि ओ रूढ़िग्रस्त रचनाकारक वमन कयल भाव सामग्रीक विरुद्ध तथा युगक दुर्व्यवस्था, गत्यवरोध एवं चारू दिशुका जीवन-व्याप्त शोषण-दमनक विरुद्ध, विद्रोह केँ नवीन शब्द योजना एवं नवीन प्रतिमानक माध्यम सँ अभिव्यक्त करैत अछि।

ई निर्भ्रान्ति अछि जे कोनो-कोनो क्षण विशेष मे तीव्र-संवेगक सूक्ष्म भाव-वहन करबाक क्षमता शब्द मे नहि होइत छैक जे ओ कथ्यक सम्पूर्ण संवेग केँ अक्षुण्ण रूपें अभिव्यक्त क' सकय। तें नवलेखन भाषाक उक्त अक्षमता केँ तथा ओकरा सँ पूर्वक असहज-अभिव्यक्ति केँ बूझि, मानिक' एकदम अनिवार्य युगानुरूप, आपातत: यथार्थ आ नव-बोधानुकूल नवीन बिम्ब, नवीन प्रतीक, नवीन उपमान आदि केँ स्वीकृत क' नवीन संकेत-अंक आ न'व रेखा केँ प्रयुक्त कयलक अछि। ओ शब्द केँ एहि प्रकारें नवीन अर्थवत्ता सँ अभिषिक्त कयलक अछि जे जन-सामान्य द्वारा पूर्ण परिचित तथा अभिज्ञात नहि रहबाक कारणे दुर्बोध वा दुरूह

कहिक' बदनाम कयल जाइत अछि। मुदा एकरा बूझब आवश्यके नहि, सामाजिक दायित्व थिक, जे नहि भेने हमरालोकनि पछड़ले रहि जायब तथा इतिहास मे अपराधी मानल जायब। विदेश मे एहि लेल कह' नहि पड़लैक। एहि कारणे जे ओहिठामक सामाजिक मन:स्तर आ अभिज्ञान, विकासक प्रक्रिया सँ पृथक नहि रहलैक। एत' अशिक्षा आ अज्ञानक अतिरिक्त किछु ज्ञानी लोकनिक दुराग्रहो (कारण जे हो) जन सामान्य केँ सोझरयबाक सुविधा नहि द' अपना प्रभावक आतंक सँ ओकरा भड़कौने रहलैक। मुदा एहि दायित्व सँ भागिक' अपना केँ कूर्मवृत्ति मे राखब कहिया धरि सम्भव भ' सकत? वा कत' धरि उचित कहल जा सकत? समग्र विकासक हेतु परम्पराक क्लोरोफार्म सँ मुक्त तँ होयबे पड़त। एना कटिक', अपना केँ ठकि फुसियाक' वा परतारि-बहटारिक' कहियाधरि शुतुरमुर्ग जकाँ बालु मे मुँह घोसियौने रहब?

नवलेखन केवल वृहत्तर केँ नहि, छोट सँ छोट आत्मानुभूति प्रतिक्रियाकेँ—एकदम वैयक्तिक ओ आत्मीय अनुखण्ड केँ, जकरा परम्परावादी लोकनि एकदम उपेक्षित बुझैत रहथिन, यथातथ्य अभिव्यक्ति देलक अछि। ओ अभिव्यक्ति वैयक्तिक परिधि सँ बहराक' समष्टिक विशालताक क्षेत्र-वस्तु बनि एकटा सर्वथा नवीन आलोक लोक केँ देलकैक अछि। एहि विधियें नवीन दिशाक संकेत कयलकैक अछि। वस्तुत: नवलेखन समस्त बुनियादी प्रश्नपर गम्भीरता सँ चिन्तन प्रस्तुत कयलक अछि आ समाधानक दिशा मे अग्रसर होयबाक सु-साहस सेहो कयलक अछि। एकरा संगे नवलेखन भोगल जीवन-सत्य आ परिवेश-मडित व्यक्तिक यथार्थ केँ प्राणवन्त रूप मे प्रस्तुत क' जीवनक सहज प्रक्रिया सँ उद्‌भूत भावनिचय एवं अनुभूतिक संक्रान्त रूप केँ तथा बौद्धिकताक ओझरायल आ अतिसूक्ष्म भावबोध केँ निष्कपट रूपें अभिव्यक्त कयलक अछि।

सत्य केँ सत्य कहबाक सामर्थ्य जखन साहित्यकार त्यागि दैत अछि तँ ई काज नवलेखन केँ कर' पड़ैत छैक। कृत्रिम अभिव्यक्ति आ आरोपित भावनाक कल्पित चाकचिक्य सँ फराक भ' जीवनक प्रत्यक्ष दैनन्दिन सहजता केँ प्रकट करबाक (मिथ्या प्रतिष्ठाक लोभे) असमर्थता वा अनठा देबाक प्रवृत्ति अथवा रूढ़िग्रस्त सामाजिकताक कारणे नहि प्रकट क' सकबाक क्लीव-अक्षमता, एही सभक खण्डन तथा विरोध मे आ उक्त पृष्ठभूमिक मान्यताक भंजन मे आरम्भ भेल अछि नवलेखन। नवलेखन अपन भावबोध, प्रवृत्ति, आजुक यथार्थ आ अपन भोगल सत्य केँ सम्पूर्ण ईमानदारी सँ व्यक्त कयलक। संगे ओ बिना कोनो भय, संशय आ हिचकिचाहटिक निर्भीक साहस सँ इहो घोषित कयलक अछि जे ओ इतिहास सँ

कतेक संयुक्त अछि आ कतेक असहमत, परम्पराक कतेक अंश मे ग्राहक अछि आ कतेक विरोधी सत्यक कतेक प्रामाणिक तथा स्पष्ट उद्घोषक अछि।

नव लेखनक संग लोकप्रियताक प्रश्न खूब उठाओल जाइत अछि। ई प्रश्न विशेषत: ओ लोकनि बड़े नाराबाजीक संग जोर-जोर सँ उठबैत छथि जे पछिला युगक प्रतिनिधि होयबाक आ जनाभिरुचि केँ जनबाक एक मात्र अपना केँ अधिकारी मानैत छथि। लोकप्रियता थिक की? ई नितान्त सामयिक वस्तु थिक वा स्थायी? आदरणीय मधुपजीक टटका जिलेबी, अपूर्व रसगुल्ला तथा अमरजीक गुदगुदीकेँ, मायानन्द मिश्रक भाङक लोटा केँ एही तरहक कतिपय रचना केँ अपना समय मे बड़ लोकप्रियता भेटल छलैक। की आबो वैह स्थिति बनल अछि? हमरा बूझने नवलेखन केँ केवल लोकानुरंजनेटा नहि करबाक छैक, ओकरापर दायित्व छैक युगसत्य केँ मूर्त्त करबाक, नीक जकाँ प्रस्तुत आ प्रसारित करबाक, संगे पाठकवर्ग केँ उद्योग बनयबाक।

आइ जँ नेनाक जन्म छठिहार, मूड़न, विवाह, द्विरागमन, सत्यनारायणक पूजा आदिक अवसर पर गीत सब गाओल जाइत अछि, ताहि मे नवतुरिया कन्यालोकनिक गीत सभ सुनलिऐक अछि? ओकरा लोकनि केँ यूरोपक कोन प्रत्यक्ष सम्पर्क भेलैक अछि? कोना स्वर ओ वस्तु बदलि रहलैक अछि? जँ ई कही जे अप्रत्यक्ष रूपें पाश्चात्य संस्कृतिक ई प्रभाव थिक तँ की आब ताहि सँ बाँचब सम्भव अछि? नीक कही वा अधलाह ई अपरिहार्य अछि। (अधलाह कहबो तँ पूर्वाग्रहे थिक।) तर्ज एकदम बदलि गेलैक अछि—बदलल जा रहलैक अछि। नवलेखनक प्रसंग ई एक टा अतिसाधारण संकेत कथ्य थिक।

ई मानबा मे हमरा कनेको दुविधा वा आपत्ति नहि अछि (जे हम अपना आत्मनेपदक आत्मकथ्य मे आ आनो निबन्ध सभ मे निस्संकोच भावें स्वीकारने छी) जे नव लेखनक नामपर एहनो लिखल जाइत अछि जे केवल शब्दजाल मात्र थिक, जाहि मे कनेको रेखा मात्र अछि, नवीन होयबाक उपक्रम—आकांक्षा अछि आ अनेक अंश मे फालतू वा निरर्थको अछि। समन्वित रचना वा रचना समवेत मे तँ ताक' पड़बे करत जे मनीषा कत' छैक। नवलेखन तौला मे सिद्ध होइत भात तँ नहि थिक जे एक दूटा केँ टेबिक' सभटा केँ अधपक्कू की कचकूह कहिक' पातपर सँ टारि देबैक? नवलेखन वस्तुत: एक स्वाभाविक परिणति थिक—कोनो ऊपर सँ लादल ओढ़ल वस्तु नहि थिक, अजायब घरक कोनो अद्‌भुत जीव नहि थिक जे देखिक' हल्ला कयल जाय आ थपड़ी पाड़ल जाय।

मिथिला मिहिर : 8 मार्च 1979

वाग् द्वार : आत्मनिवेदन

एहि कविता संग्रह (आत्मनेपद) मे 1948 सँ 1963 ई. धरिक कविता सबमे सँ किछुए कविता बीछि-बाछि क' संकलित भेल अछि। ओना हिन्दी मे हमर 'इन्द्रधनुष' आ 'आओ गायें, कविता संग्रह 1950 ई. मे प्रकाशित भ' चुकल छल। मुदा मैथिली मे ई प्रथमे कविता संग्रह थिक। मैथिलीक प्रथम कविता दरभंगा सँ प्रकाशित होइत मिथिला मिहिरक 31 मार्च 1945 क अंक मे छपल। तकरा बाद सँ मिहिर (दरभंगा), वैदेही (दरभंगा), मिथिला दर्शन (कलकत्ता), मिथिला मिहिर (पटना), अभिव्यंजना (सहरसा) आदि मे जे हमर कविता सब प्रकाशित भेल अछि ताही सबमे सँ किछु एहि संकलन मे देल गेल अछि।

एहि मे कतिपय कविता प्राचीनो शैलीक अछि अधिकांश कविता नवीन शैलीक ओ कविता थिक जे समसामयिक अन्यान्य भाषा-साहित्य मे नव कविताक नामे प्रचुर मात्रा मे संकलित प्रकाशित भ' रहल अछि। (पुस्तकक आरंभ मे न'व कविता सब अछि आ तकरा बाद किछु कविता प्राचीन शैलीक अछि।) प्राचीन शैलीक कविता सभक विषय मे किछु कहबाक एहि लेल आवश्यकता नहि बुझना जाइत अछि जे एहि सम्बन्ध मे बहुत कहल गेल अछि। मैथिलीक 'नव कविता'क प्रसंग एखन धरि प्रायश: नहि कहल गेल अछि; मुदा मैथिली मे आब खूब जोर-शोर सँ एहि तरहक कविता लिखल जा रहल अछि आ सामयिक पत्र-पत्रिका मे प्रकाशितो भ' रहल अछि।

'नव कविता' सभक सम्बन्ध मे हमर जे विचार अछि तकर अभिव्यक्ति एक स्वतंत्र निबन्ध मे सम्भव। एहि ठाम ओकर किछु संकेत-मात्र हम कर' चाहैत छी।

असल मे सामाजिक यथार्थ केँ बूझब आ ओकरा प्रतिबिम्बित करब यैह थिक कवि कर्म। फलत: समाजक स्थिति अर्थात् अर्थ-व्यवस्था, प्रशासनक पद्धति, उद्योग, उत्पादन, जीवन-यापनक प्रणाली, संकुलता आ स्तर, विज्ञान एवं कलाक जन-जीवनपर प्रभाव, ओकर विकास आ उपलब्धि आदि जेना-जेना बनैत बदलैत रहैत

अछि, तहिना-तहिना युगानुरूप सामाजिक यथार्थ मूलतः स्थिर रहितहुँ रूपतः परिवर्त्तित होइत रहैत अछि। आ तें तकरा आत्मसात क' अभिव्यक्त करक शिल्प शैली सेहो परिवर्त्तित होइत रहैत अछि। यैह शिल्प, परिवर्त्तित शिल्प, कविता केँ परम्परावादी कविता सँ उठाक' पृथक श्रेणी मे स्थापित करैत ओकर नव मूल्य मान घोषित करै अछि।

एत' ई स्पष्ट क' देबा मे हम अप्रासंगिकता नहि बुझैत छी जे मैथिली साहित्य मे नव कविताक सम्बन्ध मे पर्याप्त आ स्पष्ट चिन्तन एखन ने भेल अछि आ ने तकर स्थितिये सरल भेल अछि; कारण जे एक तँ लोकक मन मे पुरान आग्रह बद्धमूल अछि आ दोसर एखन धरि नव कविताक सम्पूर्ण चित्र सुपुष्ट आ स्पष्ट नहि भ' सकल अछि। नव कविताक स्रष्टालोकनि जे शैली ग्रहण कयलनि अछि ओहि मे चमत्कारपूर्ण नवीनता अछि। सर्वाधिक ध्यान आकृष्ट करौनिहार विशेषता थिक ओकर मूर्त्त चित्र सभक योजना आ विषयक प्रति नवीन दृष्टि। ओना तँ अपना आदिकाल सँ कविता मे बिम्ब आ प्रतीकक प्रयोग होइत आयल अछि; मुदा जाहि प्राचुर्य तथा जाहि लाघव सँ आइ-काल्हि नव कविता मे ओकर सन्निवेश भ' रहल अछि से पहिने नहि छल। शब्द-योजनाक सम्बन्ध मे मितव्ययिता एकर दोसर विशेषता थिक। भरतीक शब्द, अनावश्यक विशेषता तथा अगबे संगीतमयताक दृष्टिएँ प्रयुक्त पदावली सँ अपना काव्य केँ मुक्त राखब नव कविताक रचना-पद्धति भ' गेल अछि। लयक सार्थक प्रयोग तथा शब्द आ भावक तारतम्यक निर्वाह एकर मुख्य दृष्टि थिक। तें बहुतो कविता मे तँ कविक निजी इडियमक सन्निवेशो नीक जकाँ सफल रहल अछि। संक्षेप मे नव कविता सब मे जाहि मनःस्थिति सभक (मूड्सक) अभिव्यक्ति भेल अछि आ ताहि लेल जाहि बिम्ब एवं प्रतीक सभक आश्रय लेल जाइत अछि ओ सर्वथा उपयुक्त आ बहुधा नवीन अछि। ई अवश्य जे नव कविता पाश्चात्य प्रभाव सँ अभिप्रेत अछि मुदा ओकर सम्बन्ध प्राचीन काव्य-परम्परा सँ सेहो अविभक्त अछि। ओहि मे परम्परागत भावुकता, बौद्धिकता, कल्पनाशीलता, आध्यात्मिक संस्पर्श, सूक्ष्म-संवेदनात्मकता आ युगानुरूप अन्तः संघर्ष जीवनक परिवर्त्तित मूल्य आ परिस्थितिक यथार्थवादी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण, काव्यगत नवीन पैटर्न (शैली), काव्य सत्य आ सघनतम संवेदनाक अभिव्यक्तिक हेतु सम्प्रेषणक नवीन बिम्बयोजना यैह थिक नव काव्यक प्रकृति।

बिम्ब-विधानक सम्बन्ध काव्यक विषयवस्तु आ ओकर रूप सँ होइत अछि। मानव-चेतनाक, बहुत अर्थ मे मानव सभ्यताक सेहो, विकासक संग-संग काव्यात्मक

बिम्ब सभक स्वरूप, रस-बोध आ पद्धतियो मे अन्तर अबैत गेल। तें नव कविताक वैशिष्ट्य-परीक्षण पूर्ण प्रचलित निकष (कसौटी) वा प्राचीन रसवादक नियम-लक्षणक आधार नहि भ' सकैत अछि। प्रत्युत ताहि लेल जाहि रूपें रसक धारणा आधुनिक कवितेटामे नहि, जन-मानसहु मे बदलि गेल अछि, तकरा नव कविता मे बिम्ब (इमेज) द्वारा अभिव्यक्त कयल जाइत अछि। ई अस्पष्ट वा दुरूह नहि होइत अछि; मुदा बूझल जाइत अछि एहि कारणे जे एहि कविता सब मे अपूर्व-परिचित, नवीन आ सघन बिम्ब सभक अधिकता रहैत अछि जकरा लेल अधिक सुसंस्कृत आ सहृदय पाठकक आवश्यकता अछि। हर्षक विषय जे नव कविताक साधारणीकरण भ' रहल अछि आ ओकर रसानुभूति कयनिहार पाठक-समुदाय खूब बढ़ि रहल अछि। नहि तँ—

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदध ब्रह्मापि तं नरं न रंजयति।

ई पहिनहि सँ कहल अछि। ई स्पष्ट क' देब आवश्यक जे एहि कथन मे पाठकक वा कनिकहु अवमानना हमर लक्ष्य कथमपि नहि अछि। वस्तुतः बिम्ब बड़ सूक्ष्म वस्तु थिक जकरा आधार पर लिखल गेल नव कविता कविक अधिक सँ अधिक रागात्मक अनुबन्धपर अवलम्बित होइत अछि आ तें अपना संग एक व्यापक संदर्भ एवं पृष्ठभूमि रखैत अछि। 'तह' धरि पहुँचबाक हेतु ओहि सन्दर्भक ज्ञान (अनुभूति-क्षमता) नितान्त अपेक्षित होइत अछि। एहिठाम इहो स्मरण राखक थिक जे युग-चेतना तँ बड़ अगुआ जाइत छैक मुदा व्यक्ति-चेतना साधारणतः ओकरा समकक्ष नहि रहैत छैक; ओ पछुआयले रहैत छैक।

अन्तमे, एकटा विषय आओर जे काव्यक विषय-सीमा बहुत बढ़ि गेल अछि आ छन्द-तंत्र निर्बन्ध भ' गेल अछि, कतोक अर्थ मे आब ओ सीमाहीनो कहल जा सकैत अछि। एहि तरहें नव कविता उपर्युक्त पृष्ठभूमिमे, कविक वैयक्तिक आ सामाजिक परिस्थिति-परिवेशक जीवित क्षणक तीव्र अनुभूति, अतीत एवं भविष्यक आलोकित परिपार्श्व मे युग-बोधक नवीन काव्य चेतना थिक।

एहि संकलनक कविता सब मे ई सब लक्षण जँ घटित नहि भ' सकैत हो तँ से कोनो निराशा वा अनास्थाक बात हमरा लेल नहि थिक। कारण जे ओ हमर संकल्प थिक जकरा लेल हम क्रियाशील छी। विशेष सहृदय पाठके कहताह। किमधिकम् विज्ञेषु?

(आत्मनेपदक भूमिका)

2 अप्रैल 1963

मैथिलीक नव कविता : सम्पादकीय सन्दर्भ

स्वातंत्र्योत्तर मैथिली साहित्य मे नव कविताक विकास महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना थिक। स्वातंत्र्य-संग्रामक समय लोक केँ जे एकटा 'सब्ज-बाग' देखाओल गेल छलैक, जन-मानस मे भविष्यक संभावनाक जे स्वरूपोन्मेष भेल छलैक, से सब अप्रत्याशित रूपें समाप्त भ गेलैक। जनमतक वास्तविक निर्णय-क्षमताक असामर्थ्य सँ अनुचित लाभ उठाक' राजनीतिक संगठन सभ लोक-शोषण मे लागि गेल। स्वतंत्रताक संगहि देशक विभाजन, रक्तपात आ हिंसाक धमगज्जर नग्न-नृत्य तथा जातीयता, प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता आदिक अढ़ मे एकठाम सत्ता आ पूंजीक केन्द्रीकरण भेला सँ धनिक आरो बेसी धनिक आ गरीब आरो बेसी गरीब होइत गेल। भयंकर महगी, दमतोड़ मूल्य-वृद्धि आ आन देशक भीखपर आश्रित रहबाक विवशता एहि देशक लोक केँ युद्धक विभीषिकाक अपेक्षा अधिक कष्टकर भेलैक अछि। सार्वभौम-सत्ता-सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्यक (एहने आकर्षक आ ललितगर शब्द सँ अलंकृत) एहि देश मे पंचवर्षीय योजनाक जे मोह-जाल पसारल गेल, तकर पारिणामिक अनुशीलन स्पष्ट करैछ जे ओकर यत्किंचितो लाभ भाइ-भतीजावादक मुनहर मे अटकि गेल आ समाजक अधिकाधिक व्यक्ति यथास्थितिक व्यामोह मे कुहरि रहल अछि; एखनो ओकर रोजी-रोटीक समस्या ओहने भयंकर अछि। शिक्षाक अनिर्धारित वा परिवर्त्तमान प्रयोग आ विश्वविद्यालय सभक स्थापना प्रतिद्वन्द्विता खूब भेल, जाहि सँ डिग्रीधारी सभक मूड़ पर मूड़ पड़' लागल आ एम्हर दोग-दाग सँ अपन गोटी लाल कयनिहार चतुरानन व्योंत लगाक' सुविधाक अलगट्टे भोग करैत अपना सँ भिन्न अभागल, अभोगी सभ केँ कबदबैत रहलाह। आधुनिक भारतक तीर्थ-निर्माणक हेतु तथा नोकरीक लेल कोढ़-करेज तोड़ि देनिहार खोज-बीज आ कोशिश-पैरवी करक हेतु नव पीढ़ी केँ विवश कयल जाइत रहल, आ नवपीढ़ी भूखल पेटें, नांगट देहें अतीतक भ्रामक तथा बाँझ गौरव सँ उन्मत्त बना

देब' वाला त्याग ओ आदर्शक हफीम खा-खाक' चुप्प, शान्त आ सहनशील रहबाक आर्षोपदेश पीबैत रहल।

समाजक सर्वाधिक संवेदनशील प्राणी कवि अपन स्वातंत्र्योत्तर परिवेशक उपर्युक्त परिस्थिति सँ प्रभावित, क्षुब्ध, आक्रोशी आ विद्रोही भ' गेल, जे नितान्त स्वाभाविक। दिन-राति दौड़ैत-पड़ाइत जाइत संसार मे श्रान्त-क्लान्त व्यक्ति सभक जीविका, जीवन आ अस्तित्वक संघर्ष मे आत्मरक्षार्थ व्यग्र प्रयत्न आर्थिक मारि, राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक कठोरता, परम्पराक अरगड़ा, ऑटोमेटिक मिशीनक प्रतिद्वन्द्विता आ मानवीय विवशता, अभाव, कुण्ठा, बेकारी-बेगारी, चाटुकारिता, अवसरवादिता, बॉसिज्म, मानसिक आ शारीरिक कृत्रिमता, धक्कमधुक्की, ग्लानि, आक्रोश, निराशा, जिजीविषा, संत्रास आ विद्रोह—एहि सभक अकृत्रिम अभिव्यक्ति थिक मैथिलीक नव कविता।

आब एहि स्कूटर, कार, वायुयान आ राकेटक युग मे कत' रहल सामन्ती शोभाक गौरव 'हाथी' जे बिहारी कविक वासन्ती वायुक वर्णन—

रणित भृंग घण्टावली, झरत दान मधुनीर।
मन्द-मन्द आवत चल्यौ, कुंजर कुंज समीर।

एकर क्यो रसानुभव करत? ई कल्पना आजुक जीवनक अवकाश-विहीन एहि दौड़ा-दौड़ी मे की संभव आ संगत अछि? ककरा पलखति छैक जे एहि उद्दाम-प्रवाह सँ किछुओ क्षणक हेतु अपना केँ फराक राखि एहि अयथार्थ गप्प सँ झूमि उठय? सोझाँ मे पसरल छैक जिनगी आ जिनगीक नीक-अधलाह चित्र, चित्र सभक अनेक दृष्टिकोण, तकरा सहबाक आ भोगबाक यथार्थता केँ अनठा-फुसियाक' पुरना परम्पराक प्राचीन कवि लोकनिक भावुकताक जर्जर-सड़ल लहाश केँ पँजियौने रहब कोना संभव छैक आजुक कवि सभक हेतु? तें मैथिलीक नव कविताकेँ, अपन कवि-काव्यक परम्परा सँ कटबाक आ परम्परा केँ काटबाक प्रश्ने निरर्थक थिक।

साहित्यक मैदान मे जे बहुत दिन सँ शामियाना तानल अछि तकर आब डोर सब सड़ि गेलैक अछि, माटि मे गड़ल ओकर खुट्टो आ ओकरा तान' बाला बाँससब कोकनि गेल अछि, घुनलग्गू भ' गेल अछि, ओहि मे लागल झाड़-फानूस सब झरि-झखरि गेल अछि। जँ एखनो किछु व्यक्ति ओहि चिर्री-चित्ती भेल शामियाना केँ बड़े यत्न सँ सीबाक, चेफड़ी पर चेफड़ी लगयबाक असफल प्रयास मे व्यस्त छथि, तँ नव कविलोकनि केँ एहन महानुभाव पर दया होइत छनि। ई निर्विवाद जे सम्प्रति जीवन आ तें कवितोक समस्त मूल्य-मान ढहल-ढनमनायल अछि, मुदा

तथापि जे पुरने मूल्य-मान केँ अपन रसास्वादनक कसौटी बनौने रहताह, तनिक दुराग्रह केँ की कहल जाय? मैथिलीक नव कविता एहि दृष्टिभ्रमोत्पादक कुहेस केँ फाड़ि क', मिथ्या आवरणाभास केँ हटाक' वास्तविकताक दर्शन करबैत अछि।

नव कविलोकनि ई मानैत छथि जे जीवन-प्रक्रियाक कोनो व्यवस्था, कोनो सत्य, कहियो आ कतहु अमान्य भ' जाइछ, जे आचरण आ चरित्र, अपना देशक परिवेश, समाजस्वीकृत मूल्य आ मान्यता आदिक आधारपर निर्मित आ विकसित होइछ। मुदा परिभाषाक वास्तविक व्याकरण-विरुद्ध होइतो नवीन मूल्य आ मान्यता विभिन्न देश ओ समाजक सम्पर्क सँ (जे आइ एकदम घनिष्ठतम भ' गेल अछि) पूर्वस्थापित मूल्य केँ, परम्परागत अर्थ केँ बदलैत रहैछ। ओकर मापदंड आ मानदंड नितान्त परिवर्त्तनशील आ अस्थिर छैक, तें परम्पराक पोखरिक हरियरका-सड़लाहा पानि केँ अवगाहन योग्य नहि बूझिक' ओकरा बहा देब' चाहैत अछि आ नवका पानि ओहि मे खसब' चाहैत अछि, जाहि सँ ओ स्वच्छ आ टटका बनल रहैक मे खाहे ओहि सड़लाहा पानिक संग किछु पोसल-पालित रोहु-भुन्नो कियैक नहि बहरा जाउ! अस्तु, नवकविलोकनि अपन भोगल यथार्थक अनुभूतिक लेल शब्द केँ नवीन अर्थवत्ता देबाक लेल प्रतिबद्ध छथि। एतदर्थ, क्षणविशेष मे तीव्र संवेगक सूक्ष्म भाववहनक शाब्दिक अक्षमता केँ बूझैत, एकदम अनिवार्य, युगानुरूप आपातत: वास्तविक आ नव बोधानुकूल नवीन बिम्ब, नवीन प्रतीक, नवीन उपमान आदि केँ नवकविता मे साधन मानल गेल अछि। जनसाधारण द्वारा ई नवीन साधनपूर्ण परिचित आ अभिज्ञात नहि रहला सँ नव कविता मे दुर्बोधता वा दुरूहता उत्पन्न होइत अछि। मुदा एकरा बुझब केवल आवश्यके टा नहि, हमरा सभक सामाजिक दायित्व थिक, जे नहि भेने हमरालोकनि पछड़ले रहि जायब आ इतिहास मे अपराधी मानल जायब।

फ्रायड, एडलर, युंग, मार्क्स, कामू, सार्त्र, काफ्का, कीकेगार्दे, गिन्सबर्ग आदिक चिन्तन कोनो एके देश केँ नहि, संसारेक चिन्तन केँ प्रभावित कयलक अछि। विकसित विज्ञानक अवदान ब्रह्माण्डक भौगोलिक विस्तार केँ हस्तामलकवत् बनाक' विश्वक व्यक्ति-व्यक्ति केँ सन्निकट आनि देलक अछि। अस्तु, नवकविता केँ जे पाश्चात्य अनुकरण आ यौन विकृतिक कुत्सिक एवं कुंठित अभिव्यक्ति मात्र कहि क' एकर दुरालोचना करैत छथि, हमरा लोकनि हुनक निन्दा नहि क' केवल एतबे कहय चाहब जे ओलोकनि रावण सँ अपहृत भ' जयबाक दुराशंका सँ अपन लक्ष्मण-रेखा सँ नहि बहराक' वर्त्तमान काव्यान्दोलनक रथक लीखे टा देखिक' आविष्ट भ' गोसांई खेलाब' लगैत छथि अथवा जनिक अध्ययन-अध्यापन विद्यापति, चन्दा

झा, भुवनजी, ईशनाथ झा, सीताराम झा प्रभृति कविलोकनिक काव्य-रचना एवं सांस्कृतिकवादक काव्य-प्रवृत्ति धरि सीमित छनि, युगक परिवर्त्तित परिवेशक सन्दर्भ मे बदलल संवेदनाक स्वरकेँ, अस्वीकृतिक नवोन्मेष केँ, आत्मसात नहि करबाक हुनक दुराग्रह निरर्थक मानव मात्रक एहि सुविकसित आ उदार एकपारिवारिक स्थितिक परिवेश मे अपन-अपन विशिष्ट रूपाकृतिक अछैतो चिन्तनसाम्य, मूल्यमानक सर्वमान्य एकरूपताक खोज नवकविक लेल युगधर्म थिक।

नव कविताक संगे जनमानस मे नहि टिकि सकबाक आकि ओकर लोकप्रियताक प्रश्न खूब उठाओल जाइछ। मधुपजीक 'टटका जिलेबी' आ 'अपूर्व रसगुल्ला', अमरजीक 'गुदगुदी', मायानन्द मिश्रक 'भांगक लोटा' आदि केँ अपना समय मे जे लोकप्रियता भेटलैक की आबहु सैह स्थिति छैक? हमरा बुझने नव कविताक दायित्व केवल लोकानुरञ्जने टा नहि, सत्य केँ सत्य कहबाक आ तें अपन पाठक वा भावक वर्ग केँ तद्योग्य बनायब सेहो थिक।

(मैथिलीक नवकविताक भूमिका)
विजयादशमी : 1969

भूमिका

ओम भूर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।।

[भू]

भूमिक काल-निरूपणक प्रसंग (भारतीय दृष्टिकोणे) प्राचीन ग्रन्थ सब मे कहल गेल अछि जे जाहि दिन हिरण्यगर्भ टूटल तँ प्रथम सत्व, रज, तमक सन्तुलन टूटल आ नक्षत्रादि बनल। पछाति क्रमशः भूमि बनल आ ओ ठोस भेल जाहि मे वनस्पति, जीव आ मनुष्यक उत्तरोत्तर सृष्टि भेल।

हिरण्यगर्भः सपवनैताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथ्वीं द्यामुते मां... ।।

आदि—ई स्वारोचिष मन्वन्तर छल। ओहि नक्षत्रादिक जहिया लय भ' जायत से सम्पूर्ण समय एक कल्प भेल जाहि मे चौदह टा मन्वन्तर होयत। एखन धरिक गणनानुसार भूमिक आयु 1, 33, 47, 19, 351 वर्ष भ' गेल अछि। वैज्ञानिक आधार पर भूमिक ओ स्तर जाहि सँ रेडियोधर्मी अंश टूटि तत्व मे परिवर्त्तित होइत रहैत अछि, तकर एकटा निश्चित क्रम छैक। ई एकटा आधार थिक जाहि सँ ई निरूपित कयल जा सकैछ जे भूमि जखन बनल, ठीक ओहि समय रेडियोधर्मी तत्व यथावत छल। एखनुक बनल तत्वक परीक्षण सँ (जे ज्ञात अछि) भूमिक आयु बहार कयल गेल अछि 5.3 × 109 वर्ष। समुद्र मे जे नोनक परिमाण अछि तकरा आधारपर 107 वर्ष कहल ज्ञाइछ। जे, से। मनुक्खक जीवन मे सबसँ विशिष्ट घटना थिक 'स्वर' क आर्विभाव जे पछाति भाषाक रूप मे परिवर्त्तित भेल। कथन-प्रतिकथनक ओ अज्ञात काल धन्य थिक। कथनेक विकास कथा थिक।

एखन धरिक उपलब्ध साहित्यक आधारपर सब सँ प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद थिक जाहि मे कथाक सूत्र भेटैत अछि। ऋग्वेदक कालनिरूपणक प्रसंग भारतीय दृष्टिकोणे ई कहल गेल अछि जे वेद ब्रह्माक सृष्टि थिक। हुनका सँ वेद प्राप्त क' मरीचि, अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा आदि ओकर प्रसार कयलनि। अथर्ववेद मे अछि—

यस्माद्दचो आयतक्षन् यजुर्यस्मादषाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वां गिरसो मुखम्। आदि।

डाक्टर सम्पूर्णानन्दक कथन छनि जे—ई सभ आलोचक मानैत छथि जे ऋग्वेद मे बहुत उत्कृष्ट कोटिक काव्य भेटैछ। अनेक शताब्दीक साहित्यिक प्रगति आ साधनाक उपरान्ते उच्च कोटिक काव्य, भाव आ भाषा सँ पुष्ट रचना लिखल जा सकैछ। ऋग्वेद मे ई स्मृति शेष अछि जे ओहि काल सँ पूर्व अनेक मनु भ' गेल छथि।

गीता मे अपना विभूतिक चर्चा करैत कृष्ण कहने छथि—

मासानां मार्गशीर्षोऽहं ऋतुनां कुसुमाकरः।

(मास मे अगहन आ ऋतु मे हम वसन्त छी)। ज्योतिष शास्त्रक अनुसारें अगहन मे वसन्त आइ सँ दस हजार वर्ष पहिने होइत छल। ऋतुचक्र घुसकि रहल अछि ई तँ प्रत्यक्ष बूझि रहल छी।

ऋग्वेदक 10म मंडलक 85 सूत्रक 13म मंत्र कहैछ—

सूर्याया वृहतुः प्रागात् सविता यमवासृजत्।
अधासु हन्यन्ते गावोर्जुन्योः पर्युह्यते।

सूर्य अपन कन्या सूर्या केँ जे विवाह सामग्री देलथिन ओ आगाँ चलल। अधा (मघा) नक्षत्र मे तँ ओकरा चलयबला बड़द केँ पीटय पड़ैत छैक मुदा अर्जुनी (फाल्गुनी) नक्षत्र मे गाड़ी वेग सँ चलैछ।

आइ-काल्हि 23 दिसम्बर केँ दिन सभ सँ छोट होइछ। ओहि दिन सूर्य मूल नक्षत्र मे रहैत छथि। तकरा बाद उत्तरायण गति आरम्भ होइछ। कोनो समय अयन-परिवर्त्तन ओहि समय होइत छल, जखन सूर्य मघा मे रहैत छलाह। पूर्व फाल्गुनी सँ गति बदलि जाइत छल। आइ-काल्हि मघा मे सूर्य अगस्त मास मे रहैत छथि। मघाक बाद उत्तरायणक आरम्भ आइ सँ सतरह हजार (17000) वर्ष पहिने होइत छल।

भूगर्भशास्त्रक अनुसारें आइ सँ प्रायः पचीस-तीस हजार वर्ष पूर्व भारत मे अनेक भूगर्भिक उपद्रव भेल। हिमालयक स्थानपर समुद्र छल जतए हिमालय समुद्रमग्न छल। क्रमशः हिमालय ऊपर उठल, समुद्र हटि गेल, भूमि ऊपर आयल, भयानक भूकम्प भेल, शनैः शनैः भूमि स्थिर भेल आ पहाड़ो स्थिर भेल। ऋग्वेदहु मे एहि घटना सभक वर्णन अछि।

यः पृथिवी व्यर्यमाना भट्ठं हद् यः पर्वतान् प्रकुपित निरभ्यात।
यो अन्तरिक्षं विम मे वरीयो यो धामस्तस्मात् स बनास इन्द्रः।

एहि तरहें आधुनिक विद्वान सभक मत सँ ऋग्वेदक काल चारि हजार सँ ल' क' तीस हजार वर्ष धरिक मानल जाइछ आ भारतीय दृष्टि सँ 12, 05, 33, 063 वर्ष पूर्वक साक्षात ब्रह्मा सँ उद्भूत होमक मानल जाइछ।

ओहि ऋग्वेदक एकटा विशिष्ट मंत्र गायत्री थिक जे वेदत्रयी मे प्रतिष्ठित अछि। ऋग्वेदक 362-10म मंत्र मे ऋक् रूपसँ, सामवेदक उत्तरार्चिकक तेरहम अध्यायक तेसर खंडक तेसर मंत्र मे सामरूप सँ उपलब्ध अछि। एहि मंत्रक द्रष्टा ऋषि विश्वामित्र आ देवता सविता थिकाह, गायत्री छन्द मे ग्रथित होमक कारणे ई गायत्री नाम सँ विश्रुत भेल। शतपथब्राह्मण, तैत्तरीयारण्यक मे गायत्रीक खूब चर्चा अछि। उपनिषदहु मे गायत्रीक उपासनाक वर्णन अछि। छान्दोग्य उपनिषद् (3-12-1)क वचन थिक जे ई जे अछि से सब गायत्रिये थिक। गायत्री वा इदं सर्वम्। संस्कृत वाङ्मयक आदि कवि वाल्मीकि अपना रामायणक 24 सहस्र श्लोकक रचना गायत्रीहिक 24 वर्ण सँ कयलनि। वेदव्यास, कृष्णद्वैपायन सर्वोत्तम पुराण श्रीमद्भागवत मे गायत्रीक अद्भुत वर्णन कयने छथि।

सम्पूर्ण विश्वक मित्र, महान उदारतावादी आ नवीनतावादी विश्वामित्र परम्पराक महान विद्रोहीक रूप मे विख्यात छथि जे विभिन्न संस्कृतिक समन्वय स्थापित क' परम्पराक विरुद्ध एक नवीन सृष्टि कयलनि। हुनके गायत्री मंत्रक शब्द थिक प्रचोदयात्। प्रचोदयात् शब्दक व्युत्पत्ति भेल प्र + चुद् + विधिलिङ्। अर्थ भेल— प्रेरित करय, उत्तेजित करय, प्रवर्त्तित करय, आज्ञप्त करय, प्रेषित करय, नियमित करय आदि। तहिना कथा सभक ई संग्रह 'प्रचोदयात्' सर्गक पाठक केँ समवेत रूपें आगाँक हेतु प्रेरित ओ उत्तेजित करय।

[मि]

मित आ संयमित कथने कथा थिक। कारण जे आजुक कथा मे संवेदनात्मक स्तर आ वाग्मिता कम एवं चिन्तनक स्तर बेसी रहैछ। तें कथा बजैत अछि, कथाकार कम। तकर हेतु ई जे आजुक कथा सायास नहि, अनायास लिखल जा रहल अछि। एकर प्राचीन इतिहासक विकासक कथा नहि कहि हम आधुनिक कथाक सम्बन्ध मे संक्षेप मे ई कहि देमय चाहैत छी जे एकर वर्त्तमान स्वरूप केहन छैक। ('प्रचोदयात्' मे आधुनिके कथाक बाहुल्य अछि।) हमरा बुझने आजुक कथा केवल कथा थिक, आख्यायिका, गल्प वा आरो किछु कहब समीचीन नहि। आइ धरिक विकास-यात्रा मे कथा अपना केँ कल्पनाक पाश सँ बहुत अंश मे मुक्त क' जीवन केँ अधिक-सँ-अधिक निकट ल' अनने अछि। तें ओहि मे केवल आदर्श आ अध्यापकीय उपदेशात्मकते टा नहि अछि, अपितु आजुक जीवनक समस्त यथार्थ खाहे ओ

कथ्य हो वा अकथ्य, मने जकर शुक्ल आ कृष्ण दुनू पक्ष छैक—कथा मे अभिव्यक्त होइछ। नाक-भौंहु चढ़बू खाहे दुर छी दुर छी क' क' अपना परम्पराक चादरि झाड़ू, 'कथा' जीवनक एक-एक रंग केँ, एक-एक तथ्य केँ कहिये देत। देहक सौन्दर्य समष्टि रूपें छैक मुदा जखन ओकर विश्लेषण होइछ तँ रंग-बिरंगक कीटाणु, अस्थि, मज्जा, मासु, शोणित, मल, मूत्र, कफ, अम्लत्व, पित्त आदि असुन्दरक समूह सभ ओहि मे समवेत रहिते अछि। तहिना जीवनक छल, कपट, कुण्ठा, संत्रास, काम, अभाव, निराशा, कृत्रिमता, घृणा आदि जकरा कुत्सित कहैत छियैक सेहो तँ सत्ये थिक। आ जखन ई सत्य थिक तँ एकरा अभिव्यक्ति केँ अहाँ कोना अस्वीकार क' सकैत छियैक? हँ, एहि मे शर्त ई जे अहाँ कथाकार केँ नहि, कथा केँ जँ निरपेक्ष भ' क' कहबाक अवसर दियैक तँ कथाक वास्तविकता आ ओकरा स्वरूप केँ निकट सँ बूझि सकैत छी।

कथा मे घटना, चरित्र, मनोविज्ञान, वाद, वस्तु, व्यक्ति, स्थिति, गति, संवेदना, भावुकता, तर्क, अनुभूतिक प्रामाणिकता, सूक्ष्म विश्लेषण, स्थूल संप्रसारण, शिल्प, शैली, सामाजिकता, कलापक्ष, आदर्श कथ्यक उद्देश्य आ उपलब्धि आदि अनेक वस्तुक विश्लेषण परीक्षण होइछ, मुदा ई काज आलोचकक थिक।

कथाकार जँ एहि सँ प्रभावित भ' क' सायास लिखैत छथि तँ हमरा जनैत हुनका कथा मे दम कम रहैत छनि, हम बेसी। लारेंसक ई उक्ति एहि सन्दर्भ मे हमरा बड़ उपयुक्त बुझना जाइछ जे कथाक विश्वास करू, कथाकारक नहि।

आजुक कथा मे पात्रक अन्वेषण यथार्थक अन्वेषण अछि, पात्रक माध्यम सँ यथार्थक अभिव्यक्तिक। पहिने कथा कला-मूल्य केँ ल' क' लिखल जाइत छल, आब जीवनमूल्य ल' क' लिखल जाइछ। पहिने कथा फूसि छल, आब सत्य अछि। कोनो आलोचकक ई उक्ति एकदम यथार्थ अछि।

आइ घटनाक अभिप्राय आ प्रक्रियापर्यन्त बदलि गेल अछि। बाहरक अपेक्षें आजुक कथा मे घटना अन्तर मे घटय लागल अछि। तें घटना अनुभूतिक संवेदना सँ बूझल जा सकैछ ई आजुक कथाक एकटा पक्ष थिक। वस्तुतः आधुनिकता केँ एकटा प्रक्रियाक रूप मे स्वीकारब आब अनिवार्य अछि आ तथ्य ई थिक जे मैथिलीक कथा समकालीन आन-आन कथा जकाँ अपन कायाकल्प क' रहल अछि। ई परिवर्त्तन स्पष्ट आ साधारण अछि, एकरा अस्वीकारब कोनो अबोधहिक बूतें सम्भव। वास्तव मे जीवनक बदलैत परिवेश आ आयाम कथाविधा केँ एकदम बदलने जा रहल अछि। कारण ई जे 'कथा' जीवनक सब सँ निकट अछि। हिन्दीक ख्यातनामा कथाकार रमेश बक्षी तँ एतेक धरि कहने छथि जे कथाक अतिरिक्त

आरो किछु जीवन केँ नीक जकाँ अभिव्यक्त नहि क' सकैछ। हुनक कहब छनि जे—'उपन्यास मे छिड़िआयब अछि, निबन्ध मे प्रलाप, नाटक मे कृत्रिमता आ आलोचना मे आचार्यत्व।'

एकटा आआरो ई जे अहाँक हाथ मे जँ पुरनका चौखटि अछि तँ ताहि मे आजुक कथा केँ फिट करब कठिन। पुरनका मानदंडक आधार पर जँ आजुक कथाक मूल्य निर्धारण करब तँ ओ आरोपित आधार एकदिस ठाढ़ रहत आ आजुक कथा दोसर दिस अहाँक 'अ-बोध' पर ठहक्का मारिक' हँसैत रहत। तें एहि संग्रहक कथा सभ केँ (एहि मे पुरान आ नवीन दुहू ढबक कथा अछि) ई सब स्मरण राखिक' पढ़ने बेसी सौकर्य संभव।

[का] का वार्ता ?

की कहल गेल अछि से एकटा बात। ताहि प्रसंग यैह जे 'प्रचोदयात' मे सभ प्रकारक कथा अछि। सब खेबाक लोक लिखने छथि। तें संकलनक समस्त रचनाधर्मी, संवेदनात्मक, घटनाप्रधान, चिन्तनमूलक आ आधुनिक जीवन-बोधक गाम-घर सँ ल' क' नगर-जीवन धरिक एहि अभिव्यक्ति सब केँ हमर धन्यवाद।

एकटा आरो बात ई जे 'प्रचोदयात्' नामकरण स्वर्गीय राजकमल चौधरीक थिक जे ओ सुपौल सेमिनारक अवसरपर एकटा वार्तालाप मे प्रकट कयने छलाह जकरा कार्यान्वित कयलनि राँचीक साहित्यकार बन्धुलोकनि, हम केवल संवाद-संप्रसारक मात्र थिकहुँ। हुनका इच्छा केँ रूपायित कयनिहार तँ ई लोकनि छथि, तें पुनरपि धन्यवादास्पद छथि।

(प्रचोदयात् कथा संग्रहक भूमिका)

24 अगस्त 1969

सहरसा जिला ओ तकरा परिसर मे मैथिली साहित्य-सेवा

सहरसा जिलाक प्राचीन महत्ता

सहरसा जिला हेबनि मे बनल अछि। एहि सँ पहिने ई भागलपुर जिलाक अन्तर्गत छल। सरकारी प्रमाणानुसार भागलपुर जिला मे सर्वप्रथम 1845 ई. मे मधेपुरा सबडिवीजन आ 1870 ई. मे सुपौल सबडीविजन बनाओल गेल। तदुत्तर प्रशासन मे सुविधाक दृष्टिएँ सहरसा केँ 1944 ई. मे उपजिला बनाओल गेल आ 1-4-1954 केँ सहरसा केँ पूर्ण जिला घोषित कयल गेल। जिला बनलाक बाद सहरसा (सदर) सबडिवीजन बनल। एहि तरहें सम्प्रति सहरसा जिला मे मधेपुरा, सुपौल आ सहरसा ई तीन टा सबडिवीजन अछि। (आब सुपौल आ मधेपुरा एकटा स्वतंत्र जिला भ' गेल अछि—सं.)

सहरसा गजेटियर 1965 संस्करणक अनुसार एकर क्षेत्रफल 2343 वर्ग-मील अछि (हाल मे मुंगेर सँ कटि क' सहरसा मे सम्मिलित बख्तियारपुर थानाक उल्लेख एहि मे नहि अछि)। एकर जनसंख्या 1950 ई. क अनुसारें 13,08,197 उल्लिखित अछि जाहि मे हिन्दीभाषी, बंगलाभाषी, राजस्थानीभाषी, पंजाबीभाषी, नेपालीभाषी, संथालीभाषी आ अन्यान्य भाषाभाषीक विवरण अछि मुदा मैथिलीभाषीक पृथक उल्लेख नहि क' लिखित अछि जे मैथिलीभाषी केँ हिन्दी मे समाहित क' लेल गेल अछि। [द्रष्टव्य सहरसा गजेटियर, 1965 संस्करण, पृष्ठ—61]

1961क जनगणना मे तँ मैथिलीक यैह स्थिति छल, मुदा 1951 जनगणनाकाल मे श्री मैथिली समिति, सुपौलक प्रयासें आ मुख्यतः रामकृष्ण झा 'किसुन' तथा प्रो. बालगोविन्द झा 'व्यथित' एवं हिनके लोकनिक प्रेरणा सँ आरो किछु कार्यकर्त्ता लोकनि गाम-गाम घूमिक', पत्राचार क' तथा आन-आन द्वारा जनचेतना केँ जगयबाक चेष्टा सँ मैथिलीभाषीक संख्या 11,36,268 उल्लिखित भ' सकल।

जिलाक सम्पूर्ण जनसंख्या 17,23,566 अछि। ओना मैथिलीभाषीक इहो संख्या कम्मे अछि आ एहू खेप बहुतो संख्या हिन्दी-उर्दू आदि मे समाहित भ' गेल अछि। एहि कार्यक प्रतिक्रिया-स्वरूप हमरालोकनिक एहि तत्परता सँ तमसाक' सहरसा सँ प्रकाशित तत्कालीन 'कलाकार' नामक हिन्दी पत्रिका मे 'हिन्दीक हत्या' शीर्षक निबन्ध सेहो प्रकाशित भेल छल आ कतेको विरोध-वाद सहय पड़ल छल।

मिथिला आ मैथिलीक प्रसंग जखन कतहु चर्चा होइत छल तँ सहरसा केँ 'पुबारिपार' कहिक' एकर उपेक्षे कयल जाइत छल आ एम्हरूका साहित्यकारहुक बड़ उपेक्षा होइत रहल अछि; मुदा हेबनि मे मिथिला-मैथिलीक अनेक अधिकारी विद्वान ई मुक्त कण्ठें स्वीकार क' चुकल छथि जे मिथिलाक केन्द्र सहरसे थिक। एकर प्रथम घोषणा काञ्चीनाथझा 'किरण' सहरसा मे 1953 ई. मे भेल जिला-मैथिली-साहित्य-परिषदक अवसर पर कयलनि। एहिना मैथिली साहित्य संस्थान द्वारा सहरसा मे आयोजित 1964 क विद्यापति-स्मृति पर्वक अवसरपर आदरणीय रामानाथ बाबू कयलनि। पुनि भारत सेवक समाज द्वारा सुपौल मे आयोजित विद्यापति पर्वक अवसर पर 1967 ई. मे अपन अध्यक्ष-पदीय अभिभाषण मे पुन: रमानाथ बाबू घोषित कयलनि। एहिना डा. बालगोविन्द झा 'व्यथित' सेहो सुपौल, सहरसा, बीरपुर, निरमली आदि मे भेल अनेको आयोजनक अवसरपर एहि तथ्य केँ स्वीकार कयलनि। (ज्ञातव्य जे उपर्युक्त विद्वानलोकनि दरभंगा जिलाक निवासी थिकाह।)

सहरसा जिला प्राचीन कालहि सँ मिथिलाक एक महत्वपूर्ण भाग रहल अछि। 'मिथिला तत्व-विमर्श' (पृष्ठ-77) मे म.म. परमेश्वर झा वैयाकरण-केसरी मिथिलाक तीर्थस्थान सभक उल्लेख करैत श्रीउग्रतारा स्थानक प्रसंग लिखैत छथि जे 'भागलपुर जिलाक कबखंड प्रगन्ना मे बनगामक समीप महिषी गाममे गाम सँ बहार आग्नेय कोण मे पश्चिमाभिमुख मन्दिर अछि। ताहि मध्य एकजटा नीलसरस्वती अक्षोभ्य ऋषि सहित तारामूर्त्ति विराजित अछि।' आगाँ एहि क्रम मे लिखैत छथि (पृ.-79) 'एहि ठाम सँ किछु दूरपर चण्डीस्थान तथा (प्रगन्ना) निशंकपुर कूढ़ा मे चण्डी भगवती छथि, ओहो स्थान अतिप्रसिद्ध ओ उज्ज्वल अछि।'

एहिना सिंहेश्वर स्थानक प्रसंग लिखने छथि—'ई स्थान ग्राम सिंहेश्वरपुर प्रगन्ना निशंकपुर कूढ़ा भागलपुर जिलाक मधेपुरा सबडिवीजन सँ दुइ कोस उत्तर पड़आमय (सम्प्रति परवाने नामे ख्यात) तथा धसान नदीक संगम सँ पश्चिम भाग मे अछि।'

एहि प्रसंग विद्वानलोकनिक कथन छनि जे श्रुति-परम्परा सँ आबि रहल अछि जे उग्रतारा भगवतीक स्थापना महर्षि वशिष्ठ कयने छलाह आ सिहेंश्वर

(शृंगेश्वरनाथ) महादेवक स्थापना शृंगी ऋषि कयने छलाह, जकरा सम्बन्ध मे वराह पुराणक अन्तिम अध्यायक कथाक प्रमाणादि सेहो विद्वानलोकनि दैत छथि।

महिसीक प्राचीन नाम माहिष्मती थिक जतय विद्वद्वरेण्य प्रसिद्ध मीमांसक पण्डित मंडन मिश्र आ हुनक विदुषी पत्नी भारतीक निवास छलनि। आइयो (कोशीक उपद्रवक उपरान्तो) ओतए मंडन मिश्रक डीह तथा पनिभरनी बला इनारक अवशेष अछि जतय मण्डन मिश्रक पनिभरनी सँ शंकराचार्यक वार्तालाप भेल छलनि।

प. मण्डन मिश्रक अतिरिक्त द्वादश दर्शनक टीकाकार भामतीकार प्रसिद्ध वृद्ध वाचस्पति मिश्र सहरसे जिलाक रहनिहार छलाह। एहि सम्बन्ध मे 'मिथिला तत्व-विमर्श' (पृष्ठ 104) द्रष्टव्य। म.म. लिखने छथि जे कवि-कुलभूषण कैलासवादी चन्द्र (चन्ना) झाक तर्क छलन्हि जे द्वादश दर्शनक टीकाकार वृद्ध वाचस्पति मिश्रक निवास ओहि प्रान्त मे छलैन्ह। हुनक स्त्री भामतीक नामपर भामा ग्राम ओहिठाम अछि। जाहि नृग महाराजक आश्रित रहि भामती ग्रंथ बनौलन्हि से बड़गाम (उक्त कवीश्वरक मात्रिक) प्रान्त मे रहनि। भामती ग्रन्थक अन्त मे श्लोक—

नृपान्तराणां मनसाप्यगम्यां
भ्रूक्षेपमात्रेण चकार कीर्त्तिम्।
कार्त्तस्वरासार सुपूरितार्थ-
सार: स्वयं शास्त्रविचक्षणश्च।। 1।।
नृपेश्वरा यच्चरितानुकार-
मिच्छन्ति कर्त्तुं न च पारयन्ति।
तस्मिन् महीये महनीयकीर्त्तौ
श्रीमन्नृगेऽकारि मया निबन्ध:।। 2।।

नास्तिक षट्दर्शनपर जे हिनक टीका से तँ उपलब्ध नहि अछि परन्तु आस्तिक दर्शन मे जे ग्रन्थ उपलब्ध अछि तकर नामावली थिक—न्यायकणिका, तत्व-समीक्षा, तत्वविन्दु, न्यायवार्त्तिका, तात्पर्यटीका, सांख्यतत्वकौमुदी, योग-भाष्य-विवृति आ वेदान्त शारीरिक भाष्य पर भामती नामक व्याख्या। भामतीक टीकाकार वाचस्पति मिश्रक प्रसंग डा. न. कि. देवराज लिखित 'भारतीय दर्शनशास्त्र का इतिहास' (द्वि.सं., पृष्ठ 382) मे भामती केँ वाचस्पति मिश्रक अन्तिम कृति कहैत ओकरा प्रशंसा मे कहल गेल अछि जे अद्वैतवादक एकटा सम्प्रदाये भामती नाम सँ अतिप्रसिद्ध अछि। पञ्जी प्रबन्ध सँ पूर्वहि हुनक प्रादुर्भाव भेल छलनि तें मूल गोत्रादिक ठीक पता लागब असम्भव, परन्तु शंकराचार्य (जनिक जन्म सं. 845 मो. शाके 710 मे भेल छलनि, डा. देवराज लिखित भारतीय दर्शनशास्त्रक इतिहास, द्वि. सं., पृ. 378

मे शंकराचार्यक समय 782-820 ई. मानल गेल अछि) नवीन थिकाह, वेदान्त शंकरभाष्य पर वाचस्पतिक भामती टीका छनि। हिनक समय डाक्टर जयकान्त मिश्रक इतिहास (भाग-1, पृ. 99)क अनुसारें नवम् शताब्दी छलनि।

एहिठाम ई लिखब आवश्यक जे एकटा दोसर महामहोपाध्याय वाचस्पति मिश्र पलिबाड़ समौल मूलक ब्राह्मण छलाह से वृद्ध वाचस्पति सँ भिन्न छलाह (द्रष्टव्य मिथिला-तत्व-विमर्श, पृ. 193)। डा. जयकान्त मिश्रक इतिहास (भाग-1, पृष्ठ-147)क अनुसारें ई विद्यापतिक समकालीन छलाह। एहि प्रकारें ई चौदहम-पन्द्रहम शताब्दी मे भेल छथि।

वृद्ध वाचस्पति मिश्रक प्रसंग आदरणीय रमानाथ झाक प्रबन्ध संग्रहक कवीश्वर चन्दा झा नामक निबन्धक किछु अंश हम एत' उद्धृत कय रहल छी। (पृ. 194) 'एहि प्रसंग एक गोट आओर लेख जे हमरा भेटल अछि से अपूर्व महत्वक अछि। भामतीकार वाचस्पति मिश्र दार्शनिक, जनिका वृद्ध वाचस्पति कहैत छियैन्ह मैथिल छलाह से सब मानैत छी परन्तु पञ्जीप्रबन्ध सँ बहुत प्राचीन थिकाह तें ने हुनक अपन परिचय भेटैत अछि नहि हुनक आश्रयदाता महाराज नृगक कोनो पता अछि। (पञ्जी-प्रबन्ध महाराज हरसिंहदेव जे सन् 1295 ई. मे सिंहासनासीन भेल छलाह, हुनक आज्ञा सँ पं. रघुदेव झाक (?) बनाओल थिक। (द्रष्टव्य मिथिला-तत्व-विमर्श, पृ. सं.—121)। हिनका प्रसंग कवीश्वरक लेख एकगोट 'पोथा' मे एहि रूपें 'बड़गाम'क परिचयक क्रम मे भेटल अछि—'कपरौती, प्रगन्ना निशंकपुर कूढा श्री चण्डी देवी सँ डेढ़ कोस पूब भाग बड़गाम—

कुण्डलिया

बरसम, बरइठ, बसनही, बेलइठ ओ बड़गाम
बलिया, बड़िबन, बथनहा श्री वाचस्पतिधाम
श्री वाचस्पति धाम पाठशाला अगद्वारी
निकट बोआरि बुधाम नाम यह गाम है भारी
गुप्त नृपतिको राजकाज यज्ञादिक सप्तम
भनत चन्द्र 'नृग' भूप भये कलि मे श्रीवर सम।

अगद्वारी एक बहुत उच्च डीह मौजे बड़गाम सँ उत्तर ऐशानकोण बसनही सँ नैर्ऋत कोण मे अछि। पूरा कोस नहि होयत सैह किंवदन्ती अछि जे वृद्ध वाचस्पतिक पाठशाला थिक। ओ वाचस्पति राजा नृगक समय मे छलाह जे राजा नृग गुप्त वैद्यवंशी छलाह।' ...कवीश्वर गाम सबहिक परिचय एहिना कुण्डलिया मे लिखय

चाहैत छलाह जाहि मे नाना मैथिल-मनीषीक परिचय ख्यापित करितथि। ...स्थानक परिचयक हेतु तत्प्रान्तीय ग्रामावलीक उल्लेख करैत छथि जाहि सँ स्पष्ट अछि जे ओ सब गाम अपना आँखि सँ देखने छलाह, नहि तँ एहेन परिचय नहि द' सकितथि।

एही क्रम मे हम एहू दिस संकेत करब आवश्यक बुझैत छी जे मैथिलीक ख्यातनामा कवि, मिथिलाक सर्वप्रथम गवेषणाकार (जे वस्तुतः अपूर्व अनुसन्धानक कार्य सब कयने छथि) कवीश्वर चन्दाझाक मातृक सहरसे जिलाक बड़गाम छलनि। स्वर्गीय राजपंडित बलदेव मिश्र 'चन्द्रपद्यावली' क प्राक्कथन मे लिखने छथि— 'कवीश्वरक जन्म 1830 ई. मे पिण्डारुछ ग्राममध्य भेलैन्हि। हिनक पितृदेव म.म. भोला झा पाँच वर्ष आरम्भ होइतहिँ अक्षरारम्भादिक आरम्भ स्वयं कराय प्राणप्रिय पुत्ररत्न केँ बड़गाम पठाय देलथिन। ओ गाम कवीश्वर मातृक छलैन्हि। बड़गाम मिथिला मध्य प्रतिष्ठित समृद्धिशाली विद्वत-मंडलमंडित ग्राम मे परिमार्जित छल। कवीश्वर अपन संस्कारनुकूल सुन्दर स्थान पाबि प्रथम कक्षा मे प्रवेश करैत उपनयनोत्तर पाँच-सात वर्षाभ्यन्तरहि व्याकरण समाप्त कयलैन्हि। लिखबाक तात्पर्य ई जे ओहि कालक पठन-पाठनक प्रथानुसार जे कोनो पठनीय शास्त्र छलन्हि से पूर्ण कयलैन्हि। कवीश्वरक मात्रिक सँ कृतविद्ये भए अपन पितृकुल पिण्डारुछ अयलाह।'

एहि सभक प्रसंग हम जहाँधरि ज्ञात क' सकल छी तदनुसार कपरौती बड़गाम सँ चारि मील पूब छैक जतए चण्डिका स्थान छैक। ओना ओहिठाम विख्यात गाम छैक बराटपुर जतए राजाक डीह छैक। सहरसा गजेटियर पृष्ठ 16क अनुसार महाभारत सभापर्वक एक कथनानुसार (दिग्विजय पर्व द्रष्टव्य) बराटपुर मे कोशी नदीक एहि पार पाण्डुपुत्र महाबली भीम आयल छलाह। भ' सकैछ राजा नृग ओतहि रहैत होथि। ओहिठामक खोदाइ सँ 24 सेरक एकटा (घोड़ाक) लगाम भेटल अछि। बड़गाम सँ 3 मील उत्तर दुर्गापुर छैक जतए राजाक डीह छैक आ बड़गाम सँ 8 मील पश्चिम सोनवर्षा राज विख्यात राजवंशीय स्थान थिक। ओना वृद्ध वाचस्पति मिश्र अपना न्यायकणिका मे अपना राजाकेँ राजा आदिसूरक आश्रित लिखने छथि जे नवम् शती मे भेल छलाह। (द्रष्टव्य सहरसा गजेटियर पृष्ठ 24 तथा एस. एन. सिंहक 'हिस्ट्री ऑफ तिरहुत'।) मुरलीगंज उच्चतर मा. विद्यालयक प्राचार्य धनेश्वर झा 'किशोर' जे बड़गामक रहनिहार थिकाह, हुनका सँ ज्ञात भेल अछि जे 'अगद्वारी' एक उच्चडीह एखनहुँ अछि। कहल जाइछ जे प्राचीन काल मे ई ब्राह्मणलोकनिक एक बस्ती छल। हमरा लोकनिक खेतक रूप मे ऊँचका स्थान एखनहुँ अधिकारे मे अछि। भ' सकैछ वृद्ध वाचस्पति ओहिठामक रहनिहार होथि। ओना ओहि प्रान्त मे बड़गाम, बोआरी, बसनही, बरीबन, बथनाहा, ई सभ ब्राह्मण आ क्षत्रिय लोकनिक

बस्ती थिकनि। महामहोपाध्याय परमेश्वर झा जे मिथिला तत्व-विमर्श (पृष्ठ 104) मे भामतीक नामपर भामा ग्रामक प्रसंग लिखने छथि से संभवत: बदलिक' आब पामा नाम सँ प्रसिद्ध अछि। किशोर जीक सूचनानुसार एकटा 'पामा' बड़गाम सँ 4 मील उत्तर आ दोसर 'पामा गुदरामा' नाम सँ बड़गाम सँ 4 मील दक्षिण अछि। सहरसा गजेटियर पृ. 24क अनुसार उदयनाचार्य सेहो मधेपुरा सबडिवीजनक 'करियम्मा' गामक निवासी छलाह। एकर पुष्टि 'हिस्ट्री ऑफ तिरहुत' सेहो करैत अछि। ई सब अनुसन्धानक अपेक्षा राखैत अछि।

हमरा उपर्युक्त उद्धरण सभक उल्लेख करक तात्पर्य केवल ई अछि जे आदरणीय रमानाथ बाबू, श्रद्धेय किरण जी आ सुहृद्वर डाक्टर बालगोविंद बाबू जे सहरसाक सम्बन्ध मे समय-समयपर घोषणा कयने छथि से सरिपहुँ तथ्यपूर्ण आ यथार्थ अछि।

प्राचीन मिथिला सेवी

सहरसा जिला मे उपर्युक्त महापुरुष सभक अतिरिक्त परमादरणीय महापुरुष योगी लक्ष्मीनाथ गोस्वामी भ' गेल छथि जनिक जन्म तिथि आदरणीय पं. छेदी झा 'द्विजवर' 1793 तथा निधन तिथि 1873 मानने छथिन। डा. बालगोविन्द झा अपना कविदर्शन मे हुनक जन्म तिथि 1787 ई. आ निधन तिथि 5 दिसम्बर 1872 मानने छथिन। लक्ष्मीनाथ गोस्वामीक जन्म सहरसा जिलाक सुपौल सबडिवीजनक परसरमा नामक गाम मे भेल छलनि। हिनक पिताक नाम पं. बच्चा झा छलनि। ज्योतिष, वेदान्त आदिक अध्ययन क' किछु दिन गृहस्थाश्रम मे रहि, वीतराग योगी बनि ई गृहत्याग क' देलनि। हिनक कुटी परसरमा, बनगाम, लखनौर, दुबही, फटिकी, महिनाथपुर मे अछि। जतय एखनहुँ हुनक अनेक चमत्कार सभक कथा सभ सुनबा मे अबैत अछि आ आइयो उक्त कुटी सब मे ससम्मान पूजादि होइत अछि।

गोसांइजी भक्त छलाह। ओहिकालक प्रचलित भाषा मे (ब्रजभाषामिश्रित हिन्दी) तँ लिखबे कयलनि, मैथिली मे सेहो बहुत भजन लिखलनि। लक्ष्मीनाथ आ लक्ष्मीपति दुहू नाम सँ हिनक लिखल मैथिली गीत सभ भेटैत अछि 'हे हर हमर करहु प्रतिपाल, सब विधि बझलहुँ माया जाल।' ई नचारी हुनक बड़ प्रसिद्ध छनि जाहि मे लक्ष्मीपति भनिता छनि।

कविशेखर बदरीनाथ झा संकलित गीत रत्नावली मे हिनक पद सबहक उल्लेख अछि। पंडित द्विजवर जीक सत्प्रयास सँ गोस्वामी लक्ष्मीनाथक एकटा वृहतजीवनी 'गोस्वामी लक्ष्मीनाथ कृतानुसन्धान समिति'क तत्वावधान मे 1959 मे प्रकाशित

भेल अछि जाहि मे अन्त मे हिनक किछु चुनल 34 टा भजन सब सेहो संकलित अछि। हिनक किछु रचना सबहक संकलन द्विजवर जी 'विवेक पंचरत्न' नाम सँ कयने छथि जे लक्ष्मीनाथ ग्रन्थावलीक द्वितीय पुष्प थिक। एहि मे गोस्वामी जीक— प्रश्नोत्तरी-माला, अकारादि-दोहावली, भाषा-तत्वबोध, रामरत्नावली, गुरु चौबीसी ई पाँच टा ग्रन्थ संकलित अछि। एकरा अतिरिक्त गोस्वामीजीक हिन्दी मैथिलीक सवा सात सय गीत केँ गोस्वामी गीतावली नाम सँ द्विजवर जी संकलित कयने छथि। जे अमुद्रित अछि।

सहरसा गजेटियर पृष्ठ (64, 65) मे लक्ष्मीनाथक रचनाक उल्लेख एना अछि— श्रीकृष्ण रत्नावली (भगवद् गीताक अनुवाद), रामगीतावली (भजन मे राम चरित), श्रीकृष्ण गीतावली (भजन मे कृष्णक चरित्र), भाषा-तत्वबोध, शंकराचार्यक तत्व-बोधक अनुवाद, प्रश्नोत्तरी (शंकराचार्यक प्रश्नोत्तरीक अनुवाद), रामरत्नावली, गुरुपचीसी, अक्षर चौंतीसा, एहि रचना सब मे बेसी मैथिली अछि, किछु-किछु हिन्दी सेहो।

गोस्वामी लक्ष्मीनाथक समकालीन पं. छत्रनाथ झा नामक एकटा कवि बनगाम मे छलाह जनिक जन्म अनुमानत: 1807 ई. मे भेल छलनि। सहरसा गजेटियरक अनुसार 1775 सँ 1840 हिनक काल मानल गेल अछि। हिनक बनाओल मैथिलीक बहुत भजन गीतादि भेटैत अछि। हिनक रचना सभक पृथक-पृथक संकलन द्विजवरजी निम्नांकित नामे कयने छथि—हनुमान रावण संवाद, द्रोपदीक गोहारि, गोपी उद्धव-संवाद, सुदामा चरित्र, वनग्रामवन, सहरसा गजेटियरक अनुसार हिनक अप्रकाशित रचना छनि—लोकगीत संग्रह, समस्या पूर्त्तिसंग्रह तथा सवैया वन्दन।

मधेपुरा सबडिवीजनक मुरहो नामक गाम मे मैथिलीक प्रख्यात कवि पं. युदनाथ झा 'यदुवर' भेल छलाह जनिक जन्म आदरणीय रमानाथ बाबूक 'मैथिलीक नवीन गीतक' (संकलन)क अनुसारें 1888 ई. मे आ निधन 1935 मे भेलनि। ई मैथिलीक अनन्य सेवक आ एक क्रान्तिकारी कवि छलाह। यदुवरजी मे लोक-चेतना तथा राष्ट्रीय भावना बड़ उग्र रूप मे छल। तें पुरान परम्परा केँ तोड़ि राष्ट्रीय काव्यक परम्पराक सूत्रपात करक संगहि संगीतक राग-पाश सँ मैथिली कविता केँ सर्वप्रथम यदुवरजी मुक्त कयने छलाह। (भुवनजी केँ जे एकर प्रथम श्रेय देल जाइछ से हमरा बुझने अयुक्त थिक।)

हुनक जन्म 1907 मे आ निधन 1945 ई. मे भेल छनि। [प्रो. मेधातिथिक मैथिली साहित्य : प्रमुख कवि पृ. 51, डा. बालगोविन्द झा 'व्यथित' क मैथिली कविदर्शन पृ. 51 द्रष्टव्य] तें एकर श्रेय यदुवरेजी केँ छनि आ तकर विकास

नि:सन्देह भुवनजी कयलनि। यदुवरजीक रचना तत्कालीन 'मिथिला, श्रीमैथिली, मिथिलामोद आदि मे प्रकाशित अछि। हिनक प्रकाशित पुस्तक छनि—मैथिली गीताञ्जलि, वासन्ती विलास। हिनक कविता सभक संग्रह 'मैथिली नवीन गीत', प्रो. उमेश मिश्रक 'मैथिली पद्य संग्रह' आदि मे भेल अछि।

हिनका बाद सहरसा जिलाक प्राचीन साहित्य सेवी मे स्वर्गीय पुलकित लालदास जी 'मधुर'क नाम बड़े आदर सँ लेल जाइत अछि। मैथिली नवीन गीतक अनुसारें हिनक जन्म 1893 एवं निधन 1943 ई. मे भेल। हिनक जन्म मधेपुरा सबडिवीजनक रजनी बभनगामा नामक गाम मे भेल छल। अपना युगक ई सुप्रसिद्ध गद्य एवं पद्यक साहित्यकार छलाह। हिनक लिखल 'समाचार पत्र' 'इतिहास महत्व गद्य' तथा 'मातृवन्दना' पद्य आदि कतिपय संग्रह मे प्रकाशित अछि। ई मुख्यत: मिथिला आ मैथिली विषयक उद्‌बोधनात्मक रचना करैत छलाह।

एहि काल मे पँचगछिया ड्योढ़ीक स्वर्गीय रामबहादुर बाबू, रुद्रनारायण सिंह जीक बहुत रास राग-रागिनी तालसुर मे बान्हल मैथिलीक रचना सब सेहो भेटैत अछि।

मैथिली-साहित्यक अद्‌भुत सेवक ज्योतिषाचार्य बलदेव मिश्र बनगाम निवासी थिकाह जनिक जन्म सहरसा गजेटियरक अनुसार 1889 मे भेल। हिनक मैथिली सेवा सँ मैथिली संसार नीक जकाँ परिचित अछि। हिनक लिखल—कविवर चन्दा झा, संस्कृति, रामायण शिक्षा, गपसप विवेक, समाज, भारत शिक्षा आदि मैथिलीक महत्वपूर्ण ग्रन्थ-रत्न प्रकाशित अछि। संस्कृत मे मैथिल विद्वानक कृतित्व, मैथिली साहित्य सेवी लोकनिक संस्मरण, कतिपय जीवनी-ग्रन्थ, विद्यापतिक समालोचना आदि मैथिलीक अमुद्रित ग्रन्थ छनि। एकर अतिरिक्त एखनहुँ हिनक रचना सब पत्र-पत्रिका सब मे प्रकाशित होइत रहैत अछि। प्रो. मायानन्द मिश्र सम्पादित पटना सँ प्रकाशित 'अभिव्यञ्जना' 1960 क प्रथम अंक मे ज्योतिषाचार्य जी अपन मैथिली सेवाक प्रसंग लिखने छथि जे मैथिली साहित्यक संग हमर सम्बन्ध 1911 सँ आरम्भ भेल। हुनक सर्वप्रथम लेख 1911 मे महिषी मे भेल मैथिल महासभा प्रसंगक 'मिथिलामोद' मे छपल छलनि। 'मोद' मे ई. 1911 सँ 1914 धरि लिखैत रहलाह।

एहि जिलाक अद्‌भुत मैथिली-सेवी परम आदरणीय पंडित छेदी झा 'द्विजवर' सहरसा सबडिवीजनक (धर्ममूला नदीक तटपर) बनगामक निवासी छथि। हिनक जन्म 1892 ई. मे भेलनि। एहि वृद्ध महापुरुषक समक्ष प्रत्येक साहित्यकार नतमस्तक भ' जाइत छथि। भारतीय स्वातंत्र्य-संग्रामक निर्भीक सेनानी, त्याग-तपस्याक प्रतिमूर्त्ति, स्वाध्यायनिरत, स्वाभिमानी लब्धधौत प्रतिष्ठ पंडित द्विजवर जीक साहित्य

साधना अप्रतिम अछि। महाकवि द्विजवर जी केँ बहुमुखी प्रतिभा प्राप्त छनि। हिनक संस्कृत, मैथिली, हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी पाँचो भाषा मे दू दूटा, उर्दू मे दू टा एवं अंग्रेजी मे एकटा संकलन छनि। मैथिली मे हिनक सेवा सर्वाधिक स्तुत्य अछि। हिनक रचना प्रथम 1910-11 क मिहिर मे 'मिथिला भाषा कुठार' नामक गद्य तथा प्रथम कविता मोद मे 'नरसिंह पद्यावली' नाम सँ एवं प्रथम पुस्तक 'कोइलीदूती' 1923 मे प्रकाशित भेल छल। मैथिली भाषा मे हिनक लिखल 'कोइलीदूती' (1923), द्विजवर सप्तसती (1955), प्रकाशित छनि। आ निम्नलिखित ग्रन्थ अप्रकाशित छनि—'उर्मिला' (उपन्यास), स्वानुभूति' (पद्य), 'साहित्य-शतदल' (पद्य), 'मैथिली गीत कुसुम' (पद्य), 'नरसिंह पद्यावली' (पद्य), 'नन्दी विनोद' (पद्य), 'अमर संगीत' (संगीतात्मक आध्यात्मिक पद रागतरंगिणीक शैलीमे), मैथिली व्याकरण (गद्य), सीतायन (महाकाव्य) आदि। हिनक अन्यान्य संकलन ग्रन्थक चर्चा पूर्वहु भ' चुकल अछि।

ओना तँ हिनक सब रचना एकपर एक अछि, मुदा 'सीतायन' महाकाव्य मैथिली साहित्यक एकगोट अद्‌भुत् कृति थिक। एहि मे 27 टा सर्ग अछि, प्राय: चारि हजार पद्य मे ई सम्पन्न भेल अछि। जाहि मे 35 प्रकारक छन्दक प्रयोग कयल गेल अछि। एहि महाकाव्य मे (उपेक्षित) सर्गक (विभिन्न रामकथाक काव्य सब मे राम केँ महत्त्व देल गेल अछि आ सीता प्रायश: उपेक्षिते रहलीह अछि, मने तकरे कड़गर उत्तर जकाँ) आदर्श वैशिष्ट्य आ शास्त्रानुमोदित सप्रयाण महिमाक वर्णन मिथिलाक संस्कृतिक अनुकूल भेल अछि। नि:सन्देह 'सीतायन' द्विजवरजीक प्रगाढ़ पांडित्य, स्वाध्याय आ श्लाघ्य काव्य प्रतिभाक अवदान थिक। सम्प्रति ई कोश लेखन कार्य मे संलग्न छथि।

सुपौल सबडिवीजनक जनार्दनपुर भलुआही ग्रामक रहनिहार स्वर्गीय बाबू अच्युतानन्द दत्तजीक मैथिली सेवा सँ मैथिली जगत नीक जकाँ परिचित अछि। हिनक जन्म 1902 मे तथा निधन 1944 मे भेलनि। तत्कालीन पत्र-पत्रिका मे हिनक अनेक गद्य-पद्य रचना प्रकाशित भेल अछि। हिनक लिखल (रघुवंशक मैथिली अनुवाद) 'रघुवंश' सँ के साहित्यकार परिचित तथा प्रभावित नहि छथि? हिनक अप्रकाशित ग्रन्थ सब अछि हरिश्चन्द्र, पातिव्रत्य महिमा, महाभारत, द्रोण एवं कर्ण (खंड काव्य) आदि।

तहिना हिनक अनुज स्वर्गीय बाबू परमानन्द दत्त परमार्थीक जन्म 1907 ई. मे भेल छलनि। इहो तत्कालीन पत्र-पत्रिका मे अनेक गद्य-पद्य लिखलनि। हिनक प्रकाशित ग्रन्थ 'मेघदूत' अछि आ अप्रकाशित श्रीकृष्ण जन्मक सम्बन्ध आदि।

सुपौल सबडिवीजनक डुमरी गामक निवासी पंडित श्रीरासबिहारी लाल दास साहित्याचार्य, जे सम्प्रति हरावत राज उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मे अध्यापक छथि, मैथिली साहित्यक साधना मे अनवरत लागल रहैत छथि। हिनक विशेष उल्लेखनीय 'पवनदूत' काव्य छनि जे अप्रकाशित छनि। एकर अतिरिक्त आओर अनेक रचना ई कयने छथि।

एहि सबडिवीजनक गोसपुर ग्रामक निवासी स्वर्गीय पंडित त्रिलोकनाथ मिश्रक मैथिली सेवा स्तुत्य अछि। हिनक निधन 16 फरवरी 1960 मे भ' गेलनि। ई क्रमशः गोसपुर, सुपौल, बरेली, अमृतसर (13-14 ई.) बीकानेर (28-29 ई.) लोहना आ दरभंगा मे रहिक' संस्कृत साहित्यक विश्रुत सेवाक संगहि मैथिलीक विशिष्ट सेवा कयलनि। मैथिली मे हिनक लिखल जीमूतवाहन तथा नागानन्द (नाटक) प्रकाशित अछि आ रागतरंगिनीक परम्परा मे लिखित 'सरस्वती' नामक पुस्तक 1927 मे प्रकाशित भेल छलनि जाहि मे संस्कृत, हिन्दी तथा मैथिलीक सत्तरि टा पद छनि।

एही सबडिवीजन गणपतगंज मे जयनारायण मल्लिकक जन्म 23-1-1913 ई. मे भेलनि। ई 'मिथिला' युग सँ ल' क' 'विभूति' युग धरि बराबरि लिखैत रहलाह। हिनक कविता मे छायावाद एवं रहस्यवादक स्पष्ट प्रभाव देखबा मे अबैत अछि। अनेक संग्रह सब मे हिनक रचना संगृहीत अछि।

स्वर्गीय मैथिली सेवी लोकनि मे सर्वविख्यात (सुपौल सबडिवीजनक सोल्हनीक) जगदीश कवि छथि जनिक बनाओल अनेक मैथिली ग्रन्थ सब मुदित ओ अमुद्रित अछि। हिनका राष्ट्रभाषा परिषद, बिहार दिस सँ वयोवृद्ध साहित्यकार पुरस्कार सेहो भेटल छलनि।

एहिना सहरसा सबडिवीजनक पटौरी गामक स्वर्गीय सुचर दास मैथिली साहित्य-सेवी छलाह, जनिक लिखल मैथिलीक पद सब प्राप्त छनि। एहिना ओही गामक नूनूजीक एक सय सँ अधिक मैथिलीक भजन छनि। सुन्दरलाल दासजीक गीत सब एखनहुँ प्रचलित अछि, 19म शतीक ईश्वरदत्त दासक गीत किछु फुटकर पद्य सब छनि आ हिनक किछु ग्रन्थक पांडुलिपियो प्राप्त छनि। बिहरा गामक बाबू रामधारी सिंहक पराती, नचारी आदि भजन बनाओल छनि। सुपौल सबडिवीजनक कर्णपुर निवासी पंडित रुद्रानन्द मिश्र पंजीकारक जन्म 1908 ई. आ निधन 17 फरवरी 1968 केँ भेलनि। हिनक लिखल 'महादेवक विवाह' अभिनव कुमार सम्भवक उपनाम सँ (खंड काव्य) 1957 मे प्रकाशित भेल छनि।

बनगामक स्वर्गीय प्रेमनाथ झा सेहो मैथिलीक बहुतरास पद्य रचना कयने

छथि। ओहि गामक स्व. भूपनारायण शर्माजीक सेहो बहुत मैथिली रचना भेटैत अछि। सोल्हनी (सुपौल) क पंडित योगेन्द्रनाथ झाक मैथिली रचना सब बहुतरास प्राप्त अछि।

शाह आलमनगरक अनेक कवि लोकनिक, जे प्राय: साम्प्रतिक विद्याकर कविजीक वंश मे भेल छथि, हुनकालोकनिक मैथिली रचना सब भेटैत अछि। चैनपुर गामक पं. गंगाधर मिश्रक सुदामा चरित्र, सुकन्योपाख्यान आ कोनो एकटा 'छन्दग्रन्थ' प्रकाशित छनि से ज्ञात भेल अछि।

महिषी (सहरसा)क ख्यातनामा साहित्यकार स्व. मनीन्द्रनारायण चौधरी राजकमल चौधरीक नाम सँ मैथिलीक अनन्य आ विश्रुत सेवा कयलनि अछि। हिनक जन्म 13 दिसम्बर 1929 आ निधन अल्पवयसहि मे 19 जून 1967 केँ भ' गेलनि। हिनक लिखल स्वरगन्धा (कविता), आदिकथा (उपन्यास), कथापराग (कथासंकलन), आन्दोलन (उपन्यास) आदि प्रकाशित अछि। हुनक बहुसंख्यक कथा कविता सब वैदेही, मिहिर, दर्शन आदि अनेक पत्रिका मे प्रकाशित भेल जे मैथिली कविता-जगतहि जकाँ कथा-जगतहु मे आन्दोलन क' देलक। हिनक लिखल बहुतो कथा, कवितादि अप्रकाशित अछि।

आधुनिक मैथिली सेवी

जीवित मैथिली-सेवी लोकनि मे उल्लेखनीय साहित्यकार छथि पंचगछियाक पंडित योगेश्वर झा (अध्यापक उच्चतर मा. वि., मधेपुरा) जनिक 'आर्या' शतकुत्रय प्राय: मैथिली मे आर्यासन कठिन छन्द मे लिखल पहिल अपूर्व ग्रन्थ-रत्न अछि। एकरा अतिरिक्त 'कमरथुआ पाथेय' नामक दोसरो ग्रन्थ हिनक प्रकाशित छनि, संस्कृत, हिन्दी, मैथिली मे अव्याहत रचना कयनिहार पंडितजीक अनेक मैथिली ग्रन्थ अमुद्रित अछि।

सुपौल सबडिवीजनक रसुआर ग्रामक रहनिहार राजेश्वर झाक कन्दर्पी घाट (नाटक), शास्त्रार्थ (नाटक), विद्यापति (नाटक), एकादशी (कथा), धर्मव्याधकथा (कथा), तथा उर्वशी (अनुसन्धानपूर्ण कथा) प्रकाशित छनि आ एकर अतिरिक्त अनेक अमुद्रित ग्रन्थ छनि।

बभनगामा (सुपौल) क प्रो. हितनारायण झा (जन्म 1913-14) क लिखल कवीश्वर चन्दा झा ओ वर्ड्सवर्थक प्रकृतिप्रेम, दिग्दर्शन, गद्य पारिजात, मैथिली गद्य पुष्पांजलि, परिमल, साहित्यिक निबन्धावली, गद्य-सौरभ आदि ग्रन्थ प्रकाशित अछि।

मधेपुराक प्रो. राधाकृष्ण चौधरी मिथिलाक वर्त्तमानकालिक ख्यातनामा इतिहासकार छथि। साहित्य अकादेमीक परामर्शदात्री समितिक सदस्य चौधरीक जन्म 15-2-1924 मे भेलनि। हिनका प्रथम रचना 1941 मिहिर मे 'एकर उत्तरदायी के' (कन्यादानक आलोचना) प्रकाशित भेल छलनि। तकरा बाद सँ बटुक, मिहिर, दर्शन, अभिव्यञ्जना, आखर आदि मे बरोबरि लिखैत रहलाह अछि। हिनक प्रकाशित ग्रन्थ सब अछि शारान्तिधा (दार्शनिक गद्यग्रन्थ), मैथिली साहित्यक निबन्धावली (आलोचना), राज्याभिषेक, नान्यदेवक दरबार (नाटक), मिथिलाक राजनीतिक इतिहास, मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास। अप्रकाशित ग्रन्थ सभ छनि—धम्मपदक मैथिली गद्यानुवाद, कुसुमावलि, नीलकमल, विचार-विमर्श, अपन डायरी आदि।

बभनगामा (सुपौल) क श्री धनुक्षेत्र झा (जन्म 1917) गद्यप्रबन्ध, ऋतुराज, बसन्त, वैदिक ऋषि तथा हुनक रचना नामक अप्रकाशित तथा मिथिला मैथिली (पद्य) प्रकाशित ग्रन्थक रचयिता छथि आ एखनहुँ लिखि रहल छथि।

सुपौल सबडिवीजनक सुपौल ग्रामवासी ख्यातनामा साहित्यकार रामकृष्ण झा 'किसुन' क जन्म 1 जनवरी 1923 ई. मे भेलनि। हिन्दीक कतिपय कविता पुस्तकक रचनाक बाद श्री मधुपजीक प्रेरणा सँ ई मैथिली क्षेत्र मे अयलाह। हिनक लिखल आत्मनेपद (बहुचर्चित कविता संग्रह) 1963 मे प्रकाशित भेलनि। ई सम्प्रति नवलेखनक व्याख्याता नाम सँ मैथिली जगत मे प्रसिद्ध छथि।

हिनक गद्य-पद्य आदिक संकलन विद्यापतिक देशमे, मैथिली नवीन गीत, मैथिली साहित्य संग्रह, कविता कुसुम, कथाकुञ्ज, परिमल, टटका गद्य, गल्पसुधा, पद्यप्रसून, मैथिली संग्रह आदि मे संगृहीत अछि।

हिनक रचना सभक तथा मैथिली सेवा सभक उल्लेख डा. बालगोविन्द झा 'व्यथित' क मैथिली साहित्यक इतिहास आ हुनक शोध ग्रन्थ मैथिली साहित्यक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि मे विशदरूपें कयल गेल अछि।

हिनक प्रथम मैथिली रचना 1945 मे मिहिर मे प्रकाशित भेलनि, तकरा बाद सँ मिहिर, दर्शन, वैदेही, अभिव्यञ्जना, आखर आदि पत्र-पत्रिका मे बरोबरि लिखैत रहलाह अछि।

कर्णपुर (सुपौल) क निवासी निशिकान्त मिश्रक जन्म 1925 मे भेलनि जनिक 'देशगीत', 'बरजोरी' ई दू टा कविताक ग्रन्थ प्रकाशित अछि आ 'चंडाल चौखरी' अमुद्रित ग्रन्थ छनि।

बनैनियाँ (सुपौल) क निवासी प्रो. मायानन्द मिश्र (जन्म 1934) मैथिली जगत मे अपन कविता, कथा, निबन्ध, ओ संपादन-कलाक हेतु सुप्रसिद्ध छथि।

हिनक लिखल सर्वप्रथम प्रकाशित ग्रन्थ (नागेश्वर कला मंदिर, सुपौल सँ प्रकाशित) भाङक लोटा (हास्यगल्प संग्रह) थिक। तकरा बाद 'खोंता आ चिड़ै' (उपन्यास) 'बिहाड़ि पात पाथर' (उपन्यास), 'आगि मोम पाथर' (कथासंग्रह), दिशान्तर (नव कविता) मैथिली गद्य संग्रह (संकलन) प्रकाशित आ अनेक अप्रकाशित ग्रन्थ छनि। ई 'अभिव्यञ्जना' नामक मैथिलीक उच्च कोटिक पत्रिका अपना सम्पादन मे प्रकाशित क' मैथिलीक नवलेखन केँ दिशा देलनि आ बहुत आगाँ बढ़ौलनि। वैदेही, मिहिर, दर्शन, अभिव्यञ्जना, आखर आदि मे हिनक महत्वपूर्ण रचना सभ प्रकाशित अछि। रेडियो कलाकार (किछु दिन) रहिक' आकाशवाणी द्वारा ई मैथिलीक सेवा कयने छथि। सम्प्रति सहर्षा कालेज मे मैथिलीक प्राध्यापक छथि।

एहि सबडिवीजनक भपटियाही (मटियारी सम्प्रति) क श्री भुवनेश्वर प्रसाद गुरमैताक शोध ग्रंथ (ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरपर) वैदेही मे प्रकाशित भ' चुकल अछि।

बिहरा (सहरसा) क नन्दकिशोर लाल 'नन्दन' क जन्म 2-1-1917 मे भेलनि। हिनक लिखल 'सत्यनारायण कथा' मैथिली मे अनुवाद (पद्य मे) 1953 मे प्रकाशित भेलनि। तकरा बाद छिट-फुट रूप मे मैथिलीक कविता सब लिखने छथि।

चैनपुर (सहरसा) क पं. मधुकान्त झा (जन्म 1930) क लिखल नवीन नचारी हालहि मे प्रकाशित भेल अछि। ई नीक कवि छथि। धबौली (मधेपुरा) क पं. सदानन्द झा शास्त्रीक 'पिपासा', 'विपंचिका' दू टा ग्रन्थ प्रकाशित अछि।

बड़गाम (मधेपुरा) क निवासी ललितेश्वर मल्लिक विख्यात साहित्यकार छथि जनिक लिखल 'डाइन' (उपन्यास) तथा कोशी लोकगीत संग्रह ई दू टा ग्रंथ प्रकाशित अछि। लगमा (सहरसा) निवासी डा. विष्णुकुमार झा 'बेचन' प्रसिद्ध मैथिली सेवी विद्वान छथि। हिनक लिखल 'स्वातंत्र्योत्तर मैथिली निबन्ध' 1967 मे प्रकाशित भेल अछि आ स्वातंत्र्योत्तर मैथिली साहित्य आदि प्रकाशनाधीन अछि।

सहमोरा (सहरसा)क प्रो. प्रबोध नारायण सिंह, जे सम्प्रति कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ सम्बद्ध छथि, 'मिथिला दर्शन'क संपादक-संचालक मैथिलीक सुप्रसिद्ध उन्नायक आ मैथिलीक विख्यात आन्दोलनकर्त्ता छथि। सपरिवार ई मैथिलीक सेवा मे संलग्न छथि, हिनक अनेको (मौलिक आ अनुवाद) ग्रंथ मुद्रित अछि आ विभिन्न पत्र-पत्रिका मे हिनक रचना प्रकाशित होइत रहैत अछि। हिनक रचना विभिन्न संकलन मे संकलित अछि। समस्त मैथिली जगत मे ई सादर विश्रुत छथि।

बड़गामक धनेश्वर झा 'किशोर' (जन्म 1-5-1919) सम्प्रति बा. उ. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मुरलीगंज मे प्राचार्य छथि। ई मैथिलीक बड़ पैघ सेवी ओ

उन्नायक छथि। हिनक प्रथम रचना पिआसलि (कविता) प्रकाशित भेलनि। तकरा बाद सँ बहुतरास गद्य-पद्य लिखलनि अछि जे प्रकाशित एवं अप्रकाशितो अछि।

शाह आलमनगरक डाक्टर हरिमोहन मिश्रक मैथिलीक कतिपय ग्रंथ ओ रचना प्रकाशित अछि आ एखनहुँ लिखि रहलाह अछि।

सुपौलक राजेन्द्र लाल दास 'विशारद' (जन्म 1905) मैथिलीक नीक विद्वान छथि। ई 'महाकवि विद्यापतिक पद्य सभक भावार्थ' नामक गवेषणात्मक ग्रन्थ लिखलनि अछि, जाहि मे शृंगार रसक विविध विषयानुकूल व्याख्या तथा ओकरे आध्यात्मिक भावार्थ प्रस्तुत कयलनि छथि। ई ग्रन्थ अमुद्रित अछि ओना वैदेही आदि पत्रिका मे हिनक अनेक आलोचनात्मक निबन्ध सब प्रकाशित होइत रहल अछि।

सहरसा कालेजक मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो. उमेश मिश्र (बनगाम) मैथिलीक उन्नायक लेखक छथि, जनिक एक गोट पद्य संकलन तथा एक गोट गद्य संकलन प्रकाशित अछि। सुपौल कालेजक उपप्राचार्य तिलकधारी खाँ (परड़ी)क 'पद्य-रत्नाकर' नामक एकटा संकलन प्रकाशित अछि। उदा-किशुनगंज कालेजक प्राध्यापक अनन्त झा (गमैल) क लिखल 'साहित्यक समीक्षा सिद्धान्त' अप्रकाशित अछि। ई मैथिलीक रचना मे संलग्न छथि।

एहिना सहरसा कालेजक प्राध्यापक रमेशचन्द्र वर्मा (पटौरी) प्राध्यापक प्रकाशलाल दास (पटौरी) आ प्राध्यापक जवाहर झा (बनगाम) आदिक मैथिली रचना समय-समयपर प्रकाशित होइत रहैत अछि।

बनगामक (कृषि तथा सहकारी विभागक सेवा मुक्त निर्देशक) वयोवृद्ध मैथिली प्रेमी साहित्यकार दीनानाथ झा, परसरमाक वयोवृद्ध पं. जयानन्द मिश्र (सम्प्रति उदय प्रताप कालेज वाराणसीक प्राध्यापक), परसरमाक श्री सोमेश्वर मिश्र (सीवान कालेजक प्राध्यापक), शाहआलमनगरक विद्याकर कवि, बनगामक कामेश्वर चौधरी (केन्द्रीय सी.आई.डी. विभाग) बनगामक विद्यानाथ मिश्र (भागलपुर कालेजक प्राध्यापक) रामनगर बेला (मधेपुरा) क श्री योगेश्वर झा बी.एस.सी. (स्व. ज्योतिषीजी दयानाथ झाक सुपुत्र), जगतपुरक व्याकरण, साहित्य ओ न्यायाचार्य पंडित परमानन्द झा, जनिक 'काव्य मीमांसा' यंत्रस्थ अछि, शाहीडीह (नौहट्ठा) क रामशरण सिंह बी.एल. (श्यामा नामक प्रकाशित उपन्यासक लेखक), महिसीक पं. गंगाधर झा, ओ पं. कमलकान्त झा आदि एहन मैथिली-सेवी लोकनि छथि जनिक साहित्य-रचना श्लाघ्य अछि।

एकर अतिरिक्त जगतपुरक रमेश वर्मा एम.ए. (सम्प्रति 'टेकारी' गयाक सबरजिष्ट्रार) प्रमुख कथाकार, मधेपुराक एडवोकेट महावीरप्रसाद मंडल 'बीर', बनगामक मुरलीधर ठाकुर एम.ए., नरेन्द्र खाँ एम.ए., राजेन्द्र झा 'स्वतंत्र', बीरेन्द्र खाँ एम.ए., कथाकार रमेशचन्द्र खाँ बी.ए. ऑनर्स, गोसपुरक पं. नगेन्द्रनाथ झा, जगतपुरक रघुनन्दन लाल (सुखपुर उच्च विद्यालयक उपप्रधानाध्यापक), चैनपुरक हरेकृष्ण चैनपुरी, डुमरीक मणीन्द्रमोहन दास, पंचगछियाक कलानन्द सिंह 'सुमन', चकला निर्मलीक बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव', परसरमाक नरेश्वर प्रसाद सिंह, कर्णपुरक शैलेश कुमार पाठक, बभनगामाक बद्रीनारायण झा 'विप्र', सुपौलक विनयानन्द दास (मुंगेर कालेजक प्राध्यापक), डा. महेश्वर नाथ मल्लिक एम.बी.बी.एस., शिवेन्द्र लाल दास एम.ए.बी.एल., पंचगंछियाक जितेन्द्र नारायण झा व्याकरणाचार्य बी.ए. (हिन्दी), विष्णुपुरक कामानन्द झा 'कानन', सोल्हनीक ताराचरण कवि, नौहट्टाक साकेतानन्द (प्रख्यात कथाकार ओ कवि), पंचगछियाक वैद्यनाथ झा (नव कविताक रचयिता) बभनगामाक करुणाकान्त झा एम.ए., एकमाक कृपानाथ झा बी.एस.बी., सी.एड., मुरादपुरक जयानन्द झा, बिहराक अमरेन्द्र देव, बनगामक फूलबाबू, त्रिवेणीगंजक चन्दनमल सिंघी 'चान्द', तारानन्दन तरुण (प्रधानाध्यापक त्रिवेणीगंज हाइ स्कूल), बरैलक पुरुषोत्तम सिंह एम.ए. तथा अमर कुमार सिंह 'अमर', लछमिनियाँ हरदीक लक्ष्मी प्रसाद श्रीवास्तव 'दीन', बसहाक कुलानन्द झा 'करुण' तथा रमाकान्त झा, सहमोराक (प्रबोध बाबूक सुपुत्र) 'कवयो वदन्ति'क कवि तथा मैथिली कविताक त्रैमासिकक सम्पादक नचिकेता, कृष्णचन्द्र झा 'मस्ताना', पंचगछियाक राम नन्दन सिंह, चकला निर्मली हाइ स्कूलक उपप्रधानाध्यापक ब्रह्मदेव प्रसाद राय, सुपौल भूपेन्द्र प्रसाद वर्मा (छातापुर हाइ स्कूलक प्रधानाध्यापक), मलाढ़क भविष्णुकवि तारानन्द झा 'तरुण', बनगामक नव कविताक माँजल कवि महाप्रकाश, बनगामक ललितेश मिश्र, कर्णपुर (सुपौल)क श्री महीनारायण झा (सम्प्रति काँके, राँची) ई लोकनि मैथिली भंडार केँ कविता, निबन्ध, कथा, आलोचना आदि विविध विधा द्वारा भरि रहलाह अछि।

मैथिली साहित्यक भविष्णु, गम्भीर समालोचक आ प्रशिक्षित निबन्धकार, नीक कवि, प्रकाशनाधीन (मेघदूतक गीतात्मक अनुवाद) मेघगीत (गवेषणात्मक निबन्ध संग्रह), अनुचिन्तन (कविता संग्रह), 'अनुक्रम' आदिक रचयिता सुपौल निवासी रामानुग्रह झा, सुपौलहिक (प्रकाशनाधीन 'उगना रे मोर कतय गेलाह' सिनेपट कथाक लेखक) शिशिर कुमार दास जनिक बहुत रचना प्रकाशितो छनि, मैथिलीक एक पैघ उन्नायक छथि। एहिना सुपौल सबडिवीजनक रामनगरक रहनिहार,

प्रकाशनाधीन 'औनाइत मोन' (कथा संग्रह) अपराध (कविता संग्रह) क रचयिता उपेन्द्र दोषी लोकनिक नाम सहरसा जिलाक तरुण साहित्यकार मे बड़े लोकप्रिय अछि आ जनिका लोकनिक रचना बरोबरि प्रकाशित होइत रहैत छनि।

मैथिली सेवा मे महिला लोकनि

एम्हर आबिक' महिला लोकनि मे सेहो मैथिली सेवाक भावना बड़े वेग सँ बढ़ि रहल अछि। एहि मे सहयोग (प्रबोध बाबूक पत्नी) डा. अणिमा सिंह, हुनके पुत्री प्रो. श्रीमती इलारानी सिंह एम.ए., क बहुतो प्रकाशित (मौलिक, अनूदित) ग्रन्थ निबन्ध, कथा, कवितादि सब अछि। डुमराक श्रीमती शेफालिका वर्मा (मुख्यत: कथा ओ कविता), कासिमपुरक प्रो. श्रीमती शान्ति सुमन (सम्प्रति महन्थ दर्शन दास महिला कॉलेज मुजफ्फरपुरक प्राध्यापिका) कथा ओ कविता, बनगामक श्रीमती कल्पना देवी 'सरोज' (कथा ओ निबन्ध), सुपौलक श्रीमती निर्माया झा (मुख्यत: निबन्ध ओ अनुवाद), सुपौलक (सम्प्रति काँके, राँची) श्रीमती सुनीता झा (मुख्यत: कथा ओ निबन्ध), बभनगामाक श्रीमती प्रभा झा (मुख्यत: कविता), सुपौलक श्रीमती शान्ति देवी एम.ए.डिप.एड. (सम्प्रति बालिका उ. वि. माधोपुर, मुंगेरक प्रधानाध्यापिका) मुख्यत: निबन्ध, सुपौलक श्रीमती सुलोचना वर्मा (मुख्यत: कविता), सुपौल बालिका उच्च वि. क प्रधानाध्यापिका श्रीमती निर्मला सिंह एम.ए.डिप्.एड. (मुख्यत: निबन्ध), कर्णपुर श्रीमती रामकाशी मिश्र (जनिक डा. बालगोविन्द झा 35-36 टा गीत संकलित कयलनि अछि), श्रीमती राधिका देवी 'राधातत्व एक अध्ययन' शीर्षक निबन्ध राधा-विषयक एकटा शोधपूर्ण रचना थिक।

सहरसा जिलाक परिसर मे विशिष्ट मैथिली सेवी

सहरसा जिला मे जे सभ मैथिली साहित्यक अपूर्व सेवा कयलनि अछि, ओहि मे सर्वप्रथम नाम भारत सेवक समाज कालेजक मैथिली विभागाध्यक्ष डा. बालगोविन्द झा 'व्यथित' क लेल जा सकैत छनि। जे अपन विभिन्न प्रकारक निम्नलिखित रचना सँ मैथिली-साहित्यक भंडार केँ भरि रहलाह अछि—मैथिली साहित्यक इतिहास (1962) मैथिली सुबोध व्याकरण (1963), मैथिली निबन्धावली (1964), आधुनिक मैथिली व्याकरण एंव रचना (1965), मैथिली व्याकरण चन्द्रिका (1967), मैथिली पद्य-प्रसून (1967), मैथिली कवि दर्शन (1968), त्रिपथगा एकांकी संग्रह (1868) हिनका एहिठाम सँ 'मैथिली साहित्यक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि' नामक शोधग्रन्थ पर 1967 ई. मे बिहार विश्वविद्यालय पी.एच.डी. सम्मान सँ सम्मानित

कयलकनि जनिक निर्देशक आदरणीय रमानाथ झा छलथिन।

एहिना सुपौल कालेजक मैथिलीक प्राध्यापक श्री धीरेन्द्र नारायण झा 'धीर' नीक गीतकार छथि। ई रेडियो कलाकारक रूप मे सेहो मैथिली-सेवा क' रहल छथि।

सहरसा कालेजक (संस्कृतक) प्राध्यापक कृष्णदत्त झा 'प्रमत्त' तथा मधेपुरा कालेजक मैथिलीक प्राध्यापक जगदीश यादव मैथिली साहित्यक उल्लेखनीय सेवा क' रहल छथि। एहिना सुपौल मे मजिस्ट्रेट बनि क' आयल गोपीकृष्ण दासक मैथिलीक कविता, कथा, आलोचना निबन्ध आदि महत्वपूर्ण काज अछि। ई लोकनि सहरसे जिलाक परिसर मे मैथिलीक अपन सेवा कार्य आरम्भ कयने छथि।

रमानाथ झा अभिनन्दन ग्रंथ : 21 सितम्बर 1968

मिर्जा गालिब आ हुनक कृतित्व

उर्दू भाषाक सर्वश्रेष्ठ कवि मिर्जा गालिब, जनिक शताब्दी समारोह अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर मनाओल गेल अछि, हुनक पूर्णनाम मिर्जा अबदुल्ला खाँ छलनि जे पहिने 'असद' उपनाम सँ आ पछाति 'गालिब' उपनाम सँ उर्दूक काव्य-रचना कयलनि। हिनका मिर्जा नौशा सेहो कहल जाइत छलनि। हिनक जन्म 1797 ईसवी क 27 दिसम्बर केँ आगरा मे भेल छलनि। अपना सम्बन्ध मे हुनक अपन लिखल छनि जे—'असद उल्ला खाँ उर्फ मिर्जा नौशा उपनाम 'गालिब', जाति तुर्क, सलजूकी सुलतान बरकियारूक सलजूकीक सन्तानमेसँ, जकर पितामह कौकान बेग खाँ, शाह आलमक शासनकाल मे समरकंद सँ दिल्ली आयल छलाह। ओ पचासटा घोड़ा आ नक्काराक निशान पर बादशाहक सेवक भेलाह। हमर पिता अब्दुल्लाबेग खाँ दिल्लीक रियासति छोड़ि अकबराबाद [आगरा] चल अयलाह, जत' हमर जन्म भेल। हमर पिता अलवर मे राव राजा बख्तावर सिंहक सेवा मे रहि एकटा युद्ध मे बहादुरी सँ मारल गेलाह। जखन हमर वयस पाँचे वर्षक छल, हमर अपन पित्ती नस्रउल्ला बेग खाँ मरहटा-लोकनिक दिस सँ आगरा मे सूबेदार छलाह। 1803 ई. मे जखन जनरल लेक आगरा अयलाह तँ हमर पित्ती हुनका शहर सुनझा देलथिन आ हुनक अधीनता स्वीकार क' लेलथिन। जनरल साहेब हुनका चारि सय सवारक ब्रिगेडियर बनाक' एक हजार सात सय वेतन निर्धारित क' देलथिन। पछाति अपना बाहु-बल सँ सौंख, सौंसाक दू गोट परगना भरतपुरक समीप होल्करक सवार लोकनि सँ छीनि लेलथिन तँ जनरल साहब उक्त दुनू परगना सर्वदाक हेतु हमरा वीर पित्ती केँ द' देलथिन। तकरा दसे मासक उपरान्त हमर पित्ती हाथीपर सँ खसिक' मारल गेलाह। जागीर सरकार मे आपस भ' गेल आ एवज मे नगदी मोकरर भ' गेल, जाहिमे सँ अपना हिस्सेदार लोकनि केँ देलाक बाद हमरा साढ़े सात सय टाका भेटैत अछि।'

पिता आ पित्तीक मुइलाक उपरान्त गालिबक पालन-पोषण आगरे मे भेल।

हिनक प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षाक सम्बन्ध मे कोनो प्रामाणिक तथ्य नहि भेटैत अछि मुदा हुनका रचना मे जे खगोल, ज्योतिष, तर्क, दर्शन, पदार्थ-विज्ञान, संगीत आदिक पर्याप्त परिभाषा सभ पाओल जाइत छनि ताहि सँ बुझना जाइछ जे हुनक शिक्षा, दीक्षापर पूर्ण ध्यान देल गेल छल होयतनि। ई दसे एगारहक वयससँ-जखन ई मकतब [पाठशाला] मे पढ़िते छलाह—'शेर' कहब शुरू क' देने छलाह। ओहि समय मे फारसी भाषाक एकटा बड़ पैघ विद्वान् मुल्ला अब्दुल समद ईरानी भारत भ्रमणक हेतु आयल छलाह। हिनके सँ गालिब केँ फारसी पढ़बाक अवसर भेटलनि। गुरु अपना योग्य शिष्यक मनोवृत्ति बूझि हुनका फारसीक प्राचीन तथा आधुनिक साहित्यक नीक अभिज्ञान करा देलथिन। स्वयं मिर्जा गालिब अपना पुस्तक सभ मे हुनक चर्चा बड़े प्रेम आ आदरपूर्ण शब्द मे कयने छथिन। तेरह वर्षक अवस्था मे गालिबक विवाह दिल्लीक लोहारू कुलक कन्या उमराव बेगम सँ भेलनि आ विवाहक दू-तीन वर्षक बाद ओ स्थायी रूप सँ दिल्ली मे आबिक' बसि गेलाह। एहि प्रसंग एक ठाम हुनक लिखल छनि जे 'सात रजब 1225 [1 अगस्त 1810] केँ हमरा लेल हुक्मे-दवामे-हब्स [स्थायी कारावासक आदेश] बहरायल। एकटा बेड़ी [अर्थात् नारी] हमरा पयर मे द' देल गेल तथा दिल्ली शहर केँ जिन्दान [कारागार] निर्धारित क' हमरा ओहि मे राखि देल गेल।'

दिल्ली अयलाक बाद एहि ठामक काव्यमय वातावरण आ धुरझार होइत कवि गोष्ठीक परिणाम स्वरूप ई खूब कविता लिख' लगलाह। मुदा ई ज्ञातव्य जे नियमित रूपें कोनो कविक शिष्यत्व नहि स्वीकार नहि क' अपना फारसीक गम्भीर अध्ययन तथा ज्ञानक बलपर ई चमकि उठलाह। पछाति परम्परा सँ लिखल जाइत काव्यक असंख्य त्रुटि सभ दिस हिनक ध्यान गेलनि जकरा प्रस्तुत क' ओहि समयक पैघ-पैघ ओस्तादलोकनि गौरवक अनुभव करैत छलाह। गालिब ई देखि ओस्तादलोकनिक टीका टिप्पणी आरंभ क' देलथिन। हुनक मत छलनि जे 'प्रत्येक पुरान लकीर सिराते मुस्तकीम (सोझ बात) नहि थिक आ पहिलुका कविलोकनि जे कहि गेलाह अछि से पूर्णतः सनद (प्रामाणिक बात) नहि भ' सकैछ।' एहि प्रकारें 'अन्दाजे बयान' (वर्णन शैली सँ दृष्टि हटाक' एक नवीन 'अंदाजे बयाँ' द्वारा जखन ओ विषय-वस्तु दिस ध्यान देलनि तँ ओहो हुनक जीर्ण बुझना गेलनि।)

हैं और भी दुनिया मे सखुनवर बहुत अच्छे।
कहते हैं कि गालिब का है अन्दाजे बयाँ और।

(दुनियाँ मे ओना तँ बड़ नीक-नीक कवि छथि, मुदा कहल जाइछ जे गालिबक वर्णन शैली किछु आने माधुर्य रखैछ।)

काव्यक क्षेत्र मे ई स्थिति देखि गाबिल उर्दू कविता केँ नवीन दिशा देलथिन। गालिबक समय ओ छल जखन मुगलराज्यक दीप मिझा रहल छल। दिल्ली अंगरेजक अधिकार मे चल गेल छल आ बादशाह बहादुर शाह जफरक शासन किला धरि सीमित रहि गेल छल। पुरनका व्यवस्था मरि रहल छल आ नव व्यवस्थाक एखन पूर्णत: जन्म नहि भेल छल। एहने अव्यवस्थापूर्ण वातावरणमे, जखन आन-आन कविलोकनि निराशावादक चांगुर मे पड़ल छलाह—गालिब अपना स्वाभिमान, मानव-प्रेम आ स्पष्ट यथार्थक अभिव्यक्ति ल' क' साहित्य-क्षेत्र मे अयलाह। अपना बातक विकृत तथा जीर्ण भ' जयबाक संदेह सँ ओ जीर्ण आ घसल खिआयल रूपक एवं उपमाक प्रयोगक स्थानपर नवीन रूपक आ उपमाक आविष्कार कयलनि। हुनक समकालीनलोकनि हुनका नवीनताक उपहास कयलथिन। हुनका 'महमल-गो' इत्यादि कहलथिन। मुदा ओ चुपचाप बाटक सभ काँट सँ बेपरवाह भेल लिखैत गेलाह। जे लिखलनि से उर्दू साहित्यक आइ महान् विभूति बनि गेल अछि। वस्तुत: हिनक शैली, अभिव्यक्ति ओ प्रतिभा उर्दू कविता मे अद्वितीय अछि। एतेक होइतो प्रत्येक नव दिशा देनिहार केँ परम्परावादी लोक जाहि दुष्टतापूर्ण नजरि सँ देखैत अछि आ एहन नव्यताक संस्थापकक अदगोइ-बदगोइ करैत अछि, ताही दृष्टिक शिकार गालिबो केँ होब' पड़लनि। तत्कालीन कवि लोकनि हिनक नव दृष्टि केँ नहि बूझि सकबाक कारणे वा जानि-बूझिक' विद्वेषक कारणे हिनका मोहमल (अर्थहीन) रचना कयनिहार कह' लगलथिन। युवावस्था मे हिनक धारा प्रवाह रचना देखि उर्दूक प्रसिद्ध कवि मीरतकी मीर कहलथिन जे 'जँ एहि युवक केँ क्यो कामिल (सिद्धहस्त) ओस्ताद भेटि गेलनि तँ ई अनुपम कवि बनि जयताह अन्यथा ई मोहमल (अर्थहीन) रचना कर' लगताह।'

परम्परा सँ व्रिदोह करबाक आ प्रचलित लीख सँ बेलीख भ' क' नवीन बात कहनिहार प्रत्येक नवीन प्रवर्त्तकक प्रति संसार जे व्यवहार करैत अछि, सैह व्यवहार गालिबोक संग भेलनि। हिनक एकटा शेर अछि—

ये मसायले तसव्वुफ ये तेरा बयान गालिब।
तुझे हम वली समझते जो न वाद:ख्वार होता।

(मसायले तसव्वुफ-दर्शन सम्बन्धी सिद्धान्त बली-सिद्ध, अवतार, वादा-ख्वार-मद्यप, अर्थ स्पष्ट अछि।) ई उक्ति मिर्जा गालिबक विनय-शीलताक प्रमाण थिक, नहि तँ जत' धरि उर्दू साहित्यक सम्बन्ध अछि गालिब केवल अपनेटा युगक 'अदबी बली' (साहित्यिक अवतार) नहि छलाह अपितु आधुनिक युगक ओ अदबीवली बुझल जाइत छथि। वस्तुत: जा धरि उर्दू भाषा आ ओकर साहित्य रहतैक, हुनक

स्थान 'अदबीवली'क रूप मे सदैव रहबे करतनि, ई साहित्य मर्मज्ञलोकनिक कहब छनि।

गालिब सँ पहिने उर्दू शायरी मे भाव छल, भावना छल, भाषा एवं शैलीक चमत्कारो छल मुदा ओ सभ 'गुलो-बुल-बुल' 'जुल्फोकमर (प्रेयसीक केश आ डाँड़) 'मीना-ओ-जाम' (मदिराक पात्र आ प्याली) क वर्णन धरि सीमित छल। बेसी सँ बेसी क्यो-क्यो सूफीवादक आश्रय ल' क' संसारक असारता तथा नश्वरतापर किछु कहि दैत छलथिन आ निराशावादक गह्वर मे लोक केँ ढुका दैत छलथिन। ओहि समय मे अधिकांश कविक रचना एहने होइत छल—

सनम (प्रेयसी) सुनते हैं तेरी भी कमर है।
कहाँ है? किस तरफ? औ' किधर है।

तथा

सितारे जो समझते हैं गलत फहमी है ये उनकी।
फलक (आकाश) पर आह पहुँची है मेरी चिनगारियाँ होकर।

एहि प्रकारक 'नाजुक-खयाली' केँ काव्य रचनाक उत्कर्ष मानल जा रहल छल। एहना स्थिति मे गालिब अपना रचना मे कहलनि—

दाम हर मौज में है हल्का-ए-सदका में नहंगा।
देखें क्या गुजरे हैं कतरे पे गुहर होने तक।

(प्रत्येक लहरि एकटा जाल थिक आ एहि जालक फाँस बहुतरास ग्राह जकाँ मुँह बौने अछि। देखी मोती बनबाक काल धरि (मरबा काल धरि) बुन्द (मनुष्य) पर केहन-केहन विपत्ति अबैत अछि। एहि तरहें कवि जीवन-विकासक कठिनता सभक अद्‌भुत वर्णन कयने छथि।)

एकटा शेर मे ओ कहने छथि—

बस कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना।
आदमी को भी मयस्सर नहीं इन्साँ होना।

कतेक पैघ बात एहि मे कहल गेल अछि जे मनुष्यक मनुष्य बनब बड़ कठिन अछि।

एकटा दोसर शेर मे कहलनि अछि—

है परे सरहदे-इदराक से अपना मसजूद।
किउला को अहले-नजर किबला-नमा कहते हैं।

'काबा' एहि ठाम सँ पश्चिम छैक तें भारत मे पश्चिम मुहें नमाज पढ़ल जाइत छैक। काबा जाहि दिस रहतैक ताही मुहें नमाज पढ़ल जयतैक। गालिबक कहब

छनि जे काबा तँ केवल कम्पासक सूइ मात्र थिक जे बाट देखबैत अछि। आराधनाक वास्तविक स्थान तँ काबा आ बुद्धि सँ फराक अछि।

अपन एहि उच्च स्तरीय कथन सँ तथा—

बकद्रे-शौक नहीं जर्फे-गंगताए गजल।
कुछ और चाहिए बुसअत मेरे बयाँके लिए।

(गजलक संकीर्ण गली हमरा 'शेर' कहबाक शौकक अनुकूल सामर्थ्य नहि रखैत अछि। हमरा अभिव्यक्तिक हेतु एहि सँ अधिक विशाल क्षेत्रक आवश्यकता अछि।)

ई कहिक' परम्परित काव्य-भूमिये केँ ओ अक्षम कहि नकारि देलथिन तँ प्रेयसीक डाँड़ तकनिहार आ परम्पराक खोन्हि मे निन्न आ बेहोशी सँ झुकैत कविलोकनि चौंकि क' एहि नवागत दिस ताक' लगलाह जे के थिक ई? कोन दुनियाके गप्प कहि रहल अछि? आदि-आदि। हिनकापर व्यंग्य कयल गेल। कवि-गोष्ठी सभ मे उपहास करैत केओ कहलथिन जे ई जटिल भाषा मे लिखनिहार थिक, तँ केओ हुनका महमलतो (अर्थहीन शेर कहनिहार) आ क्यो बताह धरि कहलथिन। मुदा ई सभ अछैत गालिब एहि प्रकारक समस्त निंदा, उपहास आ विरोध केँ सहैत हँसि-हँसिक' कहलथिन—

न सतायश की तमन्ना न सिले की परवा
गर नहीं हैं मेरे अशआर में मानी न सही।

(हमरा सतायशक (प्रशंसाक) आकांक्षा नहि अछि आ ने सिला (पुरस्कार) क परवाहिये अछि। हमरा काव्य मे (शेर मे) जँ अर्थ नहि अछि तँ नहि रहओ।)

एक ठाम ओ कहने छथि—

आगही दा मे शुनीदन, जिस कदर चाहे बिछाये।
मुद्दआ अन्का है अपने आलमे-तकरीर का।

(श्रवण-शक्तिक जाल ओछओलो पर हमरा अभिव्यक्ति रूपी पक्षी केँ ई परम्परा मे ओझड़ायल बुद्धि नहि पकड़ि सकैछ।)

ओहि युग मे एहि तरहक साहस करब कोनो क्रान्तिकारिये कवि क' सकैत छलाह। एहि प्रकारें परम्पराक भंजन कयनिहारक रूप मे उर्दू साहित्य मे प्रथम कवि गालिबे भेलाह। एही सभ कारणे गालिब केँ उर्दू साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कवि मानल जाइछ। वस्तुत: गालिब उर्दू भाषाक ओ कवि आ साहित्यकार छथि जनिक व्यक्तित्व आ साहित्यपर सर्वाधिक निबंध एवं समालोचनात्मक पुस्तक सभ लिखल गेल। हुनक अपना 'दीवान' (संकलन)क तँ एतेक संस्करण भेल अछि, जकर

गणनो संभव नहि अछि।

हुनक किछु शेर एत' प्रस्तुत कयल जा रहल अछि जाहि सँ हुनक अद्‌भुत काव्य-प्रतिभाक परिचय भेटैत अछि।

काविश का दिल करे है तकाजा कि है हनोज।
नाखुन पै कर्ज उस गिरहे नीमबाज का।

(एकटा गीरह कतेक खुजिक' रहि गेल। हमरा नहपर ओकर ऋण अछि तें ह्दय बारंबार ओकरा सोझरयबाक प्रेरणा रहल अछि। तात्पर्य जे नह मनुष्यक कर्म-शक्ति थिक। ओहि कर्म शक्तिपर ई ऋण अछि जे ओ जीवनक समस्या सभ केँ सोझराबय। ने ओ नीक जकाँ सोझराइत अछि आ ने मन केँ सन्तोष होइत छैक इएह थिक कर्मक क्रम। मने जीवनक खेल। से खाहे सामूहिक जीवन हो वा व्यक्तिगत, ओकरा विकास मे ई क्रम निरन्तर जारी रहैत छैक।)

हुनका मे व्यक्ति-गौरव भरल छलनि। एकटा दोसर शेर मे ओ कहने छथि—

बन्दगोये में भी वह आजाद ओ गुद्‌दार हैं हम।
उलटे फिर आये दरे काबा अगर वा न हुआ।

(अर्थात्‌ गेल तँ छलहुँ काबा मे पूजा करबाक हेतु मुदा स्वतंत्रता आ स्वाभिमान संग-संग विद्यमान छल। काबाक पट केँ बन्द देखि घूमि अयलहुँ ओ जँ हमरा लेल 'वा' (फुजल) नहि अछि तँ हम ओकरा खुशामद क' फोल' नहि चाहैत छी।)

एही प्रकारें एकटा फारसीक शेर मे हुनक उक्ति छनि—

तश्ना लब बर साहिले दरिया बखुश्की जाँ दिहम।
गरब मौज उफतद गुमाने चीने पेशानी भरा।

(जँ हम नदीक तीरपर पियासल ठाढ़ छी आ हमरा कनेको भान भ' जाय जे ई जे लहरि थिक से हमरा अयला सँ नदीक कपार मे बल पड़ि गेलैक अछि। मने ओ उपेक्षा वा अन्यथा भाव सँ भौंह चढ़ा रहल अछि, तँ हम खाहे पियासें मरि जाइ मुदा ओकर पानि नहि पीब।)

ई हुनक स्वाभिमान छलनि। हिनका आत्म सम्मानक एकटा छोट-छीन घटना ई अछि जे 1852 मे जखन हुनका दिल्ली कालेज मे फारसीक मुख्य अध्यापकक पद देल गेलनि तँ ओ अपन अत्यन्त विपन्न आर्थिक दुरवस्था केँ सुधारबाक दृष्टियें गवर्नमेंट ऑफ इण्डियाक सेक्रेटी टामसन साहेब सँ भेंट क' हुनका ओहि ठाम गेलाह। पहुँचलापर देखलथिन जे स्वागतार्थ टामसन नहि बहरायलाह अछि तँ कहार सभ केँ कहलथिन जे पालकी घुमा लैह। (गालिब जत' कतहु जाइत

छलाह, चारिटा कहारवला पालकीपर चढ़िक' जाइत छलाह।) टामसन साहेब केँ सूचना भेटलनि तँ बहराक' ओ अयलथिन आ कहलथिन जे अहाँ तँ भेंट-घाँट कर' नहि, नौकरीक हेतु आयल छी तँ स्वागतार्थ क्यो कोना उपस्थित होइत? मिर्जा गालिब उत्तर देलथिन जे हम नोकरी एहि लेल कर चाहैत छी जे हमरा प्रतिष्ठा मे वृद्धि हो। जँ नोकरी सँ पहिलुको प्रतिष्ठा मे ह्रास होयबाक संभावना अछि तँ एहन नोकरी केँ हम फराके सँ नमस्कार करैत छी। आ वस्तुत: नमस्कार क' घूमि अयलाह।

ओना ई अत्यन्त विकट आर्थिक दु:स्थिति सँ जीवन भरि एकदमे तंग रहलाह। एहि प्रसंग मे एक ठाम हुनक उच्चकोटिक अनुभूति देखू—

रंज से खूगत्त (अम्यस्प) हुआ इन्साँ तो मिट जाता है रज।
मुश्किलें मुझपर पड़ी इतनी कि आसाँ हो गई।

एकटा दोसर शेर एही भावक एहि तरहें अछि—

हश्रते-कतरा है दरिया में फना हो जाना।
दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना।

(हश्रते कतरा-बूँद सफलता, एही मे अछि जे ओ नदी मे विलीन भ' जाय। शेष अर्थ स्पष्ट अछि।)

मिर्जा गालिबक जीवनक संध्या बड़ दुख ओ विपत्ति मे बीतल। अंगरेजी शासन स्थापित भेलापर हुनकापर जुआ खेलबाक अभियोग लगाक' जहल मे बन्द कयल गेल। ओत' हुनका बड़ कष्ट देल गेलनि। ओहि कालक हुनक एकटा शेर देखू :

मुनहसिर मरने पै हो जिसकी उमीद।
ना उमीदी उसकी देखा चाहिए।

(जकर एक मात्र आशा मरबे मे रहि गेल हो ओकर जीवने निराशा थिकैक। देखी ई निराशा कहिया धरि रहैत अछि। अर्थात कहिया धरि ओ मरैत अछि आ कहिया ओकर ई आशा पूर्ण होइत अछि।)

अपना सम्बन्ध मे हुनक उक्ति केहन अद्‌भुत छनि—

पूछते हैं वो कि गालिब कौन है।
कोई बतलाओ कि हम बतलाएँ क्या?

आ

गालिब बुरा न मान जो वाइज बुरा करे।
ऐसा भी कोई है कि सब अच्छा कहे जिसे।

एहन अनुपम काव्य प्रतिभाक धनी मिर्जां गालिबक निधन 15 फरवरी 1869 केँ भ' गेलनि, जाहि स्मृति मे गालिब शताब्दी विश्व भरि मे 1969 क फरवरी मास मे मनाओल गेल अछि।

मिर्जा गालिब उर्दूक अतिरिक्त फारसीक सेहो विख्यात कवि छलाह, मुदा हुनका एतेक प्रतिष्ठा उर्दू कविताक कारणे भेलनि। ओ पद्यक अतिरिक्त गद्यो साहित्यक श्रेष्ठ रचनाकार बूझल जाइत छथि। हुनक उर्दू कविताक संग्रह 'दिवाने-गालिब' सर्वप्रथम 1841 मे, फारसीक कविता संग्रह 'पंज-आहंग' 1849 मे आ गद्य साहित्यक आदर्श रूप मे हुनका पत्र सभक संग्रह 1868 मे प्रकाशित भेल छलनि। आइ ने केवल उर्दूक कवि तथा लेखक लोकनि केँ, ने केवल भारत सरकार केँ जे निजामुद्दीन मे मिर्जाक मजार केँ श्रद्धा स्वरूप नवीन रूप मे निर्मित्त कराक' एवं हुनका चित्रक डाक टिकट छपबाक' एहि महाकविक महानता केँ स्वीकार कयलक, अपितु सम्पूर्ण देशक जनता केँ अपना देशक एहि भारतीय 'शायर' पर यथोचित गर्व अछि।

मिथिला मिहिर : 9 मार्च 1969

<u>संस्मरण</u>

भेंट भेलाह अमरजी

भरिसक 1947 क जाड़ मास छल। हम अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद द्वारा संचालित साहित्य भूषण (मध्यमाक) परीक्षा देमक हेतु दरभंगा गेल छलहुँ। सुपौलक उच्च विद्यालय मे शिक्षक रहबाक कारणे एक एहन परीक्षार्थी छलहुँ जकरा अत्यधिक साकांक्ष रहक चाही। विद्यार्थी जीवन मे पास फेलक जे प्रतिक्रिया हो, मुदा शिक्षक भ' क' फेल करब बड़ कोनादन होइत छैक। स्थिति ई जे परीक्षाक हेतु निर्धारित सबटा पुस्तक भेटियो नहि सकल छल, पढ़बाक कोन कथा? जेहो पुस्तक छल से देखि धरि नेने छलहुँ। तें परीक्षा सँ चारि-पाँच दिन पूर्वहि दरभंगा पहुँचल रही जे ओतहि रहि यथासंभव पढ़ि लेब। स्टेशन सँ कुली द्वारा अपन बाकस आ होल्डऑल उठबा क' पहिने पूज्य गुरुजी (पंडित त्रिलोक नाथ मिश्र) क डेराक खोज करैत ई पता लगने जे ओ गाम (गोसपुर) गेल छथि पुनि मिथिला मिहिरक सम्पादक जी (प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन') क ओतय गेलहुँ। ओतहु पता लागल जे सम्पादक जी गाम (बल्लीपुर) गेल छथि। अन्ततः हारिक' विचारल जे संस्कृत विद्यालयक छात्रावास मे रही। मिहिर मे हमर रचना सब प्रकाशित होइत छल आ श्रद्धेय सम्पादक जीक स्नेहक चिट्ठी-पत्री सब भेटैत रहैत छल तें बिनु देखनहि हुनक आश्रम मे रहबाक मनोबल भ' गेल छल। अन्यथा दरभंगा मे आओर केओ चिन्हार नहि छलाह। हारि दारिक' जखन विद्यालय-छात्रावास पहुँचलहुँ तँ कुली अपन बौअयबाक आ समय लगबाक पारिश्रमिकक तगेदा कर' लागल। बरण्डा पर सामान राखि देलक। हम एक तँ शहरू आदमी दोसर एक हाई स्कूलक अध्यापक, तेसर हमर ओहि दिन मे विश्वास छल जे रोब जमयबाक लेल जँ बाजी तँ हिन्दीए भाषा मे भ' सकैत अछि। कुली केँ कने डांटिक' कहलियैक जे—

'देखो, उस कोठली में एक आदमी है, जरा उससे पूछ आओ कि मैं इसमें रहना चाहता हूँ, सो हो सकता है या नहीं?'

बरन्डाक दोसर छोर पर जे कोठली छल ताहि मे एक व्यक्ति फाँड़ कसने, गंजी पहिरने आ माथ मे गमछाक मुरेठा बन्हने बाढ़ सँ कोठलीक झोल झाड़ि रहल

छल। भेल जे प्राय: छात्रावासक केओ नौकर चाकर थिक। पूजावकाश मे विद्यालय बन्द रहक कारणे प्राय: छात्रावासक देख-रेखक हेतु राखल गेल होयत।

कुली रोब मे आबि गेल छल, थोड़ेक तँ वेश-भूषाक कारणे आ बेसी हिन्दीक टोनक कारणे (आभिजात्य-मुद्रा एखनहुँ प्रभावोत्पादक होइत छैक।) ओ गेल आ आबिक' कहलक जे रहि सकैत छी। पुबरिया कोन मे जे कोठली छैक ताहि मे अहाँक वस्तु-जात राखि दैत छी। सामान उठाक' ओहि कोठली मे राखि देलक। कोठली परता रहक कारणे बड़ गन्दा छल। विद्यार्थी जखन गाम जाय लगैत अछि कागजक टुकड़ा-टुकड़ी, टुटलाहा खराम, जूता, लालटेन साफ करक मैल पुरान चेथरा-चेथरी, खलिया दियासलाइ आदि अशोभन चीज-वस्तु सब ओहिना असम्बद्ध रूप मे छोड़ि जाइत अछि। गाम जयबाक धड़फड़ी आ चल-चलन्ती वाला मूड होइते छैक तेहने। से कोठलीक परिमार्जन आवश्यक छल। कुली तँ हुज्जत क' क' पाइ पाबि चल गेल छल। हम किंकर्त्तव्यविमूढ़ भेल ठाढ़ छलहुँ। सूर्यास्तक समय छलैक। बाढ़निक बिना अपनहुँ सँ कोठली साफ कोना क' सकैत छलहुँ? अन्तत: छात्रावासक तथा ज्ञात रखबार नौकर लग पहुँचलहुँ। ओहि कोठलीक सफाइ समाप्त— प्राय छलैक। हम बजबाक टोन मे कने प्रभावोत्पादक ढंग अनैत रोब जमयबाक हेतु पुन: हिन्दीये मे बाजब नीक बुझलहुँ।

—ऐजी, सुनते हो?

—जी...?

—देखो, मैं उस कोठली में हूँ। उसे साफ कर दो।

—जी, एखने क' दैत छी सरकार।

—और सुनो मेरे पास लालटेन है, उसमें किरासन तेल ला देना।

—जी बेस।

—देखो, जरा जल्दी करो। पैसे मिल जाएँगे तुमको।

—बरनी, अपने चलल जाय हम तुरन्ते अबैत छी। सरकार रहैत छिऐक कत'?

—मैं सुपौल रहता हूँ। सुपौल जानते हो?

—पुबरिया सुपौल कि ने?

—हाँ-हाँ, वहीं हाईस्कूल का मास्टर हूँ।

—अपनेक नाम?

—मेरा नाम? मेरे नाम से तुम्हें क्या मतलब? मेरा नाम है रामकृष्ण झा।

—जी, चोट्टहि आबि रहल छी। कहि ओ कने हँस' जकाँ लागल, हम अपन भौंहु चढ़बैत जकाँ ओकर अशिष्टता पर जेना खिसिया गेल होइ, अपना कोठली

आबि बाकस सँ लोटा बहार क' पखाना विदा भ' गेलहुँ। घुमिक' अबैत छी तँ देखैत छी कोठली झाड़ि-बोहारि क' साफ क' देल गेल अछि। आ बाकस, होल्ड ऑल आदि सब सरियाक' राखि देल गेल अछि। लालटेन भरिसक तेल लेल ल' गेल अछि, से बुझना गेल। भेल जे आब घूमिक' आओत तँ चारि आना पाइ द' देबैक। ओछाओन बिछाओन सरियाक' हम सुभ्यस्त होइत बाकस सँ कने निमकी खजूर जे गामहि सँ बनबा क' संग ल' गेल छलहुँ, जलखै कर' लगलहुँ।

अहर बीतल, पहर बीतल, कथी लेल ओ घूमिक' आओत। कोठली सँ बहार भ' क' ओहि कोठली दिस तकलहुँ तँ लालटेन नेने एक प्रतिष्ठित व्यक्तिकेँ अबैत देखलियनि। साफ मेहीक्का धोतीपर बन्द गलाक ऊनी कोट, ऊपर सँ मफलर प्राय: एखनहि लग्घी क' आयल छला से नीक जकाँ घोंसियौल नहि जयबाक कारणे कने बाहरे जकाँ रहि गेल करिक्का बनारसी बद्धी आ उजरा मेहिक्का जनउक किछु अंश, पैर मे करिक्का जूता। लग अयला पर हम ई देखि विस्मित रहि गेलहुँ जे ई तँ वैह व्यक्ति थिकाह, जिनका हम छात्रावासक नौकर बुझैत छलहुँ। मन मे लज्जाक बोध भेल, क्षमा-याचनाक स्वर मे कहलियनि माफ करब, हम अहाँकेँ नहि चीन्हि सकलहुँ। ओ कहलनि जे से तँ नहिये चिन्हलहुँ अछि। हँसैत-हँसैत बजलाह की करबय लय किसुन जी, एहिना होइ छैक। हमर आश्चर्यक सीमा नहि रहल किसुन जी सम्बोधन सुनिक'। कोना जनैत छथि हमरा...के थिकाह?

—जी; अपनेक शुभ नाम? हम संकुचित संचित होइत अद्‌भुत जिज्ञासाक भावें अधीर भ' पुछलियनि।

—हमरा कोना चिन्हैत छी अपने?

—हमरा बूझल छल, एहि दू-चारि दिन मे अहाँ अवश्य परीक्षा देबाक हेतु आयब। परीक्षा मंत्री सँ अहाँ पत्राचार कयने रही। तँ नाम सुनिते बूझि गेलहुँ जे किसुनजी छी। ओ मुस्कुराइत-मुस्कुराइत हमरा आ आरो अधिक उत्सुक-आश्चर्यित करैत कहलनि।

हमरा नहि रहि भेल, पुछलियनि—अपनेक परिचय...

—हमर नाम थिक...चन्द्रनाथ मिश्र...

—अमर जी? हमरा मुँह सँ हठात घोर आश्चर्यक आ असीम संकोचक भावे बहरा गेल।

—हँ, हमरे लोक अमर कहै छथि।

हमरा बुझू तँ पैरक नीचा सँ धरती घसकि गेल। अमर जी थिकाह, ई तँ परीक्षा विभागक भरिसक उपमंत्री थिकाह, परिषदक पदाधिकारी। हम अयलहुँ अछि हिनक

अधीन मे परीक्षा देबक हेतु आ हिनका सँ कोठली साफ कराओल अछि आ हिन्दी मे रोब जमओलहुँ अछि हुनका पर। मन: स्थिति तेहन भ' गेल जे हम बहुत हड़बड़ा गेलहुँ। अमर जी कहलनि—अहाँ संकोच जुनि करी। अहाँ हमर पाहुन छी। एखन तँ परीक्षा विभागक आरम्भे थिक। अहाँक रचना सब आ मैथिली समिति तथा मिथिला पुस्तकालय द्वारा कयल गेल मातृभाषाक समुन्नतिक हेतु काज सब सँ पत्र-पत्रिका द्वारा हमरा लोकनि, विशेषत: हम बड़ प्रभावित छी, से हम जे कोठली साफ क' देलहुँ तँ एहि मे कोनो संकोचक बात नहि। ई कहि ओ सहसा गंभीर मुद्रा सँ हास्य मुद्रा मे आबिक' स्वर केँ गम्भीर बनबैत कहलनि—हमर मेहनताना देल जाय सरकार! हमरा ने कानि भेल ने हँसि भेल। कालिदासक 'शैलाधिराज तनयान ययौ न तस्थौ'क मर्मस्पर्शी साक्षात अनुभव ओहि दिन हमरा जे भेल से प्राय: कोनो भागमन्ते लोक केँ भेल हेतनि।

हम हिनक 'गुदगुदी' जे 1946 मे प्रकाशित भ' चुकल छल, अपन पुस्तकालयक माध्यमे पढ़ि नेने छलहुँ। गुदगुदी पूर्णत हास्य व्यंग्यक रचना थिकनि मुदा साहित्य रचना मे हास्यक एहन समावेश कयनिहार जीवनक दैनन्दिनो घटना मे हास्यक एहन अपूर्व सृष्टि आ व्यवहार क' सकैत छथि से देखि मन आरो बेसी चमत्कृत भ' उठल छल। तकरा बाद सँ आइधरि हिनक एहि भावक परिदर्शन बरोबरि होइत रहल। एहि प्रसंगक केवल एक घटना सुना दैत छी। 1956 मे हम सहर्षा जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलनक अध्यक्ष रही। सुपौलक राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला मे जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन आ जिला मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशनक संग-संग संगीत सम्मेलन सेहो आयोजित कयने छलहुँ। पूर्वक दुहू अधिवेशन सम्पन्न भ' गेल छल। कुमार गंगानन्द सिंह, जगन्नाथ मिश्र, यात्री जी, किरण जी, मधुप जी, राघवाचार्य आदिक संग-संग अमरजी सेहो जा रहल छलाह। हमरालोकनि अरिआतय स्टेशन आयल छलहुँ। एही ट्रेन सँ सहर्षा जिला आ पूर्णियाक गायक लोकनि उतरलाह। हम सब सँ विदा होइत अमरजी सँ विदा होम' पहुँचलहुँ। कहलनि-बेस, आब जाउ, अहाँ केँ तँ गायक सम्मेलनक करक सेहो अछि। 'गाय'क सम्मेलन मे बेसी लोक तँ किछु नहि बुझने 'बरद' जकाँ कात-करौट मे ठाढ़ रहता। बुझनिहार सब 'साँढ़' जकाँ घाड़ डोलबैत रहताह आ तखन जे जेहन 'थिरायल' हयत से तेहने 'डिरिऐत'। कुमार साहेब लोकनिक संग-संग ओहिठाम उपस्थित सब लोक हँसैत-हँसैत लोटपोट भ' गेलाह। ऐहन अनेक प्रसंग अछि मुदा विशेषता ई जे सब विशुद्ध हास्य मात्राक सीमा मे रहैत अछि, जाहि मे आक्षेपक कनेको लेश नहि रहैत अछि।

तकराबाद 1946 सँ आइधरि समकालीन पत्र-पत्रिका मे हिनक रचना हास्य, व्यंग्यक अतिरिक्त आनो-आनो अनमोल भावरत्नक अवदान साहित्य जगत केँ दैत रहल अछि।

'कहू कुशल' हिनक एक उत्कृष्टतम रचना थिक जाहि मे हास्य-व्यंग्यक संग-संग आक्रोश, उपालम्भ आ करुणा सब सम्मिलित अछि।

तहिना प्रकृतिक सौम्य आदि अनेक रूपक अद्भुत चित्रण हिनक, आसिन, कार्त्तिक, अगहन आदि बारहो मासक ऊपर लिखल गेल कविता मे उपलब्ध होइत अछि। उपयुक्त रचना सभक अतिरिक्त पत्रकारक रूपमे-ई वैदेही (मासिक), निर्माण (साप्ताहिक), स्वदेश (दैनिक), इजोत (मासिक) आदि कतेक पत्र-पत्रिकाक सफल सम्पादन कयने छथि। ई सब हिनक साहित्य सेवाक विशेष मातृभाषा सेवाक ऊर्जस्वल अग्निपुंजक भव्य आलोक थिक जे हुनका हृदयकुण्ड मे अहर्निश अविच्छिन्न रूपें प्रज्वलित रहैत अछि।

रचना संग्रहक रूप मे व्यंग्यक एक-एक अतीव मार्मिक तथा अपना सन अपनहिटाक प्रतिरूप 'युगचक्र' प्रकाशित भेल जाहि मे वर्त्तमानक कयल गेल तीक्ष्ण व्यंग्यक संग-संग एक सजग राजनीतिक चेतना आ राष्ट्रीय भावनाक अद्भुत समन्वय परिलक्षित होइत अछि। तें युगचक्र सर्वाधिक जनप्रियता प्राप्त कयने अछि। स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद वैयक्तिक लाभ उठयबा मे संलग्न लोकक ऊपर चोट करैत कहैत छथि—

युग केँ जग परतारि रहल अछि
एमहर ओमहर के तकैत अछि
अपने हाथ सुतारि रहल अछि
उठत नियंत्रण भारतवर्षक
सुनलक बात जखन ई हर्षक
बनिञा आ टुटपुजिया नेता
सब कोठी अजबारि रहल अछि।

युगचक्रक एक दोसर फेरा मे एहि स्वार्थोपासक वर्गक ऊपर बड़ कठोर व्यंग्य कयल गेल अछि—

'लुड़िगर सब भरि मोन उठओलक, किछु खयलक किछु भार पठओलक, जे मकैक नेड़हा तकैत छल, से सब ऊँच मकान दैत अछि, हमर कथा केओ कान दैत अछि?'

मधुर-हास्य आ व्यंग्यक एहन समन्वित रचना कयनिहार कवि एहि समय मे

आन केओ एहि कोटिक नहि छथि। ई सब मानैत छथि। अपना व्यंग्यक एहि फुहार सँ समाजक कोनो व्यक्ति केँ ई बिनु भिजओने नहि छोड़लनि। मुदा जत' हिनक व्यंग्य एक प्रधान रूप रंग मे जगजगार होइत अछि तत' राष्ट्रप्रेम, मानवीय संवेदना आदिक निर्मल भाव-रेखा सेहो खूब स्पष्ट भेल अछि। 'त्रिफला' मे एहि भावक खूब नीक अभिव्यक्ति भेल अछि। 'समाधान' तँ राष्ट्र निर्माणक भावना सँ ओत प्रोत भेल हिनक एक बड़ सुन्दर एकांकी संग्रह थिक। देशक नवनिर्माण मे जेहने आवश्यकता छोट-पैघ उद्योग, नदी घाटी योजना तथा अन्याय रचनाक अछि तहिना एकरा सन्तुलित, नियंत्रित, सफल एवं सार्थक उपयोग करक हेतु जनशिक्षाक व्यापक प्रचारक, शिक्षाक प्रणाली-परिवर्त्तनक तथा स्वस्थ मनोभावक निर्माणहुक आवश्यकता अछि। निरक्षरता निवारणक पाठशाला, आधुनिक पाठ्य प्रणाली तथा श्रमदान शीर्षक एकांकी तकरे पूर्त्ति करैत अछि, जकर सफल मंचन पर्याप्त रूपें भेल अछि आ भ' रहल अछि। केवल कविता आ एकांकी मात्रधरि हिनक प्रतिभा सीमित नहि अछि, अपितु कथा-निबन्ध-आलोचना, उपन्यास आदि साहित्यक सब प्रमुख विधा हिनक प्रौढ़ लेखनी सँ प्रोमोदित भेल अछि। 'वीरकन्या' हिनक उपन्यास थिक जे मैथिली साहित्य मे जासूसीक दृष्टि सँ सर्वप्रथम रचना थिक।

अमरजीक प्रत्येक रचना मे युगसत्य सशक्त रूपें मुखर भेल अछि। 'विदागरी' हुनक एक सांस्कृतिक उपन्यास थिक जे शीघ्रे प्रकाश मे आबि रहल अछि। सब सँ पैघ वैशिष्ट्य हिनक ई छनि जे जहिना मातृभाषा मैथिली मे हिनक सफल कृतित्व सम्मान प्राप्त कएने अछि तहिना राष्ट्रभाषा हिन्दियहु मे ई कविता, एकांकी, कहानी आदिक माध्यमे बेस प्रतिष्ठा प्राप्त कयने छथि।

मैथिली हो वा हिन्दी, 'अमर' जीक रचना मे भाषाक सहज, स्वाभाविक प्रवाह, प्रांजलता तथा प्रसंगोपयुक्त सरल सुष्ठु प्रयोग रहैत अछि।

मैथिली साहित्य सर्जना मे तँ हिनक अवदान नामानुरूप अमरे अछि। हिनका सम्बन्ध मे श्रद्धेय सुमनजीक ई उक्ति बड़ उपयुक्त छनि—'गंडकी-कौशिकी ओ कमला, बाग्मतीक जल सँ सिक्त मिथिला अन्नपूर्णा केँ पूजित बनयबाक हेतु जतबे आवश्यकता वैज्ञानिक उपादानक अछि ततबे विद्यापति, गोविन्द दास आ चन्दा झा, हर्षनाथक कृति सँ सरस मिथिलाक भाषा साहित्य केँ लोकप्रिय बनयबाक हेतु उपयुक्त रचनाक। एहि मर्म केँ हृदयंगम करैत अपन साधना सँ मातृभाषाक वैभव-वृद्धि मे जे साधक लोकनि प्रवृत्त छथि ताहि मे अमरजी विशेष उल्लेखनीय थिकाह। कौलिकतें ई वैयाकरण; वृत्तिजे शिक्षक, रुचिजे कवि एवं साधने पत्रकार

आ परिमार्जित शैलीक लेखक अमर जीक परिचय एक वाक्य मे यैह देल जा सकैछ।'

वस्तुत: मैथिलीक अभ्युन्नति मात्र केँ अपन जीवनक लक्ष्य बनाक' चलनिहार वर्त्तमान साहित्यकार लोकनि मे अमरजी नि:स्सन्देह अन्यतम छथि। तें हिनका संगहि हिनक सम्पूर्ण परिवार, पारिवारिक वातावरण, इष्ट-मित्र आ बन्धु-परिजनक सकल परिवेश सब हिनका सम्पर्क सँ एहने बनल रहल छथि। हमरा हुनका सँ जे परिचय भेल तकर किछुए दिनक बाद हमरा लोकनि एक दोसराक बड़का भाइ भ' गेलहुँ। आब तँ दुनू भाञिक पत्रक सुर्खी रहैत अछि—'स्वस्ति श्री बड़का भाइ केँ गोड़ लगैत छियनि।' हुनक सबटा पत्र मातृभाषा मैथिलीक अभ्युदयक समस्या, रचनात्मक कार्य आदिक संवादवाहकहिक रूप मे हमरा भेटैत रहल अछि जाहि सँ हम सर्वदा प्रेरणा ग्रहण करैत रहलहुँ अछि। सब पत्र केँ हम सुरक्षित रखने छी जे हमरा जनैत एक पैघ साहित्यिक सम्पत्ति थिक। सिनेह ततेक करैत छथि जे जखन कोनो सभा-सम्मेलन, गोष्ठी आदि लेल हम बजओलियनि अछि सब मे नीकेक कोन कथा जे अस्वस्थ आ अतिव्यस्त रहितहुँ उपस्थित भ' आयोजन केँ ई निश्चित रूपें सफल बनओने छथि। दुहू भाञि मे जखन साहित्यिक चर्चा कतहु आरम्भ होइत अछि तँ गप्पक क्रम मे नवीन प्रेमी युगल जकाँ समयक व्यवधान आइधरि बिसरि जाइत छी।

ओहि दिन एहिना बैसल दुहू भाञि दरभंगा मे हुनक डेरापर गप्प करैत छलहुँ कि हुनक कन्या सावित्री जनिक वयस तखन 8 वा 9 छल हेतैक, अयलीह। गोड़ लगलाक बाद कहलनि—'काका जी, हम अहाँ सँ (आंगुर द्वारा दूक संकेत करैत) दू टा झगड़ा करब, पहिनहि सँ नियारने छलहुँ जे किसुन काका औताह तखन झगड़ा करबनि।' हम कहलियनि—'की हए, एतेक दिन पर भेंट भेल छह आ अबितहि देरी तों झगड़ा कर' लेल उठि गेलह अछि?' ओ कहलनि—'आब फेर जहिया भेंट होयत, ताधरि कहूँ बिसरि जाइ तखन? तें एखने झगड़ा करब।'

—'बेस तँ करह झगड़ा। हम तैयार छी।' हम कहलियनि। सावित्री बजलीह—'पहिल झगड़ा तँ ई करब जे अहाँक एक्के कविता जकर शीर्षक थिक 'इज्जति कोन पदार्थ' मिथिला मिहिर मे आ मिथिला दर्शनमे, दुनू पत्रिका मे छपल अछि। ई देखिक' तँ लोक बूझत जे मैथिली साहित्य मे कविताक तेहन अकाल छैक जे एक्के कविक कविता दू-दू टा पत्र मे प्रकाशित कर' पड़ैत छैक। से एना एक्के कविता दुनू केँ किऐक पठौलियैक?'

हम सुनिक' अवाक् रहि गेलहुँ। जीवन मे ई पहिलुके गलती छल। पटना सँ

मिहिर जखन पहिलुक-पहिलुक प्रकाशित होम' लगलैक तँ मिहिरक सम्पादक शेखर भाइक पत्र रचनाक हेतु भेटल। व्यस्तता छल तें उक्त कविता पठा देलियनि। अपने गाम सँ अन्यत्र चल गेल छलहुँ। एही बीच मिथिला दर्शनक हेतु कलकत्ता सँ तगेदा आयल आ हमरा फाइल सँ वैह कविता ल' क' श्रीमतीजी पठा देलथिन। हुनका ई बूझल नहि छलनि जे मिहिर केँ ई कविता पठौल गेलैक अछि। मुदा हम अवाक्, गलती पकड़ल गेला सँ नहि अपितु सावित्री दाइक एहि अद्भुत दृष्टि मातृभाषाक महत्ताक एहि अपूर्व अनुराग सँ भ' गेल छलहुँ। एहन अध्ययन आ एहन स्पष्ट दृष्टिकोण की सरिपहुँ हुनक अल्प वयस देखैत अद्भुत नहि थिक?

हम कहलियनि—'हम हारि आ गलती मानैत छियह। जे कहह से सजाय पयबा लेल तैयार छी।' सावित्री चोट्टहि कहलनि—'आब एना नहि करी सैह सजाय।' हम पुछलियनि—'दोसर झगड़ा की छल?'

हमर एकटा सम्पूर्ण कविता सुना क' कहलनि—'अहाँ जे (फल्लाँ बाबू मुइला कयलनि चिल्लाँ बाबू भोज, आगाँ-पाछाँ जे हो क्यो की काज करै अछि रोज?) एहि पंक्ति मे 'रोज' शब्दक प्रयोग कयल अछि से 'रोज' शब्द तँ बाजारू थिक। एकरा स्थानपर मे 'सब दिन' वा एहने शब्दक प्रयोग करक चाही। एकरा दंड मे अहाँ केँ दू टा अपन कविता हमरा सुनबय पड़त।' आँखि स्नेहार्द्र भ' गेल, मन प्राण गद्-गद् भ' गेल आ कण्ठ श्लथ भ' गेल। सावित्री सन बेटी सरिपहुँ अपन जीवनक समस्त बाह्य आ अभ्यन्तर माँ मैथिलीक एकान्त उपासना मे समर्पित क' देनिहार श्री अमरजी केँ भ' सकैत छनि, जनिका बच्चो सभक चारूकात मातृभाषाक एक आन्तरिक व्युत्पन्न संस्कारक भव्य आलोक सदा पसरल रहैत छनि। यैह थिक भाइक—अमरजीक, व्यक्तित्व ओ चिर मधुर चिर-प्रेरक परिचय जकरा पाबिक' हम कृतार्थ छी।

अभिव्यंजना : नवम्बर-दिसम्बर 1962

राजकमल चौधरी : एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व

राजकमल चौधरी साहित्य मे नहि, साधारणो जीवन मे एकटा विवादास्पद व्यक्तित्व छलाह कोनो व्यक्तिक ई उक्ति जे 'कोनो व्यक्ति केँ जँ केवल सबटा मित्रे-मित्र रहैत छैक तँ मोन केँ हठात् ई विश्वास भ' जाइत छैक जे ई व्यक्ति घोर अवसरवादी होयत जकरा अपन कोनो व्यक्तित्व नहि हेतैक आ जँ हयबो करतैक तँ तकरा साहसपूर्वक आ निर्भीक दृढ़ता सँ ओ कोनो काल खण्ड मे अभिव्यक्त करक सामर्थ्य नहि रखैत होयत।' राजकमलक सम्बन्ध मे ई अक्षरशः उपयुक्त अछि।

राजकमल चौधरी एकटा दृढ़ व्यक्तित्वक दु:साहसीक सीमाधरि पहुँचल अपना विचारक स्पष्ट उद्घोषक छलाह तें स्वभावतः हुनक जँ मित्रहुक संख्या बहुत छलनि तँ द्वेष कयनिहारो लोक कम नहि छल। वस्तुतः हुनक व्यक्तित्व रूढ़ि, परम्परा, गतानुगतिक नैतिकता आ समाज स्वीकृत दायित्वक सम्पूर्ण विद्रोही छल जे हुनक मुख्यतः कविता आ कथा सब सँ उद्ग्रीव होइत अछि। ओना जीवनक साधारणो क्रियाकलाप मे ई बात सहज रूपें स्पष्ट छल।

ओ ऊपर सँ कोनो नकाब आ कि खोल नहि ओढ़ने छलाह; जे छलाह से सोझ साफ आ अकृत्रिम। हुनक व्यक्तित्व कतहु भ्रमोत्पादक आ संदिग्ध द्वैविध्यक प्रतिमान नहि छल। ओ घोर स्वार्थी होइतहु ईमानदार छलाह, अपना रचनहु मे आ जीवनक दैनन्दिन व्यवहारहुमे, जकर अनेक घटना हमरा मोन पड़ैत अछि। मुदा एकर ई अर्थ नहि जे ओ अविवेकी छलाह। स्वच्छन्द आ कखनहुँ कोनो अंश मे ओ उद्धतो छलाह, मुदा उच्छृंखल नहि। ओ अपना रचनाक प्रसंग एकाधिक ठाम लिखने छथि 'जा धरि लेखक अपना जीवन-दर्शनक अनुसार अपन जीवन जिबैत अछि आ संघर्ष मे सम्मिलित रहैत अछि—ओकर रचना नहि टुटैत छैक आ ओ अपनहु नहि टुटैत अछि।' अपना व्यक्ति आ रचनाकारक अभिन्नताक प्रसंग ओ स्वयं एकठाम लिखने छथि—'हम व्यक्ति राजकमल चौधरी आ हम लेखक राजकमल चौधरी एहि दुहू मे कोनो भिन्नता किंवा विच्छेद नहि अछि। हमर लेखक आ हमर व्यक्ति

दुहू एकहि स्तरपर एकहि शरीर सँ एकहि कारण सँ एक्के जीवन जिबैत अछि। दोहराओल जिनगीक सुविधा सँ हमरा प्रेम नहि अछि।'

राजकमल चौधरीक दुलारक नाम छलनि फूलबाबू। आइयो हुनका गाम महिसी मे लोक राजकमल नाम सँ बेसी फूलेबाबू नाम सँ जनैत छनि। स्कूल मे हिनक नाम लिखाओल गेल मणीन्द्र नारायण चौधरी। हिनक किछु रचना 'मणीन्द्र राजकमल' एहू नाम सँ प्रकाशित अछि। हिनक जन्म मसूरी वा खड़गपुर हवेली मे नहि, रामपुर सहर्षा मे 13 दिसम्बर 1929 ई. मे भेल। पिता स्वर्गीय पं. मधुसूदन चौधरी गणित आ साहित्यक वस्तुत: अधिकारी विद्वान छलथिन। हिनका जहिना नेसफील्डक अंगरेजी व्याकरण कण्ठस्थ छलनि तहिना हाल एण्ड स्टीवेन्सक रेखा गणित। जहिना बिहारी, देव, रत्नाकर, कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, निराला, प्रसाद, पन्त, महादेवी आ मैथिलीशरण कण्ठस्थ छलथिन तहिना विद्यापति, गोविन्द दास, चन्दा झा, कविवर सीताराम झा सेहो। जहिना शेक्सपीयर, मिल्टन, शेली, कीट्स आ वर्ड्सवर्थ प्रस्तुत छलथिन तहिना कालिदास, माघ, भास, भारवि आ भवभूति, जयदेव प्रभृति। हमरा हुनक विद्वताक बहुत तँ नहि मुदा अनेक बेर परिचय भेटल अछि। एक बेर कटक मे अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षक संघक महाधिवेशन छलैक। स्वर्गीय चौधरीजी सँ जमिक' दू-तीन घंटा धरि हमरा साहित्यपर चर्चा भेल छल। संस्कृत, हिन्दी, मैथिली आ अंगरेजी चारू भाषा मे जे परिमार्जित आ सुगम्भीर विद्वत्ताक दर्शन हमरा हुनका मे भेटल छल से वस्तुत: अविस्मरणीय रहत। तकरा बाद अनेक बेर नवादामे, पटना मे, मधेपुरा मे आ आनो अनेक ठाम हुनका सँ बेसीकाल भेंट भेलापर लोभ संवरण नहि करक कारणे साहित्य-चर्चा जमिक' भेल अछि।

ओ पुरनका 'खेवा'क कट्टर मैथिल ब्राह्मण छलाह। ओ सम्भवत: 1930-31 मे असहयोग आन्दोलनक क्रम मे जहलो गेल छलाह आ शुरू मे कवितो करैत छलाह जे तत्कालीन पत्रिका प्राय: 'गंगा' 'सुधा' आदि मे प्रकाशितो भेल छल। ओ अनेक विद्यालय मे अध्यापक रहलाक बाद बहुत दिन सँ गया जिलाक नवादाक उच्चतर माध्यमिक विद्यालयक प्राचार्य पदपर रहि सेवामुक्त भेलाह आ ओतहि हृदयगतिक अवरूद्ध भय जयबाक कारणे स्वर्गवासी भ' गेलाह।

हिनका मृत्यु सँ किछु दिन पहिलुका एकटा घटना मोन पड़ैत अछि। हुनक पहिल विवाह सुपौलक समीप सिद्ध योगी लक्ष्मीनाथ गोस्वामीक जन्मभूमि परसरमाक पण्डित सदाशिव झाक ओहिठाम छलनि जे एहि परोपट्टा मे सुविख्यात पण्डित छलाह। हुनक पुत्र चन्द्र शेखर झा सम्प्रति सुपौल विलियम्स मल्टीपर्पस विद्यालयक अध्यापक (हमर सहयोगी) छथि। झाजीक पुत्र-पौत्रादिक उपनयन मुंडनक पता

पुरय स्वर्गीय चौधरीजी नवादा सँ सुपौल स्टेशन उतरि रिक्शा सँ परसरमा जाइत काल हमरा घर लग रिक्शा रोकबाक' कुशल-क्षेमक उपरान्त कहलनि जे 'छपलाहा पता पढ़ि एकर साहित्यिक शैली सँ हमरा बुझना गेल जे भरिसक अहींक लिखल थिक। मुदा हमरा एकठाम सन्देह भ' रहल अछि।' आ तखन पाणिनिक सूत्र प्रस्तुत करैत ओकर अशुद्धि दिस निर्देश कयलनि। हम अवाक् रहि गेलहुँ। पता वस्तुत: संस्कृत मे श्लोकबद्ध हमरे लिखल छल जे एक नहि अनेक पण्डितलोकनि (हुनक सम्बन्धी लोकनि छथिन) देखने रहथिन आ तखन छपौल गेल छलैक।

ई उदाहरण सब हमरा एहि लेल देम' पड़ल जे 'युयुत्साक' विशेषांक मे शिवचन्द्र शर्मा, स्व. मधुसूदन चौधरीजीक विद्वत्ताक सम्बन्ध मे अनेक अनधिकार खण्डन कयने छथिन। एहिना ई अनेक अनर्गल आ तथ्यहीन बात सब जानकारीक अभाव मे लिखने छथि जकर खण्डन हम एहि लेल नहि कर' चाहैत छी जे सड़लाहा थाल मे ढेप फेकलापर ओ उछलिक' अपनहुँ आ अनकहु पड़ैत छैक तथा एकटा सड़ाइन दुर्गन्ध वातावरण केँ गन्हा दैत छैक।

हुनक गाम महिसी (प्राचीन नाम माहिष्मती) मिथिलाक सुविख्यात विद्वान मण्डन मिश्रक जन्मभूमि आ महिमामयी भगवती उग्रताराक शक्तिपीठ थिक। ई कहियो दरभंगा जिला मे नहि छल, पहिने भागलपुर जिला आब भागलपुर सँ काटिक' बनल सहर्षा जिला मे अछि जे मिथिलाक वस्तुत: एक गौरव-ग्राम थिक। उग्रतारा भगवती उग्रतारा थिकीह, छिन्नमस्ता नहि। राजकमल चौधरीक परिवार तँ सहजहि, जे समस्त महिसी आ एहि इलाकाक अनेक ग्राम उग्रतारा भगवतीक आराधक अछि। सहरसा जिलाक प्राचीन ऐतिहासिक भूमि मे कन्दाहाक आदित्य मंदिर, बलबा भवानीपुरक काली मंदिर, गणपतगंजक भीमशंकर नाथ, हरदीक दुर्गा स्थान, सिंहेश्वर स्थान आ परसरमा आ बनगामक लक्ष्मीनाथ गोसाँइक कुटी, महिसीक उग्रतारा स्थान, आ मंडन मिश्रक डीह, पनिभरनी (शंकराचार्यक जिज्ञासा वला) इनार यैह सब प्रसिद्ध अछि। ताहू मे तीर्थ स्थान लोक सिंहेश्वर स्थान आ उग्रतारा स्थान एहि दूइयेटा केँ मानैत अछि।

राजकमल चौधरीक पितामह (पण्डित खुदन चौधरी) संस्कृतक सुविख्यात विद्वान् रहथिन। राजकमल चौधरी अपना प्रथम विमाताक दिवंगता भ' गेलाक बाद द्वितीय जननी सँ उत्पन्न सन्तान रहथिन जनिका सम्बन्ध मे पिताक बड़ उच्च महत्वाकांक्षा छलनि। एगारह भाइ-बहीनि मे हिनका आब एकटा बहीनि आ छ: टा भाइ छथिन सहोदर आ वैमात्रेय सेहो। हिनक तेसर सतमाय जीवित छथिन। हिनक दू गोट सहोदर भाय धीर (मुनीन्द्र) एवं सुधीर (माधवेन्द्र) छथिन।

राजकमल चौधरीक विवाह दरभंगा जिलाक वशिष्ठ चानपुरा मे 13 जुलाइ 1951 मे भेल छल। पत्नीक नाम थिकनि श्रीमती शशिकान्ता चौधरी। हिनका दिव्या आ मुक्ता दूटा पुत्री आ सब सँ छोट पुत्र चिरंजीवी नीलू ई तीनिटा सन्तान छथिन।

बाल्यावस्थाहि सँ हिनका अपना पिता सँ एकटा विकर्षण आरम्भ भ' गेलनि जे अन्तधरि बनले रहलनि—बढ़ैत गेलनि। एहि सम्बन्ध मे एकठाम ओ जे लिखने छथि तकर सारांश थिक जे—हम तखन चारि-पाँच बरखक नेना छलहुँ। 1934 क भूकम्पक स्मरण हमरा अछि। हमर माय सोमवारीक पूजा मे तन्मय भेलि सोम देवताक परिक्रमा क' रहल छलीह। तावत भूकम्पक धड़ाका भेल। धरती डोलय लागलि। पिताजी आतंकित जकाँ चिचिया क' चक्कर दैत माय केँ लपकिक' पकड़ि लेलथिन आ माए बाबूजीकेँ । आङन मे दराड़ि फाटि गेलैक। ओ दुहू गोटय अपना प्राणरक्षा मे ततेक आलिप्त छलाह जे ओहि प्रलयकालीन चरम क्षण मे हमरा अस्तित्वक ध्यानो नहि रहलनि आ तकरा बादहि सँ हम अपनाकेँ सब सँ कटल, एकाकी, सब सँ विच्छिन्न एकसरे रहि गेलहुँ। आ क्रमश: हमर ई बोध बढ़िते गेल।

ओहिना एक बेर नेनपनहि मे एकटा संन्यासिनीक संगे पड़ाक' घर सँ राति मे बहरा गेल छलाह आ तखन लालटेन ल' क' बड़े ताकाहेरीक बाद स्टेशन रोडक एकटा सुनसान चौराहाक समीप पानक एक बन्द दोकानक सोझाँ मे राखल बेंच पर निसभेर सुतल पाओल गेलाह। एहिना पिताक मनोनुकूल महत्वाकांक्षाक पूर्त्ति पुत्र मे नहि भ' सकबाक कारणे आ आरो अनेक कारणे पिता-पुत्र मे सौमनस्यक सम्बन्ध नहि भ' सकल। अपना पिता सँ विकर्षित होमक आरो कतेक कारणक उल्लेख एकाधिक बेर ओ कयने छथि। ई भाव हुनक बढ़ैत गेल आ ओ एक दिन अपना पिता सँ उग्र गप्प-सप्पक क्रम मे कहि देलथिन जे हम अहाँ केँ आगि नहि देब। से 10 जनवरी 1967 केँ पिताक मृत्युक बाद तार अयलहु पर ओ अग्नि संस्कारमे (सिमरिया घाट) नहि गेलथिन। श्राद्धकर्मधरि अपनहि कर्ता भ' क' कयलथिन से सम्पूर्ण श्रद्धा आ निष्ठाक संग लौकिक मर्यादाक आपातत: निर्वाह करैत।

परिवारक प्रति वितृष्णा हुनका जिद्दी, अहंवादी, आत्मलीन संगहि सत्यक जिज्ञासु बना देलकनि। फलत: ओ स्वयं अपना केँ मुक्त करबाक प्रयास अपना कविता, कथा आ उपन्यास मे सर्वत्र करैत रहलाह।

एकठाम ओ भावावेश मे लिखने छथि 'हम वर्तमान मनुष्य-व्यवस्था सँ सब

प्रकारक सम्बन्ध तोड़िक' अपन स्वाधीन, परिवारक सीमा सँ स्वतन्त्र, समाजक कायदा-कानून सँ स्वच्छन्द, देशक श्रुति आ प्रतिश्रुति सँ स्वतन्त्र जीवन-कामी छी।'

दोसरठाम लिखने छथि—'हम मुक्ति चाहैत छी। ई मुक्ति वास्तविक जीवन मे असम्भव अछि आ सम्भव अछि सम्भावना आ अ-सम्भावनाक बीच अपन कविता लिखैत, शहर मे जंगल, जंगल मे स्त्री, स्त्री मे मृत्यु आ मृत्यु मे मुक्तिक खोज करैत ई आदमी आ ई लेखक—राजकमल चौधरी व्यवस्था आ अव्यवस्था शासन आ दु:शासन, पशुता आ देवत्वक समस्त वरदान एवं अत्याचारक बीच सँ गुजरि रहल छी।'

एकठाम आरो लिखने छथि—'हम शरीर मे रहिक' शरीर-मुक्त आ समाज मे रहिक' समाज मुक्त छी। जीवन सँ मुक्तिक प्रयासे हमर वास्तविक लेखन प्रयास थिक।'

हिनका सम्बन्ध मे जनवरी' 68 क 'सारिका' मे श्रीराम किशोर द्विवेदी लिखने छथिन जे ई कतहु एकेडेमिक क्वालीफिकेशनक अभावक कारणे हीन भावना सँ ग्रस्त छलाह से हमरा बुझने हुनका भ्रान्ति भेल छनि। हुनक रचने सब सँ ई स्पष्ट भ' जाइत अछि। ई गाँधी हाई स्कूल, नवादा (गया) सँ 1947 ई. मे मैट्रिकुलेशन कयलनि, भागलपुर कॉलेज सँ आइ. काम. आ गया कॉलेज सँ बी.काम. कयलनि।

जे क्यो हुनक विभिन्न पत्र पत्रिका मे प्रकाशित कथा, निबन्ध आ नदी बहती थी, मछली मरी हुई, देहगाथा, शहर था शहर नहीं था, आरण्यक, एक अनार एक बीमार (हिन्दी) उपन्यास, कंकावती आ मुक्ति-प्रसंग (हिन्दी) कविता संग्रह आदि केँ नीक जकाँ पढ़ने छथि वा एहि सबमे सँ कोनो एक्को-दूटा केँ पढ़ने छथि ओ नीक जकाँ जनैत छथि जे हीन भावनाक कारणे ओ कतहु कोनहु रूपें कुण्ठित नहि छलाह। जीविका आ साहित्य-सेवा (ईहो हिनक जीविके जकाँ छल) क क्रम मे ओ 1954-55 मे पटना सचिवालय मे काज कयलनि। 1956-57 मे मसूरी प्रवास, दिल्ली प्रवास एवं ऐकान्तिक यात्रा प्रसंग मे नेपाल भूटान आदि सेहो गेल छलाह। प्राय: 1950 सँ 1963 धरि अनेक बर्ख कलकत्ता रहलाह। तकरा बाद बम्बइ, आ दिल्ली मे सेहो रहलाह। बहुत दिन धरि फ्रीलांसर सेहो रहलाह। पुनि पटना अयलाह आ भिखना पहाड़ी मोहल्ला मे एकटा डेरा ल' क' रहय लगलाह जकर नाम रखलनि 'कामायनी'। बीच मे ओ वर्मा, मलाया, सिंगापुर सेहो गेल छलाह।

कलकत्ता मे रहि ई 'ज्ञानोदय'क सम्पादन बड़े सफलता सँ कयलनि आ तकरा बाद 'रागरंग' नामक हिन्दीक एक अभूतपूर्व उत्तम कोटिक पत्रिका बहार कयलनि,

तकर सुख्यात सम्पादन कयलनि। किछु दिन प्राय: 1954 मे 'नौजवान' हिन्दी मासिकक सम्पादकीय विभाग मे आ किछु दिन दैनिक 'नवराष्ट्र' मे एहिना किछु दिन 'भारत मेल' मे सेहो काज कयलनि। ओना मुख्यत: हिन्दीक प्रसिद्ध धर्मयुग, सारिका, कल्पना, आमुख, अधिकरण, विनोद, लहर, दृष्टिकोण, कहानी, नया संसार, इकाई, शनीचर, युयुत्सा, दर्पण, निवेदिता, आधुनिक, आरम्भ, संक्रामक, अणिमा, आलोचना आदि अनेक पत्रिका मे ई बरोबरि छपैत रहलाह।

मैथिली मे हिनक प्रथम पुस्तक थिक 'स्वरगन्धा' (कविता-संग्रह) जे परम्परा सँ लिखल जाइत (आदरणीय यात्रीजी नागार्जुनक बाद) मैथिलीक नव कविते नहि नवलेखनक एकटा नवीन दिशाक उद्घाटन कयलक। स्वरगन्धाक प्रति हमरा पठबैत ओ लिखने छलाह—'पूज्य किसुन जी, सम्मति आ विचार पठयबाक हेतु स्वरगन्धा पठा रहल छी। नीक लागल की नहि से लिखब। बहुत गोटाक हमरा कोनो परवाहि नहि अछि।'

स्वरगन्धाक प्रकाशनक बाद सरिपहुँ मैथिली-जगत मे एकटा आन्दोलन शुरू भ' गेल। 'स्वरगन्धा नहि दुर्गन्धा थिक जे गन्हाइत छनि।' ई मैथिलीक एक विशिष्ट साहित्यिकक उक्ति थिक। आ तकरा बाद तँ बहुत दिनधरि वैदेही, मिथिला दर्शन आदि मे एहि प्रसंग वाद-विवाद, उतरा चौरी आ आरोप-प्रत्यारोपक क्रम चलैत रहल। अन्तत: स्वरगन्धाक दिशा मे मैथिलीक बहुसंख्यक कवि लोकनिक डेग बढ' लागल आ कविलोकनि ओहि नवालोक मे खूब लिख' लगलाह। आइ तँ स्वरगन्धा यात्रीजीक 'चित्रा'क बाद दोसर माइल स्टोन बुझल जाइत अछि।

मैथिली मे हुनक 'आदि कथा' 'कथा-पराग' 'आन्दोलन, 'स्वरगन्धा' ई सब प्रकाशित अछि। मुदा एहू सँ बेसी मैथिली साहित्य केँ आन्दोलित कयलक अछि हुनक कथा सब। डॉक्टर बालगोविन्द झा 'व्यथित'क उल्लेखानुसार हुनक प्रथम कविता 'शशि-उर्वशी' 1954 क वैदेही मे प्रकाशित भेल छल आ प्रो. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'क लेखानुसार हुनक सम्भवत: सब सँ पहिलुक कथा अक्तूबर 1954क बैदेही मे प्रकाशित भेल छल 'अपराजिता'। तकरा बाद सँ तँ मैथिली कथा-जगत् मे हिनक अप्रतिम प्रसिद्धि आ प्रखर प्रतिभाक अभिव्यक्ति भेल, हुनक कथा—ललका पाग, फुलपरास बाली, चन्नर दास, अन्हार घर साँपे साप, पात, माछ, घड़ी, माहुर, साँझक गाछ आदि सबसँ उपर्युक्त प्रकाशनक अतिरिक्त हुनक लिखल शताधिक कविता, कथा, डायरी, निबन्ध आदि एखनहुँ अप्रकाशित अछि।

बंगलाक सुप्रसिद्ध पुस्तक शंकरक 'चौरंगी', माणिक वन्द्योपाध्यायक 'प्राणेश्वर' आदिक प्राणवन्त अनुवाद ई कयने छथि। बंगलाक ई नीक अनुवादक छलाह जे

सिद्धहस्त एवं माजल बुझल जाइत छलाह। शिवचन्द्र शर्मा एहि सम्बन्ध मे लिखने छथि जे 'दुहू भाषाक जानकार लोकनिक कहब छनि जे दुनू (मूल आ अनुवाद) क रसतत्व-बोध मे कोनो फर्क नहि बुझना जाइछ।' हमरा हुनका सँ पहिल भेंट दरभंगाक कोनो साहित्यिक समारोह मे भेल छल। परिचयपातक बाद एकाएक ओ पयेर छूबिक' गोड़ लगलनि। हम जे हुनका मादे मे सुनने रही—उद्धत, उच्छृंखल, अमर्यादित, अविवेकी से सहसा स्तम्भित रहि गेलहुँ। तकरा बाद सँ तँ पटना, कलकत्ता, भागलपुर, सहरसा, सुपौल आदि अनेक स्थान मे अनेक खेप भेंट भेल आ अन्तधरि हम हुनका व्यवहार मे पूर्ण श्रद्धावान, विनयी, विवेकी आ मर्यादित राजकमल केँ देखलियनि।

राजकमल 22 फरवरी 1966 केँ अनेक प्रकारक व्याधि सँ ग्रस्त भ' क' राजेन्द्र सर्जिकल ब्लौक मे भरती भेलाह। मुख्य रोग रहनि तीव्र मूत्रावरोध। एहि सँ पहिने किछु दिन पटनाक आयुर्वेदिक अस्पताल मे देसी दवाइ सब सेहो करौलनि—'गोमूत्र कल्प' आदि, मुदा रोग बिगड़ैत गेलनि आ अन्त मे पटना अस्पताल मे भरती होम' पड़लनि। पटनाक सुप्रसिद्ध शल्य चिकित्सक डॉ. यू.एन. साही आ वार्ड सर्जन डॉ. जितेन्द्र सहाय हुनक चिकित्सा करैत छलथिन। पेटक आपरेशनक एकाधिक बेर कयेल गेल। लिम्फो सार्कोमा (एक प्रकारक कैन्सर) क सन्देह कयल गेल। डॉक्टर लोकनि किडनी, लीवर, पेरी टोनियम, ब्लाडर सब किछु खोलि देलथिन। अन्ततः पूर्ण तँ नहि मुदा अधिकांशतः स्वस्थ भ' क' 13 अगस्त 1966 केँ अस्पताल सँ मुक्त भ' क' बहरयलाह।

एहि बीच हम मिथिला मिहिरक सम्पादक (प्रिय भाइ) सुधांशु शेखर चौधरीक संग अस्पताल मे भेंट करय गेल छलहुँ। हमरा देखितहि ओ हबर-हबर सिकरेट-लाइटर केँ गेरुआ तर मे नुका लेलनि आ तकरा बाद उठि क' गोड़ लगलनि। हम एहि घटनाक उल्लेख हुनकापर आरोपित विवेकहीनताक प्रत्याख्यानार्थ क' रहल छी। आरो सब गप्प-सप्पक पछाति अस्पतालहि मे ओ हमरा कहलनि जे 'हम भगवती उग्रताराक आराधना क' रहल छी आ तंत्र-साधना दिस हमरा मोन लागि गेल अछि। नीके भेलाक बाद आब गामहि रहब। तंत्रक सम्बन्ध मे हम आदरणीय रमानाथ बाबू (रीडर, मैथिली विभाग) चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज दरभंगा सँ बहुत किछु जिज्ञासा कयेल अछि आ पथ-प्रदर्शन पौलहुँ अछि।' एहि प्रसंग मे आदरणीय रमानाथ बाबूक एकाधिक पत्रो हमरा पढ़' देलनि। कहलनि जे 'आशीर्वाद दिय' हम नीकेँ भ' जाइ आ गाम जाक' ओतहि रही। बहुत बौअयलहुँ, बहुत किछु सहलहुँ अछि। आब गाम आ भगवती उग्रताराक बड़ मोह भ' गेल अछि।' गप्पे

सप्पक क्रम मे हमरा ईहो बुझना गेल जे हुनका अपना सन्देह रहनि पेटक कैन्सरक।

गाम अयलाक बाद पत्र देलनि—'आदरणीय किसुनजी, गोड़ लगै छी। महिसी आबि गेलहुँ। एकटा यात्रा जेना समाप्त भ' गेल हो। आब एतहि उग्रतारा मैयाक सोझाँ मे गामहि रहबाक नेआर अछि। उग्रतारा सँ सैह गछनहु छियनि।'

पत्र सँ बड़ प्रसन्नता भेल। कतेको प्रकारक योजना सब मनहि मन बनब' लगलहुँ जे हुनका संगे कार्यान्वित क' अपना जिला मे किछु उल्लेखनीय काज सब करब। 1967 क 5-6 फरवरी केँ सुपौल मे राष्ट्रीय सार्वजनिक मेलाक तत्वावधान मे मैथिली नवलेखनक, मुख्यत: मैथिलीक नव कविताक द्विदिवसीय सेमिनारक आयोजन कयेल, जाहि मे मेलाक तत्कालीन मंत्री श्री आनन्द मोहन दास एडवोकेट अप्रत्याशित सहयोग आ उत्साह प्राप्त भेल। सेमिनार मे कलकत्ता सँ कीर्त्तिनारायण मिश्र, नेपाल सँ धीरेन्द्र, खजौली सँ जीवकान्त, दरभंगा सँ रमानन्द रेणु, पूर्णिया सँ रवीन्द्र आ महिसी (सहरसा) सँ राजकमल चौधरी अयलाह।

एहि सेमिनारक प्रसंग लिखलियनि तँ राजकमलक एकटा चिट्ठी भेटल जाहि मे लिखल छल—'अबै छी। राजकमल।' तकर बाद हुनका भाए हितेन्द्र जीक पत्र भेटल जे अहाँक योजना सँ भाइजी बड़ प्रभावित आ हर्षित छथि। अहाँ अभूतपूर्व काज क' रहल छी। भाइजी अवश्य औताह मुदा किनकहु महिसी पठबय पड़त जे हिनका ल' जाइनि।' तकरा बाद राजकमलजी लिखलनि—'गोड़ लगै छी। ई एकदम आवश्यक, अद्‌भुत आ अभूतपूर्व काज अपने सुपौल मे क' रहल छी। मैथिली साहित्यक एकटा ऐतिहासिक काज। अहाँ हमर आ मैथिली नव कविताक अग्रज छी। तें अहींक ई दायित्व छल—काज थिक। हम तँ केवल आज्ञाक प्रतीक्षा मे छलहुँ। हर्षें गद्-गद् छी। अवश्य आयेब।'

हुनका अयला सँ सेमिनारक जे अकल्पनीय सफलता भेल तकर उल्लेख कयला सँ बहुत गोटय केँ एहि मे आत्म-प्रशंसाक गन्ध भेटतनि।

राजकमल वस्तुत: अपना रचना मे नीक जकाँ आ साफ-साफ यथावत उद्‌घाटित भेल छथि। ई अक्षरश: सत्य थिक जे ओ अद्‌भुत उदार छलाह। अपना मित्रक प्रति ईमानदार, उदार आ एकदम साफ छलाह। ओ एक ईमानदार लेखक जकाँ स्वाभिमानी, अपना आ अपना लेखनीक क्षमतापर पूर्ण विश्वास रखैत छलाह। ओ नव सँ नव कथा लिखि सकैत छलाह आ पुरान सँ पुरान। श्लोक सँ ल' क' अकविता वा ठोस कविता धरि हुनक गति छलनि। मनमोहन मदारियाक ई उक्ति हुनका सम्बन्ध मे एकदम ठीक छलनि।

हुनक जीवनक आ साहित्यिक चरित्रक विश्लेषण अलग सँ नहि क' हम

हुनक किछु अप्पन उक्ति सब उद्‌धृत कर' चाहैत छी जाहि सँ बहुत बेसी अभिज्ञान हुनका सम्बन्ध मे होइत अछि।

—हम अपना शरीरपर ककरो कोनो अधिकार नहि मानैत छी—शशिक अधिकार नहि। आदेशक, धर्मक, समाजक, साहित्यक, परम्पराक आ संस्कृतिक अधिकार नहि मानैत छी। हम अधिकार सँ ऊपर छी। हम स्वीकृत भ' सकैत छी, अधिकृत नहि। ई हमर अहंकार थिक।

—पराजित हम नहि होइ—नहि रही, यैह प्रयत्न हमरा जीवनक एकमात्र उद्योग थिक।

—राजकमल चौधरी अपना केँ गलत क' सकैत अछि, अनका नहि। ओ गलत कथाक जाल मे बाझिक' मरि जा सकैत अछि मुदा अनका लेल फन्दा नहि लगा सकैत अछि।

—अपमान आ सम्मान दुहू स्थिति हमरा लेल समान रूप सँ दुखदायी अछि। ई हम बेरि-बेरि अनुभव कयने छी। अपमानित भेलापर हम टूटि जाइत छी अथवा तामस मे आबिक' अपमान कयनिहार केँ तोड़ि देब' चाहैत छियैक आ सम्मान हमरा परतंत्र एवं व्यक्तित्वहीन बना दैत अछि।

—मृत्यु राजकमल चौधरी केँ प्रभावित नहि करैछ, कियैक तँ मृत्युक आतंक एतेक दयनीय होइछ, भयानकता एतेक स्वाभाविक आ रहस्यहीन जे देह गतिक एक साधारण औपचारिकता सँ ओकरा अधिक मानबाक कहियो इच्छा नहि होइछ।

—सब सँ पहिने हमर अपन मनुष्य, मने हम। अर्थात् हमर अपना कविताक सब सँ पहिल आ सब सँ महत्वपूर्ण विषय हम स्वयं छी। हम आ हमर अस्तित्व, हम आ हमर अहं, हम आ हमर व्याकरण।

—कविता एक एहन कला थिक जे व्यक्ति कारण मे आस्था रखैछ।

—कविता हमरा लेल भावनाक मायाजाल नहि थिक। जनिका लेल कविता एहन छल से बीति चुकल छथि।

—हम व्यक्ति-सत्य आ वस्तु-सत्य केँ कोनो स्वप्नावेष्टित 'आदर्श' सँ अधिक महत्त्व नहि दैत छियैक। अर्थनीति आ ओटोमेटिक मिशीनक एहि युग मे कविताक शास्त्रीय अरण्यरोदन अथवा अशास्त्रीय प्रलाप दुहु मे सँ किछुओ हमरा प्रसिन्न नहि अछि।

—हमरा जीवन आ हमरा कविता मे कोनो भेद, कोनो दूरी नहि अछि। हमर कविता, हमरा आन्तरिक जीवन आ हमरा अस्तित्वक रहस्य, यथार्थ आ योजना सब केँ अभिव्यक्त एवं अंकित करैत अछि।

यदि हमर कविता हमरा मुक्त नहि करैत अछि तँ हम ओकरा एक वक्तव्य मात्र मानैत छी, कविता नहि।

हुनक अनेक उक्ति आ कथ्य सब सँ छाँटिक' उद्धृत कतिपय उपर्युक्त उक्ति सब सँ हुनक साहित्यक प्रति स्पष्ट दृष्टिकोणक संगहि हुनक जीवन आ आत्मचरित्रक सम्बन्ध मे बहुत किछु अभिज्ञात भ' जाइत अछि।

राजकमलक सम्बन्ध मे किनको ई उक्ति एकदम यथार्थ अछि जे 'अपना अन्तिम दिन मे हुनका परम यथार्थक जे प्रतीति भेलनि, यदि ओ आरो किछु दिन जीवित रहि तदनुसार चलितथि (जकरा ओ स्वीकार कयने छलाह) तँ ओ भारत ताल्सताय बनि जइतथि।'

वस्तुत: जीवनक अन्तिमकाल मे ओ भगवती उग्रतारा सँ ततेक अकृत्रिम आ सहज तादात्म्य क' लेने छलाह जे सुपौल सेमिनारक बाद राजकमलक संग महिसी गेलाक पछाति ओत' सँ घूमिक' सुपौल अयला पर प्रियवर जीवकान्तजी एहि मादे मारतेरास अश्रुत आ अदृष्ट पूर्व अद्भुत आ असाधारण बात सब भावाभिभूत भ' क' कहने छलाह।

सुपौल सेमिनार सँ जाइत काल जखन सुपौल स्टेशन पर हुनका लोकनि केँ विदा करक हेतु आएल सुपौलक सम्भ्रान्त नागरिक सभक समक्ष ट्रेनक सीटी देला पर सहसा झुकि क' राजकमल हमरा एकटा सहज स्नेहें गोड़ लाग' लगलाह तँ कहि नहि कियैक हमर दुहु आँखि भरि आयेल आ मोन अनायास विह्वल-गह्वरित भ' उठल। हुनका देखा देखी धीरेन्द्र, जीवकान्त, रेणु, रवीन्द्र आदि सब गोड़ लाग' लगलाह। हम राजकमल केँ भरि पाँज केँ उठा लेलियनि आ श्लथ कण्ठे केवल एतबे कहलियनि 'राजकमल, फूल बाबू, अहाँ मैथिलीक ओ असामान्य वरद पुत्र छी जे युग प्रवर्त्तन करैत अछि, अहाँक नामे मैथिली साहित्यक इतिहास मे ईमानदार इतिहासकार लोकनि सब सँ महत् आ सब सँ पृथक एकटा स्वतंत्र अध्याय लिखताह जाहि परिच्छेदक आरम्भ श्रद्धेय यात्रीजी (नागार्जुनजी) सँ होयेत। हमरा गौरव अछि जे ओ राजकमल सभक होइतो हमर अप्पन थिकाह।' आ तकरा बाद हमर स्थिति भावाभिभूत भ' जयबाक कारणे आरो बजबाक योग्य नहि रहि गेल, नहि जनैत छलहुँ जे राजकमल सँ सुपौलक बाद आब फेर कहियो भेंट नहि होयेत।

किछुए दिनक बाद सुनल जे राजकमल पुन: बीमार भ' गेलाह अछि। भेल जे नीकेँ भेलाक बाद पुन: सुपौल औताह। सुपौलहि मे 'आखर'क योजना छल जकरा प्रकाशनक भार कीर्त्तिनारायण जी केँ देल गेल छलनि। नेपाल सँ धीरेन्द्र जीक किछु कार्यभारक कार्यान्वयनक गप्प तय भेल छल आ मेला सचिव आनन्द मोहन

बाबूक संग हुनक अनेकविध प्रकाशनक योजना सुपौल मे बनल छल। मुदा दुर्भाग्य जे ओहि योजना सबक कार्यान्वयनक हेतु राजकमल पुनि सुपौल नहि आबि सकलाह। हुनका जीवनक अन्तिम सामूहिक साहित्यिक मंच सुपौले रहल जतय अपना वक्तव्य, अभिभाषण आ अपना कविता सँ शत सहस्र बुद्धिजीवी लोक (नर-नारी) केँ प्रभावित, आन्दोलित आ अभिभूत क' देलनि।

महिसी सँ बीमार भ' सहरसा अस्पताल अयलाह आ ओत' सँ विदा भ' ओ 16 जून 1967 केँ पुन: पटना अस्पताल मे भरती भेलाह आ अपना अन्तरंग मित्र चन्द्रमौलि उपाध्याय केँ कहलथिन—एहिबेर हम नहि बाँचब। मैया (उग्रतारा) हमरा पर बड़ खिसिया गेलीह अछि।

आ हमरा लोकनिक फूलबाबू, मणीन्द्र नारायण—राजकमल चौधरी ओ असाधारण जीनियस राजकमल 19 जून 1967 क पाँच बजे करीब सम्भवत: कारोनरी ऑलक्यूजन (हृदयक दौरा) क कारणे संसार त्याग क' देलनि। राजकमलक प्रति आदरणीय यात्रीजीक कविता मे अभिव्यक्त ई वाक्य सरिपहुँ अल्प वयसहि मे एतेक अधिक ख्याति (हिन्दी-मैथिलीमे) पाबि लेनिहारक हेतु एकदम सटीक अछि—

मुहूर्त ज्वलितं श्रेय:
न च धुमायितं चिरम्।

आखर : राजकमल स्मृति विशेषांक

(एकांकी)

उदना रे मोर कतय गेला

पात्र

विद्यापति ठाकुर
उदना
विद्यापतिक पत्नी
दुइ गोट बटोही।

प्रथम दृश्य

(स्थान—महाकवि विद्यापति ठाकुरक गृह। महाकवि पूजापर बैसल छथि। पूजा समाप्तिपर अछि। महाकवि भक्ति भाव सँ भरल गोसाउनिक गीत गाबि रहल छथि।)

गोसाउनिक गीत

जय-जय भैरवि असुर भयावनि पशुपति भामिनि माया
सहज सुमति वर दिअओ गोसाउनि अनुगत गति तुअ पाया
वासर रैनि शवासन शोभित, चरण चन्द्रमणि चूड़ा
कतओक दैत्य मारि मुख मेलल, कतओ उगलि कैल कूड़ा
सामर वरण् नयन अनुरंजित जलद योग फुल कोका
कटकट विकट ओठ फुट पाँड़रि लिधुर फेन उठ फोका
घन घन-घनय घुघरु कत बाजय हनहन कर तुअ काता
विद्यापति कवि तुअ पदसेवक पुत्र बिसरु जनु माता।

(गीतक अन्त मे उदनाक प्रवेश)

उदना — (साधारण वेश-भूषा मे) महापंडित केँ हमर अभिवादन स्वीकृत हो। महामन्य! हम आधुनिक युगान्तकारी महामहिम महाकवि विद्यापति ठाकुरक दर्शन कर' चाहैत छी।

विद्यापति — भगवती महामाया अहाँपर प्रसन्न होथु। कहू की कहबाक

अछि? हम विद्यापति ठाकुर अहाँक समक्ष उपस्थित छी।

उदना — अहा! की अपने स्वयं विद्यापति थिकहुँ? हम कृतकार्य भेलहुँ जे अपनेक ओत' वृत्तिक याचना कर' आयल छी। हमरा अपना सेवकक रूप मे राखल जाय।

विद्यापति — अहाँक नाम की थिक?

उदना — हमर नाम थिक उदना।

विद्यापति — (किछु गंभीर जकाँ स्वागत) ई केहन उत्तम संस्कारक व्यक्ति अछि? एकर शिष्टाचार आ बजबाक क्रम एकर हार्दिक उत्तम-ताक परिचय दैत अछि (प्रकट) तों कोन-कोन काज क' सकैत छह?

उदना — जे आदेश हो...

विद्यापति — अस्तु, जाह स्नान-भोजन करह। आइ सँ तों नियुक्त भेलह।

उदना — हम कृतज्ञ छी कवि कोकिल!

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

(महाकवि कतहु जा रहल छथि। आगाँ-आगाँ महाकवि आ पाछाँ-पाछाँ उदना, माथपर मोटा, जाहि मे लोटा, खराम ओ कम्बल बान्हल अछि। जेठ मासक मध्याह्न। मार्त्तण्डक प्रचण्ड किरण सँ भूमि तबि रहल अछि। एक पाँतर मे महाकवि जा रहल छथि। आगाँ मे एकटा पाकड़िक झमटगर गाछ अछि।)

विद्यापति — उदना, ओह! जेठ मासक एहि खिसिएल सूर्यक किरण-किरण-निदाघ सँ तबधल प्रकृति असह्य भ' रहल अछि। ओमहर देख, बूझि पड़ैछ जेना आगाँ कतो कोनो गाछ-वृक्ष समीप मे नहि अछि।

उदना — घामें तर-बतर भेल अपनेक शरीर श्रान्त बूझि पड़ैत अछि। एहिठाम ई पाकड़िक गाछ बेस झमटगर अछि। कने विश्राम क' लेल जाओ दशावधान!

विद्यापति — हँ हमरो इएह विचार अछि। (स्वयं बैसिक') ह'-ह' छाहरि तर मे रहबाक लोक केँ सतत् इच्छा रहैत छैक। बेस, मोटा राखिक' कने सुस्ता ले, तखन चलब।

उदना — कविशेखर! छाहरिक अपेक्षा लोक केँ प्रतिक्षण रहैत छैक, ई अपने सत्य कहल। की कम्मल ओछा दी?

विद्यापति — नहि, रह' दे। कनेक काल तँ बैसब। कतहु सँ पानि ला, पिआस लागल अछि।

उदना — (ठाढ़ भ' चारू कात नजरि दोड़बैत) मुदा एहि सभ मे कतहु कूप, सरोवर वा पोखरि कहाँ देखैत छिऐक? च'रो तँ सुखैले अछि।

विद्यापति — मुदा हमरा पियास बड़ जोर लागि गेल अछि। कतहु सँ पानिक उपाय कर।

उदना — हम कने घूमि केँ देखैत छिऐक जे कतहु जल भेटबाक सम्भावना अछि वा नहि... (एमहर-ओमहर घुमैत अछि)

विद्यापति — पिआसें कण्ठ सुखा गेल अछि। मोन बड़ विकल भ' उठल अछि।

उदना — (समीप आबि) कविशेखर, पानिक त' कतहु कोनो उपाय नहि देखि पड़ैत अछि।

विद्यापति — कतहु सँ ला उदना, कोनो उपाय कर।

उदना — (स्वगत) महाकवि पियासें बड़ व्याकुल भ' गेलाह अछि। की करू? कत' सँ जल आनू (कनेक सोचिक') मुदा बिनु अनने महाकवि केँ बड़ कष्ट हेतनि। की कयल जाय? (गम्भीर बनि) अस्तु, हम अपना जटा सँ गंगाजल द' क' हिनका तृप्त करी (लोटा फोलि) कवि पंचानन! कने थम्हल जाओ, हम कोनो उद्योग करैत छी।

विद्यापति — हँ' हँ' (व्याकुल भेल सन) कतहु सँ ला। (उदना जाइत अछि) उदना कतहु सँ जल अवश्य आनत। ओ कठिन सँ कठिन काज क' लैत अछि। मुदा एहि सब मे कतहु जल भेटबाक सम्भावना नहि बूझि पड़ैत अछि। ओह, बड़े जोर सँ पिआस लागि गेल अछि।

उदना — (प्रवेश क') लेल जाय महाकवि।

विद्यापति — (लोटा ल' क') धन्य, धन्य, एते शीघ्र कत' जल भेटलौक?

उदना — निकटे सँ अनने छी?

विद्यापति — हँ' हँ' ई तँ अत्यत्त निकट सँ अनने हेबै। जयबा-अयबा मे कतेक समय लगलौक अछि। (जल पिबैत छथि। सहसा रूकिक') उदना! ई तँ साधारण जल नहि थिक। ई तँ साक्षात

गंगा-माइक जल बूझि पड़ैत अछि। (आश्चर्यित भेल) ई कत' सँ अनलें अछि?

उदना — जी-जी एहिठाम स,ँ अपने पीबू ने।

विद्यापति — नहि, नहि पहिने कह ई कत' भेटलौक?

उदना — ताहि लेल की करबैक? अपने आम खायब कि गाछ गनब?

विद्यापति — (उदना केँ पकड़ि) उदना! उदना!! हमरा कह। तों ई जल कत सँ अनलें? एहिठाम कत' गंगाजी बहैत छथि! आश्चर्य! आश्चर्य!! महान आश्चर्य!!!

उदना — अपने कथीले' एहि तर्क मे पड़ल छी? जल पीबि लेल जाय आ प्रस्थान कयल जाय।

विद्यापति — नहि उदना, हम बिनु रहस्य जनने एहिठाम सँ नहि जा सकैत छी। कह एहि मे की रहस्य छैक। एहिठाम कतहु साधारणो जलक संभावना नहि छैक। ई गंगाजल कत' सँ आयल? (उदना केँ पुनि पकड़िक') बाज-बाज, एहि मे की रहस्य छैक? हमरा सन्देह भ' रहल अछि। उदना-उदना, तों चुप किऐक छें? तों के थिकें? तोरा ई जल कतय प्राप्त भेलौक?

उदना — हम की कहू! (चुप भ' जाइत अछि।)

विद्यापति — तों नहि कहबें? तँ बिनु जनने एहिठाम सँ चलबा मे हमहूँ असमर्थ छी। (किछु हटिक' बैसि रहैत छथि) शिव-शिव, ई अप्रत्याशित घटना कोना घटित भ' गेल? यदि रहस्योद्घाटन नहि हैत तँ हम एहिठाम सँ नहि उठब।

उदना — (कनेक पाछाँ हटैत स्वगत) ओह! आब की करी? ई तँ विचित्र जकाँ पकड़ल गेलौं। तँ...की अपन रहस्य बुझा दिअनि? अपन वास्तविक रूप देखा दिअनि? महाकवि तँ कृत निश्चय भ' रहलाह अछि।

(तावत दू बटोहीक प्रवेश होइत अछि आ उदना अन्तर्ध्यान भ' जाइत अछि।)

(नोट—एहिठाम रंगमंचक सुविधाक लेल उदना तथा विद्यापतिक बीच मे एक पर्दा खसाक' ई दृश्य कयल जा सकैछ।)

एक बटोही — अपने के थिकहुँ महाशय?

विद्यापति — हम? एक यात्री छी।

दोसर बटोही — कत' जा रहल छी?

विद्यापति — महाराज शिवसिंह राज्यक प्रजा निरीक्षण मे सम्प्रति एम्हरे आयल छथि।

एक बटोही — हँ' हँ' हमरो लोकनि तँ ओतहि जाइत छी। सुनल जे महाकवि विद्यापति ठाकुर सेहो एम्हर औताह। हुनक दर्शन करबाक बड़ अभिलाषा अछि।

दोसर बटोही — तँ बैसल किएक छी? चलू ने अहूँ।

एक बटोही — आउ पाछाँ सँ। हमरालोकनि कनिञे-कनिञे तावत बढ़ैत छी।

विद्यापति — बेस, बेस, चलू आगाँ। हमहूँ इएह आबि रहल छी।

(बटोही सब चल जाइत अछि।)

विद्यापति — (उदना केँ ताकिक') उदना तों कत' गेलें? हमरा अपन रहस्य बुझा दे।

उदना — (नेपथ्य सँ—एवमस्तु!)

(पर्दा उठैत अछि उदना महादेवक रूप मे देखि पड़ैत अछि।)

विद्यापति — ऐँ? देवाधिदेव महादेव!!! (पैर पर खसैत) प्रभो! हमरा क्षमा कयल जाय। हम बिनु जनने अपराध कयल अछि।

उदना — वत्स विद्यापति! हम अहाँक भक्ति सँ गद्गद् आ सुमधुर काव्य रचना सँ प्रभावित भ' अहाँक सहवासक हेतु विवश भ' गेलहुँ। तें अहाँक सेवकक रूप मे रहैत छी। अहाँ एहि रहस्यक उद्घाटन जुनि करी कथञ्चित् प्रमादोवशात् रहस्य कहि देलापर, हम अन्तर्ध्यान भ' जायब तें हमरा संग अहाँ पूर्ववत् भाव राखि एहि गोपनीय रहस्यक रक्षा करू। हम अहाँपर प्रसन्न छी।

विद्यापति — भक्तवत्सल भगवान आशुतोषक जे आज्ञा।

(पटाक्षेप)

तृतीय दृश्य

(महाकवि अपना ओहिठाम पूजापर बैसल छथि, पूजा समाप्त भ' गेल। नचारी गाबि रहल छथि।)

आहे अहाँ शिव धरू नटवेष हम डमरू बजायब हे।।

तोहें जे कहइ छह गौरा नाचय

हम कोना नाचब हे।।
आहे चारि सोच मन होय
चारि कोना बाँचत हे।।
जटा सँ छिलकत गंग रंगभूमि पाटत हे।
आहे होयत सहस मुख
चीर समेटलो नहि जायत रे।।
शिर सँ ससरत साँप
भूमि पर लोटत हे।।
आहे कातिक पोसल मयूर
सेहो धरि खायत रे।।
अमिय चुबिय भूमि खसत बघम्बर जागत हे।
आहे होयत बघम्बर बाघ बसहा धरि खायत हे।।
मुण्डमाल टूटि खसत मसानी जागत हे।
आहे तोहें गौरा जयबह पड़ाय नाच के नाचत हे।।
भनहि विद्यापति गाओल गाबि सुनाओल हे।
आहे राखल गौरीक मान हर नाच देखाओल हे।।

महाकविक पत्नी — (नेपथ्य सँ) उदन! उदन छी औ! कने जल्दी केराक पात काटि आनू।

उदना — (प्रवेश क') मालिकिनी, की हेतैक केराक पात?

महाकविक पत्नी — (नेपथ्यसँ) महाकवि ओहिपर पनपियाइ करताह।

उदना — हँ' हँ' इएह जाइत छी। (प्रस्थान)

विद्यापति — (पूजा समाप्त करैत)
करचरण कृतं वा कायजं कर्मजवा
श्रवण नयनजवा माससं वाऽपराधम्।।
विहितम्विहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय-जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।

(प्रणाम क' नेपथ्य दिस) दुल्लहिक माइ, पनिपिआइ प्रस्तुत अछि?

विद्यापतिक पत्नी — इएह भ' गेल। कने उदना पात ल' क' नहि आयल अछि।

विद्यापति — शीघ्र करू। हमरा महाराज शिव सिंह सँ भेंट करय एखने जेबाक अछि।

विद्यापतिक पत्नी — (चंचल चित्तें) उदना! उदना!! (खिसियाक') ईह? केराक पात की नीलकमलसन दुष्प्राय भ' गेलैक? एतेक कतौ देरी लागय (पुनः उदनाक जिज्ञासा करैत) उदना? उदना?? करजानो मे तँ नहि देखैत छिऐक। कत' चल गेल?

विद्यापति — की भेल? विलम्ब अछि की?

विद्यापतिक पत्नी — इएह प्रबन्ध करैत छी (स्वगत) हे महामाये। महाकवि केँ शीघ्रता छनि आ ई जाक' बैसि रहल अछि। उदना? उदना?? ओह! अकच्छ भ' गेलहुँ। एहेन कतहु देहचोर बहिया होअय?

उदना — इएह केराक...

विद्यापतिक पत्नी — (खिसियाक') एते काल सँ की करैत छलहुँ। (मारबाक उपक्रम करैत) हम अहाँ केँ नहि राख' चाहैत छी। जाउ, चल जाउ एतय सँ आइए जाउ, एखनहि जाउ।

विद्यापति — (हड़बड़ा क') हाँ, हाँ, ई की करैत छी? हिनकापर हाथ उठबैत छिअनि? हिनका विदा करैत छिअनि? शिव, शिव! अरे ई तँ साक्षात कैलास निवासी महादेव थिकाह।

विद्यापतिक पत्नी — अँय? की कहल?

(उदना अन्तर्ध्यान होइत छथि)

विद्यापति — उदना? उदना??

विद्यापतिक पत्नी — उदना? उदना??

विद्यापति — उदना, हमर उदना? हमर महादेव? हमर मालिक? हमर बहिया? (विक्षिप्त जकाँ) अहाँ की कयलहुँ? अहाँ की कयलहुँ दुल्लहिक माय? हमर उदना कत' गेल? उदना? उदना?? ओह! हम आब कोना जीब?

विद्यापतिक पत्नी — नाथ बिनु जनने ई अपराध अकस्मात भ' गेल हमरा सँ, क्षमा कयल जाओ (जाइत छथि)

विद्यापति — भगवान भूतवाहन? पशुपते? शिवशंकर? अहाँ कत' गेलहुँ? शिव, शिव, ई की कहैत छी? नहि नहि ओ शिव नहि छलाह ओ छलाह ओ उदना छल। उदना,

उदना तों कत गेलें? हे दैव...(करुण स्वरें)

उदना रे मोर कतय गेलाह
कत' गेलाह शिव किदहु भेलाह
उदना रे मोर कतय गेलाह

उदना? उदना?? कतय छें हमर उदना! आ शीघ्र आ हम तोरा आब कहियो किछु नहि कहबौक। तों नहि ऐबें! तँ ले हम तोरा सँ नहि बजबौक। (कने रूसबाक भावें थम्हिक') उदना? उदना?? तों नहि बजओने अबइ छें, ने प्रलोभन देने अबइ छें, ने रूसने अबइ छें, तो कतय छें! उदना! उदना!!

(पुनः गबैत छथि)

उदना रे मोर कतय गेलाह।
कतय गेला शिव किदहु भेलाह।।
भांग नहि बटुआ रूसि बैसलाह
जोहि हेरि आनि देल हँसि उठलाह।।
जे मोर कहता उदना उदेश।
तिनकहुँ दे कर कङना बेस।।
विद्यापति भन उदना सँ काज।
नहि हितकर मोरा त्रिभुवन राज।।

उदना रे—उदना रे—उदना रे...

(विक्षिप्त जकाँ खसैत छथि)

[पटाक्षेप]

निर्माण : 6 नवंबर 1954
प्रतिनिधि एकांकी : जनवरी 1967

(एकांकी)

विश्वामित्र

(अंक-1, दृश्य-1)

(महाराज दशरथ राजसिंहासन पर बैसल छथि, दरबार लागल अछि आ परदा धीरे-धीरे उठैत अछि। नेपथ्य मे सस्वर पाठ—)

विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी, बसहिं विपिन शुभ आश्रम ज्ञानी
जहँ जप यज्ञ भोग मुनि करहीं, अति मारीच सुबाहुहि डरहीं
देखत यज्ञ निसाचर धावहिं, करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं
गाधि तनय मन चिन्ता व्यापी, हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी
बहुविध करत मनोरथ, जात लागि नहिं वार
करि मज्जन सरयू जल, गये भूप दरबार

(गान समाप्त होइते द्वारपालक प्रवेश होइत अछि।)

द्वारपाल — (दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम करैत) राजाधिराज अयोध्या नरेश श्री दशरथ महाराज की जय।

दशरथ — की थिक द्वारपाल?

द्वारपाल — महाराज, द्वारहि पर सँ हम देखल जे महर्षि विश्वामित्र दरबार दिस पधारि रहल छथि।

दशरथ — अहो भाग्य, द्वारपाल। महर्षि केँ संपूर्ण सम्मानक संग आनल जाय।

(द्वारपाल जाइत अछि।)

सुमन्त — महाराज, एखन राज्य सम्बन्धी किछु विचार-विमर्श करबाक अछि।

दशरथ — मंत्रिवर, एखन ई काज स्थगित क' दिऔक। गुरुकुलक मर्यादाक सबसँ पहिने ध्यान रहबाक चाही।

सुमन्त — जे आज्ञा महाराज।

दशरथ — हँ, सुमन्त। गुरुलोकनिक उचित सम्मानक बिनु विद्या-प्रचार नहि भ' सकैत अछि आ शिक्षाक बिनु राष्ट्रक विकास अपूर्ण रहि जायत।

सुमन्त — अपने यथार्थ कहैत छी देव।

दशरथ — तें महर्षि विश्वामित्रक शुभागमनक उपलक्ष्य मे हुनक स्वागत-सम्मानक तैयारी करू।

सुमन्त — जे आज्ञा। (नेपथ्य दिस) क्यो थिकहुँ ?

(एक दौवारिक क प्रवेश)

दौवारिक — आज्ञा श्रीमान।

सुमन्त — अतिथि सत्कारक प्रभारी केँ सूचित करिअनु जे महर्षि विश्वामित्रक स्वागत लेल अर्घ्य, आचमनीय आदिक व्यवस्था करथि।

दौवारिक — जे आज्ञा। (जाइत अछि।)

सुमन्त — महाराज, हम स्वयं आगाँ बढ़ि गुरुश्रेष्ठ विश्वामित्रक अभ्यर्थना करैत छियनि।

दशरथ — अवश्य, अवश्य। हमहूँ अहाँक संग चलब।

सुमन्त — अपने कतय जायब महाराज? हम तँ जाइये रहल छी।

दशरथ — नहि, सुमन्त। गुरुक पद सम्राट-पद सँ श्रेष्ठ होइत अछि। महर्षि विश्वामित्र तँ गुरुओ मे श्रेष्ठ छथि। ओ गायत्री मंत्रक शिक्षा सँ एक अलौकिक तेजक संचार कयलनि अछि। ओ अनेक प्रकारक विद्याक ज्ञाता छथि।

सुमन्त — ई तँ सर्वविदित थिक देव।

दशरथ — अतः हुनक सम्मान आ स्वागत लेल हमहूँ जायब।

सुमन्त — जेहन महाराजक इच्छा।

(महाराज दशरथ सिंहासन सँ उठैत छथि।)

दरबारीगण — महाराजक शिक्षा प्रेम धन्य थिक।

(नेपथ्य मे सस्वर पाठ—)

मुनि आगमन सुना जब राजा, मिलन गयउ लै विप्र समाजा।

(पटाक्षेप आ सबहक प्रस्थान।)

अंक-1, दृश्य-2

(एक दिस सँ महर्षि विश्वामित्र अबैत छथि आ दोसर दिस सँ सुमन्त आ किछु ब्राह्मण संग महाराज दशरथ अबैत छथि।)

विश्वामित्र — अहा! धन्य थिक ई अयोध्या, जतय दशरथ सन राजा छथि आ धन्य छथि महाराज दशरथ जनिका राम सन चारि-चारि राजकुमार छनि।

दशरथ — आ धन्य थिक आजुक दिन जे महर्षि विश्वामित्र पधारि रहल छथि। शस्त्र-विद्या तथा शास्त्र विद्याक निष्णात महाज्ञानी विश्वामित्र जीक चरण मे हमर प्रणाम स्वीकार हो।

विश्वामित्र — महाराज विजयी होथु।

सुमन्त — महामुनि केँ हमर अभिवादन।

विश्वामित्र — कल्याण हो मंत्रिवर।

दशरथ — हम कृतार्थ थिकहुँ महामुनि अपनेक दर्शन पाबि। ई अर्घ्य आ आचमनीय ग्रहण कयल जाओ।

विश्वामित्र — हम अहाँक स्वागत-सत्कार सँ संतुष्ट छी महाराज।

दशरथ — (अपन सिंहासन दिस संकेत करैत) आसन ग्रहण क' हमरा अनुगृहीत करी महर्षि।

विश्वामित्र — अहाँक नम्रता धन्य अछि। चक्रवर्त्ती सम्राट भइयो क' अहाँ हमरा लेल अपन आसन छोड़ि देल।

(आसन पर बैसैत छथि, दशरथ सेहो दोसर आसन पर बैसैत छथि।)

दशरथ — मुनिराज, ई हम कोन पैघ काज कयलहुँ? ई तँ मात्र गुरुकुलक उचित सम्मान थिक। शिक्षा प्रदान करय बला सँ पैघ दोसर क्यो भ' सकैत अछि संसार मे?

विश्वामित्र — सत्य थिक महाराज, जावत ई भारतवर्ष अज्ञानक अंधकार केँ विनष्ट क' ज्ञानक आलोक प्रसारित कर' बला गुरुलोकनिक सम्मान आ उचित प्रतिपालन करैत रहत, तावत एकर विकास आ कल्याण पर कोनो बाधा नहि आबि सकैत अछि।

दशरथ — सत्य थिक महामुनि।

विश्वामित्र — आ जाहि दिन एहि परम्परा पर आघात हैत, ओहि दिन राष्ट्र-कल्याणक ई क्रम भंग भ' जायत।

दशरथ — ओ अभागल दिन हैत मुनिराज। मुदा हमरा लेल किछु सेवाक आज्ञा तँ देल जाय मुनिवर।

विश्वामित्र — हँ-हँ, से तँ अवश्ये।

दशरथ — श्रीमान सकुशल छथि ने? आ आश्रम मे शांति छैक ने?

विश्वामित्र — महाराज, आश्रम मे किछु मूर्ख असुर लोकनि उपद्रव मचौने अछि। ताहि सँ ज्ञान-यज्ञ आदि मे बाधा भ' रहल अछि।

दशरथ — की कहल गेलै—मूर्ख असुरलोकनि?

विश्वामित्र — हँ, महाराज, ओ लोकनि शिक्षा-प्रचार तथा ज्ञान प्राप्तिक दिशा मे बाधित करैत अछि।

दशरथ — फेर तँ ओकर निराकरण हेबाक चाही मुनिवर।

विश्वामित्र — एहि लेल तँ हम एतय आयल छी। ई काज तँ शासकेक अछि।

सुमन्त — हँ, महामुनि। शासक दिस सँ जाधरि राष्ट्र मे सुरक्षाक प्रबंध नहि कयल जायत, ताधरि ज्ञान विकासक कार्य कोना भ' सकैत अछि?

दशरथ — तँ हमरा आज्ञा देल जाओ।

विश्वामित्र — हम एहि विघ्नक निवारणक लेल राजकुमार राम आ हुनक अनुज लक्ष्मणक सहायता चाहैत छी।

दशरथ — की कहलहुँ? राम आ लक्ष्मण केँ वन ल' जाइ चाहैत छी? (तावत राम, लक्ष्मण, भरत आ शत्रुघ्न अबैत छथि तथा मुनिक चरण मे झुकि क' प्रणाम करैत छथि।)

विश्वामित्र — राजकुमार लोकनि चिरंजीवी होथि। महाराज देशक आवश्यकता केँ देखैत जँ अहाँ अपन पुत्र लोकनि केँ देश-कार्य मे नहि प्रेरित करबै तँ जनसाधारण की क' सकैत अछि?

दशरथ — महामुनि, हमरा ठीके किछु काल लेल पुत्र मोह भ' गेल छल।

विश्वामित्र — ई तँ ठीक आ स्वाभाविके थिक। मुदा देशक आगाँ ई कोनो महत्व नहि रखैत अछि। अहाँ प्रसन्नतापूर्वक अपन एहि राजकुमार लोकनि केँ किछु दिन लेल प्रदान करू।

दशरथ — महामुनि...।

विश्वामित्र — हँ महाराज, एहि सँ अहाँक धर्म आ यशक वृद्धि हैत तथा

एहि राजकुमार लोकनिक कल्याण हैत।

दशरथ — गुरु आज्ञाक समक्ष हमरा लेल किछुओ अदेय नहि थिक।

विश्वामित्र — धन्यवाद महाराज। यैह सत्य शासन-बोध थिक।

(महाराज दशरथ राम आ लक्ष्मण केँ क्रमहि विश्वामित्रक सोझाँ ठाढ़ क' दैत छथि।)

दशरथ — राजकुमार लोकनि, पूर्ण अनुशासित रहिक' गुरुक आज्ञाक पालन करब आ देशक कल्याणक काज करब।

राम — हम एकर अक्षरशः पालन करब पिताजी।

लक्ष्मण — आ हम एहि आदर्श सँ रंचमात्रहु विचलित नहि होयब।

दशरथ — हमरा अहाँ लोकनि सँ यैह आशा छल।

विश्वामित्र — अच्छा तँ हम आब चलैत छी। देश कल्याणक भावना बनल रहबाक चाही महाराज।

(महाराज शनैः शनैः उठैत छथि आ राम आ लक्ष्मण पाछाँ-पाछाँ तथा मुनि विश्वामित्र आगाँ-आगाँ विदा होइत छथि। नेपथ्य मे सस्वर गान।)

(अपूर्ण)

(एकांकी)

भीमक आनंद

प्रथम दृश्य

स्थान — युधिष्ठिरक दरबार।

काल — महाभारतक युद्ध मे विजयी युधिष्ठिर राजसूय यज्ञ क' चुकल छथि।

समय — अपराह्न, सूर्यास्तक समय निकट अछि।

(दरबार लागल अछि, सिंहासन पर महाराज युधिष्ठिर समस्त आर्यावर्तक एकछत्र शासकक उद्दीपित गौरव सँ गंभीर आ तेजोमय मुद्रा मे आसीन छथि। दुहू कात यथास्थान एवं यथासन गांडीवधारी अर्जुन, गदाधर भीम, धनुर्धर नकुल आ सहदेवक अतिरिक्त अन्यान्य पार्षद-परिचर आदि छथि।)

युधिष्ठिर — महामंत्री, की आओर कोनो कार्य अवशिष्ट रहि गेल अछि ?

महामंत्री — (एकटा कागत समेटैत) आजुक संपादनीय सब सम्पन्न भ' गेल अछि सम्राट।

युधिष्ठिर — यैह थिक साम्राज्य आ यैह थिक साम्राज्योपभोग्यक लिप्सा। प्रजारंजन आ लोकपालनक समस्त दायित्वे साम्राज्यक फल थिक।

महामंत्री — यथार्थ देव, लोककल्याणक हेतु अपन समस्त जीवन, जीवनक बल-वैभव, विद्या-विवेक, ज्ञान-प्रज्ञा आ शक्ति-सामर्थ्य समर्पित क' देबाक नामे थिक साम्राज्योपभोग।

अर्जुन — मुदा ई भेल केवल ओहि सम्राटक हेतु जे जीवनक विधि-निषेधक पालन करैत सन्मार्गक स्थापनाक उद्देश्य ल' आदर्श शासनाधिकारी होइत छथि।

महामंत्री — सत्य महावीर, ई अपने यथार्थ कहल।

अर्जुन — जे एहि सब केँ बिसरि, केवल अपने आत्मतुष्टिक हेतु मात्र अपन स्वार्थपूर्त्तिक हेतु निकृष्ट विषय-भोगे केँ लक्ष्य रखैत अछि ओकरा लेल ई साम्राज्य कर्त्तव्यक नहि, मात्र अधिकारे टाक साधन आ आधार होइत अछि।

युधिष्ठिर — समीचीन, पूर्ण समीचीन कहलहुँ।

अर्जुन — आओर महाराज, जे साम्राज्य पाबि आनक; तात्पर्य—ओ अपन शासित प्रजा हो वा जे क्यो—जीवनक समस्त समुचित आवश्यकता-पूर्त्तिक सुविधा नहि द' सकैत अछि, ओ साम्राज्यक अनधिकारी थिक।

भीम — सर्वकालक हेतु ई उचित सिद्धान्त थिक।

महामंत्री — मुदा, क्षमा कयल जाय देव, ई आदर्श अवश्य थिक जकर रक्षा भविष्य मे भ' सकत वा नहि, से संदिग्ध।

अर्जुन — से तँ सत्ते। मनुष्यक अपन अहम्मन्यता ओकर मनोभाव केँ बदलि दैत छैक।

भीम — (हँसैत) जेना दु:शासनक जेठ भाइ दुर्योधन।

युधिष्ठिर — मुदा, भीम। ओ हमरोलोकनिक भाइ छलाह।

भीम — छलाह, छलाह महाराज। दुनू गोटे दू मार्गक पथिक छलहुँ। (पुन: हँसैत छथि।)

युधिष्ठिर — अलं विवादेन। संध्याकाल उपस्थित अछि। आब सायंकृत्यक हेतु जयबाक अछि।

(द्वारपाल प्रवेश करैत।)

द्वारपाल — सम्राट धर्मराजक जय हो।

युधिष्ठिर — (समुत्सुक मुद्रा मे) की थिक दौवारिक?

द्वारपाल — महामहिम, द्वार पर एक अग्निवर्ण अपरिचित द्विजराज अयलाह अछि।

युधिष्ठिर — सादर ल' अनियनु।

द्वारपाल — जे आदेश हो। (जाइत अछि। आ एक ब्राह्मणक संग पुन: प्रवेश।)

द्वारपाल — उपस्थित छथि महाराज।

युधिष्ठिर — (उठैत) हम पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर अभिवादन करैत छी द्विजवर।

ब्राह्मण — शुभानि सन्तु महाराज।

युधिष्ठिर — हमरा योग्य सेवाक आदेश देल जाय।

ब्राह्मण — महाराज, हम एक यज्ञ करय चाहैत छी। ताहि लेल हमरा तिल, तण्डुल, यव, आज्य, शर्करा आदिक प्रबंध क' देल जाय।

(किसुनजीक कविता 'सत्ताक मद' पर आधारित अपूर्ण एकांकी)

स्वास्थ्यक गप्प

स्थान — निरसन झाक दलान

(घूर लग लोक सब बैसल छथि, गप्प भै रहल अछि।)

निरसन — ईह! बचकुन भाइ, आइ जाड़ केहेन होइ छैक।

बचकुन — त'। पछबा बसात सिप्पी मारि रहल अछि।

रामू — हमरा तँ पोखरि दिस गेल छलहुँ से तेहेन कै दलका देलक जे दाँत कठताल बजबै लागल।

बचकुन — हौजी निरसन भाइ...।

निरसन — आँय, की कहै छह?

बचकुन — कारी झाक पोखरि मे जे माछ अछि पोसल सब?

निरसन — माछक संगहि लीधो बेस पौरल छैक।

रामू — लीध मे जे कबै सब अजोध-अजोध अछि से...।

बचकुन — हँ, से तँ अछिए मुदा बेस बिसाइन महकै छैक।

निरसन — से तँ पानियें खराप छैक।

बचकुन — हम तँ ओही पोखरि मे नहाइ छी, से पानि जे ठरल रहै छैक।

निरसन — आ भानस कोन पानि लै कै होइ छह?

बचकुन — ओही सँ।

रामू — आ महींस केँ कोन मे मँजै छहक?

बचकुन — ओही मे।

निरसन — आ ओकर महार पर गामक छौंड़ा सब नदी सेहो फिरैत जाइत अछि।

बचकुन — हँ, से तँ होइतहि छैक।

निरसन — तैं ने तोरा कखनहुँ शूल तँ कखनहुँ मलेरिया आ कखनहुँ खजुली तँ कखनहुँ पेट मे मोचाड़ होइत रहैत छह।

बचकुन — धू बताह? से की ओ पोखरि भुताहि अछि?

निरसन — हँ हौ। ओ तँ डब्बल भुताहि बुझह। ओकर पानि गंदा छैक। तैं ई रोग सब होइत छह।

बचकुन — ऐं हौ निरसन, तों हमरा ई अलच्छ कथा सब कहबह?

निरसन — हम की अलच्छ कथा कहबह? तों अपने अपना केँ बिगाड़ि रहल छह।

बचकुन — जाह, जाह। हम एहेन बूड़ि नहि छी।

रामू — छोड़ह एहि घोंघाउजि केँ। बूड़ि जे अछि देबन क बेटा। ओहि दिन बजार सँ अबैत रही साँझुक पहर। देखै छी जे सड़कक कातहि मे बैसि कै नदी फीरि रहल अछि। जैं टोकलिऐक कि से पजेबा फेकलक जे दसे हाथ सँ बाँचि गेलहुँ।

बचकुन — नीके कैलकहु की। सड़क तोहर थिकहु जे तों टोकलहक?

निरसन — से की कहै छहक? सड़क तँ सभक थिकै। कारण सड़क पर दै कै सब चलैत अछि। सड़क केँ घिनौने ओहि गंदगीक फल सब केँ भोग' पड़तैक।

बचकुन — हौ जी, तों तँ सनकल जकाँ बूझि पड़ै छह?

रामू — हौ जी बचकुन भाइ, कंटीर बाबू जे सनकि गेलाह अछि से देखलहुन अछि? ओहि दिन देखलियनि जे ठाढ़े ठाढ़ सड़क कात मे जे ओ मोदीबा बाइस-तेबाइस घुघनी बेचैत अछि, तकरा सँ खेखनियाँ कै कै मांगि रहल छथि ओ सड़लाहा घुघनी।

बचकुन — ओना जे कहक। मुदा घुघनी खाइ मे जे लगै छैक बढियाँ? हमरा तँ एखनहुँ मुँह मे पानि भरि अबैत अछि।

निरसन — मुदा बाइस चीज खेबैके नहि चाही। ओहि सँ बड़ हानि होइ छैक।

बचकुन — तोहर तँ सब गप्प अनटेटले होइ छह। भांग तँ ने पीने छह?

निरसन — हमर बात तँ तोरा ओहिना भकभका कै मरचाइ जकाँ लगै छह।

(देवचन्द्रक प्रवेश)

देवचन्द्र — निरसन काका?

निरसन — आबह-आबह देवचन्द्र। कोम्हर सँ अबै छह?

देवचन्द्र — गेल रही गर्ल्स स्कूल मे शिशु प्रदर्शनी देखै लै।

निरसन — की सब भेलैक ओतै?

देवचन्द्र — अहाँक छोटका कनकिरबा केँ प्रथम पुरस्कार भेटलैक अछि।

बचकुन — आ हमरा बच्चा केँ की भेटलैक हौ?

देवचन्द्र — अहाँक बच्चा छँटि गेल।

बचकुन — अँए? छँटि गेल? के छँटनाहार छल हमरा बच्चा केँ ?

देवचन्द्र — ओहिठाम बच्चा सभक जाँच करैक हेतु डाक्टर लोकनिक एक समिति छलैक। सैह ई सब काज करैत छल।

बचकुन — हँ-हँ, कियै ने हमर बच्चा छँटत? हम मुँहदुब्बर छी कि ने?

देवचन्द्र — से बात नहि छैक बचकुन काका।

बचकुन — से नहि छैक तँ की बात छैक?

देवचन्द्र — अहाँक बच्चाक स्वास्थ्य नहि ठीक अछि।

बचकुन — स्वास्थ्य कोना ठीक भै सकै छैक?

देवचन्द्र — बच्चाक स्वास्थ्य बहुत किछु बच्चाक माइ-बाप पर निर्भर करैत छैक। माइ-बापक अस्वस्थ रहने बच्चोक स्वास्थ्य नीक नहि भै सकैत छैक। तकर बाद बच्चाक देखरेख ओकर लालन-पालन, समय पर सब काज।

रामू — आ समय पर बच्चा केँ पचा देब सेहो बड़ आवश्यक छैक।

देवचन्द्र — से तँ समय-समय पर हैजाक सूइ, चेचक गोटीक टीका, बी.सी.जी. क टीका आदि सब केँ लै लेबाक चाही। खास क' कै बच्चा सभक हेतु विशेष सावधानी आवश्यक छैक।

बचकुन — हौ बाबू, तोरा लोकनि स्कूल-कालेज मे पढ़निहार तँ बहुत बात बुझै छहक। हम सब की जानै गेलिऐक। हम तँ एतबे बुझै छिऐक जे हमरा बच्चा केँ इनाम नहि भेटलैक।

देवचन्द्र — स्वास्थ्यक बात बुझैबाक हेतु राज्य भरि मे ई स्वास्थ्य-सप्ताह मनौल गेल अछि। तथापि थोड़-बहुत नियम हमहूँ बुझा देब।

रामू — ऐँ हौ देवचन्द्र, ई जौं से सब नियम बूझि कै तकर पालन करथि तँ अगिला साल बच्चा केँ इनाम भेटतनि?

देवचन्द्र — अवश्य भेटतनि।

बचकुन — तखन जौं अगिला साल हमरा बच्चा केँ इनाम नहि भेटैक तँ

हमरा नाम पर कुकूर पोसियह।

निरसन — वाह, बुचकुन भाइ, वाह!

(नेपथ्य सँ—नोंतक बिझो भै गेल। चलै चलू।)

रामू — चलै चलू। बिझौ भै गेल।

सब — चलह-चलह।

(सब जाइत छथि।)

स्वास्थ्य सप्ताहक हेतु एहि एकांकीक रचना 21-02-1951 मे कयल गेल छल। एहि एकांकी मे निरसन किसुन जी स्वयं रहथि। बचकुनक रूप मे दसम वर्ग छात्र हरिहर नाथ झा, रामूक रूप मे रामानुग्रह झा, वर्ग नवमक छात्र आ देवचन्द्रक रूप मे दसम वर्गक छात्र महेश प्रसाद साहु रहथि। एकर मंचन विलियम्स हाइ स्कूल मे भेल छल। स्मरणीय जे लेखक रामानुग्रह झा तखन नवम वर्गक छात्र रहथि।

स्वामी विवेकानन्द आ हुनक सन्देश

जे महापुरुष लोकनि भारतवर्ष केँ गौरवान्वित कयने छथि ताहि मे अन्यतम स्थान स्वामी विवेकानन्द केँ प्राप्त छनि। जाहि समय मे ई देश अपन स्वत्व सँ हीन भ' गेल छल आ हमरालोकनि अपन संस्कृति एवं सभ्यताक आदर्श-पथ सँ विमुख भ' क' पतनक खाधि दिस बढ़ि रहल छलहुँ, जखन दासता देशवासीक जीवन केँ निस्तेज बना देने छल, ओही दासताकाल मे राष्ट्रीय नव-जागरणक महान् अग्रदूत बनि देश केँ पतन-पराङ्मुख क' आ आत्म-गौरवक दिव्य-ज्योति भरि संकटक विभीषिका मे पड़ल एहि पराजित जातिक समक्ष धर्म, समाज तथा राष्ट्र मे समष्टि-मुक्तिक ऊर्जस्वल-आदर्श स्वामी विवेकानन्द प्रतिस्थापित कयने छलाह।

ज्ञानीक अन्तर्दृष्टि, भक्तक भावुक हृदय एवं सैनिकक बलिष्ठ भुजा, एहि सभहक सुन्दरतम समन्वय स्वामी विवेकानन्द छलाह। एहि तरहक ब्रह्मचर्यक साक्षात् मूर्त्ति, देश-प्रेमक अद्भुत प्रतीक तथा मानवप्रेमक मूर्त्तरूप स्वामी विवेकानन्दक जन्म 1863 ईसवीक 12 जनवरी केँ भेल छलनि जे दिन बंगीय तिथिक अनुसारें एहि साल 1963 ई. मे 17 जनवरी केँ पड़ल छल। (तें एहि वर्ष देश-विदेश मे स्वामीजीक जन्मशती मनौल गेल अछि।) माता भुवनेश्वरी तथा पिता विश्वनाथ दत्तक पुत्ररत्न नरेन्द्रनाथ दत्त पिताक आकांक्षानुसार पढ़ि-लिखिक' एक नामी वकील बनबाक स्थान मे विधाताक अनुसार परमहंस श्री रामकृष्णदेवक सम्पर्क मे पहुँचि गेलाह। फलतः एक दिन युवा नरेन्द्र घर-आङन आ विधवा माय तथा भाय आदिक मोह छोड़ि शाश्वत-सुखक मार्गपर अग्रसर भेलाह आ भारतवर्षे नहि, अपितु समस्त विश्वक मोहान्धकार मे बौआइत जनसमाजक सम्मुख अध्यात्मक दिव्य-ज्योति प्रकाशित क' स्वामी विवेकानन्दक नामे अमर भ' गेलाह। देश-प्रेम, कुशाग्रबुद्धि आ अप्रतिहत प्रतिभाक आलोकपुंज नरेन्द्रनाथ समस्त देशक परिभ्रमण क' भारतीय विविधताक वैशिष्ट्यक एकताक आत्म-साक्षात्कार कयने छलाह। स्वामी रामकृष्ण परमहंसक सान्निध्य तथा आध्यात्मिक सस्पर्श सँ हुनका जीवन मे जे महान् परिवर्तन

भेल से निस्सन्देह भारतीय संस्कृतिक अधुनातन इतिहासक एक महत्वपूर्ण अध्याय आ अद्‌भुत संयोग थिक।

'की अपने ईश्वर-दर्शन कयने छी?' यैह एकटा प्रश्न स्वामी रामकृष्ण परमहंस केँ ई तथ्य निश्चित रूपें बुझा देलकनि जे यैह तँ हमर वास्तविक शिष्य थिकाह। संगहि मानव-चेतनाक आदि-काल सँ निरंतर उठैत एहि महान् प्रश्नक महान उत्तर शिष्यहु केँ ई बुझा देलकनि यैह हमर दिव्य गुरु थिकाह। आ वैह साक्षात्कार नरेन्द्रनाथ केँ विवेकानन्दक रूप मे परिणत क' एक ऐतिहासिक साक्षात्कार बनि गेल।

स्वामी विवेकानन्द केवल परतंत्रताक दारूण-पाश मे आबद्ध तथा चतुर्दिक नैराश्य आ अकर्मण्यताक गहन-तिमिर मे निमज्जित भारतवासियेटा केँ 'स्वयंप्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता' एवं 'योग: कर्मसु कौशलम आ याते संगोड़ स्वकर्मणि' क कर्मठताक प्राणवंत चेतनाक पाठ नहि पढ़ौलनि अथवा अपना साधना सँ केवल आर्यावर्तेटा केँ प्रभावित तथा लाभान्वित नहि कयलनि अपितु विदेशी विचारको लोकनिक जीवन एवं दर्शन केँ पर्याप्त प्रभावित कयलनि आ हुनका लोकनिक आँखि अपन ज्ञानलोक द्वारा खोलि देलथिन।

शिकागोक ओहि विश्वधर्म सम्मेलन मे जतय विश्वक विभिन्न धर्म एवं दर्शन सभक कृतविह्न प्रतिनिधि लोकनि उपस्थित छलाह, जखन ई स्वाभिमान आ आत्म-विश्वास सँ परिप्लुत ओजमय वाणी मे 'हमर अमेरिकी भाइ लोकनि आ बहीनि लोकनि' क सम्बोधन कयलनि तँ 'महिलागण आ भद्रपुरुष' (लेडीज एंड जेन्टिलमेन) क सम्बोधनक अभ्यस्त कान चौंकिक' सजग भ' गेल आ विश्वबन्धुत्वक पावन तथा कोमलतम सम्बन्धक माधुर्य सँ सभक ह्रदय हर्षोत्फुल्ल भ' उठल। सम्बोधन मात्रे सँ मुग्ध बनल श्रोतालोकनिक करतल ध्वनि बड़ी काल धरि सभास्थल केँ गुंजित कयने रहल।

भारतीय केँ जंगली, असभ्य, गुलाम, बर्बर आ पशु बुझनिहार अमेरीकी आ समस्त यूरोपवासी सभक समक्ष सिंह-गर्जन करैत ओ तीस वर्षीय युवक संन्यासी जखन पुछलथिन जे 'भौतिकवाद केँ जीवनक लक्ष्य मानिक' चलनिहार यूरोपवासी लोकनि, यूरोपीय दर्शन जत' समाप्त होइत अछि, हमर भारतीय दर्शन ओहिठाम सँ आरम्भ होइत अछि। अहाँ लोकनिमे सँ कतेक गोटय एहन छी जे भारतीय दर्शनक गरिमा सँ परिचित छी?' तँ सम्पूर्ण सभा स्तब्ध रहि गेल। तकराबाद सँ तँ भारतीय धर्म-दर्शनक परिचय दैत ओ अनेक दिनधरि भक्तियोग, कर्मयोग, प्रेमयोग, राजयोग; ज्ञानयोग, प्राच्य आ पाश्चात्य दर्शन, वेदान्त रहस्य, हिन्दू धर्मक सार्वभौम

तत्व आदिक विषय मे धारा-प्रवाह बजैत रहलाह आ मंत्र मुग्ध भेल श्रोतासभक समुदाय दिनानुदिन बढ़ैत गेल। एहि प्रकारें यूरोपवासी सभ केँ भारतीय महत्ताक वास्तविक परिचय द' क' ओ भारतक सनातन प्रतिष्ठाक गौरव-पताका विश्व-व्योम मंडल मे खूब ऊँच उठाक' फहरा देलनि। वस्तुत: 11 सितम्बर 1893 क ओ ऐतिहासिक दिन चिरस्मरणीय रहत, जाहि दिन भारतमाताक ई महान आध्यात्मिक सपूत शिकागो धर्म-महासभाक मंच सँ वेदान्तक दिग्विजयक शंखनाद कयलनि।

भक्तियोग

स्वामी विवेकानन्द भक्तिक लक्षण जनबैत कहने छथि जे निष्कपट हृदय सँ ईश्वरक अनुसन्धान केँ भक्ति-योग कहल जाइत अछि। भक्ति अपन प्रारम्भ, मध्य आ अन्त मे प्रेममय होइत अछि। भक्तियोगक साधक श्री नारदमुनि भक्तिसूत्र मे कहने छथि जे 'सात्वमस्मिन परम प्रेमरूपा' अर्थात भगवानक प्रति परम प्रेमे भक्ति थिक। जखन मनुष्यक हृदय मे भक्तिक वास भ' जाइत अछि तँ सभ प्राणीक प्रति ओकर हृदय मे प्रेम उत्पन्न भ' जाइत अछि। तखन ओ ककरो सँ घृणा नहि करैछ। ओकर अन्त: आ ब्राह्य अविच्छिन्न रूपें सात्विक प्रसन्नता सँ परिप्लुप भ' जाइत छैक।

ओ भक्तिक निम्नस्थिति सँ जे 'गौणस्थिति' कहबैत अछि—बचबाक हेतु सावधान करैत कहने छथि जे जाहि तरहें अपन स्वामीक सम्पत्तिक रक्षा केनिहार कुकूर कोनो वेष मे आयल अपन स्वामी केँ शत्रु नहि मानि ओकरा चीन्हि लैत अछि तहिना अपना ईश्वरक सम्पत्ति भक्ति करैत कोनो स्वरूप मे उपस्थित अपन स्वामी (ईश्वर) केँ चीन्हिक' हमरलोकनि केँ सभक प्रति प्रेम प्रदर्शित करक चाही। एकरे पराभक्ति कहल जाइछ जे हमरा सभक अन्तिम उद्‌देश्य (ईश्वर) क प्राप्तिक सभ सँ सरल आ स्वाभाविक मार्ग थिक। एहि प्रकारें भक्तियोगक विस्तृत व्याख्या करैत ओ उपनिषदक 'ईशावास्यमिदं सर्वयत किंच जगत्यां जगत' (अर्थात् संसार मे जे किछु अछि से सभ ईश्वरे थिकाह) आ गीताक 'विद्याविनय सम्पन्ने ब्राह्मणो गविहस्तिन, शनिचैव स्वपाके च...' तथा 'योमा पश्यति सर्वत्र सर्वच मयि पश्यति' बला दृष्टिक, बहुत्व मे एकत्वक दर्शनक, जकरा दार्शनिक भाषा मे 'अद्वैतवाद' कहल जाइछ तकर दिव्य सन्देश देने छथि। 'एवं सर्वेष भूतेष भक्तिर व्यभिचारिणी कर्त्तव्या पण्डितैज्ञात्वा सर्वभूतयं हरिम।' अर्थात् ईश्वरे सभ भूत (प्राण) मे अवस्थित छथि ई बूझि सभक प्रति अव्यभिचारिणी-भक्ति रखबाक चाही।

कर्मयोग

एहिना ओ कर्मयोगक विशद व्याख्या करैत गीताक कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन मा कर्म-फलहेतेर्भूर्माते संगोङ्गोऽस्त्वकर्मणि' अर्थात कर्म करबेटा अहाँक अधिकार अछि, फल मे नहि। तें कर्मक फलक आकांक्षा नहि राखू आ ने अर्कमण्ये बनू। कियैक तँ 'कायेन मनसा बुद्धया केवलैरिन्द्रियैरपि, योगिन: कर्म कुर्वन्ति संग त्यक्तवाऽत्मशुद्धये।' अर्थात निष्काम कर्मयोगी ममत्व बुद्धि सँ रहित भ' क' केवल इन्द्रिय, मन, बुद्धि आ शरीरक द्वारा आसक्ति केँ त्यागि अन्त:करणक शुद्धिक हेतु कर्म करैत छथि। एहि प्रकारें कर्म आ चरित्र मानव-जीवनक कर्मपरता, कर्म रहस्यक नि:स्वार्थ भावना, मनुष्यक कर्त्तव्य, अनासक्तकर्म आ कर्मयोगक महान आदर्श पर प्रकाश दैत ओ वेदान्त धर्मक अद्वैतवादनिष्ठ विशेषताक पृष्ठभूमि मे देशवासी केँ कर्मठ होयबाक शाश्वत प्रेरणा देने छथि।

ज्ञानयोग

ज्ञानयोग विषयक अपन समग्र विचार-धारा द्वारा ई जाहिदिस संकेत कयने छथि से तथ्य थिक जे—जाहि ज्ञानक अनुसार अपन ईश्वरीय स्वरूपक सम्यक् अनुभूति हो तकरे ज्ञानयोग कहल जाइत अछि। एकरा विश्लेषणक क्रम मे ई बहिर्जगतक व्याख्या अतीव सरल रूपें कयने छथि। ई सम्पूर्ण जगतक (ब्रह्माण्डक) सृष्टिप्रक्रियाक वर्णन करैत बुझौने छथि जे अणुओ सँ पूर्व अवस्था आ अणोरणीयान् महती महीयानक सम्पूर्णता, जाहि विराट परम्पराक परिचायक थिक, तकरा जनैत हमरा अपना अन्तर्जगत केँ नीक जकाँ चिन्हबाक चाही। एहि तरहें ब्राह्म जगत तथा अन्तर्जगतक सम्यक् ज्ञान प्राप्त करबाक उपासक निदर्शन करैत ई कहने छथि जे ज्ञानयोग द्वारा जखन मनुष्य बहुत्व मे एकत्वक दर्शन करैत अछि तँ ओकरा सभ वस्तु मे ब्रह्मक दर्शन होइत छैक। एहि प्रकारें भोगैषणा वा स्वर्गोषणा ओकरा समक्ष नहि रहि जाइत छैक। किऐक तँ वैदिक संहिता सभक द्वारा ई स्पष्ट भ' जाइत अछि जे भोग नश्वर थिक आ स्वर्गोक कल्पना भंगुर थिक। कठोपनिषद्क उक्ति अछि—'भवेदेह तदमुत्र यदमुत्र तदन्विह। मृत्यो: स मृत्युमाप्नोति य इहतानेव पश्यति।' अर्थात जे एत' अछि सैह ओतहु अछि, आ जे ओत' अछि से एतहु अछि। जे क्यो एत' ओत' भिन्न-भिन्न रूप देखैत अछि से बारम्बार मृत्यु केँ प्राप्त करैत अछि।

संहिता भाग मे स्पष्टत: देखल जाइत अछि जे आर्यलोकनि मे स्वर्ग जयबाक इच्छा विशेष रूपें छलनि। जखन ओ लोकनि एहि विश्व-प्रपंच सँ अगुता जाथि तँ

स्वभावतः हुनका लोकनिक मन मे एक एहन स्थान मे जयबाक इच्छा होनि जत' कनेको दुख नहि हो, केवल सुखेटा हो। एहने स्थानक नाम आर्यलोकनि स्वर्ग रखलनि। मुदा दार्शनिक विचार सरणिक उत्पत्तिक पछाति एहि प्रकारक स्वर्गक धारणा असंगत आ असम्भव ज्ञात होब' लगलनि आ तखन सच्चिदानन्दक प्राप्तिक साधना आत्म-ज्ञान, आत्मतत्वक उपलब्धि भ' गेल। आत्मतत्वक ज्ञानक उपलब्धि आ तकर पद्धतिक क्रम मे उद्घोषित भेल जे—

'अग्निर्यव्यै को भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपं बभूव एवं एकस्तथा सर्व मूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूप बभूव।'

अर्थात् जेना एके अग्नि संसार मे प्रविष्ट भ' क' जरनिहार वस्तु सभक रूप भेद सँ भिन्न-भिन्न रूप-भेदें भिन्न-भिन्न प्रतीत होइत अछि। एहि ज्ञानक द्वारा हमरासभ केँ आत्मतत्व केँ प्राप्त करबाक चाही। यैह वेदान्तक उपदेश थिक—यैह अद्वैतक मुक्तिक सन्देश थिक—यैह थिक आत्मतत्वक ज्ञानयोग।

एहि तरहें उपनिषद्क एहि अमर-सन्देशक उद्घोष भारतीय पुनर्जागरणक पुरोधा स्वामी विवेकानन्द सम्पूर्ण देश मे कयलनि जे 'नापमात्मा बलहीनन लभ्यः।' अर्थात् ई आत्मा बलहीन द्वारा लभ्य नहि थिक। एहि लेल सभ प्रकारें सबल बनब आवश्यक। एहि सबलाक हेतु ऋग्वेद मार्ग-निर्देश करैत अछि—'संगच्छेध्वं, संवदध्वं संवो मनांसि जानतामु।' अर्थात संगठित होउ, सम्मिलित रूप सँ चलू, मिलि क' बाजू और हृदय बनि काज करू। यैह सबलताक उपाय थिक। 'न्यान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।' दोसर कोनो मार्ग नहि अछि।

आब कनेक एकरा आजुक राष्ट्रीय संकटक पृष्ठभूमि मे देखी तँ बूझि पड़त जे कतेक महान कतेक ओजस्वी आ कतेक चिरन्तन विचार-धारा ओहि राष्ट्रीय महापुरुषक अछि। कर्म, भक्ति आ ज्ञानक जेहन त्रिवेणी हुनक जीवन मे प्रवहमान देखल जाइ अछि तेहन अन्यत्र दुर्लभ अछि। हुनक जीवन-दर्शन केवल बौद्धिक व्यायाम-मात्रे नहि रहिक' सभ देश, काल आ पात्रक हेतु सर्वथा व्यावहारिक अछि। संक्षेप मे हुनक किछु दिव्य-सन्देशक उल्लेख एहि लघु-निबंध मे कयल गेल अछि।

यद्यपि हुनक देहावसान 1902 ई. क 4 जुलाइ केँ भ' गेलनि मुदा ओ केवल भारत-वर्षेटाक नहि अपितु अशेष संसारक हेतु अपन अमर विचारक कारणे अपन दिव्य-सन्देशक रूप मे अमर छथि। एहने महापुरुषक हेतु कहल गेल अछि 'नास्ति येषां यशःकाये जरमणर्जभयम्।'

मिथिला मिहिर : 30 जून 1963

भारतक सम्बन्ध मे पाकिस्तानक दुर्नीति

भारतवर्ष आ पाकिस्तानक बीच पूर्व मे एक रहबाक कारणे जे राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आ भावनात्मक सम्बन्ध अछि आ जे अनेक शताब्दीधरि एहि दुहू भू-भाग केँ एक सूत्र मे आबद्ध कयने रहल तें वर्त्तमान विवादक शान्तिपूर्ण समाधानार्थ एक पत्र-प्रतिनिधि सम्मेलन मे प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू चिन्ता व्यक्त कयने छलाह। भारत द्वारा स्वीकृत देशक विभाजन भेलोपर इतिहास, शोणित-सम्बन्ध आ आध्यात्मिक सम्बन्ध केँ नहि हटा सकैत अछि। दुहू देशक लक्ष्य समान अछि। दुहू देश अपन देशवासी केँ अभाव आ भूख सँ मुक्ति देअयबाक आ सभ प्रकारक उपनिवेशवाद आ विस्तारवाद सँ अपन स्वाधीनताक रक्षा कर' चाहैत अछि। अनेक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र मे दुहू देशक हित ततेक अधिक समान अछि, जतेक सम्भवत: आन कोनो दू देशक नहि भ' सकैत अछि। ई तँ भेल वास्तविक मौलिक स्थिति, मुदा सम्प्रति दुहू देशक सम्बन्ध मे दुर्भाग्यवश निरन्तर कटुता बढ़ले जा रहल अछि। अनेक बेर एहि लेल प्रयासो भेल अछि जे ई कटुता समाप्त भ' जाय, किन्तु से कोनो बेर भ' नहि सकल। भ' नहि सकल ततबे नहि, अपितु ईहो कहल जा सकैत अछि जे प्रायश: कटुता बढ़िए गेल।

वस्तुत: पाकिस्तान अपन निर्माण काले सँ भारत आ भारतक नेतृवर्गक विरुद्ध योजनाबद्ध रूपें घृणाक दुष्प्रचार करबाक निश्चय क' लेने अछि। मुदा भारत तथापि पारस्परिक झगड़ा आ विवाद केँ समाप्त करबा मे एवं मित्रताक नीतिक पालन करबा मे अद्‌भुत धैर्य आ मनोयोग देखओलक अछि। ई ऐतिहासिक तथ्य थिक जे भारत पाकिस्तान सँ व्यापार, संचार, विस्थापित सभक सम्पत्ति तथा नदी-पानिक बाँट-बखरा सम्बन्धी समझौता क' पाकिस्तानक प्रति अपन मित्रता आ सद्‌भावक परिचय देलक अछि। दोसर दिस पाकिस्तान एकरा सभक उत्तर मे उदासीनतेक परिचय टा नहि देलक अपितु अधिकांश विषय मे तँ भारत केँ

उदारताक बदला मे अपशब्द आ घृणे भेटलैक।

चीनी आक्रमणक उपरान्तो भारतक एहि पड़ोसिया देश मे कोनो परिवर्त्तन नहि भेलैक। ई आशा कयल जा सकैत छल जे पाकिस्तान चीनी आक्रमण भेलापर भारतक प्रति सहानुभूतिक एक शब्द धरि तँ अवश्ये कहत आ एहि स्थिति सँ पाकिस्तानो केँ वास्तविक चिन्ता होयतैक। कारण जे चीनी आक्रमण अन्ततः ओकरो सुरक्षा लेल भयावह आ खतरनाक होयतैक। मुदा पाकिस्तान एहि संकटकाल मे चीनीक फूसि दुष्प्रचार केँ भारतक प्रति अपना दुष्प्रचार सँ मातु क' देलक। पाकिस्तानक दुष्प्रचार जाहि कुत्सित शब्दावलीक प्रयोग आ घृणाक जहर-माहुरक प्रचार कयलक तकर उदाहरणो अन्यत्र दुर्लभ। ततबे नहि, ओ भारत केँ अपन शत्रु तँ मानिते छल, एहि आक्रमणक बाद सँ चीन केँ अपन सहायक मान' लागल आ चीनक संग कतिपय गुप्त-प्रकट समझौता क' भारतक प्रति विष-वमन करबाक संग-संग चीनी साहाय्यक आशाक सगर्व प्रचार-प्रसार कर' लागल।

पाकिस्तानी परराष्ट्रमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो पाकिस्तानी नेशनल एसेम्बली मे जे गत 17 जुलाइ केँ बाजल छलाह तकर विवरण विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित भेल अछि। भुट्टोक कहब छलनि जे यदि भारत पाकिस्तानपर आक्रमण करत तँ एशियाक सभसँ पैघ देश पाकिस्तानक मदति करत। चीन सँ गुप्त सन्धि करबाक प्रसंग पुछलापर ओ किछुओ कहब स्वीकार नहि कयलथिन, मुदा ई अवश्य कहलथिन जे भारतक दिस सँ होब' बला सशस्त्र आक्रमण केँ ध्यान मे रखैत एहि नवीन तथ्य केँ गोपनीय राखब आवश्यक थिक। ओही क्रम मे ओ इहो बजलाह जे भारतक शक्ति जाहि रूपें बढ़ल जा रहल छैक ताहि सँ अन्यान्य देशक संगहि पाकिस्तानोक स्थिति संकटपूर्ण भ' गेल अछि। तें पाकिस्तानक समक्ष आब दोसर विकल्प नहि रहि गेल छैक, एकर अतिरिक्त जे ओ अपन परराष्ट्रनीतिक पुनर्निर्धारण करय। ततबे नहि, ओ एहि अवसर पर पुनः पहिनहि जकाँ भारत पर ई आरोप लगओलनि जे जहिया सँ भारत केँ पश्चिमी राष्ट्र सभक सहायता भेटलैक अछि तहिया सँ भारतक दृष्टि पाकिस्तानक प्रति आक्रामक भ' गेल छैक।

एहि तरहें पाकिस्तानक अखबार आ नेतृवर्ग दिस सँ बरोबरि ई घोषणा होइत रहल अछि जे पाकिस्तानक एकमात्र शत्रु भारत थिक। ओ लोकनि भारतक विरूद्ध मित्र देश सभ केँ भड़कयबा आ भारतक सम्बन्ध मे फूसि बात सभक प्रसार करबा मे कोनो कसरि नहि रखलनि अछि। ई ज्ञातव्य जे पहिने भारत आ

पाकिस्तान पारस्परिक समझौता क' ई निश्चय कयने छल जे दूहू देशक अखबार एक दोसराक विरूद्ध उत्तेजना या कटुता बढ़ओनिहार समाचार नहि छापत। मुदा पाकिस्तान एहि निश्चय पर स्थिर नहि रहि सकल। कश्मीर-समस्याक सम्बन्ध मे जखन किछु दिन पूर्व वार्त्ता आरम्भ भेल छल तँ ओकर पहिलुके बेर मे ई तय कयल गेल जे आपत्तिजनक लेख आ एहि तरहक भाषण नहि छापल जायत। भारतक समाचार पत्र एहू खेप अपन अत्यधिक संयमक परिचय देल आ पाकिस्तानक अखबार बरमहल विष-वमन करैत रहल। पाकिस्तानक अखबार आ नेता सभ भारत सँ युद्ध करबाक सेहो प्रचार कयलनि। ब्रिटेनक मजदूर दलक एक संसदीय सदस्य जौन स्टेची एहि बातक साक्ष्य देलनि अछि जे पाकिस्तानक एक संसदीय सचिव एहि बात केँ स्वीकार कयलनि जे ओ लोकनि भारत सँ युद्धारम्भक विचार क' रहल छलाह।

उपर्युक्त विषय सँ ई स्पष्ट अछि जे ई उत्तेजनापूर्ण आ शत्रुतापूर्ण वातावरणक निर्माण पाकिस्तान क' रहल अछि। मुदा भारत एहू स्थिति पर अपन संयम आ धैर्य नहि छोड़ि अपन सहिष्णुताक परिचय देलक। जखन पाकिस्तानक अखबार चीनक सैन्यवादी सभक पक्ष मे मुक्त हृदयें मिथ्या प्रचार क' रहल छल तथा पाकिस्तानक राष्ट्रपति अयूब खाँ अपन नेपाल यात्राक लाभ उठा क' ओत' भारत विरोधी प्रचार कयलनि तखनो भारत उत्तेजित नहि भेल। पाकिस्तानकेँ जखन-जखन कोनो अवसर भेटलैक ओ भारतक विरुद्ध दुष्प्रचार करबा मे बाज नहि आयल। गोआक प्रसंग जखन पुर्त्तगाल सँ भारतक सम्बन्ध गड़बड़ा गेल छलैक अथवा जखन ओकरा ई पता लगलैक जे नेपाल सँ किछु मित्रतापूर्ण भ्रमात्मक धारणा जकाँ उत्पन्न भ' गेल छैक, तखन-तखन ओ एहि सँ नीक जकाँ लाभ उठा क' भारतक विरोध मे प्रचार कयलक। पाकिस्तान एहि समस्या सभ केँ जतेक अधिक गंभीर बना सकैत छल, बनयबाक चेष्टा कयलक। पाकिस्तान नागा-उपद्रवकारी लोकनि केँ सेहो मदति देलकैक। मध्य आ सुदूर पूर्व मे पाकिस्तान 'हिन्दू साम्राज्यवाद' क मिथ्या प्रचार क' ओतुक्का देशसभ केँ निराधार बात बुझयबाक आ भारतक धर्म निरपेक्ष लोकतंत्रक महत्व केँ कम करबाक दुष्प्रयत्न कयलक।

किछु व्यक्ति भारत आ पाकिस्तानक मैत्री तथा चीनक आक्रमण एहि दूहू मे सम्बन्ध स्थापित करबाक चेष्टा करैत छथि। ई तर्क देल जाइत अछि जे चीनी आक्रमणक नीक जकाँ उत्तर देबाक हेतु पाकिस्तान सँ समझौता करक चाही। मुदा पाकिस्तानक नीति एहि सम्बन्ध मे केहन रहल से पाकिस्तान टाइम्सक 1

दिसम्बर 1962 क अंक सँ स्पष्ट होइत अछि। ओहि मे स्पष्टत: कहल गेल जे 'कश्मीरक समस्या सोझरा जयबाक बादो कोनो रूप मे हमरा देशक सम्बन्ध चीन सँ नहि बिगड़बाक चाही।' सरकारी सूत्रक निकटवर्ती बुझय जायवला 'डान' सेहो एहि सम्बन्ध मे एहिना स्पष्ट छल। ओ लिखने छल जे 'जँ असम्भव घटना घटियो जायत अर्थात् कश्मीरक प्रश्न केँ सम्मानपूर्वक आ न्यायसंगत रूप मे सोझरयबाक समझौता भैयो जायत आ ई झगड़ा समाप्तो भ' जायत तथापि पाकिस्तान चीन सँ भ' रहल भारतक युद्ध मे भारतक सहायता नहि करत वा एहि झंझटि मे नहि पड़त।'

ई सभ एहन तथ्य थिक जाहि सँ पाकिस्तानक दूषित मनोवृत्ति आ शत्रुतापूर्ण नीतिक निर्देशन होइत अछि। हाल मे जे चीन संगे पाकिस्तान सीमा सम्बन्धी समझौता कयलक अछि आ एहि प्रकारें अपन दूषित नीति तथा हड़बड़ीक एक आरो प्रमाण देलक अदि से सर्वविदित अछिए। एहि संधिक द्वारा ओ भारतक एक पैघ प्रदेश केँ चीनक अधीन क' देलक एवं सीमाक एक एहन स्थिति स्वीकार कयलक अछि जे ऐतिहासिक तथ्यक पूर्णत: विपरीत छैक।

एम्हरूका, जे समाचार सभ प्रकाशित भेल अछि, ताहि सँ पाकिस्तानक आन्तरिक दु:स्थिति, जनताक असन्तोष, संभावित क्रांतिक क्षोभ आदिक पता लगैत अछि। तें ई कहब अत्युक्ति नहि जे पाकिस्तान कश्मीर समस्या वा भारतक संग कोनो समस्याक समाधान नहि कर' चाहैत अछि, तकर कारण ई जे ओहिठामक शासन अपन जानताक ओछ आ असंतोष सँ बचबाक हेतु लाथ सभ चाहैत अछि जाहि सँ जनताक ध्यान ओझरायल रहैक।

किछुए दिन पूर्व कश्मीर मे जे धार्मिक केशक चोरी ल' क' कुकाण्ड सृजन कयल गेल अछि ताहि मे पाकिस्तानक हाथ कहल गेल अछि। कश्मीर केँ हत्याकांडक रंगस्थल जखन ओ नहि बना सकल तँ धार्मिक उत्तेजना पसारबा मे जी जान भिड़ा देलक। परिणाम ई भेल जे पूर्व-पाकिस्तान मे सामूहिक लूटि ओ हत्या भेल आ जकर कुप्रभाव पश्चिम बंगालक कलकत्ता ओ कतिपय क्षेत्र पर पड़ल। एक दिस तँ पाकिस्तान साम्प्रदायिक दंगा द्वारा भारतीय जीवन केँ अस्त-व्यस्त करबाक चेष्टा मे भिड़ल रहल आ दोसर दिस कश्मीर प्रश्न केँ सुरक्षा परिषद मे ल' जयबाक चेष्टा कयलक। यद्यपि संसार जनैत अछि जे कश्मीर मे कोनो तेहन घटना नहि भेलैक अछि जे पाकिस्तान केँ सुरक्षा परिषद्क द्वार खटखटब' पड़ैक, तथापि ओ एहि दिस भीड़ल अछि। भारत ई जनैत अछि जे एहि सँ पाकिस्तान केँ किछु लाभ नहि होयतैक—केवल प्रचार-युद्ध मे भलें ओ

आगि ढारबा मे किछु पूर्णकाम भ' जाय।

सुरक्षा परिषद् मे किछु तेहन-तेहन निर्णय भ' सकतैक तकर आशा बड़ कम, किन्तु भारत केँ कोनहुना अपदस्थ करबाक दिशा मे पाकिस्तानक नेता लोकनि प्राण लगौनहि छथि। हमरा लोकनिक नहि जानि पबैत छी जे भारतक विरोध मे एहि प्रकारक कूदफान सँ पाकिस्तानी प्रजा केँ कोनो लाभ होयतैक। हँ, ओतुक्का नेता लोकनि केँ ई लाभ भ' सकैत छनि जे ओहिठामक जन साधारणक ध्यान आभ्यन्तरिक समस्या सँ हँटल रहतैक आ नेता लोकनि गद्दी पर बैसल रहताह।

मिथिला मिहिर : 9 फरवरी 1964

जनसंख्या वृद्धि : एक चिन्ताजनक विश्व समस्या

संसारक इतिहास मे कहियो जनसंख्याक वृद्धि सर्वव्यापी चिन्ताक विषय नहि बनल छल। प्राय: डेढ़सय वर्ष पूर्व थामस माल्थस कतिपय नियन्त्रणक अभाव मे जीवन निर्वाहक साधन समुदायक समक्ष जनसंख्याक अधिक बढ़ि जयबाक कारणे उत्पन्न असन्तुलनक सिद्धान्तक सम्बन्ध मे लिखने छलाह। आइ संसारक अल्पविकसित आ सघन आबादीवला देश सभमे, जाहि मे अपन भारतवर्षो अछि, असन्तुलनक दु:स्थिति जटिल भेल जा रहल अछि। एतबा धरि अवश्य जे औद्योगिक क्रान्तिक परिणामक कारणे आरम्भिक कल्पना मे बड़ संशोधन भेल अछि। अर्थात माल्थस जाहि दुष्परिणामक कल्पना कयने छलाह से पूर्णत: नहि भेल अछि, अंशत: अवश्य भेल अछि।

प्राय: 46 वर्ष पूर्व लार्ड कीन्स लिखने छलाह जे 'आब ओ समय आबि गेल अछि जखन संसारक प्रत्येक देश केँ अपन जनसंख्याक सीमाक विषय मे सतर्क होयबाक आ ई जानबाक आवश्यकता भ' गेलैक अछि जे वर्त्तमान जनसंख्या ओकर 'उच्चतम स्तर' सँ कम छैक वा बेसी। तदनुसार एहि सम्बन्ध मे उचित नीतिक निर्धारण सेहो होमक चाहिऐक। एहि कथन मे कतेक सत्यता छैक एकर अनुमान विश्वक प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति लगा सकैत छथि।

अविराम रूप सँ बढ़ैत जनसंख्या आइ वस्तुत: एक भयानक तथा विकट रूप धारण क' लेने अछि। संसारक समस्त पैघ-पैघ राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री आ नेता लोकनि एहि विषयपर गम्भीर चिन्ता व्यक्त कयलनि अछि आ एहि बातपर बेर-बेर जोर द' रहलाह अछि जे यदि एहि गति सँ जनसंख्या बढ़ैत रहल तँ एक दिन मनुष्य मनुष्येपर झपटत एवं ओ पुन: आदिम कालक एक हिंसक पशु बनि जायत।

जनसंख्या विषयक आंकिकी विवरण सरिपहुँ बड़े विस्मयोत्पादक आ भयावह

अछि। वैज्ञानिक लोकनिक शोधानुसार विश्वक जनसंख्या ईसा सँ आठ हजार साल पहिने अनुमानत: 20 सँ 50 लाखक करीब छल आ ईसाक समय धरि बढ़िक' ओ 25 सँ 35 करोड़ भ' गेल। 1750 ई. मे विश्वक आबादी 70 सँ 80 करोड़ भेल। एहि तरहें करीब-करीब पौने दू हजार वर्ष मे जनसंख्याक वृद्धि दूगुना भेल मुदा तकरा बाद सँ जनसंख्या क्षिप्रगतियें बढ़' लागल। ठीक एक सय वर्षक बाद 1850 ई. मे 110 करोड़, 1900 ई. मे 160 करोड़, 1920 ई. मे 181 करोड़ 90 लाख, 1940 ई. मे 224 करोड़ 60 लाख, 1950 ई. मे 249 करोड़ 50 लाख आ 1961 मे 306 करोड़ 90 लाख भ' गेल। एहि तरहें जत' पौने दू हजार वर्ष मे अधिक सँ अधिक 45 करोड़ आबादी बढलैक तत' 1850 ई. मे अर्थात् केवल एक सय वर्ष मे तीस करोड़, तकरा बाद केवल 50 वर्षक अनन्तर 1900 ई. मे पचास करोड़, तदुपरान्त केवल बीस वर्ष मे करीब बाइस करोड़, तकरा बादक बीस वर्ष मे तैंतालीस करोड़क करीब, तकरा केवल दस वर्षक बाद प्राय: पच्चीस करोड़ आ तकरा बादक केवल एगारह वर्ष मात्र मे करीब साढ़े अठावन करोड़क वृद्धि जनसंख्या भ' गेल। तात्पर्य जे गुणात्मक क्रम सँ जनसंख्याक वृद्धिये भ' रहल अछि।

वर्त्तमान जनसंख्याक वृद्धि—गतिक हिसाबें सम्प्रति एक दिन मे 1 लाख 36 हजार 98, एक घंटा मे 5 हजार 708 आ एक मिनट मे 95 व्यक्तिक वृद्धि भ' रहल अछि। एहि क्रम सँ जनसंख्याक वृद्धि जँ होइत रहल तँ 1975 ई. मे 382 करोड़ 80 लाख, 2000 ई. मे 680 करोड़, 2050 ई. मे 1300 करोड़ आ 2064 मे एक सय वर्षक बाद 1600 करोड़ आबादी विश्वक भ' जायत।

वैज्ञानिक लोकनिक कथन छनि जे पृथ्वीक भार-वहन क्षमता सीमित अछि। एहि सम्बन्ध मे जे सभ सँ पैघ अनुमान भ' सकल अछि से ई जे पृथ्वी केँ बोझ उठयबाक शक्ति 1600 करोड़ आबादीक अछि। एही प्रकारें जँ एहि गतियें जनसंख्या बढ़ैत गेल, ओहिपर कोनो नियन्त्रण नहि भेल तँ एक सय वर्षक बाद प्रलय भ' जयबाक पूर्ण आशंका अछि एक भयंकर खतरा थिक ई उपर्युक्त अंक-विवरण सँ स्वत: सिद्ध होइछ।

प्रलय हो वा नहि ई तँ भिन्न बात थिक मुदा एतबा धरि अवश्य जे आधुनिक रक्षात्मक आ उपचारात्मक उपाय सभक कारणे मृत्युदर मे पूर्वापेक्षया अधिकाधिक कमी भेल जा रहल छैक आ ई मृत्युदर आगाँ आरो कम होइत जायत। दोसर दिस जन्मदर खूब तेजी सँ बढ़ल जा रहल अछि। तें जनसंख्या मे जे तीव्रगति सँ वृद्धि भेल जा रहलैक अछि से मानव-इतिहास मे सत्यत: अभूतपूर्व अछि। आबादीक ई निर्बाध वृद्धि विश्वक समक्ष निश्चयत: जटिलतम भेल जा रहल अछि। कारण

जे एहि सँ अल्प विकसित देश सभक जीवनस्तर उन्नत करबाक जे प्रयत्न सभ भ' रहलैक अछि ओ बहुत अंश मे निरर्थक भ' जाइत छैक।

सम्प्रति सभ देशक शासन-सत्ताधिकारी अपना ओहिठामक निवासी केँ ऊँच रहन-सहनक स्तर, पर्याप्त मात्रा मे पोषक तत्व युक्त भोजन आ शिक्षा लाभप्रद आजीविकाक अवसर उपलब्ध करयबाक हेतु नैतिक दृष्टियें उत्तरदायी एवं संलग्न छथि। मुदा उपर्युक्त लक्ष्यक निकट पहुँचबा मे सभ सँ पैघ बाधा आ अवरोध ई निर्बाध एवं अनवरूद्ध क्रम मे निरन्तर वर्त्तमान जनसंख्याक दर भ' रहल छैक। अगिला चौंतीस-पैंतीस वर्ष मे संसारक वर्त्तमान आबादीक द्विगुण वृद्धि भ' जयबाक सम्भावना अछि, अर्थात् सन् 2000 ई. मे विश्वक जनसंख्या 6 अरब भ' जायत से पहिनहि स्पष्ट भ' चुकल अछि। एहि प्रकारें 2070 ई. धरि संसारक जनसंख्या जखन बढ़िक' 25 अरब भ' जायत, तखनुका संसारक कल्पनो करबा मे आतंक होइत अछि। जनसंख्या वृद्धिक ई अनुपात आर्थिक विकासक अनुपात सँ कत गुणा बेसी अछि जे आजुक परस्पर सुसम्बद्ध आ सापेक्षता सँ अन्योन्याश्रित संसारक एक चिन्ताजनक अन्तरराष्ट्रीय समस्या बनि गेल अछि।

किछु दिन पूर्व एशियाक जनसंख्याक सम्बन्ध मे भेल दिल्लीक 'इकाफे सम्मेलन' मे प्रबन्ध-सचिव यू. न्यून जनओने छलाह जे 'जनसंख्या-शास्त्री लोकनि द्वारा प्रकट कयल गेल तथ्य सभ मे सभ सँ प्रमुख तथ्य ई थिक जे एशियाक आबादी बड़े तेजी सँ बढ़ि रहल अछि। एशिया मे जनसंख्याक वृद्धिक अनुपात बेसी रहबाक प्रमुख कारण जन्म-दर मे वृद्धि या चिकित्साविषयक सौविध्य बढ़ि जयबाक कारणे मृत्युदर मे कमी भ' जायब थिक। यू. न्यून इहो जनौलनि जे यद्यपि एशियावला क्षेत्र मे संसारक भू-क्षेत्रक आधा सँ किछु अधिके भाग अबैत अछि, तथापि एक तँ एहि क्षेत्रक आबादी संसारक समस्त आबादीक आधा सँ बहुत बेसी अछि, दोसर पृथ्वीक आन भागक अपेक्षे ई भाग अल्प विकसित अछि।' एक सर्वेक्षण सँ स्पष्ट होइत अछि जे 1951-60 क दशाब्दी मे यूरोपीय देश सभ आ एशियाक देश सभक जनसंख्याक वृद्धिक अनुपातो मे बहुत अन्तर रहलैक अछि। अनेक यूरोपीय देश सभ मे एहि अवधि मे जनसंख्याक वृद्धिक दर 10 प्रतिशत सँ कम छल। एहि श्रेणीक देशसभ मे बैल्जियम, डेनमार्क, फ्रांस, इटली, यूनान, नार्वे, स्वीडन, आस्ट्रेलिया, बलगेरिया चेकोस्लोवाकिया आ हंगरी सम्मिलित अछि। यूरोपक किछुए देश मे जनसंख्याक वृद्धिदर 10 प्रतिशत सँ अधिक छल। यथा—फिनलैण्ड 10 प्रतिशत, नीदरलैण्ड 12.7, स्विट्जरलैण्ड 12.2, यूगोस्लोवाकिया—13.3 आ रूमानियाक 12.1 प्रतिशत। जाहि देश सभ मे आर्थिक विकासक दर खूब ऊँच अछि ताहिमे सँ सोवियत रूस मे 17.5 प्रतिशत,

पौलैण्ड 18.1 आ टर्की मे 27.5 प्रतिशत वृद्धि दर छलैक।

उपर्युक्त विवरण-क्रम मे कहल गेल अछि जे एशियाक देशसभक जनसंख्याक वृद्धिदर अपेक्षाकृत बहुत ऊँच छैक। केवल जापान मे (गर्भपातक वैध रहक कारणे वा अन्यान्य कारणे) जनसंख्याक वृद्धिदर 9 प्रतिशत आ फिलपाइनक 32 प्रतिशत, थाइलैण्डक 30 प्रतिशत, दक्षिण कोरियाक 29 प्रतिशत, पाकिस्तान 22 प्रतिशत तथा भारतवर्षक 31.5 प्रतिशत वृद्धिदर रहलैक अछि।

एहि प्रकारक स्थिति सँ स्पष्ट अछि जे एशियाक देश अत्यधिक जनसंख्याक समस्या सँ आक्रान्त अछि। अल्प विकसित आ सघन आबादी वला देश सभक हेतु जनसंख्या वृद्धिक दरक एतेक बेसी होयबे एक चिन्ताजनक विषय थिक। कारण जे सभ किछु बढ़ाओल जा सकैत अछि, उत्पादनो बढ़ाओल जा सकैत अछि मुदा भूमि तँ नहि बढ़त। अन्नक उत्पादन लेल भूमि चाही, औद्योगिक विकासक हेतु जे कल-कारखानाक स्थापना होयत ताहि लेल भूमि चाही, बढ़ैत जनसंख्या लेल जे रहबाक घर चाही, ताहि लेल भूमि चाही। शिक्षा लेल विद्यालय बढ़त, चिकित्सा लेल आफिस सभ बढ़त, रेलवेक विस्तार लेल लाइन बढ़त, एहू सभ लेल भूमि चाही। भूमि तँ रबर नहि थिक जे तिरने जायब आ सभ किछु भेल जायत? एहि तरहें खाद्यान्न आ फल तरकारी लेल भूमि, दूध-दही लेल परती-पराँत कत' सँ आनब? एकटा डैमोग्राफर तँ एत' धरि कहने छथि जे जँ ई क्रम रहल तँ किछु सय वर्षक बाद प्रत्येक व्यक्तिक हिस्सा मे केवल एक वर्ग फुट मात्र भूमि पड़त जाहि मे ओ रहय वा कल-कारखाना बनाबय, पढ़य-लिखय, दवाइ करबय कि जे करय। मुदा एक वर्ग फुट भूमि मे तँ ठाढ़ो रहब कठिन अछि।

एहि विकट समस्याक समाधानक हेतु औद्योगीकरणक संगहि परिवार नियोजन नितान्त आवश्यक अछि। भूख, बेकारी, चोरी, डकैती, भ्रष्टाचार, युद्ध, हत्या आदि सभ प्रकारक दुःस्थिति सभक अन्यान्य कारण सभ मे सर्वप्रमुख आ मौलिक कारण जनसंख्याक वृद्धिये थिक जे आइ समस्त संसारक सभ सँ बेसी चिन्ताजनक समस्या थिक।

मिथिला मिहिर : 17 मई 1965

जनसंख्या विस्फोट

संयुक्त राष्ट्रसंघक 1965 क सांख्यिकी पुस्तिकाक अनुसार, जे हाले मे प्रकाशित भेल अछि, विश्वक आबादी सम्प्रति 3 अरब 20 करोड़ो सँ बेसी अछि आ एहि मे बेस तेजी सँ वृद्धि भ' रहल अछि। 1960-64क अवधि मे वार्षिक जनसंख्या वृद्धि 1 दशमलव 8 प्रतिशत भेल जे पछिला वर्ष सभक तुलना मे बेसी अछि। सम्पूर्ण एशियाक आबादी 1 अरब 78 करोड़ 30 लाख, अफ्रीकाक 30 करोड़ 30 लाख, उत्तरी अमेरिका 21 करोड़ 10 लाख, लैटिन अमेरिकाक 23 करोड़ 70 लाख, योरोपक आबादी 44 करोड़ 30 लाख तथा आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंडक सम्मिलित जनसंख्या 1 करोड़ 71 लाख अछि। चीनक आबादी 69 करोड़, भारतवर्षक 47 करोड़ 10 लाख तथा रूसक आबादी 22 करोड़ 80 लाख अछि।

सृष्टिक आदिकाल सँ ल' क' 1830 ई. धरि संसारक आबादी एको अरब नहि छल, मुदा अगिला एक सय वर्ष मे (1930 ई. धरि) ई 2 अरब भ' गेल आ तकरा बाद केवल 30 वर्ष मे (1960 धरि) 3 अरब धरि जनसंख्या भ' गेल। जे जनसंख्या वृद्धिक वर्त्तमान गति एहिना रहल तँ 2005 धरि संसारक जनसंख्या 6 अरब 20 करोड़ धरि भ' जायत।

घड़ीक सेकेण्डक सूइ एक बेर टिक करैत अछि कि संसार मे 3 (तीन) टा बच्चाक जन्म भ' जाइत छैक। एहि तरहें एक सप्ताह पूरैत-पूरैत करीब 20 लाख शिशु जन्म ल' लैत अछि। इएह थिक जनसंख्याक विस्फोट जे एहि युगक सर्वाधिक गम्भीर समस्या थिक। विशेषज्ञ लोकनिक कथ्य छनि जे अन्ततोगत्वा ई समस्या संसार मे सम्भवत: युद्ध वा शांतियो सँ अधिक भयावह बनि जायत।

विश्वक बढ़ि रहल जनसंख्याक सम्बन्ध मे 'राष्ट्रसंघ'क खाद्यान्न कृषि संघटनक संचालक डाक्टर बी.आर. सेन हाले मे लिखने छलाह—'जा धरि संसार सँ भूख आ अभावक अन्त नहि होइत अछि; ताधरि संसार मे स्थायी शांति नहि भ' सकैछ। सम्प्रति केवल मनुष्यक स्वास्थ्य एवं प्रसन्नते टा पर नहि अपितु सम्पूर्ण लोकतंत्रीय

समाजक हेतु खतरा अछि। अगिला 35 वर्ष मानव समाजक हेतु अत्यधिक संकटपूर्ण होयत। खाहे हम उत्पादन बढ़ाक' तथा आबादी पर नियन्त्रण राखि केँ स्थिति केँ सुदृढ़ बनाबी, खाहे भीषण विनाशक हेतु प्रस्तुत रही। आजुक स्थिति मे हमरालोकनि केँ नीक जकाँ बूझि लेबाक चाही जे हम सभ असीमित प्रगति अथवा असीमित विनाश दुहूक बीच मे छी। केवल किछुए राष्ट्रक हेतु नहि अपितु सम्पूर्ण संसारक हेतु ई स्थिति अछि।'

अमेरिकी प्रेसीडेंट जॉनसन एहि जनसंख्याक विस्फोट सँ उत्पन्न गंभीर स्थितिक प्रसंग जुलाइ 1965 मे संयुक्त राष्ट्रसंघक समक्ष बाजल छलाह—हमरालोकनि केँ सभ देश मे भ' रहल जनसंख्या वृद्धिक कारणे सोझाँ मे अबैत नाना विध समस्याक प्रत्यक्ष रूप मे सामना करबाक चाही आ संसारक भविष्यक दृष्टि सँ एहि गम्भीरतम समस्याक समाधान तकबाक चाही। एकरा एक मासक बाद बेलग्रेड मे जे विश्व जनसंख्या सम्मेलन भेल छल तकरा लेल वक्तव्य दैत कहने छलाह—जनसंख्या नियन्त्रणक समस्या विश्व मे शांति स्थापनाक बाद दोसरे प्रमुख समस्या थिक आ ई मानव जातिक लेल सभ सँ पैघ 'चुनौती' थिक।

भारतवर्ष मे पछिला शताब्दी मे जनसंख्या वृद्धिक गति वर्त्तमान गतिक अपेक्षा आधो सँ कम छल मुदा 1900 क बाद सँ सार्वजनिक स्वास्थ्यक व्यवस्था मे सुधार, जेना मलेरिया उन्मूलन तथा हैजा, महामारी आदि व्यापक रोगक तीव्रता एवं प्रचार-प्रसार मे रोक-छेक आदिक फलस्वरूप मृत्यु संख्या मे अपेक्षाकृत पर्याप्त कमी भ' गेल अछि आ एम्हर जनसंख्या वृद्धि मे क्षिप्रता आबि गेल अछि। देशक सातटा राज्य मे जे जन्म तथा मृत्यु दर बुझबाक हेतु विशेष सर्वेक्षण कयल गेल छल तकर विवरण निम्नलिखित अछि—

राज्य	**जन्मदर**	**मृत्युदर**
बिहार	37.5	21.2
गुजरात	43.8	17.0
केरल	35.4	11.1
मद्रास	34.7	17.3
महाराष्ट्र	36.9	14.8
मैसूर	31.2	15.9
पंजाब	37.2	13.0

भारतक प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी हालक अमेरिका यात्राक समय न्यूयार्क मे कहने छलीह जे भारत अपना ओहिठाम जनसंख्याक गति घटयबाक खूब प्रयत्न

क' रहल अछि आ ओकरा आशा छैक जे ओ एहि मे सफलता अवश्य पाओत। जन्म दर मे वृद्धि केँ देशक आबादीक समस्याक मौलिक कारण मानल जाइत अछि। श्रीमती गाँधी जनओलनि—'प्रत्येक मास भारत मे 10 लाख नव खेनिहार भ' जाइत अछि जकरा कारणे खाद्य समस्या आरो विकट भ' जाइत अछि। जनसंख्या मे एहि तरहें भ' रहल तीव्र वृद्धिक नियंत्रण आवश्यक अछि।'

भारतक स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन मंत्री डाक्टर सुशीला नैयर 25 मइ केँ अदीसअवाबा मे भारतक परिवार नियोजन कार्यक्रमक हेतु 'यूनिसेफ' सँ सहायता देबाक आग्रह करैत ओकरा कार्यकारिणीक समक्ष बजलीह जे 'वर्त्तमान समय मे भारत मे जे जन्मदर अछि, तकरा अनुसारें प्रतिवर्ष भारतक जनसंख्या मे 1 करोड़ 20 लाख धरिक वृद्धि भ' रहल अछि आ सामाजिक, आर्थिक विकासक कारणे मृत्यु दर मे कमी भेल अछि।'

जँ एहि तरहें भारतवर्ष मे प्रतिवर्ष 1 करोड़ 20 लाख जनसंख्याक वृद्धि होइत रहल तँ ओहि हिसाबें अगिला पचीस वर्ष मे एहिठामक जनसंख्या मे प्राय: 30 करोड़ वृद्धि भ' जायत आ तखन सम्प्रति 48-49 करोड़क जनसंख्याक अन्न समस्या जे एहन कठिन अछि तँ से 25 वर्षक बाद केहन भयावह भ' उठत तकर कल्पनो मात्र सँ आतंक भ' जाइत अछि। जनसंख्याक ई वृद्धि तँ संसार भरि मे न्यूनाधिक रूप मे भैये रहल अछि। फलत: जे देश आइ अन्न द' रहल अछि सेहो किछु वर्षक बाद ताहि स्थिति मे नहि रहत जे अभावग्रस्त देश केँ अन्न द' सकय। केवल अन्न समस्ये टा नहि एही तरहें एखनुका अपेक्षें बहुत बेसी बेकारी बढ़ि जायत जे असमाधेय भ' उठत आ रोजगार, आवास, शिक्षा, चिकित्सा आदि अनेक समस्या जटिलतम भ' उठत।

संसारक बहुतरास बुद्धिमान वैज्ञानिकलोकनि अधिक लोकक पेट भरबाक उपाय ताकि रहल छथि। कम भूमि मे बेसी उपजा हो तकर नानाविध ओरिआओन भ' रहल अछि। सफलता थोड़-बहुत भेटि रहल छैक। गहूमक नवीन प्रकारक उपजाक' आर्जेंटीना एवं आस्ट्रेलिया अपना फसिलक क्षेत्रफल तीन गुना बढ़ा लेलक अछि। भारतो मे एहि तरहक प्रयोग सभ भ' रहल छैक। अनुसन्धानकर्त्तालोकनि तँ सामुद्रिक वनस्पति पर्यन्त सँ खाद्य समस्याक समाधानक प्रयत्न क' रहल छथि। मुदा ई समस्त आयोजन तखने सफल भ' सकैत अछि जखन संतति-नियमन भ' जाइक।

भारत आदि अनेक देश मे सन्तति-नियमन केँ सरकारी नीतिक रूप मे ग्रहण कयल गेल अछि। एहि प्रयत्न मे जापान सभ सँ अगुआ थिक। दोसर विश्वयुद्धक

बाद जापान मे जनसंख्या वृद्धिक गति तेहन चिंतनीय भ' गेल जे ओहिठामक अधिकारीलोकनि संतति-निरोधक देशव्यापी आन्दोलन चलओलनि। फलस्वरूप ओत' एकर प्रचार बेस व्यापक भेल अछि आ संतति-निरोध सँ आइ काल्हि जापानक जन्मदर सम्प्रति अढ़ाय प्रतिशत अछि।

भारतक राष्ट्रनेतालोकनि सेहो जनसंख्या वृद्धिक भयावह परिणाम सँ पीड़ित राष्ट्र केँ बचयबाक आवश्यकता बुझलनि। स्वाधीनता प्राप्तिक पूर्वे कांग्रेस पार्टी स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरूक नेतृत्व मे राजकीय नीतिक रूप मे संतित-नियमनक समर्थन कयने छल। स्वाधीनता प्राप्तिक बाद ई स्पष्ट भ' गेल जे जनसंख्या वृद्धिक अढ़ाय प्रतिशत वार्षिक वर्तमान गति सँ विकास योजना सभक आर्थिक लाभ निरर्थक भ' जायत तें परिवार नियोजन केँ योजनाबद्ध विकासक अंग-रूप मे स्थान देल गेल। फलत: प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-56) मे परिवार नियोजनक हेतु 47 लाख टाकाक राशि निर्धारित भेल छल आ दोसर योजना मे ई राशि बढ़ाक' सात गुणा क' देल गेलैक। तृतीय योजना (1961-66) मे एहि मद मे 27 करोड़ टाकाक राशि निर्धारित भेल। परिवार नियोजन केन्द्रक देशभरि मे अधिकाधिक संख्या मे स्थापना कयल गेल। गत जनवरी धरि परिवार नियोजन विषयक परामर्श कयनिहार 16,977 केन्द्र स्थापित भ' चुकल छल जे संतति-निरोधक साधनक नि:शुल्क वितरण करैत अछि।

ओना तँ संतति-निरोधक हेतु कंडोम (रबड़क मोटेरी)क प्रयोग डायफ्रामक प्रयोग, जेली आ क्रीमक प्रयोग, गाउजवला गोलीक प्रयोग, सुरक्षित कालक सहवास संयम स्त्रीक (आ ताहू सँ सरल) पुरुषक आपरेशन द्वारा नसबंदी आदि अनेक विधि अछि, मुदा विशेषज्ञलोकनिक कहब छनि जे सभ सँ निरापद, सोझ आ सस्त साधन थिक 'लूप'। ई प्लास्टिकक एक छोट-छीन वस्तु थिक जे स्त्रीक गर्भाशय द्वार पर लगाओल जाइत अछि। एकर निर्माता थिकाह न्यूयार्कक 'प्लैंड पेरेन्टहुड सेन्टर'क डाक्टर जैकालप्स जे हाले मे भारतक (बिहारोक) भ्रमण क' लोक केँ 'लूप'क सम्बन्ध मे बेस जानकारी देलथिन अछि। लूपक विशेषता ई अछि जे प्रशिक्षित डाक्टर वा नर्स सँ लगबा लेलाक बाइ ई एक्के स्थानपर स्थिर रहैत अछि आ ओहि सँ गर्भ धारण एकदम नहि होइत छैक। संगे पति-पत्नी केँ संतानक इच्छा होइक तँ जो सुगमतापूर्वक हँटा लेल जा सकैछ। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान-परिषद अनेक व्यापक परीक्षणक बाद 'लूप'क उपयोग केँ निरापद घोषित कयलक अछि। आब तँ कानपुरक एक सरकारी कारखाना मे प्रतिदिन 16,000 लूप बनाओल जाय लागल अछि।

लोकक अभिरुचियो एहि दिशा मे बढ़ि रहलैक अछि। एहि कार्य मे जे सभ सँ पैघ बाधा से थिक हमरा लोकनिक भाग्यवादी परम्परा। एहि बाधा केँ हटायब आइ प्रत्येक देशवासीक कर्त्तव्य थिक। जे देश भरिक सरकारी, गैरसरकारी तथा अन्यान्य संस्था सभ द्वारा संतति-नियमन अभियान मे सक्रिय सहयोग भेटतैक तँ शहरी आबादी मे प्रति एक हजार जनसंख्याक 50 दम्पत्ति तथा ग्रामीण क्षेत्रक 23 दम्पत्ति द्वारा परिवार नियोजन स्वीकृत क' लेबाक लक्ष्य पूर्ण भ' जायत आ तखन देशक जन्मदरपर एकर बहुत स्पष्ट आ आशावर्द्धक गम्भीर प्रभाव पड़त। एहि प्रकारें संतति-नियमनक वर्त्तमान लक्ष्य पूर्ण भ' गेल तँ परिवार नियोजन द्वारा दू करोड़ वृद्धि रूकि जायत।

वस्तुत: जाहि दम्पत्ति केँ अधिक सन्तान होइत छैक ओ दम्पत्ति आ जाहि देश केँ अधिक जनसंख्या होइत छैक ओ देश सर्वदा कष्टक जाल मे बाझल रहैत अछि। 'बहुप्रजानि ऋतिमावि वेश' ऋग्वेदक ई सूक्ति पूर्णत: यथार्थ अछि।

मिथिला मिहिर : 26 जून 1966

अपन किछु बात

प्रत्येक मनुष्य काँ स्वाभाविक इच्छा होइत छनि जे हम अपन आंतरिक बात दोसर व्यक्ति पर व्यक्त करी। बस। एही इच्छा सँ भाषा, लिपि और साहित्यक सृष्टि भेल।

मोनक उद्‌गार प्रकट करबाक सुन्दर साधन मनुष्य समाज काँ साहित्य भेटल। प्रतिभाशाली व्यक्ति ओकर सेवा मे लागि गेलाह। इएह थिक साहित्यक आत्मकथा।

सरल और सुन्दर भाषा मे जखन हृदयक भावना लिखल जाइत अछि सैह कहबैत अछि साहित्य।

साहित्यिक हैब तँ हमरा हेतु दुर्लभ, परन्तु लालसा बड़ा प्रबल। जोश मे आबि लिखबाक—किछु भाव व्यक्त करबाक—हेतु कागज-कलम ओरिया क' डटि जाइत छी। परन्तु...परन्तु तुरन्त एक कठिन समस्या उपस्थित भ' जाइत अछि जे की लिखी? मोन मे तँ बहुतो प्रकारक बात अनेक स्वरूपें घुरछियाइत रहैत अछि, किन्तु लिखबाक साधंश नहि होइत अछि। बस्स, दोसर समस्या उपस्थित होइत अछि जे ई लिखी अथवा ओ?

और एही तरहें एक...दूइ...तीन। किछु कतहू नहि। यैह भ्रम थिक जे हमरा सफल नहि होमय दैत अछि। हमरा तँ ई विचारबाक चाही जे हम की लिखि सकै छी? संसार मे वस्तुक-सामग्रीक-कमी नहि अछि। सिर्फ लिखबाक अन्त:प्रेरणा चाही। ई विचार उठितहि हाथ कागज पर कलम सहित घुसक' लगैत अछि और तखन लिखैत छी—'श्री गणेशाय नम:'। आओर तकर बाद... ?

अण्ट-सण्ट जैह मोन मे आयल सैह लिखै लगलहुँ। 'इतिश्री...'। एक बेर पढ़ि लैत छी। नीक लागल तँ बेस, बल्कि ततबे नहि, झट द' कोनो दोसर व्यक्ति केँ सुनयबाक हेतु उत्सुक भ' जाइत छी। परन्तु विशेषत: जेना कि अधिककाल यैह मौका अबैत अछि, जे 'श्रीगणेशाय नम:' सँ ल' क' 'इतिश्री' पर्यन्त चर्र-चर्र, और समाप्त। टुकड़ी सभ वायुक संग उड़ि क' दोसरे क्षण हमर उपहास करबाक अभिनय करैत रहैत अछि।

...लिखबाक सामग्रीक हेतु अध्ययन एवं अनुभवक पूर्ण आवश्यकता अछि। पुस्तकक अध्ययन तँ अछिये, संगहि-संग संसारक अध्ययन करब अत्यन्त आवश्यक अछि। साधारणो सँ साधारण घटना जे प्रतिदिन अहाँक अगल-बगल एवं आँखिक सोझाँ मे होइत अछि ताहि पर विचार करू आ तखन ओहि घटनाक पूर्ण अनुसन्धान (ओकर रहस्य तक पहुँचबाक हेतु) अपना ह्रदय मे करू। एहि कार्यक हेतु मनुष्य समुदायक संसर्ग आवश्यक अछि। तखन ओहि सत्य काँ, ओहि घटना काँ एहि रूप मे व्यक्त करबाक चेष्टा करू जे जनसाधारण पर प्रभाव क' सकय। अत: जीवन एवं दुनियाक सत्य परखबाक अनुभव जिनका जतेक हेतनि से ततेक नीक कलाकार होयताह।

लिखबाक विषयक समस्या तँ एहि तरहें हल भेल। आब ई रहल जे ओकरा सुन्दर कोना बनेबाक चाही। एतदर्थ भाषा, लेखन-शैली और आधारक आवश्यकता होइत छैक। भाषाक हेतु नीक पुस्तकक अध्ययन एवं लेखन-प्रणालीक अविराम क्रम जारी रखबाक आवश्यकता होइछ। शैलीक हेतु सुन्दर साहित्यिक ग्रन्थ पढ़ू आ ओकर मनन करू। मनन करबाक समय ध्यान दियौक जे लेखक साधारण बातक महत्व कतेक देने छथिन और बातक ढंग-स्वरूप-केहन छैक। ओहि बात काँ अहाँ कोन तरहें कहि सकैत छलहुँ। तखन आधार पर विचार एहि तरहें करबाक चाही जे प्रेम और अधिकार कोन वस्तु पर अधिक अछि। राजनीति, समाज अथवा कोन विषय पर? एहि तरहें अपन बात बूझि गेला पर ई विचारबाक चाही जे देश काँ सम्प्रति कोन वस्तुक आवश्यकता अछि? एहि सभ प्रश्न पर विचार कयला पर यथोचित आधार बना ली। ई तँ भेल भित्ति, परन्तु अहाँक भावना जखन जाहि स्वरूप मे उद्‌भूत हैत तखन ताही आधार पर प्रकट क'क' ओकरा अक्षुण्ण राखक थीक। किन्तु, ध्यान रहै, देशक सेवा अहाँक प्रथम कर्त्तव्य थीक। ई दोसर बात थीक जे ओकर द्वार कतेको प्रकारक अछि।

लेकिन, एक बात; लेखक काँ सबसँ प्रथम ई विचारबाक चाही जे हमरा लिखबाक अन्त:प्रेरणा अछि वा नहि? केवल नाम-यशक मोह तँ नहि अछि?

ई 'अपन बात' हम एहि दुआरे लिखलहुँ अछि जे एहि तरहें अपना सन कतेको बन्धुक जे सम्प्रति प्रारम्भिक अवस्था मे छथि, किछु मार्ग देखा सकब।

सौरभ (हस्तलिखित मैथिली पत्रिका)
नवम्बर, 1943 मे लिखित संपादकीय

अन्न : एक विकट समस्या

आइ अन्नक ई विकट समस्या राजनीतिक क्षेत्रक दुर्दमनीय अभिशाप जकाँ हमरा देश मे वर्त्तमान अछि। ब्रिटेन, जे सम्प्रति आकंठ युद्ध-मग्न अछि—जकर संपूर्ण चेतना आक्रमण और आक्रमण सँ बचबाक भीषण, दुरूह एवं जटिल कार्य मे व्यस्त अछि, तकर इतिहास (भारतवर्ष सनक) नहि छैक। एहि बातक अनुमोदन सिलोन (लंका) सरकारक रस विभागक कमिश्नरक विज्ञप्ति करैत अछि जे 'इंग्लैण्ड मे जीवनक आवश्यक वस्तुक मूल्य ओतबे अछि जतबा युद्धक पूर्व छल। केवल विलास सामग्रीक मूल्य-वृद्धि भेल अछि।' तकर कारण ई कहल गेल अछि जे मूल्य नियंत्रणक कठोर नियमक कारणे भेल अछि।

एतहु नित्यप्रति दिल्ली सँ मूल्य नियंत्रणक नवीन-नवीन नियम निर्गत होइत अछि, किन्तु तैयो भारतवर्ष मे, जे एखनधरि प्रत्यक्ष युद्ध सँ बचल अछि—भूख-अकालक आगि शांत नहि भ' रहल अछि, की कारण थिक जे बम-जर्जर देशक अपेक्षा ई मुँहदुब्बर देश महगी एवं अन्नाभावक प्रचंड अग्नि मे दग्ध भ' रहल अछि।

बंगालक दुर्दशा प्राय: किनकहु सँ अज्ञात नहि होयत। महानगरी कलकत्ता के फुटपाथ पर अस्थि-चर्मावशिष्ट कंकाल—मरभुक्खा गणक भीषण करुण छीना-झपटी देखि क' किनक हृदय हाहाकार नहि क' उठत? कूड़ाखाना मे फेकल पात सभ सँ अन्न बीछि-तीछि कें परस्पर छीनबाक हेतु नोच-खसोट, चलबाक शक्तिक अभाव मे भूख सँ खुरछारी काटि सदाक हेतु शांत भ' जायब तँ जाइ दिअ, कुकूरक संग द्वन्द्व क' कए छीनब देखि, के अपना कें मानव कहि क' गौरवान्वित भ' सकैत छथि? मानवताक ई विकट उपहास कतेक लज्जा और घृणास्पद अछि। एहि हृदय-विदारक अप्रिय दृश्यक अनुभवे मात्र सँ मनुष्यक हृदय काँपि उठैछ। आइ भारतवर्षे नहि, समस्त संसार मे एकर चर्चा भ' रहल अछि। इंग्लैण्डक पार्लियामेंट मे अनेको बेर चर्चा भेल अछि। चीन सहायता पठौलक, आयरलैंड सहायता पठौलक, अमरीको चुप नहि अछि। नवीन वाइसराय लार्ड वेवेल एहिठाम

एलाक बाद तुरत बंगालक स्थितिक निरीक्षण कयलनि आ तकरा बाद चिन्तित भ' गेला जे कोना एकर सुधार हो। भारतवर्षक केन्द्रीय व्यवस्था—सभा सभ मे मुख्यत: एही समस्या पर विचार भेल और आशाक विषय थिक जे सम्राटोक ध्यान एहि दिस आकर्षित भेल। तथापि स्थितिक सुधार ताहि अनुपात सँ नहि भेल अछि, जाहि सँ संतोषजनक सुधार कहल जा सकय। आब यद्यपि किछु अन्न तिनका भरोस जकाँ (सहायतादि सँ) भेटि रहल अछि, परन्तु एहि स्थितिक स्वर एखनधरि विश्वसनीय नहि अछि...और ठोर चाटने कतहु पियास कम होइछ की?

ई तँ बंगालक स्थिति अछि। और प्रांत सभ अन्नक महगी और दुष्प्राप्यक लहरि सँ क्षुब्ध-उद्विग्न भ' रहल अछि। महगीक प्रभाव सार्वजनीन अछि। अन्न-वस्त्र केँ के कहय, साधारण सँ साधारण वस्तु चौगुन दाम मे सस्त बुझल जाइछ। अधिकारी लोकनि गोटेक व्यापारी पर कहियो-कहियो मुकदमा चला क' अपन कर्त्तव्यक इतिश्री बूझि लैत छथि। तखन ई विकट समस्या कोना हल भ' सकैत अछि? तकर मुख्य उत्तरदायित्व सरकार केँ छोड़ि और किनका पर देल जाइनि?

क्यो-क्यो एकर कारण भारतक अधिक बढल जनसंख्या पर दैत छथि। भारतवर्षक जनसंख्या अवश्य बढ़ि गेल अछि। दस वर्ष मे 11 करोड़सँ 40 करोड़ जनसंख्या भेल। एहि तरहें सात करोड़ जनसंख्या मे वृद्धि भेल, परन्तु अन्नक उत्पादन मे कनेको वृद्धि नहि भेल। (यद्यपि मृत्युक अनुपात केँ जनसंख्याक दृष्टिक माध्यम बनला पर नाम मात्रक वृद्धि होइछ तथापि खाद्य समस्याक प्रश्न मे जनसंख्याक वृद्धि अवश्य अनुप्रेक्षणीय भ' जाइत अछि) एहि परिस्थिति पर श्री एन. सुन्दरम शास्त्री अपन विचार सरकारी रिपोर्टक आधार पर व्यक्त कयलनि अछि जे पूर्वक अपेक्षा सम्प्रति अधिक उपज भ' रहल अछि। जाहि भूमि मे वर्ष मे एक बेर अन्न उपजैत छल, ताहि मे आब तीन बेर उपजैत अछि। जल-व्यवस्था पूर्वापेक्षया बहुत बढ़ि गेल अछि। विदेशी अन्नक आमदनी (?) सेहो अधिक भेल अछि। परन्तु किमाश्चर्यमत: परम जे एहि रिपोर्टक अनुसार अन्नक सस्ती नहि भ' अकाल और महगीक ताण्डव उपस्थित भ' गेल अछि। बुझना जाइछ जे ई सभ सार-शून्य अटक्कर पंचे डेढ़ सौ बला रिपोर्ट थिक।

विदेश सँ केवल चाउर आ गहूम आएल अछि और सेहो नाम-मात्र। तखन बढा-चढा क' कागजी घोड़ा दौड़ायब तँ हमरा सरकारक जन्मसिद्ध अभ्यास आ नीति थिक। वस्तुत: महगीक कारण ई थिक जे जखन-जखन सरकार किंवा सरकारी ठीकेदार अन्न मोल लेमै लगैत छथि तखन-तखन अन्न एही तरहें महग आ दुष्प्राप्य भ' जाइत अछि।

बंगालक कड़ाही तँ एखन तबले अछि, मद्रासहुक यैह अवस्था सुनबा मे आएल अछि। बिहारहु मे पानिक अभावें अगहनी पूर्ण नहि भ' सकल अछि। भगवान नहि करथि जे बंगाल जकाँ आनहु प्रांतक ऊपर ई दुख-पहाड़ टूटि जाय, नहि तँ सोङरो लगौने गोवर्धन नहि उठत!

सौरभक पृष्ठ 40 पर प्रकाशित संपादकीय विचार
सौरभ, वर्ष-1, अंक-2, नवम्बर 1943

सहरसा जिला आ तकरा परिसर मे मैथिली साहित्य सेवा

सहरसा जिला मे प्राचीन साहित्यकार लोकनि केवल साहित्य रचना मे संलग्न छलाह, मैथिलीक हेतु आन्दोलन नहि आरंभ भेल छल। एकरा लेल सर्वप्रथम रामकृष्ण झा 'किसुन' 15 अगस्त 1943 ई. मे पंडित त्रिलोकनाथ मिश्रक सभापतित्व मे मैथिलीक आन्दोलन करबाक दृष्टि सँ सुपौल श्री हरिकीर्त्तन भवन मे श्री मैथिली समितिक स्थापना 15 अगस्त केँ कयलनि जकर उद्घाटन दौलतपुर निवासी स्वर्गीय बाबू भागवत चौधरी कयने छलाह।

एहि संस्थाक उद्देश्ये छलैक मैथिलीक प्रचार-प्रसार आ उचित अधिकारक उपलब्धि लेल संघर्ष। सर्वप्रथम ई संस्था जिलाक उच्च विद्यालय मे मैथिलीक अध्ययन-अध्यापनक तीव्र आन्दोलन आरंभ कयलक आ 'मिथिलायां भव: मैथिल:' क नारा बुलन्द क' गाम-गाम मे सभा-समिति क' मिथिला मे रहनिहार सब जातिक लोक मैथिल थिकाह आ हुनक मातृभाषा मैथिली थिक, ई अभियान आरंभ कयलक। एही संघर्षक फलस्वरूप सहरसा जिला मे सर्वप्रथम सुपौल हाइस्कूल मे मैथिलीक अध्ययन-अध्यापनक व्यवस्था 1945 मे भेल आ रामकृष्ण झा किसुन मैथिलीक अंशकालिक अध्यापक नियुक्त भेलाह जिनका 1947 ई. मे पूर्णकालिक अध्यापकक मान्यता प्रदान कयल गेल।

श्री मैथिली समितिक दिस सँ किसुन जीक संपादकत्व मे 'सौरभ' नामक हस्तलिखित पत्रिका प्रकाशित कयल गेल जाहि मे पंडित त्रिलोकनाथ मिश्र, आरसी प्रसाद सिंह आ यात्री जी आदिक रचना सब सेहो भेटैत रहैत छल। ई केवल साते-आठ टा अंक बहरा सकल।

श्री मैथिली समितिक तत्वावधान मे कातिक धवल त्रयोदशी केँ विद्यापति स्मृति दिवसक अवसर पर ओही वर्ष श्री मिथिला पुस्तकालयक स्थापना कयल गेल।

एखन तँ सहरसा जिला मे कुल 92 टा स्वीकृत-अर्द्धस्वीकृत उच्च एवं उच्चतर विद्यालय अछि, जाहि मे प्रतिवर्ष साढे चारि-पाँच हजार छात्र-छात्रा मैथिली पढ़ैत छथि, वर्ग 8 सँ ल' क' हायर सेकन्ड्री कक्षा धरि। एहिना एहि जिला मे सहरसा, मधेपुरा, सुपौल, निरमली, उदाकिसुनगंज आ मुरलीगंज मे सम्प्रति कुल छओ टा डिग्री कालेज अछि, जाहि मे सब मिला क' प्राक् विश्वविद्यालय सँ स्नातक कक्षा आ मैथिली प्रतिष्ठा धरि अढाइ हजार सँ अधिक छात्र-छात्रा मैथिलीक अध्ययन करैत छथि। विशेष ई जे स्कूल एवं कालेज मे एहिठामक मैथिलेत्तर लोको (मारवाड़ी, मुसलमान, बंगाली प्रभृतिक छात्र-छात्रा पर्यन्त) मैथिलीक अध्ययन करैत छथि। एहीठाम ईहो ज्ञातव्य जे डा. बालगोविन्द झा 'व्यथित' (सुपौल कालेज) क निदेशन मे एही कालेजक प्रो. धीरेन्द्र नारायण झा 'धीर' 'आधुनिक मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमि मे श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' क अवदान' तथा प्रो. ब्रह्मदेव प्रसाद वर्मा 'विद्यापतिक साहित्य मे धर्म ओ दर्शन' एवं मुरलीगंज कालेजक प्राध्यापक बालखंडी झा 'मैथिली साहित्य मे बाह्य प्रकृति' पर, मधेपुरा कालेजक प्राध्यापक हितनारायण झाक निदेशन मे मैथिली मे शोधकार्य क' रहल छथि।

सुपौल मे मैथिलीक आन्दोलन 1943 सँ अद्यावधि क्रमशः बढिते गेल। 1951 मे एहिठाम राष्ट्रीय सार्वजनिक मेलाक स्थापना भेल। ओकर स्थापना वर्ष सँ ल' क' अद्यावधि केवल मैथिलीक प्रचार-प्रसारार्थ किसुनजी मेला समितिक सदस्ये नहि, सहायक मंत्री, सांस्कृतिक मंत्री आ संयुक्त मंत्रीक रूप मे रहैत अयलाह अछि। 1951 सँ 1967 धरि (ई मेला 26 जनवरी सँ एक मास धरि प्रतिवर्ष लगैत अछि) प्रतिवर्ष सांस्कृतिक कार्यक्रमक अन्तर्गत मैथिलीक छोट-पैघ कार्य होइतहि रहल अछि।

मेला दिस सँ ओना तँ प्रतिवर्ष सांस्कृतिक कार्यक्रम मे मैथिलीक प्रधानता रहल अछि आ मैथिलीक ख्यातनामा कविलोकनि (सर्वश्री यात्री, सुमन, किरण, मधुप, अमर, शेखर, वर्माजी, राजकमल, कीर्त्तिनारायण, सोमदेव, धीरेन्द्र, जीवकान्त, रेणु, मिहिर प्रभृति) अबैत रहलाह अछि।

1956 मे मेला दिस सँ त्रिदिवसीय सांस्कृतिक आयोजन कयल गेल छल, जाहि मे मैथिलीक विकास योजनाक क्रम मे कुमार गंगानन्द सिंह, पंडित त्रिलोकनाथ मिश्र, यात्री जी, सुमन जी, किरण जी, शेखर जी, वर्मा जी, रवींद्रनाथ जी आदि आयल छलाह जकर बड़ व्यापक प्रभाव मैथिली आन्दोलन पर पड़ल। एहि आयोजन मे मेला सचिव कमलनारायण झा, एडवोकेट, डाक्टर सुधीर कुमार मुखर्जी, लक्ष्मण चौधरी, जितेन्द्र नारायण झा प्रभृतिक योगदान अविस्मरणीय अछि।

एकर अतिरिक्त सुपौल मे मैथिली आन्दोलन केँ गाम-गाम मे प्रसारित करक उद्देश्य सँ 1950 ई. मे 'प्रबुद्ध मैथिल समाज' क स्थापना भेल, जकर कार्यकर्त्ता लोकनि जिलाक विभिन्न क्षेत्र मे जा क' काज कयलनि। पंडित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' लिखित 'मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण' क अनुसारें (पृष्ठ 441) सुपौल मे मैथिली आन्दोलन केँ बढ़यबाक हेतु रामकृष्ण झा 'किसुन' छात्र सैन्यक संगठन कयलनि, जिनका लोकनिक द्वारा सुदूरव्यापी कार्य अद्यावधि भेल आबि रहल अछि।

सन 1952 मे सुपौल मे एकटा विशिष्ट आयोजन कयल गेल, जकर अध्यक्षता वैद्यनाथ मिश्र यात्री आ उद्घाटन अमरजी कयने छलाह। एहि अवसर पर स्थानीय साहित्यकारक अतिरिक्त किरण जी, मधुप जी, वर्मा जी, शेखर जी, राघवाचार्य, योगेश्वर झा आदि सम्मिलित भेल छलाह। एही अवसर पर किसुन जी लिखित 'उदना रे मोर कतय गेलाह' मैथिली एकांकीक अभिनय मायानन्द मिश्र आ शिशिर कुमार दास कयने छलाह जे मैथिली एकांकीक अभिनयक प्रवृत्ति लोक मे जगौलक।

सन् 1953 मे जटाशंकर चौधरी, रमेश झा (एम.एल.ए.) क सहयोग सँ किसुन जी सहरसा मे 'अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद'क स्थापना कयलनि। एकर द्विदिवसीय समारोह भेल। एहि अवसर पर कुमार तारानन्द सिंह, हरिमोहन बाबू, किरण जी, मधुप जी, डा. लक्ष्मण झा, अमर जी, रामचरित्र पाण्डेय अणु जी, वर्मा जी, शेखर जी, राघवाचार्य प्रभृति अनेक साहित्यकार आयल छलाह। ई एहि जिलाक अभूतपूर्व आयोजन भेल छल, जकर व्यापक प्रभाव मैथिली आन्दोलन पर पड़ल।

सन 1954 मे मैथिली आन्दोलनक प्रचारार्थ समीपक पचीसो गामक गण्यमान्य व्यक्तिक एक सभा श्री मैथिली समिति, सुपौलक आयोजनानुसार श्री परमानन्द चौधरीक अध्यक्षता मे कर्णपुर मे कयल गेल, जकर प्रभावें काज बड़ आगाँ बढल।

1956 मे सुपौल मे मैथिली विकास सभा कयल गेल जकर अध्यक्षता यात्री जी आ उद्घाटन अमर जी कयने छलाह।

तकरा बाद तँ अनेक गाम मे मैथिलीक विभिन्न पर्व, विद्यापति पर्व, चंदा झा स्मृतिपर्व, आदिक माध्यमे मैथिलीक आन्दोलन केँ प्रगति देल गेल। 1948 सँ प्राय: प्रतिवर्ष सुपौल मे विद्यापति स्मृतिपर्व साप्ताहिक, पछाति पाक्षिक रूप मे घूमि-घूमि क' मनयबाक क्रम जारी रहल।

1961 मे पुन: अक्तूबर मास मे एकटा द्विदिवसीय सांस्कृतिक समारोह मना

क' मैथिलीक सामयिक आन्दोलन केँ आगाँ बढाओल गेल। एहि विद्यापति स्मृति पर्वक उद्घाटन प्रो. राधाकृष्ण चौघरी, अध्यक्षता प्रो. आनन्द मिश्र आ सांस्कृतिक कार्यक्रमक संचालन गोपीकृष्ण दास कयने छलाह। आयोजक किसुन जी छलाह आ स्वागताध्यक्ष प्रो. बालगोविन्द झा 'व्यथित'।

1962 मे पंचगाछिया मे वैद्यनाथ झा सुरेन्द्र झा सुमन जीक आयोजकत्व मे चंदा झा जयंती मना क' ओहि क्षेत्र मे मैथिली आन्दोलनक कार्यक्रम चलाओल गेल। ओही वर्ष सितम्बर मे सुपौल मे मैथिली प्रकाशन मंडलक स्थापना भेल।

1962 ई. मे प्रो. मायानन्द मिश्रक आयोजकत्व मे सहरसा मे मैथिली साहित्य संस्थानक स्थापना भेल, जकरा दिस सँ सहरसा सँ 'अभिव्यंजना' नामक मैथिलीक विशिष्ट पत्रिका प्रकाशित कयल गेल। एकर उद्घाटन रामकृष्ण झा किसुन तथा अध्यक्षता कालेजक प्राचार्य कयलनि। एक दोसर अधिवेशन 1963 मे सहरसे मे चंदा झा जयंतीक क्रम मे भेल, जकर उद्घाटन डा. हरिमोहन मिश्र (मुंगेर कालेज) आ अध्यक्षता प्रो. राधाकृष्ण चौधरी (बेगूसराय कालेज) कयलनि। एहि अवसर पर किसुनजीक 'आत्मनेपद'क विमोचन अमर जी कयलनि। एकर स्वागताध्यक्ष राधाकृष्ण टेकरीवालक उद्बोधनात्मक मैथिली भाषण बड़े प्रभावशाली भेलनि। सहरसा मे संस्थानक तेसर अधिवेशन 1964 मे विद्यापति स्मृति पर्व मनयबाक क्रम मे कयल गेल जकर उद्घाटन प्रो. राधाकृष्ण चौधरी तथा अध्यक्षता आदरणीय रमानाथ बाबू ओ कवि सम्मेलनक अध्यक्षता यात्री जी तथा संगीत सम्मेलनक अध्यक्षता कुमार श्यामानन्द सिंह जी कयलनि।

1964 मे सुपौल मे चंदा झा जयंती मनाओल गेल, वीरपुर मे, निरमली मे, मरिचा मे, कर्णपुर मे आ वाराह क्षेत्र मे—एहि मे श्री मैथिली समितिक बड़ योगदान रहल।

1965 मे सुखपुर मे मैथिली संघर्ष सभा कयल गेल, जाहिमे लक्ष्मी नारायण सिंह (गंगा बाबू), हरिशंकर प्रसाद सिंह (तारा बाबू), सीताराम मिश्र (सुखपुर हाइस्कूलक प्रधानाध्यापक)क उत्साहवर्द्धक योगदान रहल।

1967 मे मैथिलीक द्विदिवसीय नवलेखन सेमिनार राजकमल चौधरीक अध्यक्षता मे भेल, जे मैथिली साहित्यक एक ऐतिहासिक घटना थिक। एहि अवसर पर आयोजित मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी (ग्रंथालय, दरभंगा)क उद्घाटन श्रीमती निर्मला सिंह, एम.ए., डिप.एड. कयने छलीह। एहि आयोजनक विवरण बिहारक हिंदी, अंग्रेजी, मैथिली, बंगालक पत्र आ नेपालक पत्र-पत्रिकादि मे सेहो प्रकाशित भेल। एकर मुख्य आयोजक किसुन जी रहथि आ सहायक रहथिन आनन्द मोहन दास,

एडवोकेट (तत्कालीन मेला सचिव)।

1967 हि मे सुपौल व्यापार संघ भवन मे तत्कालीन अधिसूचित क्षेत्र समिति उपाध्यक्ष तथा अवैतनिक दण्डाधिकारी लक्ष्मी प्रसाद सिंहक अध्यक्षता मे मैथिली विकास समितिक पुनस्संघटन कयल गेल, जकर उद्‌घाटन कमल नारायण झा, एडवोकेट कयलनि। तदनुसार मैथिली केँ बिहारक द्वितीय राजभाषा घोषित करबाक मांग ल' क' एकटा प्रतिनिधि मंडल लक्ष्मण चौधरीक नेतृत्व मे तत्कालीन शिक्षा मंत्री कर्पूरी ठाकुर सँ अपन स्मारपत्र संग भेंट कयलक। ओही वर्ष गणपतगंज, धरहारा मे मैथिली कवि सम्मेलन लक्ष्मण चौधरी, अवैतनिक दंडाधिकारीक स्वागताध्यक्षता मे मनाओल गेल आ एहि तरहें मैथिली आन्दोलन केँ आगाँ बढ़यबाक प्रयत्न अद्यावधि होइत रहल अछि।

मिथिलेशक अध्यक्षता आ रायबहादुर शिवशंकर झाक मंत्रित्व मे भेल सहरसाक 1361 सालक मैथिल महासभा सेहो मैथिली प्रचारक दिशा प्रशस्त कयलक।

एकरा अतिरिक्त सुपौल कालेज, सहरसा कालेज, निरमली कालेज, वीरपुरक निराला परिषद, बनगाम, कर्णपुर आदिक अनेक संस्था दिस सँ अनेक बेर मैथिलीक विभिन्न उत्सव सब मना क' मैथिलीक प्रचार-प्रसार आ आंदोलनक दिशा केँ प्रशस्त करबाक प्रयास होइत रहल अछि। मैथिली आंदोलन केँ गति देमक हेतु कर्णपुरक मैथिली साहित्य परिषद सम्प्रति स्तुत्य कार्य क' रहल अछि। एकर अतिरिक्त बनगाम, मलाढ़ आदि अनेको गाम मे अनेक संस्था सब कार्यरत अछि।

समस्या अछि जे प्राथमिक कक्षा मे मैथिलीक अध्यापन व्यवस्था जाहि मे अध्यापक ओ अभिभावक संगहि अधिकारी लोकनिक सेहो उदासीनता कारण अछि। डॉ. बालगोविन्द बाबूक प्रयासें शिक्षा सदन आ शिक्षा मंदिर ई दू टा मैथिलीक प्रकाशक सुपौल मे टिकटिकयलाह अछि मुदा प्रकाशनक समस्या चिन्त्य अछिये। सम्पूर्ण मैथिली संसारक विभिन्न समस्या सब तँ एहूठाम अछिये।

प्रो. रमानाथ झा अभिनंदन ग्रन्थ मे
प्रकाशित लेख केर शेषांश।

जयपुर

22-10-1956

आइ साँझखन हम, दोस्त आ कृपा जयपुर सिटी देखक हेतु गेलहुँ। सिटी गेटक बाद सँ शहरक स्थापत्य विन्यास देखबहिक योग्य अछि। एक रूप-रंगक भव्य भवनावली। जयपुर केँ 'लाल गुलाबी नगर' कहल जाइत छैक, से धरि सत्ते। ओहने रंग, ओहने कोमलता, ओहेन सौन्दर्य-सौष्ठव, ओहने रूपमाधुरी, ओहने सुरभित। ठीक गुलाब सनक। बीच-बीच मे चौकपर, मंदिर विशाल चतुष्पथ। मंदिर सब मे हनुमानजीक प्रतिमा एक ठाम, दोसर ठाम एकादश शिवलिंगक स्थापना, बीच सड़क पर, बिजलीक व्यवस्था नीचहि सँ छैक। सजल-सजायेल दोकान सब, राजपथ हवाइ महलक समीप एक सय एगारह फीट तक चाकर अछि। प्राय: सर्वत्र खूब फैल सड़क। अत्यन्त भव्य, अत्यन्त आकर्षक। त्रिपोलिया बाजार धरि गेलहुँ। थाकल खूब छलहुँ मुदा नगरक सौन्दर्य सँ सिक्त हृदय थकावटिक जेना कनेको अनुभव नहि क' रहल छल। प्राय: तीन मील धरिक चक्कर दै एकठाम रोटी-दालि खाइत गेलहुँ। दू टा संगबे छलाह। हुनका लोकनिक केँ हनुमान ढाबा मे—ढाबा होटल केँ कहैत छैक—भोजनक व्यवस्था करा क' रिक्शा सँ तीनू गोटे डेरा पर आपिस अयलहुँ।

23.10.1956

प्रात: शौचादि सँ निवृत्त भ' स्नान-जलपान कयलहुँ। उपरान्त घूमक निश्चय कयलहुँ। सब गोटे विदा भेलहुँ। सिटी गेट होइत बाजार मे जा क' सत्यनारायण ढाबा मे बारह आनाक दर सँ भोजन करैत गेलहुँ। पछाति आरो सब गोटय, सुपौल तथा सहरसाक प्रतिनिधि सब भोजन करै ऐलाह, तखनधरि भात सठि गेल छलैक। बेचारा स्पष्टे कहलकैक जे एत' भात बेसी नहि चलैत छैक तें कम बनाओल जाइत छैक। बिहारी खास क' क' एम्हरूका लोक तँ भतखौका होइत अछि। एक गोटे

तँ एहि लेल झगड़ो करै लगलथिन ढाबा बला सँ। ओतय सँ पान खाइत पुनः नगरक चक्कर देब आरंभ कयल। त्रिपोलिया गेट सँ घुमैत...

दोस्त-स्व. रजनीकांत लाल

कृपा-स्व. कृपानाथ झा **शेष अनुपलब्ध**

(दुनू विलियम्स उच्च विद्यालय मे विज्ञान शिक्षक)

पुरी-यात्राक डायरी

8-10-1962

आइ राति बारह बजैत श्री जगन्नाथपुरीक हेतु गोसाञि केँ सिरागू मे गोड़ लागि यात्रा कयल। राति निःशब्द अछि आ सभ क्यो सूतल छथि। हम एखनधरि पत्राचार मे व्यस्त छलहुँ।

9-10-1962

राति मे भाइ जित्तू आयल छथि। प्रातः स्नानादि सँ निवृत्त भ' भोजनादि क' स्टेशन विदा भेलहुँ। भाइ केँ खोआ-पिया क' पहिनहि विदा क' देलिऐनि। कृपा बाबू स्टेशन सँ समाद पठौलनि अछि। संग मे नत्थू (नथुनी प्रसाद साहु) केँ सेहो क' लेल अछि। पुरी धरिक कॉनशेसन टिकट लेल, चार्ज लागल 12.82। पाँच व्यक्तिक टिकट एकेठाम बनल। एक हम, दोसर नत्थू, तेसर कृपा, चारिम चन्द्रशेखर बाबू, पाँचम अनिरुद्ध लाल दास, पटोरी (प्रो. रमेश वर्माक पिता)।

खूब विनोदक संग यात्रा क' रहल छी। कखनहु-कखनहु मन ततेक ने उमरि क' स्पष्ट भ' जाइत अछि जे गांभीर्यक समस्त आवरण केँ हटा क' मेघाच्छन्न नभक इन्द्रधनुष जकाँ सतरंगी छटा सँ अशेष व्यक्तित्व केँ अनुरंजित बना दैत अछि। तें ने खगड़िया मे चिनिया बदाम आ खीरा आदि हाहुत जकाँ छिन्ना-झपटी क' क' खायब आरंभ कयल। साँझ मे तँ ताल भ' गेल। बरौनी मे पार्सल सँ उतरलाक बाद जित्तू भाइ अपन बटालियन संग अभियान कयलनि। बटालियन माने नौ टा स्त्रीगणक जेड़। हम नत्थू केँ कुली बजबा क' सामानक संग विदा कयल। कृपा सेहो संग देलथिन। बरौनी मे जे एकटा बौगी मिथिला एक्सप्रेस मे हावड़ाक हेतु जोड़ैत छैक, ताहि मे ओ लोकनि सामान सहित चढ़ि जाइत गेलाह। पछाति से ज्ञात क' भाइ हमरा पर अनुरोध-विरोध, रुस्सा-फुल्ली आरंभ कयलनि। हम तँ हतप्रभ! बुच्ची दाइक बकारे बन्न। अस्तु कृपा आबि स्थिति स्पष्ट कयलनि। गाड़ी

फुजला काल दू चक्कर देलाक बादो जखन भाइ अपना बटालियनक संग नहि चढ़ि सकलाह तँ हमरालोकनि ओही कोचमकोंच डिब्बा मे चढलहुँ। बड़े कष्ट सँ कोठली मे प्रवेश कयल आ अतीव कष्ट सँ जसीडीह धरिक यात्रा। जसीडीह मे भाइलोकनि कने कालक बाद भेटलाह। टिकट मे 'ऑर्डिनेरी' लिखल छल आ भाड़ा नेने छल एक्सप्रेसक, से गेट पर किछु झंझटि भेल मुदा टीचर बूझि तथा एक पंडाक सिफारिश सँ बाँचि क' गेट पास करै गेलहुँ। राति वैद्यनाथ धामक निवासालय मे निवास कयल।

10–10–1962

भोर मे नित्यक्रियाक पछाति रिक्शा पर धामक धर्मशाला अयलहुँ। शिवगंगा मे स्नानादि क' बाबाक दर्शन पूजनादि क' पुनः रिक्शा सँ स्टेशन अयलहुँ। ओत्तहि ओ.के. होटल मे भोजन कयल। ट्रेन पकड़ि जसीडीह अयला पर तूफान मे नहि ढुकि सकबाक कारणे स्टेशन पर टौआय लगलहुँ। संयोगात रामकृपालु व्यथित जे ओतय टिकट कलेक्टर छथि, भेटलाह। गप्प-सप्प भेल, जलखइ करौलनि। अन्ततः सियालदह पैसेंजर सँ विदा होइ गेलहुँ। चढबा काल ओहू मे बेस भीड़ छल। अपना दल मे सभ सँ पाछाँ हम चढलहुँ। खिड़की दने ढुकलहुँ, एकटा अपरिचित युवक (प्रायशः बंगाली) हमरा उठा क' सहायता क' देलक, जाहि सँ गाड़ी मे ढुकि सकलहुँ। ओकरा सँ प्रायः ओही ओ.के. होटल मे भेंट भेल छल खाइत काल। से एहेन अपेक्षित भ' गेल जेना अपने लोक हो। मानव-मन केहन अद्‌भुत होइत अछि? ट्रेन विदा भेल। दृश्य अपूर्व छल। पहाड़ी सभक उच्चावच आकर्षण, पाद तल मे टेढ़-टाढ खेत सब। जेना बहुरेखा दरिद्रता तहिना भाग्यरेखा जकाँ टेढ़-घोंच। सहजहिं इलाका गरीब लागल। खेत कम सम परती बेसी। मन मे भेल जे सरकार (रूसक रहैत) उद्योग करैत तँ बुलडाउजर सँ तोड़ा क' एकरा उत्पादन योग्य बना लैत तँ कतेक नीक होइत? एक दिस अन्नाभाव, उत्पादनक समस्या आ जनसंख्याक वृद्धि आ दोसर दिस ई बाँझ परती।...

गाड़ी मे क्रमशः नीक स्थान भेटल। स्त्रीगण गीत आरंभ कयलनि। बाबा जाइ विराजे झारखंड मे। बहुत रासे भजन सब। नहुँ-नहुँ नभमंडल आह्लादमयी धवल चन्द्रिका सँ आलोकित होम' लागल। सीतारामपुरक बाद ओरियाक कारखाना, दुर्गापुरक कारखाना, दामोदर वैलीक पावर हाउस आदिक चमत्कार (देशक प्रगतिक साक्षी) देखैत वर्दमान मे ई ट्रेन छोड़ि देल। बिजली पर चलनिहार ट्रेन सँ (वर्दमान सँ) हावड़ाक हेतु विदा भेलहुँ। ओहि सँ पूर्व वर्दमान मे भोजन कयल। राति मे

हावड़ा उतरि रहबाक पास (अनुमति) रेलवे अधिकारी सँ ल' क' राति मे मुसाफिर खाना मे विश्राम करैत गेलहुँ। कृपा संग पहिने खूब बौअएलहुँ। पुरी जयबाक हेतु हावड़ा सँ प्लेटफार्म संख्या बारह सँ एक्सप्रेस 20.45 मे आ पैसेंजर 22.10 मे ट्रेन फुजैत छैक। से सब देखि-सुनि नाना प्रकारक विनोद करैत आबि सुतलहुँ। मौगियाही पैखाना बारह बजैत राति सँ बंद रहैत छैक, ताहि लेल जितू कम्पलेंड कयलथिन।

11-10-1962

भोरे स्नानादि सँ निवृत्त भ' घुम' फिर' लगलहुँ तँ इस्टर्न एडुकेसनिस्टक संपादक कैलास प्रसाद सिंह सँ भेंट भेल। हमहूँ आइ छह-सात वर्ष सँ ओकर संपादक मंडल मे छी। ताहि प्रसंग (पत्रिकाक प्रसंग) गप्प-सप्प भेल। विन्देश्वर मिश्र, तपस्वीनाथ झा प्रवृत्ति सेहो भेटलाह। विदा होइत काल देखैत छी तँ बटालियन चूड़ा फुला क' चढ़ा रहल अछि। हाञि-हाञि तैयार करा क' विदा होइत गेलहुँ। टैक्सी सँ जितेन्द्रक कार्यक्रमानुसार गणेश एवेन्यू 14, जतय बी.टी.ए. क भवन छैक, पहुँचलहुँ। बड़ सुन्दर प्रबंध। ऊपर मे बासा भेल। बटालियन पुनि बाहर-भीतर, भोजन-छाजन मे लागल। जेना-तेना तैयार भ' ट्राम सँ धर्मतल्ला होइत कालीघाट गेलहुँ। भगवती काली जीक दर्शन कयल। मन भक्ति-विह्वल भ' उठल। एक गद्दी सिंदूर चढा क' प्रसादीक रूप मे ल' लेल। ठामहि एकटा बंगाल हिन्दू होटल मे भोजन करैत गेलहुँ। वणिक् बुद्धि कतेक विलक्षण होइत अछि से स्पष्ट भेल ओहीठाम। होटल बला बाजल जे एत' भात, दालि सब पृथक-पृथक दाम मे भेटैत छैक। चारि आनाक भात, दू आनाक दालि एहिना जतेक खाइ से भेटत। सब ई सुनि बड़ प्रसन्न भेलाह। केराक पात पर खाइ लेल देलक। पछाति दाम देबा काल सभक मिजाजे दंग। भात छौ आनाक वा आठ आनाक, दालि चारि आनाक दू बेर, तरकारी चारि आना, भुजिया चारि आनाक, चटनी एक आनाक आ केराक पात दू पाइक। ई रंगताल? हमरा धरि साढे तेरह आना मात्र लागल। आन सब केँ एक टाका बाहर आना तँ चौदह आना। अस्तु, ओत' सँ चिड़ियाखाना गेलहुँ। खूब घुमलहुँ—बाघ, सिंह, जिराफ, जर्राफ, गेंडा, दरियाई घोड़ा, हरिण सभक प्रभेद, भालु सभक प्रभेद, सुग्गा सभक प्रभेद आ आन-आन जीव-जंतु, जाहि मे बनमानुख सेहो छल-देखल। करीब तीन घंटा धरि घूमि ओत' सँ बहरयलहुँ। पुनः विक्टोरिया मेमोरियल अयलहुँ। एत' बहुतरास ऐतिहासिक स्मारक सब देखि डेरा पर अयलहुँ। जितू अपना बटालियनक संग चटपट टैक्सी सँ हावड़ा स्टेशन विदा भेलाह। हुनका आइये जयबाक छनि। हमरालोकनि काल्हि विदा होयब।

हुनका लोकनिक बाद अपन धोती, गमछाक खोज कयल तँ से नहि भेटल। एहिठाम अयला पर नत्थू कें कहने रहियैक खीचि क' सुख' देमक हेतु तँ तुरत कृपा आ चन्द्रशेखर बाबू सेहो अपन-अपन धोती द' देलथिन। ओ (नत्थू) बेचारा की करैत? ओ सभक विद्यार्थी रहि चुकल अछि। हमर बला धोती चन्द्रशेखर बाबू ल' लेलथिन आ कृपा कें द' देलथिन। कृपा सनक लापरवाह व्यक्ति! तोरा किछु होउ हमरा कुरथी उला दे। फलतः धोती-गमछा हेरा गेल। मन खौंझा गेल। कृपा नथुनीक संग अपना पिसियौत भाइ सँ भेंट करबाक हेतु विदा भेलाह आ हम चन्द्रशेखर बाबू आ अनिरुद्ध लाल दासक संग न्यू मार्केट गेलहुँ। कलकत्ताक एक दर्शनीय स्थल। मार्केटक सजाबटि अद्‌भुत। फैशनक तँ प्रदर्शनिये थिक। स्त्रीगणक रूप-सज्जाक वैविध्य, फैशनक अनेक मादक, उत्तेजक रूप-विन्यास देखि मन दंग रहि गेल। घूमि-फिरि रास्ता मे खाइत डेरा आबि सूति रहलहुँ।

12-10-1962

आइ स्नानादि सँ फुरसति पाबि सब गोटा ठीक पौने आठ बजे डेरा पर सँ विदा भेलहुँ। पहिने अजायब घर लग गेलहुँ तँ पता लागल जे ओ दस बजे दिन मे फुजत। ओत' सँ दक्षिण रेलवे ऑफिस (धर्मतल्ला) गेलहुँ तँ ओ बंद छल। पता लागल जे 9.30 मे फुजत। ओत' क्यू लगौने भीड़ छल। एकटा मद्रासी कहलक जे 20-21 तारीखक हेतु शायिका संरक्षित (स्लीपिंग बर्थ रिजर्वेशन) करक हेतु हमरालोकनि लागल छी। ई सब सुनि आ देखि क' विचार भेल जे एहना स्थिति मे एकर आशा छोड़ि हमरालोकनि सीधे हावड़ा सँ बननिहारि एहि ट्रेन मे पहिनहि ढुकि जयबाक प्रयत्न करी। तें ओत' सँ आपिस चल अयलहुँ। धर्मतल्लाक एक ऊन वला दोकान सँ 22.50 मे एक पाउंड ऊन कीनि अजायब घर गेलहुँ। ओत' दू घंटा घूमि भूतत्व विभाग, जन्तु विभाग, अस्थि विभाग, मूर्त्ति विभाग, कीट विभाग आदिक परिदर्शन कयलहुँ। बड़ विलक्षण संग्रह अछि। खूब थाकि गेलहुँ। ओहिठाम सँ बहरेलाक बाद लगले भूख मोन पड़ि गेल। किछु हटि क' हिन्दुस्तान निरामिष होटलक साइनबोर्ड देखि ओत' पहुँचलहुँ। 1.75 मे लंच भेटैत छैक। सामग्री मे भात-दालि जतेक ली, दही, तीमन-तरकारी, चटनी, पापड़ एक खेप देत। तरकारी बड़ बेसी करू। चन्द्रशेखर बाबू एक बेर भात मंगलथिन आ बॉय देबा मे कोर-कसर केलकनि तँ ओकर मालिक आबि कहलकनि जे भात मंगा दैत छी। भात एहन कोन वस्तु थिक, जे कही से मंगा दी। मन तँ ई सुनि सभक गदगद भ' गेल। से कहि ओ आग्रह कयलक जे एकटा वस्तु हमरा हाथक आरो खा लेल

जाय। कनेक मीठ हयत। गदगद मन छलहे, कहलियैक जे बेस-बेस, लाउ। बॉय एक-एक प्लेट मे चमचम सनक मिठाइ नेने आयल। कहलक जे कमलभोग थिक। मिठाइ बेजाय नहि मुदा दाम दैत काल कुत्था होम' लागल। ई तँ रच्छ रहल जे चन्द्रशेखर बाबू लघी कर' चल गेलाह। ओ रहितथि तँ ओत्तहि बड़का झगड़ बाझि जाइत। एक-एक मिठाइक दाम लंगटबा एक-एक टाका चार्ज कयलक। हम चटपट सभक सती दाम द' चलि देलहुँ। डेरा पर आबि आराम कयल। घंटा जोड़ि निष्कर्ष बहरायल जे आइ एहि ट्रिप मे हमरालोकनि कुल 10 मील चललहुँ अछि। बेस थाकल छलहुँ, खूब निन्न भेल। सूति क' उठलहुँ तँ कृपा आ नत्थू केँ नहि देखल। कृपा तँ कनेकाल बाद घूमि क' अयलाह, घड़ी आन' गेल छलाह। बी.टी.ए. क मैनेजर साहेबक भातिज जे घड़ीसाज छथिन, तनिके थ्रू घड़ी लेलनि अछि। ब्रिगेड, कुल निनानबे टाका मे। नत्थू प्रायः सिनेमा देख' गेल छल।

ठीक छओ बजैत नत्थू सिनेमा सँ आयल। टैक्सी नहि भेटल तँ टमटम भाड़ा क', तीन टाका भाड़ा पर हावड़ाक हेतु विदा होइत गेलहुँ। 12 नंबरक प्लेटफार्म पर कुली द्वारा सामान ल' अबैत गेलहुँ। उमड़ल मानव समुद्र देखि मन चकित रहि गेल। रंग-बिरंग लोक, रंग-बिरंग ढंग, रंग-बिरंगक पोशाक, फैशन, वयस, क'ट, भाषा, भेष-भूषा आ सभक मन मे रंग-बिरंग भिन्न-भिन्न भावना। एकठाम एहन समवेत मानव रूप अद्‌भुत छल। लोक कुली सब केँ आठ-आठ, दस-दस टाका द' सेडे मे सँ ट्रेन मे जगह हथिया क' रखबौने छल। हमरा लोकनिक कुली 2 टाका पर ठीक भेल छल। ट्रेन 8.15 मे प्लेटफार्म पर 'इन' कयलक। चढ़बाक होड़ शुरूह भेल। सब केँ पठा क' हम सामान सभक सुरक्षा मे रहलहुँ। सबसँ पाछाँ हम कुलीक सहायता सँ चढ़लहुँ। भीड़ जीवन मे एहन आइ धरि हम कहियो ने देखने रही। अकल्पनीय केवल अनुभवगम्य। स्त्रीगण सभक जे दुर्दशा, मर्दन-मोचन देखल से एकदम अमानवीय। हमरे लग मे एक गोटयक कोड़ मे एकटा बच्चा क्यो द' देलकैक। रेड़म-बहेड़म मे ओ बच्चा स्वभावतः कानय लागल। बच्चा तँ बच्चे छल, हमरो होइत छल कानय लागी। बच्चा केँ कनैत देखि ओकर क्यो सम्बन्धी एकटा बंगाली छौड़ा केँ हरलैक ने फुरलैक, हमरा कंठ मोकय लागल ई कहि जे, 'हामारा बोच्चा मर गिया।' हम तँ हतप्रभ रहि गेलहुँ। चन्द्रशेखर बाबू आ कृपा ओकरा सबसँ झगड़ा करय लगलथिन। पछाति सब शांत भेल। हमरा सीट पर बैसक जगहो भेटि गेल। भरि राति निछक्का जागल रहलहुँ। पुरी एक्सप्रेस वास्तव मे एक्सप्रेस थिक। पचीस-पचीस स्टेशन पर रूकैत भोर मे 6.40 बजैत कटक उतरहुँ।

रास्ता मे धानक खेत सब लहलहाइत देखल। कोनो गम्हरल तँ कोनो फूटल। सब खेत पनिगर। सिंचन-व्यवस्था सेहो नीक। 'जेनापर' मे भोर भेल, तकर बादे सँ ई मनोरम नयनाभिरंजक दृश्य देख' लगलगहुँ। धानक खेत हरियरी गाछ-वृक्षक सौम्य सुषमा एकटा अपने इलाका सनक केवल खजूर ताड़क किछु अतिरिक्त गाछ सब दोसर रंग। एकठाम एक नदी कात मे एकटा दुब्बर-पातर युवक केँ नहा क' सूर्य केँ अर्घ्य दैत आ तीर मे एकटा स्त्रीगण धरती केँ जेना कनेञा सब बाबीक पयर छूबि-छूबि माथ मे लगबैत अछि, तहिना गोड़ लगैत देखलिऐक। एकटा स्टेशनक नाम 'धान मंडल' मुदा इलाका रेलक कात-कात विपन्ने प्रतीत भेल। बेसी लोक लुंगिये पहिरने। ठामठीम गोइठा-चिपड़ी पाड़ल दीवाल बला भितगर ने तँ अधिकांश खढ़हिक टटघर। यत्र-तत्र गांजी-टापी ल' क' लोक सब माछो मारैत।

ट्रेन सँ उतरि 'मर्सी अपील' करक धुकधुकी भ' उठल। कॉन्फ्रेंसक स्वयंसेवक केँ बजा क' सामान उठबौलहुँ। गेट पर टिकट कलेक्टर केँ ठकि-फुसिया केँ निछड़ि देलहुँ। रच्छ रहल जे पोल नहि खुलल। स्टेशन लगक कैम्प मे पाँच-पाँच टाका प्रतिनिधि शुल्क जमा क' बस सँ अधिवेशन स्थल तक अयलहुँ। कटक कॉलेजिएट स्कूलक छात्रावास मे डेरा भेटल। उड़ीसक अतिरिक्त आन सब सुविधा। स्नानादिक बाद जलखइ क' बाजार घुमलहुँ। एक-एक टाका भोजन शुल्क पर जे भात-दालि, तरकारी-भुजिया, पापड़-नेबो आदि भेटल, से बेस नीक, बेस चिक्कन। सुतल छलहुँ कि मधुसूदन चौधरी आ जितेन्द्र भेटलाह। आगाँक प्रोग्राम तय कयल। बड़े रंझ-मंझ भेल। तदनुसार कटक सँ 1.10 बजैत राति बस द्वारा 59 मीलक दूरी तय क' क' 56 व्यक्तिक संग मे पुरी 3.15 राति मे पहुँचलहुँ। बिहार राज्य माध्यमिक शिक्षक संघक महामंत्री वृन्दा प्रसाद राय 'वीरेन्द्र' 'बाबा विराजय उड़िया देश मे' ई जगन्नथिया गीत बड़े उत्साह सँ गाबि बसक यात्रा केँ बड़ी कालधरि गुलजार बनौने रहलाह, तरह-तरहक गीत, ठहक्का, हँसी-मजाक जाहि मे पंजाबक प्रतिनिधि श्रीमती ज्ञानी दर्शन कौर तथा हुनके एक संगिनी सेहो सम्मिलित छलीह, होइत रहल। क्रमशः सब झुक' लगलाह। बाहर मे इजोरिया भीतर मे हास्यक ज्योत्स्ना। कने कालक बाद सब चुप्प, मौन आ झुकैत अर्थात सब माथ डोलबैत, अन्तरंग आ बहिरंग सब मदमस्त। वाह्य प्रकृति शरत् पूर्णिमाक धवल ज्योत्स्ना-धौत एक अपूर्व रहस्यमय प्रतीत होइत छल, अद्भुत, अनुपम आ अपार्थिव। पुरी अयला पर श्रीमती कौर आ हम दलक समक्ष डाभक पानि पिबाक प्रस्ताव राखल। कोजागराक राति छलैक नारिकेल जलं पीत्वा को जागर्ति महीतले। हमर प्रस्ताव आ श्रीमती कौरक समर्थन, प्रस्ताव सर्वसम्मतिञे स्वीकृत भेल। सब गोटय डाभ (नारिकेर) क

पानि पिबैत गेलहुँ। पुनः समुद्रक कात पहुँचलहुँ। तावत चन्द्रमा मेघाच्छन्न भ' गेल छलाह। हमरालोकनि समुद्रक कातक बालु पर क्यो गमछा तँ क्यो तौनी चादरि ओछा क' आ क्यो बिनु किछु ओछौनहि पड़ि रहैत गेलहुँ। थोड़े काल हास्य-विनोद होइत रहल।

14-10-1962

फड़िच्छ भेला पर श्रीमती कौर अपन सखीक संग पानिक काते-कात दौड़य लगलीह। समुद्रक गुरु-गंभीर गर्जन आ लहरिक वर्धिष्णु वेगक कात मे एहि दुहू ललनाक दौड़-धूप एक अद्भुत विराट पृष्ठभूमि मे दूटा शिशुक नर्त्तन सन बुझना जाइत छल। चन्द्रास्त आ सूर्योदय देखबाक बड़ मनोरथ छल मुदा मेघाच्छन्न आकाश रहने से नहि पूर्ण भ' सकल। गमछा पहीरि हम आनक देखा-देखी समुद्रक लहरि लेम' लगलहुँ। लहरि बढ़ि रहल छल। आजुक दिन बड़ पैघ लहरि (ज्वार) उठबाक घोषणा रेडियो कयने छलैक। तथापि डरक स्थान मे आनन्दे भ' रहल छल। जी भरि स्नान कयल। बड़का-बड़का लहरि आबय आ हम उछलि क' ताहि मे तरंगायित होइत उधिया जाइ, भसिया जाइ, पुनः जा सम्हरी-सम्हरी कि तावत पीठे पर दोसर तरंगक धक्का। सबसँ बेसी काल धरि नथुनी स्थान कयलक। हमरा तँ दू टा भटको लागल। विन्ध्येश्वर मिश्रक ठेहुने फूटि गेलनि। कृपा केँ तीन-चारि भटका लगलनि। चन्द्रशेखर बाबू आ अनिरुद्ध बाबू हिफाजते सँ स्नान कयलनि। श्रीमती कौर लोकनि दुनू गोटय सबसँ पहिनहि उमकि-चुमकि क' स्नान कयने छलीह। हमरा लोकनिक बहराइत-बहराइत पाँच-छओ हाथ पानि बढ़ि गेलैक पानि हरियर कचोर बड़ बेसी नोनगर। नहयलाक बाद जावत सब तैयार होथि, हम थोड़ेक छोटकी खुरचन बिछलहुँ। ओत' सँ आबि चन्दन तालाब मे स्नान क' जनउ बदलि संध्यावन्दनादि कयल कि तावत पानि पड़' लागल। कोनहुना पड़ा क' एकटा बरंडा पर पानि गमा टिपटाप होइतहि छलैक कि दर्शनक हेतु चलि पड़लहुँ। ओत' सँ मंदिर बेस दूर। दर्शनादि क' एकटा मारवाड़ी बासा मे हम आ नत्थू भोजन कयल। जितेन्द्रक बटालियनक कप्तान भ' हुनका पित्ती पंडित यागेश्वर झा ओत्तहि छलथिन, हुनका सँ भेंट भेल। हेरैलहा धोती तँ भेटल मुदा गमछा नहि। 11.30 बजैत दिन मे बस सँ चलि 2 बजैत दिन मे कटक आपिस अयलहुँ। पानि पड़ैत रहक कारणे बस साक्षी गोपाल नहि जा सकल आ ने हमरे लोकनि पैदल जा सकलहुँ। मनहि मन विचारलहुँ जे फेर 15.10 केँ तँ पुरी अयबे करब, तखन ई सब हेतैक।

कटक आबि भरि छाँक सुतलहुँ। साँझ मे 5.30 बजे पंडालहि मे शिक्षा मंत्री

द्वारा प्रदत्त भोज खा क' सांस्कृतिक कार्यक्रम देखल। बड़ चिक्कन, बड़ सुन्दर।

कालि्हये जयप्रकाश नारायण द्वारा शिक्षा प्रदर्शनीक उद्घाटन भेल छल। प्रदर्शनियो बड़ उत्तम। कालि्ह सँ आइ धरि सब कार्यक्रम अंगरेजिये मे भेल, धोखहु सँ हिंदी मे किछु टा नहि। उड़िया मे घोषणा भेलैक मुदा हिंदी मे सेहो नहि। आइ वृन्दा बाबू शिक्षा मंत्री केँ भोजक हेतु धन्यवाद हिंदी मे देलथिन। कार्यक्रम 10.30 मे समाप्त भेल। उड़ीसाक प्रसिद्ध कवि राधा मोहन रायक कृतित्वक किछु झांकी सांस्कृतिक कार्यक्रम मे भेटल।

राति मे पंडित यागेश्वर झा पुरी सँ कटक अयलाह। हिनका खोआ-पिया क' निश्चिन्त कयल। जितेन्द्र पुन: कार्य सदस्य निर्वाचित भेलाह। राति मे 12.30 बजे सुतलहुँ।

15.10.1962

स्नानादि सँ निवृत्त भ' मुक्त अधिवेशनक हेतु पंडाल अयलहुँ। ठीक सवा नौ बजे दिन मे अधिवेशनक कार्यवाही आरंभ भेल। उच्छरंग राय नवल शंकर ढेबर उद्घाटक छलाह। उपस्थिति प्रायश: पाँच हजार छल। पंडालक भव्य सज्जा पर मंचक सुन्दर विन्यास प्रशंसनीय छल। सुनल जे उड़ीसा सरकार एहि अधिवेशनक हेतु पर्याप्त टाका आ सहयोग देने छैक। बीजू पटनायक उत्कलक मुख्यमंत्री, वीरेन्द्र मित्र उपमुख्यमंत्री, आर.पी. नायक आदिक आगमन भेल। सर्वप्रथम उड़िया भाषा आ विभिन्न लोकधुन (रिद्म) मे खूब प्रभावोत्पादक आरंभिक गान स्त्री-पुरुषक समवेत गानक रूप मे बड़ नीक भेल। माल्यप्रदानक उपरान्त स्वागताध्यक्ष पवित्र मोहन प्रधान (शिक्षामंत्री) अपना स्वागत भाषण मे उड़ीसाक सर्वविध महत्त्व पर प्रकाश, शैक्षणिक विकास आ योजनाक विश्लेषण माध्यमिक शिक्षक लोकनिक आर्थिक स्थिति मे सुधार, शिक्षकक आदर्श आ प्रतिष्ठा तथा हुनका लोकनिक कर्त्तव्य आदिक चर्चा कयलनि। सत्यप्रिय राय अपन भाषण दैत उद्घाटनक अनुरोध कयलनि। ढेबर भाई राष्ट्रीय समस्या सभक पृष्ठभूमि मे शैक्षणिक समस्या सब पर प्रकाश देलनि। रामप्रकाश गुप्त, राष्ट्रपति राधाकृष्णन, उपराष्ट्रपति जाकिर हुसैन, पंडित जवाहर लाल नेहरू, हुमायूं कबीर, पंजाब गर्वनर पिल्ले आदिक संदेश सुनौलनि। उपरान्त अधिवेशनक मुख्य अतिथि बीजू पटनायक अपना भाषण मे शिक्षाक स्वरूप आदि पर प्रकाश दैत कहलनि जे विद्यार्थी केँ आब एहन शिक्षा भेटब परमावश्यक जे यावत हमरा लोकनिक शरीर मे एको बुंद शोणित रहत, ताधरि अपन मातृभूमिक रक्षार्थ अपना केँ विसर्जित क' देब। अध्यक्षपदीय भाषण

मे आर.पी. नायक, आइ.सी.एस. सरकारक शिक्षा योजनाक स्वरूप स्पष्ट कयलनि। सब टा कार्यक्रम अंगरेजिये मे भेल। धोखहु सँ एको शब्द हिंदी क्यो नहि बजलाह। हाँ; अंत मे वृन्दा प्रसाद राय 'वीरेन्द्र' बड़े गर्वक संग हिंदी मे धन्यवाद देलथिन। एहि प्रकारें मुख्य मुक्त अधिवेशन समाप्त भेल। भोजनादि क' हमरा लोकनि कटक स्टेशन चल अयलहुँ आ पुरी पैसेंजर सँ विदा भ' साँझ मे पुरी उतरलहुँ। बड़ा हरिहर हमरालोकनिक पंडा थिकाह, से हुनके ऑफिस मे हमरा पाँचो व्यक्तिक (हम, चन्द्रशेखर बाबू, कृपा बाबू, अनिरुद्ध बाबू आ नथुनी) डेरा भेल। तुरत तैयार भ' हमरा लोकनि मंदिर जा दर्शन कयल आ समुद्रक कात मे जाइ गेलहुँ। लहरि बढ़ल छलैक से ऊपरका जमीन पर जाहि पर काल्हुक राति हमरा लोकनिक पड़ल छलहुँ ताहि पर समुद्रक लहरि अबैत छलैक। ओहि ऊपरका जमीनक स्तर समतल छलैक तकरा बाद ढाल करीब पच्चीस हाथ, तखन समुद्रक स्तर पुनः समतले जकाँ किछु दूर छलैक। काल्हि जे हमरा सब स्नान कयने रही से एही तेसर समतल स्तर पर। आइ ओहि स्तरक बाद दोसर स्तर ढाल पर समुद्र पूर्ण रूपें उमड़ल छल आ ऊपरका स्तर पर लहरि अबैत छलैक। तकरा बाद तँ सड़के छलैक। ई स्थान स्वर्ग द्वार कहबैत छैक। सड़कक ओहि पार 'पूरी भ्यू होटल' अछि, जाहि मे विशेषत: बंगाली परिवार छल। समुद्रक ई विकरालता देखि भेल जे काल्हि स्नान करब कोना भ' सकैत अछि ? एगारह बजैत राति मे घूमि क' डेरा अयलहुँ। अटका अनने छलाह पंडाजीक गुमाश्ता सीताराम तिवारी। भात, दालि आ तरकारी। भोजन क' सूति रहै गेलहुँ।

16-10-1962

भोरे सब क्रिया कर्म सँ निवृत्त भ' समुद्र स्नान कर' गेलहुँ। जाइत काल बस बला सबसँ गप्प कयल कोणार्कक सम्बन्ध मे। मुदा पता लागल जे कोणार्कक मार्ग ठीक नहि रहने ओतुक्का यात्रा संभव नहि अछि। बड़ निराशा भेल। आइ समुद्र स्नानक असली रीति स्वयमेव स्वानुभूति सँ सीखि लेल। रीति ई जे तट मे स्नान नहि क' कम सँ कम डाँड़ वा छाती भरि पानि मे चलि जाइ तँ लहरिक थपेड़ नहि लगैत छैक। तटाभिमुख भ' सावधान रही। जँ लहिर आबि जाय कि चट ठामहि बैसि रही। लहरि ऊपर द' चलि जायेत आ पुनि घूमि आओत। जाधरि मन हो स्नान करू आ इच्छानुसार अवसर देखि बहरा जाउ। सैह कयल। स्नान तेहन पवित्र जकाँ भेल जे पुनि आन ठाम स्नान करक आवश्यकता नहि बुझना गेल। धोती पहिरैत काल देखल जे सुखलाहा तट मे अनेक दम्पत्ति, बूढि आदि लहरिक वेग मे घिसियौर

काटि रहल अछि। किनार मे स्त्रीगण सब (उड़िया स्त्रीगण) बालुक पीड़ी बना क' ओहि पर तुलसीक गाछ रोपि बालुक पिण्ड द' रहल छलि आ रहि-रहि क' 'कूलूलूलू' क एक अद्‌भुत स्वर सँ वातावरण केँ गुंजित क' रहल छलि। हमरो लोकनि ओकर नकल क' एक दोसरा सँ विनोद कर' लगलहुँ। स्नानक बाद जे विदा भेलहुँ तँ तिवारी (पंडा) जी रास्ता सँ एक मोड़ होइत विदा भेलाह आ कहलनि जे आउ, एक वस्तु देखा दैत छी।

(एकर बादक पृष्ठ अनुपलब्ध अछि)

मानव स्वास्थ्यक मूल-चर्चा

धर्मार्थ काममोक्षाणांमारोग्यं मूलमुत्तमम्
रोगास्तस्यापहतरि: श्रेयसो जीवितस्य च

—चरक

चरकक उक्ति अछि जे धर्म, अर्थ, काम आ मोक्षक प्राप्ति जे भारतीय संस्कृति मे पुरुषार्थ परम्परा वा मानव जीवनक सर्वोपरि उद्‌देश्य मानल गेल अछि तकरा पयबाक उत्तम मूल आरोग्य अर्थात स्वास्थ्य थिक। रोग उक्त चारू वस्तुक बाधक थिक। रोगी व्यक्ति ने जीवन मे जीवन-रक्षे क' सकैछ आ ने जीवन मे उन्नतिये क' सकैछ। वस्तुत: अस्वस्थ व्यक्तिक बुतें धर्मक उचित पालन नहि भ' सकैछ आ ने ओ अर्थोपार्जने नीक जकाँ क' सकैछ। कामक आनंद भोग तँ ओ किन्नहु नहि क' सकैछ। मोक्ष प्राप्तिक हेतु सेहो ओ किछुओ नहि क' सकैछ।

स्वस्थे व्यक्तिक हेतु विद्या, बुद्धि, धन, यश आदि सब प्रकारक सुख-साधन आनंदकारी होइत अछि। गरीब सँ गरीब व्यक्ति जँ स्वस्थ अछि तँ ओ कांच-पाकल जे किछु भेटैत छैक से संतोषपूर्वक खा-पीबि क' पचा लैत अछि आ नीक जकाँ अपन काज-उदेम क' क' सुखपूर्वक सुतैत अछि। मुदा अस्वस्थ व्यक्ति केहनो धनी हो आ ओकरा कतबो नीक सँ नीक भोजन कियैक ने सुलभ होइक, ओ ने खा सकैत अछि आ ने पचा सकैत अछि। ने ओ नीक जकाँ अपन काजे-उदेम क' सकैत अछि आ ने कोनो श्रमे क' सकैत अछि। ओ ने सांसारिक सुख सभक भोगे क' सकैत अछि आ ने सुखपूर्वक निचैन भ' क' सुतिये सकैत अछि। तें जीवनक वास्तविक सार्थकता स्वास्थ्ये पर अवलंबित अछि।

भारतीय संस्कृति मे स्वास्थ्य केँ सर्वप्रथम महत्व देल गेल अछि। वेदक ऋचा सब स्वास्थ्यक उद्‌घोष प्रचुर रूपें कयने अछि—पश्येम शरद: शतं, जीवेम शरद: शतं, शृणुयाम शरद: शतं प्रब्रवाम शरद: शतमदीना:, स्याम शरद: शतं, भूयश्च शरद: शतात् आदि। अर्थात् कम सँ कम सै वर्ष धरि नीक जकाँ देखी, जीबी, सुनी, बाजी, स्वस्थ रही।

सभ्यताक आरंभहि सँ भारतीय जीवन-व्यवस्था मे पूर्ण स्वास्थ्य आ आरोग्य केँ प्राथमिक महत्व देल गेल अछि। स्वास्थ्य केँ धर्म मानल गेल तें स्वास्थ्य-साधनक नियम सब केँ धार्मिक आचरणक रूप मे अनिवार्यत: स्वीकार क' ओकरा कर्त्तव्य कोटि मे परिगणित कयेल गेल।

पूर्ण स्वाथ्यक प्राप्तिक हेतु स्वास्थ्य-रक्षाक पद्धति केँ जानि लेब आ तदनुकूल आचरण करब आवश्यक अछि। केवल ज्ञाने टा सँ नहि, ओहि ज्ञान केँ जीवनक आचरण मे उतारला सँ लाभ भ' सकैछ। आरंभहि सँ प्रत्येक व्यक्ति केँ नीक जकाँ ई दृढ़ धारणा बना लेमक चाही जे जीवन मे पूर्ण स्वस्थ रहब सबसँ प्रथम कर्त्तव्य थिक, सबसँ पैघ सफलता थिक, जीवनक प्रथम सार्थकता थिक। स्वस्थ रहब उत्तम धर्म आ रोगी होयेब सबसँ पैघ पाप थिक।

खूब मोट-डांट होयबे स्वास्थ्य नहि थिक आ ने सब प्रकारक कीटाणु सँ रहित शरीर केँ बनयबाक हेतु नाना प्रकारक टीका, सूई ल' लेब स्वास्थ्य थिक। पूर्ण स्वस्थ व्यक्तिक प्रसंग भारतीय सिद्धान्त अछि—

समदोष: समाग्निश्च समधातु मलक्रिय:
प्रसन्नात्मेन्द्रियमन: स्वस्थ इत्यमिधीयते।

अर्थात् जाहि शरीर मे वात (स्नायुमंडल), पित्त (पाचनक्रिया आ रक्त संवहन), कफ (जीवशक्ति) ई तीनू सम हो मने तीनू प्रणाली समान रूपें कार्य करैत हो, अग्नि सम हो विषम नहि, मने पाचनक्रिया एकदम ठीक हो, समधातु हो मने रस, रक्त, मांस-मज्जा आदि दैहिक धातु कम-बेसी नहि हो, मलक्रिया विषम नहि हो मने शरीरक मल, लघी, कफ, घाम आदि केँ बहार करक प्रणाली ठीक-ठाक काज करैत हो। संगहि जाहि व्यक्तिक आत्मा, मन आ इन्द्रिय सब प्रसन्न हो, वैह स्वस्थ व्यक्ति थिक।

स्वास्थ्यक सर्वप्रथम आधार थिक आहार। आहारक मुख्य अर्थ थिक अन्न-पानादिक भोजन। ओना जल आ वायु सेहो शरीरक अनिवार्य आहार थिक। मानव जीवनक हेतु गर्भ-प्रवेशक संगहि भोजनक आवश्यकता होइत अछि। महर्षि सुश्रुत कहने छथि—अन्नमूलं बलं पुषां बलमूलं हि जीवनम्। भोज्य पदार्थे बलरक्षा वा शरीर रक्षाक मूल कारण थिक आ जीवन बलाधीन थिक। महर्षि चरक सेहो कहने छथि जे अन्ने प्राणिसमूहक हेतु प्राणस्वरूप थिक। संसारक समस्त क्रिया अन्ने पर प्रतिष्ठित अछि।

आहार: प्राणिन: सद्यो बलकृद्येहधारक:
आयुस्तेज समुत्साह: स्मृत्योजोऽग्निविवर्धन:।

अर्थात् आहारे प्राणिमात्र केँ नूतन बल आ देह धारण करक शक्ति देनिहार थिक। आहारहि सँ आयु, तेज, उत्साह, स्मृति, ओज एवं शरीराग्निक वर्धन होइत अछि। एहि लेल भोजनक बड़ पैघ महत्व अछि। भोजनक प्रसंग कहल गेल अछि— रस्या: स्निग्धा: स्थिरा हृद्या आहारा: सात्विकप्रिया:। अर्थात सात्विक भोजन ओ थिक जे समस्त रसतत्वयुक्त, चिक्कन शरीर केँ स्थैर्य देनिहार, हृदय-मस्तिष्क केँ बल देनिहार, सुविधापूर्वक पचनिहार आ प्रिय हो। एहि तरहें संतुलित, सुपाच्य आ हितकारी आहार ग्रहण कयनिहार व्यक्ति सै वर्षधरि स्वस्थ रहि सकैत अछि। पथ्याहारक महत्व स्पष्ट करैत कहल गेल अछि—

विनापि भेषजैर्व्याधि: पथ्यादेव निवर्तते
न तु पथ्यविहीनानां भेषजानां शतैरपि।

औषधिक बिना लोक जँ पथ्याहार करय तँ रोग सँ मुक्ति पाबि सकैछ आ अनेकानेक औषधियो सँ किन्नहु रोग नहि छूटि सकैत अछि जँ पथ्याहार नहि करी। पथ्य वैह थिक जे अपना पाचन शक्तिक अनुकूल आ शरीरक हेतु अनिष्टकर नहि हो। प्राण: प्राणमृतामन्नं तदयुक्तया हिनस्त्यसून्। अर्थात अन्न प्राणधारीक प्राण थिक मुदा अयुक्तिपूर्ण सेवन कयला सँ ओ प्राणघातक भ' जाइछ। तें प्रत्येक व्यक्तिक हेतु उचित मात्रा मे शरीरक रचना, वयस, कर्त्तव्य-कार्य, ऋतु, जलवायु आ पाचनशक्तिक अनुसार भोजनक मात्रा स्वयं निर्धारित करब उचित थिक। एहि सम्बन्ध मे कहल गेल अछि जे—मात्रा प्रमाणं निर्दिष्टं सुखं यावत् विजीर्यते। अर्थात् जे सुखपूर्वक विजीर्ण भ' जाय, मने पचि जाय आ जकर रस बनि जाय, सैह भोजनक उपयुक्त मात्रा थिक।

अन्नक बाद शरीर आ जीवनक हेतु दोसर आवश्यक वस्तु थिक जल। किछु गोटय जल केँ पहिल वस्तु मानने छथि। शरीरक तीन चतुर्थांश भाग पानिये थिक। पानिक बिना हमरा लोकनिक जीवन असंभव अछि। तें जले जीवन थिक ई कहल गेल अछि। पीबाक हेतु पूर्णत: शुद्ध आ स्वच्छ जल होमक चाही। सर्वथा शुद्ध जल मे कोनो गंध, रंग वा स्वाद नहि होइछ। अपना उपयोगक हेतु हमरालोकनि मुख्यत: तीन रीतिये जल प्राप्त करैत छी। आकाश सँ वर्षा द्वारा, पृथ्वी तल सँ कूप, नलकूप आदि द्वारा आ पृथ्वीक ऊपर नदी, पोखरि, झरना आदि द्वारा। पीबाक दृष्टि सँ आकाश सँ प्राप्त जल सर्वोत्तम, भूमितल सँ प्राप्त मध्यम आ पृथ्वीपरक ऊपर वला जल निकृष्ट मानल गेल अछि। वर्षा सँ प्राप्त जल निर्मल, हल्लुक, पथ्यकर आ रुचिकर होइत अछि मुदा एकर प्रयोग भारतवर्ष मे बहुत कम (राजस्थान मे कतहु-कतहु) होइत अछि। विशेषत: भूमितल सँ प्राप्त जलहिक उपयोग लोक

करैत अछि। पैघ-पैघ शहर मे बाहरी जल केँ शुद्ध-परिष्कृत क' जलापूर्त्ति कयल जाइछ। यद्यपि सूर्यक किरण, वायु, पृथ्वीक नैसर्गिक गुणादि द्वारा जल स्वयं शुद्ध होइत रहैत अछि तथापि जलशुद्धिक प्राकृतिक साधनक अपेक्षें प्राणि-समूहक द्वारा जल दूषित बेसी होइत रहैत अछि। तें वस्त्रपूतं पिबेज्जलम्क प्राचीन उक्ति थिक, मने छानि क' पानि पीब उत्तम थिक। ओना जल शुद्धिक हेतु आगि पर जल केँ औंटब सर्वसुलभ प्रक्रिया थिकैक।

शरीरक हेतु तेसर साधन थिक वायु। वायु शरीरक सर्वाधिक महत्वपूर्ण आहार थिक। भोजनक अपेक्षें जल आ जलक अपेक्षें वायु शरीरक हेतु अनिवार्य वस्तु थिक। भोजनक बिना किछु दिन धरि, पानिक बिना किछु घंटा आ वायुक बिना किछु क्षणो जीवित रहब संभव नहि अछि। वायुक दोसर पर्याय प्राण थिक। वायुक तत्व सब मे प्राणवायु (ऑक्सीजन) जीवन तथा शरीरक हेतु सर्वाधिक उपयोगी थिक। श्वास द्वारा शरीरक भीतर जा क' शरीरक विकार केँ बहार करक काज प्राणवायुए करैत अछि। ओ रक्तसंचार केँ ठीक रखैत अछि। ज्वलनशील होमक कारणे वैह पाचन क्रिया केँ ठीक रखैत अछि और क्षुधा बढ़बैत अछि। ओकरा सँ मस्तिष्क केँ नवीन शक्ति प्राप्त होइत छैक। विशेषत: अध्ययन-लेखन आदिक काज कयनिहार केँ जँ पर्याप्त प्राणवायु नहि भेटनि तँ हुनक स्मरण शक्ति आ विचार-सामर्थ्य क्षीण भ' जयतनि।

पर्याप्त मात्रा मे प्राणवायु प्राप्त हो, एतदर्थ भोर-साँझ उन्मुक्त स्थान मे टहलब सर्वाधिक हितकर थिक। मुक्त वायु मे विशेषत: दीर्घ श्वास लेमक चाही, जाहि सँ फेफड़ा नीक जकाँ संकुचित-प्रसारित भ' सकय। टहलबा मे जतेक तेजी आ दूरी हो, से करब उचित। भोर मे तेना टहलबाक चाही जे सूर्योदय सँ पूर्व टहलिक' डेरा पर आबि जाइ। टहलबाक काल शरीरक मुद्रा तेना रहय जे मेरुदंड सोझ आ छाती तनल हो, तखनहि पूर्ण मात्रा मे प्राणवायु ग्रहण कयल जा सकैछ। ई मुद्रा बैसबो काल सर्वदा राखक चाही। झुकि क' बैसब दोषपूर्ण थिक। साँस सदैव नाके सँ लेमक चाही। मुह सँ साँस लेब बड़ हानिकर थिक। एहि सम्बन्ध मे पूर्ण सतर्क रहक चाही।

राति मे बहुधा उन्मुक्ते स्थान मे सूतब नीक। जाड़ोक समय खिड़की-केबाड़ केँ निमुन्न क' क' सूतब समुचित नहि थिक। मुह झाँपि क' सूतब सँ एकदम खराप थिक।

सबसँ बेसी मनुष्यक प्रश्वास सँ वायु दूषित होइत अछि। तें भीड़भाड़ वला स्थान (नाटक, सिनेमा आदि) मे बेसी काल बैसब नीक नहि थिक। ककरो लग

एना सटि क' नहि बैसक चाही जे ओकर नि:श्वासक वायु अपन साँस मे मिझरा जाय। चेष्टापूर्वक श्वास द्वारा अधिक मात्रा मे प्राणवायु ग्रहण करब आ दूषित वायु सँ यथासंभव दूर रहब पूर्ण स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्यक हेतु आवश्यक थिक।

उपर्युक्त बातक अतिरिक्त ब्रह्मचर्य आ संयम सँ रहब, श्रम करब, नीक निद्रा प्राप्ति आ व्यायाम आदिक आवश्यकता जीवन एवं स्वास्थ्यक हेतु समान रूपें सब व्यक्ति लेल होइछ। भोजन, विश्राम आ ब्रह्मचर्य एहि तीन मूल आधार सँ जे पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त होइछ से व्यायाम द्वारा परिपुष्ट होइत अछि तथा स्वच्छताक नियम-पालन सँ ओकर सुरक्षा होइत अछि। प्रत्येक स्वास्थ्यार्थी केँ मानसिक स्वच्छता, शारीरिक बाह्य और आभ्यन्तरिक स्वच्छता, घर-आंगनक स्वच्छता आदि सब पर नीक जकाँ ध्यान देमक चाही। ई सब होइतहु सदाचारी नहि रहने स्वास्थ्यक रक्षा कथमपि संभव नहि अछि; तें सदाचारक ज्ञान आ तकर पालनक हेतु तत्परता बड़ आवश्यक अछि।

ई सब स्वास्थ्यक सम्बन्ध मे मौलिक रूप मे संक्षिप्त विषय कहल गेल अछि, जकर पृथक-पृथक विश्लेषण पछाति करब। एखन एतद्धि।

'मानव स्वास्थ्यक मूल चर्चा' विषयक निबंध किसुन जी छद्मनाम सँ लिखने छथि। आरंभ मे ओ नाम छल 'शास्त्री अभितज्ञ कौशल्यात्मज'। मुदा तकरा सुधारैत दोसर नाम 'अभितज्ञ सहयोगी' रखलनि। ई लेख 1970 मे लिखल गेल छल। ई कतहु प्रकाशित नहि भेल।

गांधी जीक किछु अविस्मरणीय प्रसंग

स्वर्णिम सत्य

गांधी जीक छात्रजीवनक समय। हुनका सँ एकटा प्रश्न पूछल गेल जे सोना सँ बेसी स्वर्णिम की होइत अछि?

गांधी जी उत्तर मे लिखलथिन—सत्य।

अप्पन लोक

एक बेर गांधी जी एकटा विद्यालय मे गेलाह। हुनका उघारे आंगे देखि क' एकटा सरल हृदय नेना विद्यार्थी केँ बड़ दुख भेलैक। ओ गांधी जी लग जा क' बड़े स्नेह सँ कहलकनि—'बापू, अहाँ अंगा कियैक ने पहिरैत छी? की अंगा अहाँ केँ नहि अछि? हम अपना माय केँ कहबनि। ओ अहाँ केँ एकटा अंगा सीबि क' देतीह। तखन पहिरब कि ने?'

गांधी जी हँसि क' कहलथिन—'एकटा अंगा सँ काज नहि चलत। हम की एकसरे छी?'

नेना केँ भेलैक जे भरिसक 'बा' (कस्तूरबा) क मादे संकेत करैत छथि। ओ बड़ उत्साहित होइत बाजल—'कोनो बात नहि। अहाँ केँ कतेक अंगा चाही? हम माय केँ कहि क' दू टा अंगा सिया देब। तखन पहिरब कि ने?'

गांधी जी नेनाक पीठ पोछैत स्नेह-तरल भेल कहलथिन—'दू टा सँ हमर काज नहि चलतह भाइ। हमरा तँ अप्पन चालीस करोड़ लोक छथि। चालीसो करोड़ अपना लोक केँ जाधरि देह झाँपक हेतु नूआ नहि हेतनि, ताधरि हम कोना अंगा पहिरब?'

संतोष आ चिन्ता

अमरीकाक रेवरंड गाट 1927 मे गांधी जी सँ भेंट करक हेतु भारत आयेल

छलाह। गप्प-सप्पक क्रम मे ओ गांधी जी सँ पुछलथिन जे, 'अहाँक जीवन मे तँ आशा-निराशाक अनेक प्रसंग अबैत होयत। अहाँ केँ बेसी सँ बेसी संतोष कथी सँ भेटैत अछि?'

गाँधी जी कहलथिन, 'खाहे कतबो किछु भ' जाइक मुदा एहि देशक जनता अपन अहिंसा वृत्ति केँ नहि छोड़ैत अछि। एही बात सँ हमरा बेसी सँ बेसी संतोष होइत अछि।'

रेवरंड साहेब दोसर प्रश्न कयलथिन—'एहन कोना विषय अछि जे अहाँ केँ सबसँ बेसी चिंतित बनौने अछि?'

गांधी जी कहलथिन—'शिक्षित व्यक्ति सब मे दयाक भाव नष्ट भ' गेल अछि, ई देखि हमरा बड़ चिन्ता आ व्याकुलता रहैछ।'

केरा खायेब

गांधी जी बड़ विनोदी स्वभावक छलाह। एक बेर कतहु जाइत काल हुनका बहुत लोक घेरि लेलकनि आ हुनका सँ हस्ताक्षर मांगय लगलनि। गांधी जी कहलथिन—'हम एकटा हस्ताक्षरक चारि आना लेब।'

अनेक व्यक्ति हस्ताक्षर लेलथिन। फलत: पर्याप्त पाइ एकत्र भ' गेलनि। क्यो व्यक्ति पुछलकनि—'बापू, एहि पैसाक अहाँ की करब?'

गांधी जी तुरत उत्तर देलथिन—'केरा खायेब।'

ई सुनि सब क्यो हँसय लगलाह।

एक पैसाक महत्व

गांधी जी हरिजनोद्धारक संकल्प ल' क' अर्थ संग्रह करैत छलाह। एहि क्रम मे जत' जाथि, एकटा छोट-छीन बाकस संग ल' जाथि। भाषण द' क' हाथ पसारि देथिन आ जे भेटनि, बिनु देखनहि बाकस मे खसा देथिन। एक दिन पैसा सँ भरल मुट्ठी सँ बाकस मे खसबैत काल एकटा पैसा ससरि क' बाहर खसि पड़ल। गांधी जी हतप्रभ भ' क' बजलाह—'हे राम, ई अपराध कियैक भ' गेल?'

चारूकात ततेक दर्शक आ दाता सब छलथिन जे नीचा झुकि क' पाइ ताकब असंभव छल। मुदा तैयो ओ नीचा झुकिक' निष्फल प्रयास क' रहल छलाह। धक्कम-धुक्की केँ बर्दाश्त करैत ओ कोनो तरहें नीचा मे बैसि गेलाह आ हेरौलहा पाइ ताकय लगलाह। किछु धनी-मानी लोक ई देखि क' उत्तेजित होइत कहलथिन—'अहूँ हद करैत छी बापू। एक पाइ लेल धक्का खा रहल छी। उठू, हम अहाँ केँ

चानीक टाका सँ तौलि दैत छी।' आ देखितहि-देखितहि लोक टाका बरसाबय लागल।

गांधी जी धरफड़ा क' उठलाह आ कह' लगलथिन—'की करैत छी अहाँ लोकनि? ई एकटा पैसा जे हेरा गेल से तँ हमरा असावधानी सँ हेरा गेल। सेहो हमर अप्पन नहि हरिजनलोकनिक पैसा छल। एना जे हम राष्ट्रीय धन केँ नष्ट क' देबैक तँ आबय बला पीढ़ी हमरा की कहत?'

भीड़ तुरत हटि गेल आ गांधी जी पैसा ताकि लेलनि।

जेठ भाय केँ कोना पीटब?

गाँधी जीक नेनपनक घटना थिक। हुनका दू टा भाइ और छलथिन, लक्ष्मीदास गांधी और कर्षणदास गांधी। हुनक जेठ भाइ एकदिन बड़े मारलथिन। कनैत-कनैत गांधी जी माय लग पहुँचलाह। कहलथिन—'माय, आइ फेर हमरा बड़का भैया मारलनि अछि। देखही ने, थापड़ ततेक-ततेक जोर सँ मारलनि जे हमर गाल लाल भ' गेल अछि। दर्द भ' रहल अछि। एहिना हमरा अनेरे मारैत रहैत छथि।' ई कहितो रहथि आ कनितो रहथि।

माय दुहू भाइक झगड़ा सँ तंग भ' गेल छलथिन। छोटकाक बात ठीक छलनि मुदा जेठका केँ बुझयबा मे माय अपना केँ असमर्थ पबैत छलीह। खौंझा क' कहलथिन—'हम की करबौक? जो तोरा मारैत छौक तँ तोहूँ ओकरा मार।'

ई सुनितहि गांधी जी स्तब्ध भ' गेलाह। कहलथिन—'वाह, खूब कहै छें। भैया हमरा मारलनि हें तँ बदला मे हमहूँ मारियनि? ई तँ अद्‌भुत बात कहैं छें। जेठ भाइ तँ पितातुल्य होइत छैक। हम कोना ओकरा मारि क' बेइज्जत क' दियैक?' माय कहलथिन—'तखन जे मोन होउक, से कर।'

—'माय, तों मारनिहार केँ डँटिते ने छहीक आ उनटे हमरा कहै छें जेठ भाइकेँ मार' लेल?'

गांधी जीक ई बात सुनि माय केँ बड़ लाज भेलनि।

गांधी टोपी

गांधी जी टोपी नहि पहिरैत छलाह मुदा हुनका नाम पर गांधी टोपीक व्यापक प्रचार भ' गेलैक। एक दिन एकटा समृद्ध मारवाड़ी सेठ गांधी जी सँ वार्तालाप करैत काल सहसा पूछि देलथिन—'महात्मा जी, अहाँक नाम पर गांधी टोपी आइकाल्हि देशभक्तिक प्रतीक बनि गेल अछि आ अहाँ तँ टोपी पहिरतहि नहि

छी। अहाँ कियैक नहि टोपी पहिरैत छियैक?'

गांधी जी गंभीर होइत कहलथिन—'अहाँक माथ पर जे पगड़ी अछि से कतेक गजक अछि?'

सेठ जी एहि प्रश्नक कोनो संदर्भ नहि बूझि सकलाह। कहलथिन जे, 'कम सँ कम तीन-चारि गज तँ अवश्ये होयत।'

गांधी जी कहलथिन—'आब जोड़ि लिय' जे अहाँ एकसरे कतेक गोटाक टोपीक अपना पगड़ी मे अपहरण क' लेने छियैक? बस, ओही भाग्यहीन गरीब मे हमहूँ छी।'

सेठ जी ई सुनितहि पानि-पानि भ' गेलाह।

आबि गेलहुँ नाक कटा क'?

सन् 1932क सत्याग्रह आंदोलन असफल भ' गेलैक। गांधी जी तथा अन्यान्य सब नेता जहल सँ छोड़ि देल गेलाह। हुनके लोकनिक कार्यसमितिक बैसक काशी विद्यापीठ मे होम' लेल छलैक। प्राय: सब क्यो आबि गेल छलाह। हँ, केवल सरदार वल्लभ भाइ पटेलक प्रतीक्षा कयल जा रहल छल। पटेल जीक नाकक ऑपरेशन जहल मे भेल छलनि। वातावरण मे असफलताक कारणे एकटा उदास गाम्भीर्य भरल छल।

कने कालक बाद जखन सरदार पटेल अयलाह तँ गांधी जी हुनका देखितहि पुछलथिन—'आबि गेलहुँ नाक कटा क'?'

आंदोलनक असफलता आ नाकक ऑपरेशन दुहू प्रसंगक ई सटीक उक्ति बड़ अद्‌भुत छल। उदासी आ गंभीरताक वातावरण क्षण भरि मे हटि गेल आ सब भभा क' हँसय लगलाह।

हीरो सँ गुंडा

अगस्त 1947 क बात थिक। कलकत्ता मे हिंदू-मुसलमान मे भयंकर दंगा शुरू भ' गेल छल। हथगोला आ बमबाजीक संगहि अगिलग्गीक घटना जोर पर छल। ओहि दिन मे गांधी जी कलकत्ता मे छलाह। असल मे गांधी जी स्वतंत्रता प्राप्तिक दिन नोआखाली जिला मे रहबाक विचार सँ आयल छलाह, मुदा स्व. हसन शहीद सुहरावर्दी एवं मुस्लिम लीगक अन्य कतिपय नेतालोकनिक अनुरोध सँ ओ कलकत्ता मे रूकि गेल छलाह।

साम्प्रदायिक दंगाक कारणे गांधी जी बड़ चिन्तित आ दुखी भ' उठलाह।

सितम्बरक पहिल सप्ताह मे कलकत्ताक शांति आ सद्‌बुद्धिक लेल गांधी जी अनशन आरंभ क' देलनि। सौभाग्यवश हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख नेता लोकनिक द्वारा अपना लोक सभक बीच प्रयत्न करक फलस्वरूप दंगा थमि गेल आ गांधी जी बहत्तर घंटाक बाद अनशन तोड़लनि। अनशन तोड़लाक बाद बहुत रास दंगा कयनिहार युवक लोकनि आबि क' गांधी जीक चरण मे हथियार राखि देलनि। एक नवयुवक तँ कान' लागल आ गांधी जी केँ कहलकनि जे 'अन्तत: हमरालोकनि अहाँ सँ हारि गेलहुँ। काल्हि धरि लोक हमरा 'हीरो' कहैत छल, मुदा अहाँक अनशनक कारणे आब प्रत्येक व्यक्ति हमरा 'गुंडा' मान' लागल अछि।'

किसुन जीक उपरोक्त गांधी-प्रसंग अभितज्ञ सहयोगीक नाम सँ भेटल अछि आ 1970 हि एकर रचनाकाल थिक। ओहि समय विलियम्स हाइ स्कूल, सुपौल सँ वेतनक रूप मे हुनका 160 सँ 170 टाका भेटैत रहनि। छद्‌म नाम सँ लिखलाक कारणे मिथिला मिहिर सँ थोड़ेक पारिश्रमिक भेटि गेला सँ आफियत होइत रहनि। पैघ परिवार। दायित्व अधिक रहनि। तें ओहि समय मैथिलीक अन्यो लेखक छद्‌मनामे लिखैत छलाह।

सौन्दर्यक केन्द्र मुँह पर बरर-झरर

किशोरावस्थाक अन्त होइते बहुतोक मुँह पर छोट-छोट फोंसरी भ' जाइत छनि। लोक एकरे बरर-झरर कहैत छैक। गालपरक ई फोंसरी सभ किछु गोटय केँ तँ कनेके दिन मे छूटि जाइत छनि आ किछु गोटय केँ बहुतो दिन धरि ई क्रम लागल रहैत छनि। पकलापर एहिसँ कने पीज आ खील बहराइत अछि। क्यो-क्यो ओकरा दाबि-दूबि क' खील बहार करैत रहैत छथि। ई कोनो प्रकारेँ नीक नहि। एना कयने कतेक व्यक्ति भयंकर रोग सँ आक्रान्त भ' जाइत छथि।

पुरुष तँ कम-सम, मुदा सौन्दर्यक केन्द्र मुँह पर सुन्दरता केँ दूरि क' देनिहार एहि बरर-झरर सँ स्त्रीगण बड़े घबराइत छथि। वास्तव मे बातो तेहने। एक तँ एहि छोट-पैघ फोंसरी सभ सँ ओहिना मुखाकृति कोनादन बूझि पड़ैत छैक दोसर छुटियो गेला पर बहुतो गोटय केँ ओहि स्थान पर कारी-कारी दाग भ' जाइत छनि।

एहि लेल लोक बजार मे भेटनिहार क्रीम, पोमेड, स्नो, रूज, पाउडर आदिक पालिश-मालिश मुँह पर करैत अछि। एहि सभ सँ वस्तुत: मौलिक लाभ नहि होइत अछि। एतबाधरि अवश्य जे मुँह परक छाइँ आ फोंसरीक चेन्ह एकरा सभक प्रयोग सँ कने कालक हेतु अनका नजरि सँ अ'ढ़ टा भ' जाइत छैक आ किछु कालक लेल मुँह परक तनतनी सेहो कम बुझना जाइत छैक। मुदा एकरा सभक सदतिकाल व्यवहार कयला सँ त्वचाक स्वाभाविक कोमलता आ स्निग्धता समाप्त भ' जाइत अछि तथा चेहरा रुक्ख भ' जाइत अछि। तकरा बाद सँ तँ बिनु ई सभ लगौने ककरो सोझाँ जायब कठिनाह भ' जाइत अछि। तें एक बेर एकर आदति लगलाक बाद एहि सँ बाँचब कठिन। फलत: लोक ई सभ लगौने जाइत अछि आ एहि वस्तु सभक खूब बिक्री होइत अछि। आब तँ बुझू जे शहर मे रहनिहारि वा शहर सँ कोनो प्रकारक सम्पर्क रखनिहारि स्त्रीगणक हेतु साड़ी, साया, ब्लाउज, तेल आदि जकाँ उपर्युक्त प्रलेपक प्रसाधन अनिवार्य भ' गेल अछि। ओ पढ़लि-लिखलि होथु वा अपढ़ि; जनिक पिता, भाइ, पित्ती, स्वामी आदि पढ़ल-लिखल छथिन आ शहर

मे नौकरी-चाकरी करैत छथिन तनिका लेल, गाम आब' काल ओ लोकनि सनेसमे ई वस्तु सभ धरि तँ अवश्ये लेने अबैत छथिन। तथाकथित सभ्य-सुसंस्कृत समाजक स्त्रीगणक तँ कोनो कथे नहि। आब सांठ-राज मे सेहो एकर प्रयोग खूब नीक जकाँ प्रचलित भ' गेल अछि। सौन्दर्य प्रसाधनक एहि वस्तु सभक उत्पादन अनेक कम्पनी करैत अछि, एकरा सभक विज्ञापन खूब होइत अछि आ दाम बढ़लो पर एकरा बिना काज चलनिहार नहि।

त्वचाक लावण्य केँ नष्ट कयनिहार आ रोमकूप केँ ढील क' विकृत कयनिहार एहि सभ प्रलेपक व्यय-भार सँ तथा सौन्दर्यक शत्रु एहि बरर-झरर आदि सँ जँ बच' चाहैत छी तँ एकर सभ सँ नीक उपाय निम्नलिखित अछि :

1. कोनो बासन मे पानि केँ खूब औंटिक' दस-पन्द्रह मिनट धरि ओकर भाफ मुँह पर लाग' देल जाय। ओहि सँ ओहि ठामक विकार घामक रूप मे बहरा जायत। भाफ लगलाक बाद शीतल जल सँ मुँह केँ नीक जकाँ पोछि लेल जाय।
2. सुतबाकाल उपर्युक्त भाफ लगौलाक बाद वा ओहुना नारियरक शुद्ध तेल मे नेबोक रस मिला क' मुँह पर धीरे-धीरे मालिश कयल जाय।
3. स्नान सँ पूर्व आ साँझ मे पसाहनिक बेर मे चेहरा और गालक मालिश नियमित रूपें कयल जाय। मालिश करैत काल दुनू हाथें नाकक दुहू दिस कपार सँ नीचा तक बारम्बार ऊपर सँ नीचा दिस एहि तरहें मालिश करक चाही जे सम्पूर्ण चेहरा पर तरहत्थीक रगड़नि पड़ैक और सङहि सङ कनेक नाको पर दबाब पड़ैक।

उपर्युक्त उपाय सभ सँ चामक भीतर जे विकृति रहैत छैक से बहरा जाइत छैक, त्वचाक ध्वंस भेल जीवकोष बहार भ' जाइत छैक आ ओहि स्थान पर नवीन जीवकोष बनिक' चेहरा केँ भरल-पुरल क' दैत छैक तथा मुखाकृति पर अकृत्रिम स्निग्धता एवं लावण्य आबि जाइत छैक।

ई सभ भेल तत्कालिक उपाय। बरर-झरर भेला पर जाधरि नहि छूटय एकर प्रयोग करक चाही। उपाय सं. दू आ तीनक प्रयोग पहिनहि सँ करैत रहला पर बरर-झरर सभक आशंका नहि रहैत छैक और सौन्दर्यक वृद्धि होइत छैक। मुदा एकर मौलिक उपाय थिक शारीरिक श्रमवला काज-उदेम करब। जेना-कूटब, पीसब आदि अथवा टहलब। ई तँ वातावरण, आवश्यकता, साधन आ सुविधानुसार निश्चित कयल जा सकैत अछि।

सबसँ बेसी जाहि वस्तु पर ध्यान रखबाक थिक से भेल भोजन-व्यवस्था—

भोजन मे ई सभ वस्तु रहब आवश्यक। चोकरदार आटाक रोटी, कनबला चाउर आ फल-तरकारीक अधिक मात्रा मे रहब नीक बात। अंकुरायल बदाम, मूड़, गहूम कने जलखइ। सामयिक फल जेना आम, खीरा, लताम, कांकड़ि, बतिया, टमाटर, मूड़, गाजर, अररनेवा आदिक प्रयोग भोजन वा जलखइक रूप मे पर्याप्त मात्रा मे करब श्रेयस्कर। जे खाइ से नीक जकाँ चिबा क' पानि प्रतिदिन कम सँ कम अढाइ-तीन सेर अवश्य पीबी। चिन्ता, भय, क्रोध, ईर्ष्या, अविश्वास आ अधिक जागरण सँ बची तँ बहुत दिन धरि नीक स्वास्थ्य, सुन्दर त्वचा आ शारीरिक लावण्य बनल रहत।

मिथिला मिहिर : 13 नवंबर 1960

नेबो आ ओकर प्रयोग

नेबो संसारक श्रेष्ठ फल सभ मे सँ एक फल थिक। एहि मे अनेकानेक रोगनाशक ओ रोग प्रतिरोधक गुण रहबाक कारणें एकर गणना स्वास्थ्यक हेतु सर्वोत्तम औषधीय फल मे होइत अछि। संसारक समस्त चिकित्सा-पद्धति मे नेबोक उपयोगिता वर्णित अछि आ ई बात अनेक चिकित्सा-विशेषज्ञ कहने छथि जे नेबो मे औषधीय गुणक अतिरिक्त किछु एहन आहार तत्व सेहो पाओल जाइत अछि जे स्वास्थ्यक आ आरोग्यक हेतु नितान्त आवश्यक थिक। एही कारणें नेबो केँ पृथ्वीक अमृत कहल गेल अछि। एकर सबसँ पैघ विशेषता ई होइछ जे ई ऋतुक अनुसार अपन गुण मे परिवर्तन क' लैछ आ ऋतु सम्बन्धी दोष सभक शामक गुण उत्पन्न क' लैछ।

नेबोक अनेक नाम आ अनेक प्रकार होइछ। ओना कागजी नेबो जकर खोइँचा बहुत पातर आर चिक्कन होइछ आ ओहि मे रसो पर्याप्त होइछ, उत्तम बूझल जाइत अछि। मुदा ई नीक जकाँ बूझि लेबाक थिक जमेरी, बिजौरा, चकोतरा, बनारसी, कमला आदि सब नेबो समान गुणकारी थिक।

ओना तँ टटका नेबो विशेष गुणकारी होइत अछि, मुदा जँ से सम्भव नहि हो तँ नेबो केँ माटिक वा शीशाक कोनो झपनाबला बासन मे बनल भरिक' राखल जाइछ तँ ओ बहुत दिन धरि सुरक्षित रहैत अछि। नेबोक रस मे एक प्रकारक तेज तेजाबी पदार्थ (साइटिक एसिड) होइत छैक जे कोनो प्रकारक धातु सँ मिललाक बाद रासायनिक क्रिया कर' लगैत अछि तें ओकरा धातुक बासन मे नहि राखि माटि, चिनियाँ माटि वा शीशाक बासन मे राखक चाही। नेबो केँ कटबा सँ पहिने यदि कनेक काल सुसुम पानि मे राखि देल जाइक तँ ओहि सँ बेसी रस बहराइत छैक। नेबो छुच्छ नहि सेवन करक चाही। पानि वा कोनो आन फलक रस मे मिलाक' एकर सेवन करब आवश्यक। भोजनक समय दालि वा तीमन-तरकारी मे नेबो गाड़िक' खयबाक विधि नीक नहि। नहि सँ मुँहक लाला रसक निष्कासन बन्द भ' जाइत छैक तें चिकित्सक सभक कथन छनि जे खायल पदार्थ केँ पचबा मे असौकर्य होइत छैक।

नेबोक रस खाली पेट मे प्रात: सायं पानि मे मिला क' सेवन करब विशेष लाभदायक। गरमी आ बरिसात मे प्रति दिन नेबोक सेवन उपर्युक्त विधिएँ अवश्य करक चाही। एकर लाभ वर्ष भरि होइत रहत। एकटा बात पर खूब ध्यान राखक चाही जे नेबोक रस सर्वदा छानिक' पीब आवश्यक, जाहि सँ नेबोक बीया पेट मे नहि जा सकय। विशेषज्ञ लोकनिक कथ्य छनि जे नेबोक बीया पेट मे गेला सँ 'आन्त्रपुच्छ' बढ़ि जयबाक (अपेंडिसाइटिसक) सम्भावना रहैत अछि।

नेबो साइट्रिक अम्ल तथा क्षार प्रधान फल थिक आ एहि मे अन्यान्य फलक अपेक्षें स्वास्थ्यवर्द्धक गुण अधिक पाओल जाइत अछि। एहि मे सबसँ पैघ विशेषता ई होइछ जे कोनो रोग मे हानिकारक नहि होइछ आ स्वास्थ्यावस्था मे एकर नियमित रूपें सेवन कयनिहार केँ साधारणत: कहियो अस्वस्थ होयबाक सम्भावना नहि रहैत अछि। नुकायल रोग सभ केँ उखाड़िक' हटा देबाक विलक्षण शक्ति नेबो मे अछि। ई देहक विकार केँ साफ कयनिहार एवं कीटाणुनाशक थिक। एकरा सेवन सँ वृद्धावस्था शीघ्र समीप नहि आबि सकैछ। यदि नेना सभ केँ प्रतिदिन नेबो देल जाइक तँ ओकरा लोकनिक शोणित मे जीवनीशक्ति सदैव बलवती रहत। खयलाक बाद ई पेट मे जाक' क्षार उत्पन्न करैत अछि। ई खयबेटा मे खट्टा होइत अछि। ई अम्लोत्पादक नहि, अम्लनाशक फल थिक।

आयुर्वेदक अनुसारें ई कने गर्म, खट्टा, दीपन, नेत्रक हितकारी, अतिशय रुचिकारक, तीक्ष्ण, कसौन्ह तथा कफ, वात, वमन, उकासी, कंठ-रोग, क्षय, पित्त, शूल, अरुचि, त्रिदोष, विसूचिका, मलस्तम्भ, आम वात, गुल्म, कृमि केँ नाश कयनिहार, उदर रोगनाशक श्रमहारक तथा विष परिणाम शोधक थिक।

नेबोक किछु प्रयोग

1. नेबोक फाँक राति मे सुतबाक समय चेहराक दाग पर रगड़िक' ओहि पर रस लेपि ली। प्रात: उठला पर गरम पानि सँ धो ली। किछुए दिन मे चेहरापरक दाग साफ भ' जायत।
2. प्रात: सायं एक नेबोक रस एक ग्लास ठंढा वा गरम जल मे गाड़िक' पीला सँ चेहरेटाक दाग नहि अपितु त्वचाक आनो दोष दूर भ' क' ओ सुन्दर और चमकदार भ' जाइत अछि।
3. कागजी नेबोक रस मे मसुरी पीसिक' लगौलासँ चेहराक छाँह-छान आदि नष्ट होइत अछि।
4. चेचकक दाग पर मुरदा संख केँ नेबोक रस मे घसिक' लगौलासँ दाग

छूटि जाइत छैक।

5. प्रति दिन दाँत केँ नेबोक रस भरल खोइँचा सँ मँजला पर पायरिया आ मुखक दुर्गन्धि नष्ट होइत अछि।
6. नेबोक रस आ लहसुन बराबरि-बराबरि पीसिक' मिलाओल रस सँ तीन-चारि बेर माथ धोला सँ ढील, लीख आदि नष्ट भ' जाइछ।
7. नेबोक टुकड़ी केश मे रगड़ला सँ केश झड़ब बन्द भ' जाइत अछि।
8. नेबोक रस मे धात्री पीसिक' किछु दिन लगौलासँ केश झड़ब बन्द भ' जाइछ आ केश पैघ तथा कारी भ' जाइत अछि।
9. नेबोक रस मे राहरिक दालि पीसिक' माथ धोला सँ केशक रूस्सी आदि मैल सब दूर भ' जाइत अछि।
10. नेबोक खोइँचा चानन जकाँ पातर पीसिक' लगौलासँ अधकपारी दूर भ' जाइत अछि।
11. कोनो नूआपरक दाग केँ नेबोक रसक बारम्बार लेप कयलाक बाद धो देला सँ रोसनाइ टटका दाग, पानक पीकक दाग, लोहाक दाग आदि छूटि जाइत अछि।
12. हैजाक दिन मे प्रतिदिन दू गोट नेबोक रस सेवन कयला सँ हैजा होयबाक डर नहि रहैत अछि।
13. एक चम्मच नेबोक रस, दू चम्मच पानि, आ दू चम्मच मधु मिलाक' चटला सँ कोनो प्रकारक रद्द बन्द भ' जाइत अछि।
14. नेबोक रस मे मधु-मिलाक' चटला सँ ज्वरक वेग आ प्यास कम होइत अछि।
15. गरम पानि मे नेबोक रस मिलाक' एक-एक घंटा पर पीला सँ, टटका सरदी आ इन्फ्लूएंजा मे बड़ लाभ होइत अछि।
16. दू चारि बुंद नेबोक रस चटा देबाक बाद दूध पियौला उत्तर बच्चा दूध बोकरब बन्द क' दैत अछि।

नेबोक अन्यान्य प्रयोग पछाति लिखल जायत।

मिथिला मिहिर : 25 दिसंबर 1960

मधुक महिमा आ प्रयोग

आइ काल्हि यूरोप सदृश समुन्नत देशो सभ मे वैज्ञानिक आहार-शास्त्रीलोकनि मधु केँ एक उत्कृष्ट आहारक वस्तु कहि ओकर प्रयोग पर जोर द' रहल छथि। भारतवर्षक तँ कथे नहि। अपना देश मे तँ वैदिक कालहिसँ मधुक महिमा-गान होइत रहल अछि। यथा—मधु वाता ऋतायते, मधुक्षरन्ति सिन्धवः, माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः, मधुनक्तमुतोपसो, मधुमत् पार्थिव रजः, मधुद्यौरस्तुनः पिता, मधुमान्नो वनस्पतिः, मधुमानस्तु सूर्यः, माध्वीर्गावो भवन्तुनः। आदि

मधुक उत्कृष्टताक कारण ई थिक जे मधुमाछी फूलसभक टटका पुष्परस आ पुष्पराग द्वारा मधुक संकलन करैत अछि। तें एहि मे स्वास्थ्यसंरक्षक क्षारीय तत्वक प्रचुरता रहैत अछि। सभसँ पैघ बात तकर ई थिक जे मधु बिना कोनो परिवर्तनक सरल रूप मे पचि जाइत अछि। एत' धरि जे पेट मे जाइते-जाइत ई पचिक' शरीर केँ अपन पोषण तत्व द' दैत छैक। औषधि रूप मे मधु हानि रहित, मृदु विरेचक आ कफनिस्सारक थिक। निर्बल आमाशय आ आंतक मन्दाग्निवला लोकक लेल मधुक मध्यम मात्रा पालन आ क्षुधावर्द्धक होइत अछि। मधु मांसपेशी सभक हेतु सामर्थ्य सम्पन्न जारनिक काज दैत अछि। फलतः कखनो विश्राम नहि कयनिहार मांसपेशी हृदयक हेतु अत्यन्त लाभदायक थिक। मधु मे विद्यमान चून सँ शरीरक ग्रंथि सभ केँ विलक्षण शक्ति भेटैत छैक तें ई सभ आयुक नेना, बूढ़ आ युवा, स्त्री-पुरुषक लेल समान रूप सँ हितकर थिक।

यूरोप मे बुझनुक लोक चाह मे चीनीक स्थान मे मधुक प्रयोग कर' लगलाह अछि। ओत' मिठुआ रोग, हाड़क टेढ़पन, पोषणह्रास आदि रोगक चिकित्सा मे मधुक प्रयोग खूब होम' लागल अछि। अमेरिकाक लोक धारोष्ण दूध केँ मधु सँ मीठ बनाक' पीबाक अभियान आरम्भ क' चुकल छथि। डेनमार्कक लोक मक्खन आ रोटीक सङ मधु खाइत छथि। स्विटजरलैंडक लोक मधुक खूब प्रयोग भोज्य पदार्थ मे करैत छथि। एहि तरहें ई नीक जकाँ बूझल जा सकैत अछि जे मधुक व्यापक प्रयोग भ' रहल अछि।

चीनीक अपेक्षा मधुक व्यवहार अपना भोजन मे करब अत्यन्त श्रेष्ठ थिक। एहिठाम चीनीक सम्बन्ध मे थोड़ेक बूझि लेब बढ़िया। चीनी स्वादेटा मे मधुर होइत अछि, एकर प्रभाव बड़ अनिष्टकारक होइत अछि। कुसियारक रस वा गुड़ सँ जखन चीनी बनैत अछि तँ ओहि मे कैलसियम (चून) क अंश नहि रहि जाइत छैक आ चीनी कैलसियमक बिना पचिये नहि सकैत अछि। फलत: पेट मे गेलाक बाद चीनीक पाचनक हेतु कैलसियम हड्डीसबसँ सिसोहिक' बहार कयल जाइत अछि। तें चीनी सँ हड्डी कमजोर होइत छैक। एकर प्रभाव सम्पूर्ण शरीरक हाड़ पर पड़ैत छैक। सर्वाधिक कुप्रभाव दाँत पर पड़ैत छैक। एकर अतिरिक्त चीनी मे कोनो पोषण तत्व नहि पाओल जाइत अछि। एहि तरहें जत' चीनीक पचबा मे एतेक कठिनता छैक तत' मधुकण्ठ सँ नीचा होइते शोणित मे मिझरा-मिझराक' पचि जाइत अछि। अधिक चीनीक प्रयोग अल्सर उत्पन्न करबाक कारण बुझल जाइत अछि आ मधु अल्सर केँ (आंतक घाव केँ) छोड़बैत अछि। कफ नि:सारण, उकासीक शमन, फुफ्फुसीया क्षयक निवारण, पेटक रोग सभ विशेषत: अम्लपित्त, पाकस्थलीक व्रण आदि रोग मे मधुक चिकित्सा सभसँ बेसी रूस मे आरम्भ भेल अछि। ई ज्ञातव्य थिक जे संसार भरि मे मधुक हेतु रूस सर्वश्रेष्ठ आ प्रसिद्ध रहल अछि। सोवियत सरकार अपना अस्पताल सभ मे मधुक प्रभावक सम्बन्ध मे प्रत्येक दृष्टिकोण सँ अध्ययन अनुसन्धान क' रहल अछि आ तदनुसार विभिन्न रोगक चिकित्सा मे मधुक प्रभावक आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त भेलैक अछि।

उपर्युक्त आधुनिक वैज्ञानिक तथ्य सँ मधुक उपयोगिता; ओकर गुण, रोगविनाशक शक्ति आ विशेषताक अनुमान सरलता सँ कयल जा सकैत अछि। आब हम ओकर किछु अनुभूत आ बहुश्रुत प्रयोगक वर्णन करैत छी।

अपच ओ वमन—बच्चाक आहार बन्द क' देल जाय आ पोदीनाक रस 3 बुन्न, मधु छौ बुन्न मिलाक' दिन मे तीन बेर देला सँ लाभ होइछ।

पेटक दर्द आ वमन—पोदीनाक सूखल वा हरियर पात अथवा जमाइनि केँ पानि मे औंटिक' कनेक सुसुम पनि एक चम्मच आ 3 बुन्द मधु मिलाक' आध-आध घंटा पर देला सँ दुइए तीन चोट मे दर्द समाप्त भ' जाइत अछि।

कब्ज—सनतोला वा टमाटरक 1 चम्मच रस मे 3 सँ 5 बुन्द धरि मधु मिलाक' दिन मे तीन बेर दी।

उकासी, कफ, सर्दी—माइक दूध मे 1 (छोटका) चम्मच मधु मिलाक' दिन मे तीन बेर देबाक चाही। पैघ नेना केँ जँ गायक दूध पिबैत हो ओहिमे 2 चम्मच मधु मिलाक' दिन मे तीन बेर देबाक चाही। नेबोक रस मे समान मधु

मिलाक' कनेक गरमा ली आ सेरा लेलाक बाद राखि ली आ तकरा पानि मे मिलाक' देला सँ उकासी आराम होइत अछि।

दाँत बहरायब—जखन मसुहरि फूलि गेल हो आ दाँत बहराइत हो तँ आङुर मे मधु ल' क' मसुहरि पर दिन मे दू तीन बेर निमय पूर्वक लगौला सँ बच्चा केँ कष्ट नहि होइत छैक।

कनफुल्ली—स्याह जीर केँ सिलौट पर पीसिक' ओहि मे मधु मिलाक' फुललाहा स्थान पर लेप करी आ दिन मे चारि पाँच बेर 5 सँ 10 बुन्द धरि मधुक कनेक सुसुम जल मे पिया देला सँ लाभ होइत अछि।

ओछाओन पर लग्घी फरब—नेना केँ राति मे सुतबा सँ पहिने एक चम्मच मधु चटा देल जाय आ साँझे सँ नेनाकेँ पीबाक हेतु पानि नहि देल जाय तँ निन्न मे लग्घी करबाक आदति छूटि जाइत अछि।

शारीरिक पुष्टि—बच्चाक जन्मक बाद सँ 5-7 वर्ष धरि जँ मधु आ गायक घी असम मात्रा मे मिला क' दी तँ अद्‌भुत लाभ होइछ।

खरड़ा घाव (एग्जिमा)—नीमक पात पानि मे उसनी आ ओहि पानि सँ घाव साफ कयलाक बाद शुद्ध मधु लगाक' पट्‌टी बान्हि दी आ दिन मे तीन बेर पानि मे मधु घोरिक' पिया दी।

उघार घाव—मधुक प्रयोग खुललाहा घाव केँ भरबा मे कयल जाइत छैक। मलहमे जकाँ ई लगाओल जाइत अछि।

वबासीर—6 माशा त्रिफला मे 1 चम्मच मधु मिलाक' पानिक संग ली। एहि सँ वादी आ खूनी दुहू तरहक बवासीर मे लाभ होइत अछि। मस्सा पर मधु लगौला सँ सेहो लाभ होइत अछि।

जरब—शरीरक कोनो भागक आगि मे पाकि गेला पर ओहि ठाम मधुक लेप करक चाही। दर्द तुरन्त छूटि जाइत छैक आ घावो शीघ्र भरि जाइत छैक।

मोटाइ—मधु दुब्बर-पातर शरीर के मोट बनबैत अछि आ 2 सँ 4 चम्मच मधु पानि मे मिलाक' प्रतिदिन पीला सँ चर्बी घटैत अछि।

दिमागी कमजोरी—(दिमागक थाकल रहब, मोन मे सुस्ती, निराशा, भय, असन्तोष आदि मे) अनारक रस मे वा काबुली बदाम पीसिक' ओहि मे मधु मिलाक' खयला सँ बड़ लाभ होइत छैक।

हाथ-पयरक धाह देब—4-6 तेतरि राति केँ एक पाव पानि मे माटिक बासन मे भिजाक' भोरे मीड़िक' छानि ली आ 2 चम्मच मधुक संग सेवन करी।

मिथिला मिहिर : 15 जनवरी, 1961

माटिक महिमा

माटिक लाभप्रद गुणक सम्बन्ध मे वेद, आयुर्वेद आदि मे तँ बहुत रास कहले गेल अछि, आधुनिक विद्वान् आ अन्वेषकलोकनि सेहो बहुत गुणगान कयने छथि। महात्मा गांधी, एडोल्फ जुस्ट आदि तँ माटिक महिमा ततेक गौने छथि जे ओकर उल्लेख करब एक स्वतंत्र निबंधक विषय बनि सकैत अछि।

आइ-काल्हुक सभ्यता सँ दूर रहनिहार अनेक वन्य-जाति मे एखन धरि चलानी दवाइक प्रवेश नहि भ' सकल अछि। कहल जाइत अछि जे ओ सभ ज्वर, अतिसार, सभ प्रकारक दर्द, चर्म-रोग, उदर-पीड़ा, गूर-फोंसरी, घाओ-घोस, चोट, आकस्मिक पीड़ा आदि मे निश्चित रूपें माटिक प्रयोग करैत अछि आ सर्वथा रोगमुक्त होइत अछि।

माल-जालक रोग (भजहा) मे माटिक अद्‌भुत लाभ सँ प्राय: सभ परिचित होयब। भजहा भेला पर गाय-बड़द केँ थाल मे बान्हि देल जाइत छैक। केवल पशु वा जंगली जातिक हेतु नहि, अपितु सभक हेतु माटि परम लाभप्रद थिक। वस्तुत: माटिक बनल शरीरक क्षति केँ माटिये पूर्ण क' सकैत अछि।

महात्मा गांधी माटिक प्रयोगक संबंधमे अपन अनुभव लिखने छथि जे निम्नलिखित अछि—

1. कठिन सँ कठिन कब्ज मे प्रतिदिन भोर आ साँझ मे आध-आध घंटाक हेतु पेड़ू पर गील माटिक पट्‌टी लेला सँ आश्चर्यजनक लाभ होइत छैक, जे लाभ कोनो औषधि सँ नहि भ' सकैत अछि।

   माटिक पट्‌टी लेबाक विधि ई थिक जे ठंढा जल सँ माटि सानि लेल जाय। सनबा सँ पूर्व माटि केँ चूरिक' ओहिमे सँ कांकर-पाथर वा ख'ढ़-घास आदि बीछिक' बहार क' लेब आवश्यक। पछाति माटि केँ खूब सानी जाहि सँ ओ हलुआ सन कोमल बुझना जाय। सानल माटि ततेक रुक्ख नहि हो जे पट्‌टी लेबाक काल फाटि जाय वा ततेक ढील नहि हो

जे पट्टी लेला पर माटि बह' लागय। सनलाहा माटि एक साफ कपड़ा पर जकर नमती दस-बारह इंच आ चकराई छौ-सात इंच (डेढ़ बीत नाम एक बीत चाकर) होमक चाही—आध इंचक मोटाइ मे पसारि देल जाय। माटि अन्दाजें सेर-डेढ़ सेरक मात्रा मे रहय। एकर बाद ओ पट्टी उनटाक' पेड़ू पर राखि देल जाय, जाहि सँ माटिक संबंध चाम सँ हो ओ कपड़ा ऊपर मे रहय। नाभि सँ ल' क' मूत्रेन्द्रिय धरि पेटक सम्पूर्ण अगिला भाग केँ पेड़ू कहल जाइत छैक।

पेड़ू पर माटि बीस मिनट सँ आध घंटा धरि राखल जा सकैत अछि। चितंग सूतिक' एहि अवस्था मे इच्छानुसार बिनु किछु ओढ़ने अथवा किछु ओढ़िक' आराम सँ पड़ल रहि सकैत छी। माटि हटौलाक बाद कोनो भीजल कपड़ा सँ माटि लागल स्थान केँ पोंछि क' साफ क' देमक चाही। माटी सभ नीके थिक। पट्टीक हेतु एक डेढ़ हाथ नीचा सँ माटि कोड़िक' ली तँ उत्तम। जाहिठाम कूड़ा-करकट वा अपवित्र वस्तु हो वा जाहि मे गोबर अथवा खाद आदि हो ताहि स्थानक माटि नहि लेबाक चाही। चिक्कनि माटि मे कनेक बालु मिला देब उचित जाहि सँ पट्टी लेला पर माटि फाटि नहि जाय। कतोक माटि लाल, कारी, पीयर, मटमैल आदि होइत अछि। माटिक, रंग जे हो, सभ समान रूप सँ गुणकारी होइत अछि। नदीक पांकक प्रयोग बेसी हितकर। बलुआह माटिक पट्टी लेब कठिन होइत छैक।

2. बीछ, बिढ़नी, कंकोड़बिच्छा आदिक डंक पर माटि सानिक' देला सँ तत्काले लाभ होम' लगैत छैक।
3. अतिसार, शूल, पेटक दर्द मे पेड़ू पर माटिक पट्टी लेब अत्यन्त हितकारक थिक।
4. पेट आ माथ पर माटिक पट्टी लेला सँ तेज ज्वर घंटा दू घंटा मे हल्लुक भ' जाइत छैक।
5. गूर, फोंसरी खजुली-हौहटि, दिनाइ आदि मे माटिक मोट लेप बहुत लाभ करैत छैक।
6. कोनो प्रकारें जरि गेला पर सानल माटि बन्हला सँ दाह कम भ' जाइत छैक आ फोंका वा फूलब आदि नहि होइत छैक।
7. बवासीर पर बन्हला सँ लाभ होइत छैक।
8. चोट लगला सँ वा आने कारण सँ जँ कोनो अंग फूलि गेल हो आ ओहिठाम

कुरियैनी नहि रहय, मुदा दर्द होइत हो, माटि अवश्य लाभ करैत छैक।

9. पाला पड़ला पर जकर हाथ-पयर लाल भ' जाइत छैक वा सूखि जाइत छैक ओहि पर माटि अद्भुत लाभ करैत छैक।
10. माथक दर्द मे माथ पर आ आँखि उठला पर आँखि पर माटिक पट्टी बड़ लाभप्रद थिक। एहि तरहें अनेक रोगक संबंध मे माटिक अपन अनुभूत प्रयोग महात्मा गांधी लिखने छथि। ओ तें हड्डी टूटि गेला पर माटिक प्रयोग स्वयं कयने छथि आ लाभ उठौने छथि। कतेक प्राकृतिक चिकित्सकक मतें कोनो वस्तु सँ कटि गेला पर, बर्छी-भाला लगला पर, ठेस लगला पर, पशु-पक्षीक काटि लेला पर, कोनो वस्तु सँ चोट लगला पर, फोका भ' गेला पर, पकला पर, भयंकर सँ भयंकर चर्मरोग भेला पर यदि माटि सानिक' वा नदी-नालाक गील माटि बान्हल जाय तँ अद्भुत लाभ होइत छैक।

माटिक किछु अपन अनुभूत प्रयोग लिखि रहल छी।

1. माथ मे जँ रूस्सी भ' गेल हो तँ किछु दिन चिक्कनि माटि सँ माथ धोला पर निश्चित लाभ होइत छैक।
2. धिया-पूता केँ जँ पेट खराब भ' जाय, काँच-केंचुल आ हरियर-पीयर गौंजायल वा तरल दस्त होइत हो तँ कोनो दवाइ सँ बेसो हितकर पेट पर माटिक पट्टी देब थिक।

   नेना केँ जल्दी औषधिक हिस्सक नहि लगयबाक चाही।
3. दूध पिबैत बच्चाक दाँत सँ वा आन कारण सँ माताक स्तन फूलि जाइत छैक आ ओहि ठाम असह्य पीड़ा तथा दाह रहैत छैक। ज्वर से भ' जाइत छैक। ओकरा कतेक लोक माथ मारब कहैत छैक। ओहि दशा मे लगातार बदलि-बदलिक' माटिक पट्टी उक्त स्थान मे देला सँ आशातीत लाभ होइत छैक।
4. इनहोर सँ, माँड़ सँ, दूध सँ, तीमन सँ वा आने कोनो तरहें पाकि गेला पर तुरन्त माटि सानिक' थोपि देला सँ जादू जकाँ लाभ होइत छैक।
5. केहनो गूर पर माटि उपर्युक्त रीतियें बन्हला सँ गूर बैसि जाइत छैक वा नीक जकाँ पाकिक' स्वयं बहि जाइत छैक। माटि स्थानीय समस्त विकार केँ चूसिक' बहार क' दैत छैक।
6. पातर दस्त भेला पर, शुलबाहि मे, हैजा धरि मे माटिक पट्टीक पेड़ू पर प्रयोग कयला सँ निश्चित लाभ होइत छैक।

7. देहक फूलब, कोनो अंगक फूलब अथवा कोनो प्रकारक अंग मे दर्द भेला पर माटि केँ उपर्युक्त रीतियें बन्हला सँ (सानिक' रखला सँ) खूब लाभ होइत छैक।

एहि तरहें उपर्युक्त रोग सभ मे अप्राकृतिक औषधि सभक द्वारा रोगमनक सङहि सङ शरीर मे विष प्रवेश होइत अछि, मुदा माटिक प्रयोग कयला सँ शरीर सर्वदा निरापद रूपें रोगमुक्त होइत अछि। माटिक महिमा अनन्त अछि। माटिक प्रयोग निस्संकोच भावें सभ केँ करबाक थिक।

मिथिला मिहिर : 02 अप्रैल 1961

सौन्दर्य-प्रसाधन मे केशक महत्व

केशराशिक संबंध मे अनेक कविलोकनि अपन काव्य-कल्पनाक सुन्दर परिचय प्राचीन साहित्य मे देने छथि। अपनेटा देश नहि, विदेशो मे साहित्यिक सभ केश केँ सौन्दर्यक एक बड़ पैघ साधन मानने छथि। सरिपहुँ सुन्दर, कारी केश पुरुषक हेतु व्यक्तित्व आ स्वस्थ सौन्दर्यक तथा स्त्रीगणक लेल वास्तविक सौन्दर्यक अत्यन्त महत्वपूर्ण मूलाधार थिक। जेना कोनो सुन्दर वस्तुक शोभा ओकर पृष्ठभूमि पर होइत छैक तहिना नारी जातिक हेतु सघन, नाम, मोलायम, चमकदार आ कारी केश-राशि ओकर सुन्दरताक सभ सँ पैघ पृष्ठभूमि थिक। पुरुषक हेतु तँ भरल-पुरल शरीर पर वयसाहु भेला पर खल्वाटो रहला सँ व्यक्तित्वक थोड़-बहुत गम्भीर्य अवश्ये बुझना जाइत छैक, मुदा जँ यैह बात स्त्रीगण केँ भ' जाइत छैक तँ से ओकरा हेतु बड्ड बेजाय बुझना जाइत छैक। खल्वाटक बात तँ जाय दिय' जे यदि स्त्रीगणक केश पातर, छोट, कमजोर, रुक्ख, अध-पक्कू आ मोट सन भ' जाइक तँ सुन्नरि सँ सुन्नरि युवतीक मुखाकृति एकदम निष्प्रभ बुझना जयतैक। मुखमण्डलक छटा तँ केशेक पृष्ठभूमि पर रहैत छैक।

ई तँ भेल सौन्दर्यक दृष्टिकोण सँ केशक महत्व। शरीरशास्त्री लोकनिक कहब छनि जे केशक प्रयोजन शरीरक हेतु सौन्दर्येटा नहि, रक्षात्मक रूपें सेहो होइत छैक। केशक जड़िक चारूकात किछु एहन पदार्थ रहैत अछि जे माथ आ मस्तिष्कक आवरण केँ ताप तथा आन प्रकारक आघात सँ बचबैत रहैत अछि। एकर दृष्टान्तयुक्त प्रमाण एही बात सँ होइत अछि जे जखन लोक केँ कोनो आकस्मिक ओ गम्भीर भय वा आतंकक शंका होइत छैक कि सौंसे देहक रोइयां तथा केश भुटुकिक' ठाढ़ भ' जाइत छैक। मनुष्यक अपेक्षें पशुक हेतु ई बात विशेष प्रभावोत्पादक अछि। बिलाड़ि आ कुकुर जखन अपना प्रतिद्वन्द्वी सँ लड़बाक हेतु प्रस्तुत होइत अछि कि ओकर सौंसे देहक केश ठाढ़ भ' क' कवचक रूप मे तैयार भ' जाइत छैक।

केशक संबंध मे किछु आवश्यक तथ्य बूझि लेब तँ ओकर सुरक्षाक व्यवस्था

नीक जकाँ क' सकैत छी। केश त्वचाक छिद्र मे उत्पन्न होइत अछि। एही छिद्र केँ रोमकूप कहल जाइत छैक। जेना गाछक जड़ि केँ सुरक्षित रखला सँ गाछ सुरक्षित रहैत अछि तथा जड़ियेक द्वारा गाछ पोषण तत्व प्राप्त करैत अछि, तहिना केशक पोषण केवल रक्त द्वारा मूल मे पहुँचाओल जा सकैत अछि, ऊपर सँ कोनो पदार्थ लगौला सँ केशक कोनो तरहक पोषण नहि भ' सकैत छैक। पोषणक एहि सिद्धान्त केँ बूझि गेलाक उपरान्त आब माथक मालिशक रहस्य बूझि लेब आवश्यक।

जेना व्यायाम कयला सँ अंग सभ बलिष्ठ ओ स्वस्थ होइत अछि तहिना केशक पुष्टि आ वृद्धि माथक मालिश सँ होइत अछि। मालिश सँ त्वचाक आवरण मे रक्त संवहनक कार्य नीक जकाँ होइत छैक : केशक स्वस्थतापूर्वक वृद्धि मे मालिश सँ बड़ सहायता भेटैत छैक। एहि प्रसंग ईहो बूझि लेब आवश्यक जे नेनाक जन्म भेला पर जँ नेनपनिये मे ओकर माथक मालिश पर ध्यान राखल जाय तँ आगाँ जाक' ओकरा केशक हेतु साधारणत: विशेष चिन्तित नहि होम' पड़त।

ई बात नीक जकाँ ध्यान मे राखक थिक जे शरीरक विकार केँ बहार करक एक साधन रोमकूपो थिक। तें केशक जड़ि केँ सर्वदा साफ राखक चाही, जाहि सँ भीतरक विकार बहार भ' सकय आ रोमकूप द्वारा स्वस्थ वायुक प्रवेश भ' सकय। रोगक जीर्ण अवस्था मे केश झरब शुरूह होइत छैक। विशेषत: मियादी धाह, टाइफाइड आदि रोग मे माथक केश झरि जाइत छैक। जाधरि शरीरक विष बहरा नहि जाइत छैक ताधरि केश झरिते रहैत छैक। साधारणत: रक्त संचालनक प्रक्रिया ठीक भ' गेलाक बाद केश स्वत: जन्म' लगैत छैक। एहि सँ ई आरो स्पष्ट होइत अछि जे सम्पूर्ण शरीरक स्वास्थ्ये पर मूलत: केशक स्वास्थ्य निर्भर करैत अछि। एकर अतिरिक्त मनक प्रभाव, जेना सम्पूर्ण स्वास्थ्य पर पड़ैत अछि तहिना केशो पर पड़ैत अछि। मन सँ दुखी तथा चिन्तित रहनिहार व्यक्तिक केश शीघ्रे झर' लगैत छैक, उज्जर भ' जाइत छैक आ कमजोर भ' जाइत छैक। सभ रोगक कारण मूलत: पेट थिक। पेटक गड़बड़ रहला सँ स्वास्थ्य गड़बड़ रहैत छैक। पेट ठीक नहि रहला पर ओकर प्रभाव केशो पर पड़ैत छैक। संक्षेप मे यैह सभ किछु तथ्य अछि जे बूझि लेला सँ ई स्पष्ट भ' जाइत अछि जे सम्पूर्ण शरीरक स्वास्थ्य पर ध्यान रखला सँ अंगविशेषक—केशक हेतु विशेष चिन्तित रहबाक प्रयोजन नहि रहत।

केशक झरब स्वाभाविक थिक। एक नियत समयक पछाति प्रत्येक केशक वृद्धि अवरुद्ध भ' जाइत छैक। एहि तरहें केशक जड़ि अभिशोषित भ' गेलाक बाद ओ झरि जाइत अछि। ओहि स्थान पर पुन: नबका केश जनमैत छैक। तें प्रतिदिन

ककवा सँ केश थकरब आवश्यक थिक। यदि केशक झरब बेसी मात्रा मे हो तँ ओकरा अस्वस्थता बूझक चाही। एहि बातक निवारणक हेतु नियमित रूप सँ केशक जड़िक मालिश करबाक चाही। केश मे रूस्सी भ' गेला पर ओहि दिस तुरन्त ध्यान देबाक चाही।

केशक नियमित स्वस्थता ओ सुरक्षाक हेतु थोड़ेक समय पसाहनिक काल मे प्रतिदिन केश केँ देमक चाही। प्रतिदिन तेलक मालिश कयलाक बाद माथ केँ शीतल जल सँ धो देल जाय आ तखन नीक जकाँ ककबा सँ ओकरा थकरि क' स्वच्छ आ सोझराओल बना लेल जाय। उपरान्त कनिये-कनिये जोर सँ केश केँ तीड़'क चाही। एहि प्रक्रिया सँ विशेष लाभ होइत छैक। एकरा अतिरिक्त भोजन मे फल, साग, दूध, बिना मसालाक वा कम मसाला बला तीमन-तरकारी आदिक बेसी मात्रा रखला पर, सर्वदा हँसमुख तथा दुश्चिन्ता सँ बाँचल रहला पर आ पेट साफ रहला पर सम्पूर्ण शरीरक लावण्यक संग-संग केशराशिक सौन्दर्य बनल रहैत छैक। नीचा किछु अनुभूत विधि देल जाइत अछि, जाहि सँ केश सघन, कारी, सुन्दर आ स्वस्थ राखल जा सकैत अछि।

केशक स्वच्छता : काँच वा सुखायल धात्री केँ पीसिक' सप्ताह मे दू दिन नहि तँ कम सँ कम एक दिन अवश्ये माथ पर केश मे खूब मिलाक' थोपि लिय'। आधा घंटाक पछाति साफ शीतल पानि सँ माथ केँ नीक जकाँ धो दियौक। चिक्कनि माटि, बदामक बेसन, करू तेल मिलाओल दहीक लेप, रीट्ठा आ त्रिफला (औरा, हरीर, बहेड़ा), नेबोक रस आदि केश केँ साफ रखबा मे उत्तम होइत अछि। साबुन सँ केश साफ तँ होइत अछि मुदा साबुन केश केँ कारी, चमकदार आ स्वस्थ नहि बना सकैत अछि। धात्री आदि केशक जड़ि केँ मजगूत बनबैत छैक।

तेलक मालिश : सुगन्धित वा उत्कट गन्धबला तेल सँ परहेज राखि सुच्चा नारियरक तेल, तिलक तेल वा सरिसवक तेल स्नान कयलाक बाद, केशक सूखि गेला पर (अथवा स्नान सँ पूर्वहु जे हिस्सक हो) आंगुरक अग्रभागे सँ रगड़ि-रगड़िक' नीक जकाँ केशक जड़ि मे पचाबी।

केशक व्यायाम : आंगुरक पोर सँ सम्पूर्ण माथक घर्षण नहूँ-नहूँ कम सँ कम 15 सँ 20 मिनट धरि कयलाक पछाति 5 मिनट धरि दुहू हाथक मुट्ठी सँ केश केँ पकड़ि-पकड़ि क' तिड़बाक चाही। एहि सँ जड़ि मजगूत होइत छैक। ककबा सँ थकरबा मे कम सँ कम दस मिनट देल जाइक। भोर मे सांझुक पहर दू बेर केश थकरब नीक थिक। सांझुक पहर केश बान्हब नीक हिस्सक थिक।

जूड़ा बनयबाक आइ-काल्हि कतेक विधि छैक। जे छजय तदनुसार, देश आ

कालक अनुरूप केश बान्हब वा सौन्दर्य प्रसाधन करब उत्तम बूझक चाही। केश मे फीता, काँटा, पिन, फूलक माला, फूल आदि अनेक वस्तुक उपयोग सेहो यथारुचि सामाजिक मर्यादाक अनुसारें करब नीक थिक।

मिथिला मिहिर : 02 जुलाई 1961

मनुष्यक स्वार्थ

सृष्टिक प्रक्रिया चलि रहल छल। पृथ्वी केँ वसुन्धराक पदवी भेटि चुकल छलनि। ऊपर ऊँच-ऊँच गिरिश्रृंखला सब गर्वोन्नत मस्तक कैने विधाताक कला चातुरी आ रचना-शैलीक निरीक्षण क' रहल छल। नीचा मे छोट-छोट तृण अपना हरीतिमा मे पसरै लागल छल। पैघ-पैघ गाछ-वृक्ष विविध फूल आ फल सँ संसारक सुषमा-वृद्धि क' रहल छल। लत्ती सब अपन सहज सुकुमारता सँ गाछक अंक मे आश्रय पाबि नेने छल।

ऊपर सुविस्तृत नील गगन, जाहि मे तारा, नीहारिका, चन्द्रमा और सूर्य। नीचा फड़ल फुलाएल वसुधा जाहि पर सुमनक सुगन्धि आ प्रवहमान समीरण।

विधाता स्वयं अपना सृष्टि पर मुग्ध भ' रहल छलाह। सहसा अन्तरिक्षक एक कोन मे कारी-कारी मेघ भरि आयल। वायु ओकरा अपना कान्ह पर चढ़ा लेलक आ दौड़ि-दौड़ि क' चारू दिस छिड़िया देलक। चन्द्रमाक मधुर ज्योत्स्ना तिरोहित भ' गेल।

विधाता देखलनि जे ई तँ घोर अन्धकार भ' गेल। जीवनक चिर-सहचर मरण जकाँ प्रकाशक संग अन्धकार। ओ खिल-खिला क' हँसि देलनि। बिजली चमकल। विधाता केँ चिन्ता भेलनि जे हमर एहि रचना केँ बुझनिहार सुझनिहार आ सृष्टि वैचित्र्यक अनुभूतिक चिन्तन कैनिहार क्यो चाही।

घूमि क' विधाता विश्राम कर' लगलाह। किन्तु कलाकारक मर्म वेदना हुनका हृदय मे जागि उठल छल। विश्रामक हेतु ओहि ठाम अवकाशे कत' छल? चिन्तन...चिन्तन... सुदीर्घ चिन्तन...।

सहसा ओ उठि क' बैसलाह आ अपना कल्पना केँ साकार कर' लगलाह। एकहि सङ ओ चारि प्राणीक निर्माण केलनि। पहिलुक प्राणी मनुष्यक कहौलक और शेषक नाम पड़ल क्रमश: बड़द, कुकुर आ उल्लू। एकर बाद अनेक प्रकारक जीव-जन्तु बनल। पहिलुक चारू कृति केँ श्रेष्ठता प्रदान कैल गेल। सन्तुष्ट भ'

ओ चारू विधाता लग अपन दायित्वक ज्ञान प्राप्त कर' पहुँचल। प्रणिपात क' विनीत भाव सँ जिज्ञासात्मक मुद्रा मे ओकरा सब केँ उपस्थित देखि विधाता मनुष्य केँ कहलथिन्ह—तों प्रकाशक शक्तिक आह्वान करिहह आ ईश्वरक गुणगान करिहह। विधाता ई कहि अपन सार्थकता बुझलनि। मनुष्य अपन उत्तरदायित्व आ कर्त्तव्य-बोध पाबि प्रसन्न भ' उठल।

उपरान्त बड़द केँ प्राणि-जगतक सेवाक भार देल गेल जकरा ओ सहर्ष स्वीकार कैलक।

प्राणि-जगतक रखबारिक ध्यान एला पर विधाता ई भार कुकुर केँ देलथिन। सहसा विधाता केँ अन्धकारक स्मरण भेल। उल्लू केँ अन्धकारक शक्ति पर दृष्टि रखबाक काज देल गेल।

कार्य-भारक वितरण भ' गेलाक बाद चिन्तन, अनुभूति आ अभिव्यक्तिक शक्ति मनुष्य केँ देल गेल। ओकर वाणीक स्वर स्पष्टतर होमै लागल। उपनिषद् काल तक अबैत-अबैत मनुष्य अपना दात्यिवक बहुत अंश धरि निर्वाह कैलक 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय' आदिक उद्घोष क'। मुदा ई तँ बहुत पछातिक बात थिक। ओहिना बड़द केँ अनुभूति, सहनशीलता आ भार वहनक क्षमता तँ देल गेल किन्तु ओकरा वाणीक स्वर केँ सीमित क' देल गेल।

कुकुर केँ बड़दक अपेक्षें अधिक अनुभूतियो भेटल आ वाणीक दीर्घतो भेटल। उल्लू केँ काजक दृष्टि मे केवल अन्हारक शक्ति पर नजरि रखबाक छलैक। तैं स्वरक स्पष्टता नहि देल गेलैक। फलतः ओकर वाणी विकृत-सन भ' गेल। बदला मे अंधकार मे देखबाक अद्भुत शक्ति भेटल।

विधाताक समीप लक्ष्मी ठाढ़ि छलीह। लक्ष्मी केँ नारि-सुलभ दया उल्लूक प्रति भ' उठलनि। बजलीह—'हे विधाता, एकरा अपना आश्रय मे राखै चाहैत छी!'

विधाता कहलथिन—'एवमस्तु। ई अहाँक वाहन बनत।'

कुकुर विधाता दिस देखै लागल। विधाता बजलाह—'अच्छा, अच्छा, तोंहूं वाहन बनबह भैरवक।'

बड़द घेंट उठौलक। ओहो महादेवक सवारीक हेतु नियुक्त कैल गेल।

किन्तु मनुष्य... ?

मनुष्य अपना 'स्वत्व' केँ चिन्हलक। आ बाजल—'विधाता, हम वाहन नहि बनै चाहैत छी।' विधाता कहलथिन—'तों स्वयं अपन 'स्वत्व'क वाहन बनबह। तोरा पर स्वार्थ चढ़ल छहु। हमरा प्रति तोरा भरोस नहि रहलहु।'

लज्जित भ' मनुष्य संकुचित भ' गेल। लक्ष्मी हँसै लगलीह। बजलीह—'तों ककरो एक गोटाक वाहन नहि बनि सकलह तँ तों समय-समय पर सभक वाहन बनबह।'

विधाताक उलझन बढ़ल जा रहल छल। ओ चटपट चारू प्राणी केँ चालीस-चालीस वर्षक आयु द' देलथिन। कहलथिन—'तोरा चारू गोटे केँ चालीस-चालीस वर्षक जीवन-अवधि देल जाइत छह।'

सुनि केँ चारू उदास भ' गेल।

मनुष्य सोचै लागल जे चालीस वर्ष मे तँ हमर यौवनक आकांक्षा पूर्णो नहि भ' सकत। मुदा करी की? चुप्पे रहल। एक बेरक अधीरताक फल कनेक पहिने पाबिये चुकल छल जे ओकरा सभक वाहन बनबाक झंझटि भेटि गेल छलैक।

परन्तु भोलाक वाहन बड़दो ओहने सोझ प्राणी छल। ओकर आँखि डबडबा गेलैक। श्लथ स्वर मे बाजल—'विधाता, चालीस वर्षक निरन्तर भार-वहन करैत रहबाक बन्धन सँ हमरा मुक्ति देल जाय। हमरा केवल बीस वर्षक आयु देल जाय।'

विधाताक समक्ष एक नवीन समस्या आबि गेल।

ओ तारतम्य मे पड़ि गेलाह।

विधाताक देल पुरस्कार केँ आपस करब असम्भव थिकैक, मनुष्य ई अनुभव कैलक आ विधाताक चिन्ता केँ दूर करबाक भाव देखबैत ओ बाजल—'दयानिधान, बड़दक आयुक अवशिष्ट बीस वर्ष हम लेबक हेतु सहर्ष प्रस्तुत छी।'

एहि तरहें मनुष्यक आयु चालीस सँ बढ़ि क' साठि भ' गेल।

बड़दक मुक्तिक बात देखि कुकुरो माथ उठौलक। बाजल—'दयासागर, हमरा केवल बारह वर्षक आयु चाही।' मनुष्य ओकरो आयुक अठाइस वर्ष लै लेलक।

एही तरहें उल्लुओ अपना आयुक केवल बीस वर्ष मांगलक।

अपन बहादुरी आ विधाताक सुविधाक बहाना सँ जीवनक अतृप्त लालसाक सङ मनुष्य उलुओक आयुक अवशिष्ट बीस वर्ष अपना आयु मे परिगणित करा लेलक।

एहि प्रकारें मनुष्यक आयु एक सै आठ वर्षक भ' गेल।

विधाता एहि सभक बाद चारू केँ मर्त्यलोकक हेतु विदा केलनि।

बड़द आ कुकुर मनुष्यक एहि उदारता सँ प्रभावित भ' ओकरा सेवा करब स्वीकार कैलक। उल्लुओ अपन सहानुभूति प्रकट कैलक।

मनुष्यक बुद्धि चमत्कृत भ' उठल। एके तीर मे ओ अपना जनैत तीन-तीन

शिकार कैने छल। विधाताक चिन्ताक अपहरण बड़द आ कुकुर आदिक छुटकारा आ अपन भोगेच्छाक तृप्तिक हेतु अधिक सँ अधिक अवकाशक निर्माण।

विधाता ओहि सब केँ जाइत देखि रहल छलाह।

लक्ष्मी हँसि केँ कहलथिन्ह—'मनुष्य अहाँक चिन्ता दूर क' बड़ उपकार कैलक विधाता?'

विधाता गुरु-गम्भीर स्वरें बजलाह—'हूँ'।

लक्ष्मी कहलथिन्ह—'आ, एहि प्रकारें ओ लाभो मे रहल।'

विधाता और अधिक गम्भीर भ' गेलाह। ललाट केँ कने कुंचित करैत बजलाह—'मनुष्य अपना स्वार्थक वशीभूत भ' बड़द, कुकुर आ उल्लूक आयुक अवशिष्ट वर्ष तँ ल' लेलक मुदा ओ मनुष्यक आयु चालीसे वर्ष धरि बितौत। चालीसक बाद साठि वर्षक अवस्था धरि परिवारक पालन-पोषण मे बड़द जकाँ जोतल रहत। साठिक उपरान्त अट्ठासी वर्षक वयस धरि ओ कुकुरक जीवन व्यतीत करैत केवल भुकैत रहत आ रखबारि करैत रहत। तकरा बाद उल्लूक जीवनक उपभोग करैत ओ अन्धकारक देवता यमराजक बाट तकैत रहत। ...की सत्ते ओ लाभ मे रहल?...'

लक्ष्मी ई सुनि गम्भीर भ' बजलीह—'हाय रे मनुष्यक स्वार्थ?'

(एक लोक कथाक आधार पर)
प्रकाशित : मिथिला दर्शन

यक्ष-प्रश्न

बहुत दिन नहि भेल अछि। एही कांग्रेसी राज मे कोनो गाम मे पाँच मित्र रहैत छलाह। हुनकालोकनि मे परस्पर एतेक प्रेम भाव छलनि जे गामक लोक हुनकालोकनि केँ कौतुकवश पाँच पाण्डव कहैत छलनि। एक गोटेक नाम युधिष्ठिर, दोसरक भीम, तेसरक अर्जुन, चारिमक नकुल आ पाँचमक नाम सहदेव छलनि। मुदा एहि पाँचो पाण्डवक द्रौपदी प्रत्येकक पृथक्-पृथक् छलथिन।

पाँचो पाण्डव गामक एके स्कूल मे संगे-संग पढ़लनि आ तखन नगरक एक कालेज मे पढ़ि बी.ए. पास करैत गेलाह। पहिने हुनकालोकनिक विचार छलनि जे पढ़बा-लिखबाक उपरान्त गामे मे रहल जाय आ खेतीक आधुनिक साधन सभक उपयोग क' अपना गाम केँ एक आदर्श गाम बना देल जाय। मुदा हुनकालोकनिक भाइ-बन्धु झगड़ा क' सूच्यग्रो भूमि नहि देलकनि।

पाँचो पाण्डव किछु दिनधरि अंगरेजी अखबार पढ़ैत रहलाह, आ अपना लोकनिक योग्य नोकरी तकैत रहलाह। अन्त मे एकदिन ओ लोकनि रेलवे सर्विस कमीशनक विज्ञापनानुसार आवेदन-पत्र भरिक' पठा देलथिन आ परीक्षाक निमंत्रणक प्रतीक्षा करैत रहलाह। परीक्षाक निमंत्रणो आबि गेलानि। समीपक एक शहर मे परीक्षा होयबाक छलनि। पाँचो पाण्डव एकटा पोटरी मे सातु, नोन आ मरचाइ बान्हि भोरुका ट्रेन सँ शहर जाइत गेलाह। गरीब रहबाक कारणे ओलोकनि कोनो होटल मे नहि खयलनि, अपितु शहर पहुँचिते कनेक सातु घोरि क' पीबि लैत गेलाह।

परीक्षा देलाक बाद जखन ओलोकनि हॉल सँ बहरयलाह तँ सभ क्यो बड़ थाकि गेल छलाह। हाल देखबाक योग्य भ' गेल छलनि। केश छिड़िआयल छलनि, आकृति पर घाम टघरल छलनि आ भूखें-पियासें ठोर पर फुफड़ी पड़ल छलनि।

'भोरुका सातु तँ कखन ने पचि गेल भाइ ? आ भूखक कारणे पेट मे मुसरी दंड घीच' लागल अछि। कतहु किछु खा-पी लेल जाय।'

युधिष्ठिर दार्शनिक सनक स्वर मे बजलाह—'सभ सँ पहिने क्षुधा पर निग्रह

करब सीखह नकुल। एही क्षुधाक अनुचित लाभ उठा क' आइ काल्हि व्यापारी-वर्ग टाकाक डेढ़ सेर गहूम बेचि रहल अछि।'

अपन पेट पर हाथ घुमबैत बजलाह—'ओना भूख तँ हमरो लागल अछि, मुदा शहर मे कोनो वस्तु शुद्ध नहि भेटि सकैत छह से बुझले होयतह। तें हमरा विचारें हमरालोकनि किछु दूर एहिना चलै चली, आगाँ जे इनार आ गाछी भेटत, ओतहि कनेक सुस्तायब आ हाथ-पयरर धोक' सातु पिबैत जायब।'

युधिष्ठिरक एहि मीठ वचनक प्रभाव आन चारू पाण्डवो पर स्पष्टत: पड़लनि। हुनकालोकनिक आकृति पर प्रसन्नताक लहरि पसरि गेलनि। ओलोकनि नव उत्साह सँ चल' लगलाह। किछु दूर गेला पर एकटा गाछी देखिते नकुल कहलथिन—'आब हमरा बुतें चलब पार नहि लागत भाइ।'

युधिष्ठिर हँसि क' कहलथिन—'बेस-बेस। तों कतहु सँ पानिक प्रबन्ध करह। ता धरि हमरा सभ ओहिठाम तोहर प्रतीक्षा करैत छियह।'

युधिष्ठिरक आज्ञा पाबि नकुल तत्क्षण पानिक व्यवस्था मे विदा भ' गेलाह। पन्द्रह मिनट बितलाक बादो जखन नकुल घूमि क' नहि अयलाह तँ युधिष्ठिर केँ चिन्ता भ' गेलनि। सहदेव केँ ओ कहलथिन—'सहदेव, कने देखहुन तँ नकुल भैया कतहु मानव निर्मित कोनो संकट मे तँ ने बाझि गेलाह अछि?'

भाइक आज्ञा भेटिते सहदेव हरिन जकाँ फनैत-फुनैत नकुल केँ ताक' बिदा भ' गेलाह। एही तरहें सहदेव, अर्जुन आ भीम जखन सभ क्रम-क्रम सँ चलि गेलाह तँ युधिष्ठिर एकसरे रहि गेलाह। सायंकालक छाहरि बढ़बाक संगे हुनका ई एकाकीपन आरो बेसी अधलाह लाग' लगलनि। ट्रेनक समय सेहो भ' रहल छलनि। ओ सातुक झोरी उठौलनि आ गाछी सँ बहरा क' रेलवी लाइन पर कनेक काल ठाढ़ भ' एम्हर-ओम्हर ताकिये रहल छलाह कि एकटा पुलिसक सिपाही हुनका दिस सन्दिग्ध दृष्टियें तकैत कहलकनि—'एम्हर-ओम्हर की ताकि रहलह अछि हौ?'

—'किछु नहि...किछु नहि... हम तँ अपना सङीलोकनि केँ देखि रहल छलियनि।' युधिष्ठिर कनेक घबरायल स्वर मे कहलथिन।

—'ओऽऽ... सङी सभ केँ ताकि रहल छह?' पुलिसक सिपाही दहिना हाथ मे सँ डंटा केँ बामा हाथक तरत्थी पर नहूँ-नहूँ थप-थपबैत कहलकनि—'तँ तों अपना दलक सङी सभ केँ ताकि रहल छह? चलह, बड़ा साहेब, बड़ीकाल सँ तोरे बाट ताकि रहलखुन अछि।'

—'भाइ साहेब, हमर कोनो दल नहि अछि। हम तँ एत' परीक्षा देब' आयल छलहुँ।'

—'जे कहबाक होअह से थाने पर कहिहनु।'

—'थाना जाय पड़त?' युधिष्ठिर डेरा क' पुछलथिन।

—'जी नहि, सासुर?'

—'तँ अपनहिक नाम धर्मराज थिक?' खाकी उर्दी मे सुसज्जित पुलिस आफीसर युधिष्ठिरक नखशिखान्त निरीक्षण कयलाक बाद पुछलथिन।

—'जी नहि, हमर नाम युधिष्ठिर थिक।' ई कहैत काल युधिष्ठिरक पयर थर-थरा रहल छलनि।

—'एक्के बात थिक। पुलिस आफीसर जेब सँ एकटा सिकरेट बहार क' सुनगा क' धुआँ फेकैत पुछलथिन—धर्मराज हो आ कि युधिष्ठिर, कोनो फरक नहि पड़ैत छैक। बरनी, ई कहह जे सत्य बजबाक अतिरिक्त आरो कोन काज करैत छह?'

—'जी? एखन तँ हमरालोकनि नोकरी ताकि रहल छी।'

—'हमरालोकनि? तँ की तोहर कोनो दलो बनल छह? पुलिस आफीसरक आकृति सहसा कठोर भ' उठलनि—एखनधरि कतेक डकैती क' चुकल छह?'

—'डकैती? युधिष्ठिरक धोती ढील होब' लगलनि। —अपने केहन डकैतीक गप्प कहि रहल छी सरकार?'

युधिष्ठिरक निष्पाप आकृति देखि पुलिस आफीसर असली बात बुझि गेलाह मुदा निर्दोष केँ जे दोषी नहि साबित क' दैक से पुलिस कर्मचारी केहन? ओ प्रश्नक क्रम जारी रखैत पुछलथिन—'तँ तों कोनो फिल्म कम्पनी आ कि नाटक कम्पनी सँ भागि क' आबि रहल छह?'

—'सरकार, नाटक कम्पनी वा फिल्म कम्पनी मे काज करबाक कोन कथा जे हमरालोकनि तँ रामलीला छोड़ि नाटक-सिनेमा देखनाइयो पाप बुझैत छी।'

—'तखन तँ तों महाभारतकालक युधिष्ठिर बुझना जाइत छह।' पुलिस आफीसरक आकृति अकस्मात सौम्य बनि गेलनि।

—'जी? अपने महाभारतकालक कोना गप्प कहैत छी सरकार? ओहि समय मे तँ हमरालोकनिक परदादाक परदादा आ तिनको परदादाक जन्म नहि भेल होयतनि।'

—'तों बड़ घाघ छह। तोहर बुद्धिमानीक लोहा तँ साक्षात् यमराजो मानि लेने छलथुन।'

—'यमराज? यमराज कहिया लोहा मानि लेने छलाह?' युधिष्ठिरक मस्तिष्क आब जबाव देने जा रहल छलनि।

—'खौ तौरीके, बिसरि गेलह? जखन साक्षात् यमराज यक्षक रूप धारण क'

तोरा सँ प्रश्नसभ पुछने छलथुन... ?'

युधिष्ठिरक दिमाग मे आब किछु-किछु झलक' लगलनि। अवसरक लाभ उठयबाक लालसा हुनको होब' लगलनि। खूब साहस क' ओ बजलाह—'ओना तँ सरकार, जबाब देबा मे हमहूँ युधिष्ठिर सँ कम नहि छी। अपने प्रश्न तँ कयल जाय।'

पुलिस अफीसरक आँखि मे कुटिलता चमकि उठल। ओ गर्वोक्ति सँ पुछलथिन—'आ जँ तों सफल नहि भेलह तँ?'

—'तँ की... ?'

पुलिस आफीसर एकटा कोठली दिस इशारा कयलथिन।

—'बेस, अपने प्रश्न तँ पूछू।'

पुलिस आफीसरक पहिल प्रश्न छलनि—'की कारण थिक जे सूर्य दिन भरि आकाश मे चमकैत रहैत छथि?'

युधिष्ठिरक पेटेन्ट उत्तर प्रस्तुत छल—'एहि लेल जे बिजलीक खर्च कम हो।'

पुलिस आफीसरक मन पर एहि उत्तरक की प्रभाव पड़लनि से कहब तँ कठिन मुदा तदन्तर ओ दोसर प्रश्न कयलथिन।

—'ओ कोन शास्त्र थिक जकरा अध्ययन सँ मनुष्य शीघ्र बुद्धिमान भ' जाइत अछि?'

युधिष्ठिर कहलथिन—'राजनीति।'

पुलिस आफीसरक तेसर प्रश्न छलनि—'पृथ्वियो सँ बेसी सहनशील के होइत अछि? कारण सहित उत्तर दैह।'

युधिष्ठिरक उत्तर छल—'लेखकक पत्नी। कारण जे ओ बेचारी अपना पतिक सभ नीक अधलाह रचना बड़े धैर्य सँ सुनैत अछि, ओकरा सभक प्रशंसा करैत अछि आ डेरा पर अयनिहार पतिक प्रशंसक संगी सभ केँ चाह-पान बनाक' दैत अछि।'

चारिम प्रश्न छल—'पुलिस आ चोर मे के श्रेष्ठ होइछ?'

—'चोर। युधिष्ठिर कहलथिन—कारण जे पुलिसक अस्तित्व चोरक बिना असम्भव अछि।'

—'आकाशो सँ ऊँच वस्तु की थिक?' पाँचम प्रश्न छल।

—'नेतालोकनिक नारा।'

—'सुखायल ख'ढ़क अपेक्षा जर्जर वस्तु की थिक?'

—'चुनाव मे हारल नेता, जकर जमानतो जब्त भ' गेल होइक।'

पुलिस औफीसरक सातम प्रश्न छल—'यात्रीक संग के?'

—'परिचारिका! जकरा अंगरेजी मे 'एयर होस्टेज' कहल जाइत अछि।' युधिष्ठिर सामान्य ज्ञानक संगे-संग अपन अंगरेजीक ज्ञानोक परिचय दैत कहलथिन।

युधिष्ठिरक प्रतिभा सँ चकित पुलिस आफीसर आठम प्रश्न कयलथिन—'घर बैसल लोकक वास्तविक मित्र के होइछ?'

—'कमयनिहारि पत्नी।' युधिष्ठिरक 'रेडीमेड' उत्तर छल।

—'मुइलाक बाद मनुष्यक पछोर के धरैत अछि?'

—'पत्रकार आ डाक्टर।'

—'सभ सँ पैघ पात्र की थिक?'

—'महापात्र।'

—'ओ कोन वस्तु थिक जकरा त्याग कयला सँ मनुष्य जनता जनार्दनक दयापात्र बनि जाइछ?'

—'मंत्रिपदक कुर्सी। उत्तर दैत युधिष्ठिर थाकि क' कहलथिन जे—आब हमर पिंड छोड़ल जाय नहि तँ हमर संगियो सभ हमरा नहि भेटताह आ ट्रेनो छूटि जायत।'

—'एखन तँ एगारहेटा प्रश्न भेल अछि, किछु आरो पूछि ली।'

—'बेस, पूछल जाय।' युधिष्ठिर कहलथिन।

—'ओ की थिक जकरा गेला सँ दुखक अपेक्षा लोक केँ प्रसन्नते बेसी होइत छैक?'

—'पाहुन'।

—'ओ कोन वस्तु थिक जकरा छोड़ि देला पर लोक धनी भ' जाइत अछि?'

—'गरीबी।'

—'जनप्रिय नेता होयबाक हेतु कोन-कोन बातक आवश्यकता होइत छैक? खानदान, व्यवहार वा उच्च शिक्षा?'

युधिष्ठिर अविलम्ब उत्तर देलथिन—'एहि मे सँ किछु नहि। जनप्रिय नेता होयबाक लेल केवल दू वस्तुक आवश्यकता होइछ—पैघ-पैघ बात आ फुसिये आश्वासन।'

पुलिस औफीसर प्रसन्न भ' क' पुछलथिन—'बेस, संसारक सभसँ पैघ सत्य की थिक?'

—'चीनी झूठ।' युधिष्ठिर दीर्घश्वास ल'क' कहलथिन।

पुलिस औफीसर युधिष्ठिरक भूरिश: प्रशंसा करैत कहथिन—'एखनधरि तँ

खूब बढ़ियाँ उत्तर देलह अछि, युधिष्ठिर? मुदा आब जे प्रश्न पूछि रहल छियह तकर उत्तर केवल शब्दे मात्र मे नहि भेटक चाही। ओ अन्तिम प्रश्न पुछलथिन—'ओ कोन वस्तु थिक जे लोक केँ सभ संकट सँ उबारैत अछि?'

युधिष्ठिर अपना आइधरिक संचित ज्ञान-भंडार केँ उधेसलाक बाद अपना जेब सँ बड़े जुगता क' राखल, तहियाओल पँचटकही नोट बहार क' पुलिस औफीसर दिस घुसका देलथिन।

तुरन्त सिपाही केँ डँटैत पुलिस औफीसर बजलाह—'आगाँ सँ एहि बातक ध्यान राखल करह जे के नीक लोक अछि आ के उचक्का। बाबू साहेब नीक लोक छथि। हिनका ससम्मान छोड़ि देल जाइनि आ हिनक संगियोसभ केँ।'

मिथिला मिहिर : 30 अगस्त 1964

द्रष्टव्य — 'सौन्दर्यक केन्द्र मुँह पर बरर-झरर' सँ ल' क' अंतिम 'यक्ष प्रश्न' धरि निर्माया झा (हमर माँ) क छद्मनाम सँ किसुन जी लिखने छलाह, ओहो रचना सभ केँ एहि मे सम्मिलित क' लेल गेल अछि।

• • •